

First published — 1952 Reprint — 1984

#### सहकार:

भीजी प्रसन्नतार्थे थ. नि. खुनिलाल हरगोविंद त्रिवेदी महुवावाळाना कुटुंब परिवार तरफथी रु. ७०००/- हस्ते श्री. वीरेन्द्र तथा श्री. अरविंद दंद्रविजय त्रिवेदी.

किंमत : ह. १९००

#### प्रकाशक:

शास्त्री नीलकंठदासजी स्वामिनारायण मंदिर (मुंबई)

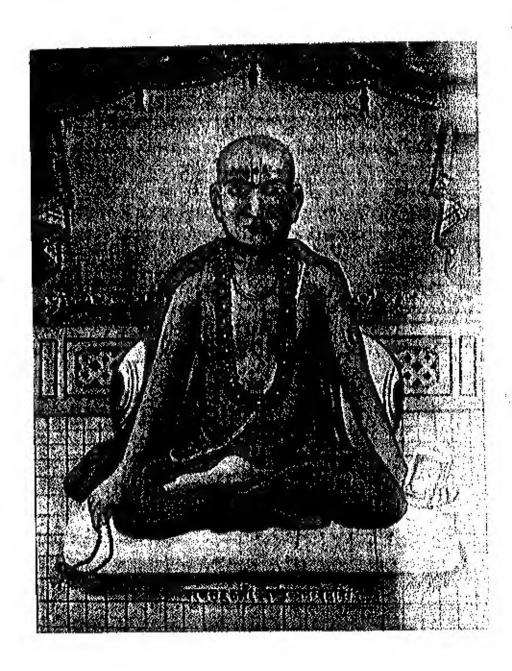
#### मुद्रक:

श्रीकृष्ण वि. लिमये, इंडिया प्रिंटिंग वक्से, ९, निगतदास भास्टर रोड, एक्स्टेन्शन १, फोर्ट, मुंबई ४०० ०२३. फोन: २४ २६ ३२. यत्सङ्काल्पात्तपति तपनो बाति वातः समिन्धे विह्निर्धत्ते धरणिरुद्धिर्रङ्कते नैध बेलाम्।



सोऽयं श्रीमान् निक्तिलजगतामन्तराहमाऽवर्ताणी धर्म रक्षन् दिशातु कुशलं स्वामिनारायणोऽयस्॥ CONTRACTOR STREET

वैराग्यं भक्तिभूमा भगवति सहजानन्द्रूपे परक्षित् । ब्रह्मण्यध्यात्मनिष्ठा भवति निरुपमं सर्वमेतद्धि यस्य।



यद्वाङ्गिण्यन्दसाराः श्रुति नृतसहज्ञानन्दपादारविन्दः द्वनद्वैकालम्बभाजः स जयति मुनिराद् निष्कुलावन्दनामः॥१॥



# श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्।

यत्पादपङ्कजपरागरसैकछन्धा मुक्ति गता मुनिगणा दृढभक्तियोगाः। तं वासुदेवमनिशं निजवृन्दजुष्टं श्रीभक्तिधर्मतनयं दृरिकृष्णमीडे॥ १॥

### विश्वप्तिः---

आ संप्रदायना समाभितोने सुविदित छे के—निष्कुळानंदमुनिवृत प्रंथोमां दर्जा मोटो, सर्वार्थसंपूर्ण, सरल, सर्वोपयोगी प्रन्थ भक्तवितामणि छे. आ अव्यार्थ भक्तवितामणि नाम आप्युं छे ते खरेखर गुणानुगुण छे, केमके वाल भक्तवितामणिमृत स्वयं भगवान् श्रीहरि अने भक्तवितामणिहण अलौकिक व्याप्त नामगुणचरित्रोनुं यथास्थित वर्णन होवाधी वितक भक्तोना वितासकार वितित समग्र धर्मांदि अर्थोने आपनार छे. आ अर्थ स्वामिएज प्र. १९६ अर्थ भक्तवितामणि प्रन्थ कह्यो, सत्संगिने सुखरूप। जेमां वितासकार प्रगटनां, अति परमपावन अनूप॥ बीजा प्रन्थतो बहुज छे, व्याप्त सोय। पण प्रगट उपासी जनने, आ जेबो नथी बीजो के प्राकृत सोय। पण प्रगट उपासी जनने, आ जेबो नथी बीजो के प्रकृत सोय। पण प्रगट उपासी जनने, आ जेबो नथी बीजो के प्रकृत सोय। पण प्रगट उपासी जनने, आ जेबो नथी बीजो के प्रकृत सोय। पण प्रगट उपासी उपार्थ प्रत्यगौरव कहीने, अंत्ये कि स्वर्थ मक्तवितामणि प्रन्थरे, जे जे वित्र वे ते थाय कामरे। हेरे स्वर्थ मक्तवितामणि प्रन्थरे, जे जे वित्र वे ते थाय कामरे। हेरे स्वर्थ जे आ प्रंथरे, तेनो प्रभु पुरे मनोरथरे॥' आ रीते कहा छे.

जैम श्रीहरिए इष्टदेव श्रीकृष्णपर श्रीमद्भागवतना दशम स्कंधि कार्यका शास्त्रतरीके इष्ट मान्यों छे. तेम श्रीहरिपर आ ग्रंथने भक्तिशास्त्र तरीके इष्ट लाजिए एमां अतिशयोक्तिने स्थान नथी. केम के आमां भक्तो अने भक्तप्राप्य कार्यका अने तेमनो मेळाप करी आपनार लीलाभक्तिनुं सविस्तर वर्णन हैं। वार अर्थ पण स्वामिए स्वन्यो छे—'राम उपासीने रामखरित्ररे, सुणी माने सहुयी पवित्ररे। कृष्णउपासीने कृष्णलीलारे, माने मुद सुणे थर भेळारे॥ तेम सहजानन्दी जन जेहरे, सुणी आनन्द पामहो पहरे॥' इसादि. जेम ज्ञान माटे बचनामृत पर्याप्त छे तेम लीलाचरित्रमाटे आ प्रंय पर्याप्त छे. आमां प्रसंगे प्रसंगे मुख्य भक्ति अने तदुपयोगी धर्म आत्मज्ञान वैराग्य अने माहारम्यज्ञान अने तदुपयोगी सरसमागमादि साधनो पण संक्षेपमां अनु- वर्णव्यां छे. एम होवाधी आ संप्रदायनुं सर्वस्य समझवा माटे आ प्रवन्ध पुरतो छे. तथीज वचनामृतोना साथोसाधज संप्रदायी जनोमां प्रचुर प्रचारमां आव्यो छे.

आ रीते आ ग्रंथ मित्तरसमरपूर सर्वमक्तमीग्य सर्वोत्तम होवाथी तेनी घणी कोपीओ वचनामृतनी हारोहार लखाई छे. उत्तरोत्तर आश्रितोने तेनी अति तृष्णा बधतां अने ते साथे छापखानानी सगवड मळतां मुंबई, राजकोट, सुरत, अहमदाबाद विगेरे स्थळे पत्रात्मक अने गूटकात्मक गुजराती अने मराठी टाईपो-बाळी नानी मोठी साइसमां अनेक आधृत्तिओ निकळवा पामी. छेछी आधृत्ति मुंबईमां निर्णयतागर प्रेसमां शास्त्री हरिजीवनदासजीए सं. १९८० मां छपावी छे. एमां चाली आवती केटलीक प्रत्यक्ष अनेकविध अद्युद्धिनो परिहार, अने बाचकोनी सगवड माटे पद्चछेद पेरेप्राफ विगेरे सुधारो करवामां आव्यो छे. ग्रंथकर्तानुं जीवनचरित्र अने विषयानुक्रमणिकानो निवेश करवामां आव्यो छे. ग्रंथकर्तानुं जीवनचरित्र अने विषयानुक्रमणिकानो निवेश करवामां आव्यो छे. ग्रंथकर्तानुं जीवनचरित्र अने विषयानुक्रमणिकानो निवेश करवामां आव्यो छे. ग्रंथकर्ता मुनि अने उपास्य इष्टदेवनुं त्रिरंगी चित्र पण मुक्वामां आव्यो छे.

भा आद्यतिने निकळे २८ वर्ष वीती गयां काळा बजारमां पण तेनी दुर्लभता यह छतां अति मोंघवारी अने मोटी मुश्केली अने आर्थिक अगवहताने आगळ घरीने ज्यारे कोई छपायवानो उपक्रम करी शक्या निह. अने सत्संगीओनी घणी भागणीओ थवा लागी खारे तेनी जाण भुजमंदिरना सद्गुरु श्रीचल्लमदासजीने थतां तेमणे अहमदाबाद गादीना धर्मधुरंघर आचार्य देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनी आज्ञा मेळवी शास्त्री हरिजीचनदासजीप मुंबई निर्णयसागर प्रेसमां सं. १९८० मां छपावेली अपूर्व विशेषोवाळी सुशोभित आधृत्ति उपरथी आ आवृत्ति शास्त्री हरिजीचनदासजी द्वारा सं. २००९ मां छपावीने प्रसिद्धिमां आणी हती.

आ आदुत्तिने निकळेपण ११ वर्ष बीती गया अने मांग चाछ रही. एटले बहताल संस्था सरफथी आ प्रेय छपाववा विचार थता बहताल ट्रस्टी बोहें बास्त्री इरिजीयनदासनीए छपावेसी आवृत्ति अपरथीज फेरफार कर्या शियाय छपाबबो एवो ठराव सं. २०४० सा. १५-५-८४ नी मीटींगमां ठराव नं. ३३ थी सर्वानुमते मंजूर कयों. ठरावमां भक्तिसामणिनी ७०००/-- सात इजार कोपीओ मुंबई मंबिर तरफथी शास्त्री मीस्त्रकंडदासजीए छपाववी. बस्त्री छापकाम बलदीथी याय अने शास्त्री **हरिजीयनदासजीय करे**ल परिश्रम सचवाइ रहे अने कांइएण फेरफार न थाय एटला माटे पुस्तको ऑफसेट प्रोसेसथी छपाववा. एवी शास्त्री नीलकंउदासजीने बोर्डनी अनुमति होबाधी तेमणे आ भक्तवितामणि प्रथ छपाववामां वहताल गादीमा पीठाचिपति धर्मधुरंधर आचार्य **भाजेन्द्रप्रसाद्**जी महाराजभीनी आञ्चानी पण आयश्यकता छे एम जाणी तेमनी आशा मेळववा माटे वडताल मुकामे बोर्डने रुखी जणावता बोर्ड प. पू आचार्य महाराजश्रीनी मंजुरी मेळवीने तेमनो आशापत्र बहताल इ. जा. र. मं. ५१/२०४० ता. ८-७-८४ नो मीकली आप्यो ते मुजन मुंबई मंदिरना कोठारी स्वामी भक्तिकिशोरदासजीय बोर्डना उराव नं. ३३ मुजब मुंबई मंदिर तरफथी शास्त्री नीलकंठवासजी द्वारा आ भक्तचितामणि प्रंथ इंडिया प्रिंटिंग वर्क्समां ऑफ्सेट प्रोसेसथी छपावी प्रसिद्ध क्यों छे. छापकाम माटे सारामांसारा ग्लेज कागळी खरीदवामां आव्या छे. घणा लीना काळमुधी सुरक्षिताने माटे वाईंडींग पण सारामांसारूं करवामां आध्युं छे. कागळोनी अने प्रिन्टींगनी महामोंघवारी होवा छतां पुस्तकनी किंमत पहतर भावेंज राखवामां भावी छे.

लि. शास्त्री नीसकंठदास (बहताल)

# श्रीखामिनारायणी विजयतेतराम् । प्रन्थकर्ता निष्कुळानन्द्युनित्तं जीवनचरित्र ।

यक्षाश्वानुम्रवेगाम् स्वयदामुपनयम् सत्ममःप्रमहेण प्रज्ञानाधिष्ठितेन प्रश्नामुपनयम् षासता तुष्प्रधर्षाः । निःसीमानन्यसिन्धी भगवति रमते स्वामिनारायणे यः सहस्थात्रिमेमे यः स जयति मुनिराट् निष्कुछानन्दनामा ॥१॥

भा अन्धरलमा प्रविद्धा कविवर निष्कुळानस्य सुनिवर छे. भा सुकग्रुठवनो प्राहुर्भाव ग्रुभ सौराह्रदेशांतगंत हाकार देशमां भावेका शेखपाट
गाममां थयो हतो. तेभी जातिए विश्वकर्मा (गुर्जर सुतार) हता. तेमना पृज्य
पिवार्च नाम रामभाह हतुं. तेओ जन्मसिद्ध सुमुश्च विरक्त सरसेवापर हता.
तेमणे रामानन्दस्वामिना गुरु भारमानन्दस्वामी के जे वचनसिद्धियाका
समाधिनिष्ठ समर्थ हता तेमने गुरुतरीके वर्षा हता. गुरुभक्त रामभाह प्रथम
क्रतीपुर गाममां रहेता, परंतु ते गामना जब जनो गुरुहपर भकाश्य हेच
राखता होवाथी ते नहि सहन थवाने कारणे 'गुरोर्यंत्र परीवादो निन्दा
वापि प्रवर्तते। कर्णो तत्र पिधातव्यो गन्तव्यं चा ततोऽम्यतः॥'
'गत्वा देशान्तरं सुखम्' भा नीतिवान्यने भनुसारीने पोताना मूळ
यत्रनो परिलाग करीने शेखपाटमां भावी रह्या हता. भावी पोतामां देववत्
भक्तिनिष्ठाने जोइने बहु प्रसन्न थएक गुरुना भाक्षीर्वाद्यी रामभाइने ज्ञानादि
सर्वे भर्थो प्रकाश पान्या हता. वळी प्रसन्न गुरुप चथारामां एवो वर भापेको
के-'तमारे लां एक समर्थ भगवज्ञक सुक्त गुरुप भवतार छेशे भने ते भनेक
महाकारों करीने महाकीर्ति मेळवशे'

भावो वर मळ्या पछी धोडेक दिवसे सं० १८२२ मां तेमने त्यां पुत्रश्वनो आहुर्भाव थयो. पुत्रनुं 'लालजी' एवं सार्थक नाम पाड्युं. (मातानुं नाम अस्त्रत्वा हतुं) कालजीना अन्तःकरणमां बाद्य वयथीज स्वधर्ममां अत्यन्त अभिरुचि, वैराग्यनी तीवता, भाष्मज्ञाननी उरकट सरदंठा अने प्रमेश्वरप्रत्ये १ भ०चिं०प्र० अनन्य भक्तिभावतो जन्मसिद्ध हतो. पोतानी इच्छा निष्ट छतांपण रीवाज-मुजब बाह्य वयमां ज पिताए आग्रहथी परणाव्या हता. (धर्मपत्नीमुं नाम कंकु हतुं. तेपण अनुकूळ स्वभाववाळी पितवता हती) गुणनिधि पुत्ररक्षनी प्रासिथी अति प्रसन्न मातापिताना परछोकवास पछी पोते व्यवहारकार्यमां प्रवर्त्या छतां जनकराजानी पेठे अनार्सक्त अने निर्छेप हता अने समग्र इन्द्रि-योनी वृक्तिओ आरमनिवेदी अंग्ररीय राजानी पेठे परमेश्वरपरायण हती.

प्क समये कालजी उद्भवावतार रामानन्द्रस्वामी के जे पोताना पिताना गुरु भारमानन्द स्वामिना मुक्य शिष्य थया हता तेमना दर्शन करवा लोज गया. पूर्वना ग्रुमसंस्कारवद्यात् अने गुरुसमागमवद्यात् तेमने तीवतम वंराग्यनो उद्ग्य थवाथी त्यागिदीक्षा महण करी गुरुसेवामां रहेवानी प्रार्थना करी. स्वामिए लालजीनी व्यवहारद्शामां पण परमहंस जेवी विरक्त द्शा देखीने त्यागिदीक्षानी ना पाडी अने आग्रहथी घेर पाछा मोकलतां जरुर पडे योलावी लेवानुं वचन आण्युं. (जे श्रीहरिए दीक्षादानथी सफल कर्युं हतुं) गृहमां रहेला लालजी आस्वो दिवस कृषि शिष्तपादि गृहकार्य करवा छतां पण रात्रिए पोताना मामधी त्रण गाउ दूर आवेला भाजा मामे जता अने त्यां रहेला परमनक मित्रभूत मूल्जशर्मा के जे पाछळथी साधुदीक्षा स्वीकारी 'गुणतीताननन्द' नामथी प्रसिद्ध थया हता तेमनी साथे मलीने आखी रात्रि आरमापर-मारमाना श्रवण मनन निद्ध्यासनमां निर्गमन करता अने प्रसंगे प्रसंगे सेवासमागमाटे रामानन्दस्वामि साथे पण घणा दिवसो व्यतीत करता. तेमने स्वामिए पोताना आश्रिततरीहेनी दीक्षा (वतमान) सं० १८४३ मां आपेली. पछीथी तेओ स्वामिने ईश्वरावतार जाणीने श्रद्धाधी सेवासमागमादि बहु करता.

उरारे श्रीहरि वर्णीन्द्रवेषे लोज गामे मुक्तानन्दमुनिने मल्या अने सद्य-समाधि, तेमां गोलोकादि दिख्य धाम अने त्यांनी दिख्य विभूनीनां दर्शन आदिक अलोकिक अञ्चत ऐश्वर्यातिशय प्रदर्शाववा लाग्या अने तेथी वर्णीन्द्रनो महिमा स्वामी करतां पण समधिक गामोगाम संभळावा लाग्यो तेने जोह जाणीने, लालजीने स्वामीनो भगवानपणानो पाको निश्चय होवाथी मनमां ठीक नहि लागवाथी वर्णीन्द्रनो महिमा पाछो पाडवाना आशयथी स्वामिनी आज्ञातो लोजमां वर्णीन्द्रनो दर्शन करी आववानी अने भुज नहि आववानी हती छतां पण तेने नहि गणीने भुजनगर गया। स्वामिनां दर्शन करीने वर्णिराजना वधेला महिमानी वात करीने सेने समाथी देवानी विमित करी. स्वामितो पूर्वनी रहस्य. वात (पोताने उद्धवजीमा अवताररूप अने श्रीहरिने श्रीकृष्णमा अवताररूप) जाणता हता पण प्रकाश करवानो प्रसंग महि आववाथी करेली महि से आ प्रसंगे प्रकाश करी अने लालजीनो अम निष्टुत्त कथों. श्रीहरिनो अपार महिमा तो प्रथम सांभळयो हतो पण गुरुव मनथी सुरह थयो अने श्रीहरिने अपार सर्वकारण सर्वेश्वर परमारमा अवतारी जाण्या. गुरुनी आज्ञा थतां वर्णीन्द्रने पाछा लोजमां आवीने गद्रदर्के प्रमाश्च साथे दंडवत् प्रणाम कर्या. बहु प्रसंस थयेला वर्णीन्द्रे वरदान आप्युं के 'तमो वराग्यमां शुक्जी समान थहीं' वर्णीन्द्र पासे थोडो समय रहेतां सेमनां अञ्चत ऐश्वयों प्रसक्ष जोइने इहिनश्चयवाळा थहने पोताने गामे गया. ते पछी लालजी वर्णीन्द्रनुं अनन्य भजन करता. आ रीते लालजीने पूर्वना प्रवळ शुभ संस्कारथी प्रगट मगवान्त्रनो मेळाप थतां कृतार्थ थया.

जयारे गुरु रामानंद स्वामिए श्रीहरिनो धामधुमीथी पट्टाभिषेकमहोस्सध जेतपुरमां क्यों त्यारे पण छाछजी सुतार श्रीहरिना सेवासमागममाटे भावेछा भने गुरुपदे विराजेछा श्रीहरिने भेटमां पोतेज सारा काष्ट्रथी करेछी कारीगिरी-भरी मजूस तथा हामचीयो भर्षण कर्यों हतो. श्रा ग्रुभसमये पण प्रसन्न श्रीहरिए तेमनी बहु प्रशंसा हरी हती. ज्यारे रामानन्दस्वामी स्वधाम सीधाव्या त्यारेपण छाछजी श्रीहरिपासे सत्वर भावेछा भने उचित सेवा करी हती. श्रा रीते प्रशेक उत्सवादि प्रसंगे श्रीहरिनो दर्शनादि भछभ्य छाभ छेवा भावता भने पाछा जता. एम गुरुपरंपराथी भनन्य शिष्यभावने भावथी भजवता.

एम केटलोक समय वीततां एक समये श्रीहरि हरिभक्तहितार्थे विवरता विचरता सोरठमां थइ हालारदेशमां शेखपाट ग्रामे लालजीने घेर पधार्या. अनन्यभक्त लालजीए अतिभावथी श्रीहरिनो असाधारण आतिष्यसंस्कार करी अलभ्य लाभ लड्ने खजन्म सफळ कर्यो. भक्तवद्य भगवाने पण तेमने घेर निवास करी संत हरिभक्तभक्तोने तेहाबीने सं० १८६० मां माघशुदी पंचमीए वसन्तोतस्व कर्यो.

केटलाक दिवस सुखेथी रहीने कच्छ देशमां विचरणनी वांछा थतां लालजीने कह्यं के-तमारा जेवो कोइ सारो भक्त मार्गनो भोंमीयो शोधी आपो. आ उपरथी बीजानी शोध नहि करतां गृहत्यागनो अने श्रीहरिनी देवादिवुर्लभ

समीव सेवानी समय अनायासथी प्राप्त थयो जाणीने पोतेज श्रीहरिसाथे जयानी इच्छा करी. कच्छनी विकट घाटचुं विज्ञान होषाथी जरुरी भातुं तैयार कराब्युं अने एक बतकमा पाणी भरी लीघुं अने वळी विवम वेळाए आहरिनी सेवामां काम लागरो एम मानीने बार कोरी चोरभवथी पगरखांमां गुसरीते घाछीने तैयार धह श्रीहरिसाथे हर्षभेर चाहवा. भा समये श्रीहरिसाथे लालजी सिवाय बीगुं कोई हतुं नहि. मार्गमां भागळ चारुतां भतिभुख्या भीखारीए अतिदीनताथी खावानुं मागतां, दुःखीना दुःखने देखीने नहि सहन थवाना सहज स्वभाववाळा द्याळ श्रीहरिए तेने तमाम भातुं अपाधी दहने छाछजीने निरस कर्या. स्वांथी भागळ हिंडता लुंटारानी टोळी मळी. श्रीहरिने तो अपरिमह साचा साधु समझीने कांइ नाम लीधुं नहि पण लालजीनां तो वस्त्रो विगेरे सपास्यो परंतु कर्जु नहि नीकळवाथी तेमने छोडी दहने छुंटाराओ स्यांथी पाछा वळनां श्रीहरिए कहां के-'छनुं नाणुं छतां पण तमने जडतुं नथी जेथी तमने लुंटतां आवडतुं नथी एम जणायछे' एम कहीने पगरखांमां संताडेली बार कोरीयो बताबी. तेने लड्ने राजी थएला चोरो चाश्या गया. एरीते निष्किचन जनो जेमने प्रिय छे एवा भप्नेरित हित करनारा श्रीहरिए छाछजीने निव्धिचन कर्या. पछी लालजीए श्रीहरिने सुखाभावशी कह्युं के-उदार थहने मिश्चकने भातुं अपायी दीशुं अने चोरोने कोरीयो अपाधी दीधी, हवे जमवानुं क्यांथी लावशो ? तेना जवाबमां श्रीहरिए कह्युं के-तमारे माथे मोटुं विघ शावनारं हतुं ते अमीए परवारं मटाड्युं छे माटे मनमां कांइ माठुं लगाडवो नहि. काबी प्रिय हित वाणी सुणीने वचनविश्वासु लालजी राजी थया. एम मार्गमां हास्यविनोद करताथका आगळ हालतां आयेला कच्छना विकट रणमां एक महापुरुष मळ्या, तेमणे जळनी याचना करवाथी श्रीहरिए यतकर्तु जळ भाषाची वहने कारुजीने निर्जेळ कर्या. वळी भागळ चारुतां तृषाथी तीव पीडा पामेला प्रिय भक्त लालजी माटे श्रीहरिए तस्क्षण खारा समुद्रमां मीठी बनावेली पाणीनी सेर् बतावी. भाश्चर्य पामेला लालजीए जलपान करीने बतक पण भरी लीबी. पाछा वळी एज स्थळे तपास करतां खारुं घेर पाणी जणायुं. एम महाक्केशथी जेमतेम रण उतर्या पछी मार्गवशात् आवेला एक तलावना कांठा उपर बावळना युक्षतळे बहु थाकी गएला श्रीहरिए सोड ताणीने विश्राम कर्यो. श्रीहरिना पगरखां विनाना कोमळ चरणतळमां

विद्मा रहेलां भगवानपणानां सूचक सोळ चिन्हों निहाळीने परमानन्द प्रान्त्रा. घोडो थाक निवृत्त थया पछी श्रीहरिने पोता उपर यहु प्रसम्न जाणीने विनयथी पुछयुं के-मार्गमां मळेला महापुरुष कोण हता ? अने खारं जळ मीढुं क्रम थयुं ? भक्तप्रिय भगवाने कह्युं के-मार्गमां मळेला महापुरुष तो गुरु शमानन्दस्थामी हता अने स्वातुर तमारे माटेज खारं जळ मीढुं कर्युं हतुं. आदी अञ्चत चात सांभळीने छालजी आश्चर्य साथे यहु राजी थया. उपर-प्रमाणे बसे गुरुशिष्य प्रसम्न निनोद करता थका आगळ चालतां आधीइ गामनी भागोळे आधी पहोंच्या.

ाविकट रणमां पगपाळा चालीने थाकी गएला अने श्रुधाथी अति आतुर थएंछा भगवाने प्रिय सेवक छाछजीने कह्यं के-गाममांथी भिक्षा मागी लायो. लालजीए रमुजमां कह्युं के-उदार थड्ने भिक्षुकने भातुं अपाधी दीधुं अने चोरोने कोरीयो जाणी जोइने अपावी दीधी. इवे इसकी भिक्षा मागवानी भुंडी दशा आदी पड़ी. जो रांकमी पेटे गाममां मागवा जउं तो का गामना घणा लोको मने भोळखता होवाथी मारो भति उपहास करे. त्यारे श्रीहरिए कह्यं के तसोने कोइपण ओळखी शके नहि एम करीए तो केम? एम कहीने एव सुहू-तैमां लालजीनी मुंछ भने चोटी कातरी नांखी भने वस्त्रो कदावीने एक कौपीन अने अलफी पहेरावी अने गुरु मंत्रदीक्षा आपी "निष्कुळानन्द" ए हुं गुणानुगुण रमणीय नाम घराब्युं. पछीथी एक कोळी आपीने मुनिने भिक्षा भागवा गाममां मोकस्या. मागी लायेला अन्नथी मुनिए रसोइ करी अने बन्ने महापुरुषो सुखेथी साथे जमीने संतोष पाम्या. पछीथी श्रीहरिए मुनिने कहां के-हवे कांइ बीजी इच्छा होय तो बोलो ? अने गुरु रामानन्दस्वामिनुं 'ज्यारे जरुर पढरो त्यारे साधु करवा बोलाबी लड्डां' ए वचन स्मृतिमां छे? ते सांभळीने मुनिए कशुं के-गुरुनुं वचन स्मृतिमां छे ते आपे स्यागिदीक्षादानथी सफळ कर्यु छे अने हुवे मारे कशी पण इच्छा रही नथी. हुं कृतार्थ थयो छुं. एम कहीने अनन्य अनुरागनी अभ्यर्थना करी. प्रसन्न श्रीहरिए 'तथास्तु' कहीने एज आधोइ गाममां मुमुक्षुओने उपदेश आपवा रहेवानुं कहीने, तेमनी कवनशक्ति जाणीने आक्षित मुमुक्षुक्षोने आरंभोपयोगी "यमदंड" नामनेहे अन्थ करवानी आज्ञा आपी अने पोते ते गाममां उक्कर भाविक कचराने त्यां बे दिवस रहीने एकाकी भुजनगर पधार्या.

उपरनी बातनो केटलोक संग्रह श्रीहरिना अन्यदुर्छभ निकट परिचयमां कावेला स्वामिएज भक्तचिंतामणिना प्र. ५४-५५ तथा १३४ मां का रीते कर्यों छे-'हरि करी घणी मोटी मेहेर, आव्या भक्त लालजीने घेर। एक सेवक संगे लहने, चाल्या रणनी घाटे वहिने। आव्या समुद्र-समीपेदयाम, पडी सांझ रहेवा नहि ठाम। लागी प्यास ने पीडाणा प्राण, सुक्यो कंठ न योलाय वाण । लाग्या कांटा ने कांकरा चळी । अति थाकमां पडिया ढळी। पह मांहिलुं न गण्युं दुःख, चालो चालगुं कहे श्रीमुख। एम कही उठ्या अविनारा। एक सेवक छे योता पास । ते तो पामियो पीडा अपार । प्राण तजवा थयो तैयार। कंठे आधी रह्या ज्यारे प्राण । त्यारे वोलिया इयाम सुजाण । सुणो दास कहे अविनाश, पियो जळ जो होय पियास । कहे दास पियास छे भारी, केम पिवाय खारुं आ वारी। कहे नाथ नथी खारुं नीर, पियो जळ ने रहे शरीर। त्यारे विश्वासी वासे ते पीधुं, वाले गंगाजळ जेवुं कीधुं। पिधुं पाणी ने गइ पियास, एम उगा-रियो निजवास । एहं समे पुरुष अलौकि, गया मोहन मुख विलोकि। पछी यांथी चाल्या सुलकारी, थयुं जेयुं हतुं पखुं वारी। पछी त्यांथी चास्या बहुनामी, आवी मळ्या रामानन्य खामी। जोइ राजीने पुछे छे जन, काल्य पाणिमां पुरुष मळ्यो, तेतो नाथजी में नव कळ्यो। थयुं खारुं मीठुं केम वारी, तमे केने नम्या सुखकारी । कहे नाथ जन मन जाण, मळ्यो पुरुष ते मुक्त प्रमाण। कर्युं खारुं ते मीठुं में वारी, तारी प्यासनी पीड़ा में जाणी। पछी मळ्या रामानंद खामी, तेने चाल्या अमे शिश नामी। जेनी करी श्रीहरिए सार, तेनुं नाम लालजी सुतार। पछी त्यांथकी आधोइ भाव्या, घणुं जनतणे मन भाव्या। दिन दोय पोते तियां रह्या, संगे दास तेने जोइ हस्या । हवे परमहंस दशा प्रहो, शिद दुःखना द्रियामां घहो । एम कही मुनिदशा दीधी, पोते कच्छ जावा इच्छा कीथी"। इत्यादि. उपरनी बाबतनो केटलोक मळतो विस्तार हरि-ली हामृत कळश ५ विश्राम २१-२२ मां छे. उपर प्रमाणे स्वामीने प्रेमास्पद स्त्रीपुत्रादि संबन्धियोनी जाण बहार अधवस असमये अतर्कित त्यागिरीक्षा

आपीने प्कदम संसारत्याग कराज्यो छता मनमां किंचित् पण ग्लानि नहिं भामतो परम हर्षने पान्या. एज एमना बृहद् वैराग्य अने त्यागनी परा काछा है, आतो अति अदाक्य काम छे.

वोताने जे प्रगट श्रीहरि भगवाननो प्रसक्ष दर्शन स्वर्श संजाव सेवादि अन्यदुर्लभ लाभ मळयो अने परम परमहंसदीशा लाभ थयो तेनुं चार पदमां सरस वर्णन आप्युं छे. राग घोळ-"आज आविओ आनंद अंग, उमंग उरे अति। अति मळयो मोटो सतसंग, रंगे रंगाणी मति ॥१॥ मतिमांय में कयों विचार, पार संसार लेवा। लेवा सुख समागम सार, नथी कोइ संत जेवा॥ २॥ जेवां लख्यां आगमे एंघाण, तेवा साचा संत मळ्या। मळ्या जेथी प्रगट प्रमाण, प्रभुजी अढळ ढळ्या॥ ३॥ ढळ्या जितना पासा पुनित, चिन्त तियां चोट्युं सई। सई निष्कुळानंद के'रीत, प्रीत मारी तेशुं थई॥४॥ थइ जित मारी जगमांय, सहाय श्रीहरिए करी। करी छ्या ते कही न जाय, करो न राख्यो फरी॥१॥ थयुं मनगमतुं मारे आज, लाज लाखेणी रही। गति हती जगमां सुख साथ, नाथे ते निवारी दीधी। तेह निष्कुळानन्द निस्य गाय, उर संमारी एह" इसादि. वळी "भाग्य जाग्यां रे आज जाणवां, थयां कोटी कल्याण" आ घोळमां पण अलभ्य लाग्यां रे आज जाणवां, थयां कोटी कल्याण" आ घोळमां पण अलभ्य लाग्यां छे.

उपरनी कथा उपरथी मुनिनो श्रीहरिविषे केवो गाष्ठ अनन्य अनवधि अनुराग, माहारम्यज्ञान साथेनो सुदृढ निश्चय, अतिविश्वास अने त्याग वैरायनी
तीवता विगेरे आदर्श गुणो अने श्रीहरिनो पण स्वामिविषे तेवोज अत्यंत अनुराग
'प्रियोऽहं झानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः' आ गीता वाक्यमां
कद्या मुजबनो व्यक्तपणे जणाय छे. श्रीहरि सं० १८६० ना माघ हुदी पंचमीए
होलपाटमां वसंतोत्सव करीने आधोइ पधार्या हता अने त्यांज दीक्षा आपी
छे तेथी स्वामिनो दीक्षाजनमपण आज मासना आसपास निश्चित थायछे.

परमहंस दशा परिष्रद्धा पछी परमातमा श्रीहरिनी आज्ञाथी मुमुक्षुओने उपदेश श्रापचा घणा देशोमां भने प्रसंगे श्रीहरि साथे पण फर्या हता. तेमना तप त्याग वैराग्य निःस्पृहता निष्परिष्रहता साधुता विगेरे सहुणो साथेनी शास्त्रीय सरल सचोट उच्च उपदेशशैलीथी ते ते देशमां घणा लोको श्रीहरिना शरणागत अनन्यभक्त थया हता. कोइ समये खामिने पाछा घर तेडी जवा आवेळा पोताना संबन्धिकोने संसारनी अमिलता अने अमुखता जणावना पूर्वक पाधुं महि वळवानो इट विचार आ पदमां—'मने खामे न गमेरे संसार, को'ने केम कीजिए। वमन थयुं मन उत्युं, एवो जाण्यो रे संसार। को'ने केम कीजिए, को'ने०॥१॥ सेज पछंग ने पोढणां, कोइ तळांस पाय। पतंग पड्यो ते उपरे, माथे जमकेरो दाव; को'ने०॥२॥ मृगराजना मुखमां, जे कोइ आवे जरुर। खान पानने विसरे, मरबुं वेखे हजुर, को'ने०॥६॥ खारथे सहु कोइ मळी, विधविध करे वात। अंतरमां केम उतरे, नजरे देठिळ घात; को'ने०॥४॥ समझी विचारी जे करो, तजो खळकजी आशा। निष्कुळानंद निश्चे कर्युं, सुखतो सहुर पास; को'ने०॥५॥ आ रीते जणाव्यो छे. आ उपरथी स्वामिना साथा खाग वैरायनी तीवता निश्चत थायछे.

वळी पोताना आत्मज्ञान अने वैराग्यनी सुद्दता पोतेज कही छे के-"में हुं आदि अनादि आतो सरवे उपाधि, सहुद मी ज्या अनादि मीट गई सरवे उपाधि। कहां काछ ने कहां कुहाड़ा, कहां हे घडनर हारा। जब ते मोथे सहुद मी लिया, मीट गया सरवे चाळा; में हुं०॥१॥ कोण कुळ ने कोण कुटुंबी, कोण मात ने तात। कोण भाई ने कोण भगिनी, ब्रह्म हमारी जात; में हुं०॥२॥ निह रह्मा में निह गया में, निह सुधर्या निह बिगड्या। हमें हमारा कुळ संभायी, मत करना कोउ जगड़ा; में हुं०॥३॥ पाणी में से पुरुष धनाया, मळमूत्रकी क्यारी। मी ज्या राम ने सर्या काम, अब न रही को उसे यारी; में हुं०॥४॥ आगे तपसी तपसा करता, रही गई कि चित कामा। ते कारण आ नरतन धरियो, सो जानत हे रामा; में हुं॥५॥ जे कारण आ नरतन धरियो, ते सिर्यु छे काम। निष्कुळानंद के प्रगट मळ्या मोप, टळ्युं नाम ने टाम; में हुं०॥६॥" आमो पोतानी योगभ्रष्टता भने प्रगट मगवानना मळवाथी कृतार्थता जणावी छे.

कोइ अवसरे 'भूखे मरता होय ते भेख छे छे' एवी गई चर्चा नीकळी हरो, ते पोतामां अघटित मानीने "मने तेनी हारमां गणको नहि, गृहस्थाश्रममां मारी सद्धर स्थिति हती, कोइजातमुं दुःख के उपाधि हती नहि, केवल साचा त्याग वैराग्यना वेगथी हुं त्यागी थयो छुं" एम पोतेज जणावेलुं. ते बाबतमां स्वयंकृत आ पद छे-'संतो सांभळो साची घारता, नथी लीघो आ भुष्ये मेखरे। जननीनो जायो कहुं छुं, अवहय हतो हुं एक रे; संतो०॥१॥ गाडुं बळद गाय ने घोडी, डोयां हतां दशयाररे। पांच मळीने पुछता मने, करतो हुं कारभाररे: संतो०॥२॥ अग्न धन ने घरणी, परणी हती घेररे। छोटां छोटां छोकरां हतां, हित माताजिनी मे'ररे; संतो०॥३॥ खावा पिवानुं खुय जडतुं, वस्त्रनो नहि पाररे। जोइए तेया जोडा जडता, तके तके तैयाररे: संतो०॥४॥ एटलुं मेली आंही आव्यो छुं, उर करी विचाररे। भुखे मरतां भेख लीये छे, गणशो नहि पनी हाररे: संतो०॥४॥ ज्ञान वैराग्ये गले झाल्यो. कांइ न चोट्यं चित्तरे। निष्कुळानंद कहे नहि कहुं तो, जोडशे मार्थ गीतरे; संतो०॥६॥ आरीते लागिवंकाधारणमां ज्ञानवैराग्यनी तीवतानेपोत्तेज जणावे छे.

('छोटां छोटां छोकरां हतां' एम खामिएज गावा उपस्थी जाणवा मळे छे के तेमने त्यां सं० १८५६ मां पुत्ररहाना जनम थयो हतो, तेनुं माध्यजी नाम हतुं. तेओ सं० १८७४ मां पिताने दर्शने गढडे भावेला. श्रीहरिए तेमने हार पेंडा भाष्या भने नित्य थाळमांथी प्रसादी जमाडवानी ब्रह्मचारीने भलामण करी. एक मास रहीने घेरजवानी तैयारी करतां गोपाळानंदस्वामिने दर्शने गया. स्वामिए कशुं के-निष्कुळानंदमुनिने दंडवस्प्रणाम करीने भाशीर्वाद मेळवीने घेर जाओ. पष्टीथी माधवजीए सुनिपासे जहने दंढवस्प्रणाम कर्या, सुनिए संसारनी असार-तानो उपदेश आपी त्यामी थइ रहेवानी समस्या करी. पोते पण योगभ्रष्ट होवाथी वातमांज समझी गया अने गोपाळानंदस्वामीपासं आवीने साधु थइ रहेवानी इच्छा दर्शायी. स्वामिएपण तरतज भगवां वस्त्रो आपीन गोविदासन्द नाम पाड्यं अने तेमने श्रीहरिने दर्शने लइ गया. श्रीहरिए जाणवा छतां पुछ्युं के सा कोण छे; स्वामिए कह्युं के-निष्कुळानंद मुनिना सेवक छे. श्रीहरिए बहु प्रसन्त थइने कह्युं के-'सिंहनां बच्चां तो सिंहज होय' पछीथी कह्युं के होया पासे जहने ते तमने बाथमां घालीने मळे त्यां सुधी वंडवत प्रणाम करज्यो. पछी श्रीहरिना कहेवा प्रमाणे सो दंडवत कर्या त्यारे छेवटे राजी थइने बाथमां घालीने मळ्या अने आद्यीर्वाद आप्ये. पछी गोपाळनंदस्यामिपासे रह्या. स्वामिए सारंगपुरमां हनुमानजीनी प्रतिष्ठा करी त्यारे गोविंदस्वामिने दह नैष्टिक ब्रह्मचारी जाणीने तेमनी पासे आरती उतरायी हती. एरीते तेओपण वैराग्यादिक गुण करीने

पिताथकी अन्यून हता. भा वातथीयण स्वामिना वैराग्यनी तीवतरता जाणवामां आविछे. बीजा पुत्रनो जन्म सं० १८५९ मां थयो हतो. तेमनुं कानजी नाम हतुं. तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या हता. ने पण सारा सरसंगी हता.)

पोते अथवा बीजा समानो स्वामिना गुणोनी प्रशंसा करे एमां बहु गीरव न कहेवाय, भगवान् श्रीहरिएज स्वामिना धर्मांशता आस्तिकता छोकछाज स्याग वैराभ्य विगेरे गुणोनी प्रशंसा गढडामा अंत्य प्रकरणना २६ वचनामृतमा भारमानन्यमुनिए पुछेत्वा प्रभना उत्तरमां-''जेनी बुद्धिमां धर्मारा विशेष-पणे वर्ततो होय ने आस्तिकपणुं होय जे आ छोकमां जे साहं नरसुं कर्म करेछे तेनुं जे सारुं नरसुं फळ तेने जहर परलोकमां भोगवेछे, एवी दहमति जैने होय तथा लाज होय जे मुंई करशुं तो आ लोकमां माणस आगळ शुं मुख देखाडशुं? एवो जे होय ते गमे त्यां जाय तोपण नेने कोइ पदार्थ तथा स्त्रियादिक से बन्धन करी दाके नहि, जैम मयारामभट्ट छे तथा मुळजी ब्रह्मचारी छे तथा निष्कुळानन्दस्वामी छे, पत्री जातना जे होय तेने स्त्री धनादिक पदार्थनो योग थाय तोपण डगे नहि" वळी कारीयाणीना ३ वचना-मृतमां श्रीहरिए पोताना बाल्य वयमांथीज त्यागिस्वभावनी वार्ती करतां पुछेला प्रक्षना उत्तरमां मनना अने शरीरना दोष निरूपवा पूर्वक तेने टाळवाना दहदमन अने आस्मविचारने उपायपणे कडेनां, तेनेज श्रीहरिअभिमत जाणीने स्वामिए पुछ्युं कं-''हे महाराज एम जे रहेवायछे ते विचारे करीने रहेवायछं के वैराग्ये करीने रहेवायछे?" आ प्रश्न उपस्थी स्वामिनो तपत्यागनो इशक स्पष्टपण जणायछे.

अति इशक होवाधी तेनी प्रशंसानां पदो 'जननी जीवोरे गोपीचन्दनी, पुत्रने प्रेयों वैराग्यजी' 'हुं विलहारी प वैराग्यनी' 'त्यागन टकेरे वैराग्य विना' इत्यादि १२ पदो सरस रच्यां छे. बीजां पण तेवां पदो 'शुद्ध वैराग्य करी सेविए, प्रेमे प्रभुना पाय' 'तीव वैराग्य तडोवड्ये, नावे सो सो साधन' 'जोइ जोइ में जोयुं जीवमां, त्याग वहाळो हरिने मनरे' 'त्याग सारुं धइ तपसी, वहाळो वसे विशाळा वनरे' 'नथी नरने निधि सुखनी, तप विना विळोकने मांयरे। प्रभुने प्रसन्न करवा, नथी पवो बीजो उपायरे' इत्याद बहु कर्षं छे.

एक समये स्वामिने निःस्पृष्ठ निष्परिग्रह निर्धन्ध जाणीने श्रीहरिए गढडामंदि-रमा महांत करवानो विचार कर्यो. श्रा विचार जाणवामां श्रावतां वहेला उठीने गढाळी गामे चाल्या गया. चाल्या जवानुं कारण जाणतो श्रीहरिए स्वामिने पाछा बोलाव्या भने ने विचार बन्ध राख्यो. श्रा पण स्वामिना त्याग वैराग्यनी नीवतानुं उदाहरण छे.

'नानो देश निरस अति, देहाभिमानीने दुःखरूप। तियां त्यागी होय ते दके, बीजाने संकटरूप' 'माटे सेजे सेजे तप थायरे, एवं छे जो आ मंदिरमांयरे' भा श्रीमुखना शब्दो मुजब घोळेरा मंदिरने ने समये बदरिकाश्रमवत् पोताना तप त्याग वैराग्यने अनुगुण पोपक जाणीने तेमज घोळेरामां मदिर करवा नियोजेला अने देवप्रतिष्ठा पछी पण महंतपदे रहेला अञ्चतानम्य स्वामिने तप त्याग वैराग्यादि गुणोना मूर्तितमा समागमाई जाणीने त्यां वधारे रहेवानुं प्रसन्न करता अने पाछळना भागमां घणुं खरुं त्यांज रहेला अने अक्षरवास त्यांज रहीने थयो हतो.

एक समये स्वामिने रोगविशेषथी विशेष दुःख थनुं जाणीने सेही संत हरिभक्तो मळीने स्वामिने निर्दुःख करवानी अथवा धाममां लइ जवानी श्रीहरिप्रार्थना करवा लाख्या. आ बाबतनी स्वामिने खबर पडतां सर्वने कह्युं के-"मारा
शरीरमां दुःख थनुं होय ते भले थाय परंतु तमारे तो मारा दर्शनादिकनो
लाभ छे अने मारे पण प्रारब्ध कर्मना निरवशेष नाशरूप मोटो लाभ छे अने
सर्वज्ञ सर्वभुहत् भक्तवरसल भगवान् यथुं जाणे छे ते जेम करखुं हशे तेम करशे"
एम कहीने तेना सम्बन्धनो केटलोक उचित उपदेश आप्यो. आ बाबतपण
स्वामिनी सुदृढ आत्मनिष्ठा अने वैराग्यनी निःसीमताने मुचवेछे.

स्वामी केवळ पोतेज तपादिकना इशकवाळा हता एटलुंज नहि, पण बीजा-ओने पण तेवा बनावानी तमझा धरावता हता. कोइ समये काळवेगथी बीजा-ओनी त्यागादिकमां शिथिलता जोइने ते नहि सहन थतां त्यागादिकनी प्रशंसा-पूर्वक 'मननी चातुं मनमां रही रही गइ रहीरे' इत्यादि आठ पदथी तथा 'श्रीजि पधार्या स्वधाममां, मेली पोताना मळेल' आ घोळथी बहु परिताप पण कर्यों छे. आ रीते त्याग वैराग्यनी खामीवाळाओने पण उपदेश आपीने टोकीने पण साचा त्यागी विरक्त थाय एवो उपाय हेता हता.

उपर प्रमाणे स्वामिनी अनन्यसाधारण अनुपम आदर्शरूप विशुद्ध विरक्त-वृत्ति अने तीव तप त्याग वृत्तिने लीधे संप्रदायमां एमनुं ओळखाण वैराग्य- मूर्ति तपोमूर्ति त्यागमूर्ति तरिके थयुं इतुं. कोइ प्रसंगे त्यागिकोमां साधु-तानी रसाकसी थतां 'तुं हों निष्कुळानन्द थइ गयो ?' एम उदाहरण अपातुं. आ उपरांत बीजा निष्कामादि गुणोपण सहज सिद्ध उदाहरणीय हता. आ रिते समस्त आरमगुणोधी इष्टदेव भगवान् श्रीहरि अने तदाश्रित संत हरिभक्तोने घणा प्रसन्त करीने उच्च नंबर मेळव्यो हतो.

प्यीज रीते स्वामिए भा उद्धव संप्रदायने आध्याध्यिक ज्ञान अने तहुपयोगी धर्मादि साहित्यनो बहोळो लाभ सरस सरल करी आप्यो छे, संप्रदायनी चिरकाल प्रिष्टनो जे प्रथम हेतु वचनामृत ग मध्य० ५८ मा श्रीमुखे जणाव्यो छे अने भावि जनोना करुयाण माटे जे संकरुप प्रंथनिर्माणरूप कर्यो छे तेने बहु मान आपिने जुदा जुदा विषयपर घणा प्रंथो-भक्तचिन्तामणि (१) यमदण्ड (२) सारसिद्धि (३) यचनविधि (४) हरिबळगीता (५) धीरजाख्यान (६) स्नेहगीता (७) पुरुषोत्तमप्रकाश (८) भक्तिनिधि (९) हृदय-प्रकाश (१०) करुयाणनिर्णय (११) मनगंजन (१२) गुणग्राहक (१३) चोसठपदी (१४) हरिविचरण (१५) हरिस्मृति (१६) अरजीविनय (१७) अवतारचिन्तामणि (१८) चिन्हचिन्तामणि (१९) पुरुषचिन्ता मणि (२०) लग्नशक्तामणी (१८) चिन्हचिन्तामणि (१९) पुरुषचिन्ता मणि (२०) लग्नशक्ताचली (२१) चिन्हचिन्तामणि (१०) लग्नशक्ता प्रकाश कर्या छे. आ उपरांत बीजां लगभग त्रण हजार क्रितंनो पण कर्या छे. आमां श्रीहरिनी आज्ञाथी पहेलबहेलो यमदण्ड प्रन्थ करीने श्रीहरिने वांची संभळावतां घणा प्रसन्न थहने स्वामिनी कवनशक्ति सारी जाणीने बीजा ग्रंथो करवानी आज्ञा आपी हती.

भा प्रन्थोमां घेदवेदांतार्थ स्मृत्यर्थ पुराणार्थ अने नीत्यर्थ विगेरे सर्वोपयोगी समप्र विषयो वर्णव्या छे. एवो कोइ अर्थ निह होय के जे स्वामिए स्वकाव्यमां मिह वर्णव्यो होय. तेमांपण 'यावानर्थ उद्पाने सर्वतः सम्भुतोदके' आ गीतावाक्यमां कह्या प्रमाणे मुख्यपणे मोक्षमां उपयोगि थाय एवां स्वधमे आत्मज्ञान वैराग्य महात्म्यज्ञान मिक्त अने तदुपयोगि सत्समागमादि साधनो सारतर वर्णव्या छे. तेमां पण प्रगट इप्टदेवनुं सर्वोपरिपणुं अने तेमनी प्रत्यक्ष भक्तिनो मिहमा आ वे बाबतो तो अनुस्यूत विहोपतः सयुक्ति वर्णयी छे. संप्र- दायना संस्कृत महाग्रंथोमां घणुं साहित्य सरस छे पण तेनो लाभ भणेलाज लड् दायना संस्कृत महाग्रंथोमां घणुं साहित्य सरस छे पण तेनो लाभ भणेलाज लड् दायना संस्कृत महाग्रंथोमां घणुं साहित्य सरस छे पण तेनो लाभ भणेलाज लड्

बुदिना अभगोपण छाभ छड् शके एवं सुस्रभ करी आव्युं हे. वळी जुदा जुदा सरल गुजराती दोहा भोपाइ छंद बूस विनोरेमां प्रधित होवाथी श्रोता बक्ताने स्वतः रस उपजावमारा छे. स्वामिष् जेजे विषयतुं वर्णन कर्युं छे ते जाणे तदाकार आवेहुव मळतुं छे. स्थामिए अर्थसिव्हिमारे जे इष्टांती आप्यां छे ते पण अर्थसाधक सरक कोकप्रसिद्ध अने अर्थगंभीर सरस छे. कवितामां झरझमक पण अन्यत्र दुर्छभ जबरी गोठवी छे. एम काव्यनी कमनीयतामां र्ज अर्थगीरुव पदछालिस्य शब्दसीष्ठव विगेरे गुणी अपेक्षित छे ते तमाम सुंदर रीते दाखध्या छे. स्वामिने गुजराती उपरांत हीन्दी अने कच्छी भाषानुं पण ज्ञान हतुं. तेते भाषामां करेलां कांच्य कीर्तनो केटलांक मर्ळी आये छे. स्वामि-कृत कवितामां संस्कृत शब्दो अपरिचितपण धनेक आवे छे, वळी तेते संस्कृत प्रयोगा अर्थनुं अनुकरण आधे छे, जेथी स्वामिने संस्कृत भाषानुं ज्ञानपण सारं हरो अने घणा प्रंथोर्नु अवलोकन हरो एम जणाय छे. लीकिक अर्थोनुं निरूपण-पण मूर्तिमान् बहु होवाथी तेमांपण तेमनुं प्राधीण्य प्रतीत थाय छे. अनेक जातना छंद छपय बूस बिगेरे रागबिहोषो काव्यमां आये छे जेथी पिंगळनुं ज्ञानपण उपयोगि उंचु जणाय छे. गुजराती भाषामा भन्य भाषाना शब्दो बहुधा आवे छे ते तो तेना अभिज्ञने खबर पडे काव्यमां काठीयाबाडी शब्दों प्रधानपणुं छे ते तो देश जातिने अनुगुण छे. छंद वृत्त विगेरेमां कोइ गणदोष के बीजा दोषो थया होय ते तो सहज होहने सहनीय छे, उपयोगी तो अर्थ छे, पुनी उपर दृष्टि राखनाराने दोष जणानो नथी एम पोतेज जणावे छे. एम खामीए सर्वोपयोगी साहित्यभर घणा प्रंथो गुंधीने मोटो उपकार करी बताब्यों छे. अत्यारे स्वामिकृत प्रंथों अने पदो बहुधा संप्रदायिजनो वांचे छे भने गाय छे. ए एनी प्रियतानो प्रत्यक्ष पुरावो छे

स्वामिए जुदा जुदा विषयो उपर गुंथेला प्रथोमां मोटामां मोटो सर्वार्थपूर्ण सर्वोपयोगी सर्वोत्तम प्रथ था भक्तिन्तामणि वर्ते छे. थानुं भक्तिन्तामणि नाम आप्युं छे ते यथार्थ छे. कारणके आमां भक्तिन्तामणिभूत परंष्रहा भगवान् प्रगट इष्टदेव श्रीसहजानन्दस्वामिनां भक्तित्तमणिरूप अद्भुत अली- किक अप्राकृत पवित्र लीलाचिरत्रोनुं वर्णन होवाथी चिंतनकर्ता भक्तोना चिन्तामणिषद् ईप्सित समस्त मनोरथोने आपनार छे. था अनुगत अर्थ स्वामिएज प्र० १६४ "भक्ति चिंतामणि ग्रन्थ कह्यो, सतसंगिने सुखकूप।

जेमां चिरत्र प्रगटनां, अति परम पावन अनुप ॥ बीजा ग्रंथतो बहुज छे, संस्कृत प्राकृत सोय । पण प्रगट उपासी जनने, आ जेवो बीजो नथी कोइ ॥ जेमां चिरत्र महाराजनां, चळी वर्णव्यां वारमवार । वण संभारे सांभरे, हरिमूर्तिं है यामोझार ।" इत्यादि पंथमाहात्म्य कहीने अंते 'आ भक्तचिन्तामणि नामरे, जेजे चिंतवे ते थाय कामरे । हेते गाय सुणे जे आ ग्रंथरे, तेनो प्रभु पुरे मनोरथरे । सुख संपत्ति पामे ते जनरे, राखे आ ग्रंथ करी जतनरे । शिखे शिखवे छखे छखा वेरे, तेने त्रिविध ताय न आवेरे । आव्या कष्टमां कथा करावेरे, थाय सुख दुःख नेडे नावेरे ॥' एम स्पष्टपणे कह्यो छे. आ ग्रंथनो छखनसम्य छखनस्थान अने प्रकरणसंख्या 'गंग उन्मत्त तीरेछे गामरे, परम पवित्र गढडुं नामरे । तियां भावेशुं कथा आ भणिरे, भक्तप्रिय भक्तचिंतामणिरे । संवत् अठार वर्ष सत्यासिरे, आसो शुदी सुंदर तेरिसरे । गुरुवारे कथा पुरी कीधीरे, हरिभक्तने छे सुखनिधिरे । भक्तचिंतामणि ग्रंथनां, प्रकरण एकसो चोसठ'' आरीते पोतेज कहेछे. जेथी तेमां कोइना विवादने स्थान रहेतुं नथी.

स्वामिए करेला सारसिद्धि आदिक ग्रंथोमां एकांतिकी आत्यंतिकी भक्ति तथा तदुपयोगी धर्म आत्मज्ञान वैराग्य अने माहात्म्यज्ञान तथा तदुपयोगी सत्समागम श्रद्धा आदिकनुं निरूपण सविस्तर कर्यु छे. आमां तो 'कलौ सङ्कीर्त्य केशावम्' इत्यादिमां कह्या मुजब किलक्षालमां कह्याणमाटे मुख्य मानेलो जे प्रपट भगवाननो लीलाकथारस एनुंज खास वर्णन होवाथी आ ग्रंथ सर्व मुमुश्रुओए विशेष्तः आदरणीय छे. आ यावत पण 'जेम सागर तरवा नावरे, ते बिना बीजो नथी उपावरे, माटे कहेवां प्रगटनां चरित्ररे, तेह बिना न थाय पबित्ररे । बीजी कथा तो वहु छे, पण आजेवी एके नथी । भवरोग अमोध जाणी, प्राणी करे कोई विचार, एह बिना ओषधि एके, नथी निश्चय निर्धार । सुखनिधि श्रीहरिकथा, जन जाणज्यो जहर । सत्य मुनि कहे देवता, सुणी धारज्यो सहु उर ॥" आरीने पोतेज जणावीछे.

प्रथमनां प्र० ६०० मां प्रगट इष्टदेव श्रीहरिनां क्रमवार आविभीवशी अंतर्धान-सुधीनां असाघारण ऐश्वर्षभरेकां अञ्चत अप्राकृत लीलाचरित्रोनुं संपूर्णपणे विना संकोचे सरस वर्णन यथास्थित आप्युं छे. पछीनां ५ मां इष्टदेवनो अपार महिमा सामर्थ्य अने परतरत असंको चथी युक्तियुक्त अनुवर्णव्युं छे. पछीनां ७ मां संनो तथा सांख्ययोगी हरिभक्त बाइभाइनां लोको त्तर वनमान कहां छे. ते पछीनां १५ मां हरिभक्त बाइभाइने नी समरणीय नामावळी देशवार प्रःमवार जन्तिवार अने तेना उचित गुणवार आपी छे. पछीनां ३१ मां भगवान् श्रीहरिए अनेक आश्रित अनाश्रितने कृपावशात् आपेला अद्भुत परचा (पारमैश्वर्यप्रदर्शक) वर्णव्या छे. ते पछीनां ६ मां एकांतिकप्राप्य गोलोक अश्वरधाम, श्रीहरिनो स्वधाम सीधावानो संकल्प, आश्रितोने धीरज आपयी, श्रीहरिनुं स्वेप्सित गोलोकधामगमन, वियोगतुःख, ग्रंथनो संक्षिप्त विषयोनुक्रम अने ग्रंथनो महिमा विगेरे विषयो वर्णवीने ग्रंथ पूर्ण कर्यों छे.

आमां १५ प्रकरणथी जे उत्तम हरिभक्त याइ भाइओनी स्मरणीय नामावली आपी छे एतो अत्युपयोगी अयुत्तम कार्य छे. आशी तो अत्यारे आपणे कया देशमां कथा गाममां कई जातिमां केवा केटला भक्तो श्रीहरिना प्रत्यक्ष समा-गमवाळा थइ गया ते सहजमां जाणी वाकीए छीए अने अयारे तेमना तेमना वंशाजो पण पूर्यजोनी वात सांभळीने तेमना प्रत्ये सद्भाववाळा थयानी साथे श्रीहरिविषे पण भगवानपणाना भाववाळा थायछे हाळता जमानानी दृष्टिएतो आ कार्य मोटामां मोटुं उपयोगी प्रशंसनीय मानी शकाय. वंभक्त आवो संप्रह प्राचीनी बहुधा करता निह तेने आ लोको बहु आवश्यक माने छे. वळी ३१ प्रकरणथी जे परचानुं वर्णन आएयुं छे ते पण अत्यंत उपयोगमुं छे. जेना श्रवण मननथी देवी जीवोने श्रीहरिविषे परमेश्वरणणानी प्रतीति थतां तेमांज गाढ अनुराग थवाहारा परम पहनी प्राप्ति सुखेशी थाय. आ संप्रहपण अन्य प्रयोमां न मळी आवे एवो अपूर्व अयुत्तम अत्यावश्यक छे. आ भगवान अने भक्तोना खास संयन्धवाळा वे संग्रहो स्वामिण बहु दीर्घरिष्ठियी अने बहु खंत महेनतथी कर्या जणाय छे. आवा मंग्रहमां बीजाओने तो अन्येश्वित मानीने अनावर रहाो हरो पण स्वामिएतो अत्यादर दर्शाक्यो छे.

वळी परंपराथी एवी वात संभठाय छे अने दाखछोपण मळी आयेछे के-स्वामिएतो आमां श्रीहरिनां लीळाचरित्रो अने उत्सव समया विगेरे ज्ञातब्य अथी संवतवार मासवार तिथिवार अने टाइमवार प्रथम छख्या हता परंतु अन्य मुख्य प्रथानी साथे कोइ अंशे विरोध आववानो जणावाथी तेथो उन्हार कमी क्यों छे. तथापि बहुधा मासतिथितो छखीज छे. आ प्रयक्षपण एमनो अनहप छे. आ प्रंथ संप्रदायना सर्वस्वभूत मुख्य मान्य महाप्रंथ सरसंगिजीवननी शैकीने सर्वथा अनुसरे छे. प्रथम इष्टदेव गुरुदेवने वंदनारमक मंगळाचरण, हिमाद्रिवर्णन, तरस्थ वदरिकाश्रमवर्णन, तरस्थ नरनारायणनिरूपण, धर्म भक्ति अपिओने दुर्वायानो शाप, श्रीकृत्णनो श्रीहरिरूपे प्रादुर्भाव, छपैया अयोध्यामां निवास, वनविचरण, रामानंदस्वामिमेळाप, गुरुपदे स्थापन, नानादेशविचरण, धर्मादिकनी स्थापना, मंदिर आचार्य अने शास्त्रनी सकारण प्रवृत्ति, अत-धानळीला, धर्मादिकनो बोध, विगेरे बधी बाबतो बहु मळनी आवेछे. शिक्षापत्री विगेर मुख्य प्रयोनी साथ विरोध न आवे ए उपर पुरो लक्ष आप्यो छे.

प्रगट इष्टदेव श्रीहरिनो सर्वोत्कृष्टत्वसूचक मोटो महिमा वर्णववामां कोइनी शरम के भय के धडक के संकोच राख्यों नथी. ते पण वेदवेदान्तादि मान्य शाठ सच्छाखोनी तथा सांवद।यिक स्थापित शास्त्रीय तत्त्वदृष्टिने लेशथी पण निष्ठ उलंघन करीने युक्तियुक्त वर्णव्यों छे. इत्यादि प्राह्म गुणोतो प्रथना वांचनथीज सुक्रोने जणाशे. जेथी विवेचननी जहर नथी,

# आ ग्रंथनुं सच्छास्त्रानुसारि हार्द अने विपयो—

आ प्रवन्ध यद्यपि प्राकृत पद्यमां छे तथापि वेद्वेदांतार्थथी परिपूर्ण छे, जे वेद्वेदांतार्थ छे ते उपेय अने उपाय आ वे मुख्य विषयोमां वहेंचायेलो छे. एमांज समस्त अर्थनो समावेदा आवी जायछे. मुख्य परमाध्मस्वरूप अने तद्यमुख्य कन्धी रूप अने ते वल्लेना गुणो अने तद्दनुबन्धी विषय धाम मुक्तो विगेरेनो उपेय (प्राप्य) मां समावेदा छे. उपेय परमाध्मस्वरूप अने तद्दनुबन्धी धामाविक्रनी प्राक्तिनां साधनोने उपाय कहेछे. तेमां ज्ञान ध्यान उपासनशब्दथी वाच्य मुख्य भक्ति अने तेनां साधनो धर्म आत्मज्ञान वैराग्य महास्थ्यज्ञान अने तेनां साधनो सस्समागम अद्या विगेरे छे. आ सर्वनो उपायमां समावेदा छे. आ अधी बावतो उपयोगी आ प्रथमां संक्षेपथी गृह रोते अनुस्यूत छे.

#### स्वरूप—

परमात्माने खरूप, रूप, तेना गुगो, विभूति त्रिगेरे अनेक प्रकारे वर्णव्या छे, तेमां स्वरूपनी मुख्यता छे. सिच्च तान्य ज्ञानवन स्वयंप्रकाश अनन्त सर्वातमा सर्वव्यापक सर्वाधार सर्वनियंता सर्वस्वामी अतिसूक्ष्म अने सर्वकारणपणे जे वर्णव्युं छे ते स्वरूप समज्ञ्चं. आ स्वरूप 'एकोऽहं बहु स्याम्' एमां क्या प्रमाणे हुं शब्दथी बोध्य छे. जेमां ज्ञानादि छे मुख्य अने बीजा कारण्यादि अनम्त गुणो वर्णव्या छे.

आ सरूप आमां—'महाज्ञानधन' 'तत्त्व ज्ञानादि नाम कहेवायरे' 'नमो सिच्चित्तन्द् चराचर' 'सहजानन्द आनन्दकन्द' 'खयंप्रकारा सहुना स्वामी' 'सर्वोपिर सर्वायार' 'पुरुषोत्तम वासुदेव नारायण, परमात्मा परम द्याळ । परब्रह्म ब्रह्म परमेश्वर, विष्णु ईश्वर वेद कहे चळी' 'सर्व कारणना कारण निर्गुण' 'नमो अपरमपार अकळ' 'कहीप श्रीकृष्ण पुरुपोत्तमरे, हिर नारायण अंतर्यामीरे । भगवान प्रभु बहुनामीरे' 'नमो अनन्त अच्युत अनादि' 'नमो विश्वरूप विश्वंभर' इत्यदि स्वरूपानुबन्धी तत्त्वशब्दोथी वर्णन्युं छे. आ बाबत शब्दना वेदांतानुसारी अर्थना ज्ञाताने सुन्नेय छे.

#### **Æ**4—

गोलोकादि एक देशमां नित्य निवास वर्णववा पूर्वक सर्वान्तरासमा विभु अहमर्थ स्वरूपधी भिन्नपण दिन्य विशेषणनी साथे मूर्ति विभ्रह आकार देह वपु आदिक शब्दोधी निरूपेलुं, पाणि-पाद-मुख-मस्तकादि विविध अवयवीना सिन्न-वेशवालुं, शोभाने संपादनार दिव्य पीतांबरादिवस्त्रो मुकुट-कुंडळ-कटकादि विभूषणो अने शंखचकादि आयुधीना आश्रयभूत, दिग्य रूप-रस-गन्धादिकना आधारभूत, खीरूप लक्ष्मी राधादि पत्नीओए विशिष्ट, श्रीदाम गरुड आदिक अनन्त नित्यमुक्तोए छत्र चामरादि राजोपचारथी सदा सेवातुं, जेमां श्याम वर्ण, किशोरवय अने औज्वव्य सौन्दर्य आदिक आकर्षक आह्नादक गुणो वर्णव्या से अने जेमांथी मस्यादि रामादि अनंत अवतारो थाय से ते रूप समझ हुं.

भावधी बाबत भा प्रन्थमां—'मंगळमूर्तिं महाप्रभुं 'एवा अक्षरधाममां तमे, रहो छो छुण्ण छपाळ' 'वळी मूर्तिमान जुदा रहा।' 'आन-व्यमय दिव्य मूरत' 'मारां छोक मारी मूरति, ते सत्य निर्गुण छे सिंहे' 'एषुं अति सुंदर सिंहासनरे, तेपर बेटा छुण्ण भगवानरे। घनइयाम ने वय किशोररे, पीतपट कर वंशी सोररे' 'एवा श्रीकृष्ण किशोरमूर्ति' 'घनइयाम ने तन प्रकाश' 'साह सुंदर तन छे इयाम रे, माटे एनं कहीए छुण्ण नाम रे' 'सारो मुगट धर्यो छे माथे रे' 'नमो पश्चनाभ पीतांबर' 'नखिशिख सज्या शणगार' 'केशव कमळनयन' 'नमो महाबाहु मंजुकेश' 'नमो कौमोदकीधर नाम' 'नमो कौस्तुभित्रय' 'नमो श्रीवत्सांकधर' 'नमो चतुर्भुज चक्रधर' 'वीठा चार आयुध चारे हाथे रे' 'मनुष्यतन' 'नमो श्रियनाथ २ भ०वि॰प्र॰

श्रियपति' 'संगे इन्दिरा शोभानी खाणी' 'छक्ष्मीवर' 'राधा रमा रहे दोय पासेरे, जुवे श्रीकृष्ण हेते कटाक्षेरे' 'वीजि लिलतादि सखी जेहरे, राधा रमा सम वळी तेहरे' 'वळी प्रभुना पार्पद जेहरे, छत्र चामर सेवाना साजरे। तेणे सेवे राजअधिराजरे' 'तेमां ब्रह्मरूप सकळ, कोटि मुक्तनां मंडळ' 'श्रीदामा आदिक पह सोळरे, सचे करे श्रीकृष्णनी सेवारे' आ रीते संक्षिप्त वर्णवी छे. विशेषना जिज्ञासुए प्र. १४ नी २८ थी ३३ सुधीनी तथा प्र. १५९ नी ४६ थी ६१ सुधीनी चोपाइओं तथा ते ते भगवत्स्तुतिभागे वांचवा.

# गुणो---

स्वरूपना गुणो तो-सर्वज्ञनारूप ज्ञान, अघटितघटना सामर्थ्यरूप अथवा जगत्प्रत्ये कारण थवारूप शाक्ति, सर्वने धारवारूप चळ, सर्वने नियममां राख-वाना सामर्थ्यरूप अथवा स्वतंत्रपणे जगत्सर्गादिरूप ऐश्वर्य, सर्वना धारण नियमनमां अशिथिलतारूप अथवा जगत्प्रत्ये उपादानकारण यवा छतां पण निर्विकारपणारूप वीर्य, सर्वने पराभव करवाना सामर्थ्यरूप तेज, आ छ गुणो के जे भगवच्छब्दवाच्य छे ते जगत्सप्ट्यादिकमां सास उपयोगी होवाथी मुख्य मान्या छे. बीजा-स्वार्थनिरपेक्ष परदुःखनिवारणेच्छारूप अथवा परदुःखे दुःखी थवारूप दयापर्याय काराण्य, पोतानी मोटाइने नहि गणीने मंदो साथै पण निष्कपट मेळापरूप सौशीरूय, भक्तोना दोपोमां पण गुणवन्नविरूप अथवा अक्तना दोष नहि जोवारूप घात्सस्य, बहु आपीने पण तृप्ति नहि पामवारूप औदार्य, सुदुर्छम छतां सर्वने सुलभ थवामां उपयोगी गुणविशेषरूप सौलभ्य, उपकारनी अपेक्षा नहि राखीने उपकारिनुंज जेम एम अपकारिनुं पण भलुं इच्छवारूप सौहार्द, आश्रितोनी इच्छाने अनुमारे रहेवारूप सरछता अथवा आश्रितो प्रस्ये मन वाणी कायनी कुटिलताए रहितपणारूप आर्जव, अपराधि-भोपण आश्रय करी शके एवो कोमळ स्वभाव तेरूप मार्च्च, अभग्नप्रतिज्ञारूप अथवा आरंभेला कार्यमां अनेक विझो आये तथापि तेने पुरुं करवाना सामर्थ्य-रूप धैर्य, स्वयं शीरवत् स्वातुपणारूप भथवा सत्य प्रिय बोलवारूप माधुर्य, समुद्रनी पेठे क्यारेय नहि क्षोम पामवारूप गांभीर्य, उच्च नीच जात्यादिकना विभाग विना सर्वने माश्रय आपवारूप साम्य, भक्तोनां कार्यो दीव्र करी देवानी कुशळतारूप दाक्षिणय, जाति वृत्त आदिकनी आलोचना कर्या विना सर्वना रक्षक थवारूप दारण्यता, भक्तना अपराधी सहन करवाना स्वभावरूप

क्षमा, स्वतः शुद्ध स्वभावपणारूप सथवा सर्वने पवित्र करवारूप शुस्तिता, भक्तोप करेळा अरूपपण उपकारने बहु मानवारूप कृतश्चता, विगेरे भक्तोप-बोगी छे. करुयाणगुणाकर भगवानना आ गुणो निख निःसीम निःसंख्य निरुपा-धिक निर्दोष अने निःसमाधिक छे. आ गुणोर्नु आश्रय चेतन परमास्मस्तरूप छे.

देहपर्याय रूपना गुणो तो—तेज प्रकाश शादिक शब्दोधी कहेलुं औड़वहरंथ, कर चरण मुख मस्तकादिक अवयवोनी समुचित शोभा के जेनाथी सर्वनी मनो- कृषि अने नेज्ञवृत्ति एकदम हराइ जाय तेरूप स्नौन्दर्य, समुदाय शोभा के जे चक्कुने आनन्द उपजावनारों शांत शीतळ तेजोविशेष होइने ज्ञानी ध्यानी अक्तोने चन्द्रचन्द्रिकावत् आह्नाद् आपनारी छे तेरूप लाद्यच्य, देहमां कीमार वय पछी जणातो कोइ रमणीय स्वभावविशेषरूप यौद्यन, चन्द्रन पुष्प केसर आदिकनी अपेक्षा विना स्वतः अतिशय सुगन्धपणु अने बीजाओने पण सुगनिधमान् करवापणुं तेरूप सीगन्ध्य, मदुतारूप सीकुमार्य, अने द्वेषिओनी- पण दृष्ट चित्तने हरवापणे करीने रसने उपजावारूप माधुर्य, इत्यादि अनेक भक्तभोग्य वर्णस्या छे. आ गुणोनुं आश्रयतो दिन्य रूप छे.

यद्यपि वर्णववामां स्वरूप धने रूप धने तेवा गुणो एक साथेज संमिश्रित-पणे वर्णवे छे परंतु स्वरूपना ज्ञानादि गुणो रूपमां धने रूपना सौन्दर्यादि गुणो स्वरूपमां संभवता निह होवाथी जुदा जुदाज जाणवा पढ़े. स्वरूप साथे रूप धने रूप साथे स्वरूप धने तेना गुणो अपृथक्ति इहोवाथी पृष्ठुं मिश्रित वर्णन धटतुं आवे छे. आपणे कोइने 'ज्ञानी रूपाळो' कहीए तो तेमां झानी विशेषण आत्माने अने रूपाळो विशेषण रूपनेज लागु थाय. जेम आपणो शहमर्थ (हुं शब्दथी बोध्य) आत्मा अने इदमर्थ (आ शब्दथी बोध्य) देह धने ते बखेना गुणो जुदा जुदा छे तेम परमात्मामां पण जाणी छेतुं. आत्मा प्रसूक्ष भने देह ए रूप कहेवाय 'एकोऽहं चहु स्यां' 'यस्मात्क्षरमती-तोऽहं' आ श्रुति स्मृतिमां कद्मा मुजब 'जे कारण हुं आवियो' 'हवे जाहरा हुं धाम मारेरे' 'हुं रहीश वरताल त्यांहिरे' एम जे हुं शब्द धने हुं बुद्धिशी व्यवहार कर्यों ते श्रीहरिनुं आत्मस्वरूप समझनुं अने 'समझे साकार संत ते सदारे' 'हरिनामे हुं थाहश वाळरे' 'माटे धर्म घेरे धरी तनरे' 'जेष्ट अर्थे छे आ अवताररे' 'बीजा मंदिर मूर्ति मारेरे, देमां रहीश हुं सर्व प्रकारेरे' एम बाल तन अवतार आकार मूर्ति आदिक शब्दथी पृथक्पणे व्यवहार कर्यो छे ते श्रीहरिनुं रूप समझबुं. भा रीते सगुण स्वरूप रूपनी भिन्नता तत्त्वतः सर्व भक्तोने प्रत्यक्ष थयेछी छे.

गुणसागर भगवानना आ गुणो आ प्रथमां-'जय गुणसागर गोविंद' 'नमो निर्गुण सगुण खामी' 'नमो गुणपार गुणवंता' 'गुण प्राक्रमे करी बहु नामरें 'गुण खाभावि छे नथी आब्यारे' 'वळी गुण जेना अपार छे' 'जय ज्ञान विज्ञान गंभीर' 'क्षरअक्षरपर सर्वज्ञ छो' (ज्ञान) 'जे कोई अनन्त शक्तिना ईश' 'सर्व कारणना कारण निर्गुण' 'नमो संपूरण कळा सोळ' ( शक्ति ) 'सर्वोपरी सर्वाधार' 'नमो बलवंत यहुनामी' 'बहुनामी बळ प्रबळ छो' 'नम्नता शील सह ओज बळरे' (बळ) 'जय ईशतणा महा ईश' 'श्रीकृष्ण सर्वा-धीश' 'सर्वकर्ता नियंता अन्तर्यामी' 'प्रकृति पुरुष काळ प्रधान, महत्तत्वादिक शक्ति घणी। तेना प्रेरक अनन्तकोटी, ब्रह्मांडना तमे धणी' 'नमो क्षर अक्षर नियंता' (सर्वनी अंदर बातमापणे रहीने नियमन करवारूप ऐश्वर्य) 'अच्युत अनन्त अनादि' 'निर्छेप ने निर्धिकारीरे' (बीर्य) 'अपार तेज प्रताप' (तेज) 'परम दयाळु छो तमे' 'करुणानिधि कुपाळ कोमळ' 'परदुःखे पीडाय छे अति' (कारूप) 'पवा सुशील जोइने सहुरे' 'मेली पोतानी मोटप्य नाथ, मळी रह्या मनुष्यने साथ' (सोशिष्य ) 'उदार पर उपकारी अति' 'दयाळु ने वळी दातापणुरे' (औदार्थ) 'भक्तवत्सल भगवान' 'शरणागत-धत्सळ अनीष्ट्रे' (वालक्य) 'महाधीर गंभीर गरवा' (धैर्य गांभीय) 'सर्व उपकारी दया घणुरे' (सीहार्व) 'माटे आतो छे अंशरण शर-णरे' 'देशे बहु जीवने अभय दानरे' (शरण्यता) 'एवा क्षमावंत महामति' 'शुभ शांति गुणे सहित' (क्षमा) 'जप तप तीरथ करते, नावे धरते जोगीने ध्यान । ते आवे जनने भुवन चाली, महेर करी महेरबान' ( सीलभ्य ) श्रीहरिना केटलाक गुणों प्र. ४६ मां 'सत्य शीच वया क्षमा त्यागरे' 'संतोष आर्जव' एम नावी जाय छे. भा रीते स्वरू-पना ज्ञानादि अने कारण्यादि गुणो वर्णवेछा जाणी छेवा.

'जय तेजः पुंज राशिरे' 'कोटिकोटि इन्दुनो उजासरे, अंगअंग प्रत्ये प्रकाशरे' 'धनश्याम ने तन प्रकाशरे' (ओज्ज्वस्य) 'कोटि कंदर्प हरो' 'शोभासागर सुंदर श्यामरे' 'सारी प्यारी छवी सुख- धामरे 'मनोहर सुंदर घनइयामरे 'छबी जोइ लाजे फोटि कामरे' (सीन्दर्य) 'एवा श्रीकृष्ण शोभा खाणीरे' 'सामुद्रिके कहाां शुभ चिन्हरे, तेणे युक्त श्रीकृष्ण सुखायनरे 'शोभाधाम श्याम' 'एवी अंगोअंग शोभा अतिरे' (लावण्य) 'रसक्तप रिक्त भूरतिरे' (माधुर्य) 'किशोरमूर्ति' 'धरी सोळ वर्षमुं खरूप (यौवन) 'कोमळता कही नथी जाती, सर्वप फुल माखण ने कंज, जाणु पाम्या कोमळता रंज' (सोकुमार्य) था प्रकारे रूपना गुणो संझेपमां सूचम्या छे. आ गुणो आकर्षक होइने भक्तोने बहु भोग्य छे.

विभूति--

लीलाविभूति अने नित्यविभूति एम वे प्रकारनी विभूति कहेवाय छे.
तेमां अनन्त अंडरूप प्रकृतिमंडळ छे ते भगवाननी सृष्टिसंहारादिक जे लीला तेमां उपकरण होवाथी लीलाविभूति कहे छे. परमधामतो सृष्टिसंहारने गोचर निह् होवाथी नित्य छे अने भगवाननुं दिन्य भोगोपकरण छे अने नित्यमुक्तोने अविच्छिक भगवदनुभवनुं स्थान छे माटे नित्यविभूति के गोलोक अक्षरधाम एम न्यपदेशाय छे. विभूति एटले नियमनरूप ऐश्वर्य. ते जेनी उपर प्रवर्ते छे एवा प्रधान पुरुष परमधाम अने नित्यमुक्तोने पण विभूति शब्दथी कहेवाय. आ बन्ने विभूतिओ उपर भगवाननुं साम्राज्य प्रवर्ततुं होवाथी विभूतिथी पण भगवाननी अपार मोटप्य कहेवाय छे.

का बाबत का ग्रंथमां—'प्रकृति पुरुष काळ प्रधान, महत्तत्वादिक शक्ति घणी। तेना प्रेरक अनन्तकोटी, ब्रह्मांडना तमे धणी' 'अक्षर गोलोक धामना धामीरे' 'आतो कृष्ण छे गोलोकपतिरे' 'जे कोइ सर्वे धामना धामी, जाणो तेज सहजानन्दस्वामी' 'जेवुं गमशे गोलोक धणीनेरे' का वावयोधी स्पष्ट छे. गोलोक कक्षर कादिक शब्दथी कहेली दिन्य नित्यविभूतिनुं सविस्तर काखुं वर्णन प्र. १५९ मां छे तेथकी जिज्ञासुए जाणी लेवुं. का रीते का प्रबन्धमां स्वरूप रूप गुणो विभूति विगेरेना निरवधिकातिशयथी भगवाननो सर्वोपरी समुत्कर्ष संवर्णन्यो छे.

यद्यपि 'एको ऽहं' एमां कह्या प्रमाणे परमात्मा अहमर्थ विभु चेतन आत्म-स्वरूपथी तो एकज छे. अनेकता जे वर्णवी छे ते स्वरूपमां नहि संभवती होवाथी रूपथी जाणवी. एम थतां एकत्व अनेकत्वमां परस्पर विरोध आवे नहि. अनेक रूपतानो पर ट्यूह अवतार अन्तर्यामी अने अर्चावतार आ पांचमांज समावेश थइ जाय छे. आ अर्थ आमां-'अनेक एकनी मूरति, अनेक एकनां नाम' 'जेनी मूर्ति हजारे हजार' आ वाक्यथी जणाव्यो छे.

#### पर-

गोलोकान्तर्वतिं अक्षरधाममां दिष्य पुरुषाकारथी विराजमान, दिष्य वस्त्र विभूषण आयुधोवडे आभूषित, राधालक्ष्मीसंयुक्त, नित्यमुक्तसेवित, अवतार-मूळ, अर्चिमार्गवडे मुक्तप्राप्य, जे दिष्य नित्य रूप छे तेने पर कहे छे. एनुं निरूपण प्रथम आवी गयुं छे. एनुं आखुं वर्णन प्र. १५९ थी जाणी लेवुं.

# व्यूह---

पर रूप पछी च्यूह आवे छे. आ पण परमात्मानांज एक प्रकारनां चतुर्भुज रूपो छे. वासुदेव संकर्षण प्रद्युन्न अनिरुद्ध आ चार च्यूह संज्ञाथी कहेवाय छे. केशवादिक चोवीश च्यूह पण कहेवाय छे. एमनुं ऊर्ध्वपुंड्मां स्थान वर्णस्युं छे. प्रत्येक ब्रह्मांडमां उपासको उपर अनुग्रह अने जगतनुं रक्षणादि ए च्यूहोनुं कार्य छे. ज्ञानादि गुणभेदने लीधे अने आयुध धारणना भेदने लीधे चार भेद छे. आ अर्थ आ ग्रंथमां—'तेना प्रेरक कृष्ण प्रमाणोरे, संकर्षण ने प्रद्युमन कहीएरे, अनिरुद्ध रूपे कृष्ण लहीएरे।' 'अनन्तकोटी ब्रह्मांडना नाथरे, उत्पत्ति स्थिति प्रलय हाथरे। चळी सर्वे ब्रह्मांडे महाराजरे, रहे जीवना कल्याण काजरे, आ रीते वासुदेव श्रीकृष्ण साथे चनुर्व्यूह कह्या छे.

### अवतार---

देव मनुष्यादिकमां तेने तेने सजातीय नाम रूपादिकना योगथी जे प्रायुम्मिव थाय तेने अवतार कहेछे. आतो पररूपनांज सजातीय दिनीय दिव्य रूपो अभिन्न छे. आतो आविभीव तिरोभावनुं स्थान होवाणी अनित्य छे. आ रूपो आकृत निह पण अप्राकृत दिव्य छे. अवतारोमों अवतारी परमाध्मतस्व अनुस्यूत होवाथी अवतारोने पण अवतारी कहेचानी योग्यता छे. माटेज जेने अवतार कहेछे तेने अवतारीपणे कहेछे. एम होवाथी अवतार अवतारीनी तस्यतः अभिन्नता जाणवी घटे. आ अर्थ आ प्रयन्थमां-'एद्या श्रीकृष्ण किशोरमूर्ति, आप्रइच्छाप अवतरी, युगोयुग जननां कारज करो, प्रथम मूर्ति धर्मथी, प्रगट्या पूरणकाम, नरनारायण नाथिज, त्यारपछी वसुदेव देवकीथी, प्रगट्या मधुरां मांय, त्यार पछी वळी जगमां, अधर्म क्याप्यो अपार, त्यारे तमे प्रगटिया, कोसल देशमां

घनइयाम' 'था तो कृष्ण छे गोलोकपितरे, आब्या छे पोते घरी मूरितरे' 'जय अवतारना अवतारी, मत्स्य कच्छ वाराह मुरारी' 'नरनारायणादि अनन्तरे, दिव्यक्तपे रहे भगवंतरे' 'हरि घरी पोते अवताररे' 'नमो अवतारना अवतारी' 'संत हेते घरी अवतार, करो अनेक जीव उद्धार। ज्यारे ज्यारे जेखुं पडे काम, त्यारे तेखुं तन घरो ह्याम। नमो मत्स्य तमोने मुरारी' 'धर्मरक्षा करवा मुराररे, धर्या मत्स्यादिक अवताररे' 'एवां चोवीश हरिनां रूप, एक एकथी अति अनुप' 'बहुरूपे बहु धामे रहुंछुं, त्यांना वासिने सुख दउंछुं' 'सर्वे अवतार तमेज धर्या, जुगोजुग जन उधार्या' 'कृष्ण कहीए जे गोलोक धामेरे, ते तमे थया छो हरि नामेरे' अक्षरपर पुरुपोत्तम जेह, तेणे धर्यु मनुष्यनुं देह' आ रीते अतिस्पष्ट छे. आ रीते परमात्मानाज अवतारो अने तेमनो परमात्मा साथे तस्वतः अभेद अने अवतारोनो पण परस्पर अभेद संगन्ध सुसिद्ध छे.

## अन्तर्यामी—

अन्तर्यामिपणुं एक स्वरूपथी अने बीजुं रूपथी एम वे प्रकारनुं मान्युं छे. जीवोनी विमुख दशामां पण पोते तेनी अंदर प्रवेश करीने सुहृद्भावथी तेनी सत्ताना निर्वाहकपणे जे रहेलुं छे ते स्वरूपथी अन्तर्यामित्व जाणवुं अने मगवानने अभिमुख थहने भक्तियोगमां प्रवर्तेलाओना अनुप्रहार्थे 'हृद्ययं' आ श्रुतिने अनुसारे हृदयकमळमां रूपथी पण सिक्षित्र आपीने ध्येय रूपनी प्रकाश करी आपवो ते रूपथी अन्तर्यामित्व जाणवु. भगवानतो अपरिच्छिश्च छे पण ध्यानास्पद जे हृदय ते अगुष्टपरिमित होवाथी ध्येय रूपपण अगुष्ट परिमित मान्युं छे. आ रूप तो उपासकोना अनुप्रहार्थे धारेलुं छे. आ अर्थ आमां-'दीठा अंतरे अन्तर्जामी' 'समझी समागम कयों छे, जाणी अन्तर्जामीने' 'नमो अकळ अंत्र्जामीरे' आ वाक्योमां स्पष्ट छे.

## अर्चाघतार—

शाश्रितोने अभिमत सुवर्ण शीला आदिक ने कोइ ब्रव्यने कृपावशात् शरीरपणे स्वीकारीने तेमां वेदविधिवशात् दिव्य रूपथी प्रगट थइने रहेवापणुं ते अर्चावतार जाणवो. नेने प्रतिमा मूर्ति शब्दथी कहेके. आ बाबत 'वळी निज आश्रितने काजेरे, कर्यु हेत बहु महाराजेरे। देशदेशमां मंदिर करावीरे, तेमां निजमूर्तिओ पधरावीरे' 'एम विचारीने ततखेव, पछी नरनारायणदेव। छक्ष्मीनारायणादिक सारी, पोतानी मूर्तिओ बेसारी' 'मूर्तिद्वारा पेश्वर्य जणावी' 'हुं रहीश वरताल त्यांहरे, मिक धर्म श्रीकृष्ण मांहिरे। वळी अमदाधादमां वासेरे, रहीश नरनारायण पासेरे। गोपीनाथ गढडामां अहिरे, हुं सदा रहीश ते मांहिरे। तेह मूर्ति ने मुज मांहिरे, तमे मेद जाणशो मां कांहरे' 'पछी भावेशुं भुजनगर। बेसारिया नारायण नर' 'नमो श्रीहरिजि शालग्राम' का चोपाइमां चोखी छे.

का रीते परमातमा परादि पांच रूपे रह्या छे. का सर्व रूपोमां सर्वान्तरातमा भगवान ज्ञानादि सर्व गुणोधी परिपूर्णपणे रहेला होवाथी सर्वेपण ध्येय उपास्य के. अने पृथी पूमां स्वतः कहा भेद कही शकाय नहि.

### उपायो---

प्राप्यभूत परमायानी प्राप्तिना उपायो अनेक बताव्याछे. तेमां ज्ञान ध्यान उपायन शब्दथी वाच्य सांग एकांतिकी भक्ति तथा प्रपत्तिनी भगवान साथे साक्षात संबन्ध धरावनार होवाथी मुख्यता मानी छे. तेमां प्रगटनी भक्ति प्रपत्तिनो विशेष छे. तेना उपायपणे धर्म आत्मक्षान वैराग्य माहात्म्य- श्लानने कथा छे अने तेना उपायपणे सत्समागम श्रद्धा नियम विगेरे बहु वावतो बतावी छे.

तेमां धर्म तो निष्कामपणे 'क्षातो सर्वतनु श्रीहरिनुं आराधन छे' एम मानीने करातो, जेमां मुमुक्षुनेज अधिकार छे, वर्णाश्रमना संबन्धवाळो, यज्ञ-वानतपादिरूप जाणवो, जेने कर्मयोग अपर नामथी कहेछे. आवो धर्म साक्षात् मोक्षमां हेतु निह बतो होवाशी अंतःकरणनी निर्मळता थवा द्वारा भक्तिमां छपयोशी थाय छे. ज्ञान तो आत्मा परमात्माना विवेकविषयवाळुं शास्त्रजन्य समझवुं. तेमां प्रकृतिथकी विषक्षण ज्ञानेकाकार परिज्ञुद्ध अष्टगुणविशिष्ट निस्य स्वारमस्वरूपना साक्षात्कारमां विश्लोति पामनारं, 'परमात्मानो हुं दास धुं' एवा सतत अनुसंधानवाळुं, आत्मज्ञान अप्रमनिष्ठा आत्मदर्शन आदिक शब्दथी कहेलुं जाणवुं. आवुं ज्ञान पण स्वतंत्रपणे मोक्षहेतु निह होवाशी भक्तिहारा छपयोगमां आवे छे. धर्मान निष्ठा अने मगवान सिवाय मायिक शब्दादि विषयमां अप्रीतिरूप छे. धर्ममां निष्ठा अने वात्मा अनारमानो विवेक होय पण जो वैराग्य म होप सो आत्मामां निष्ठा अने परमात्मामां भक्ति थती नथी. माटेज आत्म-निष्ठामां अने सिक्तनिष्ठामां वैराग्यनी जरुर छे. माह्यारम्यक्वान तो मगवानना निष्ठामां अने सिक्तनिष्ठामां वैराग्यनी जरुर छे. माह्यारम्यक्वान तो मगवानना

स्वरूप रूप गुण विभूति विगेरेना समुरकर्षविषयना विज्ञानरूप छे. स्वरूपदिकना माहारम्यविष्वारथी भगवानमां भक्ति उदय पामे छे धने ते स्थिर थह रहे छे. आखरे माहारम्यज्ञानतो भक्तिमांज परिणमनार होवाथी एनो भक्तिमांज समावेश थाय छे. निश्चयनोपण एमांज समावेश छे. स्तरसमागम तो संतोनां हितवचनो मानवां धते तेमनी सेवा करवी विगेरेरूप जाणवो.

उपानी बाबतो आ लीलाप्रधान ग्रन्थमां संक्षेपथी जणायी छे---'मनुप्य देहने इच्छेछे देव, ते पामी न करी हरिसेव। तेतो पशु पुछ दिंग हीण। मर होय गुणी परवीण। सर्वे गुणतो शोभे छे त्यारे, कृष्ण-भक्ति करे जन त्यारे। कृष्णभक्तिहीण गुण होय, वणलुणे व्यंजन-सम सोय। माटे कृष्णनी भक्ति छे मोटी। जेथी सुखी थया कोटी कोटी। एवं माहातम्य श्रीकृष्णतणुं, सुण्युं शास्त्र साधुथी में घणुं। कोइ रिते पुरुषोत्तम भजे, तेनुं अकाज न होय रजे। कामभावे भजी व्रजनार, मात तात तजी परिवार। सनेहे वसुदेव देवकी, दुए भावे करी भजी वकी। भये भजियों कंस भूपाळ, वैरहेषे भज्यों शिशु-पाळ। सखाभावे भज्या अरजुने, भक्तिए भज्या नारद जने। दास-भावे हुनु ने खरोदा, स्नेहभावे युधिष्ठिर नरेश। एतो सर्वे पाम्या सुंख अंगे, रही प्रगटने परसंगे । पुरुषोत्तम प्रगट होय ज्यारे, क्रियासाधन न लेवुं त्यारे।' 'जेह जन तमारा आश्रित, घैराग्य ज्ञान स्वधर्मसहित्। माहात्मययुक्त भक्ति अनन्य, करे तमारे प्रतापे जन 'माटे शान घैराग्य धर्मयुक्तरे, भक्ति कृष्णनी करीए तो मुक्तरे' 'जेजे आव्यां तमारे शरणरे, तेने सुरतह तम चरणरे' (प्रवित्ते ) 'राधा आदि जे सर्वेना स्वामी, ते इप्र मारा अन्तर्जामी। मारे ध्यान तेनुं परमाण, वळी कहंछुं सेवा पूजन, नित्य सारण ने कीर्तन । ते विना नथी जीवोने गति (भक्तिनां अंग) 'ज्यारे प्रभुने पामीए, त्यारे सर्वे थयां साधन । पछी जेजे करवुं, तेहनी ते कहुं वात । गुरु संतने भजवा, श्रीहरि जे साक्षात् । चैतन्य चैतन्य एक नहि, इन्द्रिय मन जीव ईश्वर। एक एकथी अधिक एह, तेथीपर परमेश्वर (ज्ञान) 'माटे रहेबुं सदाय सचेत, हरि विना न राखबुं हेत। आणी अंतरमांहि वैराग्य, करवां तमसुख ल्याग' 'सर्व जक्तना जीवशुं तोडी' जेणे प्रीत्य प्रभुशुं जोडी । देह गेहतणां सुखत्याग, थया प्रभुपद अनुः

राग' (वैराग्यसहित भक्ति) 'स्थूळ सुइम ने कारण देहरे, तेथी पर आतमा छे जेहरे' 'आपे माने छे आतमारूप, सोऽहं मनाणुं ब्रह्मस्व-रूप।' 'सत चित आनन्द स्वरूप, एवं मनाणुं आपणुं रूप' 'एक बात कहुं मानो तेह, आपणे आत्मा नहि देह' 'मानो चैतन्यरूप तमारुं' दुःखरूप देह तेह न्यारं' 'ज्यारे मनाय आतमा आप, त्यारे जाय सरवे संताप । आत्मरूप मनाय आपणुं, त्यारे नर पामे निःस्रोहिः पणुं। आपे थइ आतमस्वरूप, भज्जे प्रभु परमात्मारूप। राखे पुरुषोत्तम मांहि प्रीत, बीजे बेसे नहि कियां चित्त । तेह भक्त थयो पकांतिक, जेना अंतरमां हरि एक' (काल्मज्ञाने सहित भक्ति) प्र. ३९ मां जीवनुं स्वरूप स्पष्ट कह्युं छे. 'कही हरिगीता भगवानरे, पंच वाते कर्यों ते प्रबोधरे' 'स्वधर्मसहित भक्ति जेहरे, थाय साधुना संग्धी तेहरे' 'माटे धर्मने सहु अनुसरोरे, भावे कृष्णनी भगति करोरे' 'बळी सतपुरुपनो संगरे, करज्यो उरे आणी उछरंगेरे' 'माहातम्य-सहित समझशो स्वरूप, ते तन मुकतां अक्षररूप' 'जन प्रत्ये जीवन कहे, जेने जेटलो सतसंग । तेने तेटला पापनो, थाय बाहेर भींतर भंग' 'सहजे रहे सतसंगमां, पंच वरतने परमाण। काम छोभ स्वादने, तजी सनेह मान सुजाण' 'शुद्धस्वधर्म ज्ञान वैराग्यरे, सहित पकांतिक भक्ति जागरे' 'संतक्तपाथी सद्मति जागे, संतक्तपाथी सहुण।' 'माटे धीरज्ये धर्ममां रहेवुं रे,भक्ति मुकवी नहि शिरसाटे रे' इत्यादि. धर्मादिकनुं स्वरूपथी निरूपण तेते प्रसंगे करेलुं छे ते जाणीलेखुं. पंच वर्तमाननो धर्ममां समावेश जाणवो. आ रीते उपायनुं निरूपण संक्षेपमां कर्युं छे. एम का प्रबन्धमां उपेय उपायनुं निरूपण शास्त्रानुसरी संक्षेपमां सरस कर्यु छे. एम करीने भाखो चेदान्ततस्वार्थ समासथी वर्णन्यो छे.

संप्रदायस्थ कोइ अरुपश्रुतो एवी भ्रमणा सेवेछे के-मुख्य प्रंथ शिक्षापत्री सरसंगीजीवन वचनामृतनो जे अभिप्राय गोलोक अक्षरधाम अने धामी श्रीकृष्ण श्रीहरिनी तत्त्वतः अभिन्नतानो छे तेनाथी स्वामिनो अभिप्राय तश्वतः भिन्नतानो आ प्रंथमां छे. एम करीने मुख्य प्रंथोनी हलकाइ करेछे. आ प्रसंगे एनो एण स्वरूप विचार करवानी जरुर छे. आ भ्रमणा निष्प्रमाण खोटी छे एम वाक्यो उपरथी साबीत थाय छे.

'अति सुंदर गोलोक मध्ये, अक्षर एवं जेनुं नाम छे' 'एवा अक्षर-

धाममां, तमो रहो छो रुष्ण रुपाळ। जेयुं गमशे गोलोक धणीनेरे, तेषुं आवशे सहजे बणीनेरें 'सर्वोपरि छे श्रीकृष्ण एकरे, जीव र्षुश्वर माया प्रेरकरे' 'ए छे पोते स्वयं भगवानरे, अक्षर गोलोक धामना धामीरे। कृष्ण कहीए जे गोलोक धामेरे, ते तमे थपा छो हरिनामेरे। रुष्ण हरि हरि तेज रुष्णरे, एवं थयुं माताजीने हण्णरे। करवा निजजननी प्रतिपाळरे, आव्या गोलोकथी द्याळरे। कृष्णसम देहनो आकार, फेर नहि वेप ब्रह्मचार। पछी धर्मने सर्वे सांभर्युं, रूप्णे हरिनामे देह धर्युं। मारा इष्टदेव रूप्ण जेह, पूरण पुरुषोत्तम तमे तेह। जेने उपासुंखुं आठुं जाम, तेज कृष्ण् आ श्रीहरि नाम। भज्या श्रीहरिने कृष्ण जाणी, आतो कृष्ण छे गोलोकः पतिरे, आच्या छे पोते घरी मूरतिरे। कहे कृष्ण उद्धव छो तमेरे, इयां शापे आव्या तमे अमेरे। माटे काढी संप्रदाय नवीरे, आज थकी कहुं छुं उद्धवीरे। एम बोलीया छे बहुनामी, छेतो पोतेज श्रीरुष्णस्यामी' 'संतदासना छे सत्य बोल, व हे दीटो में ब्रह्ममहोल। तेमां मूरित दीठी में दोय, उद्धव ने श्रीकृष्णनी सोय। उद्धव ते रामानन्द, श्रीकृष्ण ते आ श्रीहरिस्वरूप' 'बहु बहु करको ते शोक, कहेशे प्रभुजी गया गोलोक' 'एवा सतसंगी नरनारीरे, अति इद धर्म निम धारीरे। तेने अवस्य अंत्ये महाराजरे, पोते आवेछे तेडवा काजरे। तन तजी ते मूर्तिने संगेरे, जाय जन शुद्ध थइ अंगेरे। श्रीगोलोक गुणातीत जेहरे, माया तमपार धाम तेहरे। अचळ अनादि दिव्य कहेवायरे, श्रीराधाद्यण रहे तेह मांयरे। अति अनुपम धाम एहरे, पामे उद्धवाश्चित जन जेहरे। ए धामथी पाछुं न अवायरे, आवे ते श्रीकृष्णनी इच्छायरे। तेजपुंज ते मध्ये अंबाररे, कोटी सूर्य राशिथी अपाररे। तेनुं अक्षर धाम छे नामरे, गुणातीत अचळ हरिधामरे। ते मध्ये श्रीकृष्णनुं धामरे, रच्युं रत्न मणि अभिरामरे। कहीए श्रीकृष्ण पुरुषोत्तमरे, वासुदेव विष्णु परब्रहारे। राधा रमा रहे दोय पासेरे, जुवे श्रीकृष्ण हेते कटाक्षेरे। बीजी लिलतादि सखी जेहरे, राधारमासम वळी तेहरे। काळ कर्म गुण सिद्ध जाणोरे, तेना प्रेरक कृष्ण प्रमाणोरे। संकर्पण प्रद्युस कहीपरे, अनिरुद्धरूपे कृष्ण लहीपरे। नरनारायणादि अनंतरे,

ŕ

Carrier of the Control

दिव्यरूपे रहे भगवंतरे। तेने आश्रित होय जे जनरे, पामे गोलोक ते सहु जनरे। पामे मोटप्य कहो न आवेरे, जेणे प्रभु भज्या आंहि भावेरे। हरि धरी पोते अवताररे, एह धामनुं उघाडयुं द्वाररे। जे कोइ सत्संगी नरनारीरे, कर्यां ए धामनां अधिकारीरे। जेने मळया स्थामी सुखराशिरे, तेतो सर्वे ए धामना वासीरे । कहे कवि सुणो शुभ मतिरे, कही सत्संगिनी प्रापतिरे। सुणो सहु हुं शुं कहुं, घरणिव वारमवार। नथी दीठो नथी सांभळयो, आ जेवो बीजो अवतार। अति सामर्थी वावरी, हरि धरी मनुष्यनुं देह। आ दिन मोर्थे आगमे, नथी सुणी श्रवणे तेह। अति अलौकिक घारता, लाबी देखाडी लोकमांइ। एवं आश्चर्य जोइ जन, मगन रहे मनमांइ। करी काज महाराजमोटां, गया पोते गोलोक' 'नमो गोपाळ गोकुळ॰ चंद, नमो गोपीवल्लभ गोविंद । नमो नाथ गोवर्धनधारी, नमो बाळ मुकुन्व मुरारी।' इलादि. 'आव्या गोलोकथी वयाळरे' 'गया पोते गोलोक' एम श्रीहरिनो गोलोकथकी शाविर्माव अने गोलोकमां अंतधान कहे छे. एनो बीजो अर्थ थइ शकतो नथी. आ अर्थ 'गोलोको धाम चेटिस-तम्' 'अमे गोलोकमां गया' मा शिक्षापत्री वचनामृतना वाक्यने मलतो छे. सरसंगिजीवनमां तो एवां अनेक चचनो वर्तेछे. एम मुख्य प्रथोनी साथे धा प्रथमी एकार्थता सुसिद्ध छे. भक्तार्चितामणिप्रन्थ सं. १८८७ मां पूर्ण कयों छै. त्यांसुधी स्वामिने पूर्ण निश्चय न हतो एम जल्पवाथी तो प्रथकर्ता अने भैथनी इलकाइ थाय छे तेनुं जाल्मोने भान रहेतुं नथी.

वळी कोइ अर्धवाधोनुं एम मानवुं छे के-स्वामिए भक्तिसितामिण छली खारे श्रीहरिनो यथार्थ निश्चय निष्ठ होवाथी तेमनो अभिप्राय तस्वतः अभिश्वतानो हतो; पण ज्यारे सुदृढ निश्चय थयो त्यारे पुरुषोत्तमप्रकाशप्रथ छेवटे करीने भिश्वतानो अभिप्राय उघाडो जणाव्यो छे. एम करीने भक्ताचितामणिनी अने प्रथकर्ता स्वामिनी हळकाइ करेछे. छा मान्यता पण तहन खोटी छे. वांचो पुरुषोत्तमप्रकाशनां वाक्यो-'श्रीगोछोक धाम मोझाररे, अक्षर धाम छे हरिनुं साररे। 'ए श्रीगोछोक धाम मोझाररे, अक्षर धाम छे हरिनुं साररे। 'ए श्रीगोछोक धाम मोझाररे' 'जोइ रूप छटा सुखवाइरे, रमा राधा करे सेवकाईरे' 'एवा छुष्ण कमळवळ नेणरे, मुख मधुर मनोहर वेणरे' 'नंव सुनन्व श्रीवामवर' 'ऋषि दुर्वासाना शापे करीरे, सुवि प्रगट्या मनुष्य तनु धरीरे' 'एम पूर्ण पुरुषोत्तम रायरे, दिधो

कोल पृंदावन मांपरे। भक्ति धर्मने आप्युं वचनरे, सत्य की धुं ते जग जीवनरे। को सळ देश अयोध्या प्रांतरे, प्रभु प्रगट थया करी खांतरे। श्रीनारायण ऋषिरूपरे, थया प्रगट ते परम अनुपरे। थया भक्तिधर्मना बाळरे, श्रीकृष्ण भक्त प्रतिपाळरे' इत्यादि. बा जोतां जे बाभिप्राय मुख्य प्रंथोनो छे तेज भक्तिवामणिनो अने तेज पुरुपोत्तम- प्रकाशनो सर्वथा मळतो छे. बपरंपार सर्वोपरी अवतारीपणानो माहेमा कछो छे पण तेनी लाइन तो 'छे तो पना एज श्रीहरि, पण एवी लीळा नोती करी' 'कृष्ण हरि हरि तेज कृष्णरे' 'कृष्णे हरिनामे देह धर्युं, 'श्रीकृष्ण ते आ श्रीहरिस्वरूप' एम प्रकृज बनुस्यूत अभिन्नतानी राखी छे. लेशथी पण तुटवा दीधी नथी. हवे एमां शंकाने स्थान रहेतुं नथी. उपर प्रमाणेनो सर्वार्थपूर्ण सर्वोपयोगी प्रंथ करीने महोपकार कयो छे. बा रीते स्वामीए बा संप्रदायमां सर्वविध ज्ञानसाहित्यनो महासंग्रह सर्वोत्तम करीने इष्टद्व श्राहरि अने तदाश्चित महाजनोने घणा प्रसन्न कर्यां छे.

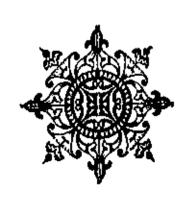
स्वामीनी शिरपनिपुणता पण विश्वकर्माने विसाय पमाइनारी अने स्पर्घा करनारी अनुत्तम हती. तेमणे पोतानी जिंदगीमां तेवां घणां कार्यो प्रशंसनीय कर्यों छे. सर्वज्ञ श्रीहरिपण तेवां कार्योमां स्वामीनी प्रथम सलाह छेता अने तेवा कार्यमां प्रेरता. भावि जनोना निःश्रेयसमाटे श्रीहरिए करेला मंदिरनिर्माणरूप महाकार्यमां स्वामीए घणो भाग लीवेलो छे. कांइ नहितो पोते शिल्पी होवाथी सलाहतो तेमनी हतीज. घोलेराना मंदिरमां तो कडीयाकाम सुतारकाम अने सलाटकाम पण स्वामिए हाथेज केटलुंक करेलुं छे. मंदिर पुरुं करवानी आज्ञापण श्रीहरिए खामिने वापेली. ठाकोरजीना भागळना कमाडनुं भारसनुं चोकठुंपोतेज कर्युं छे भने धुंमटनी आगळनी नानी धुंमटीनी पथ्थरनी कमान पण पोतेज कोतरेली छे. घीजं सुतारी कामतो जात्यनुगुण घणुं करेलुं छे तेना विवेचननी जरुर नथी. वडतालमां बार बारणांनो भव्य नव्य हिंदोळो के जेमां विश्वकर्मानी चातुरी पण न्यून गणाय एवो कर्यों हतो, जेमां श्रीहरिए बहु वखत विराजीने सर्व संघने दर्शन आप्यां इतां अने ते निमित्तनो मोटो उत्सव पण प्रसिद्ध थयो हतो. का बाबत तो स्वामिएज का प्रंथमां—'प्रछी सखे कर्योतो हिंदोळो, सारो शोभित सुंदर पहोळो । बार बारणे ओपे अनुए, जोया जेबुं छे आछितुं रूप। पांच शिखरे शोभे निवान, जाणिए वैकुंठतुं

विमान । काजु कनकना कोटिमां लेके, बहु फुल ने हार ते बेके । रूडो रूड्यो मळी मुनिराज, एवे हिंडोळे बेठा महाराज । पछी धर्यो मुगट सुजाणे, शोभे सूर्यतेज परमाणे' का रीते वर्णवी छे. का रीते स्वामीए स्वासाधारण शिल्पनिपुणतानो पण बहु सारो उपयोग करीने श्रीहरि अने तदाश्रित महाजनोने घणा प्रसन्न कर्यो छे.

उपर प्रमाणे सर्वसद्गुणसंपन्न सद्गुरु निष्कुळानंद मुनिए आत्मगुणवृत्ति, सर्वो-पयोगि प्रंथनिर्माणवृत्ति अने शिरूपवृत्तिथी संप्रदायी सुजनोमां मोटी महत्ता मेळवी छे. अने तेमणे पोतानुं जीवन सादुं साखिक, सत्याप्रहभरेलुं अने तप त्याग वैराग्य विगेरे सुगुणवाळुं निर्मगन करेलुं होवाथी ते समयमां तेमनो उपरनो देखाव ओछो प्रतीत थयो हशे, परंतु तेमनां जाते करेलां कार्योनो बिना स्पर्धा विचार करतां तेमना जेवां निःश्रेयस कार्यो बीजाए माग्येज कर्या हशे एम कहीए एमां अतिशयोक्तिने अवकाश नथी. साधुदीक्षा छीधा पछी अक्षरवाससुधी प्रयो अने कीर्तनोज कर्या करता हता. सं. १९०२ मां छेछो प्रन्थ भक्तिनिधि कर्यो छे. उपर प्रमाणे पोते कृतकृत्य थहने बीजाओ माटे परमार्थ करी आपीने सं. १९०४ मां घोळेरामां रहीने अक्षरवास छीधो हतो. स्वामिए आ पविश्व भूमि उपर ८२ वर्ष देह राख्यो हतो. पोते गारवर्णवाळा, उन्नत अने कृश होवा छतां तेजस्वी अने सौम्य हता. आवा कविवर नरवरनी संप्रदायने घणी खामी छे छतां पछवाडे प्रंथोनो मोटो अलम्य लाभ सर्वोपयोगी आपी गया, जेथी सामी जणाती नथी. एमनो मोटो उपकार स्मरणमां राखवो ए आपणुं कर्तब्य छे.

भक्तयानुग्रुच्या दृरिकृष्णमीशं यस्तोषयामास विरक्तमूर्तिः। तज्जक्तिविध्रप्रतिबोधवृक्षं तं निष्कुळानन्दमहं नमामि॥ १॥

शास्त्री हरिजीवनदास, वडताल.





## श्रीखामिनारायणो विजयतेतराम्।

## **अस्य सिन्तामाणिः** अभ

निष्कुलानन्दमुनिविरचितः।

भक्तचिन्तामणिरयं भूयात्काङ्क्षितसिद्धये। यस्य भक्तितरङ्गेषु रमते हंसमण्डली॥१॥

राग सामेरी-मंगळमूर्ति महाप्रभु, श्रीसहजानन्द सुखरूप।
भक्तिधर्मसुत श्रीहरि, समरुं सदाय अनुप।।१।। परम दयाछ छो
तमे, श्रीकृष्ण सर्वाधीश । प्रथम तमने प्रणम्नं, नामं वारमवार हुं श्रीप।।२।। अतिसंदर गोलोक मध्ये, अक्षर एवं जेनं नाम
छे। कोटि सर्य चन्द्र अग्नि सम, प्रकाशक दिन्य धाम छे।।३॥
अतिश्रेत सचिदानन्द, ब्रह्मपुर अमृत अपार। परम पद आनन्द
ब्रह्म, चिदाकाश कहे निर्धार।।४॥ एवा अक्षरधाममां तमे, रहोछो
कृष्ण कृपाळ। पुरुषोत्तम वासुदेव नारायण, परमात्मा परमदयाळ।।५॥ परब्रह्म ब्रह्म परमेश्वर, विष्णु ईश्वर वेद कहे वळी।
एह आदि अनंत नामे, संदर मूर्ति श्यामळी।।६॥ क्षर अश्वरपर
सर्वज्ञ छो, सर्वकर्ता नियंता अंतर्यामी। सर्वकारणना कारण
निर्गुण, स्वयंत्रकाश सहुना स्वामी।।७॥ स्वतन्त्र ब्रह्मरूप सदा,
सक्त अनन्त कोटि उपासे मळी। अनन्त कोटि ब्रह्मांडनी करो,
उत्पत्ति स्थिति ने लय वळी।।८॥ प्रकृति पुरुष काळ प्रधान, मह-

त्तस्वादिक शक्ति घणी। तेना प्रेरक अनंतकोटी, ब्रह्मांडना तमे धणी।।९।। एवा श्रीकृष्ण किशोरमूर्ति, कोटि कंदर्प दर्प हरो। आप इच्छाए अवतरी, युगोयुग जननां कारज करो ॥१०॥ प्रथम मूर्तिधर्मथी, प्रकट्या पूरणकाम । नरनारायण नाथजि, तमे रह्या बद्रिका धाम ।।११॥ त्यारपछी वसुदेव देवकीथी, प्रकट्या मथुरा मांय । अनंत असुर संहारवा, करवा निजसेवकनी साय ॥१२॥ त्यारपछी वळी जगमां, अधर्म वाध्यो अपार। भक्ति धर्मने पीडवा, असुरे लीघा अवतार ॥१३॥ सत्य वात उत्थापवा, आपवा उप-देश अवळा । एवा पापी प्रकट थया, घरोघर गुरु सघळा ॥१४॥ भक्ति धर्म भय पामियां, रह्यं नहि रहेवा कोइ ठाम। त्यारे तमे प्रकटिया, कोसळ देशमां घनश्याम ॥१५॥ नरनाट्यक धरी ना-थजि, विचरो वसुधामांय। अज्ञानी जे अभागिया, ते ए मर्म न समझे कांय।। १६॥ समर्थ छो तमे श्रीहरि, सर्वोपरि सर्वाधार। मनुष्यतन महाज्ञानघन, जन मन जितनहार ॥१७॥ महाधीर गंभीर गरवा, दयासिंधु दोषरहित । करुणानिधि कृपाळ कोमळ, शुभ शांतिगुणे सहित ॥१८॥ उदार परउपकारी अति,वळी सर्वना सुखधाम । दीनबंधु दयाळ दलना, परमार्थी पूरणकाम ॥१९॥ जे जन तमने आशर्या, हर्या तेना त्रिविध ताप । काळ कर्म मायाथी मुकावी, आपीयुं सुख अमाप ॥२०॥ पीडे नहि पंच विषय तेने, जे शरण तमारुं आवी ग्रहे । काम कोध लोभ मोहादि, अधर्म उरमां नव रहे ॥२१॥ शून्यवादी ने शुष्कज्ञानी, नास्तिक कुंड वामी वळी । एहना मतरूप अंधारुं, ते तमारे तेजे गयुं टळी ।।२२।। ईश अज अमरादि आपे, योगी मन जिते नहि । तेह तमारा

प्रतापथी, निजजन मन जित्या कहि ॥२३॥ एवा समर्थ स्याम तमे, बहुनामी बळ प्रबळ छो। नरनाट्यक जन मन रंजन, अज्ञा-निने अकळ छो ॥२४॥ नरतन माटे नाथजि, खामी रामानंद सेविया। महामंत्र त्यां पामी पोते, सद्घरुना शिष्य थया ॥२५॥ सहजानंद आनंदकंद, जगवंद जेहनुं नाम छे । समरतां अघओघ नाशे, संतने सुखधाम छे ॥२६॥ एवां नामने पामी आपे, अकळ आ अवनि फरो । देइ दर्शन जनने, अनेक जीवनां अघ हरो ॥२७॥ एवा समर्थ स्वप्रभु, श्रीहरि शुद्ध बुद्धि दीजिए। निजदास जाणी दीनबंधु, कृपाळु कृपा कीजिए ॥२८॥ तब चरित्र गावा चित्तमां, उमंग रहेछे अति । शब्द सर्वे थाय सवळा, आपज्यो एवी मति ॥२९॥ वळी साचा संतने हुं, लळिलळि लागुं पाय। करो कुपा ग्रंथ करतां, विघन कोइ न थाय ॥३०॥ हरिजन मन मगन थइ, एवी आपज्यो आशिष। श्रीहरिना गुण गातां सुणतां, हर्ष वाघे हमेश ॥३१॥ सर्वे मळी सहाय करज्यो, मन धारज्यो मेर्य अति। प्रकरण सर्वे एम सुझे, जेम अर्कमां अणु गति ॥३२॥ संस्कृत प्राकृत शब्दे, ग्रंथ कविए बहु कर्या। मनरंजन बुद्धिमंजन, एवी रीते अति ओचर्या।।३३।। गद्य पद्य ने छंद छपय, सांभळतां बुद्धि गळे। एवं जाणी आदर करतां, मन पोचे नहि पाछुं वळे ॥३४॥ तेने ते हीमत दीजिए, लीजिए हाथ हवे ग्रही। आदर करुं आ ग्रंथनो, प्रताप तमारो लही ॥३५॥ तमारा प्रतापथकी, पांगळी पर्वत चडे। तमारा प्रतापथकी, अंधने आंख्यो जडे ॥३६॥ तमारा प्रतापथकी, मूको मुखे वेद भणे । तमारा प्रताप-थकी, रंक ते राजा बणे ।।३७॥ एवो प्रताप उर धरी, आद-

रुंछुं आ ग्रंथने। विम कोइ व्यापे निह, समरतां समर्थने।।३८॥ हरिकथा हवे आदरं, सदमति श्रोता जे सांभळे। श्रवणे सुणतां सुख उपजे, ताप तनना ते टळे।।३९॥ भवदुःखहारी सुखकारी, सारी कथा आ अनुप छे। प्रकट उपासी जनने, सांभळतां सुख-रूप छे।।४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ध्यनिष्कुलानंदसुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये मंगळाचरण कर्यु ए नामे प्रथमनुं प्रकरणम्।।१॥

राग पूर्वछायो—सर्वे संत सुजाणने, हुं प्रथम लागी पाय। आदरुं आ ग्रंथने, जेमां विघन कोइ न थाय ॥१॥ संतक्रपाए सुख उपजे, संतकुपाथी सरे काम । संतकुपाथी पामिए, पूरण पुरुपोत्तम धाम ॥२॥ संतकृपाए सदमति जागे, संतकृपाथी सद्धण । संतक्रपा विना साधुता, कहोने पाम्या कुण ॥३॥ संत सेव्या तेणे सर्व सेव्या, सेव्या श्रीहरिभगवन । ऋषि मुनि सेव्या देवता, जेणे संत कर्या राजी मन ॥४॥ जप तप तीर्थ बत वळी, तेणे कर्या योग यगन । सर्वे कारज सारियुं, जेणे संत कर्या प्रसन्न ॥५॥ एवा संतशिरोमणि, घणिघणि शुं कहुं वात । तेवुं नथी त्रिलीकमां, संत सम तुल्य साक्षात ॥६॥ कामदुघा कल्पतरु, पारस चिंतामणि चार। संत समान ए एके नहि, में मनमां कर्यो विचार ॥७॥ अल्प मुख एमां रह्यं, मळी टळी जायछे एह । संत सेव्ये सुख उपजे, रहे अखंड अटळ एह ।।८।। चोपाई—एवा संत सदा शुभमति, जक्तदोष नहि जेमां रति। सौने आपे हित उपदेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।९॥ सदगुणना सिंधु गंभीर, स्थिरमति अतिशय धीर । मान अभिमान नहि लेश, एवा संतने

नामुं हुं शीप।।१०।। अहंकार नहि अभेद चित्त, काम क्रोध लोभ मोह जित । इंद्रिय जिती भजे जगदीश, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥११॥ निर्भय ब्रह्मवित पुनित, क्षमावान ने सरलचित्त । समर्थ सत्यवादी सरेश, एवा संतने नामुं हुं शीप ॥१२॥ तेजे तपे यशे संत पुरा, ज्ञानवान शुद्ध बोधे शूरा । शुभ शील सुखना दानेश,एवा संतने नामुं हुं शीष ।।१३।। करे पवित्र अस जोइ आहार, सारी गिरा समभाव अपार। नहि अनर्थ ईर्ष्या कलेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।१४।। भक्ति विनय दृढ विचार, आपे विजाने मान अपार । अतिपवित्र रहे अहोनिश, एवा संतने नामुं हुं शीप ।।१५॥ शमदमादि साधने संपन, बोले मिळने मन रंजन । श्रुतवानमां सौथी सरेश, एवा संतने नामुं हुं शीप।।१६॥ आनंदित आत्मा छे आप, निर्लेष निर्दोष निष्पाप । अश्वठ असंगी क्षमाधीश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।१७॥ संशयहर्ता ने कल्याण-कर्ता, वळी वेद पुराणना वेत्ता । कोमळवाणी वाचाळ विशेष, एवा संतने नाम्नं हुं शीष ॥१८॥ सारी सुंदर कथा कहेछे, अलु-**ब्धादि** आत्मा रहेछे। वळी परदुःख हरे हमेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।१९॥ काम द्रव्य ने मान छे जेह, तेह सारु नथी धार्यो देह । ज्ञान वैराग्य उरे अशेष, एवा संतने नामुं हुं शीप ॥२०॥ सदा सरण भजन करे, वळी ध्यान महाराजनुं धरे। एवे गुणेमोटा जे मुनीश, एवा संतने नामुं हुं शीप ।।२१॥ सावधान लजा बान खरा, लोकआचरण न जुवे जरा। मोटी बुद्धि शुद्धि छे विशेष, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥२२॥ करे कारज कळिमळ घोय, लाभ अलामे स्थिरमति होय । डाया जाणे काळ वळी देश, एवा संतने

नाम्नं हुं शीष ।।२३।। सुणी पारका दोषने दाटे, ते जीवना रुडा थवामाटे । उरे अधर्मनो नहि प्रवेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥२४॥ अचपळता अचिरकाळी, भ्राय नै ध्याने मूरति भाळी । सदाग्रहमां रहे अद्दोनिश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।२५॥ कृपाळ ने परउपकारी, ज्ञानदानथी न जाय हारी। केनी निंदा द्रोह नहि लेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥२६॥ सगा सौना शीतळता अपार, निर्विकारी ने लघुआहार । शरणागतना दाता हमेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।२७।। दगो नहि संग्रहरहिता, विवेकी विचार धर्मवंता । सदा पवित्र ने शुभवेष, एवा संतने नामुं हुं शीष ।।२८।। रार्ख्युं ब्रह्मचर्य अष्टअंग, अति तज्यो त्रियानो प्रसंग । पंच विषयशुं राख्योछे द्वेष, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥२९॥ एवा सद्गणना छे भंडार, सर्वे जनना सुखदातार । अज्ञानतमना छे दिनेश, एवा संतने नामुं हुं शीष ॥३०॥ एवा सद्गणे संपन्न संत, करो कृपा मुं पर अत्यंत । गाउं महाराजना गुण वळी, करज्यो सहाय तमे सहु मळी ॥३१॥ वळी वंदु हरिजन सहुने, आपज्यो एवी आशिष मुने । हेत वाधे हरियश कहेतां, एवी सौ रहेज्यो आशिष देतां ॥३२॥ अल्प बुद्धिए आदर्यो ग्रंथ, नथी पुरी करवा समर्थ । माटे स्तुति करुंछुं तमारी, करज्यो सहु मळी स-हाय मारी ।।३३।। करी विनति वारमवार, हवे करुं कथानो उचार । हरियश कहेवा हररूयुं छे हैयुं, कह्या विना जातुं नथी रैयुं ॥३४॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद-मुनिविरचिते भक्तिचितामणिमध्ये कविए स्तुति करी ए नामे बीजुं प्रकरणम् ॥२॥

राग सामेरी-सारी कथा सुंदर अति, हुं कहुं करी विस्तार। जे जन मन दइ सांभळे, ते उतरे भवपार ॥१॥ अमृतवत जे आ कथा, श्रुति दइ जे सांमळशे । अंगोअंग आनंद वाधी, ताप संताप ते टळशे ॥ २ ॥ प्रकट पुरुषोत्तमनां, चरित्र पवित्र कहुं अति । श्रवण दइ जे सांभळे, थाय तेनी निर्मळ मति ॥३॥ पवित्र यश जेनी कीरति, पवित्र गुण कहेवायछे। जे जन कहे ने सांभळे, तेपण पवित्र थायछे ॥४॥ पवित्र महिमा पवित्र मोट्यप, पवित्र तेज प्रताप छे। चित्तं निशदिन चिंतवे, तेपण जन निष्पाप छे ॥५॥ एवी कथा उत्तम अति, सदमतिने सुखरूप छे। जेमजेम जन सांभळे, तेमतेम वात अनुप छे ॥६॥ एवी कथा आदरतां, अतिउमंग छे मारे अंगे। अंगमां आनंद उलट्यो, जाणुं क्यारे कहुं उछरंगे।।७।। जेम उपवासी जनने, आवे अमृतनुं नोतरुं। ते पिवा पळ खमे नहि, जाणे कै वारे पान करुं।। ८।। एम थइछे अंतरे, हरियश केवा हाम हैये। जाणुं चरित्र नाथनां, अति उत्तम क्यारे कैये ॥९॥ सुतार्थी जेम सुत पामे, धनार्थी पामे धन वळी। विद्यार्थी जेम विद्या पामे, तेम ए बात मने मळी ॥१०॥ अति-हर्ष छे अंतरे, वळी आनंद आव्योछे अंगमां । सुंदर चरित्र श्रीहरितणां, कहुं हवे उमंगमां ॥११॥ धन्य धन्य धर्मसुतनी, पवित्र कथा कीरति । दुःखहरणी सुखकरणी, थाय सुणतां सद-मति ॥१२॥ कथा अनुपम छे अति, शुभमति जन सांभळशे । अभागी नर अवगुण लइ, वण बाळ्ये बळी मरशे ॥१३॥ जवासी जेम जळ मळ्ये, जाय समूळो सुकाइने। तेम अभागी आ कथाथी, दुष्ट जाशे दुःखाइने ।। १४ ।। खरने जेम साकर शत्रु, पयपाक कुकुर

l, केम झरे। गिंगाने जेम गोळ न गमे, घी मिसरिथी कीट मरे ॥१५॥ खातां खारेक जेम हय दुःखी, सुख नोय कोटि उपाय। सुखद वस्तु ए छे सइ, पण दुरभागीने दुःखदाय ॥१६॥ तेम अभागी जीवने, यश हरिना झेर छे। खोटी वातमां मन खुंचे, साची वातशुं वैर छे ॥१७॥ स्तन उपर ईतडी, पय न पिवे पिवे अस्रक्ने। तेम अभागी जीव जेह, ते मोक्ष न इच्छे इच्छे नरकने ।।१८।। अभागी जीवने जाणज्यो, सारी लागे तोपनी सुखडी। पण पलिता लगी प्राण छे, पंड पळमां जाशे पडी ॥१९॥ संत सतशास्त्र मळी वळी, समझावेछे घणुंघणुं। पण अभागिने प्रतीति नावे, अवछं करेछे आपणुं ।। २०।। पराणि पीयूप न पिवे, विष पिवे वारतां वळी । जैम पतंग पावकमांही, झालतां मरे जळी ॥२१॥ एवा अभागी जीवने, अरथे ते आ कथा नथी। हरि-जनना हितअर्थे, हरिचरित्र कहेक्कं कथी॥२२॥ जन्म कर्म दिव्य जैनां, तेनी कथा हवे आदरुं। जेवी दिठी में सांभळी, तेवी रीते वर्णन करुं ॥२३॥ पूरण पुरुषोत्तमनी, कीर्ति उत्तम कहुं कथी। बीजी कथातो बहु छे, पण आ जेवी एके नथी।।२४॥ प्रकट उपासी जनने, धन छे दोयला दननुं। सुतां बेठां संभा-रतां, मटी जाय मळ मननुं ॥२५॥ हळवे पुण्ये होय नहि, वळी हरिकथानी योग । मोटे माग्ये ए मळे, टळे भारे महा भवरीग ॥२६॥ असंख्य जन उद्धरे, हरिकथा सुणतां कान । अवस्य करवुं एज छे, नरनारीने निदान ॥२७॥ धन्य धन्य शुभमति अति, जेने हरिकथामां हेत । हरिचरित्र चितवतां, टळे ताप

संवापसमेत ॥२८॥ भवरोग अमोघ जाणी, प्राणी करे कोइ

विचार । एह विना ओषधि एके, नथी निश्चय निर्धार ॥२९॥ सुखनिधि श्रीहंरिकथा, जन जाणज्यो जरुर। सत्य मुनि कहे सत्य देवता, सुंगी धारज्यो सहु उर ॥३०॥ सहु जन मळी सांभळो, कथा कहु महाराजनी । कुसंगीने काम न आवे, छे सतसंगिना काजनी ॥३१॥ जेम प्रभुजी प्रकट्या, जे देशमांही दयाळ । जे गाममां अवतर्या, निजजनना प्रतिपाळ ॥३२॥ जेह कुळमां उपज्या, जे कारण छे अवतार । जेजे कारज करियां, ते कहुं करी विस्तार ॥३३॥ अधर्मने उत्थापवा, महाबळवंत श्री-हरि गण्या । जे रीते कलिमळ काप्युं, कहुं जे रीते दुष्ट हण्या ॥३४॥ जेहि पेर्ये निजजनने, आप्यां आनंद अतिघणां । जियां जियां लीळा करी, कहुं ते स्थळ सोयामणां ।।३५।। जेहि पेर्ये आपे रह्या, जैम राख्या संतने वळी । जेहि पेर्ये हरिजन वरत्या, नर-नारी हरिने मळी ॥३६॥ जेटला जन उद्घारिया, श्रीहरि घरी नरदेहने । जे जे सुख आप्यां जनने, कहुं अंतर गत्यमां एहने ॥३७॥ जेवी रीते पूर्या परचा, त्यागी गृही निजजनने । जेवी रीते जन वचन मानी, भज्या श्रीभगवनने ॥३८॥ जेजे सामर्थी वावरी, वळी जेजे शको बेसारियो । जेह रीते कळियुग काढी, अधर्मसर्ग निवारियो ॥३९॥ सर्वे चरित्र झ्यामनां, रसरूप अनु-पम छे अति । सुभागी जन सांभळशे, जेनी हशे अति शुभमति ॥४०॥ जेजे नयणे निरिख्युं, वळी जेजे सुंणियुं कान । तेते चरित्र हवे कहुं, सहु सुंणो थइ सावधान ॥४१॥ अतिमोटप्य महारा-जनी, कहेतां कोटि विचार थायछे । सांगोपांग स्चवतां, मन कहेवा कायर थायछे ॥४२॥ आकाशना उडुगण गणवा, पामवी

उत्तरनो पार । सरुं लेवुं ग्रन्यनुं, ए वातनो थाय विचार ॥४३॥ जेम छे तेम जश हरिना, कहेवा सामर्थी मारी नथी। जेम उर मारे उपजशे, तेम चरित्र कहीश कथी॥४४॥ अनुक्रम आवे न आवे, नथी तेनो निरधार। एवी खोट्य मां खोळज्यो, सौ सांभळज्यो करी प्यार ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये प्रथमाहात्म्यनामे त्रिजुं प्रकरणम् ॥३॥

राग सामेरी—शुभमति हवे सांभळो, एक उत्तर दिशे अद्गि कहीए। अतिसुंदर शिखरी जेनुं, नाम हिमाचळ लहीए॥१॥ सुँदर गेहेरी गुफाउं जेमां, सदन सरिखी शोभे घणी। तेमां दीपक-सम शोभे, श्रेणि घणी मणितणी ॥२॥ रजतसम रिळयामणो, वळी क्यांक ज्यामवर्ण सही । सुमेरुसरखी शिखर्यु जेनी, विचित्र पेर्ये विलसी रही ॥३॥ सहु दिशे चाले अति, नदीरूप निझ-रणां। लेरी तरंगे आवृत जेनां, सुंदर जळ शोभे घणां ॥४॥ तियां वृक्ष विविध जात्यनां, सुंणो नाम सह तेहतणां। अंब कदंब अनार आसु, ताल तमाल त्यां घणां ॥५॥ पारिजातक पि-पर पिप्पळा, पिछ पनस ने पुंनागरी। पाडळ मिंडळ बेडां मौडां, विलां विजोरां वोरसरी ॥६॥ गर्माल गुंदी गुवाक गुलछा, गुल-बास सालर सर्गवा। सर्श शिशम साग सरला, सिताफळी सो-पारी हवा ।।७।। शालमली ने शेमल शमडा, अमरवड उदुंबरा । कोठ कोठवडी कर्णावर्ण, खेर खाखर खजूर खरा ॥८॥ अरिठां ने अंजीर आंबली, रुडी राण्य ने रोहिडा। कर्मदी ने कर्मकेतकी, केसर कणियर केवडा ॥९॥ कर्णी अर्णी चंपक चंदन, सुखड्य

दाख्यम सोयामणी, लिंब लिंबोई हरडा धवडा। जेठी मजेठी जोरबणी ॥१०॥ जामफळी बदाम जांबु, आमलियो ओपे सही। तरला अरला तिंतिडी, नालियेरी ने केळी कही।।११।। वगराग मंदार विकळा, आल्य आसोंदरा रोहिणी। बृंदा आदि वनवृ-क्षनी, जात्य नव जाय गणी ॥१२॥ बोरडी सवन शिशमडी, रक्तपति ने रतांजळी। वेणु आदि अनेक विटपे, हिमगिरि शोभे वळी ॥१२॥ द्राख खारेक खजूर इक्षु, जायफळ लविंग लता। एलची ने नागरवेली, पुष्प सोरंगे शोभता ॥१४॥ डोलरिया मुलाब गेरा, वास सुवासे सेवती । जाई जुई ज्यां जूथिका, माधवी मिछिका मालती।।१५॥ कुंद केसर केश कुंभी, गुलदा-वदी ने गढ़िलयां। चंपा चमेली आदि अनेक, फुल बहु फुली रयां ॥१६॥ कंद मूळ रसाळ कोमळ, जेने जे जोये तेह जमे। अति रसाळ फळ विशाळ, सुंदर मळे सर्वे समे ॥१७॥ शरभ सिंह शंशा शेमर, कपि कुरंग ने कुरिभ । चित मातंग वराह महिण, शोभे रोझ ने सुरभि ॥१८॥ करी केसरी वाघ वानर, सिंह सुरभि भेळां रमे। सहज वैर जैने सदा, ते कोइ केने नव्य दमे ॥१९॥ शुक सारस हंस मेना, कोकिला किलोल करे। मोर चकोर चात्रक चकवा, नीलकंठ हरि ओचरे ॥२०॥ चातक वैतक ढोलर ढेल्युं, लेलां होलां ने लावरां। कलंग कुंझि काक काबर, बट अमर तम सुघरां ॥२१॥ सुंदर वाणिए सर्वे बोले, बृक्षपर विहंग चडी। अति अतोल थाय किलोल, जाणुं वन करेछे वातडी ॥२२॥ मंद सुगंध शीतळ वायु, वहे सुंदर ए वनमां । स्परस तेनी पामतां, शीतळ थाय तनमां ॥२३॥ पंखी हिलोला करे किलोला, गेहेरे

शब्दे गेकी रियां। जाणुं नृत्यक नृत्य भेदे, ताने गान गाय तियां ॥२४॥ परस्पर पवन योगे, चाले विपटनी डाळियो । तेमां रव रुडा करे, कोयलो रूपाळियो ॥२५॥ पंखी शब्दे साद करे, दुमल-ताकर कहे ऋषि। कंद मूळ फळ फुल सुंदर, आवी जमी थाओ खुशी।।२६।।वळी एवाए अद्रिमां,नदी निगमनी ध्वनि घणी। गज इंडज गांधर्व गाने, शोभा नव्य जाय भणी।।२७।। रुडां रत्न हीरा मणि, घणी खाण्यो ए गिरिमांय छे। शिव ब्रह्मादिक देवे सेव्यो, वळी सर्वे शिखरिनो राय छे ॥२८॥ वळी ब्रह्मलोकथी उत्तरी, सप्त धाराए गंगा स्रवी। तेनां नाम सुणो सहु, कहुं विवेके वळी वर्णवी ॥२९॥ वस्वौकसारा नलिनी, पावनी वळी सरस्वती। जंबू सीता गंगा सिंधु, ए सप्त धारा उत्तम अति ॥३०॥ पुण्य पवित्र सरिता सुंदर, गंगा गेहेरी ज्यां वहे। जे जन नाय ते शुद्ध थाय, पाप ताप ते नव्य रहे ॥३१॥ एवा गिरिमां नरनारायण, बेठा बेउ बद्रितळे । सुखकंद पूरणचंद, झाझे तेजे जळमळे ॥ ३२ ॥ म्रुनिष्टंद आनंदकंद, आगळ्ये बेठा बहु । नारायणना मुख्यी, सुंदर कथा सुणे सहु ॥३३॥ एवा समामां आविया, ऋषि बिजा बहु मळी। तीरथरत ए आश्रमे, आविया मुनि मळी॥३४॥ नरनारायण निरखवा, जेने हैये घणी हाम छे। संक्षेपे कहुं सांभळी, जेह ए मुनिनां नाम छे ॥३५॥ मोटा मोटा मुनि मळी, आव्या आश्रम एहमां। तेनां नाम सांभळज्यो, सहु जन सनेहमां ।।३६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये हिमाद्रिवर्णन नामे चोधुं **अकर**णम् ॥४॥

चोपाई-मोटा मरीचि पर उपकारी । दीनजनतणा दुःख-हारी । आव्या शुक जनमना योगी, गर्भ गीतमब्रह्मरसभोगी ॥१॥ आव्या बगदालवजी ब्द, गौरमुख ने ज्ञानना गूह। आव्या अष्टा-वक ने आस्तिक, शाकटायन रहंगी शौनक ॥२॥ आव्या और्व आरुणि आसुरी, भरद्वाजऋषि ने भागुरी। आव्या ऋषि अंगिरा अगस्त्य, सत्यधर्मी शुक्र ने संवर्त ।।३।। आव्या वत्स बोद्ध विभां-डक, जरत्कारु जैमिनि जापक । आव्या सौभरी शाकत्य शक्ति, वळी आर्ष्टिषेण कहुं अति ॥४॥ आव्या म्रुनि मैत्रेय मांडव्य। जा-जळी जयंत जैगीपव्य । आव्या बृहस्पति वेद्शिरा, विश्वामित्र वसिष्ठ सुधिरा ॥५॥ आञ्या कवष ऋतु कक्षीवान, याज्ञवल्क्य जाबाळ सुजान । उतथ्य उपमन्यु ने और्व, दयाळ जे देवल ने रौर्व ॥६॥ आव्या वामदेव ने वारुमीक, विपुल ब्रह्मचर्य विशक्त । पिप्पलाद पुलह पुलस्त्य, कच कृपाळ कश्यप समस्त।।७।। आच्या कर्दम ने कात्यायन, पंचशिख ने वैशंपायन । आव्या परउप-कारी प्रचेता, शंकुवर्ण ने शंख लिखिता ॥८॥ आव्या कणाद करभाजन, कर्कश कण्व बभ्रु च्यवन । पाराशर लोमश ने हंसि, पैल पाणिनि ने भृगु ऋषि॥९॥ आव्या गालव ने जे मातंग, शांडि-ल्य श्वेतकेतु शरभंग। आव्या मेधातिथि मानखंडी, बृहद्गि बृह-दश्व वैतंडी ।।१०।। आच्या सुमंतु ने शरद्वान, इंद्रप्रमद ने इध्म-वान । अथर्वा एकत द्वित त्रित, मांडुकेय पाठर हारीत ॥११॥ भांडायनि भार्गव भालुकि, शिशंपायन पर्वत मंकि । कठ तांड्य कौंडिन्य कवश, क्षारपाणि पर्णाद सुजश ॥१२॥ हरिश्मश्रु सुनि अंशुमान, शार्कर ने शारदवान। वैतहव्य वळी वात्स्यायन, सावे-

तस ने सैन्धवायन ॥१३॥ सावर्णि सावर्ण्य ने संवर्त्त, भूरिपेण शमीक संऋतु। जमदग्नि जातूकर्ण्य जाणो, प्रणाद देवरात प्रमाणो ।।१४।। अकृतव्रण वळी जे यासक, वीतहच्य ध्रुव ने ऋचीक । गौरशिरा कृष्णात्रेय कहीए, स्थूलशिरा मौजायन लहीए ॥१५॥ नाचिकेत तैतरि उत्तंक, दाल्भ्य कालष्टक्षीय निःशंक । अग्निवेश्य मुदगल हता, मुनि ऋष्यशृंग जगछता ॥१६॥ श्वेतकेतु ने वळी श्रमिक, इंद्रप्रमिति कहीए कुशिक । सौम्य नारद ने सारखत, वत्स ने वेदशिरा सुमत ॥१७॥ अवलंबायन अरिजित, आच्या और्मि ऋषि आशादित। धारणिक धौम्य ने ध्यानेश, बुध बौधा-यन ने मौनेश ।।१८॥ गांधर्वक गोभिल गोपित, गविष्ठिर गोशिरा पुनित । पूर्वातिथ्य ने ध्रुव वाछिल, वैतानस देव ने वैहल ॥१९॥ व्याघ्रपद् बळी विष्णुद्त्त, द्रध्नायसैयजंघ समस्त । देवोदास देव-रात नाम, देवातप लोहित अकाम।।२०।। वैनतेय ने नैपुण मळी, हारिकार्णे चांद्रायण वळी। हरितकेय वळी हंसाळ। मुनि उद्दा-लकजी दयाळ ॥२१॥ ए आदि ऋषि सर्वे संगे, दीठो आश्रम एह उमंगे। प्रथम विशाला सौए विलोकी, दीठी अतिरचना अलोकी ।।२२।। अक्षरधामरूप एह वन, तेने जाणुं कर्युं आछादन । घाटी छायाए शोभेछे घणी, दैये उपमा एने केतणी ॥२३॥ नरना-रायण ऋषिराय, तेने करी रहीछे ए छांय। तेने तळे जोतां मुनि-जन, थयुं नरऋषिनुं दर्शन ॥२४॥ बेठा आसन उपर सुखे, रटे नारायण नाम मुखे । वळी तेने पासे ऋषिराय, बेठा नव योगे-श्वर स्वांय।।२५॥ तेनां नाम सुणज्यो सुबुद्ध, कवि अंतरिक्ष हरि प्रबुद्ध । पिप्पलायन करभाजन, आविहींत्र हुमिल पावन ॥२६॥

चमस ए नव योगी जेह, जगहितकारी मुनि तेह । वळी कलाप प्रामना वासी, दीठा तनुआदि सुखराशी।।२७॥ एवा अनेक मुनि त्यां मळी, विंटी बेठा ते नरने वळी। नर सुंदरवर तनश्याम, मृगाजिन कंठे कंजदाम।।२८।। एवा नर नयणे निरस्वी, मुनि सहु बहु रह्या हरखी। त्यारे नरे दीठा ऋषिराय, आसनथी उठी लाग्या पाय ॥२९॥ पछी ऋषि पड्या नरचरणे, वाधी वाल्यप न जाय व-रणे। पछी आप्यां कोमळ आसन, तेह पर बेठा मुनिजन ॥३०॥ किथी परस्पर पूजा वळी, पछी नरऋषि बेठा मळी। नर कहे ऋषि धन्य धन्य, तमे वहाला छो नाथने मन ॥३१॥ तम जेवा जे सत-पुरुष, तेनुं दुर्लभ मळवुं दरश। मळे त्रिलोकनुं सुख सोंघुं, पण मळवुं तमारुं ते मों घुं।।३२॥ तमे मळ्ये टळे कर्म कोटी, एथी बिजी वात कई मोटी। माटे छं कहीए महिमा घणो, नथी कह्यो जातो तम तणो ॥३३॥ भले आव्या तमे म्रुनिसाथ, हमणां देशे दरशन नाथ। त्यारे नरप्रत्ये बोल्या मुनीश, धन्य तमे छो ब्रह्मांडाधीश ॥३४॥ नाथने वहाला छो तपेश्वर, प्रभु सेवामां छो ततपर। तमे वळी नारायण मांइ, कहीए अमे फेर नथी कांइ ॥३५॥ छोतो एक ने दिसोछो दोय, तेनो भेद जाणे जनकोय। माटे आ भूनां भाग्य अमित, थइ प्रभुचरणे अंकित ॥३६॥ वळी पशु पंखी वेली वन, तेनांपण भाग्य धन्यधन्य। जेजे वसेछे आश्रम आंणे, तेनां भाग्य न जाये वर्खाणे ॥३७॥ वळी अमेपण भाग्यशाळी, जोशुं नाथने नयणे निहाळी। कहे एम ते ऋषि ने नर, करे प्रशंसा ते परस्पर ॥३८॥ एवे समे नारायण जेह, आव्या पर्णकुटी बार तेह । उप्र तपवाळा अतिकांति, शोभा मुखे नथी कही जाती ॥३९॥ कोटि

अर्क इंदु ने अगनि, तेथी तेजशोभा बहु बनी। करिकरसम कर अनान, शोमे सारुं तन श्यामवान ॥४०॥ नवा कंजसम नेण दोय, पूर्णचंद्रसम ग्रुख सोय । दीपे हसवे दंतपंगति, ऊरु चरण कोमळ अति।।४१।। झिणा पिळा उगे शीपकेश, माथे मुकुट तेनो छे हमेश। ओपे उर अनुप विशाल, कहीए केम ते तरु तमाल ।।४२।। शोभे कंठ ते कंबुसमान, ओपे उदर पिप्पलपान । पडे त्रण वळ तियां सार, नाभि उंडी वर्तुल आकार ॥४३॥ पुष्टतन कंचन जनोई, डाबे करे कमंडळं सोई। दक्षिण पाणिमांहि दंड राजे, श्वेतांबरे अंगछबि छाजे ॥४४॥ एवा सुखसिंधु शोभाखाणी, जोयुं हेते निजजन जाणी। हता उद्भव पोताने साथ, प्रेमे करी पधारिया नाथ ॥४५॥ एवा स्याम सुंदर सुखदेण, निरखी नाथने ठरियां नेण । पछी राजी अया मुनिराय, प्रेमे लाग्या प्रभुजिने पाय ।।४६।। हुवा परवश पामी आनंद, थई कंठे वाणी गदगद । चाले चक्षुए नीर चोधारे, करे प्रणिपात वारेवारे ॥४७॥ पछी प्रभ्रुए प्रेमे बोलावी, आपे बेठा आसनपर आवी। पछी सहुने पासे बेसार्या, हेते हेरिने ताप निवार्या ॥४८॥ निरखी मुनि करी हेत अति, जाणुं मिटेशुं पीशे मूरति । वळी चाटशे जिभाए करी, जाणुं भेटशे भुजाए भरी ॥ ४९॥ एम मुनिनुं हेत अपार, दीठुं ते आश्रमने रहेनार। पछी पूजा करवाने काज, मुनि लाव्या छे बहु समाज ॥५०॥ षद्दश पूजा परकार, तेणे पूजिया प्राणआधार। पछी धूप दीप ने आरति, करी धुन्य करी वळी स्तुति ॥५१॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद-मुनिविरचिते भक्ताचतामणिमध्ये ऋषिनां नाम कह्यां ए नामे पांचमुं प्रकरणम् ॥५॥

चोपाई - जयजय माय मुनि गाथ, जय जय नरवीर नाथ । जयजय बद्रिपति राय, तब गुण कह्या केम जाय ॥१॥ जय दीन-बंधु ऋषिदेव, जय अकळ नाथ अभेव। जय कृपाना सिंधु कृपाछ। जय दयाना निधि दयाळ ॥२॥ जय प्रभु तमे जगदीश,जय अखिल ब्रक्कांडाधीश । जय आनंदकंद अवतारी, जय संतजन सुखकारी ॥३॥ जय धर्मसुत महाधीर, जय ज्ञानविज्ञान गंभीर। जय अति-अजित अभेद, जय कहे नेति नेति वेद ॥४॥ जय सुखनिधि सिद्ध श्याम, जय सदा अकोध अकाम। जय पुण्य पवित्र प्रताप, जय निर्दोष ने निष्पाप ॥५॥ जय धर्मतणा प्रतिपाळ, जय भारतपति भूपाळ। जय पाप उत्थापन आप, जय संत हरण संताप ॥६॥ जय खळवळ खंडनहार, जय भूमि उतारण भार । जय दुष्ट-तन दंडधार, जय निजजन काज सुधार ॥७॥ जय अकळ बळ अविनाशी, जय पिंड ब्रह्मांड प्रकाशी। जय काळतणा महाकाळ, जय भूपति पति भूपाळ।।८।। जय महादुष्ट मोडण मान,जय भक्त-वत्सळ भगवान । जय अक्षरधामी अकामी, जय सर्वतणा तमे खामी ॥९॥ जय अवतारना अवतारी, मत्स्य कच्छ वाराह ग्रुरारी। जय नृहरि वामन नाथ, जय परशुराम रघुनाथ ॥१०॥ जय हल-धर कृष्ण कृपाळ, जय बुद्ध कलकी दयाळ । जय अलेखधर अवतार, जय अकळ सर्वआधार ॥११॥ एवां अनेक धरी शरीर, बेसो बद्रितळे बेउ वीर । रही तापस वेपे हमेश, जटा मुकुट सुंदर शीश ॥१२॥ दंड कमंडळ मृगछाळा, ऊर्घ्यंदु ने अक्षनी माळा। उपवीत पुनितने धारी, सदा भाइ बेउ ब्रह्मचारी ॥१३॥ सुखसा-गर शांतिस्वरूप, दयाळ दीनबंधु अनूप । जय निजजन सुख-

दाता, जय नर नारायण भ्राता ॥१४॥ जय अच्छेद्य अभेद्य अति, जय बळ अकळ मूरति। जय तेज अत्यंत महंत, जय अजर अमर अनंत ।।१५।। जय गुणसागर गोविंद, जय सुंदर स्याम स्वच्छंद । जय दासना पाश विनाश, जय अमायिक अविनाश ।।१६।। जय निजजन जीवनप्राण, जय महा सुखरूप मेराण। मळी मुनि करे ए उचार, वर्ति रह्यो त्यां जयजयकार ॥१७॥ एम स्तुति करी मुनिवृंद, निरखी नाथने पाम्या आनंद। करी स्तवन दंडप्रणाम, पुरी करी ते हैयानी हाम ।।१८।। पछी हाथ जोडी बेठा पास, थइ अंतरदृष्टि उजास । श्रीनारायण कृपाए करी, वृत्ति अंतरमांहि उतरी।।१९।। दिद्धं अक्षरधाम अलोकी, पाम्या सुख तेहने विलोकी । दिठो तेजतणो त्यां अंबार, तेह मध्ये सिंहासन सार ॥२०॥ तियां बेठा दीठा बहुनामी, जेह अक्षरधामना धामी । अतिसुंदर मूरति सारी, शोभाधाम श्याम सुखकारी ॥२१॥ तेने निरखिने पाम्या आनंद, फुल्यां जेम कुमी-दनी चंद । पछी बारे जोयुं आबी ज्यारे, दीठी तेनी ते सूरित त्यारे।।२२।। जेवा अक्षरधाममां दिठा, तेवा दिठा सनग्रुख बेठा। वेतो नारायणनुं छे कृत्य, एमां नहि कांइ अचरत्य ॥२३॥ पछी पाये लाग्या जोडी हाथ, त्यारे मधुरी वाण्ये बोल्या नाथ। हे मुनियो भले आव्या तमे, तमने जोइ राजी थया अमे ॥२४॥ तमारां दरशनने काज, अमे इछताता मुनिराज । मळबुं तमारुं दुर्लभ मने, थाय नहि ते थोडेरे पुण्ये ॥२५॥ गोलोकादि धाम कहीए जेह, योगसिद्धियों कावेछे तेह । तेथी वहाला मुनि तमे बहु, सत्य मानज्यो वात ए सहु ॥२६॥ वळी शिव ब्रह्मा-

दिक जेवा, आपे बळिदान करे सेवा। एह तेह मुजने छे प्यारा, पण तमे छो आतमा मारा ॥२७॥ तमे अहोनिश चिंतवो मने, ज्ञानबोधे तारोछो जीवोने । जप तप ने योग यगन, व्रतादिक बीजां जेह पुण्य ॥२८॥ तेह सर्वे मळी जेह कावे, जेना सोळमा अंशमां नावें। माटे एतुं नाम अभयदान, बीजा नावे ते एने समान ॥२९॥ माटे परमार्थी जाण्युं अमे, मारा शुद्ध भक्त वळी तमे । माटे तम जेवा कोइ नथी, घणुं कहीए शुं मुनि मुखथी ।।३०।। कहे कवि सांभळो सुजाण, एम बोल्या नारायण वाण । अतिभावे हेते भर्या वेण, बोल्या कृपाए कमळनेण ॥३१॥ पछी म्रुनि बोल्या करी स्तुति, धन्य धन्य प्रभु प्राणपति । धन्य नर-वीर अवतार, बहु जीवनो कर्यो उद्धार ॥३२॥ धन्य प्रकट पूर-णचंद, निजजनने देवा आनंद । धन्य दीनबंधु भगवान, महा-दुष्टतुं मोडण मान ॥३३॥ धन्य नर नारायण एक, तेनो जाणे विरला विवेक। धन्य अकळ कळा तमारी, बेउ बांधवनी बलि-हारी ॥३४॥ धन्य सर्व जन सुखकारी, दीनजनतणा दुःखहारी। सर्वे जीवनी करवा सार, तमे रह्या आ धाममोझार ॥३५॥ हवे नाथ कहीए छीए तमने, कहेबुं घटे ते कहेज्यो अमने। एम कही जोड्या हाथ ज्यारे, मुनिप्रत्ये प्रभु बोल्या त्यारे ।।३६॥ मुनि तमे त्रिलोकने मांय, आवो जावो ते आप इच्छाय । हमणां कोण लोकमांथी आव्या, तेनी शीशी खबर तमे लाव्या ॥३७॥ त्यारे मुनि बोल्या जोडी हाथ, आव्या भर्ताखंड जोइ नाथ। त्यारे नारायण कहे ऋषि, सरवे मारी प्रजा छे खुशी ॥३८॥ चारे वर्ण ने चारे आश्रम, सहु वर्तेछे पोताने धर्म। मक्ति धर्म ज्ञान ने

वैराग, एह उपर केवो अनुराग ।।३९।। जेम होय तेम कही ग्रुनि,
मर्त्तखंडनां मनुष्य सहुनि। एवां सुणी प्रश्वजीनां वेण, सर्वे ऋषिए
ढालियां नेण ।।४०।। आव्यां नयणे नीर मराइ, अतिशोक व्याप्यो
उरमांइ । थइ गदगद कंठे गिरा, पछी बोलिया छे रही थिरा
।।४१।। सुंणो नारायण नरभ्रात, एनी अमे न कहेवाय वात ।
चारे वर्ण ने चारे आश्रम, तेणे त्यागी दीधा निजधर्म ।।४२।।
असत्य गुरुए अवछं बतावी, दीधो अधर्म धर्म ठरावी। राजा
उन्मत्त थइ अपार, कर्यो सत्य धर्मनो संहार ।।४३।। आपे पाप
करे अणलेखे, तेम प्रजा करे देखादेखे । नरनारी नियममां
नथी, कहीए तेनी भुंडाइ शुं कथी ।।४४।। एने जोइ अमे मुनिराज, सहु दुःखिया छीए महाराज। एम कही आपे कर्युं रुद्दन,
कहुं सांमळज्यो सहु जन ।।४५।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये
ऋषिरतुति नामे छठुं प्रकरणम् ।।६।।

पूर्वछायो—एवं अवणे सांभळी, नरवीरे कयों विचार । एह पापने टाळवा, मारे निश्चय लेवो अवतार ।।१।। ऋषि तमें राजी रहो, अधर्म करीश उत्थाप । सुखी करीश सौ संतने, तमें परहरो परिताप ।।२।। एम कही नरवीर ऋषि, बेठा एह आश्रम । तेह समे निज खानथी, आवियां मूर्ति ने धर्म ।।३।। तेने देखी उमा थया, सर्वे ऋषि नारायण नर । दंडवत प्रणाम करी, करे स्तुति जोडी सहु कर ।।४।। चोपाई—जोइ धर्म ने मूरति दोय, तेणे आनंदिया सहु कोय। शुद्ध सत्त्वमय तनु शांति, शरद पुन्यम शशिसम कांति ।।५।। कंठे कंज तळसीनी माळ, पिळी जटानो

मुकुट विशाळ । नव नीरजसम दोय नेण, अति शांतिवान सुख-देण ॥६॥ पहेर्या श्वेतांवर तन शोभे, जोइ जनतणां मन लोभे। शोभे सुंदर रेखा वे हाथे, पहेरी सित उपवीत नाथे ॥७॥ एवा धर्म परम पावन, तेनुं मुनि करेछे स्तवन । धन्य धर्म महिमा तमारो, सर्वे लोकमां सुजश सारो ॥८॥ हरि हर ब्रह्मा मन भावो, तमे सर्वेना भूषण कहावो । सुर सरवे ने वळी इंद्र, मनु कश्यप ने रवि चंद्र ॥९॥ कोइ त्यागी न शके तमने, सर्वे मुनिने वहाला छो मने। शेष शारदा ने गणपति, तमे सहुने वहाला छो अति ॥१०॥ वायु विह्न ने वळी वारी, ते मर्यादा न लोपे तमारी। सप्त ऋषि सती पतिव्रता, सनकादिक तमने सेवता ॥११॥ योगी यति तपी तप साधे, तेतो सर्वे तमने आराधे । गृही वानप्रस्थ ने संन्यासी, ब्रह्मचारी तमारा उपासी ॥१२॥ द्विज क्षत्रिय ने वैक्य भजे, श्रुद्र तेपण तमने न तजे । पशु पंखि पन्नग नरनारी, सर्वे रह्माछे तमने धारी ॥१३॥ तमने ते बंदे वेद चार, पट्ट शास्त्र पुराण अढार । कोइ न करे तमारी उत्थाप, महामोटी तमारी प्रताप ॥१४॥ तमने तजी करे जेजे काज, तेतो अष्ट थवानो समाज । तमने तजी भजे जे देव, तेतो तेनी छे निष्फळ सेव ॥१५॥ तमने तजी भजे भगवान, तोय तेटछं जाणबुं ज्यान। एवी मोटी छे तमारी लाज, सर्व लोकमां तमारुं राज ॥१६॥ प्रश्र प्रसन्न करवाने सारुं, सहु करे सेवन तमारुं। वळी आ लोक परलोकमांय, सुख थवा सेवेछे सदाय ॥१७॥ जेजे सुखी थया थाशे कीय, तेती धर्म विना निश्चे नीय । माटे हुं कहीए मुखे महिमा, तमतुल्य नहि त्रिलोकमां ॥१८॥ एम करी ते प्रश्नंसा

बहु, पछी आसने बेठा छे सहु । सर्वे नारायण साम्रं जोइ, सहु-ए चित्तनी वृत्ति परोइ।।१९।। धर्म मूरति ने नरम्रुनि, प्रभ्र सामी क्के दृष्टि सहुती। पछी नारायण पद्मनेण, बोल्या अमृत सरिखां वेण ॥२०॥ भले आच्या तमे मारा तात, भले आवियां मृरति मात। थयुं आज पवित्र आश्रम, तमे पधार्या मूरति धर्म ॥२१॥ पण आ ऋषि आञ्या छे मळी, तेनी वारता लियो सांभळी। स्वर्ग मृत्युलोक ने पाताळ, तेमां विचरेछे ए दयाळ ॥२२॥ हमणां भर्तखंडमांथी आव्या, सर्वे प्रजानी खबर लाव्या। कहेछे अति वाष्यो अधर्म, अष्ट थया छे वर्ण आश्रम ॥२३॥ राजा प्रजातजी सत्य रीति, आप खार्थे करेछे अनीति। त्यागी गृही तजी निज-धर्म. विषयसारु करेछे विकर्म ॥२४॥ नरनारी अपार छे कामी, करे गोत्रमां गमन हरामी। नथी धर्ममां मति कोयनी, एवी खबर लाव्या आ मुनि ॥२५॥ प्रभु वात करेछे एवी रीते, सहु सांभ-क्षेक्ठे एकचित्ते । श्रवण नयण नथी बीजे क्यांइ, सहु रह्यांक्रे प्रभुमां प्रोवाइ ॥२६॥ एवे समे कैलासेथी क्रोधी, आब्धा दु-र्वासा दुरबुद्धि । तेनी नथी कोइने खबर, उभा थइ रह्या घडि-भर ॥२७॥ पछी दुर्वासा दुःखाणा घणुं, न थयुं सन्मान पोता-तणुं। वळति हैयामां वात विचारी, आ तो सर्वे दिसेछे अहंकारी ।।२८।। जोने केवी आवी छे कुमति, एम कहीने कोप्या छे अति। रुद्रांश दीर्घ जेनो क्रोध, चड्ये न माने बीजानो बोध ॥२९॥ तने तामसी मने रिसाळ, रहे रोष जेने सदाकाळ। क्षमा नहि ने क्षोभ अपार, नहि शांति ने सहन लगार ।।३०।। एवा दुर्वासा महाघोर, बोल्या कोपमां वचन कठोर। कहे सांभळज्यो सर्वे जन

जेह बोल्या दुर्वासा वचन ॥३१॥ करी रिसमां लोचन लाल, चडाव्यां वळी अङ्कटि भाल । धुजे तन फरफरे होठ, बाध्यो विकराळ काळकोठ ॥३२॥ पछी सहु प्रत्ये बोल्या एम, तमने धर्मवाळा कहीए केम । तमे मानमां मस्त छो घणा, नथी तमने भार कोइतणा ॥३३॥ मने मानोछो सहुथी सरस, बीजानेतो मानोछो नरस। एवं अभिमान तमने घणुं, जोज्यो फळ हवे तेहतणुं ॥३४॥ हुं दुर्वासा आच्यो दूरथी, न थयुं सन्मान वि-चारो उरथी। एवं जोइ क्षमा उर लोवं, एवो शांतिवाळो हुं न कहार्चुं ॥३५॥ मारुं नाम सुणी शांति नासे, क्षमा आवे नहि मुज पासे। एवो दुर्वासा ऋषि हुं छुं, ते हवे दंड तमने दउं छुं ॥३६॥ पुण्य पवित्र एवी आ देश, सेवे देवादि मोटा मुनीश ! तेथी पड़ो हवे ततकाळ, थावो मनुष्यने घेर बाळ ॥३७॥ तमे मनुष्य देहने धरो, आज पछी आवं नव्य करो। त्यां अधर्म ने कळिना जेह, मर्या असुर वसेछे तेह ॥३८॥ तेथी दुःख पामी घणुंघणुं, ए फळ मारा अपमानतणुं। पामो असुरथी अपमान आप, पछी न बोल्या आपीए शाप।।३९।। एवी मोटो वकोर सांभळी, बिन्या नारायण धर्म वळी । मुनि उद्धव सौ भय पाम्या, देखी दुर्वा-साने शिर नाम्या ॥४०॥ उठी आसनथी तेह वार, करे बहु पेर्ये नमस्कार। आदर सहित विनति जेह, करे शांति पमा-डवा एइ।।४१।। तेम तेम क्रोध बहु कर्यों, रोष रित पण न उतर्यो । त्यारे धर्म बोल्या नामी शीष, मोटा महाम्रुनि म करो रीष ॥४२॥ ऋषि जेनो होय अपराध, देवो दंड तेनो नहि बाध। पण वण अपराधे शाप, न देवी मुनि विचारी आप ॥४३॥ अमे

सुणतां इतां सहु वात, कहेता इता नारायण साक्षात । सर्वे रद्या हता साम्रं जोइ, चित्तवृत्ति प्रभुजिमां प्रोह ॥४४॥ एवा समामां आविया तमे, तेणे न थयुं सन्मान अमे । माटे क्षमा अपराध करो, मोटा मनमां रोष म घरो ॥४५॥ होय ऋषि ब्राह्मणनुं अंतर, नवनीत सम निरंतर । माटे दयाळ दया करीजे, अमने शाप टाळी सुख दीजे ॥४६॥ एम धर्म बोल्या शुभमति, करी एवी प्रारथना अति । त्यारे बोल्या दुर्वासा वाण, मारो क्रोध क्षणिक म जाण ॥४७॥ आपी शापने पाछी निवारं, एवं जाणो मां अंतर मारुं। पण तमे तो छो भक्तिवान, वळी नम्रतावाळा निदान ।।४८।। एवां देखी दया आवे अमने, माटे कहुं सुणी धर्म तुमने। पूर्वदेशे लेशो अवतार, द्विजकुळमां हि निरधार ॥४९॥ भक्ति धर्म थाशो दो दंपति, थाशे पुत्र आ जे बद्रिपति । त्यारे शापनो ताप टळशे, अंतरे सुख शांति वळशे ॥५०॥ पछी पामशो दिव्य गतिने, एम कह्युं ते धर्म भक्तिने । कह्युं ऋषि उद्भवने तेवार, तमे लेशो द्विजमां अवतार ॥५१॥ ज्यांज्यां हशो त्यां त्यांथी तणाइ, आवशो प्रभु पासळे घाइ। पछी नरवीरना सखा थाशो, मारा शापथी तर्त मुकाशो ॥५२॥ थाशे दिव्य गति पाछी देव, पामशो सुख कहुं ततखेव। एम कही दुर्शसा मुनीश, कर्यो कैलास प्रत्ये प्रवेश ॥५३॥ चाल्या एवं काम करी आप, पण नाप्यो ते मुनिए शाप। घायों सौए ए शापने शीष, माटे मोटाए न करी रीष ॥५४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये दुर्षासाशाप नामे सातम् प्रकरणम् ॥७॥

पूर्वछायो-पछी संभारी ए शापने, सर्वे करवा लाग्या शोक। पुण्य भ्रुमि आ परहरी, जाबुं बोशे जाणुं मृत्यलोक ।।१।। पाप पेखी पृथ्वीतणां, केम रहेशे सुख शरीर । अवळे सवळं एटलुं, संगे चालशे नरवीर ॥२॥ कांइक तेनो हर्ष छे, कांइक शोक छे मन । दुरवासाने दर्शने, थयुं हर्ष शोक चिंतवन ॥३॥ वळता नारायण बोलिया, तमे शोक म करो लगार ! इच्छा अमारे एवी हति, अवनिए लेवा अवतार ॥४॥ चोपाई-मारी इच्छा विना एवी वात, न थाय मानज्यो मारा तात । आव्या ऋषि ने करी जे राव, त्यारनो में मांड्योछे उपाव ॥५॥ आव्या दुर्वासा मारी इच्छाये, आवी न पाम्या सन्मान कांये। दीधो शाप मे न वार्या तेने, बोल्या जेम मे बोलाव्या एने ॥६॥ जाणुं निमित्त विना निरधार, केम लइए सहु अवतार। माटे चिंता करशो मां कांए, शाप थयोछे मारी इच्छाए ॥७॥ कांजे पृथ्वीए व्याप्युंछे पाप, तेणे साधु पामेछे संताप । माटे पुत्र तमारो थाइश, हरि नामे निश्चे कहेवाइच ॥८॥ मारा साधुनी रक्षाने सारुं, थाये भ्रुमिए विचरण मारुं । धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति, प्रवर्तावीश श्रुमिए अति।।९।। माटे चिंता म करशो लगार, लियो द्विजकुळे अवतार। आप इच्छा धारी उरविषे, लियो जन्म जुदाजुदा देशे ॥१०॥ सुणी नारायणनी ए वाण, सहु पाये लाग्यां जोडी पाण। पछी आप आपणे आश्रम, गया मुनि ने मक्ति धरम ॥११॥ पछी मक्ति धर्म ऋषि जेह, उद्धवादिक सरवे तेह। काळे करी आ भ्रुमि मोझार, सहु लेवा इच्छ्या अवतार ॥१२॥ देशदेश लेवाने जनम, इच्छ्या जाणी वेळा ए विषम । धर्यो द्विजजाति मांहि तन, कहुं सांम-

ळज्यो सहु जन ।।१३।। थइ वात ए बद्रिकाश्रम, लेशे जन्म ऋषि मक्ति धर्म । एवं जाणी जे हता अदेव, तेपण त्यार थया ततखेक ।।१४।। कहे असुर अभागी एम, काढशे ए अधर्मने केम। एवं ह्यं आपणुं पडी भागशे, जे ए सर्वे अधर्म त्यागशे ।।१५॥ नथी गयुं नखोद आपणुं, जे चालशे एनुं बळ घणुं । माटे ज्यांज्यां ए हे अवतार, त्यांत्यां तत्पर रही तैयार ॥१६॥ एना संबंधिमां करो प्रवेश, ज्यांज्यां जनमे एह मुनीश । राखी खटको थाओ हुशियार, प्रवर्तावो अधर्म अपार ॥१७॥ जियां तियांथकी एने झालो, मति अतिशे अवळी आलो । कहुं छुं मनेतो सुझेछे एम, कहो तमने सुझेछे केम ॥१८॥ एवं सांमळी बोल्या असुर, जेम कहो तेम करीए जरुर । मर बणवानी होय ते बणे, पण एने तो जोशुं आपणे ।।१९।। करशुं जुदा जुदा परवेश, देशुं दुःख बहु अहोनिश । एम परियाणिया ए असुर, बोल्यां नरनारी करी जोर ॥२०॥ एक कहेथाउं एनी मात, नित्य शिखबुं पापनी वात । एक कहे थाउं एनी माशी, नांखुं मोह ने मायानी फांशी॥२१॥ एक कहे थाउं एनी बेन, रोइ कळकळी करावुं फेन। एक कहे थाउं हुं दिकरी, मारी चिंतामां न भजे हरी ॥२२॥ एम बोली असुरनी नारी, करीए बहुविध विघ्न भारी । त्यारे बोल्या असुर वळता। अमे बहु जाणुळुं खळता।।२३।। कहे एक थाउं एनो बाप, मारी कुटिने करावुं पाप । कहे एक थाउं एनो भाइ, नांखुं अतिशे अधर्ममांइ ॥२४॥ कहे एक थाउं एनो काको, बताबुं पाप मारग पाको । कहे एक थाउ एनो मामो, करावुं अति अधर्म सामो ।।२५॥ कहे एक थाउं एनी बाळ, करुं भक्ति ने धर्मनी काळ।

कहे एक हेतु एनो थइ, नियम एक रहेवा दियुं नइ ॥२६॥ कहे एक थाउं एनो सखो, करे भजन त्यां रचावुं डखो । कहे एक थाउं एनो सगो, करुं एना कल्याणमां दगो।।२७।। कहे एक थाउं एनो गुरु, जमे अघ एटलां हुं करुं । कहे अविद्या थाउं हुं नार, म जाळथी काढे पग बार ॥ २८॥ नाना बाळक बहु उपजावी, दीयुं हेत हुं एमां बंधावी । छोरा छोरी झीणुं झीणुं बोली, खाशे एनां कळेजांने फोली ॥२९॥ एम सहु मळी आवणे करशुं, जेणे थाय ए जीवनुं नरशुं। एम खरा खबडदार थाओ, आन्यो अवसर म भुलो दावो ।।३०।। एनां कुटुंबमां प्रवेश करीए, गुरु संबंधिनुं रूप धरीए। एना उरथी अधर्म न टके, एम करबुं आपणे सघळे ॥३१॥ एम परस्पर परियाण्युं, जोर अतिशे पोतानुं जाण्युं। कर्यो असुरे मनसुबो एवो, घटे पापी अदेवने जेवो ॥३२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वा मिशिष्यनिष्कुलानंद्मुनिविर-चिते भक्तचितामणिमध्ये असुर उद्भव नामे आठमुं प्रकरणम् ॥८॥

राग सामेरी-शुभमति तमे सह मळी, सुंणो अदेवनो उपाय।
वैर जेने नथी विसर्थ, छे शश्रुता श्रीहरि मांय ॥१॥ देवासुर संग्राम मांहि, हरि सहायथी सुवा अदेव। तेणे करी हरि अरि जाणी, ततपर थया ततखेव ॥२॥ वळी द्वापर कळिनी संघे, आपे हण्या हरिए असंत। जे पशु पंखी अजगर नरमां, रह्याता संताइ अनंत ॥३॥ जेने श्रीकृष्णे हाथे हण्या, तेतो पामिया पद निर्वाण। पण जियां तियां जुधे सुवा, ते सर्वे थया असुराण ॥४॥ अति विषय वासना वाळा, वैर कृष्ण साथे वाळवा। असद्दित पामी अवतर्या, दैत्य हजारे हजार हवा॥५॥असुर वैरि आगल्या, आव्या

अघभर्या अदेव अति । धर्म हरिनो जनम जाणी, पीडा करवा छे मति ॥६॥ देव दानव दैत्य दुष्ट, यक्ष राक्षस जे कहेवाय । वैर वाळवा वेष बदली, रह्या त्रण स्थळने मांय ॥७॥ वामी शैवी ने वैष्णवी, दनुजे दीक्षा लीधी कई। धर्मनो अतिद्वेष करवा, साधु सरिखा थया सई ॥८॥ केटलेक धर्यां तन द्विजमां, केट-लाक राजामां रह्या। केटलाक वसिया वैश्यमां, केटलाक शूद्रमां थया ॥९॥ त्यांभी वैरांभी तपस्वी, कुंड ढुंढ ने कविरिया। पीर फिकर पंडितमां, दनुज देह धरी रह्या ॥१०॥ अधिपति एमां थइ, शिष्यञ्चाखा बहोळा कर्या । निःशंक थइ नर नारकी, अधर्मने अति आचर्या ॥११॥ पुंश्रली खैरिणी कामिनी, बळी बगासे नारी निसरी। एवा असुर नर जेह, ते बेठा ए त्रण्येने वरी ॥१२॥ जेवा अदेव नर अभागी, तेवी पत्नियो तेने मळी । धर्मनो अतिद्वेष करवा, वडो आग्रह मांड्यो वळी ॥१३॥ कहे देव पितृना श्राद्धमां, मद्य मांस जेवुं कांइ नथी।जो इच्छो अचिरफळ पामवा,तो पूजज्यो सह एहथी ॥१४॥ जिज्ञासु जीव जगतमां, दैविसर्गना जे हता। तेने एवो उपदेश आपी, पापिए कर्या पाप करता ॥१५॥ धर्मनी ओख लइ अधर्मी, धिरवी धन नारी हरे। शास्त्रना अर्थ फेरवी, प्रेरे जेम पोते करे ॥१६॥ कहे नेदमां एह मेद छे, पशु मारी करवी जगनने । वाम वारुणी संग विना, नहि पामी आत्म-दर्शनने ॥१७॥ पोताना इष्टदेव मंदिरमां, दिये परत्रिय ऋतुदान जो। एह तुल्य कोइ पुण्य नहि, एह मोटो उपकार मानज्यो ॥१८॥ एवी रीते असुर नर, धर्मनुं खंडन करे। वैर छे जेने कुष्णशुं, एवे आदरे अहोनिश फरे ॥१९॥ वळी वर्णाश्रममां रही,

अधुर करेछे असुरपणुं। शत्रुभाव श्रीकृष्णसाथे, वैर वावरेछे अति-षणुं ।।२०।। द्विजकुळे जेपे तन धर्या, ते मकार माहात्म्य कहे कथी। मद्य मांस मैथुन जेवुं, कल्याण अर्थे कोइ नथी।।२१॥ कहे वेदमां एह मेद छे, वळी अष्ट भक्ति छे भली। अणसमञ्ज एम जांणे जे, आ वणशि गया वटली ॥२२॥ उत्तम मध्यम माने अज्ञानी, पण आत्मा तो एक छे। तेमां वर्णाश्रम विधि, एज मोटो अविवेक छे।।२३॥ एवो असुर उपदेश आपी, कापी पापीए जड धर्मनी । आपी मति अवळी अति, वाट बताबी कुकर्मनी ॥२४॥ वळी असुर अवतर्या, क्षत्रि कुळमांहि खरा । द्वेषी जेह छे धर्मना, तेणे पापी कर्या नारी नरा।।२५॥ नरपति कुमति अति, परपत्नीने प्राणे हरे। प्रजा पीडे पापी अति, गति पारका घरमां करे ।।२६।। विना वांके वांक दइने, प्रजाने पीडे घणुं। प्रपंच करे धन हरे, एम करे वित्त आपणुं ॥२७॥ सबळ निर्वळ न्या-यमां, अधर्मने आगळ करे। लांच लइ दोष दइ, न्यायनो अन्याय करे ॥२८॥ वेद शास्त्र संतनी वळी, कुळमर्यादा नहि रति । सत्यवादी संत देखी, अंतरमां दाझे अति ॥२९॥ पाप करता धन हरता, रमता परनारी संगे। कपटी लंपटी कुडाबोला, गुह्य वारता एवा संगे ॥३०॥ प्रभ्रपणुं पोतामां परठी, कृष्णसम कीर्ति गमे । रमणीने कहे राधिका, रसिया थइ पोते रमे ॥३१॥ एम अदेव अरिपणुं, प्रगट पाळे प्रसिद्धशुं । धर्म मक्ति कृष्ण साथे, वैर जेने बहुविधशुं ॥३२॥ वळी वैश्य जातिमां, असुर-जन जे अवतर्या । विश्वासघाती लखेपाति, कुड कपट दगे भर्या ॥३३॥ छळ कळ ने छेतरवुं, देशभाषानी जाणे कळा । धर्ममां

निह ढुंकडा, अधर्म करवा उतावळा ॥३४॥ श्रूद्रमां संताइ रह्या, दैत्य दानव दगे भर्या। कृष्णशुं कलेश करवा, कइक एमां अवतर्या ।।३५।। अतिपापी मांस सुरापी, मारे पशु वन गामनां । खर खूकर कुकर कपि, करी चकासम कामना ॥३६॥ जेवा ए वर्ण तेवाज आश्रम, पापिना पापी गुरु। अधर्मने महाधर्म मान्यो, वात तेनी हुं शुं करुं ॥३७॥ ब्रह्मचारी भंगी नवल रंगी, संगी धन नारीतणा। पंच केशे फरे विदेशे, पिवे प्याला मद्यना घणा ।।३८।। गृही अतिनिर्दय थइ, अभ्यागतनुं अपमान करे। अभ न आपे साम्रुं संतापे, पेट कुटुंबनुं पोते भरे ।।३९।। वानप्रस्य विश्वमांहि, धर्म कोइ धारतुं नथी । अतिकामी छणहरामी, पापी परदारा पथी ॥४०॥ थइ संन्यासी फरे उदासी, प्यासी पैसा नार्यना । करी काषायांबर सुंदर अंगे, हैये भर्या हिंगार्यना ।।४१।। मति मेली अति फेली, शेली भ्रंशि सिद्ध थया। धर्म-हिणा बुद्धिक्षिणा, दिलमां न मळे दया।।४२।। कुपंथ कळि का-ळमां, बगडेल मत बोळा थया । कुंड ढुंढ ने जुलाह जेवा, कुमति मति ग्रहि रह्या ॥४३॥ वेद वित्र संत शास्त्र, माने नहि मृढमति । अवतार सर्वे कहे ओरा, पोतानुं आधुं अति ॥४४॥ प्रभुनो परताप मुकी, कर्मना गुण गायछे। अनेक जीव करी आगळ्ये, वळी जमपुरी जायछे ॥४५॥ सुंदर नारी जोइ सारी, वातमां लई वश करे। विधवाशुं विहार करतां, मूर्ख मनमां नव डरे ॥४६॥ अतिपापी पल सुरापी, गर्भ गाळे वळी नारना। एवा जगमां साधु कहावे, ते शब्द घा तरवारना ॥४७॥ अंतर खोटा बाहेर मोटा, अधर्म रह्या आचरी । एवे साधु नामने,

se Hiller

खोट्य मोटी दिधी खरी।।४८।। नाम वैरागी वैराग्य नहि, बाटे घाटे वक्या जइ। गुरु थइ दंभ फुंक दइ, एम जीव ठग्या कइ ॥४९॥ डाया प्रपंच दंभमां, माया शिष्यनी लेवा सइ। आशा वृष्णा अतिघणी, काम क्रोध घटमां कइ ॥५०॥ खबडदार खान-पानमां, दाम वामना भुरूया भमे। एवा असुर गुरु थइ, धर्मने अहोनिश दमे ॥५१॥ भामिनियोने भावती, वळी भक्त भक्ति आदरे। खेल उत्सव ओसर मेळा, भेळा थइ भुंडाइ करे।।५२॥ भक्ति नामे अष्टवाडो, आचरण ए असुरतणां। नरनारी विकार विना, गोततां न मळे घणां ॥५३॥ अघवंता नर अतिघणा, मात पिता गुरुना घातकी । कुकर्मी कामी हरामी, कहीए महा पंचपातकी ॥५४॥ बेन बेटी माशी माता, अनुजवधु सुतिशया। गोत्रनारी नव गणे, अदेव जगमां एवा थया ॥५५॥ आत तात काको मामो, कामे जुवे सुतकामिनी। एवी कुलटा करी असुरे, भवमां बहु भामिनी ॥५६॥ विधवा नारी अपार कामी, नर विना नव रही शके। वर्षे वर्षे गर्भ गाळे, बिये नहि पाप थके ॥५७॥ एम असुर उपदेशथी, नरनारी नियममां न रह्यां। अन्योअन्य एवे भर्या, सर्वे जन सरखां थयां ॥५८॥ भर्छं कुळ ब्राह्मणतणुं, जेमां सद्ग्रंथ अति निर्मळा । तेमां असुर अवतरी, कर्या ग्रंथ अर्थ अवळा ॥५९॥ रुडुं कुळ राजातणुं, जेमां मक्त बहु हरिना थया । तेमां दैत्य प्रकटिने, अधर्म सर्वे राखी रह्या ॥६०॥ पुष्टि करवा पापनी, नवा ग्रंथ निपजाविया । संस्कृत प्राकृत शब्दे, जीव बहु भरमाविया ॥६१॥ एवे पापे करी पृथिवी, बारमवार कंपे वळी। सत्य धर्म तीर्थ देवता, पाम्या पीडा सह

मळी । १६२॥ पडे दुकाळ बहु दामिनी, चाले वायुवेगे दृक्ष पडे। एवा उपद्रव अतिशे, प्राणधारी सहुने नडे । १६३॥ अतिपीडा अधर्मथी, चराचर सहु पामिया । त्यारे मक्ति धर्म ऋषि, प्रकट्यां करी दया । १६४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तिचंतामणिमध्ये अधुरजद्भव नामे नवमुं प्रकरणम् ॥९॥

चोपाई -सुंदर शोभेछे सरवार देशरे, जियां धर्मे कर्यो प्रवेशरे । धन्य धन्य धरा ए पावनरे, धन्य देवहा नदीतटे वनरे ॥१॥ अंब कदंब अशोक केळीरे, जांबु लिंबु वळी जाम-फळीरे। करमुक कुटटिम कणेरीरे, बहु बदरी ने नाळीयेरीरे।।२॥ तियां सारस हंस शुक मोररे, करे कोयल कोकिला शिंगोररे। घणे वृक्षे विटाणां ज्यां गामरे, जाणुं बिजुं आ धर्मनुं धामरे ॥३॥ तियां शोभे शहेर रैकहटरे, तेमां वर्ते आनंद अमटरे । खान पाने पटे सुखी लोकरे, भय विश्रह ने नहि शोकरे ॥४॥ तियां बसेछे वर्ण चाररे, तेणे शोभेछे शहेर अपाररे । द्विज क्षत्रि वैद्य बळी शूद्ररे, तर्या धर्मथी शोकसमुद्ररे ॥५॥ वसे विप्र तियां सरवरियारे, अतिभाव भक्तिना भरियारे । दयावाळा दिलना उदाररे, पापरहित पुण्यभंडाररे ॥६॥ उच्चे कुळे आचार छे अतिरे, सदा खधर्ममांहि छे मतिरे। गोत्र सावार्णे ने साम बेदरे, शाखा कौथुमी सांभळो भेदरे ॥।।। त्रण प्रवर तेनां सुज-सरे, भार्गव वैतहव्य सावेतसरे । पांडे ईटार गामना कहीएरे, पूज्य शिरनेत्र राजाना लहीएरे ॥८॥ अतिकृपाछ कनहिरामरे, तेना सुत बालशर्मा नामरे । वेद शास्त्र ने पढ्या पुराणरे, शुद्ध

आत्मावाळा ते सुजाणरे ॥९॥ सत्यवादी अति इंद्रिय जितरे, धीर गंभीर धर्ममां प्रीतरे । ज्ञील संतोष दल उदाररे, शुभ शांति गुणना भंडाररे ॥१०॥ एवा बाळशर्मा महामतिरे, जेने षेर छे भाग्यवती सतीरे । गुणवान पतित्रत धारीरे, पुण्य पवित्र निर्मळ नारीरे ॥११॥ एवां नरनारी गुण भंडाररे, तियां धर्यो धर्मे अवताररे । संवत सत्तर वर्ष छुनुरे, प्रमोद नाम संवत्सरनुरे ॥१२॥ दक्षिणायनमां रवि रमेरे, वर्ते शरद ऋतु ते समेरे । मास कार्तिक शुदी साररे, एकादशी सुंदर बुधवाररे ॥१३॥ नक्षत्र उत्तरा वज्र योगरे, विष्टि करण हरण रोगरे। कुंभ लग्न मांहि भाग्यवतीरे, जन्म्या धर्मदेव महा-मतिरे ।।१४।। धर्म जन्म जाणी त्रण लोकरे, थया विबुध साधु अशोकरे । आव्या सुर तेत्रीश कोडिरे, तेती करे स्तवन कर जोडिरे ॥१५॥ आव्या ब्रह्मा ने तियाँ ब्रह्माणीरे, आव्या शिव ने गिरिजा राणीरे। गाय शारदा शेष त्यां गानरे, तांडव नृत्ये त्रोडे शिव तानरे ॥१६॥ गाय गांधर्व ने अपसरारे, सिद्ध चारण ने म्रुनिवरारे । आव्यां वैक्कंठथकी विमानरे, नयणे निरखवा धर्म निदानरे ॥१७॥ करे सुर ते वृष्टि सुमनेरे, बहु वार्जित्र वाजे गगनेरे । वाजे ढोल ने दुंदुभि गडेरे, तेनी खबर मुक्तने पडेरे ।।१८॥ थाय नभे उत्सव अपाररे, थयो जाणी धर्म अवताररे। जेम गेकि रह्योछे गगनरे, तेम भ्रमिए भक्त मगनरे ॥१९॥ नरनारी पाम्यांछे आनंदरे, धर्म प्रकट्या पूरण चंदरे । षेरषेरथी मानिनी मळीरे, गाये वधाइ मंगळ वळीरे ॥२०॥ करे उत्सव नर ने नाररे, बांध्यां तरियां तोरण बाररे। भरी गज मोतिडाना थाळरे, चाली नारी वधावा दयाळरे ॥२१॥ ३ भ०चिं०

वधावेछे वनितानां वृंदरे, मुख जोइने पाम्यां आनंदरे। पछी भा-मिनी गइ भवनरे, तेड्या विप्र विद्याए संपन्नरे ॥२२॥ जोयां वार घडी ने लगनरे, जोइ मनमां थया मगनरे। कहे एवी पळे बाळ आन्योरे, जांणु त्रिभ्रुवनने सुख लान्योरे।।२३।। आवी पळे प्रकट जे थायरे, तेतो धर्म मूर्ति कहेवायरे । माटे आ वात तमे छ-पाड़ोरे, एनं नाम देवशर्मा पाड़ोरे ॥२४॥ तन शोभित सुंदर अतिरे, माटे देवशर्मा महामतिरे । पछी हररूया बाळशर्मा मनरे, आप्यां दान थइने प्रसन्नरे ॥२५॥ ब्राह्मण भिक्षुकने भरि-भाग्यांरे, दीधां दान बहु मुख माग्यांरे। थइ राजी अति विश्र जनरे, गया पोतपोताने भवनरे ॥२६॥ पछी माबापे विचार्यु मनूरे, आनी करवी झाझी जतनरे । अतिहेत राखी उरमांइरे, अर्घ घडी मेले नहि क्यांइरे ॥२७॥ हैये हेत समेत हुलावेरे, प्रेमे पारणियामां झुलावेरे । करे काम धामनुं जो कांइरे, पण वृत्ति रहे बाळक मांइरे।।२८।। रुडे हर्षे सुतने रमाडेरे, पय साकर पाक जमाडेरे। एम करतां मोटा ज्यारे हवारे, त्यारे मांड्युंछे मुखे बोलवारे ॥२९॥ कांई बोलेछे कालु जो कालुरे, तेतो लागे माताजिने वहालुरे। बाळचंद्र पेर्ये अहोनिशरे, वाधे देवशर्मा ते हमेशरे ॥३०॥ धर्यो धर्मे जे दिनो जनमरे, मटी साधुने वेळा विषमरे । तर्त पापीने पीडा उपनीरे, आव्युं अचानक एवं बनीरे ॥३१॥ पुर ग्राम घोष पृथ्वीपररे, तियां उपज्यो आनंद भररे। थया यज्ञ अग्नि निर्धूमरे, सुखमां वायु निर्मळ व्योमरे ॥३२॥ थयां सतपुरुषनां चित्तरे, अतिनिर्मळ परम पुनितरे। नदी कूप वाव्यनां जे जळरे, थयां ताल सरवे अमळरे ॥३३॥ सिद्ध ऋषि सहु सुख पाम्यारे, अंतरेथी अधर्मने वाम्यारे। यह राजि ने आपे आशि-

षरे, धर्म जीवज्यो कोटि वर्षरे ।।३४।। एम सुख पाम्या सत्य-धर्मीरे, पाम्या पीडा जे हता कुकमीरे । पापी पाखंडिनुं पडी भाग्युरे, मन सहुनुं धर्ममां लाग्युरे ॥३५॥ धर्म पोते अति महा-धीररे, सुखदुःखे रहे मन स्थिररे। भुख दुःख वळी शीत उश्वरे, होय तनमां न माने मनरे ॥३६॥ एवं जोइ बाळशर्मा बापरे, जाण्या मोटा योगी छे आ आपरे। वर्ष आठ जनमथी थियांरे, आपी ताते उपवीत तियांरे ।।३७।। आपी जनके जनोह ज्यारेरे, कर्यों मोटो उत्सव ते वारेरे। पछी धर्मे बहुनो जे वेषरे, धारी वधारीया पंच केशरे ॥३८॥ भण्या वेद शास्त्र ने पुराणरे, थया पंडित पोत्ये सुजाणरे। हुवा बार वर्षना आपेरे, त्यारे प्री-त्ये शुं पुछीयुं बापेरे ॥३९॥ पुत्र परणो एक मेरारुरे, मानो वचन एट छुं मारुरे । जेवा पुत्र तमे गुणवानरे, जोइये सुंदरी तम समानरे ।।४०।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये धर्मजन्म नामे दशमुं प्रकरणम् ॥१०॥

पूर्वछायो—सुंदर देश सरवारमां, नदी मनोरमा नाम छे।
मखोडा तीर्थ त्यांथकी, उत्तरे छपैया गाम छे।।१।। सुंदर सर
त्यां सोयामणुं, अति अमळ जळ तेतणुं। पद्म पोयणांनी पंक्तिए,
शोभेछे सुंदर घणुं।।२।। त्यांथी दक्षिण दिशमां, बिगहा चुडवा
बे वन छे। फळ फुल सुंदर जेमां, सुंदर झाडे सघन छे।।३।।
अनुप एवी अवनिमां, छे गाम नामे छपिया। द्विज क्षित्र वैश्य
शहर, चारे वर्ण ज्यां वसिया।।४।। चोपाइ—तियां कृष्णशर्मा
दिज एकरे, जाणे सार असार विवेकरे। शील संतोष गुणे संपघरे, शुद्ध हृदये परम पावनरे।।५।। तेने घेर भाग्यमानी नाररे,

अतिपवित्र अंतर उदाररे। जेवी निर्मळ ए युवतिरे, तेवा कृष्ण-शर्मा छे सुमतिरे ॥६॥ वळी वासुदेवनी जे भक्तिरे, करे माव भरिने दंपतीरे। एवां निर्मळ ए नरनाररे, तियां भक्तिए धर्यो अवताररे ।।७।। संवत् सत्तर वर्ष अठाणुंरे, कार्तिकी पुनम प्रमा-णुरे। नक्षत्र कृत्तिका बुधवाररे, थयो चंद्र उदे अवताररे।।८।। लीधो जनम ज्यारे जसवतिरे, थयां माततात राजी अतिरे। पछी कृष्णशर्मा जे विपररे, तेड्या जोतिषी ब्राह्मण धेररे ॥९॥ जोयाजो-षिए जोश रूपाळारे, कह्युं नाम कहेज्यो एनुं बाळारे। बीजा नाम-तणो निर्धाररें, करशे गुणेकरी नरनाररे ॥१०॥ छे ए देव मनुष्य म जाणोरे,भाग्य मोटां तमारां प्रमाणोरे। एवं सुणी कृष्णशर्मा का-नरे, कर्या वित्र राजी दइ दानरे ॥११॥ पछी मोटां थयां ए मूर्तिरे, लागे माबापने वालां अतिरे। करे खेल बालकसमानरे, तेणे ढां-क्युंछे पोतानुं ज्ञानरे ॥१२॥ वाधे बाळचंद्र पेट्ये नित्येरे, करे श्री-कृष्णनी मक्ति प्रीत्येरे। माटे लोक कहे भक्ति नामरे, एम बोलावे पुरुष ने वामरे ॥१३॥ रूप गुण लक्षणे छे एवारे, कपिलमाता देवहूती जेवारे। शील स्वभावे शोभेछे घणुरे, बिजा गुण हुं केटला गणुरे ॥१४॥ लजावान ने नम्रता अतिरे, दया क्षमांवाळां ए मूरतिरे । शुद्ध अंतर सदा अमळरे, निष्पाप ने आपे निर्मळरे ।।१५।। एवां भक्ति धर्मनी पत्नीरे, धरी तन बाळा नामे बनी रे। जेदि थकी जनम्यां ए सतीरे, भावि सौने कृष्णनी भक्तिरे ॥१६॥ बधी श्रद्धा सहुने ए समेरे, भक्ति करवा भक्ति जनमेरे। रह्यो घरघर आनंद छाइरे, दंभी पाखंडी गयां संताइरे।।१७।। एवो भक्तितणो जे प्रतापरे, जोइ बोल्या कृष्णशर्मा बापरे। आनी करिए हवे सगाइरे, सुंदर मोटी सरवार मांइरे ।।१८।। तियां

25 2 2 3 Of S

बालशर्मा गुणवानरे, उच्चे कुळे ए घर निदानरे। तेना सुत देव-शर्मा कहीएरे, आ कन्या एने आपणे दैएरे ॥१९॥ त्यारे राजी थयांछे भवानीरे, सारुं बात तमारी में मानीरे । पछी लग्न लखी तेह वाररे, कर्यो विप्र जावाने तैयाररे ॥२०॥ चाल्यो ब्राह्मण त्यांथकी झटरे, आव्यो पुर जियां रैकहटरे । कहे बाळशर्माने विपररे, लाव्यो लग्न हुं तमारे घररे ॥२१॥ सुत तमारो धर्म छे नामेरे, तेने परणावो छपैया गामेरे। एवं सांभळी सहुने भाव्यंरे, हेते करीने लग्न वधाव्युंरे ॥२२॥ पछी शणगारी सुंदर जानरे, थया सज सह गुणवानरे । कर्या वरे सुंदर शणगाररे, तेणे ओपेछे धर्म अपाररे ॥२३॥ पहेर्यों काछ कसुंबल बाघोरे, शिरे शोमेछे सोनेरी पाघोरे। हैये हार ने मिंढल हाथेरे, सुंदर खोक्यां छोगलियां माथेरे ॥२४॥ काने कुंडळ वेल्य ने कडीरे, कंठे शोभेछे हेमहांसडीरे। हैये हुलर हीरा सांकळीरे, ओपे उत्तरी सुंदर वळीरे ॥२५॥ पहेरी मोहनमाळा रूपाळीरे, उरपर उत्तरी शोभाळीरे। विजी पहेरीछे फुलनी माळारे, तेणे शोभेछे अतिरूपाळारे ॥२६॥ बाजु काजु पोंचि कर कडांरे, सुंदर शोभे वर नानकडारे। प-हेरी वेढ विंटी जडी नंगरे, मुद्रिकामां मणि कणि झगेरे।।२७॥ अंसे शोभेछे सोनेरी असिरे, मुखे पट दई रह्या हसिरे। पाये पहेरि छे मोजडी लालरे, चाले मलपता जेम मरालरे ॥२८॥ चड्या घोडले वर सुजाणरे, वाजे ढोल ने गडे निशाणरे। जोड्यां रथ वहेल ने गाडलारे, चाले एकथकी एक भलारे ॥२९॥ चडी गर्दि ढंकाणी गगनरे,जोइ अमर थया मगनरे। पहोच्या सुंदर वर छपैयेरे,आच्छुं गाम सरवे सामैयेरे ॥३०॥ जन जोइने वरनुं रूपरे, कहे आ छे सु-रनर भूपरे । आपी उतारा जुगत्ये जमान्यारे, पछी वर ते तोरण

आव्यारे ॥३१॥ जोइ सुंदर वरनुं रूपरे, मोद्यां नरनारी सुर भूपरे । माळ्युं माल तिलकतुं बिंदुरे, जाणुं उग्योछे आ बीजो इंदुरे ।।३२।। पछी पोंखी पाटे पघराव्यारे, घणुं सासुजीने मन भाव्यारे। पछी दिधांछे कन्यानां दानरे, बाइ वर तारो गुण-वानरे ।।३३।। बेठां मायरे वर कन्या जोडीरे, बांधी गांठ्य छुटे नहि छोडीरे । प्रीते परण्या धर्म उदाररे, तियां वर्त्यांछे जयजयकाररे ।।३४।। करी पहेरामणी बहुपेररे, पछी जानने वळावी घेररे । दिघी जानैये बहुज दात्यरे, तेनी कहीए आवे केम वातरे ॥३५॥ उडे अबीर गुलाल तेलरे, थइ रही छे रंगडानी रेलरे । एम रम्या जम्या रुडीरीतेरे, पछी कृष्णशर्मा बोल्या प्रीतेरे ॥२६॥ बाळशर्मा मागुं तम पाशरे, सत्यवादी छो पुरज्यो आशरे । कुळ तमारामां निर्धाररे, मागे जे ते न करो नकाररे ॥३७॥ माटे मागुंछुं जोडी हुं पाणरे,देज्यो दया करीने सुजाणरे। सुत तमारो मारो जमाइरे,आपो मुजने राखुं हुं आंइरे ॥३८॥ एवुं सुणी बाळशर्मा कानरे, पाम्या धर्मसंकट निदानरे। एह वात मुजथी केम थाशेरे, सुत धर्म ते केम देवाशेरे ॥३९॥ तेम नकारो पण नहि थायरे, पाईं नातो पत्य मारी जायरे। पछी कुळनो धर्म संभाळीरे, सुत आप्यातिण ते हा वाळीरे ॥४०॥ जेम काढी आपे कोइ प्राणरे, एम आप्या सुतने सुजाणरे । रह्यं नहि घीरज्य धारतारे, कहेतां कही न जाये वारतारे ॥४१॥ पछी अतिशे धीरज्य धार्युरे, देवा शिक्षा मनमां विचार्थुरे । सुणो दुलहि क्वंवरी कल्याणीरे, कहुं तमारा हितनी वाणीरे ॥४२॥ तमे पाळज्यो कहुं पतिवतरे, जेणेकरी पामो सुख तरवरे । पतिव्रताना धर्म समानरे, नथी नारीनो यश निदानरे ॥४३॥ पतिव्रतपणाने जे पामेरे, तेनां सर्वे संकट वामेरे। मात्र

10-20 May 200

तात आत काका मामारे, धन्य पति जेने एवी भामारे ॥४४॥ तेनी त्रण पेढी लगी तारेरे, जे कोइ नारी पतिव्रत धारेरे। तन रोम लेखे कोटि वर्षरे, रमे खर्गे ए नारी ने पुरुषरे ॥४५॥ सुर शशि थावाने पावनरे, बिती पवन स्परशे तनरे। तप तीर्थ व्रत जे कहावेरे, तेनुं तेज पतिव्रता पावेरे ॥४६॥ पापी पृथ्वीनी स्परसे जो रजरे, थाय पवित्र नहि आश्चर्यजरे । एवी पतिव्रता प्रण्यवानरे, तेनां नाम सांभळो निदानरे ॥४७॥ अरुंधती अनसूया जेहरे, सावित्री शांडिली सत्या तेहरे । अहल्या द्रौपदी शतरू-पारे, मेना सुनीति संज्ञा अनुपारे ॥४८॥ खाहा लोपामुद्रा रह सतीरे, जेणे प्रेमेशुं सेविया पतिरे । एवीं तुंपण थाइश कल्या-णीरे, सत्य मानज्यो कहुं छुं वाणीरे ।।४९।। थाशे पतिमांहि प्रेम अतिरे, माटे तुंने कहेशे प्रेमवतीरे । पछी पोताना सुत पावनरे. तेने कहेछे हित वचनरे ॥५०॥ पुत्र ब्रह्मकर्म जे कहेवायरे, रहेज्यो कुशळ तमे तेह मांयरे। वळी आ सुंदरी जे सौभाग्यरे, तेनो करशो मां तमे त्यागरे ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिकुलानंदमुनिविरिचते भक्तिचितामणिमध्ये भक्तिधर्मविवाह नामे अग्यारमुं प्रकरणम् ॥११॥

पूर्वछायो-पछी भक्तिए पुछियुं, सुणी ससरा बृद्ध तात। पितिव्रताना धर्मनी, कही विष्येविष्ये मने वात।।१।। एवं सुंणिने बाळशर्मा, कहे सांमळज्यो सुंदरी। भाष्या छे धर्मशास्त्रमां, महाम्रानिए दया करी।।२।। सतीगीतामां सतीए, धर्म पितव्रताना प्रिष्ठच्या। रहेज्यो एवी रीतशुं, जेवा शिवाए वर्णच्या।।३।। दुःख पढे दोय दंपती, तमे समीरसुत संभारज्यो। कुळदेव ए आपणा, करशे संकटमां सार ज्यो।।४।। चोपाई-रहेज्यो सर्वे एकादशी

व्रतरे, करज्यो उत्सव जेवी सामधिरे। वळी सतपुरुषनी संगरे, करज्यो उरे आणी उछरंगरे ॥५॥ दारी चोरी मद्य मांस जेहरे, भ्रुल्येपण करशो मां तेहरे। अष्टवाडो छे भूमिए घणोरे, रखे पाश लागे तेह तणोरे ॥६॥ कहे सुतप्रत्ये बाळशर्मारे, तमे जाज्यो अयोष्या नम्रमारे । एवी सांभळी शिखनी वाणरे, लाग्यां पाय दंपती सुजाणरे ॥७॥ ज्यारे नरनारीए नाम्यां शीपरे, त्यारे आ-पीछे पांडे आशिषरे । कहे सुखी रहेज्यो नरनाररे, थशे यश तमारो अपाररे।।८।। एम कही चाल्या बाळशर्मारे, पहोच्या पांडे पोताना नग्रमारे । तियां वीत्या थोडाघणा दिनरे, पछी तरत तज्यं त्यां तनरे ॥९॥ पछी सांभळज्यो शुभ मतिरे, कहुं रह्यां जेम ए दंपतीरे। जेजे ताते कह्यां छे वचनरे, तेते रीतमां रह्यां मगनरे ।।१०।। रहे व्रत अखंड एकादशीरे, करे कृष्णकीर्तन हुलशीरे । धर्म न त्यागे आपतकाळरे, कहे लोक आ धर्म दयाळरे ॥११॥ पछी आवी त्यां द्वादश नारीरे, सेवे श्रद्धादि प्रेम वधारीरे। देखे धर्म ने भक्ति दोयरे, बिजां देखे नहि जन कीयरे ॥१२॥ करे संध्या तर्पण कर्म नित्यरे, सत्य शास्त्रमांहि घणी प्रीत्यरे। एवा धर्मदेव धुरंधररे, करे भक्ति प्रभ्रुनी सुंदररे ॥१३॥ एम करतां दंपती आपरे, जन्म्या सुत श्रीरामप्रतापरे । गुणे संक-र्षण समानरे, दातार शूर भक्त निदानरे ॥१४॥ इवे बीजा म्रनि जे निष्पापरे, पोता भेळो सह्यो जेणे शापरे । तेह ऋषिए धर्या छे तनरे, जोइ द्विजनां कुळ पावनरे ।।१५॥ जियां जियां रह्याता ए मुनिरे, करता भक्ति प्रेमेशुं प्रभुनिरे । दिन-दिन प्रत्ये अतिघणीरे, करता कथा श्रीकृष्णजि तणीरे ॥१६॥ त्यारे अभक्त नर जे अभागीरे, तेने वात ए वसमी लागीरे।

पछी जियां तियांथी अदेवरे, वैर आदरियुं ततखेवरे ॥१७॥ धर्म-वान मक्तिवान जनरे, तेने आद्युं करवा विघनरे। वळी भक्ति धर्म ऋषि जेहरे, तेने समझे साचा शत्रु तेहरे ॥१८॥ जेमजेम पीडा पामे धर्मरे, एवां करे ते कुकर्मी कर्मरे। जेमजेम पीडा पामे भक्तिरे, एवां कष्ट उपजावे कुमतिरे ॥१९॥ जेमजेम दुःखी थाय मुनिरे, एवी मति छे सहु असुरनीरे । परठे गुणमां अवगुण अतिरे, महा पापमय जेनी मतिरे ॥२०॥ पुर ग्राम देशमां जे दैत्यरे, पीडेछे भक्ति धर्मने नित्यरे। तेने दुःखे भक्ति धर्मदेवरे, आव्यां अयोध्यामां ततखेवरे ॥२१॥ तोय कुकर्मी केड न मुकेरे, देतां दुःख घडिए न चुकेरे। पछी ए दुःख टाळवा काजरे, गया काशीमांहि धर्मराजरे ॥२२॥ जाणी शिवनी पुरी सुंदररे, तियां करावियो महारुद्ररे । कष्ट मटाडवा कर्यो उपायरे, पण कष्ट मट्यं नहि कांयरे ॥२३॥ तियां पण दनुजसमृहरे, वेष मनुष्य ने करे द्रोहरे । पाम्या पीडा त्रणे त्यां अतिरे, पछी गुप्तपणे करी गतिरे ॥२४॥ कष्ट मटवा करेछे उपायरे, पण कष्ट मटे नहि कांयरे। पछी त्यांथी आविया प्रयागेरे, अतिकृश छे त-नमां त्यागेरे ॥२५॥ कर्युं संध्या तर्पण गंगा नाइरे, कर्यो तीर्थ उपवास त्यांइरे। रह्या घणुं ए स्थळ मोझाररे, तियां मळ्या श्रीव-ष्णवाचाररे ॥२६॥ नाम रामानंद महामतिरे, खयं सद्वरुरूप मुरतिरे । महा तपेश्वर त्याग तनेरे, धीर गंभीर मोटा छे मनेरे ॥२७॥ आपे मुमुक्षुने उपदेशरे, राखेछे ब्रह्मचारिनो वेशरे।ऊर्घ्व-पुंडू कर्षु त्यां केशरेरे, कुंकुम इंदु मध्ये मन हरेरे।।२८।। कंठे माळा तुलसीनी दोयरे, जोइ जनतणा मन मोयरे। एवे वेषे रामानंद म्रुनिरे, फरे सार लेवा जिज्ञासुनीरे ॥२९॥ बहु शिष्ये सहित

फरेछेरे, सहुने ज्ञानोपदेश करेछेरे । शब्दब्रह्म परब्रह्म प्रिछेरे, यथार्थपणे जैम इच्छेरे ॥३०॥ एवा खामी जेह रामानंदरे, तेने मिळिने पाम्या आनंदरे। बहु हेते करी धर्मदेवरे, करे मोटा जाणी नित्य सेवरे ॥३१॥ एक दिवस चांपता चरणरे, आवी निद्रा ने ढळिया धरणरे । सुखे सुता त्यां थयुं स्वमरे, पाम्या तेजमंडलनुं दर्शनरे ॥३२॥ तेमां श्रीकृष्ण मृतिं क्यामरे, निरख्या प्रभुजि पूरणकामरे । पाम्या अंतरे दर्शन एहरे, जाणी कृपा श्रीखामिनी तेहरे ॥३३॥ जाण्या सहुरु एक आ खामीरे, पाम्या शरण बेउ शीष नामीरे। पछी स्तुति दंपतीए किथीरे, एथी भागवती दीक्षा लीधीरे ॥३४॥ आपी स्वामिए माळा ते दोयरे, बांघी धर्मे तुलसीनी सोयरे। पछी श्रीकृष्णना मंत्र जेहरे, अष्टा-क्षरना कहावेछे तेहरे ॥३५॥ तेनो हेत उपदेश किथोरे, पोता शरणे धर्मने लिधोरे। कह्यो शरणमंत्र ते समानरे, विशेष महामंत्र निदानरे ॥३६॥ एह वेउ मंत्र सुखकारीरे, सुणी धर्मे लीया मने धारीरे। पछी नरनारीनां जे नियमरे, पुछ्यां पाळवानां करी प्रेमरे ॥३७॥ कहुं सुणो सहु जन हवेरे, जेजे कह्युंछे एना गुरुवेरे । सर्वे संप्रदायनी जे रीतरे, कही अतिपरम पुनितरे ॥३८॥ श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्-मुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये भक्तिधर्मने रामानंदस्वामी मळ्या ए नामे वारमुं प्रकरणम् ॥१२॥

पूर्वछायो स्वामी कहेछे धर्मने, तमे सांभळो वात सिद्धांत। शुद्धमति अति ओळखी, हवे कहुं धर्म एकांत।।१।। त्यांभी गृही नरनारीनी, कहुं रीत ते रुडि पेर। तमे रहेडयो रखावज्यो, ज्यारे जाओ तमारे घेर।।२।। उत्तम रीतने अनुसरी, तमे वर्तज्यो नर-

नार । अशुद्ध रीत होय जगमां, तोय करशो मां कोइ वार ।।३।। शुद्ध रीत हवे सांमळो, संक्षेपे कहुं सुजाण । जेणे करी त्यागी गृही, पामे पद निर्वाण ॥४॥ चोपाई-कहुं श्राद्ध यज्ञे पशुघातरे, करवी नहि सांभळो वातरे। एकादश त्रण प्रकाररे, सुरा पिवी नहिं कोइ वाररे ॥५॥ शुद्ध ओषधिमां मद्य मळेरे, ते न खावुं पीवुं कोइ पळेरे। यज्ञशेष मांस लेश जेहरे, भुल्ये भक्ष न करवुं तेहरे ॥६॥ सुणो धर्मदेव वात मोरीरे, पुण्य सारुए न करवी चौरीरे। परत्रियानो संग न की जेरे, केदि त्रियानुं दान न दीजेरे ।।७।। त्रियामात्र जार नर जोइरे, आपत्काळे न रहे संग सोइरे। वळी त्यागी नर होय जेहरे, तेने स्पर्शे नहि नारी देहरे ।।८।। तेम त्यागी नर निर्धाररे, तजे नारीने अष्ट प्रकाररे। ए छे जाणो अनादिनी रीतरे, वळी कहुं सुणो दइ चित्तरे ॥९॥ केदि आत्मधात नव किजेरे, विमुखनी कथा न सुणिजेरे। हरि-प्रसादी माहातम्ये अन्नरे, न खपे तेनुं न खावुं जनरे ॥१०॥ मिथ्या अपवाद कोइ शीररे, देवो नहि कहुं धर्म धीररे । कोइ विषयी व्यसनी जनरे, तेनो न करो संग कोइ दनरे ।।११।। बळी तपस्त्री कोधी मक्त कामीरे, होय एवा जे नर हरामीरे। तजी खधर्म बीजो धर्म पाळेरे, कावे त्यागी ने लोभ न टाळेरे ॥१२॥ गुरु शिष्यने शास्त्र प्रमाणरे, न वर्ते वर्तावे अजाणरे । ज्ञानी खंडे प्रभुनो आकाररे, एह पर खळने धिकाररे ॥१३॥ एह पर्खळ नर जेहरे, तजवा मुमुक्षुजने तेहरे । देव तीर्थ वेद ने गायरे, बाह्यण साधु धर्मी कहेवायरे ॥१४॥ तेनी निंदा न करवी मुखेरे, धर्म मेलवो नहि दर्द दुःखेरे । वळी जेह शास्त्रमां श्रीकृष्ण्रे, कह्या निराकार अज्ञजनरे ॥१५॥ ते न सांभळवं सुणी धर्मरे,

एह समझी लेवो मने ममरे। आयुघ विष न देवी जाळरे, जेथी जन दुःख पामे ते काळरे ॥१६॥ वळी आ मते मोटा ब्रह्म-नरे, ते न राखे शस्त्र कोइ दनरे। ऊर्ध्वपुंद्र तिलक करखुंरे, मध्ये कुंकुमनुं बिंदु धरबुंरे ।।१७।। राधाकृष्ण प्रसादी जे होयरे, करे सधवा बिंदु भाले सीयरे । न करे विधवा बिंदु पुनितरे, एवी आपणा मतनी रीतरे ।।१८।। जेनी जे रीत ते चित्त धरवीरे, भावे श्रीकृष्णनी भक्ति करवीरे । करवो रासपंचाध्याय पाठरे, कुष्ण कृष्ण कहेवुं जाम आठरे ।।१९।। गळे माळा घरावज्यो दोयरे, तुळसी ने चंदननी सोयरे। एवी वात गुरुजिए करीरे, भक्ति धर्मे ते हृद्ये धरीरे ॥२०॥ पछी अनन्यभक्तनी रीतरे, कही उद्धवे करीने प्रीतरे। कहे बाह्मण तमे छो श्रेष्ठरे, जेने कृष्ण छे इष्ट अभीष्टरे ॥२१॥ मारा शिष्यमां मोटा छो तमेरे, रुडा गुणवाळा जाण्या अमेरे। हवे घेर जाओ नरनारीरे, राधा-कृष्णने हृदये संभारीरे ॥२२॥ आवे म्रुम्रुक्षु जीव कोइ पासरे, आपी उपदेश टाळज्यो त्रासरे। एने महामंत्रनी जे जापरे, तमे करज्यो निरंतर आपरे ॥२३॥ वळी श्रीकृष्णना जे बे मंत्ररे, जोइ मुमुक्षु कहेज्यो निरंतररे। ब्राह्मण क्षत्रिय ने वैश्य जेहरे, सतराद्र ने स्त्रियो तेहरे ॥२४॥ कहेज्यो मंत्र प्रथमनो तेनेरे, भव-सागर तरवा एनेरे। करतां एह मंत्र नित्य जापरे, थाय अधि-कारी नर आपरे।।२५॥ त्यारे बीजो मंत्र तेने कहेज्योरे, एवी रीते उपदेश देज्योरे। पडे तमारे जो कांइ दुःखरे, तो थाशे महामं-त्रथी सुखरे ॥२६॥ करशो जाप तो श्रीकृष्णदेवरे, देशे इष्ट सिद्धि ततखेवरे । रामानुजना ग्रंथ छे जेहरे, तमे सर्वे भणज्यो तेहरे ॥२७॥ गीताभाष्य आदि ग्रंथ तेमारे, श्रीकृष्णनुं माहात्म्य

छे जेमारे । करज्यो कथा तेनी अहोनिशरे, एवी आप्यो गुरुए उपदेशरे ।।२८।। पछी भक्ति धर्म आव्यां घेररे, करे कृष्णमक्ति रुडी पेररे ! स्थूळ स्रक्ष्म ने कारण देहरे, तेथी पर आत्मा छे जेहरे ॥२९॥ वळी व्यापे ए त्रण ठेकाणेरे, तेने श्रीकृष्णनो दास जाणेरे। सर्वोपरि छे श्रीकृष्ण एकरे, जीव ईश्वर माया प्रेरकरे ॥३०॥ एम निश्रय कर्यो धर्मे ज्यारेरे, जगद मिथ्या मनाणुं छे त्यारेरे । गुरु आज्ञाए करी ग्रंथ जेहरे, रामानुजना वांचे नित्य तेहरे ॥३१॥ एवा शुद्ध हृदयवाळा जाणीरे, दैवी जीव बोले एम वाणीरे। आतो धर्मदेव छे साक्षातरे, तेह विना नीय आवी वातरे ॥३२॥ पछी असुरगुरुने त्यागीरे, थया धर्मपद अनुरा-गीरे । जेने दैत्यगुरुमां छे हेतरे, थया दैत्य ते कुळे समेतरे ॥३३॥ मान्यां धर्मनां जेणे वचनरे, शोभ्या देवसमान ते जनरे। पछी अन्न वस्त्र अलंकाररे, पूज्या धर्मने शिष्ये ते वाररे ॥३४॥ तेणे करी थइछे संपत्तिरे, गयां दुःख दारिद्य विपत्तिरे । एम करतां वीत्या दिन सोइरे, आपी सुतने समे जनोइरे ।।३५॥ कर्या उत्सव जमाड्या द्विजरे, ते देखीने दैत्ये करी खिजरे। पछी अ-सुर नर मेळा थइरे, गया घरनी संपत्ति लइरे ।।३६।। अन धन महिषी ने गायरे, तेमां रहेवा दीधु नहि कांयरे । एह आदि जे आपियां दुःखरे, तेतो कह्यां जाय नहि मुखरे ॥३७॥ थयां निर्धन नहि खावा अन्नरे, न मळे नवुं पेरवा वयनरे । पडे एकां-तरे उपवासरे, तेने देखी दुष्ट करे हामरे ॥३८॥ कहे जुवो आ धर्म ने भक्तिरे, सुख माणें के केंद्रं दंपतीरे। एतो सत्यवादी छे निदानरे, चालो थाये एना मेमानरे ॥३९॥ आवे एम देखाडवा शुंडंरे, जेने अंतरे वैर छे उंडंरे । तेने उछि उधारुं करीनेरे,

भोजन करावे भाव भरीनेरे ॥४०॥ न मळे अन्न पोताने खावारे, वण न दिये पत्यने जावारे । एम बहु दिन दुःख सह्युरे, त्यारे एक दिन भक्तिए कह्युंरे ॥४१॥ कहे प्रेमवती सुणो खामीरे, पाम्या दुःख रही नहि खामीरे। तमे जाणोछो सर्वे उपायरे, मटाडो तो वार नथी कांयरे ॥४२॥ अन्न बस्नतुं दुःख आपणेरे, नथी मटता मेमान आंगणेरे । आपणे तो फळ फुल जमुंरे, भाजी खाइने दिन निगमुरे ॥४३॥ पण मेमान ते केम जमेरे, कडुंछुं एम पण जेम गमेरे। एवं सुंणी बोल्या धर्म वाणीरे, कहुं सांभळी तमे कल्याणीरे ॥४४॥ सुख दुःख जे लख्युं शरीररे, टाळ्युं न टळे राखवी धीररे । जोने कराव्या महारुद्र जेहरे, थावा सुख कराविया तेहरे ॥४५॥ तेणे दुःख मटचुं नहि अणुरे, साम्रं कष्ट थयुं कोटिघणुरे। माटे सुख दुःख लख्युं जे भालरे, मटे घटे नहि एक वालरे।।४६॥ देव ऋषि राजाथी न मटेरे, जेने जेवुं लखाणुंछे घटेरे। जोने इंद्र अंगे थयो भंगरे, पामी शची दुःख ए प्रसंगरे ।।४७।। वसिष्ठ ने अरुंधती जेहरे, शत्रुथकी दुःख पाम्यां तेहरे। राजा नळ वळी दमयंतीरे, तेहपण पाम्यां दुःख अतिरे ॥४८॥ एवे मोटेमोटे दुःख सह्युरे, पण कोइ आगळ्य न कह्युरे । एवं सांभक्रिने प्रेमवतीरे, मांड्युं रुदन करवा अतिरे ॥४९॥ हुंतो तमने शावडे सेवुरे, नथी घरमां पदारथ एवंरे। मारी होंस ्रही मन मांइरे, तमने सेवी शकी नहि कांइरे ॥५०॥ न मळे घरमां जमवा अन्नरे, शियो करुं मनोरथ मनरे। त्यारे बोलिया धर्म दयाळरे, भक्ति दुःख न रहे सदा काळरे ॥५१॥ माटे धीरज्ये धर्ममां रहेवुंरे, मुखे कायर वेण न कहेवुंरे। भक्ति मुकवी नहि शिर साटेरे, कहुं सत्यवादी छो ते माटेरे ॥५२॥ सुख दुःखमां रहेबुं अडगरे, परछ्यो पाछो न मेलवो पगरे। एम टेक राखो मन मांयरे, करवी चिंता घटे निह कांयरे।।५३॥ जेवुं गमशे गोलोक धणीनेरे, तेवुं आवशे सहजे बणीनेरे। करीश एनो हुं हवे उपा-यरे, रहेज्यो राजी तमे मनमांयरे।।५४॥ करीशुं तेम थाशे जेम सुखरे, हवे निह रहे घणा दिन दुःखरे।एम आप्यो धर्मे उप-देशरे,कहुं समजवो ए रहस्यरे।।५५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यिनष्कुलानंदमुनिविर्चिते भक्ताचिंतामणिमध्ये रामानंदस्वामीने मळीने भक्तिधर्म धेर आव्यां ए नामे तेरमुं प्रकरणम्।।

पूर्वछायो-पछी धर्मे धीरज धरी, वळी मने कर्यो विचार। ताते कह्युहतुं चालतां, ते सांभळ्युं तेहवार ॥१॥ कह्युं कुळदेव आ-पणा, समीरसुत कहेवाय । संकटमां संभारज्यो, करशे ए कष्टमां सहाय ॥२॥ माटे कष्ट मोडुं नथी, आथी बीज़ं कोइ अन्य। दैत्य दुःख दिये घणुं, नथी अंगे अशन वसन।।३॥ माटे समीरसुतने, संभारुं करवा सहाय। अंजनीसुत विना एके, नथी टाळवा उपाय ॥४॥ चोपाइ—पछी अयोध्यामां जइ आपरे, जप्या हनुमान-जिना जापरे। मारुत सुत मंदिरमां जइरे, करी स्तुति एक पगे रहरे॥५॥एम करतां धर्म स्तवनरे, थया पवनसुत प्रसन्नरे। आबी स्त्रमांहि कह्यं एमरे, मने संभायों नहि तमे केमरे ॥६॥ हवे दुःख तमारुंदंपतिरे, नहि रहेवा दउं एक रतिरे। कहुं वात मानो मारी मनरे, बेगे जाओ तमे बंदावनरे । ७॥ तमसंगे शापे मुनिजनरे, जेणे धर्यांछे जुजवां तनरे। ते तमने त्यां सहु मळशेरे, दुःख तमारुं तर्त टळशेरे ।।८।। एम धर्मने कही हनुमानरे, पछी थया पोते अंत-र्थानरे। पछी जागिन थया प्रसन्नरे, सत्य मान्युं ए धर्मे खपनरे ॥९॥ पछी पुत्रने मेली मोसाळरे, चाल्यां भक्ति धर्म ततकाळरे।

आव्यां नैमिषारण्ये उमंगेरे, नथी चालतां कोइने संगेरे ॥१०॥ पछी त्यांथी षृंदावन आवीरे, निर्धि कृष्णमूर्ति मन भावीरे। फुल-दोले इलता श्रीकृष्णरे, एवी मूर्तिनां कर्यों दर्शनरे ॥११॥ पछी गोवर्धन जेह गिरिरे, तेने प्रेमे प्रदक्षिणा करिरे । दइ प्रदक्षिणा बेठां दोयरे, तियां मळ्या मुनिजन सोयरे॥१२॥ मरीच्यादि मोटा मोटा म्रुनिरे, मळ्या नहि ओळखाण आगुंनिरे । बीजा जन बूंदा-वन रहेनाररे, तेहपण न जाणे लगाररे ॥१३॥ पछी हरिइच्छा ब-ळवानरे, पडी एक विजानी पिछानरे। ऋषि कहे आ धर्म भक्तिरे, धर्म कहे आ मुनि सुमतिरे ॥१४॥ पछी मळी बेठां छे एकांतरे, कह्युं एक बीजानुं वृत्तांतरे। कहे ऋषि रही नथी मणारे, दीघां असुरे दुःख ते घणारे ।।१५॥ भक्तिधर्म कहे न जाय कह्युरे, जेजे अमारे उपर थयुंरे। पछी एक बीजानुं जे दुःखरे, सुंणी थयुं अतिशे असुखरे ॥१६॥ कहे दुर्वासा दइने शापरे, पछी बोल्या दया करी आपरे। कष्ट पडशे तमने अतोलरे, मिथ्या नहि थाय मारो बोलरे ॥१७॥ पण कृष्ण धरी अवताररे, हरशे दुःख तमारुं ते वाररे। एह वातनो वायदो थियोरे, हवे करीए उपाय शियोरे ॥१८॥ कहे धर्म ए खोडुं न थायरे, राखो धीरज सहु मन मांयरे । करो श्रीकृष्णनुं आराधनरे, जेणे राजी थाय भगवनरे ।।१९।। हुं पण जपुछुं कृष्णनो जापरे, जेणे करी टळे दुःख तापरे। तमेपण तेना अंगना जेहरे, करो पाठ सहु मळी तेहरे ॥२०॥ पछी सहु ऋषिए विचारीरे, वात धर्मनी उरमां धारीरे। कोइ भागवत पाठ करेरे, कोइ गीतानो पाठ आचरेरे ॥२१॥ कोइ वासुदेवमाहातम्य जेहरे, कोइ विष्णुसहस्रनाम तेहरे । करे विष्णु-गायत्रीनो जापरे, कोइ नारायणवर्म आपरे ॥२२॥ कोइ जपे

श्रीकृष्णतुं नामरे, एम जाप करे आडु जामरे । रासपंचाध्याय वळी जेहरे, भक्ति पाठ करे नित्य तेहरे ॥२३॥ एम भक्ति धर्म ऋषिरायरे, करे दिवसमां ए उपायरे। रात्रि मांहि ताल ने मृदं-गेरे, गाय गीतगोविंद उमंगेरे ॥ २४ ॥ भक्ति धर्म ऋषि बडभा-ग्यरे, एम आदर्योछे विष्णुयागरे । पछी वैशाखशुदी एकाद-शीरे, कर्युं जागरण सहुए हुलक्षीरे।।२५॥ गइ रात्य थयुं ब्रह्मग्रहू-र्तरे, दीडुं ब्रह्मतेज तियां तर्तरे। तेमां दीठा नंद ने यशोदारे, जोइ गोपी गोप पाम्यां मुदारे ॥२६॥ वळी दीठी अष्ट पटराणीरे, राधिका रमा ने रुक्मिणीरे। सत्या सत्यभामा जांबुवतीरे, रुक्ष-मणा ने वळी नाम्नजितीरे ॥२७॥ वळी घेनुए शोमे ए धामरे, जेनुं कहीए ते गोलोक नामरे। तेमां मूर्ति सुंदर इयामरे, दीठा श्रीकृष्ण पूरणकामरे ॥२८॥ सुवर्ण वस्त्रे शोभेछे वळीरे, मुखे रुडी वजाडे वांसळीरे। सुंदर शोभे नटवर वेषेरे, रत्नजिंदत मुकुट छे शीपेरे ॥२९॥ मकराकार कुंडळ काने शोभेरे, क्षिणा वक केशे मन लोभेरे। भाले शोभा रही छे भलकीरे, तेपर तोरा रह्याछे ललकीरे ॥३०॥ मुख पूरणशशि समानरे, नयणां कमळ-दळ निदानरे। मोटां मोतीनी माळा ते लेकेरे, बीजां सुगंधी पुष्पनी बेकेरे ।।३१।। एवी अंगोअंग शोभा अतिरे, रसरूप रसिक मुरतिरे। साम्रुद्रिके शोभा कही जेवीरे, दिठी मूर्ति मनोहर ते-वीरे ॥३२॥ शोभासागर सुंदर क्यामरे, सारी प्यारी छबी सुख-धामरे । कोटि कामदेव देखी लाजेरे, एवी छबी छबिलानी छा जेरे ॥३३॥ एवं रूप जोइ ऋषिरायरे, पड्यां मिक धर्म सहु पाय रे। हाथ जोडी उमां एक पगेरे, कोइ मटकुं न भरे द्रगेरे ॥३४॥ जेम काष्ट्रनां होय पुतळारे, एम उभां आगळ सघळारे। दोय घडी ४ भ०चि०

रह्यां एम जनरे, पछी सर्वे थयां सचेतनरे ।।३५।। करी स्तुति पछी जोडी हाथरे, कहे जयजय मारा नाथरे । जयजय तेजपुंजराशिरे, जय अकळरूप अविनाशिरे ॥३६॥ उत्पति स्थिति प्रलय काळरे, करवा समर्थ तमे दयाळरे । क्षरअक्षरपर अकळरे, रहो तेजपुंजने मंडळरे ॥३७॥ धर्मरक्षा करवा मुराररे, धार्या मत्स्यादिक अव-ताररे। जनहिते ए जुजवां तनरे, धरी करो जननी जतनरे।।३८॥ जय गोलोकपति गोविंदरे, जय निजजन सुखकंदरे। जय राधापति रसरूपरे, जय सुंदर क्यामखरूपरे ॥३९॥ जय मनोहर महाराजरे, जय व्रजजन सुखसाजरे । जय निजजन मनरंजनरे , जय महादुःख भयभंजनरे ॥४०॥ जय दुष्टदमन दयाळरे, जय कुकर्मी जीवना काळरे। जय भक्त भवदुः खहारीरे, तमे संतना छो सुखकारीरे ॥४१॥ जुय अनाथना नाथ आपरे, खामी हरो अमारा संतापरे। जय दीनना बंधु दयाळरे, जय गौब्राह्मण प्रतिपाळरे ॥४२॥ तमे गरीवना छो निवाजरे, दुःखसागरमां सुख झाझरे। अमे बुड्यां दुःखोदधिमांयरे, तम विना झाले कोण बांयरे ॥४३॥ तमे समर्थ छो मारा नाथरे, माटे कहीए छीए जोडी हाथरे । जे जे आव्यांछे शरण तमारीरे, तेनी रक्षा करीछे मुरारीरे ॥४॥ माटे अमे छीए तमारे शरणरे, करो सुख महादुःखहरणरे । एम स्तुति करी धर्म मुनिरे, पंछी पाय लाग्यां सौ प्रमुनीरे ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसह जानंदस्वा मिशिष्यनिष्कुलानंद्रमुनिविरचिते चिंतामणिमध्ये धर्ममुनिस्तुतिनामे चौदमुं प्रकरणम् ॥१४॥

पूर्वछायो—एवी रीते सर्वे मळी, करी स्तुति धर्म ऋषिराय। सुणी श्रीहरि श्रवणे, बोल्या राजि थइ मनमांय ॥१॥ कृष्ण कहे धर्म ऋषिने, थयो प्रसन्न तमपर आज । मनवांछित जे मागशो,

ते सारिश सर्वे काज ॥२॥ त्यारे धर्म कहे धन्यधन्य तमे, सदा प्रसम्ब छो मने क्याम । मारे छे जे मागवुं, ते कहुं हुं करमाम ॥३॥ आ ऋषि हुं धर्म भक्ति, तेने तमारां जाणी नाथ। दैत्वे दुःखदीधां घणां, तेणे दुःखी छीए सहु साथ ॥४॥ चोपाई-त्यारे श्रीकृष्ण कहे सुणी धर्मरे, एती सर्वे जाणुंछु हुं मर्मरे। असुरने द्रोह मुज साथेरे, तेमाटे वैर तमारे माथेरे ॥५॥ साधु देवने पीडेछे पापीरे, मद्य मांस बलिदान आपीरे। मारां जाणिने दियेछे दुःखरे, महाअसुर छे जे विम्रुखरे ॥६॥ तेने मारीश हुं थोडे दनरे, तजी मय रहो निर्भय मनरे। मुज विना कोइथी न मरेरे, जो कोटि उपाय कोइ करेरे ॥७॥ धर्म तमे भक्ति ने आ ऋषिरे, सहु रही आनंदमां खुशिरे। हरिनामे हुं थाइश बाळरे,दुःख सहुनुं टाळिश ततकाळरे ॥८॥ दुर्वासानी सहुने छे शापरे, तेमां हुंपण आन्योछुं आपरे। माटे धर्म घेर धरी तनरे, सुखी करीश सर्वे जनरे ॥९॥ यह गयोछे धर्मनो नाशरे, तेने याछो करीश प्रकाशरे। एकांतिक धर्म रूडीरीतेरे, स्थापन करीश हुं तेह श्रीतेरे ॥१०॥ माटे निःशंक रहो नरनारीरे, सत्य वात मानी तमे मारीरे। तमे पाठ कर्या जेजे स्तोत्ररे, बळी जिपया छे जेजे मंत्ररे ॥११॥ तेनो पाठ जाप जेजेकरशेरे, आच्या कष्ट-मांथी ते उगरशेरे। देह छतां नहि थाय दुःखरे, अंतसमे ते पामशे सुखरे ॥१२॥ श्वेतद्वीपादि धाम छे जेहरे, तियां आनंद करशे तेहरे। एम कुपानिधि जे श्रीकृष्णरे, थया मक्तिधर्म पर प्रसन्नरे ॥१३॥ आपी एवी वर भगवानरे, पछी थयाछे अंतर-धानरे। त्यारे धर्म भक्ति ऋषिरायरे, अति हर्ष पाम्यां मन मांयरे ॥१४॥ थयुं विष्णुयाग व्रत पुरुरे, मळया कृष्ण न रह्युं

अधुरुरे । करी पारणां बेठा एकांतरे, कहे ग्रुप्त राखवी आ वातरे ॥१५॥ ज्यारे श्रीकृष्ण प्रकट थाशेरे, त्यारे जेम हशे तेम जणा-शेरे । एम करी मनमां विचाररे, मळ्या परस्पर करी प्याररे ॥१६॥ पछी पोतपोताने आश्रमरे, गया ऋषि ने भक्ति धरमरे। धर्म पूर्ण मनोरथ पाम्यारे, थयुं सुख दुःख सर्वे वाम्यारे ॥१७॥ पछी घरपर चाल्यां दोयरे, आव्यां नैमिपारण्यमां सोयरे। सघन वन त्यां वेलिनी घाटरे, तेषे करी ढंकाणीछे वाटरे ।।१८॥ भ्रुख्यां मार्ग आथम्यो दनरे, दैत्यभयथी बिनां छे मनरे। एवा समामां वनमोझाररे, मळी कुहुंबे सोतीएक नाररे।।१९।। अति राजि रमे वनमांयरे, केनी बीक नथी मनमांयरे। बहु पुष्ट कुटुंब छे एनुंरै, नथी गणतां बळ बीजा केनुंरे ॥२०॥ तेने धर्म कहे सुण्य नारीरे, कोण छो तुं कहे वात तारीरे । कुटुंब तारु छे सर्वे कुश-ळरे, आबुं कोणथी पाम्यांछो बळरे॥२१॥ त्यारे बोली वनिता ते वाररे, तारे पुछ्यानो एवो शो प्याररे।चाल्यां जाओने पाधरी वाटरे, पुछी तमे शुं करश्रो खाटरे ॥२२॥ मारो तात कुसंग कहेवायरे, अघवती नामे मारी मायरे । मारुं नाम छे अविद्या अतिरे, प्रभ्रविमुख छे मारो पतिरे ॥२३॥ मारी पुत्री मिथ्या परमाणोरे, आपी अधर्मने तमे जाणोरे । तेनी प्रजा छे अपर-मपाररे, द्यं जाण्य तुं वातनो विचाररे ॥२४॥ काम क्रोध लोभ वळी मोहरे, दंभादिक दीकरा समूहरे । आशा तृष्णा ईष्या अदयारे, कृटिल कुमति कुबुधियारे ॥२५॥ दुरुक्ति ते एनी छे दीकरीरे, एवे इन्दुंबे रह्युं घर भरीरे । निंदा द्रोह नवरां न रहेरे, हर्ष शोक बात नित्य कहेरे ॥२६॥ शत्रु मित्र शोधी जग-मांयरे, राग द्रेष राखे नित्य त्यांयरे । खळ छळ क्षमा नहि

लेशरे, अनर्थ हिंसा करे उपदेशरे ॥२७॥ भय विग्रह विपत्ति घणीरे, एवी प्रजा जाय नहि गणीरे। ठठा हांसी मक्करी अ-तिरे, कहीए अवळाइ कुमतिरे ॥२८॥ अइंकार अभिमान आदिरे, ममतामां मरे सहु वादिरे। एवं अपार मारुं कुंडुवरे, तेनी तमने न पड़े गमरे।।२९।। जाणे सर्वे लोकमांहि मनेरे, सांभळ्य विप्र वात कहुं तनेरे । जगमां कोइ न शके जीतिरे, एवी जाणुंछुं हुं राजनीतिरे ॥३०॥ चार संप्रदाय बावन द्वारारे, वर्णाश्रमी सेवक छे मारारे। आज चराचरमां हुं वसुरे, खेसवी हुं कोइनी न खसुरे ॥३१॥ भेख पंडित पियर मार्हरे, तियां रहेतां लागे मने प्यारंरे। योगी यति संन्यासी तपसीरे, तियां रहिछुं अखंड व-सीरे ॥३२॥ अधो ऊर्ध्व मध्ये जीव बहुरे, छोटा मोटा में पकड्या सहुरे। जावा न दुउं मोक्ष मारगेरे, तुं केवरावीश कियां लगेरे ॥३३॥ एवं सांभळी बोलीया घर्मरे, सुण्य पापणी नारी वैञ्चर्मरे। तेंतो तारी मोट्यपने गणीरे, न जाणी मोट्यप कृष्ण तणीरे ॥३४॥ राधापतिना तेज प्रतापेरे, थाशे तारूं कुटुंब नाश आपेरे। तारी प्रजा ते पाछी पडशेरे, काम क्रोध कोइ न नड-शेरे ॥३५॥ अधर्मनुं उखाडशे मूळरे, करशे कृष्ण् नाश् तारुं कुळरे। पाप पेखी नहि शके महारोजरे, प्रभु प्रकटशे तारे का-जरे ॥३६॥ एम कहीने चाल्यां धर्म भक्तिरे, त्यांथी करीछे आ-थेरी गतिरे। रात्य मळीछे अंधारी घोररे, करे करी केसरी ब-कोररे ॥३७॥ वाघ वाराह वानर बहुरे, लडे माहोमांहे एम सहरे। महिषा नार नोळ वळी नागरे, एवां हिंसकनो नहि तागरे ॥३८॥ लाग्या दव बळे बहु वनरे, पाडे काळी राड्युं पशु जनरे। उडे उपर गीध ने गरज्युरे, जेथी दुःख थाय अणसरज्युरे ॥३९॥

बोले घुड फियावडां घणारे, सब्द भयंकर तेह तणारे। एवा वनमां भ्रुल्याछे वाटरे, न मळ्युं गाम ठाम कोइ घांटरे ॥४०॥ लाग्या कांटा ने कांकरा घणारे, पड्युं दुःख रहि नहि मणारे। लागी भुख ने न मळ्युं पाणीरे, शुको कंठ न बोलाय वाणीरे ।।४१।। एवा समामां मळ्यो तपसीरे, जेने जोइ जाय चित्त ख-सीरे । भ्ररी जटा कपाळमां टालरे, चडी अकुटि लोचन लालरे ।।४२।। अति काळो कुरूप विकराळरे, रुद्र जेवो हृदानो दयाळरे । भुंडा ब्रह्मचारी जेवो वेशरे, दया मेर नहि जेने लेशरे।।४३॥ अघोरी सिद्ध सरीखो लागेरे, आवी उमो अचानक आगेरे । तेने धर्मे जोड्या जुग पाणरे, त्यारे बोलियो तपसी वाणरे।।४४॥ तमे कोण छो पुरुष ने वामरे, कियां रहोछो छुं तारुं नामरे। त्यारे बोलिया धर्म आदरमांरे, जाति द्विज नाम देवशर्मारे ॥४५॥ पूर्वदेशमां हि अमे रहीएरे, अतिदीन दालदरी छीएरे । पीड्यां अमने दैत्ये अपाररे, नाशि आव्यां श्रीव्रजमोझाररे ॥४६॥ तियां विष्णुयाग वत की धुरे, त्यारे श्रीकृष्णे दर्शन दी धुरे। पछी अमे अमारां जे कष्टरे, कह्यां ते सुण्यां श्रीकृष्णे स्पष्टरे ॥४७॥ कहे कृष्ण हुं करीश साररे, लेइ तमारे घेर अवताररे । करीश हुं असुरसंहाररे, तमे जाणो निश्चय निर्धाररे ॥४८॥ एम वर दइ श्रीकृष्ण गियारे, पछी अमे दो आहि आवियांरे। तियां तमे मळ्या महाराजरे, तेणे राजी थयां अमे आजरे ॥४९॥ एवं सां-भिक्रेन कोप्यो अतिरे, सर्वे कृष्णनी जाणुं हुं गतिरे।एणे पांडव पक्ष वधार्योरे, मने वहालो दुर्योधन मार्योरे ॥५०॥ माटे हुं पण छउं अश्वत्थामारे, दउछुं शाप सुणो नर वामारे । जेह पुत्र थाय तमारोरे, कहुं शस्त्र ते केदि मां धारोरे ॥५१॥ शस्त्र विना

शत्रु न मरशेरे, मारा शापे शस्त्र न धरशेरे। एम करतां शस्त्र हेशे हाथरे, तो जितशे निह वैरी साथरे।।५२॥ एम कही थयो अंतर्धानरे, थयां भक्ति धर्म चिंतावानरे। करतां चिंता मोटी मनमांइरे, रह्यां रात्य भक्ति धर्म त्यांइरे।।५३॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्चिते भक्ताचिंतामणिमध्ये धर्मने अश्वत्थामाए शाप दिशो ए नामे पंदरमुं प्रकरणम्।।१५॥

पूर्वछायो-एवं अवणे सांभिकने, अति धर्म थया उदास । घणा दहाडानो दाखडो, ते वैरिए कर्यो विनाश ॥१॥ विन पड्युं ते विलोकिने, समर्या जे देव दुंदाळ । विद्यनायकना ना-मनी, पछी फेरवा मांडि माळ ॥२॥ एम करतां वही गया, जा-मनिना त्रण जाम।समीरसुत विष्र वेषे, आवीया एह ठाम।।३॥ धर्मने ओळखाण आपी, कह्यं हुं ते छुं हनुमान । कृष्ण ज्यारे प्रकटशे, त्यारे शीद रहो शोकवान ॥४॥ चोपाई —ज्यारे कृष्ण लेशे अवताररे, त्यारे भूनो उतारशे भाररे। अष्ट सिद्धि नव निधि जेहरे, तमारे घेर वससे तेहरे ॥५॥ दुःख दारिद्य नहि रहे रतिरे, अति पामशो सुखसंपत्तिरे । कृष्ण थाशे बहु बुद्धिवंतरे, करशे बुद्धिए दैत्यनी अंतरे ॥६॥ एने नहि पडे शस्त्रनं कामरे, कळे टाळशे दैत्यनुं ठामरे । एम धीरज दह हनुमानरे, पछी थयाछे अंतर्धानरे ॥७॥ पछी त्याथी चाल्यांछे दंपतिरे, घर पोताना पर करी गतिरे। वाटे जातां ते पुछेछे भक्तिरे, केम अमर हनु-मान जितरे ।।८।। खामी छे ए रामना सेवकरे, केम चरणजीवी कहो विवेकरे। पछी बोलिया छे एम धर्मरे, भक्ति सांभळो कहुं एनो मर्मरे ॥९॥ रघुवीर प्रसाद कृपायरे, चरणजीवी रह्याछे

सदायरे। पण जोने समरतां गणेशरे, आव्या हनुमान लइ विप्र-वेशरे ॥१०॥ माटे आपणुं कारज थाशेरे, आजथकी दुःख सर्वे जाशेरे । पछी राजी थइ आव्यां घेररे, आवी मळ्यां सगां रुडी पेररे ॥११॥ शत्र हता तेज मित्र थयारे, दुःख दारिष्ट सरवे गयांरे । तेतो कृष्णतणो प्रतापरे, जाण्यो धर्म ने भक्तिए आपरे ।।१२।। पछी जीवना कल्याण काजरे, इछया जन्म लेवा महाराजरे। धर्म हृदामां श्रीहरि आवीरे, शोभा कांति अति उपजाविरे ॥१३॥ पाम्या श्रीहरितणो प्रसादरे, लोक बोलावे छे करी सादरे। कही हरिप्रसाद ए नामरे, एम बोलावे पुरुष ने वामरे 11१४॥ एवा पवित्र हरिप्रसादरे, रमे बाळाशुं करी आह्वादरे। पछी एवा समामांहि सतिरे, रह्यो गर्भ ने शोभियां भक्तिरे ॥१५॥ जेम सर्यने उगवे करीरे, पूर्व दिशा रही शोभा धरीरे। एम शोभी रह्यां प्रेमवर्तारे, कृष्ण प्रवेशे करीने अतिरे ॥१६॥ दिनदिन प्रत्ये अतिप्रसन्नरे, जाण्या गर्भमां आविया कृष्णरे । तेणे करी आनंद अपाररे, पाम्यां नित्य नवी नरनाररे ॥१७॥ एवा समामां असुर जनरे, चाल्या देवीनुं करवा पूजनरे। चारे वर्णमां हता जे दैत्यरे, चाल्या महु बाळ त्रिया सहितरे ॥१८॥ आव्यां विध्यवासिनी देवीद्वाररे, पाडा घेटां अजा लइ अपाररे। बीजा बोकडा कुकडा कइरे, आव्या मदिराना घडा लइरे ॥१९॥ मारी देवी आगे झेर की घोरे, खाधुं मांस ने मदिरा पिथारे। तेणे थयां कामातुर अंगरे, कर्या त्रण्य त्रियाना त्यां संगरे ॥२०॥ करी असुरे पूजा जो एवीरे, तेने देखीने कोपीछे देवीरे। कहे आवां काम करनारोरे, कहुछुं जाशे ते वंश तमारोरे ॥२१॥ वळी तमारी पक्षे जे थाशेरे, हशे

राजा तीय राज्य जाशेरे। वळी आवुं पूजन जे करशेरे, जाशे वंश पोतेपण मरशेरे ॥२२॥ आजथकी थोडे दिने जाणोरे, थाशे नाश तमारी प्रमाणोरे । तमारी करवाने संहाररे, हमणां थाशे हरिअवताररे ॥२३॥ तम जेवा जे असुर हशेरे, तेने प्रभु शोधिने मारशेरे। एम देवी ते खझमां फड़रे, पछी तरत अंत-र्धान थइरे ॥२४॥ एम सांभळी सर्वे असुररे, सहु थयांछे चिता आतुररे । पछी दैत्ये विचारियुं मनरे, एनी करवी कांइ जतनरे ॥२५॥ करो जन्मतां हरिनो नाशरे, तो थाय सर्वे सुख समासरे। देवी रुठी तेने राजी करशुंरे, एक वार करो एनुं नरशुंरे ॥२६॥ ज्यारे श्रीहरिनो जन्म थायरे, त्यारे करवी ए निश्चे उ-पायरे । हमणां सौसौने घेर जाओरे, पण भुलशो मां एह दावोरे ॥२७॥ एम कही गयां निजधेररे, हरि साथे बांधी बहु वेररे । हवे धर्म भक्तिए शुं कर्युरे, बत गणपतिनुं आदर्थुरे ॥२८॥ रक्षा गर्भनी करवा माटरे, करे गणपति मंत्रनो पाठरे। गर्भवडे शोभेछे बहु भक्तिरे, जेम अदिति ने देवहूतिरे ॥२९॥ तेने जोइने सर्वे जनरे, पामे आश्चर्य पोताने मनरे। एम करतां थया मास नवरे, थया दशमे हरि उद्भवरे ॥३०॥ संवत् अहारसी जे अनुपरे, वर्ष साडत्रिसो सुखरूपरे । संवत्सर वर्ते विरोधिरे, अर्क उत्तरे वसंत प्रसिद्धिरे ॥३१॥ चैत्र शुदी नवमी दिन जाणीरे, वार ते सोमवार प्रमाणोरे । पुष्य नक्षत्र शुक्रमा योगरे, कौलव करण हरण भवरोगरे ॥३२॥ जातां जामिनी घटिका दशरे, प्रभु प्रकट्या पूरणजशर । हतां माता त्यारे निद्रावानरे, पछी जागी थयां सावधानरे ॥३३॥ दीठा पुत्रने मनुष्य सरिखारे, तेने हेते करीने निरख्यारे । त्यांतो जणाणो तेजअंबाररे, दीठा घनश्याम

lgeγi |

ते मोझाररे ॥३४॥ तेह मूर्ति शोभेछे घणीरे, शी कहीए शोभा तेह तणीरे । हेमवस्न वांसळी छे हाथेरे, नंगजडित ग्रुगट छे माथेरे ।।३५।। मुख पूरण शशिसमानरे, नयणां कमळदळने वानरे । कनकभूषण जिंडयां नंगरे, एवी मूर्तिं दिठी माये द्रगरे ।।३६।। कहे तमे छो कृष्ण कृपाळरे, वजे मळ्या हता ते तमे बाळरे । एवं जाणी पछी प्रेमवतिरे, करी स्तुति बाळकनी अतिरे ॥३७॥ कहे धन्य कृष्ण राधापतिरे, धन्य आनंदरूप मूरतिरे । तमे श्रीकृष्ण ब्रह्म पूरणरे, सर्वे कारणना छो कारणरे ।।३८।। अनंत कोटि ब्रह्मांड जे कैयेरे, आद्ये अंत्ये मध्ये तेने लैयेरे। सत्यज्ञा-नादि शक्तिए करिरे, भ्रुवन कोटि प्रत्ये व्याप्या हरिरे ॥३९॥ वळी अळगा रहो अक्षरघामरे, जेम महाभूत पूरणकामरे । तमे पुरुषोतम परब्रहारे, तमने नेति नेति कहे निगमरे ॥४०॥ तमे भूमि उतारवा भाररे, लीधो यदुकुळे अवताररे। तमे वसुदेव देवकी घेररे, प्रकट्या मथुरां करी मेररे ॥४१॥ कंस भयथकी वसु-देवरे, मेल्या गोकुळमां ततखेवरे । आप इच्छाए निजजन साथरे, आव्या व्रजमांहि व्रजनाथरे ॥४२॥धन्य नंद यशोदा भाग्यवानरे, जेने घेर रम्या तमे कानरे । प्रथम आण्यो तमे माशी अंतरे, मार्थी असुर तमे त्रणावंतरे ॥४३॥ शकट भांगी पगे तमे पाड्युंरे, विश्व माताने मुखमां देखाड्युंरे। गोळी भागिने ढोळ्यां गोरसरे, कर्या माताने कोधविवशरे ॥४४॥ यमलार्जन मूळ उखाडीरे, मार्यो बक ग्रहि चांच फाडीरे। कर्यो तमे बत्सासुर काळरे, मारी अवासुर राख्यां बाळरे ॥४५॥ तमे थया वन्स बाळरूपरे, भाळी भ्रुलि गयो ब्रह्मा भूपरे। काळी नाथी कीधो दव पानरे, दीधुं इष्ट कन्या व्रत दानरे ॥४६॥ ऋषिपत्नियोनी पूजा लीधीरे, तेने

श्रुतिसमान ते कीधीरे। कर्युं हेत निजजन काजरे, धर्यों कर उपर गिरिराजरे ॥४७॥ सप्त वर्षमांहि भगवानरे, तमे मोड्युं मघवानुं मानरे । वरुणभवनथी छोडाव्या नंदरे, आप्यो वर्ज-जनने आनंदरे ॥४८॥ व्रजजनने देखाङ्यं धामरे, क्यी सहुने पूरणकामरे । तमे रिमया युवतिसंगरे, कयों किंकर तमे अनं-गरे ॥४९॥ अजगरथी छोडाव्या नंदरे, तमे मार्यो शंखचूड मंदरे । युष्म ने व्योमासुर द्वेषीरे, तमे मार्यो बळे खळ केशीरे ॥५०॥ एवां अपार चरित्र कीधांरे, त्रजवासिने बहु सुख दीधारे। अक्रूरने आनंद पमाड्युरे, निजजनने धाम देखाड्युरे ॥५१॥ तमें पर्यट पापिने मार्योरे, सइ सुदामा माळिने तार्योरे । टाळी कुबज्या तन टेडाइरे, माग्युं तेणे जे हतुं मन मांइरे।।५२॥ भांग्युं धनुष तमे कर धरिरे, रंगद्वारे मार्यो मत्त हरिरे। मल्ल हण्या अखाडामां हाथरे, केशे ग्रहि कंस मार्यो नाथरे ॥५३॥ वसुदैव देवकी दुःख हर्धरे, उग्रसेन शिर छत्र धर्युरे । तमे कीधो गुरु-घेर वासरे, तमे पुरीछे द्विजनी आशरे ॥५४॥ तमे गया कुबज्या भवनरे, सत्य कीधुं पोतानुं वचनरे। तमे गया अकृरने धामरे, तेने मोकल्यो गजपुर गामरे ॥५५॥ पछी मथुरांथी द्वारामतिरे, आव्या प्रेमेकरी प्राणपतिरे। मार्यो काळयवन कळ-करिरे, मुचुकुंदने जगाड्यो हरिरे ॥५६॥ तमे मार्यो प्रभु जरासंघरे, विश सहस्र छोड्या नृप बंधरे। नृप जितीने शारंगपाणिरे, तमे परण्या अष्ट पटराणिरे ॥५७॥ मारी भौमासुरने ग्रुरारिरे, लाविया सोळ सहस्र नारिरे । छेद्या बाणासुर भुजदंडरे, राख्यो पार्थयज्ञ अखंडरे ॥५८॥ तमे मार्यो शालव शिशुपाळरे, कर्यी दंतवक्रनी तमे काळरे । देखी दुर्बळ द्विज सुदामरे, कर्युं कंचनमय तेनुं

भागरे ॥५९॥ खजन कुरुक्षेत्रे भेळां कीधांरे, ज्येष्ठ आत माते मागी लिधांरे । पार्थ जनक ने श्रुतदेवरे, तेने सुख आप्युं तत-खेवरे ॥६०॥ एम अनंतनां कर्या काजरे, निजजन जाणी महाराजरे । जेजे आवियां तमारे शरणरे, तेने सुरतरु तम चर-णरे ॥६१॥ तमे दीनना बंधु दयाळरे, कृपा करीने आच्या कृपाळरे । करी स्तुति एम माये ज्यारेरे, सुणी बोल्या सुंदर क्याम त्यारेरे ॥६२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-खामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये प्रेमवतिस्तु-खीनाम सोळमुं प्रकरणम् ॥ १६ ॥

पूर्वछायो-सुतने श्रीकृष्ण जाणी, एम स्तुति करी जे मात। ते शिशुरूपे कृष्ण सुणी, बोलिया साक्षात ॥१॥ माता चिंता मां करो, थाशे तमारुं धार्कु जेह । व्रजनी वात संभारवा, में रूप देखां छुं तेह ॥२॥ एम कही अभक्तनां, कर्यां चरित्र दीनदयाळ। अलौकिक रूप गोप्य करीने, बाळ बन्या ततकाळ ॥३॥ धर्मने धीरज आवी, देखी एवा दिव्य बाळ । जाण्युं संकट सर्वे गयां, थयो असुरनो काळ ॥४॥ चोपाई-एवं जाणीने आनंद पाम्यारे, देखी बाळकने दुःख वाम्यारे। थयो सर्वे सुखनो समाजरे, जाण्युं गयुं अधर्मनुं राजरे ॥५॥ करे महोत्सव घेर घेररे, अति थइ रही लीला लेररे । तेम अमरलोके अमररे, करे मोटा उत्सव मदभररे ॥६॥ बोले जयजय ब्रह्मा ब्रह्माणीरे, शक शची शिव शिवा राणीरे। बोले जयजय शब्दे अमररे, करे पुष्पवृष्टि पुरं-दररे ।।७॥ गाय गांधर्व नाचे अपसरारे, सिद्ध चारण ने मुनि-वरारे । देवे वजाडचां दुंदुभि बहुरे, नभे आनंद पामियां सहुरे ॥८॥ मंद शीतळ सुगंधि वायुरे, वाय सर्वे जन सुखदायरे। थया

उड़ ते नमें अमळरे, बोले व्योममां जेजे सकळरे ॥९॥ मोटा ऋषि दियेछे आशिषरे, प्रभु जीवज्यो कोड्य वरूपरे। एम हरूच्या देव ऋषिरायरे, जाणी प्रभु प्रकट मनमांयरे ॥१०।। बहु वार्जित्र वाजेछे व्योमेरे, तेम थायछे उत्सव भोमेरे । जेम गेकी रह्योछे गगनरे, तेम भूमिए जन मगनरे ॥११॥ हुवा निर्धूम हुताशनरे, थयां साधुनां निर्मळ मनरे । शांति द्यादि द्वादश नारीरे, आवी दर्शने दिव्य देहधारीरे ॥१२॥ पछी नगरनारी आवी सहुरे, लाबी मांगळिक साज बहुरे। सुवर्ण थाळ भर्या शग्य मोतीरे, आवी वधाववा पुण्यवतीरे ॥१३॥ काजु कुंकुम केसर उतारीरे, श्रीफळ अक्षत सारी सोपारीरे । पानबीडां लविंग एलचीरे, दिध हळदी शरीरमां चर्चीरे ॥१४॥ अतिहर्ष भरी मनमांइरे, आवी गाती मंगळ वधाइरे । वधावीने लीएछे वारणांरे, निरखी मन हरूयाँ नारीतणारे ॥१५॥ निरखी तृप्त न थाय लोचनरे, वहालुं लागे वालानुं वदनरे । पछी भांमणां लइ भामिनीरे, बोले आशिर्वचन कामिनीरे ॥१६॥ बाळक तमे जीवो बहु काळरे, करो माबा-पनी प्रतिपाटरे। दिये आशिप निरखे मुखरे, लीए अंतरे अ-लौकिक सुखरे ॥१७॥ हास विलासे मुख छे सारुरे, नेण कर चरण अतिचारंरे । वेष मूर्ति ते मंगळकारीरे, करो मंगळ अमारुं मुरारीरे ॥१८॥ एम कही नारी गइ घेररे, राखी बाळ रुदे रुडी पेररे। बालशर्माना सुत ए दिनरे, पाम्या अतिशे आनंद मनरे ॥१९॥ वाजे वधाइ नोबत्युं झडेरे, मोटां दुंदुमि नगारां गडेरे। भेर संगळा ने शरणाइरे, गाय गायक मंगळ वधाइरे ॥२०॥ सुंणी स्तुति गान तेहतणुंरे, थया धर्म मगन मने घणुंरे। पछी ते समानेविषे धर्मरे, कर्यु वेदोक्त जातक कर्मरे।।२१॥ पछी

आप्यांछे विप्रने दानरे, करी अतिष्णुं सनमानरे । अन्न धन अवनी अंबररे, गज बाज ने गी। सुंदररे ।।२२।। मगावीछे म-हिपी दुजणीरे, आपी विप्रने ते वळी घणीरे । छत पात्र वस्त्र आप्यां गेहरे, आप्युं जेजे माग्युं तेने तेहरे ॥२३॥ दीघां धर्मे दान बहु पेररे, करी राजी वाळ्या द्विज घेररे। थयां राजी सहु नरनाररे, बांध्यां तरियां तोरण बाररे ॥२४॥ माता पिता भुली दिन्य भावरे, जाण्या पुत्रने सहज खभावरे। मनुष्य जाणी मात तात तेहरे, लाड लडावे सुतने स्नेहरे ॥२५॥ वळी धर्मदेव प्रेमवतिरे, भ्रुल्यां पूर्वना जन्मनी स्मृतिरे । कांइ जाणे न जाणे पोतानेरे, एम वर्ते तात मातानेरे ॥२६॥ थइ सर्वे सुखनी संप-त्तिरे, प्रभु प्रकटे गइ विपत्तिरे । सत्यवादी जन पाम्या सुखरे, थयुं दैत्य असुरने दुःखरे ॥२७॥ कौल नास्तिक कुंड कवीररे, तेतो पामिया दुःख अचिररे । बीजा असुर अवनिए हतारे, जे कोइ अहोनिश द्वेष करतारे ॥२८॥ तेतुं नरसुं थावा निर्धाररे, थाय अवळां शकुन अपाररे । फरके डाबां अंग डाबां नेणरे, लाघे भुंडां खम दुःखदेणरे ॥२९॥ जाणे घड उपर शीष नथीरे, उंटे बेसारी काढ्यां आंहिथीरे। लइ जायछे दक्षिण देशरे, एवां सोणां लाधेछे हमेशरे ॥३०॥ घर सामां आवी रुवे श्वानरे, रात्ये रुवे सुरभि निदानरे । घरपर कळेळे कागडारे, बोले बपोरे बहु फियावडारे ॥३१॥ घुड होलां घुघवे अपाररे, थाय शब्द भुंडा भयंकाररे । गीध गर्ज्यु समळा समितरे, उडे घरपर शकरा नित्यरे ॥३२॥ वळी अशुभ आकाशमांयरे, नित्य दैत्यने चित्त जणायरे । जाणुं रिव शशि हता व्योमेरे, पड्या उडुसहित ते भोमेरे ।।३३।। एवां अवळां शकुन जाणीरे, बोल्यो असुरनी गुरु

वाणीरे। सुंगो दैत्य कहे कालिदत्तरे, कह्युं देवीए ते थयुं सत्यरे ॥३४॥ असुरनो करवा संहाररे, निश्चे थयो हरि अवताररे। माटे आपणे उपाय करीएरे, आव्या मृत्युमांथी तो उगरीएरे ॥३५॥ हमणां हरि हशे बाळ नानोरे, मारो एने करी कळ छानोरे। मेलो कृत्याओ करी अपाररे, करे तर्त हरिनो संहाररे ॥३६॥ पछी कर्योछे मंत्रनो जापरे, उपजावीछे कृत्याओ आपरे। अ-तिकाळियो ने छुटे केशरे, कर्यो सिंद्रनो लेप शीपरे ॥३७॥ छेदेल छे नासिका ने कानरे, अतिविरूप वरवे वानरे। लांबा होठ ने फाड्यांछे मुखरे, काढी जीम दांत देवा दुःखरे ॥३८॥ लांबा पेट ने लोचन लालरे, खरड्या रुधिर मांही वे गालरे। माणसनी खोपरियो छे कररे, नागियो नथी पहेर्या वस्तररे ।।३९॥ उगामेल आयुध छे हाथरे, एवो कीधो कृत्याओनो सा-थरे। तेने आज्ञा आपी असुरेरे, कहुं शत्रु छे छपैये पुरेरे ॥४०॥ तेनो करज्यो तमे जइ नाशरे, करी काम आवी अम पासरे। पछी कृत्याओ त्यांथी उडियोरे, भ्रुखी ममराळियो भ्रं-डियोरे ॥४१॥ आवियो हरिप्रसाद घेररे, जेने बाळक साथे छे वेररे। हरि हता माताजिने पासरे, लीधा जोरे करवाने नाशरे ॥४२॥ कहे मारो मारो खाओ खाओरे, शत्रु मळ्यो मां ग्रुलशो द्वावीरे । फाड्यां मुख् उगाम्यां आयुधरे, हरि उपर करी बहु क्रोधरे ॥४३॥ झाली गळे लइ गइयो बाररे, रुवे जननी करी पोकाररे । भुली निजशरीर संभाळरे, भोये ढळी पड्यां ततका-ळरे ॥४४॥ मागे बाळक करे पोकाररे, जोइ परवश प्राण आ-धाररे। सुंणी बाळानो कायर सादरे, तियां आव्या हरिप्र-सादरे ।।४५।। इता एकादशीने जागरणेरे, त्यांथी आविया घेर

आपणेरे । आवी जोयुं त्यां न दीठा बाळरे, पाम्या धर्म मूरछा ते काळरे ॥४६॥ सुणी भक्ति धर्मनो विलापरे, आव्या हनुमान त्यां आपरे । कहे केम रुओछो दंपतिरे, कहो टाछं तमारी विप-चिरे ॥४७॥ कहे भक्ति वीर सुत मारोरे, तेने लइ गइयो कृत्याओ बारोरे । एने मारी नांखशे ए तर्तरे, मुकावो जो तमे हो समर्थरे ॥४८॥ एवं सुणी बोल्या हनुमंतरे, बाळा चिंता मां करशो चि-त्तरे। हमणां लाविश पुत्र तमारोरे, तमे श्रीकृष्ण देव संभारोरे ॥४९॥ तमे कर्युं प्रीते वत मारुंरे, रहेवा नहि दउं कष्ट तमारुंरे। पछी हनुमान तेह काळरे, चाल्या मुकाववाने एह बाळरे ॥५०॥ त्यांतो कृत्याओना करमांयरे, लाग्या वाळक समर्थ त्यांयरे। जोयुं गांकी दृष्टि करी बाळेरे, बळी कृत्याओं ते ततकाळेरे ॥५१॥ पछी नांख्या अवनि उपररे, मारो मारो कहे बहु पेररे । त्यांतो आव्या हनुमान तर्तरे, जोयुं दुष्ट कृत्याओनुं कृत्यरे ॥५२॥ अं-जनिसुत कहे उभी रेज्योरे, कृत्य तमारानुं फळ लेज्योरे। आज न रहो जीवती कोइरे, निश्चे जाणज्यो मनमां सोइरे ॥५३॥ एम कहीने झटिए झालीरे, मारी कुटी पृथिवीमां घालीरे। त्यारे कृत्याओं कहे कर जोडीरे, मेलो वीर कर्या गुना कोडीरे ॥५४॥ आजपछी न लहुं एचुं नामरे, पाछी आवुं नहि आणे ठामरे। आज मेलो कहुं पाय लागीरे, नावुं नजरे जाउं दूर भामीरे ॥५५॥ एम कहीने कृत्याओं नाठीरे, जाणी असुरनी दशा माठीरे। जइ कह्यं कालिदत्त पासरे, न थाय ए बाळकनो नाशरे ॥५६॥ एतो छे कोइ अतिसमर्थरे, एथी थासे असुरनुं मृत्यरे । पछी महावीर बाळ लइरे, भक्ति धर्मने पासळ जइरे

॥५७॥ आप्या भक्तिना हाथमां बाळरे, थयां राजी दंपती ते का-ळरे। कहे भक्ति सुंणो हनुमानरे, नोति सुतनी आशा निदानरे ॥५८॥ त्यारे हनुमान कहे भक्तिरे, सुत तमारो समर्थ अतिरे। नथी प्राकृत नर निदानरे, ए छे पोते खयं भगवानरे ॥५९॥ अक्षर गोलोक घामना धामीरे, ए छे कृष्णदेव बहुनामीरे। धर्म-रक्षा जीवनां कल्याणरे, आव्या करवा श्याम सुजाणरे ॥६०॥ तमे धर्म मक्ति छो दंपतीरे, करशे पुष्ट तमने ए अतिरे। ज्ञान वैराग्य आदि जे कहीएरे, वंश तमारो पवित्र लहीएरे।।६१॥ तेने वधारशे एह बाळरे, करशे असुरजननो काळरे । मारो महिमा अति वधारशेरे, शरणागतनां काज सुधारशेरे ॥६२॥ माटे आ बाळ छे अलौकिकरे, करो हेत परहरो बीकरे। एम कह्युं हनु-माने ज्यारेरे, जोयुं बाळके ए साम्रुं त्यारेरे ॥६३॥ पछी हरि-तणी इच्छा जोइरे, थया हनुमान अदृश्य सोहरे। ते जोइ प्रेमवती पावनरे, अतिआश्चर्य पामियां मनरे ।।६४॥ वळी जाण्युं बाळक आ वाररे, आव्यो निश्रय नवे अवताररे। कही वात ए लोक सहु-नेरे, जीव्यो बाळक कोइक पुण्येरे ।।६५।। पछी नरनारीए नियम धार्थुरे, हनुमानशुं हेत वधार्युरे । जेथी टळ्युं कृत्याओनुं विन्नरे, सहु कहेवा लाग्या धन्य धन्यरे ॥६६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते ं भक्तचिता-मणिमध्ये कृत्याओ विव्न नामे सत्तरमुं प्रकरणम् ॥१७॥

पूर्वछायो-त्यार पछिनी वारता, सहु सांभळो थइ साव-धान । हरिइच्छाए त्यां आविया, मार्कडेय गुणवान ॥१॥ त्रिकाळदर्शी ने तत्त्ववेत्ता, ब्रह्मचारिनो छे वेष । धर्मने धेर आविया, संगे लइने बहु शिष्य ॥२॥ धर्मे बहु आदर दइ, पूजा

करी बहुपेर । ब्रह्मचारी भले आविया, कर्युं पवित्र मारुं घर ॥३॥ क्यांथी आच्या तमे कोण छो, अने शुं छे तमारुं नाम। शुं भण्याछो शास्त्र स्वामी, पुछुछुं करभाम ॥४॥ चोपाई--त्यारे ऋषि कहे सुणो वचनरे, आवुंछुं कर्ता तीर्थअटनरे। मा-केंडेय मारुं नाम जागरे, भण्या छीए वेद ने पुरागरे ॥५॥ जाणुं रुडी रीते ज्योतिषनेरे, ते भणाबुं हुं आ शिष्यनेरे। त्यारे धर्म राजी बहु थयारे, भले आच्या प्रभु करी दयारे।।६॥ मारा बाळकतुं नाम दीजेरे, बहु काळ अम घेर रहीजेरे । तमे ज्यो-तिष जाणोछो घणुंरे, केवुं भाग्य आ बाळकतणुंरे ॥७॥ जुवो बन्मदिवस रुडी पेररे, मुहूर्त लग्न ने जन्माक्षररे । घडी पळ वेळा एनी वर्तिरे, पाडो नाम एनुं महामतिरे ॥८॥ पछी टिप-णामां जोइ एहरे, करी बन्मकुंडळी तेहरे। जोयुं ज्योतिष विद्याने विषेरे, जाण्युं आतो मोटा छे अतिशेरे ॥९॥ पछी धीरे रही बोल्या वाण्यरे, तमे सांभळो धर्म सुजाणरे । अतिबुद्धिवान पह थाशेरे, माटे मोटा सहुथी कहेवाशेरे ।।१०।। वळी ककना चंद्रमा आवेरे, तेनुं नाम हरि एवं कावेरे। एक तमे बीजां जे आशरशेरे, तेनी आपदा सर्वे हरशेरे ॥११॥ माटे हिर एवं एनं नामरे, सौने समरतां सुखधामरे। वळी चैत्रमां जन्म थायरे, तेने कृष्णपण कहेवायरे ॥१२॥ सारुं सुंदर तन छे स्यामरे, माटे एनं कहीए कृष्ण नामरे । मूर्ति जोइने जननां मनरे, ताणी लेशे तेमाटे ए कृष्णरे ॥१३॥ वळी बेउ नाम मळी एकरे, कहेशे जन जे करे विवेकरे। त्यारे त्रीजं नाम हरिकृष्णरे, समरतां जन मन प्रसन्नरे ।।१४।। तप त्याग योग धर्म ज्ञानरे, एवा ए पंच गुण निदानरे । तेणे शिवजी जेवा ए थाशेरे, माटे नीलकंठ क-

हेवाशेरे ।।१५।। एम गुण कर्में करी नामरे, कहेशे बहुं पुरुष ने वामरे। वळी मने जणायछे जेहरे, सुणो धर्म हुं कहुंछुं तेहरे ।।१६।। थाशे पृथुसम श्रोतावानरे, भक्ति क्षमा अंबरीप समानरे। जनकना जेवुं निजज्ञानरे, त्याग वैराग्य शुकसमानरे ॥१७॥ हरि-दास इनुमान जेवारे, एक इष्टनिष्ठ उमा एवारे। सदाग्रह कृष्ण-विषे जेहरे, थाशे प्रह्लादसरिखा तेहरे ॥१८॥ माया ने मायानुं कारजरे, एथी अजाण्युं नहि रहे रजरे। आत्मदार्शिमां जाणवा एवारे, कर्दमसुत कपिलजी जेवारे ॥१९॥ दोष तजीने गुणने ग्रेवारे, तेमांतो दत्तात्रेयसम केवारे। अधर्मसर्गथकी ते मनरे, बिशे जेम युधिष्ठिर राजनरे ॥२०॥ दयाळ ने वळी दातापणुंरे, थाशे रंतिदेवथकी घणुरे । जीवने देवा प्रसुतुं ज्ञानरे, तेमां नारदसम निदानरे ॥२१॥ प्रश्चमांहि दोष न प्रठेरे, तेतो जाणे जानकीनी पेठेरे। खतंत्रपणुं लक्ष्मीना जेवुंरे, जे श्रीकृष्णखरूपमां रहेवुरे ॥२२॥ हरि हरिजन द्रोही माथेरे, वर्ते लक्ष्मणसम ते साथेरे। थाशे सौ जीवने सुखकारीरे, जेम पुत्रने पाळे मेतारीरे ॥२३॥ हरिआज्ञामां रहेवाने आपरे, थाशे भरतजी जेवा निष्पा-परे। प्रभ्रपदरजमाहातम्य लेवारे, थाशे भक्त अक्रूरजी जेवारे ।।२४।। प्रभुने वालां जन जे कैयेरे, तेमां द्रौपदीसमान लैयेरे अंतःशत्रु जितवा समर्थरे, जाणुं प्रकट्या बीजा पार्थरे ॥२५॥ प्रश्न उत्तर करवा अतिरे, जाणुं आव्या आपे बृहस्पतिरे । भीर-जवानमां धीरजवानरे, थाशे बिळ राजाने समानरे ॥२६॥ असुरने मोह उपजावारे, थाशे वामनजीसम आवारे। करशे धर्मनी रक्षा ते घणीरे, जुबो एधाणि तमे तेहतणीरे ॥२७॥ हाथे छे पद्मांकुशनां चिह्नरे, मुख देखी लाजे कोटि मीनरे।

ऊर्घ्वरेखा अष्टकोण ध्वजरें, खस्ति अंकुश वळी अंबुजरे ॥२८॥ जव जांघु वज्र देख्यां द्रगरे, तेणे शोमेछे दक्षिण पगरे। मत्स्य त्रिकोण कळश ने न्योमरे, धेनुपद धनुष ने सोमरे ॥२९॥ साते चिन्ह शोभे वामचरणरे, माटे आतो छे अशरणशरणरे। देशे बहु जीवने अभयदानरे, करशे मोटामोटा सनमानरे ॥३०॥ बहु जीवने आज्ञामांहिरे, वर्तावशे सतयुग न्यायरे। नाना प्रकारनां जेह दुःखरे, टाळी तमारां करशे सुखरे ॥३१॥ जेम विष्णु विबुध सहायरे, करेछे महाकष्टने मांयरे। तेम करशे तमारी साररे, एवा एमां गुण छे अपाररे ।।३२।। बीजा बहु मोटा गुण एमारे, शुभगुणनी थाशे ए सीमारे। एवां मार्कंडे-यनां वेणरे, सुण्यां धर्मे अति सुखदेणरे ॥३३॥ पछी वस्त्र घरेणां ने धनरे, आप्यां विविध भात्यनां अन्नरे । थया मार्केडेय प्रस-न्नरे, रह्या तियां पछी दोय दिनरे ॥३४॥ पछी दइ आशिष मुनिरायरे, गया शिष्यसहित प्रयागमांयरे । पछी भक्ति धर्म राजी थइरे, सुतने हुलावे नाम लइरे ॥३५॥ एम करतां चार मास वित्यारे, बेठो पांचमो मास पुनितारे। त्यारे रुडे दिवसे दंपतिरे, मही बेसार्या सुखमूरतिरे ॥३६॥ वाराहे सहित वसुंध-रारे, पूजी प्रीते तेडावी विपरारे । कर्यों मोटो उत्सव ते दिनरे, जमाडिया बहु विप्रजनरे ।।३७॥ मांगळिक वाजां वजडावीरे, करी वधाइ ते मनभावीरे। पछी सप्त मासे दिन सारेरे, आवी पूर्णातिथि गुरुवारेरे ॥३८॥ तेदि पुत्रना विधाव्या कर्णरे, भूषण पेराव्यां सारां सुवर्णरे । पछी आसोवदी बीज दनरे, कराव्यां अकाबोटणां अकारे ।।३९॥ कर्यो उत्सव जमाख्या जनरे, कराव्यां ब्राक्षणने भोजनरे । पछी शास्त्र महोर समसेररे, त्रण मुक्यां

No. of the last

आगळ ते वेररे ॥४०॥ पछी महोर खड्ग मेली नाथरे, मुक्यो पुस्तक उपर हाथरे । हती रुचि पोताने जे मांइरे, तेह विना गम्युं नहि कांइरे ॥४१॥ पछी माताए खोळामां तेडीरे, लिधी बकी हदामांहि भिडीरे। पछी धवराव्या करी प्रीत्यरे, करे हैत नवुं नित्य नित्यरे ॥४२॥ पछी प्रतिदिन ते दयाळरे, वधे नित्य चंद्र जेम बाळरे। करे बाळचरित्र अपाररे, जोइ मोही रहे नरनाररे ॥४३॥ मात तातने लागेछे प्यारारे, नथी मुकतां निमिष न्यारारे । एम जाय आनंदमां दनरे, सुत निरखी हरखे मनरे ॥४४॥ करे नरनारी जे दर्शनरे, तेना हेतमां हराय मनरे। वृद्ध कोविद ने विद्यावानरे, देखी नाथ भ्रुले निजज्ञानरे ॥४५॥ करे भावतां चरित्र नाथरे, तेणे पोचे नहि हाथोहाथरे । मात तात ने भगिनी भाइरे, काको मामो जैने जे सगाइरे ॥४६॥ राखे हेत हरिसाथे सहुरे, बीजाने पण वहाला छे बहुरे। नरना-रीने प्यारा छे नाथरे, नथी आवता माताने हाथरे ॥४७॥ पछी कांइक मांड्युं बोलवारे, बोले तोतळा मुख्यी लवारे । जेमजेम बोले कालुं कालुंरे, तेतो लागे माताजीने बालुंरे ॥४८॥ पूछी सुंदरी सर्वे सियाणीरे, शीखवे सारी वालाने वाणीरे । वळी रुटी रीतें शुंरमाडेरे, पय शर्करा पाक जमाडेरे ॥४९॥ पेंडा पतासां ने पकवानरे, भावे जन जमाडे भगवानरे। हळवे हळवे हिंडवा काजरे, शीखवे नारी शीखे महाराजरे ॥५०॥ पडे ल-डथडे पगलां भरेरे, अहि आग्य झालतां न डरेरे। एम बाळ-चरित्र महाराजरे, करे हेत निजजनकाजरे ॥५१॥ रिंखे रडे पडे पेटवडेरे, अतिदाखडे उंबरो चडेरे। खाय गोटिलां गड-थलां घणारे, करे चरित्र बाळकतणारे ॥५२॥ चाले गोठण-

भर घरमांहरे, देह टेक आपे उभा थायरे। एवा असमर्थ देखे सहुरे, पण धीर गंमीर छे बहुरे ॥५३॥ भ्रुख दुःख ने भ्ये न भडकरे, देव अदेवथी न थडकरे । भूत प्रेत ने दनुज ने दैत्यरे, राक्षस राक्षसी यक्षसहितरे ॥५४॥ तेनो भय नथी मनमांयरे, एवा अचळ पर्वत प्रायरे। बीजा शुभ गुण बहु सारारे, तेणे लागेछे सहुने प्यारारे ॥५५॥ रुवे नहि राजी सदा रमेरे, तेम-तेम सहुने ते गमेरे। मीडुं मीडुं बोले मुखे घणुंरे, लागे सा जनने सोयामणुरे ॥५६॥ पय साकर पिये न पियेरे, अणइछाए भोजन लियेरे। अशन वसन भूषण सेजरे, पोता कारणे न इच्छे एजरे ॥५७॥ शीत उष्ण मशक ने दंशरे, कचवाय नहि कोइ मशरे। एवा सुशील जोइने सहुरे, माने आश्रर्य मनमां बहुरे ॥५८॥ कहे आतो मोटा कोइ अतिरे, एम कहे देखीने दंपतिरे। एम कर्तो वर्ष एक थयुरे, तेनुं चरित्र सहने कह्युरे ॥५९॥ इति श्री-मदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वा मिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तिवितामणिमध्ये हरिबाळलीला ए नामे अढारमुं प्रकरणम् ॥१८॥ पूर्वछायो-वळी सहु सांभळज्यो, कहुं त्यार पछिनी वात ।

प्रविद्धायी—वळी सहु सांभळज्यो, कहुं त्यार पिछनी वात।
मोटा सुत जे धर्मना, श्रीरामप्रताप विख्यात।।१॥ तेनो ते विवाह आदर्थो, प्रीते करिने रुडीपेर । सुवासिनी नामे सुंदरी,
पराणाव्या बळदेव घेर ॥२॥ रुडा गुण रूपे अति, एकपतिव्रता
सतीपणुं । प्रीते करीने पियु पोतानो, सेवे सुवासिनी हेते घणुं
॥३॥ पछी बीजुं वर्ष बेसतां, आनंदे उत्सव आदर्थो । कुंवरना
कुशळ काजे, देव ऋषिनो आदर कर्यो ॥४॥ चोपाई—हेते
पूज्या हनुमान बळीरे, व्यास ने कृपाचारज वळीरे । अश्वत्थामा
विभीषण जेहरे, मार्कडेय परशुराम तेहरे ॥५॥ ए सर्वेने विविध

प्रकारेरे, पूज्या लइ षोडष उपचारेरे । जमाड्या विप्रने हरिज-नरे, आपी दक्षिणा थइ प्रसन्नरे ॥६॥ बाळ काजे करे बहु वि-धिरे, राखे हेत अतिशे संबंधिरे। एम करतां वित्यां वर्ष दोयरे, त्रीज़ं वर्ष वरतियुं सोयरे।।७॥ आवी जेठवदिनी पंचमीरे, मात तात ज्योतिषिने गमीरे । तेदि कर्योछे क्वळ आचाररे, बाळ वाळ उतार्या ते वाररे ॥८॥ कर्यो मोटो उत्सव ते दिनरे, तेडाच्या वित्र ने हरिजनरे। तेना काम काजमांहि मातरे, अली गयांछे सुतनी वातरे ॥९॥ पोते रह्यां जन जमाडवारे, पुत्र परने आप्यो रमाडवारे। तेने तेडी गयां बीजां बाळरे, जोवा सुंदर वाडी रसाळरे ।।१०।। तियां फळ दीठां मीठां घणांरे, जामफळी सि-ताफळीतणांरे। नाळी केळी अनुप अनाररे, कर्या अंबफळना त्यां आहाररे ॥११॥ जांबु लींबु ने रांणो रूपाळीरे, गुंदी कर्मदी पाकी रसाळीरे। द्राख खारेक खलेलां खरांरे, रह्यां लेवा ते सौ छोकरांरे ॥१२॥ हरिने बेसारी तरु तळेरे, फर्या बाळक वृक्ष सघळेरे। एम करतां आथम्यो दिनरे, आव्यो ए समे असुरज-नरे ॥१३॥ काळिदत्त नामे छे कपटीरे, थयो अर्भक असुर मटीरे । बन्यो कुबुद्धि बाळक जेवोरे, कोइथकी न कळाय एवोरे ।।१४।। आवी मेळुं मांड्युंछे रमवारे, मनमां छे हरिने दमवारे। काढी कृत्याओं तेनों छे कोधरे, वेर वाळवानों छे विरोधरे ॥१५॥ थयो गरीब घटमां घातरे, भर्यो कपट दगे कुजातरे । रम्यो बाळसंग वहु वाररे, पछी विस्तारी माया अ-पाररे ॥१६॥ करी राति आंख्यो ततकाळरे, वाध्यो अंगे थयो विकराळरे । फार्ड्य मुख फाड्यो जाणुं आभरे, काढी जीभ लांबी विश वांभरे ॥१७॥ करडे दांत क्रोधमां अतिरे, आव्यो कृष्ण

मारवा कुमतिरे । थयो भुंडो भयंकर बहुरे, तेने देखी बिन्यां बाळ सहुरे ॥१८॥ कर्या लांबा कर ततकाळरे, झाली करवा बाळकनों काळरे। त्यांतो वांकी दृष्टि करी नाथेरे, जोयुं दैत्य काळिदत्त माथेरे ॥१९॥ तेणे दाझ्युं कुबुद्धिनुं देहरे, पछी को-पियो असुर तेहरे। करी आसुरी माया उत्पन्नरे, चडी घटा ने चाल्यो पवनरे ॥२०॥ आवी अंधी ने रजनी मळीरे, करे झब-कारा बहु विजळीरे । थाय गाजमां घोर कडाकारे, दिये दामिनी तेमां झडाकारे ॥२१॥ वर्षे मेघ रहे नहि मणारे, चाल्यां पूर पृथ्वीपर घणांरे। झरे मेघ मची बहु झडीरे, वायुवेगे वृक्ष गयां पडीरे ॥२२॥ श्रुटि पांख्यो पंखी पड्यां भोमरे, मृगजाति थयांछे बफोमरे । थयो अतिशे मोटो उत्पातरे, पडी वचमां वेरण रातरे ॥२३॥ बहु उपद्रवे बिन्यां बाळरे, नाशी गयां बीजे ततकाळरे। बेसार्याता आंबातळे हरिरे, तेनी न रही खबर खरीरे ॥२४॥ चडी ताढ्य तेणे तन धुजेरे, मळी रात्यमां काई न सुजेरे। एवी माया विस्तारी असुररे, मारवा हरिजिने जरुररे ॥२५॥ फेरे दृष्टि ने जुवे सघळेरे, दीठा हरि बेठा आंबा तळेरे । त्यारे उडी आकाशमां चड्योरे, आवी अंबष्टक्ष पर पड्योरे।:२६॥ जेम हिमाचळनी शिखररे, ब्रुटी पडे पर्णकुटि पररे। एम पड्यो असुर अभागीरे, तेनी झपटे पड्युं झाड भागीरे ॥२७॥ तेने तळे बेसी रह्या बाळरे, थयो नहि वांको एक वाळरे। जेम रह्या गी-वर्धन हेळारे, रह्या तरुतळे तेनी पेळारे ॥२८॥ वायु वरषाद ने विजळीरे, तेना पराभवनी पीडा टळीरे। रह्या अचळ पर्वत-प्रायरे, असुरतुं न उपज्युं कांयरे ॥२९॥ पछी असुर कोध क-रिनेरे, गयो झालवा हाथे हरिनेरे। त्यारे वांकी दृष्टिए जोयुं

नाथेरे, पाम्यो मोह पड्यो भूमि माथेरे ॥३०॥ पाम्यो मूर्छा ने व्याकुळ थयोरे, शुद्ध शरीरनी अली गयोरे। यह विकेळ ने भम्यो वनरे, त्यां प्रचंड वातोतो पवनरे ॥३१॥ तेनेवेगे पड-तांतां झाडरे, मुनो चंपाइ पशुने पाडरे। जेम आखु अहिकरंड कापेरे, जागे व्याळ मरे मूर्वा आपेरे ॥३२॥ जेम कापे कोइ बेठानी डाळरे, पडे कूपे मरे ततकाळरे। जेम करोळियो करे विलासरे, पामे पोतानी जाळमां नाशरे ॥३३॥ एम पोतानी मायामां मुनोरे, आप पापे पापी नाश हुनोरे । मुनो दैत्य माया मटी गइरे, वायुवेग विजळी न रहरे ॥३४॥ त्यारे शांति पाम्यां सहु बाळरे, पछी करी कृष्णनी संभाळरे। ज्यारे न दीठा पी-ताने पासरे, त्यारे बहु थयांछे उदासरे ॥३५॥ पछी करेछे साद पोकारीरे, ज्यां हो त्यांथी बोलो सुखकारीरे। करे साद घणुं-षणुं गोतेरे , जड्या नहि झाड बहु जोतेरे ॥३६॥ त्यारे भुल्यां श्रीर संभाळरे, कहे हेकुण्ण हेहरि बाळरे। एम साद करी श्रोध्या अतिरे। पण लाध्या नहि प्राणपतिरे।।३७॥ त्यारे च्याकुळ थयांछे बाळरे, रुवे कर घसे करे कताळरे। कहे क्यांथी लाव्यां एने आंहीरे, हवे शुं कहेशुं जइ गाममांहीरे ॥३८॥ एना मावापने ते शुं कहेशुरे, बीजांने उत्तर शियो देशुरे। न रह्यं मुख देखाड्या जेवुंरे, कर्यु कामतो आपणे एवुंरे।।३९॥ एम बोले परस्पर वाणरे, त्यांतो थयुंछे गाममां जाणरे। फरक्यां पुरुषनां अंग डाबारे, एवां अपशकुन थावा लाग्यारे ॥४०॥ फ-रक्यां नारीनां जमणां अंगरे, तेणे सहु थयां मनभंगरे । त्यांतो मक्ति कहे सुत मारोरे, एने कोण तेडी गयुं बारोरे ॥ ४१ ॥ खोळी काढो खबर एनी वेलीरे, पुत्र विना माता थइ घेलीरे।

थया धर्म ते व्याकुळ वळीरे, पामी मूरछा पहिया ढळीरे।।४२।। पछी आव्यां जन मळी सहुरे, करे बाळनो खरखरो बहुरे। कहे छोकरां गयां हतां वाडीरे, तेडी गयां तियां ए अनाडीरे ।।४३।। पछी चाल्यां गोतवा नरनाररे, करी दिवी फानसो अपाररे। करे जेष्ठिका असि कमान्युरे, आच्यां जियां ए वृक्ष आंबानुरे ।। ४४ ।। मात तात लीए लडथडियुरे, पुत्रवियोगनुं दुःख पडियुरे । एवे समे हरि पासे वळीरे, आवी धर्मनारी बारे मळीरे ।। ४५ ।। सुत जाणी लीधा सौवे खोळेरे, बाळ धवराव्या माव बोळेरे । इरि मातानी पुरवा हाम्रे, थया द्वादश खरूपे श्यामरे ॥४६॥ एवे समे गामना रहेनाररे, आव्यां खोळतां सहु नरनाररे । कहे छोकरां आ वृक्ष तळेरे, अमे मुक्या हता मळी सघळेरे ॥ ४७ ॥ तेतो वृक्ष पिडयुं छे भागीरे, जोइ तेने सौने बीक लागीरे । कहे आवुं रुख पड्युं जियारे, नोय बाळक कु-शळ तियांरे ॥४८॥ एम अंतरे थइ उदासरे, आव्या जीवा ए वृक्षने पासरे । त्यारे श्रद्धादि नारी द्वादशीरे, मुंकी बाळकने गयुं खञ्चीरे ॥४९॥ मळ्या गोततां मामीने नाथरे, तेणे आप्याछे मिक्तिने हाथरे । पामी पुत्र राजी थयां बाळारे, आपी मामीने मोतिनी माळारे ॥५०॥ पछी सुत हेते धवराव्यारे, जाण्युं नवे अवतार आव्यारे । वळतां जोयां वाडी वृक्ष ज्यारेरे, मुवो पुरुष पड्यो दीठो त्यारेरे ॥५१॥ पछी पुछ्युं बाळकने तेनुंरे, कह्युं बा-ळके वृत्तांत एतुंरे । एतो आव्योतो करवा घातरे, कोण जाणे थइ केम वातरे ॥५२॥ त्यारे पामिया विस्मय सहरे, आतो विघन वीतियुं बहुरे । पछी उग्यो चंद्र आव्यां घेररे, भक्ति धर्म बोल्यां एह पेररे ॥५३॥ कह्यं श्रीकृष्ण छे आ जरुररे, ते

विना न मरे असुररे । ज्यारे काळीदत्त दैत्य मुवीरे, त्यारे जाण्युं सौनो नाश हुवीरे ॥५४॥ छे आ समर्थ आपशे सुखरे, भिड्या हृदामां विसायुं दुःखरे । त्यारे हतुं जे हरिनुं ज्ञानरे, टळ्युं ते लाग्या सुतसमानरे ॥५५॥ पछी विरम्युं जाणी ए वि- घनरे, कर्या पाठ पूजा दान पुण्यरे। कर्युं संस्कार बाळकतणुंरे, तेणे करीने शोभ्याछे घणुंरे ॥५६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रव- तिकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिन मध्ये असुरविन्ननिवारण ए नामे ओगणीशमुं प्रकरणम् ॥ १९॥

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वास्ता, सौ सांभळज्यो साक्षात । एह गाममां असुरनो, अति थावा लाग्यो उतपात ॥१॥ मात पिताए मनमां, वळतो ते कयों विचार । इयां रहेतां आपणने, थयां विघन वारमवार ॥२॥ आपणे छे मिराध्य एटली, जाणो जीवनदोरी जीवन । तेने विघन जो व्यापशे, तो थाशुं बेउं निरधन ॥३॥ माटे आंहिथी उचिक्रने, जाये अयोध्यापूर । वित्र धाम श्रीरामनुं, तियां नहि आवे असुर ॥४॥ चोपाई---पछी गाडे घरनी समृद्धिरे, लेवा जेवी ते सरवे लीधिरे। पछी संबंधि पासे शिख मागीरे, चाल्यां सुते सहित सुभागीरे॥५॥ बेठां शकटे धर्म भगतिरे, दोय सुतने तेडी दंपतिरे। जनक पासे बेठा छे जोखनरे, माना खोळामां बेठा मोहनरे ॥६॥ चलाव्यां गाडलां धीरे धीरेरे, आव्यां संध्यासमे सर्जूतीरेरे। लाव्यो वाण खेवट ते वारेरे, बेशी उत्तरिया गंगापाररे ॥७॥ लीधी सर्वे समाज संभाळीरे, जोइ सर्जूनी शोभा रूपाळीरे । तियां जळ सुंदर अ-मळरे, कांठे फुलियां छे कमळरे ॥८॥ रातां पोयणां तियां रूपा-ळारे, नाळीफुल छे सुगंधिवाळारे। तियां सारस हंस छे रुडारे

कुंजि बदकु 'जळकुकडारे ॥९॥ करे परस्पर पंखी नादरे, जाणुं नावाने करेछे सादरे । एम शोमेछे सरयू घणीरे, कांठे कुसुम-वाडी बहु बणीरे ॥१०॥ गुलाब गुलहजारी घणारे, बहु वन त्यां तुळसीतणांरे। गुलदावदी ने गडुलियांरे, केशर कर्णिका कुंभि-फुलियांरे ।।११।। जाइ जुइ जूथिका शेवतीरे, माधवी मिछिका ने मालतीरे। कुंद केशु करेण केतकीरे, रह्या निर्माली निर्वारी बेकीरे ।।१२।। चंपा चंमेली चंदन चारुरे,गुलशोमन गुलहजारुरे। पिया-वास पाडल जासुलरे, बोरसरी वसंतना फुलरे ॥१३॥ मरवा सुगंधी आंबाना मोररे, बेके केवडा ठोरमठोररे । फुल कोटिम फळ रसाळरे, बहुविविध भाते विशाळरे।।१४।। एवी श्रोभा सर्जू-तीरतणीरे, वळी कहीए छुं मुखथी घणीरे । बहु वेदिया बेठा विपररे, करे स्नान ने संध्या सुंदररे ॥१५॥ देवमंदिर बहु तीर्थ तीरेरे, शोभे सर्जू निर्मळ नीरेरे। वाडी वन सरजू ते वाररे, प्रभु पधार्ये शोभ्यां अपाररे ॥१६॥ जियां आव्या पोते घनश्या-मरे, तेणे करी थयां शोभाधामरे। एवी शोभा जोइछे समस्तरे. त्यांतो अर्क पामियो छे अस्तरे ॥१७॥ त्यारे दीवा कर्याछे बहु तीरेरे, तेनां पड्यां प्रतिबिंब नीरेरे। कांठापर हवेली छे घणीरे, करी हायों त्यां दीपकतणीरे ॥१८॥ तट हवेलिना दीवा मळीरे, तेणे पुरी रही झलमळीरे। एवं शहेर सोयामणुं घणुंरे, रचेल छे मनुराजतणुरे ॥१९॥ वळी इक्ष्वाकु कुळना जेहरे, तेने रहेवानुं स्थानक एहरे। एवं शहेर सुंदर विश्वाळारे, तियां आविया धर्म ने बाळारे ॥२०॥ वळी वासुदेव भगवानरे, जन्मि राम थया जेह स्थानरे। एवी पुरी पवित्र घणीरे, वाडी वने विंटि सोयामणीरे ॥२१॥ शोभे शेरी बजारो चौवटारे, रुडा राजमारम वाळ्या

मोटारे। सात माळनी हवेली साररे, शोभे कैलासगिरि आकाररे ॥२२॥ बनी पंगति तेनी अपाररे, शोभे बरोबर तेनां बाररे। वळी हाट विवेके विभागेरे, बरोबर सुंदर सारां लागेरे ॥२३॥ क्यांक वेचाय दुध ने दहरे, क्यांइ घृत मिसरी ने महरे। क्यांक फळ फुल वळी पानरे, क्यांक वस्त्र शस्त्रना सामानरे ॥२४॥ क्यांक वासण भूषणवाळारे, क्यांक झवेरी ने मोतियाळारे। क्यांक गज बाज शणगारीरे, फरे नित्य तेनी असवारीरे।।२५॥ क्यांक अ-नेक अन रसाछरे, क्यांक शाक सुंदर बकाछरे। क्यांक हाट हारे हलवाइरे, वेचे विविध भात्ये मिठाइरे॥२६॥ क्यांक गांधी मोदी मणियाररे, क्यांक नाणावटीतणी हाररे । क्यांक माळी ने तंबोळी तेजरे, क्यांक सालवी ने रंगरेजरे ॥२७॥ क्यांक गान तान ने गवैयारे, एम सौ कोइ विभागे रैयारे। क्यांक विप्र करे वेदाभ्यासरे, क्यांक बाळ भणे पंडा पासरे ॥२८॥ क्यांक क्षत्रि-तणी सभासाररे, क्यांक वैक्य करेछे वेपाररे। क्यांक ग्रुद्र करे सेवा सारीरे, सहु वर्णधर्म रह्या धारीरे ॥२९॥ क्यांक लडेछे मछ अखाडीरे, खेले कुस्ति पेच ने लाकडीरे। क्यांक पडीछे रुनी मलियोरे, एम शोमेंछे शेरी ने गलियोरे।।३०॥वळी वसे बहु वीतरागीरे, रामउपासी त्रियना त्यागीरे। बहु मंदिर ने धर्म-शाखंरे, तेणे लागेछे शहेर रूपाछंरे ॥३१॥ पुष्प चंदने छांठ्याछे चोकरे, देवसरिखां वसेछे लोकरे। राम सीता लछमन जितरे बहु मंदिरे तेनी मुरतिरे ॥३२॥ तियां नित्ये उठी नरनाररे, आवे दर्शने करी प्याररे। थाय आरतीना झणकाररे, करे उत्सव जन अपाररे।।३३॥ झांझ मृदंग झालरी शंखरे, मेरी तुरी ने वीणा असंख्यरे । थाय नाद तेनो पुरमांइरे, घोषे शहेर रह्यं

सर्व छाइरे ॥३४॥ चाल्यां जाय एम सांभळी नादरे, प्रेमवती ने हरिप्रसादरे। वळी वनी शोभा दिवातणीरे, जाणुं हार मांडी मणि घणीरे ॥३५॥ तेने प्रकाशे शेरी बजारोरे, फरे उजासे लोक हजारोरे। एवी शोभा जोतां नरनाररे, आव्या शहेर उलंबी आ पाररे ।।३६।। रामघाट निरखी नजरेरे, आव्या वर्हटा शाखा नगरेरे । तियां अग्निहोत्र थाय बहुरे, होमे हविष्यान घृत सहुरे ॥३७॥ ते सुगंधि लइ निजधामरे, आंवी रह्यां करी विशरामरे। पछी नित्यप्रत्ये सर्जू नाइरे, करे संध्या ने बंदन त्यांइरे॥३८॥ वळी करेछे कृष्णनी सेवरे, देखी करे तेम हरिदेवरे। हरि बुद्धिए छे बहु धीररे, साधुखभावे शोमे शरीररे ॥३९॥ खान पान खुवी खेल जेहरे, नथीं गमतुं अंतरे एहरे । तात संगाथे सरजू नाइरे, पाछा आवे ज्यारे घरमांइरे ॥४०॥ त्यारे करे श्रीकृष्णनी मूर्चिरे, पूजे तेने भावेकरी अतिरे । रम्यामां पण अरुचि घणुंरे, वळी सदा गमे शुचिपणुरे ॥४१॥ एमां कोइ जो करे विधनरे, तेशुं केदि मळे नहि मनरे । कथा कीर्तनमां बहु प्रीतरे, सुंणे रामनां चरित्र नित्यरे ॥४२॥ जेमां होय साधुता अपाररे, एवा जनशुं पोताने प्याररे । गमे नहि असाधुता रंचरे, एम क्रतां वर्ष थयां पंचरे ॥४३॥ त्यारे क्रमारावस्था उतिररे, पाम्या पौगंडाव-स्थाने हरिरे। त्यारे सरजू गंगामां नावारे, मांड्युं आपे एकछं त्यां जावारे ॥४४॥ सीता राम लखमन हर्नुरे, करे सारण नित्य एह-चुरे। बळी तातना मुखथी पर्मरे, सुण्या सतपुरुषना धर्मरे॥४५॥ वर्णाश्रम वळी त्रियातणारे, कह्या छ वर्षे धर्मे जे घणारे। तेतो सर्वे राख्याछे संमारीरे, नथी मेल्या मनथी विसारीरे ॥४६॥ बाळपणामां बुद्धि छे वणीरे, कांइक मुखपाठे लीधुं भणीरे।

L. A.

वळी सुणेछे श्रीभागवतरे, तेतो पोताने वहां अत्यंतरे ॥४७॥ घणो हरिजनमां छे स्नेहरे, बीजा साथे बहु निःस्पृहरे। त्याग वैराग्य तनमां बहुरे, देखी आश्रय पामेछे सहुरे ॥४८॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदसुनिविर-चिते भक्तिचितामणिमध्ये अयोध्यापुरीवर्णन ने धर्मभक्ति त्यां वस्यां ए नामे विश्वासुं प्रकरणम् ॥२०॥

पूर्वछायो-ग्रुभमति सह सांभळो, कहुं कथा ते अनूप्। त्यार पछिनी जे वारता, छे सहुने ते सुखरूप ॥१॥ एज वर्ष वै-शाख मासे, शुक्क द्वितीया दिन । पतिवता प्रेमवतीये, जनम्या ते पुत्र पावन ॥२॥ गुणेकरी प्रद्युमन सरखा, स्वभावे संत समान । प्रीति प्रकट भगवानमां, नाम इच्छाराम गुणवान ॥३॥ एज अनुज महाराजना, जाणज्यो जग विरूपात । त्यारपछी हवे हरिनी, सांभळज्यो सहु वात ॥४॥ चोपाई-पछी प्रश्च बुद्धिए विशाळरे, तेने बेसारिया छे निशाळरे । वैशाख शुदी बारश दिनेरे, कढाव्या अक्षर हरिजिनेरे ॥५॥ लागी लक्ष्मीनारा-यण पायरे, पूजी शारदा गणपति रायरे । करी होम जमाड्या विपररे, शिखवाने सुविद्या सुंदररे ॥६॥ एम कर्ता थोडे घणे दिनरे, शिख्या विद्या परम पावनरे । जोइ धर्मे सुत बुद्धि बोतरे, भणाच्या ने वेद अंगे सोतरे ॥७॥ शिख्या शास्त्र ते अर्थे सहितरे, थया विद्यावान ब्रह्मवितरे। हता वाचाळ ने विद्या जोइरे, करे चर्चा पहोचे नहि कोइरे ॥८॥ पुछे जियां तियां पोते प्रश्नरे, तेनो न करे उत्तर कोइ जनरे । जाय सर्जुमां नावा एकलारे, उठी बाह्य मुहूर्तमां वेलारे ॥९॥ आवे नाहिने घरमां ज्यारेरे, करे रामजिनी पूजा त्यारेरे । धूप दीप पुष्प फळ पत्ररे, तेणे पूजिने

भणेछे स्तोत्ररे ॥१०॥ पछी नैवेदनुं जेजे अभरे, तेने जमे थइने प्रसमरे। करे कंठे तुळसिनी माळुंरे, ऊर्ध्वपुंडू तिलक रूपाछुंरे ॥११॥ रामकोट आदि रुडी रीतेरे, करे प्रदक्षिणा तेने प्रीतेरे । जन्मस्थान ने लछमनघाटरे, रामघाटे जाय वर्णिराटरे ॥१२॥ ब्रह्मकुंड वळी खर्गद्वारीरे, जाय जानकीघाटे विचारीरे । विद्याकुंड सूर्यकुंड जेहरे, भद्रसा आदि तीरथ तेहरे ॥१३॥ कनकसिंहासननां दर्शनरे, नित्ये जावुं रत्नसिंहासनरे । हनुमान-गढिये हमेशरे, जावुं सुग्रीवटिले अहोनिशरे ॥१४॥ जगन्नाथ कावडियानी, जागेरे, जाबुं त्यागी पासे वहाछं लागेरे। अह-ल्याबाइना मंदिरमां इरे, जावुं नित्य दरशने त्यां इरे ।।१५॥ दिला-यसिंघगज रायगंजरे, जुवे जेसंगपुर सुखपुंजरे । जियां जियां हरि हरिजनरे, तियां तियां फरे भगवनरे ॥१६॥ सर्वे तीरथ उठी सवारेरे, फरे करे दरशन प्यारेरे। रामजिनी मूर्तियो आगेरे, करे स्तुति उमा एक पगेरे ॥१७॥ कहे धन्यधन्य रघुपतिरे, तमारो महिमा मोटो अतिरे। कही न जाय मुख्यी गाथरे, धन्यधन्य हे जानकीनाथरे ॥१८॥ जुबो तब पदरज प्रतापरे, थइ शिला ते अहल्या आपरे । देखी विसाय पाम्यो पथि पाथरे, धन्य-धन्य हे जानकीनाथरे ॥१९॥ कर्यो गुहराजा भवपाररे, कर्यो अघवंत जयंत उद्धाररे । करी भिलडी तमे सनाथरे, धन्यधन्य हे जानकीनाथरे ।।२०।। वळी जटायूने अंतकाळरे, दीघां दर्शन तमे दयाळरे। करी क्रिया तेनी निजहांथरे, धन्यधन्य हे जानकी-नाथरे ।।२१।। तार्यो सुप्रीव मित्राइ करीरे, एने सारु मार्यो वाळी हरिरे । मारी करी दया एने माथरे, धन्यधन्य हे जानकीनाथरे ॥२२॥ तेने पासे हता हनुमंतरे, अतिसमर्थ बहु बळवंतरे। करी

एकांतिक राख्या साथरे, घन्यधन्य हे जानकीनाथरे ॥२३॥ वि-भीषण निजजन जाणिरे, तेने ओधार्यो शारंगपाणिरे। कर्यो राय मारी रावण हाथरे, घन्यधन्य हे जानकीनाथरे ॥२४॥ एवां अनेक कारज करीरे, आच्या अयोध्यामां तमे फरीरे । जय जय गाय जन गाथरे, धन्यधन्य हे जानकीनाथरे ॥२५॥ करे स्तुति ए मूरति आगेरे, वार पोर बपोर त्यां लागेरे । खान पान मांहि नहि वृत्तिरे, त्याग वैराग्य वहालो छे अतिरे ॥२६॥ एम फरी करी दरशनरे, ज्यारे आवे भवन जीवनरे। त्यारे भणेछे वेद छ अंगरे, शील संतोष साधुता अंगरे ॥२७॥ एवं जोइने पोतानो तातरे, संभारेछे पुरवनी वातरे । कह्यं हतुं मार्कंडेये जेहरे, सर्वे गुण आमां छे तेहरे ॥२८॥ एवा हरिने जे आशरेछेरे, तेना सर्वे संशय हरेछेरे। आपी ज्ञान भक्ति ने वैराग्यरे, विजी वासना करावेछे त्यागरे ॥२९॥ बाळपणामांहि जन बहुरे, जाणे आत्म-दर्शी छे सहुरे। कहे घरमां आं कांइ रहेछेरे, एम परस्पर जन कहे-छेरे ॥२०॥ पोतानेपण एवो छे घाटरे, जोइ रह्या जनोइनी वा-टरे। एवाथका रह्या मंदिरमांरे, जेम कमळ रहे नीरमांरे॥३१॥ निजतात सत्य गुणवाळारे, तेवां पतिव्रतां माता बाळारे। एवां सत्यवादी जन जोइरे, थाय शहरवासी शिष्य सोइरे ॥३२॥ तेने आपे उपदेश आपरे, करावे कृष्णनामनो जापरे। ज्ञान भक्ति ने वैराग्य युक्तरे, आपी उपदेश करे मुक्तरे ॥३३॥ दारी चोरी मद्य मांस त्यागरे, करावे अहिंसा विष्णुयागरे। चारे वर्ण जे आशरे आवेरे, तेने एरीते नियम धरावेरे ॥३४॥ एवं जोइने यु-वति जनरे, इच्छे गुरु करवाने मनरे । पछी विचारिने धर्म तेनेरे, नथी करता शिष्य पोते एनेरे ॥३५॥ कहे आज काढुं रीत एहरे, ६भ०चि०

चाले आगे परंपरा तेहरे। तेनो आजतो नथी विचाररे, पण पछी बगाड अपाररे।।३६॥ माटे कह्युं सर्वे युवतिनेरे, तमे सौ करो गुरु भक्तिनेरे । उद्धवसंप्रदायनी ए रीतरे, तेने पाळवी बहु करी प्री-तरे ।।३७।। पछी त्रिया सौ भक्तिने मळीरे, धर्म नारीना लीधा सांभळीरे। सधवा विधवा धर्म जेहरे, सुणी सर्वे त्रिया पाळे तेहरे ॥३८॥ तेणे नारी थइ शुद्ध अतिरे, जे कोइ हती कुलटा कुमतिरे। एम धर्म ने मक्ति विचारीरे, दिये उपदेश नारीने नारीरे ॥३९॥ वळी जन्मदिवस प्रभुतणारे, तेना करेछे उत्सव घणारे । जन्मा-ष्टमी रामनवमी जेहरे, करे वत उत्सव सर्वे तेहरे ॥४०॥ भाद्र-श्चिदि चतुरथी आवेरे, पूजे गणपित बहु भावेरे । आसोवदी आवे चौदशीरे, पूजे हनुमानने हुलसीरे ॥४१॥ नियम धारी सुणे कथा नित्यरे, बहु हरिचरित्रमां प्रीतरे। बळी जे आवे मणवा पासरे, तेने करावे वेदअभ्यासरे ॥४२॥ हेते हरि वात संभळावेरे, रुडा धर्मने पाळे पळावेरे । आपे जिति बेठा शत्रु छयरे, तेम कर्या आश्रित अभयरे ॥४३॥ एवा सत्यवादी मक्ति धर्मरे, जेने घेर छे पोते परब्रह्मरे। तियां सद्गुण आत्रीने रहेरे, तेनुं आश्वर्य कोइ न कहेरे ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह जानंद खामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिकृष्णवाळलीलानामे एकविशर्मु प्रकरणम् ॥२१॥

पूर्वछायो—सहु जन मळी सांभलो, पछी धर्मे कर्यो विचार। जन्मथकी महाराजने, वर्ष वीत्युं अष्टमुं आ वार ॥१॥ जनोइ देवा जनकने, अतिआनंद उर न माय। देशदेशना ज्योतिषि, तेडाविया द्विजराय ॥२॥ पुष्प फले पूजा करी, पछी कह्युं प्रीते हुं बचन। उपवीत देवा आ सुतने, तमे शोधी काढो शुभ दिन

545-10% p.

।।३।। नोइ जोष जोषी बोलिया, वर्ष आठमुं छे आ अनूप। माघ शुदी दशमी दिने, शुभ सुहूर्त छे सुखरूप ॥४॥ चोपाई-पछी राजी थइ मात तात, निश्चय करीने मानी ए वात । मं-गाव्या साज समाज घणा, कोइ वातनी न रास्ती मणा।।५।। पछी कंकोतरी गामोगाम, मेली लखी सरवेनां नाम । रुडीरीते शण-गार्यो घर, चित्रविचित्र कर्यों सुंदर ॥६॥ रोप्या रंभाना स्थंभ ते द्वार, बांध्यां तरियां तोरण बार । छांट्यां अगर चंदने एवां, तेणे शोमेछे वैकुंठजेवां ॥ ७ ॥ रोप्या मंडप पुर्याछे चोक, जोइ थिकत थाय शहेरलोक। दिवी फानसो काचनी हांडी, वासि दीप हारोहार मांडी ।।८।। नीला पीळा भर्या रंग राता, श्रोमे सारा कहें। नथी जाता । अतिउत्साहे आदर्यो जंग, देवा उपवीत उरे उमंग ॥९॥ पछी जेजे तेडाव्यांतां जन, तेतो आव्यां नवमीने दिन । रथ वेल्य ने गाडलां लइ, आव्या अश्वपर चडी कड़ ॥१०॥ बाळ युवा वृद्ध नरनारी, आव्यां सर्वे ते प्रेम वधारी। एक जमवुं ने यज्ञोपवीत, हरि निर्खना चायछे चित ॥११॥ जेने जेवी घटे पेरामणी, लाव्यां मोसाळियां मळी घणी । बीजां बहु आव्यां हरिजन, करवा धर्म हरिनां दर्शन ॥१२॥ तेने आप्याँ उत्तरवा घर, सारीपेठे करी सराभर । पछी भावे जमाड्यां भोजन, लेख चोश्य भक्ष्य मोज्य अन्न ॥१३॥ ज्ञाक पाक ने सुंदर वडां, जम्या घुद्ध युवा नानकडां। पछी आव्यो दशमीनो दन, तेड्या वित्र विद्याए संपन ॥१४॥ कुळगोर सारा सामवेदी, अति आचारे आत्मनिवेदी । पछी पुरना पुराणी जेह, वेद शास्त्रना भणेल तेह ॥१५॥ मळी शुभ वेळा पळ जोइ, आपवा प्रभुजिने जनोइ। वाजे मांगळिक वाजां अपार, गाय मंगळ मळी बहु नार॥१६॥ प्रथम

त्रण गाय त्यां आपी, पूज्यां गोत्र विनायक स्थापी। कर्यो सं-डिले स्थापन अग्नि, आहुतियो आयी तेमां घीनी ॥१७॥ पछी सामवेदनुं जे कर्म, पासे रही करावे छे धर्म । पहेला पुत्र नवारी जमाड्या, मुंडन करावी फरी नवाड्या ॥१८॥ धर्मे करावी संस्कार विधी, आपी कौपीन ते पहेरी लीधी। पछी धर्मदेवे बहु भावे, आपी जनोइ धरी खभे डाबे ।।१९।। त्यारे गुरुए कह्यं विचारी, फरो भूमिए थइ ब्रह्मचारी । पछी धर्मे शिखामण दीधी, करज्यो वैश्वदेव रुडी विधि ॥२०॥ करवी त्रिकाळ संध्या पावन, जमवुं पंच ग्रास काढी अन । न सुवुं दिवसे निर्धार, गुरुसेवामां रा-खवो प्यार ॥२१॥ त्यारे सत्यसत्य कहे बाळ, सुणी राजी थयां मा मोशाळ ! पछी धर्मे गायत्रीनो मंत्र, आप्यो करवा जाप नि-रंत्र ॥२२॥ वजडाव्यां वाजां तियां वळी, गाय गीत त्यां मानि-नी मळी । करे वित्र तियां वेदध्वनी, पोति हैयानी हाम सहुनी ।। २३ । करी परस्पर पेरामणी, दीधी धर्में ते दक्षिणा धणी। कर्या राजी द्विज ने गायक, आपी अन्न धन वस्त्र अनेक ॥२४॥ बोले याचक जयजय बहु, धन्य धन्य कहे जन सहु। पछी गु-रुए पालास दंड, आप्यो हाथमां ग्रेवा अखंड ॥२५॥ बांध्यो मुंज-तणो आडबंध, लीधुं रुरुचर्म वळी स्कंध । आप्युं अंगे ते बस्न नवीन, तेणेकरिने ढांकी कौपीन ॥ २६॥ पछी पहेला कह्याता जे धर्म, तेनो फरी समझावेछे मर्म । कहे अनघ गुरुनां वेण, रुदे धारज्यो कमळनेण ॥२७॥ ऋोध करशो मां कोइ वार, मुखे मिथ्या मां करशो उचार । अष्ट प्रकारे तजज्यो नारी, ग्राम्यकथा सुष्ये नहि सारी ॥२८॥ नृत्य वाजित्र तनन तान, सुंणबुं नहि विषयि गान्। सुगंधि तेलमर्दन त्यागी, घसी पग न घोवा सु-

of the same

भागी ॥२९॥ गुरु आगळ्य उंचे आसन, न बेसवुं भ्रुल्ये कोइ दिन। दंत न घसो न गुंथो वाळ, भोंये न लखो वर्ण कोई काळ ॥३०॥ समा विना न उतारी केश, मद्य मांसने तज्जबुं हमेश । ष्ट्रषमे न करवुं वाहन, दर्पणमां न जोवुं वदन ॥३१॥ निंदा द्रोह ते केनो न करीए, पगे पहेरवां पनीयां प्रहरीए। मन कर्म ने वळी वचने, हिंसा करवी नहि कोइ दिने ॥३२॥ मुक्तिअर्थे पण आत्मघात, न करवी सांभळो ए वात । केदी करवो नहि कुसंग, जेणे थाय खधर्मनो भंग ॥३३॥ धर्मसम नहि सुखदाय, माटे रहेवुं ते खधर्ममांय । भ्रुमिपर ने कांसाने ठामे, न जमवुं केदी मनभामे ।।३४॥ काथो चूनो पानबिडी कहीए, द्युतविद्या थकी दूर रहीए । गांजी भांग्य ने मफर जेह, आफु आदि तजवानुं,तेह ॥३५॥ देव तीर्थ ने ब्राह्मण गाय, साधु सती सच्छास्त्र कहेवाय। तेनी निंदा केदिये न करवी, करे कोइ तो काने न धरवी ॥३६॥ वळी ब्रह्मचारिनी जे रीत, सुणो हरि परम पुनित । कौपीन ने मुंजि कटिस्त्र, दंड कमंडळ यज्ञोपवीत ॥३७॥ मृगाजिन ने भि-क्षानुं ठाम, ते न त्यागवां लीधां जे नाम । स्नान संध्या जप होम जेह, भणवुं ने भणाववुं तेह ॥३८॥ देव पितृतर्पणादि कर्म, करवुं ए ब्रह्मचारिनो धर्म । प्रेमे करवुं कृष्णतुं पूजन, नवधा भक्ति सहित निशदन ॥३९॥ एम कह्यं ज्यारे धर्मदेव, कृष्ण कहे सत्य-सत्यमेव। पछी प्रक्रमा अग्निने करी, वळता गया माता पासे हरि ॥४०॥ मागी भिक्षा जइ माता पासे, आपी माताए अति-हुलासे। आपी बीजी सुवासण्ये मळी, लीधी तेपण भिक्षाने वळी ॥४१॥ जाची भिक्षा मेली गुरु आगे, आगन्याए जम्या अनुरागे। पछी काशीए जानाने काज, आप्यो गुरुए सरवे समाज ॥४२॥

दंड कमंडळं मृगछाळा, तुलसीमाळ विशाळ मेखळा । पछी मा-ताए आप्यां टिमण, पेंडा पतासां जोड्ये जमण ॥४३॥ पीळी आंशि पाघ शिरपर, खभे खाखरदंड सुंदर। चाल्या भातुं बांधी ब्रह्म-चारी, भणवा काशीए करी तैयारी ॥४४॥ निसर्या घरथी गाम बहार, नथी वळबुं ए निरधार । चाल्या ठावको ठराव करी. माया संबंधीनी परहरी ॥४५॥ केड्ये धोडिधोडि मामो हार्या, न पहोचाणुं पछी ते पोकार्या । कहे वळो वळो वर्णिराज, मात-पिताने पाळवा काज ॥४६॥ पछी हरि विचारी ए मर्म, थाशे दृःखी बाळा बळी धर्म । माटे हमणांती पाछी बळुं, पछी समी जोइने निकर्छ ।।४७।। वळता वळी आव्या निजधाम, बेठा ब्रा-हाणमां घनश्याम । प्रभु बेठा ज्यां द्विजसमाज, अतिशोभेछे वरणिराज ॥४८॥ थयो सूत्रविधि समाप्त, राजी थयां संबंधी स-मस्त । पाम्या अतिआनंद ए मन, आप्यां दान थइ परसन ॥४९॥ कनक घरेणां वस्त्र सोयामणां, आप्यां वाहननां दान घणां। आव्या हता त्यां सेवकजन, तेणे पूजिया धर्म पावन ॥५०॥ पछी राजी थइ भक्ति ईश, घटे तेम पूज्या निजिश्चिष्य। वळतां सहुने कराव्यां भोजन, सुंदर रसोइ सारां व्यंजन ॥५१॥ पछी राजी थइ निजवाम, गया पुरुष ने वळी वाम। वळता ताते भणाविया तेह, अर्थसहित सामवेद जेह ॥५२॥ शिख्या ञ्चास्त्र अर्थेसहित, थया विद्यावान ब्रह्मवित । हता विचक्षण विद्या जोइ, करे चर्चा न पहोचे कोइ ॥५२॥ इति श्रीमदेकांति-कधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदग्रुनिविरचिते भक्त-चिंतामणिमध्ये हरिउपवीतउत्सवनामे बावीशमुं प्रकरणम् ॥२२॥

पूर्वछायो-उपवीत उत्सव पुरो थयो, सुंदर सारो निदान। त्यारपछिनी जे वारता, सहु सांभळी थइ सावधान ॥१॥ धर्या धर्म हरिए वहु, जेजे कह्या गुरुदेव । मातिपतानी महातमे, करेछे बहुपेर सेव ॥२॥ पण अखंड रहेछे अंतरे, घर त्याग करवा घा-ट। क्यारे मेलिश आ घरने, हुं क्यारे लइश बनवाट ॥३॥ जे अर्थे आ अवतार छे, ते करीश हुं कैये काज। धर्म स्थापुं अधर्म उत्थापी, एम विचारे महाराज ॥४॥ चोपाई -अधमघना चाल-णहाररे, एवा असुर जगे अपाररे । तेने मोह पमाडीने मार्रुरे, धरापर धर्मने हुं धारुंरे ॥५॥ शुद्ध धर्मे राखुं नरनाररे, एइ अर्थे छे आ अवताररे । पण हमणां त्यागुं जो गेहरे, मरे माबाप मारे सनेहरे ।।६।। माटे ब्राह्मणनो छे जे शापरे, तेथी मुकाय दंपती आपरे। तेदि निश्चे हुं त्यागिश घररे, गुढ विचार एवो अंतररे ।।७।। पछी विद्यागुरु तात करिरे, वेद त्रिजो भणिलिघो हरिरे । मोटी बुद्धिवाळा छे दयाळरे, जेह शिखे ते अचिर काळरे ॥८॥ जोइ विसाय पामे सौ जनरे, पामे आश्वर्य कहे धन्यधन्यरे। पछी धर्म ते भण्याता जेहरे, सर्वे हरिने भणान्युं तेहरे ॥९॥ वेद शास्त्र ने काव्य पुराणरे, महाभाष्यादि भण्या सुजाणरे। पछी धर्म थइ रिक्रयातरे, कही रामप्रतापने वातरे ॥१०॥ सुणो ज्येष्ठपुत्र बड-भागीरे, आतो थाशे अतिशय त्यागीरे । जुनो आजथी एनां ए-धाणरे, नथी कोइ वातनी जो ताणरे ॥११॥ खान पानमांहि नथी मनरे, नथी इच्छता वसन भूषनरे। मान मोटप्यने मारुं तारुंरे, नथी लागतुं ए एने सारुंरे ॥१२॥ हर्ष शोक वळी हाण्य वृद्धिरे, नथी गमती घरसमृद्धिरे । अतिवैराग्यवान छे एहरे, नथी सं-माळता निजगेहरे ॥१३॥ अतित्याग गमेछे तनमारे, एम मने

जणायछे मनमारे । माटे आथी नहि थाय वेवाररे, तमे उपाडो वरनो भाररे ॥१४॥ तमपासे ए नहि मागे कांइरे, नधी मन एनुं घरमांइरे । खावा पिवानुं पण नहि मागेरे, अतिउदासी छे वैरा-गेरे ॥१५॥एम ज्येष्ठपुत्र जे जोखनरे, कह्यां ताते ते मान्युं वचनरे। पछी खस्थचिते थइ तातरे, अंतरमांहि विचारी वातरे ॥१६॥ हवे ष्ट्र थयुंछे आ देहरे, माटे सहुशुं तजुं सनेहरे। हवे सांख्ययोगने आशरुरे, श्रीकृष्णसामिनुं ध्यान धरुरे ॥१७॥ पण पोताने हरि छे प्रेहरे, देवा शिखामण्य छे सनेहरे। सुणो सुत हरि वात मारीरे, सुखदायक छे अतिसारीरे ॥१८॥कहुंछुं तमारा हितने सारुरे, माटे मानज्यो वचन मारुरे । कहुंछुं खधर्म भक्ति वैराग्यरे, तेनो क-रशो मां केदी त्यागरे ॥१९॥ जाज्यो रामानंदस्वामी पासरे, जो थाओ घरमांथी उदासरे । रामानंद खामिनो महिमायरे, नथी जातो में कहारे जिभायरे ।।२०।। तेतो बसेछे सोरठ देशरे, दिए-छे जीवोने उपदेशरे। जाज्यो धीरेधीरे पुछी वाटरे, उत्तरी झाडी नदीना घाटरे ॥२१॥ एवी सांभळी तातनी वाणीरे, सर्वे अंतरे लखी एधाणीरे। पोते विद्याए छे गुणवानरे, थया गुणे ते तात समानरे ॥२२॥ वळी सुणेछे तातमुखेथीरे, सर्वे शास्त्र सुंदर सुखे-थीरे। सुणिसुणिने ग्रहेछे साररे, नीरक्षीर नोंखुं निरघाररे ॥२३॥ जेजे कार्ट्यु एमांथी अनुपरे, सर्वे जीवने ते सुखरूपरे। श्रीमद्भाग-वत जे पुराणरे, तेनो सार शोधिने सुजाणरे ॥२४॥ काढ्या स्कंध दोय दुःखहारीरे, पंचमस्कंघ सदा सुखकारीरे। बीजो दशमस्कंघ कहेवायरे, श्रीकृष्णचरित्र छे जेमांयरे॥२५॥ एतुं नाम छे भाग-वतसाररे,लखी नोंखुं राख्युं निरधाररे। वळी भारतसार शोधिनेरे, लखी लीधुं विचारे बुद्धिनेरे ॥२६॥ भगवद्गीता भवभयहरणीरे,

लखी लीधी ए विचारी वर्णीरे । विष्णुसहस्रनाम सुखरूपरे, लखी विदुरनीति अनुपरे ॥२७॥ एटलुं श्रीभारतमोझाररे, शोधी का-ढी लीधुंछे ए साररे। वळी धर्मशास्त्रनो जे साररे, पोते लख्योछे करीने प्याररे ॥२८॥ याज्ञवल्क्य स्पृति छे सारीरे, लखी पोते तेपण विचारीरे । एह धर्मशास्त्रतुं छे साररे, सुखदायक सहुने अपाररे ॥२९॥ स्कंदपुराणनुं सार जेहरे, लख्युं सुंदर शोधीने तेहरे। वासुदेवमाहात्म्य महाराजेरे, लख्युं सौ जनना हितकाजेरे ॥३०॥ एह सार छे स्कंदपुराणरे, शोधी लखी लीधुं ए सुजाणरे। ए जे चारे ग्रंथमां छे सत्वरे, शोधी काढी लीघुंछे ए तत्वरे ॥३१॥ पछी तेनो गोटको लखावीरे, शोधी सुंदर सारो बनावीरे। ला-च्या तेतो पोते तातपासरे, ताते जोइने कर्यो तपासरे ॥३२॥ नीये आ बुद्धि मनुष्यतणीरे, एम करीछे प्रशंसा घणीरे । धन्यघन्य पुत्र महामतिरे, तमे सर्वथी मोटा छो अतिरे ॥३३॥ एम कहीने विचार्य ज्यारेरे, वात पूर्वनी सांभरी त्यारेरे । कह्यं मारकंडेय ते मळ्युंरे, सर्वे प्रकारे आज में कळ्युंरे ॥३४॥ वळी बृंदावननी जे वातरे, सांभरीछे पोताने साक्षातरे। आवी मळियां सर्वे एघा-णरे, जाण्या पुत्रने स्याम सुजाणरे ॥३५॥ त्यारे आश्चर्य वात ए नथीरे, एम विचारियुं छे मनथीरे। पछी अतिकरी सतकाररे. वखाण्या चारे शास्त्रना साररे ॥३६॥ एम ताते कह्युं ते सांभळीरे, लखी राख्या पोतापासे वळीरे । धर्मशास्त्र ने स्कंदपुराणरे, तेनुं सार कर्यु परमाणरे ॥३७॥ भारतसार भागवतसाररे, वांचे सुणे नित्ये निरधाररे। जेणेकरी श्रीकृष्णमां श्रीतरे, थाय दृढ अति नित्यनित्यरे ॥३८॥ वळी शास्त्रयुक्त भक्ति जेहरे, करवी कृष्ण-नी तात कहे तेहरे । सुणी मंत्र हुंथी महामतिरे, अष्टाक्षरनी ते

शुभ अतिरे ॥३९॥ वळी त्रण प्रकारनो जेहरे, कध्यो पिताए करी सनेहरे। कहुं ए मंत्र वहालो छे मनेरे, अतिहेत करी कह्यो तनेरे ।।४०।। करो जप तेनो पूजा नित्यरे, पाळज्यो खधर्म रुडी रीत्यरे । एवी ताते शिखामण दीधीरे, मांड्युं वर्तवा हरिए विधिरे ॥४१॥ थयां जन्मथी वर्ष अज्याररे, तियां आविया असुर अपाररे। अतिकाळा ने बहु करुररे, भर्या कोध मांही भरपुररे ॥४२॥ मोटी डाढियो ने माथे वाळरे, भ्रुरा लंबुरा वडा विकाळरे। राती आंख्यो ने आयुध हाथरे, आव्या जियां बेठा हता नाथरे ॥४३॥ वेष वैष्णवी पण असुररे, मनमां छे मार्यानुं जरूररे । आवी उगाम्यां आयुध श्रठेरे, त्यांतो नजर करी नीलकंठेरे ।।४४।। पाम्या भोह परस्पर एहरे, भुवा लडी माहोमांहि तेहरे । भुवा असुर उत्तर्थों भाररे, त्यारे नाथे ते कर्यो विचाररे ॥४५॥ देश प्रदेश हशे विम्रुखरे, देता हशे मुनियोने दुःखरे । माटे सर्वेनो उतारुं भाररे, एह अर्थेछे आ अवताररे ॥४६॥ माटे कैये तजुं हुं आ घररे, कैये जोउं शोधी सर्वे धररे । कैये पमाई पापिने मोहरे, मरे मांहोमांहि ते समोहरे ॥४७॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंद स्वामि शिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रनामे त्रेबीशमुं प्रकरणम् ॥ २३ ॥

पूर्वछायो-एटली वात एम थइ, तमे सांभळो सहु सुजाण। कथा कहुं त्यारकेड्यनी, शुद्धबुद्धिने सुखखाण।।१॥ बहु हेते हिरकुष्णनां, जे चरित्र धरशे चित्त । हशे महा पंच पातकी, तोय थाशे तर्त पुनित ॥२॥ एवो यश ए अनुप छे, सुभागी सांभळशे कान। त्यार पछिनी जे वारता, सहु सांभळो थइ साव-धान ॥३॥ प्रेमवती बाळा भगति, कहीए त्रणे जेहनां नाम ।

तेना तनमां तप्त आवी, वळतां पाम्यां विराम ॥४॥ चोपाइ— कार्तिकशुदि अष्टमीने दिनेरे, तेदि मांदां थयां माता तनेरे । जेतुं वत तपेकरी देहरे, अतिशिधिल थयुंछे तेहरे ॥५॥ फुल मृदुलसम छे कायरे, अतिशे कोमळ न सहेवायरे। तेने जोइ ज्येष्ठसुत जेहरे, करे औषध उपाय तेहरे ॥६॥ करी औषधविधि अनेकरे, तेनी टांकी लागी नहि एकरे। त्यारे प्रभुए कर्यो विचाररे, नहि रहे तन निरधाररे ॥७॥ आपुं ज्ञान माने आणि पळेरे, जेणेकरी तर्त दुःख टळेरे। त्यारे हरि कहे सांभळो मातरे, एकचित्त दह मारी वातरे।।८॥ सतशास्त्रमां मळतां वेणरे, आवा समामांहि सुखदेणरे । जनममरणरूप माया मारीरे, तेतो सर्वेने छे दुःखकारीरे ॥९॥ पंचरात्र सांख्य योगवाळारे, एम कहेछे मानी माता बाळारे । माटे ज्ञान वैराग्य धर्म युक्तरे, मक्ति कृष्णनी करीए तो मुक्तरे ॥१०॥ सर्वे दुःख मट्वा उपायरे, नथी एह विना बिजी मायरे। एवी सांभळी सुतनी वातरे, वळतां मनमां विचार्यो मातरे ॥११॥ जेजे कह्युंतुं मारकंडेयरे, मळी वात सर्वे आ तेयरे । कह्युं गुणे छे हरि अमूल्यरे, थयुं एमां नथी कांइ भ्रुल्परे ।।१२॥ वळी कह्युंतुं वृंदावन मांयरे, तेह सर्वे सांभळ्युं मन-मांयरे । पछी पुत्रने श्रीकृष्ण जाणीरे, थइ दीन ने बोलियां वाणीरे।।१३।। वळी हुं आवी शरण तमारीरे, आपो शिखामण मने सारीरे । तमे कह्यं जे ज्ञान वैराग्यरे, धर्मसहित मक्ति सुभाग्यरे ॥१४॥ तेनो विधिए विभाग करीरे, कहो अतिहेते तमे हरिरे। वळी साचा साधुनुं खरूपरे, कहेज्यो कृपा करी सुखरूपरे ॥१५॥ एम प्रेमे पुछ्छं प्रेमवतिरे, त्यारे बोल्या हरि महामतिरे । नवमी निश्चि जातों जुग जामरे, बोल्या माता प्रत्ये घनश्यामरे ॥१६॥

देवा माताने ज्ञाननुं दानरे, कही हरिगीता भगवानरे। पंच वाते कर्यों ते प्रयोधरे, जेने सांभळतां वाधे मीदरे ॥१७॥ तेहना छे पंच अध्यायरे, कह्युं प्रथमना अध्याय मांयरे। खधर्मसहित भक्ति जेहरे, थाय साधुना संगथी तेहरे ॥१८॥ तेह साधुतणां जे लक्ष-णरे, कहि देखाड्यां ते ततक्षणरे। बीजे अध्याए वर्णाश्रम धर्मरे, कही देखाड्यो तेहनो मर्भरे ॥१९॥ त्रीजे अध्याये जीवात्मज्ञानरे, कह्यं माताप्रत्ये भगवानरे । वळी परमात्मा जे श्रीकृष्णरे, कह्यं तेनुं ज्ञान थइ प्रश्नरे ॥२०॥ चोथे अध्याये कहुं सुखरूपरे, वैरा-ग्यनुं खरूप अनुपरे। तेह वैराग्य जेथकी थायरे, कह्या तेहना सर्वे उपायरे।।२१।। पंचमाध्याये नव प्रकारेरे, कही भक्ति विभाग वि-चारिरे। एम पंचाध्याये उपदेशरे, आप्यो माताने हरिए अशेषरे ।।२२।। एवीरीते हरिगीता कहरे, सुणी माताए ते श्रुति दइरे । पछी पुत्रश्रत्ये बोल्यां मातरे, सुणो हरि प्रभु मारी वातरे ॥२३॥ तमे कृष्णनेविषे भगतिरे, कह्युं करवी हेतेशुं अतिरे । तेही श्रीकृष्ण छो सुत तमेरे, निश्चे करीने जांण्याछे अमेरे ॥२४॥ कृष्ण कहीए जे गोलोकधामेरे, ते तमे थयाछो हरिनामेरे । प्रभु तमारे वचने वळीरे, मारा सर्वे संशय गया टळीरे ॥२५॥ मारी वृत्ति तममां ठेराणीरे, काल मायाना भयथी मुकाणीरे। हवे जाउंछुं तमारे धामरे, एम कहीने पाम्यां विश्रामरे ॥२६॥ पछी धर्युं प्रभुजिनुं ध्यानरे, तेणेकरी भुल्यां तनभानरे। एम कर्ता अर्क उदे थयारे, त्यारे प्रभुजि नावाने गयारे ॥२७॥ पछी नित्य करमने काजरे, आव्या अभिशाळामां महाराजरे । त्यारे माताजिने तेह वाररे, देखाणा प्रभ्व इदयमोझाररे ॥२८॥ प्रसन्नवदन वर्णिने वेशरे, बांध्योछे सारो अंबोडो शिशरे। चंद्रकांतिसम ग्रुख शोमेरे, न-

यणां नवीन कमळ उमेरे ॥२९॥ घनश्याम सुंद्र छे तनरे, पहेर्धु कोपीनपर आछादनरे। खभे श्वेत वस्त्र लीधुं धारीरे, कंठे माळा बे सुंदर सारीरे ॥३०॥ पंच ऊर्घ्वपुंड्र छे पुनितरे, पहेरी श्वेत सारी उपवीतरे। एवी मृर्तिमां चित्त चोट्यंरे, पाम्यां अंतरमां सुख मोइंरे ॥३१॥ पछी दीठो पोतानो आतमारे, तेजतेज तेजनी छे सीमारे। मन प्राण गुण इंद्रिय देहरे, तेहपर प्रकाशक जेहरे ।।३२॥ एवो निज आतमा प्रकाशरे, तेनो थयो ब्रह्मशुं विलासरे। तेह ब्रह्मतेजमांहि मातरे, दीठा हरि ते कृष्ण साक्षातरे ॥३२॥ मनोहर सुंदर घनव्यामरे, छबी जोइ लाजे कोटी कामरे। को-टिकोटि इंदुनो उजासरे, अंगअंग प्रत्ये छे प्रकाशरे ॥३४॥ हेम-सम शोभा वसननीरे, कटिमेखळा छे रतननीरे। मोरमुगट जड्यो मणिएरे, मकराकृति कुंडळ गणिएरे ॥३५॥ कंठे कौस्तुभमणिनो हाररे, मोतिमाळा शोभेछे अपाररे । वेढ विंटी कडां कर उमेरे, बाजु काजु ने सांकळां शोभेरे ॥३६॥ पगे शोभे सुंदर नूपुररे, सारी कोमळावस्था किशोररे । चर्चि चंदन पहेर्याछे हाररे, तोरा गजरा शोभे अपाररे ।।३७।। पहेरी वैजयंती सुंदर माळारे, तेणे लागेछे अतिरूपाळारे । शोभे वांसळी सारी सुंदररे, एवा दीठा माये नटवररे ।।३८।। निरखी हर्ष पाम्यां महेतारीरे, पछी दीठा तेने ब्रह्मचारीरे। कृष्ण हरि हरि तेज कृष्णरे, एवं थयुं माता-जिने द्रष्णरे।।३९॥ पछी करजोडी दीन थइरे, बोल्यां कृष्णप्रत्ये माता रहरे। करी स्तुति कहेछे एम मायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४०॥ साधु देवता ने सत्यधर्मरे, तेने पाळोछो पूरण ब्रह्मरे । वळी रक्षक ब्राह्मण गायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४१॥ करवा निजजननी प्रतिपाळरे, आव्या गोलोकथकी दया-

et i

ळरे। यह पुत्र करी मारी सहायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४२॥ वळी अज्ञानरूपीजे तमरे, तेने टाळवा स्रजसमरे । धर्म एकांतिक धार्यो सदायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४३॥ वळी एक हाथे वर आपोरे, एक हाथे अभय करी स्थापोरे। पाप वन-दहन नामदायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४४॥ पापंडधर्मने खंडवा काजरे, तमे प्रकट पंडितराजरे । शरणागतना सुख सीमायरे, घन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४५॥ ज्ञान भक्ति वैराग्य मंडाररे, अहिंसादिक धर्म अपाररे । एवा बहु गुण तममांयरे, धन्यधन्य कृष्ण इरिरायरे ॥४६॥ तमे अकळरूप अवतारीरे, हमणां वर्णिवेष रह्या घारीरे । एम करेछे स्तुतिने मायरे, धन्य-धन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४७॥ एम मावेकरिने भगतिरे, करे मृ-रति आगळ्य विनतिरे । करे वंदन वारणे जायरे, धन्यधन्य कृष्ण हरिरायरे ॥४८॥ एम कहीने तज्युंछे तनरे, राखी श्रीकृ-ष्णमूर्तिमां मनरे । एम देहने तजी भगतिरे, पाम्यां दिव्यदेह प्रेमवतिरे ॥४९॥ मेली एह देह उछरंगेरे, रह्यां श्रधादि द्वादश संगेरे । दुर्वासानी शाप ते टळ्योरे, मोरे हतो तेवो देह मळयोरे ॥५०॥ संवत अढार अडताळिशेरे, कार्तिकशुदि दशमी दिवसेरे । शनिवार सुंदर सवारेरे, मेल्युं माताजिए तन त्यारेरे ॥५१॥ पछी देहने लइ संबंधिरे, अग्निदाह दीधो रुडि विधिरे। पछी रामप्रताप सुजाणरे, करी किया ते शास्त्र प्रमाणरे ॥५२॥ पछी हरिए मान्यां माता तेहरे, मोटा भाइनी वधु छे जेहरे । कर्युं भाभिजिए हेत घणुंरे, राखे बहुबहु हरितणुंरे ॥५३॥ नित्ये जमाडिने पोते जमेरे, जेजे कहे ते सर्वे खमेरे । अर्धघडि जो अळगा जायरे, वणदिठे ते व्याकुळ थायरे ॥५४॥ वळी भाइने

हेत छे भारीरे, न खाय पीये एने विसारीरे । जाय रमवा तो टळवळेरे, जोया विनातो जंप न वळेरे ॥५५॥ हरि पोते बहु निस्पृहरे, खानपानमां निह सनेहरे । शील संतोष साधुता अतिरे, जाण्युं तप त्यागनी मूरितरे ॥५६॥ वळी ताते आपी भलामण्युंरे, आनी राखज्यो खबर घणुंरे । आने नथी देहनी संभाळरे, तेनी करज्यो तमे रखवाळरे ॥५७॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीस-हजानंवस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये भक्ति-वेहत्यागनामे चोवीशमुं प्रकरणम् ॥२४॥

पूर्वछायो-सहु मळी वळी सांभळो, कहुं त्यार पछिनी रीत । धर्मदेवनी वारता, तमे सांभळज्यो दइ चित ॥१॥ सां-रूपयोगने आशरी, रह्या पोते स्वधर्मने मांय । निशदिन श्रीकृ-ष्णनुं, समरण करेछे सदाय ॥२॥ प्रश्नुत्ति मनथी परहरी, करी विषयवासना त्याज । खादरहित थोडं जमे, ब्रह्मचर्य राखवा काज ॥३॥ तपेकरी तन कृष छे, ध्यानयोगनुं छे बळ । सुत वेनी सेवा करे, निरजर जाणी निरमळ ॥४॥ चोपाई-पोताना 'सुत भगवान जेह, हूरि साथे छे बहु सनेह । तेह विना तप जोग-वति, मनने शुद्ध कर्युंछे अति ॥५॥ एवा समामां देहलक्षण, थावा लाग्यां तने ततक्षण । फरकी आंख्य भ्रुज डाबुं अंग, थयां शु-कन जाण्यां कुढंग ॥६॥ वळी खपनां लाघांछे जेह, अतिअवळां जणाणां तेह । जाणुं रवि शशि वळी उडु, पड्यां भुमिए तेपण भुंडुं ।।७।। कर्यो शास्त्रदृष्टिए विचार, आव्युं मृत्यु जाण्युं निरधार । जाण्युं थोडा दाडामांहि देह, पडशे एमां नहि संदेह ॥८॥ पछी कुष्णनां बाळचरित्र, दशममां कह्यांछे पवित्र । तेनो नित्यनित्य पाठ करे, कृष्णमृति उरमां धरे ॥९॥ विजाधकी छे बहु उदास,

11

एमकर्ता वीत्यो एक मास । प्रेमवतिनो मासिसो जेह, कर्यो शास्त्रना विधिए तेष्ट ॥१०॥ श्राद्ध सारी जमाड्या विपर, कर्यो मासिसो सारो सुंदर। पछी मासेमासे निरधार, जम्या द्विज हजारोहजार ॥११॥ एम कर्ता सात मास थया, जमी ब्राह्मण ते वेरे गया। पछी पोते पोताना संबंधि, जम्या भेळा बेसी भली विधि ॥१२॥ पछी धर्मदेवने ते दिने, आव्यो ताव पीडा थइ तने। त्यारे एम विचार्युंछे मन, आर्च्यु मृत्यु हवे थोडे दिन ॥१३॥ पछी सर्वे पदारथमांय, प्रीति रहेवा दीधी नहि क्यांय । श्रीकु-ष्णघ्याने जोड्युंछे मन, आच्यो एकादशीनो त्यां दन ॥१४॥ तेदि श्रीकृष्णनी पूजा कीधी, तेडी बाह्मणने भली विधि। एम कर्ता आथमियो दन, पडी रात्य आवियां खजन ॥१५॥ सर्व संबंधि रह्यांछे सुइ, हरि विना बेठुं नथी कोइ। एकादशीना जागरण काज, एक जागे पीते महाराज ॥१६॥ निजतातनां चांपेछे चरण, एम करेछे आपे जागरण । तात पाम्या पीडा ताव तेणे, नथी आवती निदरा नेणे ॥१७॥ पछी हरिनी इछाए करी, वृत्ति अंतर-मांहि उतरी। समाधिमां जोयुं ब्रह्मतेज, दीठो तेजसमृह सहज ॥१८॥ जोयुं षृंदावन ते मोझार, दीठा कृष्ण त्यां कर्ता विहार । सुंदर मोरली हाथे छे एवा, दीठा पूर्वे दीठा हता जेवा ॥१९॥ निर्खि श्रीकृष्ण वाध्यो आनंद, थ्या मन्न देखि सुखकंद । हुवा रोमांचित गात्र तेणे, आव्यां हर्षतणां आंसु नेणे ॥२०॥ पछी धर्में संभ्रमे करीने, कर्या दंडवत बहु हरिने। करी नमस्कार जोडी पाण, उमा आगळे धर्म सुजाण ॥२१॥ कर्ता दर्शन त्यां तत-काळ, दीठा कृष्ण पोताना ते बाळ। कृष्ण हुरि हरि तेज कृष्ण, एवं जाणीने करेछे द्रष्ण ॥२२॥ कृष्णसमदेहनो आकार, फेर नहि

PARTY IN

वेष ब्रह्मचार । पछी धर्मने सर्वे सांभन्युं, कृष्णे हरिनामे देह भप्युं ॥२३॥ मारे घेर प्रकट्या ए कृष्ण, थइ पोते भगवान प्रश्न । एम जाणी प्रेमवश थया, पछी हरिने मळवा गया।।२४।। त्यांतो अंतर्धान थयुं रूप, दीठुं समाधिमां जे अनुप । जाग्या समाधिथी धर्मदेव, त्यांतो पासे कर्ता दीठा सेव ॥२५॥ तेने मळ्या करी अतिप्रीत, तेणे थया पोते रोमांचित । आव्यां हर्षनां आंख्यमां आंसु, जाण्युं आवी मंडाणुं चोमासु।।२६।। पछी नमस्कार करी षणुं, कर्युं प्रारथना प्रश्चतणुं । कहे नरनाट्यक तमे धरी, ढांकी राख्युंछे ऐश्वर्य हरि ॥२७॥ तमे सर्वे जगतना खामी, कृष्णदेव तमे बहुनामी। मारा इष्टदेव कृष्ण जेह, पूरण पुरुषोत्तम तमे तेह ।।२८॥ करवा सत्य पोतानुं वचन, मारा पुत्र थया भगवान । तमे खतंत्र छो भगवान, पूर्वे आप्युंतुं मुजने ज्ञान ॥२९॥ साक्षा-तकार जनमसमे, मने जणाणाता प्रभु तमे। तेह ज्ञान काळवेगे करी, मने विसरी गयुंतुं हरि ॥३०॥ हवे आजथकी ज्ञान एह् । विसरी मां जाज्यो मागुं तेह । कहुं तमने सुणो दयाळ, आज्योछे समीपे देहकाळ ॥३१॥ पांच छो दिने तन छुटशे, काचो कुंभ ते निश्चे फुटशे। तेनो भय नथी मन मारे, दृढ आश्रये करी तमारे ॥३२॥ पण एक खेद मनमांय, विरह तमारो नहि सहेवाय, माटे फरी जन्म थाओ मारो, पण वियोग मां थाओ तमारो॥३३॥ एवो वर मागुं तमपास, आपो दया करी अविनाश । एवां सुणी धर्मनां वचन, बोल्या आपे पोते भगवान ॥३४॥ कह्यं तात सुणो मारी वात, मारुं खरूप जाण्युं साक्षात । थयुं जथारथ ज्ञान मारुं, एतो थयुंछे अतिशे सारुं ॥३५॥ कांइ जाणवा पामवामांइ, केडे रह्यं नथी बाकि कांइ। तमे पूरणकाम छो तात, मानो कुतारथ ७ भ०चि०

कर्हु वात ॥३६॥ माटे भौतिक देहने त्यागी, दिव्य देह पामो बडभागी। सर्वे संबंधि भेळा तमे तात, रहेशो मारीपासे साक्षात ॥३७॥ एमां संशय नथी लगार, तजी चिंता तमे आणिवार । थाओ निःसंग सर्वथी धर्म, कहुं आ समे समजो मर्म ॥३८॥ धुज परायण थाओ तात, शुद्धमने करी कहुं वात । निज आतमामां मारुं ध्यान, करो अतिप्रीते मुणवान ॥३९॥ कहुं सांभळज्यो सहु जन, कह्यां तातने एवां वचन । सुणी राजी थया धर्मदेव, कयों नमस्कार ततखेव ॥४०॥ पछी धर्म बोल्या तेहवार, तमे कर्यो मुंपर उपकार । तेना प्रतिउपकार मांइ, हाथ जोड्या विना नथी कांइ।।४१।। माटे चरणकमळ तमारे, करुं वंदन वारमवारे । एवं सुणि पोते भगवान, कर्युं तातनुं बहु सनमान ॥४२॥ पछी धर्मे नेड्या सुत दोय, रामप्रताप मोटेरा सोय । नाना सुत इच्छाराम जेह, पोतापासळे तेडाच्या तेह ॥४३॥ मृत्युसमय जाणीने धर्म, समजावेछे सुतने मर्म । हरिज्ञानरूप चिंतामणि, देवा इछ्याछे सुतने घणी ॥४४॥ जेम मृत्युटाणे कोइ जन, सोंपे पोताना पुत्रने धन । तेम हरिजिना ज्ञानरूप, इक्ट्या सुतने देवा अनूप ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह जानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये धर्मसमाधिनाम पचीक्रमुं प्रकरणम् ॥२५॥

पूर्वछायो—सर्वे मळी हवे सांभळो, अति वात कहुं अनूप । हरिउपासी जनने, छे सांभळतां सुखरूप ॥१॥ चर्णेचणें चरित्र चन्यां, कृष्णदेवनां बहुबहु । अमृतवत कथा एह, सदमति सुणशे सहु ॥२॥ वचन छे धर्मदेवनां, पुत्रप्रत्ये परमाण । अवण दइ जे सांभळे, ते पामे पद निरवाण ॥३॥ पछी धर्मे सुत तेडाविया, देवा शिखामण सुखकाज । अंतसमें निधि आपवा, इछ्या आपे

महाराज ॥४॥ चोपाइ-पछी तेडाविया सुत दोय, आबी बेठा वंदन करी सोय। ज्यारे पुत्र लाग्या आवी पाय, तेहप्रत्ये बोल्या धर्मराय ॥५॥ हेपुत्र तमे मारुं वचन, हितकारी छे मानज्यो मन । कहुं रहस्यतणी वात एह, धारी हृदयमां करी स्नेह ॥६॥ मारा वचनमांहि प्रतीत, होयतो तमे धारज्यो चित । त्यारे कर जोडी कहे बेउ भात, अमे मानशुं कहे तमे तात ॥७॥ जेजे कहेशी आ समे वचन, तेते सत्य मानवां छे मन। त्यारे धर्म कहे सुतश्रेष्ठ, राधाकुष्ण जे आपणा इष्ट ॥८॥ जेने उपासुंछुं आहुं जाम, तेज कृष्ण आ श्रीहरि नाम । मारा सुत ने तमारा भाइ, ते छे कृष्ण मानो मनमांइ।।९।। हरिरूप आ कृष्ण साक्षात, तेनी भक्ति करज्यो वे आत । रहेज्यो एना वचनमां नित्य, करज्यो सेवा करी बहु श्रीत्य ॥१०॥ वळी कृष्णनी श्रतिमा जेह, आपणे पूजिएछीए तेह । ते आ हरिनी निश्चे बुझज्यो, एम जाणी विधिए पूजज्यो ॥११॥ वळी प्रथम तमने में पुत्र, कह्या श्रीकृष्णना जे वे मंत्र । अष्टा-क्षर मंत्र पाम्यां आप, तेपण आना जाणी करो जाप ॥१२॥ अहिंसादिक पाळज्यो नियम, रहेज्यो खधर्ममां करी प्रेम । मारी एटली आगन्या धारी, भजज्यो हरि आ सुखकारी ॥१३॥ एम वर्तशो तमे सुजाण, थाशे तमारां कोटि कल्याण। एम वर्तज्यो बेउ आत, सत्य मानिलेज्यो मारी वात ॥१४॥ वळी श्रीकृष्ण जे आ अक्रुद्ध, शस्त्र लइ नहि करे युद्ध । निज्बुद्धिए करी दयाळ, कररो असुरजननो काळ ॥१५॥ कळी अधर्मथी वध्या घणा, वेश लइ रह्या मनुष्यतणा । ते पृथ्वीए लोपावी खधर्म, पापी करावेछे जे कुकर्म।।१६॥ ते अधर्म टळावशे सहु, कृष्णभक्ति करावशे बहु। करशे अलौकिक बहु काज, पछी विचारिने वर्णिराज ॥१७॥

निज आचारजपद जेह, स्थापशे तमारे कुळे तेह। एम करी मोटां-मोटां काम, पछी पधारशे निजधाम ॥१८॥ त्यारे हरिआश्रित जे जन, तेने धीरज नहि रहे मन । बहुबहु करशे ते शोक, कहेशे प्रभुजि गया गोलोक ॥१९॥ थाशे निराधार ने निराध, त्यारे उरमां विचारी दास । पछी श्रीहरिनी जे प्रतिमा, करशे पूजा भाव लावी तेमां ॥२०॥ वळी मर्यादा बांधशे तेह, तेमां जन रहेशे निमे जेह । एनी मूर्तिना जे पूजनारा, एवा मक्त जगतथी न्यारा ॥२१॥ तेह धर्म अर्थ मोक्ष काम, पामे जाणो पुरुष ने वाम । एमां नथी संदेह लगार, निश्चे मानो करी निर-थार ॥२२॥ एवी तातनी सांभळी वात, भाइ वेड थया रिळ-यात । पछी लाग्याछे हरिने पाय, अमे तमारा छुं वर्णिराय ॥२३॥ सर्वे काळे करो रक्षा मारी, त्यारे भाइप्रत्ये कहे ग्रुरारि। तमे आदरे भजो श्रीकृष्ण, तेणे करी हुं थाइश प्रष्ण ॥२४॥ आपणे ताते करी आगन्या, तमारे न करेबुं ते विना । एवी सुणी वेउ भाये वाणी, भज्या श्रीहरिने कृष्ण जाणी।।२५॥ पण प्रत्यक्ष हरिनुं घ्यान, रह्यं हरिइच्छामां निदान । केदि थाय ने केदि न थाय, एवीरीते वरते सदाय ॥२६॥ एम धर्मे तेडी सुत बेने, कर्यो उपदेश तेह तेने । एकादशीनिशि रहेतां जाम, जपे मंत्र जेमां श्रीकृष्णनाम ॥२७॥ त्यांतो सूर्यतणुं उदय थयुं, भाइ सांभ-ळतां नाथे कह्युं । हे तात जे अभीष्ट तमारे, होय ते कहो करवुं मारे ॥२८॥ त्यारे धर्म कहे सुणो हरि, पूर्णकाम छउं निश्चे-करी। पण कृष्णभक्तिनी तपति, तेतो मारे मने नथी थाति ॥२९॥ माटे देह पट्यासुधी भक्ति, करवाने इछुंछुं हुं अति। थयुं अशक्त देह आ मारुं, नथी थातुं ते पूजन बारुं ॥३०॥ माटे सात दिव-

समां सुत, अर्थसहित सुणावो भागवत । एवी सांभळी तातनी वाणी, तेने महाराजे बहु वखाणी ।।३१॥ पछी मंडप कर्यो सबुद्ध, तेड्यो ब्राह्मण वैष्णवी शुद्ध।श्रीमद्भागवतनो भणेलो,तेने तेडावियो वेर वहेलो ॥३२॥ यथाविधिए पूज्या श्रीकृष्ण, कथा प्रारंभी द्वाद-शीदिन। तेदिथिक धर्मे ते विचारी, हरिमूरतिमां वृत्तिधारी।।३३॥ जैने समीपे आवेज मरबुं, तेने घटित छे एम करबुं। कथा सांभळी पाम्या आनंद, तेणे ज्वरपीडा पडी मंद ॥३४॥ सुणे दिवसमां कथा काने, रहे रात्रिमां समाधिष्याने । एम थया छो दिन तेवार, थयुं सातमे दिने सवार ॥३५॥ तिथि चोध्य ने शुकरवारे, सुणि कथा संपूरण तारे। करी कथातणी समापति, आप्यां ब्राह्मणने दान अति।।३६॥ वस्त्र भूषण दक्षिणा दीधि, करी पूजा पछी रुडी विधि। पछी ब्राह्मण वळाच्यो घेर, वळता विप्र जम्या रुडी पेर ॥३७॥ त्यांतो दिवस चडीयो पहोर, धर्मतने ज्वरे कर्यु जोर। त्यारे धर्मे खजन तेडाव्यां, जोखनादिक जमीने आव्यां ।।३८।। बेठा समीपे आवी खजन, त्यांतो दीठुंछे शिथिल तन । विचारीने सुते वात लीधी, तेडी वित्र किया सर्वे कीघी ॥३९॥ धर्मशास्त्रे विधि कहा। जेह, घटे तेम करावियो तेह। वळी ब्राह्मण तेडी हजारुं, आप्युं काचुं अन्न घृत सारुं ॥४०॥ आपी धेनुतणां दान वळी, पछी बेठां धर्मपासे मळी। चाल्यो एकदंडो श्वास जाणी, नवराव्या तीरथने पाणी ॥४१॥ गउछाणे लीपी भूमि सार, ते उपर बेसायी ते वार । पछी पासळे हतां जे जन, करवा लाग्यां श्रीकृष्णभूजन ॥४२॥ धर्म पोतेतो हरिने जोइ, थयां स्थिर तेमां द्रग दोइ। अनन्यभाव एवा धर्मदेव, तेणे तुष्युं तन तत्रखेव ॥४३॥ एम श्रीकृष्णने परतापे, छुट्या ऋषिना

शापथी आपे। पछी भक्ति आदि दइ जेह, सर्वे सबंधी कहेवाय तेह ॥४४॥ पुत्ररूप हरिनी सेवाये, रह्या हरिसमीपे सदाये। पछी नाथ बंधवने कावी, क्रिया तातनी सर्वे करावी ॥४५॥ धर्म-शास्त्रमां जे विधि कह्यों, दाहादिक तेम पुरो थयो । सर्वे संबंधी धरनां जन, शोकातुर करेछे रुदन ॥४६॥ कर्या श्राद्ध ते तेरमा-सुधि, जमाड्या ब्राह्मण भली विधि। पछी श्रवणी थइ जाणी जन, लाव्या वस्त्र घरेणां ने धन ॥४७॥ आपी रामप्रतापने तेह, गयां सौसौने ते घेर एह । रामप्रताप ने इच्छाराम, जपे मंत्र रहे कृष्णनाम ॥४८॥ निजभाइमां श्रीकृष्णभाव, राखे सदाय करी उछाव। हरि पोते अतिनिसप्रेह, जेने कोयशुं नथी सनेह ॥४९॥ पोते रह्याता घेर जेवाते, थइ पुरी तज्युं तन ताते। वळतो कर्योछे बीजो विचार, करवा अनेक जीवउद्वार ॥५०॥ करी श्रीहरि एटलुं काम, चाल्या घेरथकी घनश्याम । संवत् अहार ओगणपचास, वर्ते वर्षमां आषाढ मास ॥५१॥ शुदी दशमी शुकरवार, तेदि प्रभुजी थया तैयार । प्रातःकाळे चाल्या नावा मिषे, त्यांथी शुद्ध उत्तरनी दिशे ॥५२॥ घरपरथी उतन्युं मन, यहार्छ लागेछे वसवुं वन । एक कोपीन ने आच्छादन, ते विना बीजं नथी वसन।।५३॥ मृगछाळा ने तुळसीमाळ, ऊर्द्धुपुंड्र चिन्ह छे विशाळ । जटामुकुट मंडित माथे, लीधो पलाशनो दंड हाथे ॥५४॥ चारे शास्त्रतणुं जेह सार, तेनुं पुस्तक खभामोझार। मुंजी मेखळा कमंडळं कर, पासे भिक्षानुं पात्र सुंदर ॥५५॥ बाळमुकुंद ने शाळग्राम, बांध्यो कंठे बटवो ते श्याम । एवाधका सरजूने तीर, आच्या उत्तरवा नदीनीर ॥५६॥ वळी जुवेछे वाणनी वाट, तर्त नदी उत्तरवा माट । विये मनुष्य आवतां भाळी, जाणे

रखे जाय पाछा वाळी ॥५७॥ एवे समे आव्योछे असुर, जाण्युं मळीयो वैरी जरुर । तेणे गडथलावी गळे झाली, नास्ती पुरमां निसर्यो चाली ॥५८॥ जळ अगाध अथाह वहे, जे पडे ते जीवतो न रहे। मोटा मघर मत्स्य छे जेमां, जळघोडा कात्रणियो तेमां ॥५९॥ जळसाप ने ऋचला कइ, मघरियो रह्यो दोहुं दइ। जेमां शुड्यु जळोयुं चितळ्युं, मेले नहि नानुं मोदुं मळ्युं ॥६०॥ एवा जळजंतु दुःखकारी, वहे नीर भयानक भारी। उठे लेथी अभरियो वळे, मांहि लोड मोटा ते उछळे ॥६१॥ चाले प्रचंड वेगमां पुर, तेमां नाखीने चाल्यो असुर। दीठा दूरलगि तो तणाणा, पछी दुष्टने नैव देखाणा।।६२॥ त्यारे पापीए एम प्रमाण्युं, मुवो वैरी निश्च मन जाण्युं। पछी दैत्य गयो निजधाम, कहे करी आव्यो मोदुं काम।। ६३।। वैरी मार्यो कही एवी वात, त्यारे असुर थया रळियात । हवे हरि पड्या छे जे पुरे, तेतो निसरिया जइ दूरे ॥६४॥ त्रण पहोर रह्या जळमांइ, बार गाउ निसर्या तणाइ। पूजा पुस्तक पासळे रह्यं, बीजं सरवे तणाइ गयुं ॥६५॥ एम निसरिया ज्यारे नाथ, चाल्या एकला नहि बीजुं साथ। लीधी काळापर्वतनी वाट, सौने विसारिने वरणिराट ।।६६।। पडी सांझ ने आथम्यो दिन, आव्युं घोर विकट त्यां वन । रह्या रात्य ते वन मोझार। नथी मनमां बीक लगार ॥६७॥ इति श्रीमदेकांति-कथर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचि-तामणिमध्ये धर्मदेहत्याग ने श्रीहरि घेरथी निसर्या ए नामे छविशमुं शकरणम् ॥२६॥

पूर्वछायो—स्यार पछिनी वारता, सुणज्यो सहु रुडी पेर । बरोबरनां बाळकां, आव्यां हरिने मळवा घेर ॥१॥ आविने कह्युं

भाइने, कयां गया हरि महाराज । शोधुंछुं अमे सवारनां, पण मळ्या नहि एह आज ॥२॥ जेजे स्वळे जातां अमे, तेती शोध्यां सरवे ठाम । क्यांये न मळ्या नीलकंठजी, घणुं गोत्या अमे घनश्याम ।।३।। त्यारे भाइ भोजाइ सांभळी, वळी पेटमां पडी फाळ। आथम्यालगी न आविया, कयां हशे हरि दयाळ॥४॥ राग वेराडी-ए पछी पडी रात्य, भ्रात जोइनेरे। हैयुं न रह्य हाथ, दीधं रोइनेरे ॥५॥ ए भोजाइ तनभान, भ्रल्यां सांभळीरे । त्रेमे थइ परवश, पड्यां भोये ढळीरे ॥६॥ ए पछी उठी एम. बोल्या वाणियेरे । खामी शोधी शहर, एने घेरे आणियेरे ॥७॥ ए ससरे भलामण्य, आपीती एहनीरे । सांझसुधी खबर, न लिधी तेहनीरे । १८१। एवं जाणी दोय, दर्दे डोलियांरे । खान पान खबर, सर्वे भ्रुलियांरे ॥९॥ ए अनुज इच्छाराम, रुवे घर-मारे। पडीया बेउ भाइ, शोकसागरमारे ॥१०॥ ए मारा भाग्यनी वात, कहीए केहनेरे । बाळपणामां माये, मुक्यो देहनेरे ॥११॥ ए जाणुं नीलकंठ, लाड लडावशेरे। तेपण गया क्यांय, कैये आवशेरे ॥१२॥ ए पछी जोवा काज, सर्वे चालियांरे। नयने वहे नीर, न रहे झालियांरे ॥१३॥ ए जोयुं सर्वे शेहेर, बजारुं शेरियुरे । गयां गली घर, फरीफरी हेरियुरे ॥१४॥ ए जोयां चौटा चोक, मंदिर माळियांरे । जोयां मेडी मोल, जरुखा जालियांरे ॥१५॥ एम अटारी अवास, अगाशी फळियांरे। गोततां गइ रात्य, नाथ न मळियारे ॥१६॥ ए जोइ सर्वे सीम, वन वाडियुरे। सर सरिता तीर, पोकारुं पाडियुरे ॥१७॥ ए वीर मारा लइ प्राण, कोने क्यां गयारे। दिधां अमने दुःख, केम नावी दयारे ॥१८॥ ए दश्ररथने दुःख, दीधुं रघुनाथजिरे ।

एम कीधुं तमे आज, नीलकंठ नाथजीरे ॥१९॥ ए अमारा जाशे प्राण, पछी आवशोरे। निंदा करशे लोक, नमेरा कहावशोरे ॥२०॥ ए एम कलपे भाइ, वीर सांभरेरे। नहि एवा नीलकंठ, विसार्या विसरेरे ॥२१॥ ए दियोरने वियोग, दुःखे जाय पडीरे। नोति करवी नाथ, अमपर आवडीरे ।।२२।। ए केम धरुं धीर, मारा मनमारे । मूर्ति चडी चित, तिपयां तनमारे ॥२३॥ ए भोजाइ मनमांइ, चिन्ह चिंतवेरे । हैये न रही धीर, दुःखी बहु हविरे ॥२४॥ ए अवल ऊर्ध्वरेख, दोय पगमारे । पडती हशे छाप, तेनी मारगमांरे ॥२५॥ ए पग अंगुठे रेख, ओपे आंगळीरे। मानुं मणी लाल, नख आवलीरे।।२६॥ ए अंकित लंकित पाय, पेनी पातिकरे । ज्यारे जोइश नाथ, त्यारे लइश किकरे ॥२७॥ ए जंघा जानुं उरु, उभय जोइनेरे । नाभि निरखी नेण, नहि पुछं कोइनेरे ।।२८।। ए पडे पेटे वळ, त्रण तेहनेरे । उर तस्त-माल, भुलुं केम एहनेरे ॥२९॥ ए चिबुक मुखमांय, दंत आव-लीरे । ओपेछे अपार, जाणुं अनार कळीरे ॥३०॥ ए नासापासे तिल, अवल गाल छेरे । ए वे एधांणे नाथ, माथे वाळ छेरे ।।३१।। ए कोमळ सुंदर नेण, छपाड्यां नहि छपेरे । जेनी अकुटि जोइ काळ, मनमांहि कंपेरे ॥३२॥ ए अवल छे एक तिल, डाबा कानमारि । सुंदर शोभे भाल, छे भीना वानमारे ॥३३॥ ए एवा मारो वीर, मां संताडज्योरे । मारो जीवन प्राण, मने देखाडज्योरे ॥३४॥ ए नावे बीजो कोइ, एनी जोड्यमारे । अण-पुछ्ये ओळखाय, लाखो कोड्यमारे ॥३५॥ ए योगी यति कोइ, रखे भोळवोरे। जाणी नानो बाळ, एने नहि ओळवोरे ॥३६॥ ए नरनारी मांय, जेने जेने मळेरे । कहेज्यो जावो घेर,

घरनां कळकळेरे ॥३७॥ ए न मळ्या नीलकंठ, थयां बहु दुःखीरे । पछी आव्यां घेर, विलखी विलखीरे ॥३८॥ ए कटि उपर कर, लीये लडथडियांरे । नयणे चाल्यां नीर, दुःखडां पडियांरे ॥३९॥ ए पछी पोत्यां घेर, गुण खटके खरारे । रांध्यां रह्यां अन्न, नावी निंदरारे ॥४०॥ ए जंखे सर्वे जन, संभारी क्यामनेरे । गया घनश्याम, घेळुं करी गामनेरे ॥४१॥ ए भाभी भवनमांय, जोइ जणशुरे । हैये न रही धीर, जोइ चितडुं खशुरे ॥४२॥ ए पडी रही पाघ, न पहेरी झुलडीरे। गया नागे पाय, न पहेरी मोजडीरे ॥४२॥ ए कांटा ने कांकर, वीर खुंचशेरे । लागशे ज्यारे भ्रख, त्यारे कोण पुछशेरे ॥४४॥ ए एम कलपे भाइ, भोजाइ मनमारे। जाणुंछुं जीवन, गयाछो वनमारे ॥४५॥ ए वरु वानर वाघ, वसे वनमांरे । तेथी विशो तात, तमे मनमांरे ॥४६॥ ए वळी रींछ भींछ, रोझ चितरारे। महिपा ने मातंग, बराह वन खरारे ॥४७॥ ए भूत प्रेत दैत्य, राक्षस राक्षसीरे । वनमां भावु भील, वसे हवशीरे ॥४८॥ ए विकट हशे वन, सघन झाडथीरे । पडती हरो झर, मोटा पहाडथीरे ॥४९॥ ए देखी एवं वन, जन जाय चळीरे । तमे बीशो बाप, घेर आवो वळीरे ॥५०॥ ए भाइ ने भोजाइ, एम कळकळेरे । वालो पोत्या वन, कोण सांभळेरे ॥५१॥ ए कुटंब ने परिवार, हार्या रोइ-नेरे। केनो न व्याप्यो मोह, मने निरमोहिनेरे ॥५२॥ जाणुं सगां सेण, नोतां खपनेरे। मेळी विसारी वात, वैराग्य उपनेरे ॥५३॥ ए लीधी विकट वाट, वाले वननीरे । निष्कुलानंदने नाथ, न सुणी खजननीरे ।।५४।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजा-

नंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिम-हाराज घेरथी निसर्या ने केड्ये विलाप कर्यो ए नामे सत्तावीशमुं प्रकरणम् ॥२७॥

पूर्वछायो-वळी सुणो सहु शुभमति, कहुं त्यार पछिनी वात । बहुनामी महाराजनी, जे रह्याछे वनमां रात्य ॥१॥ वेरण रजनी वही गइ, थयुं सुंदर सारुं सवार । उत्तर देशने उपरे, थया चालवा पोते तैयार ॥२॥ हिमाचळ जोवा हाम छे, झाझुं हेत छे जोवा झाड। घणाक दहाडा चालतां, आञ्यो प्रथम काळी पहाड ।।३।। प्रौढ पहाड झाड अति, जियां पशुनी नहि पार । मनुष्यजाति मळे नहि, पोत्या पोते वनमोझार ॥४॥ चोपाई-जोइ काळागिरिनी तळाटी, वन सघन ने घणी घाटी। जियां न पडे सर्यप्रकाश, तियां की घो पोते जइ वास ॥५॥ जियां पहाड प्रौढ प्रचंड, वृक्ष करेछे वातो ब्रह्मांड। तेना पुष्प पत्र मूळ कंद, जेह जमे ते पामे आनंद ॥६॥ अतिरसाळ कोमळ फळ, वहे नदीए निर्मळ जळ। तियां पशु ने पक्षि अपार, फरे हमेश वनमोझार ॥७॥ सिंह व्याघ्र बराह महिषु, पाडे गज गेंडा वहु चिशुं। रिंछ भींछ सामसामां हुके, मांहि केशरीसिंह ताइके ।।८।। सुरागायो ने रोझडां घणां, फरे टोळां सेमर क्याल-तणां। वरु वानर ने रुरु रमे, कस्तुरिया मृग कइ भमे।।९॥ मनुष्यमात्र मळे नहि जेमां, फरे पोते एकाएक तेमां। कठण भूमि ने कांकरा अति, करे कोमळ चरणे त्यां गति ॥१०॥ कांटा र्फगटामां नित्य फरे, भूत प्रेत दैत्यथी न डरे। आत्मदृष्टि ने धीरज अति, मोटी दशा कुशाग्र छे मति।।११॥ दर्परहित बहु दयाळ, फरे वने धर्मप्रतिपाळ। फळ फुल जे मळे ते जमे,

नहितो जळपाने दिन निगमे ।।१२।। कंद मूळ मळे कोइ दिन, धरी हरिने करे भोजन। नथी सोंणे सांभरतुं घर, वहालुं लागेछे वन सुंदर ॥१३॥ भरतजिनुं आख्यान छे मुखे, तेणे असंगी रहेछे सुखे। एवाथका जोताजोता वन, चाल्या पुलहाश्रमे जीवन ॥१४॥ तप करवा छे इञ्चक तने, त्याग वैराग्य वहालो छे मने। चालतां चालतां भ्रुत्या वाट, मेली मारग चाल्या उबाट ॥१५॥ दिश बांधिने चाल्या दयाळ, मुकी निजशरीर संभाळ । त्रण दिवस वहीगया त्यांइ, जळ फळ मळ्युं नहि कांइ ॥१६॥ चोथे दिवसे चेत न रह्यं, पृथिवीए पिंड पडी गयुं । रही मूरछा घडी वे वार, पछी उठिया प्राणआधार ॥१७॥ जोयुं पछी चारेकोरे ज्यारे, दिठी नदी दूरथकी त्यारे। पछी धीरेधीरे गया त्यांय, जइ पोते नाया नीरमांय ॥१८॥ पूजा करीने पीधुंछे नीर, प्यास गइ थइ पछी धीर । वळतो त्यां एक दीठो वड, पोते बेठा जइ तेने थड ॥१९॥ त्यांतो अस्त पामियो छे दिन, त्यारे कर्युं त्यां संध्यावंदन । कर्यो नारायणवर्मजाप, पछी समर्या हनुमान आप ॥२०॥ तारे बद्धवेषे बळवंत, आवी बेठा वडे हतुमंत । तेह निशि जन्मा-ष्टमीतणी, रात्य आगली अंधारी घणी ॥२१॥ दिसे वन भुंडुं भयंकार, पासे वाघ करेंछे हुंकार। पाडे कपि चिशुं तियां काळी, नाचे वैताळ ने त्यां वैताळी ॥२२॥ थइ रह्यो वने होहोकार, वोले टिडडां तमरां तार । गाजे मेघ ने नदी घुघवे, माथे विजळी वेरण्य खवे ॥२३॥ भृत प्रेत दनुज ने दैत्य, यक्ष राक्षस राक्षसी सहित । फरे पापी एवां आसपासे, ते देखाय दामिनी उजासे ।।२४।। तेथी हरि बीता नथी मने, अचळ छे कृष्णने भजने । त्यांतो आवियो एक भैरव, भृत पिशाच साथे छे सर्व ॥२५॥

डाकणी शाकणी पिशाचणी, भेळी भैरवी लाव्यो छे घणी। रक्त-लोचन हाथे त्रिशूळ, भुंडुं रूप छे पापनुं मूळ ॥२६॥ अतिउंचो काळो जाणुं काळ, फाटे मोढे मोटो विकराळ। तिखी डाढे चावी पशु पंखि,आव्यो मनुष्यनुं मांस भरखी ॥२७॥ मेळी दिवी हजारो हजार, आव्यो वड निकट निरधार। आवी खरसम शब्द कर्यो, आखा अंगमां रुधिरे भयों ॥२८॥ भेळी भृतनी सेना छे बहु, पशु पंखि मारी लाव्यां सहु। एह वडमां छे एनो वास, तियां जे आवे ते पामे नाश ॥२९॥ पोते गयोतो करवा आहार, आवी कर्यो शब्द भयंकार । तेणे भागिगयां वनजंत, सुणी सामा थया हनुमंत ॥३०॥ कयों कपितणो किलकार, सुणी भागियां भूत अपार। दशो दिशे शब्द रह्यो छाइ, जाग्या हरि बीना नहि कांइ ॥३१॥ त्यारे भैरव कोषियो वहु, कहे आवो भूत प्रेतो सहु । आने खाइ जाओ ततकाळ, करो बंदु ने बाळनो काळ ॥३२॥ पियो लोही राक्षसी आ वेतुं, खाओ राक्षसो मांसज एतुं। मारी त्रिश्-ळने करो नाश, एम कहीने आच्यो प्रभुपास ॥३३॥ भूत प्रेतने आगन्या आपी, मारी वानरने खाओ कापी । त्यारे गर्जना करी महावीरे, थया पर्वतसम शरीरे।।३४।। पुच्छे बांधिने पासळे लीधा, बहु पगतणा प्रहार कीधा। तेणे पापी पाम्यां दुःख अति, मृत्यु-भयथी भाग्यां कुमति ॥३५॥ पछी भैरव भूतपति जाणी, मेली माथामां मुष्टिका ताणी । तेणे धडमां गरदने गर्धे, मुखनासामां लोही निसर्यु ।।३६।। पद्यो पृथिवीए चितोपाट, जेम पडे पहाड कडेडाट। पछी भैरवे विचार्यु एह, फरी मारशे नहि रहे देह ।।३७।। हवे जेमतेम करी भागुं, एवुं पापिने वसमुं लागुं। एम कपि भैरवनी लडाइ, बेठे जोयुं बोल्या नहि कांइ ॥३८॥ आप

7

ऐश्वर्य संताडी स्याम, कराव्युं परवारुं ए काम। एम करतां रात्य वहीं गइ, जामिनी पहोर पाछली रइ।।३९।। पछी अरुणोदय वेळा थइ, नाया प्रभुजी नदीमां जइ। करी संध्या ने आसने बेठा, लाव्या हनुमान फळ मीठां ॥४०॥ जम्या चोथे दिवसे जीवन, कह्यं हनुमान धन्यधन्य। तमे बहु करी रखवाळ, नहीतो आजतो आव्योतो काळ ॥४१॥ हवे ज्यारे संभारु तमने, त्यारे सहाय करज्यो अमने। त्यारे हसी बोल्या हनुमान, धन्य समर्थ श्रीमगवान ॥४२॥ तमे काळतणा महाकाळ, तेनी हुं शुं करुं रखवाळ । पण संभारज्यो स्वामी तमे, थाशे सहाय ते करशुं अमे ।।४३।। एम कही गया हनुमान, चाल्या उत्तरमां भगवान। पछी जियांजियां रात्य रहे, थइ निःशंक निर्भय रहे ॥४४॥ फळ फुल अन पान जेह, अणइछ्ये मळे जमे तेह । एम करतां केटलाक दिन, कर्यो काळोपहाड उलंघन ॥४५॥ आव्यो आगळ श्वेतिश्च-खरि, तेने जोताजोता चाल्या हरि । तेतो अड्योछे आकाशे जइ, रूपाजेवो जन जियां नहि ॥४६॥ सप्त धातुनी खाणो छे जेमां, मोटिमोटि गुफाओ छे तेमां । देव तपखिने रहेवा जेवो, दीठो पर्वत सुंदर एवो ॥४७॥ जोइ ए अचळनी तलाटी, घणां झाड झाडी जियां घाटी । रवि शशि प्रकाश न पडे, वाट घाट जियां नव जडे ।।४८।। पूर्व पश्चिम दिश न दिसे, वन सघन वेली अतिशे । एवा विकट वनमोझार, तेमां भुला पड्या ब्रह्मचार ॥४९॥ जेने दिश विना नथी बाट, चाल्या उत्तरमां वर्णिराट । त्यांतो गंगा आवी सुखधामं, पीधुं जळ त्यां कर्यो विश्राम ॥५०॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्विते स-काचिंतामणिमध्ये हरिवनविचरणनामे अड्डाविशमुं प्रकरणम् ॥२८॥

पूर्वछायो-त्यारपछिनी जे वारता, तमे सांभळो सहु सुजाण । त्याग वैराग्य जे नाथनी, तेनां शियां करुं हुं वखाण ॥१॥ भ्रुल्येपण निजदेहने, माने नहि कोइ दिन । ईश्वरइच्छाए तन रह्यं, पण पोते न कर्युं जतन ॥२॥ पछी प्रभुजी वेठा हता, गेहेरि गंगाने तीर । त्यांथी उठी उतरिया, जे हतुं अथाह नीर ।।३।। उत्तर दिशमां चालवा, अति अंतरमां छे आनंद । झर नगने निझरणे, चाल्या घनक्याम सुखकंद ॥४॥ चोपाई-चाल्या उत्तर दिशे दयाळ, निषडक थइ ततकाळ। मोटामोटा पर्वत बे पासे, जाणुं अद्रि अङ्याछे आकाशे ॥५॥ सामसामी इकि छे शिखर्यो, बहु वियामणी धणी झर्यो। चाले निझरणे नीर घणां, थाय घोष अखंड तेतणा ॥६॥ जेम परस्पर झुक्या पहाड, तेम झकुंबी रह्यांछे झाड । नमी रह्युं कराट्युं कराळ, तेनां चाल्या जायछे दयाळ ॥७॥ सामी नदीए चाल्याछे श्याम, जे कोइ सर्वेना आतमाराम । त्यांतो आडो आव्योछे अचळ, आवे तेनी गुफामांथी जळ ॥८॥ वहे वेगमां धारा प्रचंड, थाय घोष तेहने। अखंड । त्रण्ये कोरे जावा नहि जाग्य, वळे केम जेने छे वैराग्य ॥९॥ पछी बेठा तियां घनक्याम, दिन अस्त पाम्यो एह ठाम । वळतुं जोयुं पूर्वे विलोकी, दिठो पुरुप त्यां एक अलोकी ॥१०॥ तेणे वणपुछे कही वात, कियां जावुंछे हेजगतात । पछी हिर बोलिया छे त्यांइ, मारे जावुंछे उत्तरमांइ ॥११॥ पण तमे कोण छो दयाळ, आव्या आणे समे ततकाळ । त्यारे ते कहे सुणी भगवान, हिमाचळ हुं मूरतिमान ॥१२॥ एम कहीने बतावी बाट, गरो गुफामां वरणिराट । एमां चालतां आवशे मग, एम कही न देखाणो नग ॥१३॥ पछी चाल्या एमां अविनाश, जेने नथी

देहनो अध्यास । पेठा घोर अंधारी गुफामां, आवती जळधाराने सामा ॥१४॥ चालतां चालतां वित्यो पहोर, बीजानुं केम हैंयुं रहे ठोर । मांहि मोटामोटा मणिधर, कूर्म ऋचला करी रह्या घर ।।१५॥ मीन मघयों दादुर जेमां, निःशंक मने चाल्या जाय तेमां। पछी पामिया एहनो पार, निसर्या घोर गुफाने बार ॥१६॥ त्यांतो आवियोछे एक घोह, उंडो अथाह जंतुसमोह। वित्या त्रण दिवस जो त्यांइ, फळ फुल मळ्युं नहि कांइ ॥१७॥ भ्रुख्या पडिरह्या तियां रात्य, शुं कहुं ए घीरजनी वात । सुता निःशंक थइ गइ रेण, जाग्या प्रभाते कमळनेण ॥१८॥ नाहि संध्या करी तेहवार, मळ्यां फळ फुल कर्यों आहार । पछी चाल्या त्यांथी थोडुं घणुं, मळ्युं एधांण मारगतणुं ॥१९॥ त्यारे चाल्या ए मारग लइ, तियां दिन बीती गया कइ। पछी पुलह ब्रह्माना सुतन, आच्युं आश्रम तेनुं पावन ॥२०॥ अति चमतकारी छे एइ, थाय सुखी सेवे जन जेह। तपफळ मळे तियां तरत, जियां तप कर्युं आगे भरत ॥२१॥ मुमुक्षुने छे सेववा जेवुं, ज्यां श्रीकृष्णने छे नित्य रहेयुं । चक्रनदी जियां च्यारेकोर, नायाछे तेमां धर्मकि-शोर ॥२२॥ करी किया त्यां पाठ पूजन, कर्युं मुक्तनाथतुं दर्शन। पछी भरते कर्युं तप जियां, पोतेपण बेठा जइ तियां ॥२३॥ तेनीपेट्ये आदर्युंछे तप, तेना जेवो करे नित्य जप। जाण्युं पाम्या भरत मृगदेह, माटे पोते रहेछे निस्प्रेह ।।२४।। एम संग तज्यो ज्यारे बार, पछी अंतरे कयों विचार । पुरंजननी कथा संभारी, मुक्यो बुद्धिनो संग विसारी ॥२५॥ शुद्धखरूप आत्मा कहेवाय, पोतापणुं मान्युंछे तेमाय । पछी ऊर्ध्वबाहु करी आप, करे गायत्रीनो नित्य जाप ॥२६॥ धर्युं स्र्येनारायणत्रं ध्यान,गंडकीमां

करी नित्य स्नान । मुक्तनाथसेवा मन गर्मे, फळ फुल जे मळे ते जमे ॥२७॥ तेने जोइ तपी त्यां रहेनार, विसाय पामे मन-मोझार । कहे आतो प्रह्लाद छे आपे, कांतो ध्रुने मुक्या फरी बापे ॥२८॥ कांतो खामी कार्तिक कहीए, कांतो सनतकुमार लहीए। कांतो सनकादिक सुजाण, कांतो दत्तात्रेय परमाण ॥२९॥ ऋध कांतो नारायणऋषि, तेह विना नहि आ तपसी । जोने कठण करे तप तने, तोय पडता नथी मोळा मने ॥३०॥ जुनो मुख-शोमा मुनिइंद्र, जाणुं पूरणमासिनो चंद्र। आवा ब्रह्मसृष्टिमां न भाळ्या, तेतो आज नजरे निहाळ्या ॥३१॥ मोद्धं तप मनुष्ये न थाय, ते आदर्ध छे अति उछाय । एने आगळ तप आपणुं, थयुं खेलवणुं बाळतणुं ॥३२॥ दीसे बाळ पण मोटा बहु, जोइ विसाय पाम्या छीए सहु। एम मांहोमांहि कहे मुनि, जोइ तपञा तेह प्रभुनी ॥३३॥ एवं तप जोइ बीजा जन, प्रभु दुःखे दुःखाणा छे मन । भक्ति धर्म दिव्य देह धरी, रहेछे पासे दोय हेते करी ॥३४॥ अति कृश उभा एक पगे, नथी देखी सकतां ते द्रगे। जाण्युं लडथडी पडशे नाथ, खमाखमा कही दिये हाथ ।।३५।। अतिहेत छे हरिने माथे, तेणे दंपती रहेछे साथे । देह दुर्बेळ देख्युं न जाय, रति रुधिर नहि तनमांय ॥३६॥ अंगो-अंगनी जे सर्वे जाडी, तेतो थइ रहीछे उघाडी । दिसे अस्थि आमिष न दिसे, त्वचा चोटी रहीछे तेविषे ॥३७॥ देह जोतां देह नव रहे, एम जन जोइ सहु कहे। एवे शरीरे आदर्थे तप, करेछे मुखे गायत्रीजप ॥३८॥ तेमां धरेछे सूर्यनुं ध्यान, भावे करी पोते भगवान । करेछे एवं तप हमेश्च, देवा तपस्वीने उप-देश ।।३९।। एम तप कर्यु मास चार, सही मेंघतणी घणी घार ।

करी तेमां उपासना घणी, तेतो सूर्यनारायण तणी ॥४०॥ एम फरतां एकादशी जेह, आवी प्रबोधिनी नामे तेह । त्यारे अति-आनंद वधारी, कर्युं जागरण जामिनी सारी ॥४१॥ त्यारे सूर्य-नारायणे त्यांय, दीधुं दर्शन ए निशिमांय । अतिसुंदर तन-स्रह्म, अंगोअंगे श्लोभा छे अनूप ॥४२॥ दोय कर कमळ छे हाये, नंगजिंदत भुगट माथे। कनककडां छे करमां काजु, दीव सुजाए बांध्या छे बाजु ॥४३॥ काने कुंडळ शोमेछे सार, तेज तेजतेजना अंबार । हास्ये सहित श्लोमे बदन, तेमां करुणाए मर्यो लोचन ॥४४॥ एवां सूर्वे दीधां दरशन, अति आपे थइने प्रसम । तेने देखी उठ्या हरि तरत, कर्या भक्तिए शुं दंडवत ११४५।। थया गदगद कंठे वर्णी, प्रेमे भुल्या ग्रुद्ध तनतणी। आंख्ये आंसु रोमांचित तन, जोडी हाथ करेछे स्तवन ॥४६॥ तमे तेजपुंज मारतंड, निजतेजे प्रकाशो ब्रह्मांड । धरी कश्यप घेर अवतार, एवा तमे तेने नमस्कार ॥४७॥ तमारे उगवे करी दयाञ्च, थाय सर्वे जगत सुखाळु । तेमां पापी पिडाये अपार, एवा तमे तेने नमस्कार ॥४८॥ तमारे उगवे करी कर्डु, करे काळनी गणना सह । निकर नोय कांइ निरधार, एवा तमे तेने नमस्कार ।।४९।। तमारे उगवे करी आप, सर्वे प्राणिनां बांध्यांछे माप । देव दानव ने नरनार, एवा तमे तेने नमस्कार ॥५०॥ तमे प्रश्च प्रकट छो देव, सहु जन जाणेछे ए भेव। नथी छानो त्रवाप लगार, एवा तमे तेने नमस्कार ॥५१॥ एवी स्तुति करी जोडी कर, त्यारे भावे बोल्या भासकर। मागो हरि ग्रुपासेथी आज, त्यारे हरि कहे मागुं महाराज ॥५२॥ काम क्रोध दंग लोग मोह, इंद्रि गुण आदि जे समोह । तेथी रक्षा करज्यो अमारी,

जेणे रहीए नैष्ठिक ब्रह्मचारी ॥५३॥ वळी ज्यारेज्यारे हुं संमारु, त्यारे दर्शन थाय तमारु । एज वर मागुंई तमथी, मायिक सुख मागतो नथी ॥५४॥ त्यारे सूर्य कहे सुखदाइ, तमवडे मारी छे मोटाइ। आवो तेज प्रताप छे मारो, तेतो सर्वे जाणो छे तमारो ॥५५॥ नथी समर्थ तमेथी अमे, पण थाशे जे माग्युंछे तमे। एम हरिने आपी वरदान, पोते थया पछी अंतर्धान ॥५६॥ पछी तप समापति करी, एह क्षेत्र वखाणे छे हरि। रह्या तियां द्वाद-शीनो दन, पछी कर्युछे चालवा मन ॥५७॥ एम चरित्र करे बहुनामी, जे कोइ सर्वे धामना धामी । जेनी आगन्यामां अज ईश, विष्णु विबुध शारदा शेष ॥५८॥ जेनी आगन्यामां माथा काळ, सर्वे लोक वळी लोकपाळ। जेनी आगन्यामां वायु व्योम, वळी कहीए तेज तोय भोम ॥५९॥ एह सर्वेना नियंता खामी, करे एम चरित्र बहुनामी। नरतन धर्युंछे तेमाट, एम वरतेछे वर्णिराट ।।६०।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये हरितपश्चर्यावर्णननामे **ओग**णत्रिशमुं प्रकरणम् ॥२९॥

पूर्वछायो—त्यारपछी कृष्णदेवनी, कहुं कथा अतिरसाळ। चंचळ थया चालवा, उत्तर दिशामां दयाळ॥१॥ नामी मस्तक मुक्तनाथने, पछी नाम्युं मुक्तने शिश । प्रभाते उठी पधारिया, एह आश्रमथी जगदीश ॥२॥ नग नदीयो तळाव तियां, तरी उत्तर्था तेपार । महा अरण्य ज्यां मनुष्य नहीं, चोंपे चाल्या तेह मोझार ॥२॥ हिमाचळ भणी चालिया, जोयां तेनी तळाटीनां वन । साह पहाड जोइ पृथिवी, जोयां विविधे वृक्ष सघन ॥४॥ चोपाई—शाह पहाड उंचा छे अपाररे, जाण्युं अड्या आकाश मोझाररे ।

सामसामी शाखा संकलाणीरे, एक बिजामां घणी घुंचाणीरे ॥५॥ वळी विष्येविष्ये वेली जेहरे, एक बिजामां उरझी तेहरे। वन वेली घुंचाणीछे घाटीरे, जेने जोइ छाति जाय फाटीरे ॥६॥ एवं घाडं वन छे विषमरे, जेमां न पडे रात्यदिनी गमरे । न दिसे उगी आथमे दनरे, एवं झाडे छे वन सघनरे ॥७॥ तियां फळ फुल फुल्यां कइरे, कंद मूळतणो पार नहरे। वळी सर सरिता अपाररे, अतिअमळ जळ ते मोझाररे ।।८।। वळी गेहेरी गुफा त्यां घणीरे, जाणुं बहु रह्यां मंदिर बणीरे। वळी पशु ने पक्षी त्यां घणांरे, फरे टोळां बोळां तेहतणांरे ॥९॥ सिंह शार्द्छ कावे केसरीरे, कपि कुरंग ने कइ करीरे। गेंडा रोझ ने महिषा घणारे, व्याघ्र वाराह बहु वियामणारे ॥१०॥ सुरागायो ने सेमर श्याळरे, शशा नोळा बोळ तियां व्याळरे । ज्यारे बोले परस्पर एहरे, थाये शब्द भयंकार तेहरे ॥११॥ मनुष्यजातिए त्यां न जवायरे, जो जायतो पाछुं न अवायरे । एवावनमां एकाएक फरेरे, अति घीर कोइथी न डरेरे ॥१२॥ भृत वेत दनुज ने दैत्यरे, एवां मळे वनमांहि नित्यरे । यक्ष राक्षस राक्षसी जेहरे, भैरव भैरवी वैताली तेहरे ॥१३॥ एवां अहोनिश वनमां रमेरे, तियां हरि एकाएक भमेरे। जातां जातां पडे रात्य जियांरे, सुवे निर्भय थइने तियांरे ॥१४॥ एम जोतां ते वन समग्ररे, आब्धुं एक त्यां बुटोल नग्ररे । तेनो राजा महादत्तनामरे, सर्वे पर्वति-राजानो क्यामरे ॥१५॥ तेणे दीठा त्यागी घनक्यामरे, अतिहेते राख्या निजधामरे। करे अतिप्रीत्ये नित्य सेवरे, जाणे आ छे मोटा कोइ देवरे ।।१६॥ नृपभगिनी नाम मायाजिरे, देखी हरि थयां बहु राजिरे । कहे आतो मोटा कोइ अतिरे, नोय मनुष्यनी

आवी गतिरे ॥१७॥ जोइ हरिनां मोटां आचरणरे, सेवे कल्याण सारु ते चरणरे। पछी नाथे दया करी तेनेरे, आप्युं निजज्ञान एह बेनेरे ॥१८॥ जन्ममरणतणुं जाळ काप्युंरे, सुख अंतरे अखंड आप्युरे । रह्या तियां थोडा घणा दिनरे, पछी त्यांथी चाल्याछे जीवनरे ।।१९।। तप करवा इशक छे अतिरे, बीजी वात ते नथी गमतिरे । शहेर पुर नग्र घोष गामरे, नथी गमतुं रहेवाने ए ठामरे ॥२०॥ मेडी महोल हवेली आवासरे, तेमां रहेतां रहेछे उदासरे। माटे बेगे चाल्या त्यांथी वनेरे, तैये राजी थया वहु मनेरे ॥२१॥ म्रक्तनाथथी आव्या ए अरण्यरे, तेने बीति गया काळ त्रण्यरे। चाल्या गहन वनने मांइरे, खावा फळ फुल नित्य त्यांइरे ॥२२॥ तेपण मळे के न मळे टाणेरे, तोय मन अधीर न आणेरे। एवाथका विचरेछे वनेरे, अतित्याग वैराग्य छे तनेरे ॥२३॥ जातां उत्तर दिशने मांइरे, आव्यो वड रुडो एक त्यांइरे। त्यांथी नदी तळाव निकटरे, अतिउंची विस्तारे छे वटरे ॥२४॥ तेने आसपासे गज फरेरे, बीजा शब्द भयंकार करेरे। त्यांथी उगमणुं एक तालरे, वहें उत्तरमां जळमालरे।।२५।। नड थुंबडे विद्योछे वडरे, बेठा दीठा योगी तेने थडरे । मृगाजिन पर वेठा आपरे, माथे जटा मोटी छे निष्पापरे।।२६॥ आछादने ढांकेल कौपिनरे, नथी तेपण वस्त्र नवीनरे। तेह विना नथी बीजुं पासरे, मायिक सुख्थी छे उदासरे ॥२७॥ शाळग्रामनी सेवा कीधिछेरे, गीतापाठ करवा लीधिछेरे। एवा गोपाळ योगी उदाररे, तेने नाथे कर्यो नमस्काररे ॥२८॥ त्यारे उमा थइ योगिरायरे, मळ्या हेत आणि उरमांयरे। जेम वहालां वेगळेथी आवेरे, तेने मळे जेम अतिभावेरे ॥२९॥ एम भाम्याछे अति आनंदरे, पछी मळी वेठा मुनिइंदरे। कह्युं एक

कीजानं इतांतरे, त्यारे वावियुं हेत अत्यंतरे ॥२०॥ कहे आपमे रहेशुं वे मळीरे, बोल्या प्रभुजी एवं सांभळीरे। कहां तमे गुरु ने हुं शिष्यरे, आपो रुडो मने उपदेशरे ॥३१॥ रह्या गोपाळ-योगिने पासरे, कर्यो योगशास्त्रनो अभ्यासरे। कावे जे कोइ अष्टांग योगरे, शिरूपा जेथी मटे भवरोगरे ॥३२॥ मोटी बुद्धिवाळा घन-स्यामरे, शिख्या योग अंग कहुं नामरे। यम नियम आसन जेहरे, प्राणायाम प्रत्याहार तेहरे ॥२२॥ धारणा वळी घ्यान जे कही-परे, अष्टमुं अंग समाधि लहीएरे । तेमां जुनवा मेद छे बहुरे, श्विस्या थोडे दिने हरि सहुरे ॥३४॥ एकवार सांभळेछे जेहरे, शिखी करी देखाडेछे तेहरे। वळी शिख्याछे प्रथम पेलेरे, तेपण करी देखाडेके छेलेरे ॥३५॥ बस्ति बेप्रकारनी लहीएरे, नेति **इंजरिक्र**या ते कहीएरे। नोळि शंखप्रक्षालन नामरे, मोर्ये शिख्याछे र पनज्यामरे ॥३६॥ तेतो सर्वे देखाडेछे करिरे, गुरु गोपाळ-योगिने हरिरे। जोइ गुरु करेछे विचाररे,नोय मनुष्य आ निरघाररे ।।३७।। आतो कृष्ण छे गोलोकपतिरे, आब्याछे पोते धरी म्रतिरे। वारो हुं जे अतिनिस्त्रेहरे, तेने न थाय बीजे सनेहरे ॥३८॥ माटे जाणुं हुं जरुर कृष्णरे, एवे भावे करे नित्य द्रष्णरे। एम परस्पर गुरुपणुरे, राखे एकविजा मांही घणुरे ॥३९॥ कंद मूळ फळ फुल वळीरे, जमे आनंदे एकठा मळीरे । एम वित्युं ए स्थानके वर्षरे, करी उप्र तप थया कुषरे ॥४०॥ श्रीत उष्ण ने मेघनी धाररे, सहुं सर्वे श्वरीर मोशाररे । एम तप करे वनमांयरे, अतिधीरज्य पर्वत-श्रायरे ॥४१॥ एवा योगी मोटा जे दयाळरे, बोइ पासे वस्था पश्च-पाळरे। वस्या गायोतणा घोष करीरे, त्यांतो केट्ये पहिया केसरीरे ॥४२॥ नित्य करे ते गायोनी चातरे, तेनी कही योगियागे वातरे।

*Litera*cción

कहे गोवाळ अमे अनाथरे, अमारे छे ए गायो मिराथरे ॥४३॥ तेमे वाघ करशे जो नाशरे, त्यांरे अमारे सइ गुजाक्षरे। एवी सांभकी दीनता वाणीरे, बोल्या योगी तेने दुःखी जाणीरे ॥४४॥ कहे मां बियो तमे गोवाळरे, करशे हिर सहुनी रखवाळरे। एम कही लीधो शंख हाथेरे, वजाडियोछे ते योगिनाथेरे ॥४५॥ जेटलामां संभळाणो शब्दरे, भाग्यां हिंसक मुकी ए हदरे। वळी यां वसताता जे वाघरे, तेणेपण कर्युं वन त्यागरे ॥४६॥ रह्या सुखे गायो ने गोताळरे, प्रभु गौबाह्मणप्रतिपाळरे । रह्या कांइक पोते पछी त्यांयरे, वांचे गीतानो बीजो अध्यायरे ॥४७॥ पछी आत्मानुं शुद्धस्वरूपरे, निश्चे करियुं जेवुंछे रूपरे। प्रत्याहार करी महामतिरे, इंद्रि प्राण अंतःकरणवृत्तिरे ॥४८॥ तेने आतमामां वाळी लीधिरे, पछी घीरजे धारणा किधिरे। एम केटलाक काळ गयारे, आतमानेविषे स्थिर रह्यारे ॥४९॥ ध्यानयोग तेनी जे समाधिरे, तेनी पक्कदशा अतिसाधिरे। कह्यं एम योगिने जीवनेरे, एवी कियाओं करेछे वनेरे ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रव-र्वकशीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणि-मध्ये श्रीहरिगोपाळयोगिने मळ्या ए नामे त्रिशमुं प्रकरणम् ॥ ३०॥

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वारता, सुणो सहु यह सावधान। कृपानिधि कृष्णदेवनां, कहुं चरित्र अमृतसमान।।१।। नाथ प्रतापे निजआतमा, देखे अखंडरूप अनुप। तेनी ब्रह्मसाथे करी एकता, पछी थया ब्रह्मसहरूप।।२।। एवा योगने शिखिया, गोपाळयोगी जेह। स्रेहे करी श्रीहरिए, तेने श्रिखियां, के तेह । स्रोहे करी श्रीहरिए, तेने श्रिखियां, के तेह ।।३।। तेणे करी तर्व थया, योगी ते ब्रह्मसहरूप। अति-प्रकाशक आतमा, तेह जाण्युं पोतानुं रूप।।४।। चोपाई—पछी

योगिने जणाणुं एम, आने मनुष्य कहेवाय केम। थयुं ज्ञान यथारथ ज्यारे, बोल्या गोपालयोगी तेवारे ॥५॥ नरनारायण श्राविराय, थइ ब्रह्मचारी आच्या आंय । बहु जीवनां करवा काज, आपे प्रकट थया महाराज ।।६।। एम निश्चे कर्यो निरधार, नारायण ते आ ब्रक्षचार । एवा जाणी पछी धर्यु ध्यान, चोटी श्वत्ति मूर्तिमां एकतान ॥७॥ तेणे विसरियो निजदेह, थयो मृतिमां अतिसनेह । जाण्युं आप मळ्युं सुख मोदुं, बीजुं सरवे लाग्युंछे खोदुं ॥८॥ एवा मोटा योगी जे गोपाळ, तेतो श्रुल्या देह थोडे काळ। अतिविस्मृति थइ ज्यारे, ग्रुक्यो मायिक देहने त्यारे ।।९।। पछी श्रीकृष्णदेव प्रतापे, गया गोलोकमां योगी आपे। पछी ब्रह्मचारी नीलकंठे, करी किया तेनी रुडी पेट्ये ॥१०॥ पछी मुकी पोते एइ स्थान, चाल्या पूरवमां भगवान। रही अखंड ब्रह्मखरूप, चाल्या आपे आप ब्रह्मरूप ॥११॥ नासाप्र दृष्टि करीने स्थिर, चाल्या जेम कमाननो तीर । कृष्णमांहि छे दृष्टि अखंड, नथी देखता पिंड ब्रह्मांड ॥१२॥ दिश विना नथी बीजो राह, गया त्यांथकी आदिवाराह । तियां त्रण दिवस पोते रह्मा, त्यांना वासिने दर्शन थयां ।।१३।। निरखी आनंद पामियां अति, जाणुं आञ्याशुं आ चृहस्पति । एम जनने आनंद आली, पछी त्यांथकी निसर्या चाली ॥१४॥ गया वंगदेशमां दयाळ, आव्धं सीरपुर शहर विशाळ । सिद्धवल्लभ तेनो छे राये, गया पोते त्यां अणइच्छाये ।।१५।। ते नरेशे प्रार्थना करी, राख्या चोमास त्यां भाव भरी। दीठा अतित्यागी एकाएक, राख्यो पासळे एक सेवक।।१६॥ तेनुं नाम छे गोपाळदास, करे टेल्य रहे नित्य पास। तियां बीजा मेखधारी बहु, राख्या चोमासुं करवा सहु ॥१७॥

ते तमोगुणी मंत्रअध्यासी, सर्वे श्रुद्रदेवना उपासी। तेना जुजवा जुजवा वेश, कोई मुंडेर्ल केनेक केश ॥१८॥ कोइ नागा कोइने कौपीन, कोइ न राखे वस्त्र नवीन । तेमां सोएक तपस्वी सइ, तेतो बेसे तडकामां जइ।।१९।। कोइ वर्णी ने कोइ संन्यासी, कोइ हंस ने कोइ उदासी । कोइ कहे मुखे काळिकाळी, कोइ कहेतुं बेचरावाळी ॥२०॥ कोइ भैरव भैरव रह्या भणी, कोइ भजे भवानी जोगणी। कोइ मुनि ने कोइक बोले, कोइ अहोनिश आंख्य न खोले ॥२१॥ कैक खाखी कैक हुडधंगा, एम मळ्या बहु अडबंगा। थया सिद्ध भ्रंशी बहु सेली, भंगी जंगी भेळा थया फेली ॥२२॥ तेने राजा जाणी मोटा सिद्ध, आपे रसोइयो रुडी विद्ध । आसन सारु आपी गादलां, करे सनमान राजा भलां ॥२३॥ त्यारे योगी बोले बळे बहु, करे वात सिद्धाइनी सहु । एम करतां आव्यो वरपात, वायो वायु थयो उतपात ॥२४॥ पवे विजळी वारमवार, वरषे मेघ ते मुशलधार। गरजे घोर ने कडाका करे, उपरे जळ अखंड झरे ॥२५॥ एवी अखंड मंडाणी एली, चाल्यां पृथवीए पुर रेली । तेमां पोढीरह्या पोते नाथ, तनपर चडी रेति हाथ ॥२६॥ पछी सेवक आवी सवारे, काढ्या कादव मांहिथी बारे। वर्षे मेघ मची बहु झडी, आंख्य उघडे नहि एक चडी ।।२७।। एम चारे मास बुठो धन, पहोंचे सिद्धाई केटला दन । अतिवर्षाते असोया थया, पछी रात्येरात्ये भागि गया ॥२८॥ धीरे धीरे सिद्ध गया नाशी, करवा लाग्यां लोक तेनी हांसी। कहे मोटा सिद्ध गया चाली, आजो पड्यांछे आसन खाली ।।२९॥ एक बेठा रह्या ब्रह्मचारी, तेने जोइ नम्यां नरनारी। कहे सिद्धतो आ एक खरा, बीजा दंभी भागी गया परा ॥३०॥

राजा नम्यो जाणी हरि मोटा, बीजा सर्वेने जाण्या है खोटा। बार्ध्यं प्रमुजिनुं बहु मान, बीजानुं न करे सनमान ॥३१॥ तेणे करी बळ्या बिजा बहु, आव्या मळी मारवाने सहु। नास्ती अडद मंतरी मुद्धं, पड्युं जेजे कर्युं तेते जुटुं ।।३२।। पछी सेवक हती जे पास, करतो सेवा जे गोपाळदास । तेने माथे नांखी एणे मुठ्य, पड़यो भूमिए न फेरे पुंठ्य ॥३३॥ आब्युं मोढे फीण तेने जोइ, नहि जीवे कहे सहुकोइ। पछी राजाए सिद्ध बोलावी, कह्युं आने लेवो ज उठावी ॥३४॥ त्यारे सिद्धने छे मरड भारी, कह्युं जीवाडरो ब्रह्मचारी । त्यारे राये जोड्या आवी हाथ, कह्युं आने जीवाडिये नाथ ॥३५॥ पछी हरि तेने पासे जह, उठाड्यो भीकृष्णमंत्र कइ। उठ्यो तर्त लागी नहि वार, पाम्यां विसय सह नरनार ॥३६॥ कहे आतो छे पोते श्रीकृष्ण, मोटां भाग्य थयां एनां द्रष्ण । वळी एम कहे नरनारी, कृष्ण नहि तो कृष्ण-मक्त भारी ॥३७॥ पछी मुठ्य नाखिति जे सिद्धे, पडी तेने माथे भलिविष्ये। पड्यो पडाक पृथिवीमांइ, ग्रुखमां गइ धुड्य भराइ ।।३८।। आव्युं मोढे फीण फाट्युं डाचुं, थयुं जीव्यानी कोरचुं कार्च । पछी तेणे तेना सिद्ध लावी, कर्या उपाय बहु बोलाबी ॥३९॥ तेणे फेर पड्यो नहि रति, त्यारे करी हरिने विनति । पछी नाथ तेने पास आवी, कही मंत्रने लीघो जीवावी ॥४०॥ त्यारे सिद्धराजा सहु मळी, करी स्तुति हरिजिमी वळी। जाण्या राजाए मोटां छे सरे, थयो परिवारसिंदत आझरे ॥४१॥ जेजे हतो ए सिद्धनो वर्ता, मुठ्य नाखी बाळी पेटमर्ता। तेतो नीलकंठे भांग्यो भय, थयां मनुष्य सहु निरमय ॥४२॥ लाबी वस्त्र धन आगे धरे, हरि त्यागी छे तेने शुं करे। एटलाकमां वित्र तैलंब,

आञ्यो नारी सुत लइ संग ॥४३॥ भण्यो वेद शास्त्र ने पुराण, प्रसिद्ध वित्र पृथ्वी प्रमाण । आव्यो सिद्धवलभराय पास, मने दान लेवानी छे आश्व ॥४४॥ पछी ते राजा छे धर्मवान, आप्युं भण्यो जाणि भारे दान। आप्यो हस्ति ने काळपुरुष, लेतां विप्र थयो काळो मण ॥४५॥ गौर मटिने थयोछे स्याम, त्यारे निंदा करवालाग्युं गाम। पछी हरिपासे वित्र आदी, अतिदीनताए वागी कावी ॥४६॥ हे महाराज हुंतो हतो दुःखी, दान लइ थवा गयो सुखी। त्यांतो साम्रं दुःख थयुं घणुं, हवे शुं माहात्म्य जीव्यातणुं ॥४७॥ माटे त्यागिश हुं हवे तन, थायती तमे करी जतन। प्रक्री दुःखी वित्र हरि जाणी, दयाळे दया एपर आणी ॥४८॥ कह्यो श्रीकृष्णनो मंत्र काने, मटी स्याम थयो गौर वाने। पछी ब्राह्मण लागियो पाय, कह्युं रह्यो हुं मन्यस्वामांय ॥४९॥ पछी गातो प्रस्जिना गुण, गयो देश पोताने बाह्मण । एवा प्रसुजि बहु प्रतापी, कर्यो सुखी बहु दुःख कापी ॥५०॥ त्याम वैराग्य उरमा अति, सहुपर वर्ते महामति । एम करतां गयुं चोमासुं, आव्यो कार्तिक इतर्यो आसु ॥५१॥ पछी हरिने बीजा जे सिद्ध, तेने पूज्या नृपे बहुविध। पछी चाल्याछे त्यांथकी सहु, हरिसंगे बीजा सिद्ध बहु ॥५२॥ आव्या कामाश्चिदेवीनी झाडीए, उतर्या सिद्ध सहु वाडीए। पछी रसोइ करवाकान, कर्यो मेळो सरवे समान ॥५३॥ वेने समीपे छे एक गाम, वसे द्विज त्यां पिंवैक नाम । सिद्ध-मंडळ आव्युं सांभळी, उठ्यो तर्त तियांथकी बळी ॥५४॥ कहे सिद्धाइ एनी चुंथी नाखुं, करी गुलाम ने घेर राखुं। बोज्यो माता जीए करी मेर, आव्यां वणगोत्यां पञ्ज धेर ॥५५॥ इति श्रीमदे-

कांतिकधर्मभवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्र नामे एकत्रीशमुं प्रकरणम् ॥३१॥

पूर्वछायो-शुभमति सहु सांभळो, हरिकथा कहुं अनूए । दुष्टने दुःखदायी छे, छे संतने सुखरूप ॥१॥ असुर जे अवनि रह्या, मदलाविने विजो वेश । तेने तेअर्थे श्रीहरि, फरेछे देशप्रदेश ।।२।। जे कारण अवतार छे, ते करवा थयाछे तैयार । हरिइछाए आविया, प्रभु एह वाडीमोझार ॥३॥ पिंवैक त्यां परियांणियो, करवा ते सिद्धोनी घात । निदान तेमांथी जे नियज्यं, तेनी सांभळज्यो सहु वात ।।४।। चोपाई-हतो ब्राह्मण मोरे ए ग्रुद्ध, भळी वामिए कयों अशुद्ध । कौलार्णव भणेले भूदेवे, मळी अष्ट कर्यो ततखेवे ॥५॥ थयो काळीउपासक भारी, नित्यप्रत्ये पिवे इळवारी । वळी सिद्धने जितवा काज, तेदि सज्यो सरवे समाज ।।६।। मद्य मांस खाइ थयो मत्त, तिखुं त्रिशूळ लिधुंछे इस्त । कर्यो सिंद्रलेप ललाटे, चाल्यो सिद्धने जितवामाटे ॥७॥ रजे मिंजेल कुंकुम लइ, चाल्यो कपाळे चांदलो दइ। वळी कुळवारी खुब पीधुं, बध्युं ते शरीरे छांटी लीधुं ॥८॥ चाल्यो मत्स्य चाबी मदमातो, शिशे बांध्योछे पटको रातो । माथे घणा घुंचाणा श्वाळा, ते दिसेछे भंडा भमराळा ॥९॥ सिद्ध प्रसिद्ध पोते कहे-वाय, तेने जाणे सहु देशमांय । कोइ साम्रं आविने न भाखे, भाखे जो कोइ तो मारिनाखे ॥१०॥ एवो श्वंडाए भर्यो अपार, मद्य चार वारनो पिनार । कंठे बांध्यांछे अस्थि मांजार, थयो सिद्ध जितवा तयार ॥११॥ नरनारी जे रहे गामवासे, संगे लह-आन्यो सिद्धने पासे । वळतो आविने बोलियो एम, पाखंडियो सिद्ध कावो केम ॥१२॥ सिद्धतो एक हुं छउं आज, तम जेवातो

छे मारुं खाज। मोटामोटानें में जिति लीधा, तम जेवा शिष्य कइ कीघा ॥१२॥ जेजे आविने मने नमिया, तेते सरवे जीवता रिया । जेणेजेणे बांधी मुज साथे, तेने मार्या मुकी वीर माथे ।।१४।। माटे तमे मनमां विचारी, थाओ शिष्य माळाओ उतारी। उतारो उपवीत अचिर, नहितो हमणां होकारुंछुं वीर ।।१५॥ भूत प्रेत लावी संगे घणां, खाइ जाशे मांस तमतणां । एम बोल्यो ए बळमां बहु, बिना हरि विना सिद्ध सहु ॥१६॥ कहे जेम ए कहे तेम करीए, तो आव्या मोतमांथी उगरीए । नहितो मारशे वीरने मेली, माटे मेलीए माळा संकेली ॥१७॥ मेलो जनोइपण उतारी, एम सह सिद्धे बात विचारी। त्यारे हरिए सिद्धप्रत्ये कह्यं, राखो धीरजे हाकली हैयुं ॥१८॥ करे शिष्य मोरे मर मने, पछी थावुं तमारे सहुने। तोय सिद्धे धीरज न धारी, कह्यं नाखशे तमने मारी ॥१९॥ महादुष्ट ए पापी छे बहु, एने अमे जाणुंछउं सह । एवी सिद्ध हरिनी जे वाणी, सुणि बोल्यो अतिक्रोध आणी ॥२०॥ त्यारे पिनैक कहे ब्रह्मचारी, तने देखाई सामर्थि मारी। जो तुं आ लीला वडना हाल, हमणां करुं छूं सुकवी साल ॥२१॥ एम कही नाखी मुठ ज्यारे, वड सकी गयो तेहवारे। कहे मान्य वर्णी वात मारी, नहितो आ गति जाणजे तारी ।।२२।। त्यारे हिर कहे न विधुं अमे, करबुं होँय ते करो सुखे तमे । एम कहीने वीरआसने, बेठा हरि ते अच्छ मने ॥२३॥ विजानीतो धीरज न रइ, बेठा कृष्णकेडे कंपे जइ। पछी पिबैके अडद मंतरी, नारूया हरि उपर रीश करी ॥२४॥ तेणे हरिने न थयुं कांइ, त्यारे द्विज कोप्यो मनमांइ। कहे रहेजे खबडदार थइ, आज मार्या विना मुक्कं नइ ॥२५॥ एम कही नाखी

मुठ्य एषे, फेर पड्यो नहि कांइ तेणे। त्यारे पियैके पण ए लीधुं, तमे मार्यानुं निश्चे में की धुं ॥२६॥ करनुं होय ते कर सारण, आज आञ्युं तारुं चालि मरण । नाखुंछुं काळमरवनी मुद्धं, तारा जीववानुं जाणे जुठुं ॥२७॥ त्यारे हरि कहे वेठोछुं हुंब, करबुं होय ते करने तुंज। त्यारे मुक्याछे भैरव वीर, तोय हरि बेठा रहा स्थिर ॥२८॥ आच्या भैरव ने वीर दोइ, तेती साम्रु शक्या नहि जोइ। पाछा पिबैक उपर पड्या, उलटा नाखतलने नड्या ॥२९॥ पड्यो काळीउपासक ढळी, चाल्युं मुखेथी लोही निकळी। आवी मूरछा न रही शुद्ध, पड्यो अवनीए उंद्धभुद्ध ॥३०॥ पछी मोंडेथी मुरछा वळी, उठी बोल्योछे वळमां वळी। कह्युं उभी रहेजे ब्रह्मचारी, मेळुं बहुभैरव नाखे मारी ॥३१॥ त्यारे इरि कहे मोकलो सुखे, सुक्या बडुवीरने विसुखे। तेतो बिने पाछावळिगिया, पाछा पिबैकने वळगिया ॥३२॥ नाख्यो भूमिए पाडी पडाफ, धुजी धरणिए पड्यो धडाक । वळी तडि तडफिडि उठ्यो, बोल्यो प्रभुजि उपर रुठ्यो ॥३३॥ कहे मुकुंछुं वीर महा-काळी, तने नहि मारे विजां एटाळी । एम कहीने तेने मुकियां, तेतो हरिपासे न आवियां ॥३४॥ पाछा फरिने लागिया एने, दोळी पाडियो भूमिए तेने । थयो असोयो न रही शुद्ध, तोय वामी न मुके विरुद्ध ॥३५॥ पडी पहोर उठी उभी थयो, वळी प्रश्नुजिने कहेवा रह्यो । कहेछे उभो रहेजे ब्रह्मचारी, हवे कहंछुं वले हुं तारी ॥३६॥ बहु वीरसहित हनुमंत, मुकुं तेने करे तारो अंत। एम कहिने मुक्या तेवार, आवी तेणे कर्यो नमस्कार ॥३०॥ करी प्रणिपत पाछागिया, बहु पिबैकपर कोपिया। आवी वळग्या ते विप्रने सहु, पड़्यो विप्र भुंडे हाले बहु ॥३८॥ फाट्युं मोढुं ने

वावियुं फीण, पड़ी अंगनी नाडियो क्षीण। माथुं गरिनयुं महीमांइ, गुस्तमां गइ धु<sup>ड्य</sup> भराइ ॥३९॥ पड्यो मेचक थइ रीत्व शंखी, आंख्यो उत्तरि गइछे उंडी। नाक मुखमांथी लोही वहां, पछी उठवा जेवुं न रह्यं ॥४०॥ त्यारे तेना संबंधी सहु मळी, लाग्यां पाय प्रभुजिने लळी । कहे दया करो एने इरि, इवे निह करे ए आधुं फरी ॥४१॥ मागवो हतो ते फळ मळ्युं, महा वहंकारितुं मान गळ्युं । पछी प्रभ्रुए तेने उठाड्यो, उठी विप्र प्रसु पगे पड़्यो ॥४२॥ कर्या दंडवत बहुवार, कहे आव्यो नवे अवतार । पछी सिद्ध हता तेने जोइ, आपी बाह्यणे तेने रसोइ ॥४३॥ एम करी गयो घेर ज्यारे, मन रह्यं नहि एवं त्यारे। पूज्यो काळमैरवने जइ, मद्य मांस बळिदान दइ ॥४४॥ ग्रुक्यो हरिमाथे ततकाळ, आव्यो भयंकर विकराळ । शुंडुं ग्रुख ते भर्यु रुधिरे, लांबो ने नथी वस्त्र शरीरे ॥४५॥ आंख्यो राति अतिकाळी शाही, लीधुं त्रिशूळ ते करमांही । एवे रूपे प्रश्रुपासे आव्यो, पण आविने कांइ न फान्यो ॥४६॥ छेटे बेशिरह्यो आखी रात्य, हरि हस्या जोइ परभात्य। पछी नावा चाल्या ज्यारे हरि, त्यारे एना सामी दृष्टि करी।।४७।। त्यारे थरथर ध्रुजिने भाग्यो, जड् पियैकने केडे लाग्यो । कहे आज निश्चे एने मारुं, त्यारे प्रभुजिए कर्युं वारुं ॥४८॥ कहे एनुं खाधुं सिद्धे अन्न, तेनी तारे करवी जतन । पछी ब्राह्मणपासे भैरव, जइ कही छे बात सरव ॥४९॥ आज मृत्यु करवुंतुं तारुं, पण वर्णिए कर्युंछे वारुं। एम कहीने भैरव गियो, द्विज प्रभुने पासे आवियो ॥५०॥ जाणी ईश्वर नामियुं शिश, कहे करज्यो गुना बकशिश । एम कहीने वारमवार, करे वह पोताने धिकार ॥५१॥ कहे भणिगणि भज्यां भूत, कर्या

बहु भुंडां करत्तत । कर्यां कुकर्म तजी आचार, एवो पापी हुं तेने विकार।।५२॥ एमं कही ग्रह्यं हरिचरण, प्रभु आव्यो हुं तमारे शरण । एमं कहीने थयोछे शिष्य, जाणी महाराजने जगदीश ॥५३॥ धायों प्रथमना जेवो धर्म, मुक्यां बीजां जे करवां कुकर्म । कौलार्णवादि ग्रंथ संभाळी, शास्त्रबाह्य जाणी दीधां बाळी ॥५४॥ भागवत गीता पछी भण्यो, साचो भक्त श्रीकृष्णनो बण्यो । एवं चरित्र करी द्याळ, पछी त्यांथी चाल्या ततकाळ ॥५५॥ हता सिद्ध तेने शीख दीधी, पोते वाट नवलखानी लीधी । मनुष्या-कृति सामर्थि अपार, धन्य जनमोदन भंडार ॥५६॥ इति श्रीम-देकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रनामे वित्रशमुं प्रकरणम् ॥३२॥

पूर्वछायो-बहुनामी कृष्णदेवनां, सुणो चिरत्र सर्वे रसाळ।
मक्त अभक्त कारणे, फरे हद्य बेह्ये द्याळ ॥१॥ संतने सुख आपवा, देवा दुष्टजनने दंड । तेजकारण प्रभुए, पृथिवीए धर्युंछे
पंड ॥२॥ जियांजियां जायुं घटे, तियांतियां जाय जरुर । सुख
दुःख भुख प्यासनुं, नथी गणता निकट दूर ॥३॥ पछी एकाएक
चालिया, महाविकट अद्रिमांय । नव लाख योगिने निरखवा,
चाल्या प्रभुजि बहु उल्लाय ॥४॥ चोपाइ—चाल्या पर्वत पेखवा
हिर, आव्यो अतिवसमो अदिर । जावा वाट जडे निह जियां,
जावुं जरुर पोताने तियां ॥५॥ जातां ए दिशे मनुष्ये वायुं, पण
कर्युंछे पोतानुं धार्युं । चड्या पर्वत उपर पोते, चाल्या शैलतणी
शोभा जोते ॥६॥ आवी नव लाख धुणी रूपाळी, तेतो सहजे
बळे वणवाळी । तियां कुंड दिठाछे अपार, भयों जळ अमळ तेमोझार ॥७॥ क्यांक ताढां जळ क्यांक उनां, एम बहु कुंड दीठा

नीरुनां । पछी त्यांना रहेनारा जे सिद्ध, मळ्या तेषण आवी प्रसिद्ध ।।८॥ जेनी कोइने भेट न होय, मर मोटा मुक्तयोगी होय। तेने सहुने मळ्या एकवार, कर्या परस्पर नमस्कार ॥९॥ पछी प्रेमे नेठा सहु पास, पुछचो योगिने योगअभ्यास । कह्युं तेणे तेनुं वरतंत, सुणी हरि हररूया अत्यंत ॥१०॥ कह्यं सिद्धने छो धन्य-धन्य, एम कही रह्या त्रण्य दन । आपी आनंद त्यांथी उतर्या, चाल्या हरि बहु मोदभर्या ॥११॥ नव लाख योगिने निरखी, चाल्या हिस्तिमारगे हरखी। त्यांथी शुद्ध उत्तरमां वळी, रह्यो रामकोट जळमळी ॥१२॥ तियां जावानुं कीधुंछे मन, पण त्यांतो न गया जीवन। जोता वन पर्वत विशाळ, गया बालबाकुंडे द्याळ ॥१३॥ जोयो कुंड ए जुगते करी, त्रण्य रीत्यने रह्यो ते धरी। वायु अग्नि जळ त्रण्य मळी, तेना समृह रह्या निकळी ॥१४॥ तियां रह्या पोते त्रण्य दन, पछी त्यांथी चाल्या भगवन । कर्यो अभिखुणे परवेश, चारया जोताजोता सर्वे देश ॥१५॥ गया गंगासिंधुने संगमे, नाया तेमां पोते जइ समे। रह्या त्रण्य दिवस तियां हरि, चाल्या समुद्रखाडी उतरी ॥१६॥ आव्या कपिलजिने आश्रमे, जेह जायगा सहुने गमे। च्यारे कोरे शोभे समुदर, मध्ये आश्रम अतिसुंदर ॥१७॥ सांख्यशास्त्रना आचार्य जेह, तेना गुरु कपिलजि तेह। करेले तप पोते समर्थ, सर्वे जीवना कल्याण अर्थ ।।१८।। ज्ञान वैराग्य मक्ति ने धर्म, योगसहित पांच जे पर्म। तेना स्थापनना करनार, एवा कपिलना कर्या देदार ॥१९॥ रह्या भक्तिसुत तियां मास, पछी त्यांथी चाल्या अविनाश । आल्या पुरुषोत्तम पुरिमांइ, निरूर्या जगनाथजिने त्यांइ॥२०॥ पछी रह्या पोते एह ठाम, कांयेक धार्युंछे करवुं काम । नाय समुद्रमां जड्

नित्ये, निरखी जगनाथजिने प्रीत्ये ॥२१॥ कर्यु आसन शहरथी बारुं, इंद्रधुम्न सर जोइ सारुं। तियां दिठा छे असुर घणा, वेष लइ सिद्ध साधुतणा ॥२२॥ काम क्रोध ने मत्सर अति, मांहोमांहि छे वैरनी मति । धर्मद्वेषी कपटी ने कामी, वेष शैवी वैष्णवी ने वामी ॥२३॥ मंत्र जंत्र जाणेछे अपार, तेणे वश कर्या नरनार । मुकावी वर्णाश्रमनो धर्म, कर्यो श्रष्ट बगाडी बेशर्म ॥२४॥ मोटामोटा साधु सेवाफळ, कहे देखाडे नारी आगळ । एम कहीने धर्मथी पाढे, साधुनिंदानुं पाप देखाडे ।।२५॥ एवा अधर्मे मर्या अपार, दीठा हरिए हजारी हजार। धंर्या हाथे तिखां हथियार, लीधा धोका छरा ने कटार । २६॥ खड्न खांडां रुकडी लुवाग्युं, कर कमान्युं सळके सांग्युं । बहु बंधुकुं ने कोक बाण, चक्र चिपिया लीधा छे पाण ॥२७॥ पर्शु त्रिशूळ बरछियो लइ, अंजाळ्यो आद्ये शस्त्र छे कइ। अतिश्र्रा इच्छे नित्य युध, केटलाक न राखे आयुध ॥२८॥ केटलाक त्यांभी तप करता, केटलाक सौम्य वेश धरता। कौलार्णव ग्रंथ वांचे नित्ये, पूजे शक्ति भैरवने प्रीत्ये ॥२९॥ एवा दीठाछे नाथे अपार, महापापरूप भूमिभार। तियां रह्या पोते अविनाश, करवा एवा असुरनो नाश ॥३०॥ पण पोताथी न थाये रति, कांजे राखेछे अहिंसाष्ट्रति । वेसी रह्या विचारी ए विध, त्यारे लोके जाण्याछे आ सिद्ध ॥३१॥ एम नाणीने पुछेछे जेह, कहे हिर थाय तेम तेह। त्यारे लोकने आवी प्रतीत्य, लावे अन्न वस्त्र द्रव्य नित्य ॥३२॥ तेह मांयलुं कांइ न लीये, भूत भविष्यनुं कही दीये । एम करतां ते एक दन, आव्या पासळे असुरजन ।।३३।। कहे कर अमारुं तुं काज, लाव्य जळ इंघणां समाज। देइ डारी ने बहु डराव्या, न करवानां काम कराव्यां

।।३४।। करे काम जडभरत जेम, त्यारे बीजा केम करो एम । तैये तेशुं बोल्या क्रोध करी, एनो पक्ष मेलो परहरी ॥३५॥ एम वदतां पड्यो विरोध, मांहोमांहि उपन्यो करोध। पछी तेमां पड्यां तड बेहु। निंदा परस्पर करे तेहु।।३६।। एम करतां बंधाणुं वेर, इख्या मारवा नहि जेने मेर। प्रथमतो बोली ठोली थइ पछी उट्या लठा मोटा लइ।।३७॥ लीघी लडवा पहेली लाकडी, तेतो परस्पर बहु पडी। पछी लीधां खांडां करमांय, आव्या सामसामा मळी घाय ॥३८॥ नाखे बर्छियो बहु सामसामी, चाले छवाग्युं न रहे खामी। सलके सांग्य ने सणेणे तीर, लडे मांहो-मांहे शूरवीर ॥३९॥ करे पर्श्चना बहु प्रहार, नाखे धोका छरा ने कटार। तीखां त्रिशुळ चाले त्यां घणां, करे घा चक्र चिपि-यातणा ॥४०॥ बंधुको जंजाळयो कोक बाण, नाखे मांहो-महि असुराण। एम जोरे मंडाणुं छे युध, पाम्या त्रास आकाशे विषुध ॥४१॥ वाजे ढोल नगारां जुजार्यो, चाले साम सामी तरवार्यो । तुरी रणशिंगा बोले शंख, पडे पापिनां माथां असंख्य ॥४२॥ मच्यो युद्ध रही नहि मणा, पड्यां पृथिवीए घड घणां। वेने देखी हरख्यां मांसारी, कहे खाशुं आज खुब करी ॥४३॥ भूत प्रेत ने आव्या भैरव, पिशाच यक्ष राक्षस सर्व । डाकणी साकणी ने जोगणी, आवी अखी भरवीयो धणी ॥४४॥ कंक काग ने वळी कुतरा, थइ गृध्र शियाळ ने सरा । पड्यां माथां पृथ्वीपर रडे, जाण्युं दैत्य रमिगया दडे ॥४५॥ कैकना हाथ पग कपाणा, कैक नाशी भागीने छपाणा । एम युद्ध थयुं बहुपेर, दशस-हस्र गया यमघेर ॥४६॥ एटलातो ईयांतळ रह्या, बीजा नाशी भागी पण गया । तेतो देशप्रदेशे प्रवरी, बीजा दैत्यो आगे वात

करी।।४७।। कह्युं एक हती नानी बाळ, तेने जाणता अमे दयाळ । तेने अर्थे विधयो विरोध, मुवा मांहोमांहि करी क्रोध ॥४८॥ त्यारे असुर बोलिया एम, एने ओळखीये अमे केम । त्यारे कह्युं आपीए एघाण, तेणे पडे तमने पेछाण ।।४९।। अतित्यागी तपस्ती छे तने, नथी लोभातो नारी ने धने। रहेछे समाधिमां दिनरात, वळी जाणेछे मननी वात ॥५०॥ एथी पड्यो परस्पर भेद, थयो तेणे आपणो उच्छेद । माटे मळेतो मेलवो नहि, एवी वात असु-रने कहि ॥५१॥ एवं सुणीने बोल्या असुर, हवे गोतछं एने जरूर । जो मळशे तो मारशुं छळे, एम बंधाणुं वेर सघळे ॥५२॥ एम दैत्ये कर्युं परियाण, तेने जाणेछे हरि सुजाण। कहेछे जेम थशे तेम ठीक, नथी आतमाने केनी बीक ॥५३॥ एम कही जोयुं ततखेव, दीठा दैवी संपत्तिना जीव । तेने पोते उपदेश आपी, कर्या मुखी भवदुःखकापी ॥५४॥ आ जे हरिचरित्र अनूप, कृष्ण-भक्तने छे सुखरूप। तेने कहेशे सांभळशे जेह, महाकष्टथी मुकाशे तेह ॥५५॥ आ लोकमां पण सुखी रहेशे, परलोके परममुख लेशे। पापहरणी कथा छे पवित्र, जेमां प्रकट प्रभुनां चरित्र ॥५६॥ भक्त हशे ते सुणशे भावे, अभक्तने अर्थ नहि आवे । कहेशे हेते सांभळशे कान, तेपर राजी थाशे भगवान ॥५७॥ इति श्रीमदेकांति-कधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तिं-तामणिमध्ये हरिचरित्रनामे तेत्रिशमुं प्रकरणम् ॥३३॥

पूर्वछायो-त्यारपछी जेजे कर्यु, ते सांभळो वात सरेश । एटलुं काम करी हरि, पछी चालिया दक्षिण देश ॥१॥ एकाएक अरण्यमांहि, रहेवा राजी छे मन । शहेर न इच्छे खपने, वहालुं लागेछे वसवुं वन ॥२॥ भक्तिधमीदि भेळां रहे, दिव्यदेह धरीने

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH

सोइ। तेह विना जीव जक्तना, नथी गमता बीजा कोइ।।३।। त्याग वैराण्य तनमां, तेणे मगन रहेछे मन । नावे बिजा नजरे, जे नोय हरिना जन ॥४॥ चोपाई-एवा श्रीहरि बहु निस्प्रेह, अणइच्छाए चालिया तेह । आव्या आदिक्रम तीरथ, सुख-दायी हरि समरथ ॥५॥ तेने समीपे मानसा शहेर, आच्या तियां करी हरि मेर । तेनो राजा छे अतिपवित्र, जेबो बांध्यां छे असना क्षेत्र ॥६॥ असारथी आवे जेह जन, तेने माबे करावे भोजन । तेणे दीठा एह ब्रह्मचारी, जोइ मनमां रह्यो विचारी ॥७॥ कहे आतो मोटा कोइ अति, पछी राख्या छे करी विनति । राख्या एकांते वरणिराट, अतित्यागी तपस्वी तेमाट ।।८।। एक एकांते ओटो सुंदर, रह्या तियां प्रभु तेउपर । पछी राजा राजानां सेवक, करे चाकरी करी विवेक ॥९॥ नित्यप्रत्ये करे एम सेव, जाणे महात्मा छे मोटा देव। करे सनमान जोइ त्यागी, बीजा भेखनुं पडीयुं भागी ॥१०॥ त्यारे असुर त्यांना रहेनार, कहे आतो छे आपणी मार । जेणे दैत्यसमूह मराणी, तेनुं मूळ कारण आ जाणो ॥११॥ पछी त्यांना रहेनारे असुर, कहे मारीए एने जरुर । एम पापी सहु परियाण्या, मारवा पछी पथरा आण्या ॥१२॥ जाण्या एकाएक बेठा ओटे, आच्या मार्यासारु दिहिदोटे। निशिमांहि आञ्या निशाचर, मांड्या फेंकवा बहु पथर ॥१३॥ मळी दैत्य हजारो हजार, नाख्या अश्म अतिशे अपार । सिम-सांज थकी सारी रात्य, कर्यो पाणातणी वरषात ॥१४॥ साधु खभाववाळा सुबुद्ध, निरवैर अति अविरुद्ध । बहु क्षमावाळा हरि थीर, तेने न लाग्युं कांइ शरीर ॥१५॥ ओटा आसपासे पाणा पड्या, गंज ओटाथी उंचेरा चड्या । दीठा हरि तेमांथी कुश्ल.

लिघां दैत्ये आयुध ते पळ ॥१६॥ जाण्युं जाणशे राजा जो वात, तो थाशे आमांथी उतपात ! त्यांतो राजाने खबर पडी, आब्यो प्रश्च पासळे ते घडी ॥१७॥ आव्यां लोक बीजां सह मळी, देखी पाणा विसाय पाम्यां वळी । जोइ राजा विचारेछे मने, उगार्या वर्णिने भगवने ॥१८॥ करी प्रह्लादनी जेम साय, नथी तेमां आमां फेर कांय । एम कहीने निमयो राज, अमे छीए तमारा महाराज ॥१९॥ पछी नाथे शिष्य तेने कीघो, बीजा बहुने उपदेश दिधो । पछी एम विचायों भूपाळ, पापी करत आ वर्णिनो काळ ॥२०॥ आतो आपणा छे इष्टदेव, तेनी देखी शक्या नहि सेव। एणे जरुर मार्याता आज, खोइति एणे आपणी लाज ॥२१॥ माटे खरा ए खुनी असुर, एने जोवा आपणे जरुर। पछी एने केड्ये फोज चडी, घेरी लीधा असुर ते घडी ॥२२॥ कह्युं ल्यो उभारो उडुंउडुं, एम कहीने कापियुं मुंडुं। मुवा अध-रमी त्यां अपार, बहु उतर्यो भूमिनो भार ॥२३॥ एम पोताना पापप्रतापे, थया नाश ते असुर आपे । हरि पोते अपाप अदोष, नथी राखता कोइशुं रोष ॥२४॥ एवा कृष्णदेव जे दयाळ, पछी चाल्या त्यांथी ततकाळ । आव्या वेंकटाद्रिवे जीवन, कर्या ठाको-रजिनां दर्शन ।।२५॥ पछी चाल्या त्यांथी निरमोही, शिव-कांची विष्णुकांची जोइ। त्यांथी श्रीरंगे आव्याछे इयाम, मोटा-मोटानां करवा काम ॥२६॥ कावेरी गंगामां पोते नाहि, उतिरया फुलवाडी मांहि। वाडी सुंदर शोभेछे सार, जेमां फळ फुल छे अपार ॥२७॥ रह्या पोते तियां दोय मास, करवा बहु जीवने समास । तियां वैष्णवने वात करि, एना फेल तजावियां हरि ॥२८॥ बीजा नाटक चेटकवाळा, बहु करता इता कर्म काळां 🕨

तेने जीती पोते वतकाळ, इंको बेसाड्यो पोते दयाळ ॥२९॥ चाल्या त्यांथी थइ ततपर, आव्या सेतुबंध रामेश्वर । नाया सम्रुद्रमां त्यां जीवन, कर्यो रामेश्वरनां दर्शन ॥३०॥ क्षेत्र पवित्र छे अति एइ, तपस्विने सेव्या जेवुं तेह । रह्या पोते तियां दोय मास, पछी त्यांथी चाल्या अविनाश ॥३१॥ आल्या सुंद्रराजमां क्याम, कर्यो तियां कांइक विश्राम । पछी चाल्या भूतपुरी भणी, न पुछी रीत्य ए वाटतणी ।।३२।। चाल्या दीश बांधिने दयाळ, नथी जेने शरीर संभाव । आव्युं आगळ विकट वन, अतिघोर घणुं छे सघन ॥३३॥ चालतां चालतां पडे रात्य, तियां पोढी चाले परभात्य । एम वहिगया पंच दन, मळ्युं नहि तियां जळ अन्न ॥३४॥ पडी सांझ मल्युं निह पाणी, शुको कंठ न बोलाय वाणी। थया आपे अतिशे अचेत, एम कष्ट सहे जन हेत ॥३५॥ पछी घीरेधीरे चाल्या धीर, त्यांतो आव्युंछे अरण्यमां नीर । तेमां नाया पोते घनक्याम, पछी नवराव्या शालग्राम ॥३६॥ तियां प्रबोलियाफळी चार, शेकी कर्यु नैवेद्य तेवार । तेने जग्या पोते घनक्याम, पहोर एक रह्या एह ठाम ॥३७॥ पछी चालिया त्यांथी दयाळ, थयो बीजे दि मध्याह्म काळ । तियां अरण्ये आच्यो एक कूप, भर्यो अमळ जळे अनुप ॥३८॥ तियां नाया पोते जळ काढी, पछी बेठा छांया जोइ टाढी । भरी गळी जळनी कठारी, शेर दशनी सुंदर सारी ॥३९॥ पछी शाळग्राम लइ त्यांइ, ते पधराव्या कटोरीमांइ । उपरथी की घी जळधार, थइ ठाली कठारी तेवार ॥४०॥ त्यारे पोते जोयुं विचारी, कियां वहिगयुं आटछं वारी। रखे कटोरी फुटेल होय, जोयुं त्यारे साजी दीठि सोय ॥४१॥ पछी बाण्युं एम घनश्यामे, पीधुं

जरुर ए शाळग्रामे । रखे होय हजिये पिपासा, एम कद्दीने मन-विमाशा।।४२।। पछी काढी काढीने कठारी, पायुं बहु शाळग्रामने वारी। जेमजेम जळ मांड्युं पावा, तेम मांड्युं ठाम ठालुं थावा ।।४३।। एक बेनो न रह्यो विचार, पीधुं जळ कठारी अपार । सिंचिसिंचि थाक्या घनश्याम, त्यारे तुप्त थया शाळग्राम ॥४४॥ पछी पूज्याछे चंदने करि, वळता एम विचारिया हरि । प्यास भागी पण हशे भुख, थयुं ए वातनुं अतिदुःख ॥४५॥ पोतानेतो मळ्युं नथी अन्न, तेने वीतिगया षट दन । तेनुंतो पोताने नथी कांय, अतिधीरज पर्वतप्राय ॥४६॥ तेह समे त्यां आव्यां कापडी, पुरुष नारी ते पोठीये चडी। काषांबर ते सुंदर धर्या, बेउ अतिभावमां हि भया ॥४७॥ आवीयां एह वनमोझार, देखी हरि कर्यो नमस्कार। आप्युं आसन आदरे ज्यारे, बळतां बोल्यांछे दंपती त्यारे ॥४८॥ तमे क्यांथी आव्या एकाएक, नथी संगे ते केम सेवक । तमे अख्या हशो मारा वीर, एम कही भर्या नेणे नीर ॥४९॥ पछी त्रियाने कहे महामति, आपो साथु आ भुख्याछे अति । त्यारे आप्यो साथु छणसहिते, धर्यु विष्णुने नैवेद्य प्रीते ॥५०॥ त्यारे हरि कहे पुछुंछुं अमे, आवा कोण दयाछुं छो तमे। त्यारे योगी कहे जमी लीयो, धीरा रही पछी जळ पीयो ॥५१॥ त्यारपछी हुं करीश वात, जेम छे तेम कहीश विख्यात। पछी जमी जळपान कर्यु, त्यारे योगी बोल्या मोदभर्यु ॥५२॥ सुणो वर्णी तपस्वी अक्रोध, जाण्या अमे श्रीकृष्ण छो शुद्ध। माटे नही बोछं जुठुं महामति, मने जाणो ईश आ छे सती ॥५३॥ तमने भुरुया जाणीने दयाळ, अमे आच्या आहि ततकाळ । श्रीरंगादि जेह बीजां क्षेत्र, तियां फर्रुं जाणी पवित्र ॥५४॥ तम जेवानां

दर्शन सारु, नाथ रहेवुं जाणी आंही मारुं। एवी सुणी महेशनी वात, थया हरि बहु रिळआत ॥५५॥ सदाशिव कैलास रहेनार, ते मळ्या मने साक्षातकार। लाग्या पाय पडी ओळखाण्य, त्यारे नाथे जोड्या जुग पाण्य ॥५६॥ कहे नाथ करो शिव साय, जेथकी टढ वैराग्य थाय। कहे शिवजी सांभळो वीर, थाशे टढ वैराग्य सुधीर ॥५७॥ करी प्रशंसा ते परस्पर, मल्या बेउ पछी मोदभर। वळता ईश अंतर्धान थिया, प्रश्च भूतपुरीये आविया ॥५८॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदसुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रनामे चोत्रिशमुं अकरणम्॥३४॥

पूर्वछायो-शुभमति सहु सांभळो, एम करता करता काज। त्यांथकी हरि आविया, भूतपुरीमां महाराज ॥१॥ रामानुजनी त्यां मुरति, कर्यां पोते तेनां दरशन । कांग्रेक दिन त्यां रहि, पुछयुं त्यागिप्रत्ये प्रशन ॥२॥ उत्तर तेनी दक्षणादिये, न थयो ज्यारे जरुर । त्यारे ते उठ्या मारवा, थइ कोधमां चकचुर ॥३॥ कहे आच्यो तुं काल्यनो, ते लेखे अमारी लाज। एवं प्रश्न अटपढुं, तारे पुछवानुं शुं काज ॥४॥ चोपाई —हरि निरमानी अतिनेक, बोल्या नहि ते करी विवेक। क्षमावंत अत्यंत छे शांति, क्रोध आव्यो नथी जेनी पांति ॥५॥ अतिधीर गंभीर छे घणा, शुं कहीए सदगुण तेतणा । पछी सारुं कहीने सधाव्या, त्यांथी कुमारी कन्याये आव्या ॥६॥ वळतां पद्मनाभमां पधार्या, त्यांना वासिने मोद वधार्या। पछी आव्या जनार्दने नाथ, चाले एकला न जुवे साथ ॥७॥ त्यांथी आव्याछे आदिकेशवे, तेनी वात सुणो कहुं इवे । तेने समीपे सुंदर पुर, त्यां दीठा दोसहस्र असुर ॥८॥ तेतों

हरिना छे वेरवाइ, देखी उठ्या छे मारवा धाइ । कहे आपणो मार एकलो, आव्यो हाथ हवे रखे मेलो ॥९॥ एम कहीने आव्या मारवा, त्यारे लोके मांड्युंछे वारवा । तेनी वात काने नव धरी, त्यारे राजाने खबर करी।।१०।। कहे राजा अन्याय मां करो, कांइक प्रश्नना हरथी हरो। त्यारे राजाप्रत्ये कहे असुर, एने मारशुं अमे जरुर ।।११।। तेनी करीश जो रखवाळ, तो जाणजे आव्यो तारो काळ। त्यारे राजाने चडीछे रीश, काप्यां सामटां सहुनां श्रीश ।।१२।। भ्रुवा दैत्य त्यां दोय हजार, राजाद्वारे उतार्यो ए भार । पछी आदिकेशवनां दर्शन, करी चाल्या त्यांथी भगवन ।।१३।। आच्या मळियाचळने मांइ, दिन पांच रह्या पोते त्यांइ। करी साक्षिगोपाळनां दर्शन, पछी जोयुंछे विविष्ये वन ॥१४॥ व्याले वीटाणां दीठां चंदन, तियां रह्याछे कांयेक दन। त्यांथी आव्या किस्कंघानगर, नाया त्यां प्रभुजी पंपासर ॥१५॥ त्यांथी चाल्याछे सुंदर क्याम, करवा अनेक जीवनां काम। पछी चंद्रभागा नदी नाइ, त्यांथी आव्या पंढरपुरमांइ ॥१६॥ कर्या विद्वबानां दरशन, रह्या वे मास त्यां भगवन । पछी विदुधाने पोते मळी, चाल्या बंदना करीने वळी ॥१७॥ तियां रात्यमां राक्षस आप, सुतोतो करीने मोटो ताप। तेने जगाडीने पुछी वाट, पछी चाल्या ते वरणिराट ॥१८॥ पछी आल्या दंडकारण्य हरि, तेने पोते प्रदक्षणा करी । त्यांथी आव्या पोत्ये गोदावरी, कर्ता तीर्थने पवित्र हरि।।१९।। जोइ तीर्थने तीर्थनां वासी, एम जोता आवे अविनाशी । त्यांथी आव्या नासिकमां आप, निरखी जन थयांछे निष्पाप ॥२०॥ करी त्रंदकेश्वरनां देदार, त्यांथी आञ्या तापीनदीपार । पछी यात्रा नर्मदानी करी, त्यांथी आञ्या

महीप्रत्ये हरि ॥२१॥ वळता उतर्या साभर क्याम, बहु जीवनां करवा काम । जोइ भीमनाथ भगवान, चाल्या नाथ तियांथी निदान ॥२२॥ त्यांथी गोपनाथजिमां गया, पंचतीर्थिमां कांइक रह्या । रह्या दोढ मास गुप्तप्रागे, अतिकृत्र तनमां छे त्यागे ॥२३॥ पछी चाल्या त्यांथी अविनाश, रह्या लोढवामां त्रण मास । त्यांथी आव्या मांगरोळ शहेर, बहु जीवोपर करी महेर ॥२४॥ आव्या कठण कष्टने सहि, कहेतां कष्ट ते कहेवाय नहि। वन पर्वत वसमी वाट, घणा कठण ओघट घाट ॥२५॥ वांका देश वचमां रहेनार, मळ्या दैत्य हजारो हजार । भूत प्रेत भवानी मैरव, यक्ष राक्षस राक्षसी सर्व ॥२६॥ डाकणी साकणी वैताली, मळी जोगणीयो कहि काळी। ठामोठाम मृत्युनां ठेकाणां, रह्यां घणां ने थोडां लखाणां ॥२७॥ ज्यांज्यां फर्या कर्या पोत्ये तप, मेली जीव्यानी कोरनो खप। जेजे कर्या हरिए उपाय, तेतो देहधारिए न थाय ।।२८।। तीर्थमांथी अधर्मने टाळी, आव्या पापंडिनां मान गाळी। पापी जीवने पाछेरा पाडी, साधुने सारी रीत्य देखाडी ॥२९॥ मुमुक्षुने आनंद आपता, अघ उथापी धर्म स्थापता । त्याग वैराग्य ने तपश्चर्य, नियमे सहित राखी ब्रह्मचर्य ।।३०।। एम फर्या तीरथमां आप, त्यांना वासी जोइ परताप। पड्या झांखा हरिजिने जोइ, कहेछे आतो अति-मोटा कोइ ॥३१॥ पोताने तो छे सहज खभाव, धनत्रियातणो ते अभाव। शांति तितिक्षा ने अतित्याग, निस्प्रेह अहिंसा अनुराग ॥३२॥ कौपीन विना नहि पट लेश, मृगाजिन ने जटा छे शिश। शीत उष्णमां उघाडे तन, गाममांहि न करे आसन ॥३३॥ त्रणे काळे नाय जइ नित्ये, करे श्रीकृष्णनी पूजा प्रीत्ये । पंचाध्याय

पाठनुं छे नियम, करे त्रणे काळे प्राणायाम ॥३४॥ करे आसन चोराशी आपे, ताट्यमांपण अग्नि न तापे । कृष्णमूर्तिमां ठेरावी शृत्ति, तेणे मटकुं आंख्य नथी भरति ॥३५॥ रक्त पळ नथी तने रति, केवळ रह्यां छे त्वचा ने अस्थि । आखा शरीरमांहि उघाडी, सर्वे निसरी रहीछे नाडी ॥३६॥ कांटा कांकरामां अणवाणा, चाले आपे राखे नहि मणा। नित्ये चालवुं वणपुछ्ये वाटे, वन पर्वत ओघट घाटे ॥३७॥ चाले निर्भय थइ निःशंक, नथी कोइनी पोताने शंक। वाघ व्याल वरु नित्य मळे, तेतो तेनीमेळ्ये दूर पळे।।३८।। फळ फुल जे वन मोझार, मळेतो ते जमे एकवार। नहितो रहे वायु वारि पिने, नथी जमता केने याचिने ॥३९॥ अयार्च्यु अश मळेतो जमे, नहितो न खाधे दिन निगमे। एका-दशी जन्मदिन जेइ, करे तप्तकुच्छ्र व्रत तेह ॥४०॥ पंच विष-यशुं नथी संबंध, नथी गमतो नारीनो गंध । धर्मवाळा जोइ हरि एवा, बिजापण इक्या एम रहेवा ॥४१॥ सारुं जाणि संगे रह्मा कइ, देहमानी शक्या नहि रइ । अतिकठण तप करता, आव्या देश प्रदेशे फरता ॥४२॥ वर्ष सात वेट्यो वनवास, ते उपर थयो एक मास । संवत अढार छपन कहिए, श्रावणवदि पष्टमी लहिए।।४३।। तेदि लोज पधार्या महाराज, करवा अनेक जीवनां काज । सुंदर वाच्य एक गाम बार, तियां बेठा पोते घडि चार ॥४४॥ ते गाममां उद्भव अवतार, खामी रामानंदिज उदार, तेना संतनो वसे समोह, जेने काम क्रोध नहि मोह ॥४५॥ तेमां मोटेरा छे मुक्तानंद, तेनी आज्ञामां रहे मुनिवृंद । आपे सदावत जमे संत, तियां आव्या पोते भगवंत ॥४६॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह्जानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद-मुनिविरिचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिवनविचरणनाम पांत्रिशमुं प्रकरणम् ॥३५॥

सामेरी - रुडं खामी रामानंदनं, आख्यान कहं अनूप। जे आपे उद्भवजि अवतर्या, ते थया रामानंदरूप ।।१।। जेह पुरि जेह कुळमां, जेह गोत्र जेह मात तात । जियां उद्धवजि अवतरी, काव्या रामानंद साक्षात ॥२॥ जेम मुक्युं निज गेहने, जेम शीख आपी मात तात । जेम आव्या आ देशमां, कहुं तेनी सर्वे वात ॥३॥ सहु मळी हवे सांभळो, सारी कथा छे आ अनूए । कर्डुं चरित्र कोडामणुं, रामानंदजिनुं रसरूप ॥४॥ दुर्वासाना शापथी, उद्भवे धर्यो अवतार। पूर्व दिशे अयोध्यापुरी, त्यां ब्राह्मण सुंदर सार ॥५॥ भक्त श्रीभगत्रानना, वळी सदा सत्यवादीपणुं । विद्या-वान अमान आपे, इन्द्रियजित अतिशे घणुं ॥६॥ पापरहिता पुण्यवंता, खधर्ममां सावधान । उच्च कुळे आचार अति, घणुं घणुं गुणवान ॥७॥ कश्यप गोत्र ने ऋगवेद, आश्वलायन शाखा जेहनी । अजयनामे विष्र पवित्र, सुमित पत्नी तेहनी ॥८॥ तेने ते घेर प्रकट्या, उद्धव आपे उदार । संवत सत्तर पंचाणवे, श्रावणवदी आठ्यम सवार ॥९॥ तेह समे उद्भवजिए, आपे धर्यो अवतार । जन्मसमे जयजय शब्दे, वंदेछे नर ने नार ॥१०॥ आनंद वाध्यो अतिघणी, घेरघेर मंगळ गाय । विध्येविध्ये करे वधामणी, वळी हैये हर्ष न माय ॥११॥ वळता ते विप्र तेडाविया, तेह आविया निजधाम । जन्म अक्षर जोइने, कहे नाम एतुं श्रीराम ॥१२॥ शुभ वार चोघडियुं, शुभ घडी पळ लगन । एवा समामां आवियो, पुत्र तमारो पावन ।।१३।। अति-

प्रतापी एह छे, उद्धव जेवा ए अनूप। ज्ञान गुण ने लक्षणे, थाशे तेह जेवा तदरूप ।।१४।। एवं सुणी आनंद पाम्यां, मात पिता अति मन । महामति जे उद्धवजि, ते जाण्या पोताना तन ॥१५॥ पछी आप्यां दान अतिघणां, भांगी ब्राह्मणनी भुख। अस धन अंबर अवनि, गज बाज गौ गेह सुख ॥१६॥ विष्र मन प्रसन्न थया, गया पोतपोताने गेह। मातपिता सुतमुख जोइ, हैये न माय सनेह ॥१७॥ मनोहर सुंदर मूरति, अतिरुडा दिसे राम । जेनुं मुख जोतां मयंक लाजे, लाजे छवी जोइ कोटी काम ॥१८॥ एना चरणनी श्रोभा कहुं, अति ओपे नख ने आंगळी। जाणुं जळमां कमळ केरी, फुलिरही राती कळी ॥१९॥ अंकित लंकित लाल अंधी, पेनी बनी अतिपातळी । गुरुफ जंघा जानुं जोतां, उरु उभय शोमे वळी ॥२०॥ उंडी नाभि उदर सुंदर, पडे वळ त्रण्य तियां । स्तन दोय रुदे जोइ, जनमन लोभी रियां ॥२१॥ अजब कंठ अजानबाहु, अतिसुंदर करआंगळी । अरुण नख ओपे घणा, जाणुं वणी मणिनी आवळी ॥२२॥ चिबुक मुख अधरवर, बळी रसना रस रुडे भरी । मंदमंद हास्य करतां, शोभेछे सुंदर इरि ॥२३॥ नासिका सग्य दीपकेरी, वळी लघु कपोळ कान छे । गौरमूर्ति अतिसुंदर, शोभित तन एवे वान छे ।।२४।। आंख्यमां असृत मर्यु, वळी अकुटि भारी भावनी। भाल सुंदर शोयामणु, मनोहर मूर्ति मनभावनी ॥२५॥ उर विशाळ भाल झळके, शिशे केश ते स्थाम छे । झीणा वक्र झगे घणा, वळी प्रौढ पंडे श्रीराम छे।।२६।। एवा सुतने निरखी, मात तात मगन मने। हेते लाड लडावतां, मोटा थया थोडे दने ॥२७॥ वाळचंद्रनी पेठ्ये पोते, नित्ये वधता जायछे। तेने देखी तात मातनां, नयणां

ते ताढां थायछ ।।२८।। शोमे सुंदर मुरति, नाम श्रीराम ने रूप । आठ वर्षे अजय जनके, आपी जनोइ अनूप ॥२९॥ पछी वर्णि वतने, दृढ मने करी धारियुं। गृहस्थाश्रम नथी करवी, एवं मने वळी विचारियुं ।।३०।। धर्मातमा एवा जे उद्धव, वळी नैष्ठिक वत वार्छ अति। श्रीकृष्ण मक्तिरूप कंजने, प्रकाश करवा उद्भपति ॥३१॥ निष्टत्तिवाळा संतनो, समागम गमे घणुं । तात-मुखथी करे सदा, श्रवण नित्य भागवततर्णु ॥३२॥ तेणेकरी श्रीकृष्णकेरी, मक्ति अतिभावे मने । पछी श्रीकृष्णनी प्रतिमा, निमेशुं पूजे निशदने ॥३३॥ वळी प्रत्यक्ष श्रीकृष्णनां, उर इच्छेछे दर्शनने। गृहादिक नथी गमतुं, रहेछे सदा उदासि मने ॥३४॥ पछी उद्धवे मनमाहि, एम कर्यो निरधारने । वेद भण्यानी मिष लइ, तज़ं हवे घरद्वारने ॥३५॥ त्यारे ते पुज्यं तातने, मातने जोडी पाण्य । आपो अमने आगन्या, हुं भणुं वेद पुराण ॥३६॥ करवा द्वारिकांनी जातरा, देखवा देश प्रदेश । एवी इच्छा उर-मांहि, मारे वर्तेछे अहोनिश ॥३७॥ त्यारे माताने आवी मूरछा, वळी ढळी ते कदळी जेम, श्रीराम तमे सधावतां, मारा प्राण रहेशे केम ।।३८॥ पुत्र तमे नानकडा, नव देखियुं सुख दुःख। कोण तमने जमाडशे, ज्यारे लागशे वळी भ्रुख ॥३९॥ वाटमांहि वाघ वरु, बिवरावे बहु बाळने । पुत्र मारा मंदिर बेठा, भजी श्रीगोपाळने।।४०।। श्रीराम कहे मा सांभळो, मारे जाबुंछे जरुर । राख्यो तमारो नहि रहुं, मारुं अंतर छे आतुर ॥४१॥ सारुं पुत्र सधावज्यो, वहेला आवज्यो मारा वीर । शीख देतां श्रीरामने, नयणे ते चाल्यां नीर ॥४२॥ रहो पुत्र रसोइ करुं, एकवार जमो जीवन । आ मुख मों घुं मळबुं, मारा तीरथवासी तन ना४३॥

सुत तमे सधावतां, केम जाशे मारा दन। आंघळानी आंख्य छो, मुज निरधनिनुं धन ॥४४॥ मुज रांकनुं रतन छो, जातां ते जीवडो नहि रहे। अणतोळ्युं दुःख आवतां, देहधारी केटलुंक सहे ॥४५॥ अपराध ओल्या भवना, पुत्र आज आवी नड्या । एम कही अचेत थइ, लडथडी पृथ्वी पड्यां ॥४६॥ त्यारे श्रीराम कहे मा सांभळो, दिलगीर म थाओ मनमां। करो रसोइ जमशुं, थाओं सचेत तनमां ॥४७॥ त्यारे माताने उतरी मूरछा, जागिने जोया फरी। पछी रुडी रीतछुं, राजी थइ रसोइ करी।।४८॥ जिमने जीवन चालिया, कळ पडी नहि कोइने। माततातनणो मोह, व्याप्यो नहि निरमोहिने ॥४९॥ जेम पूर्व दिशे प्रकटी, इंदु आवे वरुणी दिश। तेम ते श्रीराम आपे, कर्यो पश्चिमे परवेश ॥५०॥ तरत त्यांथी चालिया, अने जोयां तीरथ धाम । सिंधु-तीरे सोयामणुं, एक आव्युं तळाजुं गाम ॥५१॥ साधुखभावे शास्त्रवेत्ता,' नाम ते काशिराम । सत्वगुणी संत जाणी, तियां कर्यो विश्राम ॥५२॥ शास्त्र एनां सर्वे शोधी, लीधुं समझी सार। नथी अजाण्युं एहथी, कर्यो उपल्यो उपचार ॥५३॥ गोपनाथना गोपालयोगी, तेना शिष्य ते आत्मानंद । ते मळ्या रैवताचळे, जे महामोटा योगिइन्द् ॥५४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसह जानंद स्वामि शिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये उद्धवनुं जन्म कह्युं ने घरनो त्याग कर्यो ए नामे छत्रिशमुं प्रकरणम्।।३६॥

पूर्वछायो-सहु मळी वळी सांभळो, कहुं त्यारपछिनी वात। मोटा योगिने मान्या जेवा, मुनि आत्मानंद विख्यात।।१॥ आठ पहोर नव उतरे, जेने समाधि सुखरूप । ब्रह्म संगाथे एकता, कर्यो निज आत्मा अनूप।।२॥ बहु काळ तन राखवुं, वळी तरत

तजबुं देह । निजगुरु परतापथी, आपे थया खतंत्र जेह ॥३॥ पोतानी कृपाये करी, योगसिद्धिने पाम्या शिष्य । तेने समुद्दे विद्या खामी, आत्मानंद मुनीश ॥४॥ चोपाइ-तेने पासे आवी निरघाररे, कर्यो उद्धवे नमस्काररे । अतिप्रतापी प्रसिद्ध जेहरे, आत्मानंद ध्रुनि छे तेहरे ॥५॥ तेने नमी उद्भव निरधाररे, रह्या मास अद्रि मोझाररे । जोइ आत्मानंदनी रीतरे, वर्णिये विचा-रियुं चितरे ॥६॥ आने समाधिमांहि श्रीकृष्णरे, देता हुने ते निश्चे दर्शनरे। एम करी उद्भव विचाररे, कयों कर जोडी नम-स्काररे ॥७॥ करी प्रारथना बोल्या आपरे, सुंगो खामी हरण संतापरे । जेह साक्षातकार श्रीकृष्णारे, तेनां इच्छुंछुं करवा दर्श-नरे ॥८॥ तेनी सिद्धि सारु जे साधनरे, कही कृपा करी मुनि-जनरे । त्यारे बोलिया श्रीआत्मानंदरे, योग साधतां थाशे आनं-दरे ॥९॥ हशे गमतुं तमारुं जेहरे, थाशे सर्वे सिद्ध जाणी तेहरे। एवं सुणी उद्धव वचनरे, अतिहरख पामिया मनरे ॥१०॥ वळी जाणीने मोटा योगीश्वरे, योग साध्या सारु थया शिष्यरे। करी विनति लाग्याछे पायरे, त्यारे एम बोल्या गुरुरायरे ॥११॥ सुंणो वात तमे वर्णिइन्दरे, नाम तमारुं श्रीरामानंदरे । पछी योग जे अंगे सिहतरे, ते शिखव्यो करी बहु प्रीतरे ॥१२॥ सुणी वर्णी उद्भव दयाळरे, थया सिद्ध पोते थोडे काळरे। निजगुरु सम ब्रह्ममांयरे, पाम्या एकपणुं आत्मामांयरे ॥१३॥ पछी रामा-नंदस्वामी जेहरे, दिइं अखंड ब्रह्मतेज तेहरे। दिश्लोदिशमांहि एकरसरे, देखे समाधिमां अहोनिशरे ॥१४॥ पण ते तेजमां श्रीकृष्णरे, तेनुं पाम्या नहि दरशनरे । त्यारे न पाम्या संतोष-पणुरे, थया उद्धव न्याकुळ घणुरे ॥१५॥ पछी गुरु आगे जोडी

हाथरे, कहे करी कृपा तमे नाथरे । पाम्यो समाधितुं सिद्ध-पणुरे, देखुं कैवल्य ब्रह्मतेज घणुरे ॥१६॥ तेतो निराकार निर-धाररे, मारे अभीष्ट कृष्ण साकाररे । तेने नथी देखती हुं नाथरे, तेण मानुंछुं मने अनाथरे ॥१७॥ राधिकाना पति जे श्रीकृष्णरे, तेती अदिठे उद्देग मनरे । कहे गुरु सुणी ब्रह्मचाररे, कृष्ण तेजोमय निराकाररे ॥१८॥ जेजे आकार तेते मायिकरे, निराकार अखंड छे एकरे। एवी सांभळी गुरुनी वाणरे, पाम्या मूरछा वर्णी सुजाणरे ॥१९॥ पट्या भूमिए थइ निराक्षरे, घडी वे पछी आवियो श्वासरे। पछी रुदन कर्युं अपाररे, सुणी श्रीकृष्णने निराकाररे ॥२०॥ कह्यो कृष्णनो आकार खोटोरे, आव्यो तेणे अवगुण मोटोरे । पछी गुरुने त्यागी ते वाररे, त्यांथी चाल्या करी निरधाररे ॥२१॥ गुरुए वार्या पण न रह्यारे, रामानुजनी गादिए गयारे । निरख्या श्रीरंगजिने हुलासेरे, रह्या विष्णुकां-चीमांहि वासेरे ॥२२॥ करे सारण श्रीकृष्णतणुरे, वहाछं लाग्युं त्यां वसवुं घणुंरे। नाय निर्मळ जळमां नित्येरे, करे नित्यविधि पोते प्रीत्येरे ॥२३॥ निरखे श्रीरंगने भाव भरीरे, करे प्रक्रमा मंदिर फरीरे। पीर पाछलो रहे ज्यारे दनरे, सुणे गीताभाष्य दइ मनरे ॥२४॥ वांचे श्रीवैष्णव नित्ये वळीरे, थाय मगन ग्रंथ सांमळीरे। प्रवन्नामृत ग्रंथने प्रीत्येरे, सुणे एकचित्त दइ नित्येरे ॥२५॥ जेमां रामानुजनां चरित्ररे, अतिपरम पायन पवित्ररे । सुण्युं सर्वे ते श्रवण दहरे, अथइति पर्यंत ते लइरे ॥२६॥ तेमां आवी एवी वात घणीरे, मोटप्य श्रीरामानुजतणिरे। पछी मनमां कर्यो विचाररे, रामानुजतो मोटा अपाररे ॥२७॥ वळी छोटा मोटा ग्रंथ एनारे, सुण्या उद्धवे आदरे तेनारे। एम सदग्रंथ सांभळतारे, मास वेड त्यां

वर्णिने वित्यारे ॥२८॥ कर्यु मनन सुणी ए ग्रंथरे, जाण्या रामा-नुज ते समर्थरे। निश्चे भक्त मोटा ए निदानरे, एकांतिक इंदिरा समानरे ।।२९।। दिव्यदेहे रहेता हशे आंइरे, मने जणायछे मन मांइरे। एना अनन्य भक्त हशे जेहरे, तेने देखाता हशे तेहरे ।।३०॥ वळी श्रीकृष्ण जे भगवानरे, हशे एने वश ए निदानरे। एम निश्रय करी वर्णिरायरे, कर्यो एना दर्शननो उत्सायरे।।३१।। एनां जन्म ने कर्म सांमळीरे, कर्यु उद्भवे ध्यान एनुं वळीरे। एम करतां खामी चिंतवनरे, आव्यो चैत्रपंचमीनो दनरे ॥३२॥ तेज दिने सुंदर सवारेरे, थयुं स्वम अलैकिक त्यारेरे। तेमां दीठा रामानुजाचाररे, शोमे सरजसम उदाररे ॥३३॥ दीठा सुण्याता श्रवणे जेवारे, मळ्या एघाणे एवाने एवारे। पडी पिछान लाग्याछे पायरे, आव्यां हर्षनां आंसु आंख्य मांयरे ॥३४॥ कृष्ण-द्रष्णनी इच्छा छे एनेरे, एवं जाणी पछी मळ्या तेनेरे। वळता बेउ बेठा एक ठामरे, बोल्या वर्णी करी प्रणामरे ॥३५॥ बहु दिने पाम्यो दरशनरे, थयो आज हुं ते धन्यधन्यरे । सुण्या जेदिना तमारा ग्रंथरे, जाण्या तमने में समरथरे ।।३६।। वळी श्रीकृष्ण-भक्त अनन्यरे, तमे छो में जाण्युं एम मनरे। हशे वश श्रीकृष्ण तमारेरे, एमां नथी संशय कांइ मारेरे ॥३७॥ माटे कृष्णद्रष्ण तर्त थायरे, एवं बतावो साधन कांयरे। कर्ये स्तवन वळी विशे-षरे, खममांहि खामी नामी शिशरे ॥३८॥ थया राजी रामा-नुजाचाररे, सुणी वर्णि वेण वाध्यो प्याररे। जाण्युं वर्णी आ पोतानो स्थापुरे, एने श्रीवैष्णवी दीक्षा आपुरे ॥३९॥ एम श्रीरामानुज विचारीरे, कह्या मंत्र ते वे सुखकारीरे। कह्युं करज्यो तमे आनी जापरे, मळशे कृष्ण प्रसन्न थइ आपरे ॥४०॥ जपो मंत्र तमे बड

भाग्यरे, वळी धर्म ज्ञान ने वैराग्यरे। ते सहित श्रीकृष्णनी मिकरे, करो निर्विघ्न महामितरे ॥४१॥ निस्य नैमित्तिक कृष्ण सेवरे, तेनो सर्वे समझाव्यो मेवरे। कही व्रत उत्सवनी रीतरे, ते सुणि वर्णिए दइ चित्तरे ॥४२॥ कर्या पंच संस्कारे युक्त वर्णिरे, कहा मंत्र ते वे महामिणरे। करच्यो शिष्य कहेज्यो मंत्र तेनेरे, भवपार उत्तरवा एनेरे ॥४३॥ रही शकोतो रहेज्यो आहिरे, नहितो विचरज्यो भूमिमाहिरे। एम उद्धवने वरदानरे, आपी थयाछे अंतरधानरे ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्ता-मिशिष्यनिष्कुलानंदसुनिविरचिते भक्तचित्रमणिमध्ये रामानंदस्तामिने रामानुज आचार्य मळ्या ए नामे साडित्रशसुं प्रकरणम् ॥३०॥

पूर्वछायो-शुभमित सह सांभळो, एम मळ्या रामानुजाचार । जाग्या खामी खमथकी, त्यारे करवा लाग्या विचार ॥१॥ आते शुं साक्षात मळ्या, के आ शुं थयुं खपन । एम विचारतां अंतरे, दीठुं पंचसंस्कारे तन ॥२॥ ऊर्ध्व पुंडू द्वादश दीठां, दीठी कंठमां सुंदर दाम । मंत्र कह्या ते हैये रह्या, त्यारे मान्या पूरणकाम ॥३॥ अंकित अंग जोइ उमंग, अतिशे आवियो मन । प्रकट चिन्ह देखी पंडना, मान्युं मळशे निश्चे भगवन ॥४॥ खोपाइ —पछी रामानंद राजी थहरे, कयों मंत्रजाप मौन रहरे । बेठा आसन अडग वाळीरे, जोयुं अंतरमांहि निहाळिरे ॥५॥ भ्रुल्या शरीरनुं मान स्वामीरे, वृत्ति अतिशे आनंद पामीरे । दिठुं अंतरमां तेज अतिरे, ते तेजमांहि दीठी मूरतिरे ॥६॥ तेतो लक्ष्मीनारायण कृष्णरे, तेनां थयांछे पोताने द्रष्णरे । अतिसुंदर शोभाना धामरे, निरक्या प्रभुजी पूरणकामरे ॥७॥ तेने पाये लाग्या लळिलळिरे, पाष्ट्या अतिशे आनंद वळिरे । थया मगन मनमां घणारे, मळ्या

कृष्ण रही नहि मणारे ॥८॥ जेवुं हतुं मने चितवनरे, थयुं तेवानुं तेवुं दरश्चनरे । आपी एम दर्शन दानरे, पछी थयाछे अंतर-भानरे ॥९॥ जाग्या समाधिथी खामी ज्यारेरे, अतिआनंद पामिया त्यारेरे। कहे घन्यधन्य छे आ धामरे, जेमां पुरी यह मारी हामरे ॥१०॥ पछी वचन गुरुनां संभारीरे, रही धर्ममां भक्ति वधारीरे। राखी शील शांति दया दलेरे, क्रोध करे नहि कोइ पळेरे।।११॥ लोभ मोह मान नहि लेशरे, करे मुमुक्षुने उपदेशरे। कहे मंत्र दोय तेने कानरे, वळी करावे कृष्णनुं ध्यानरे ॥१२॥ थाय तेने द्रष्ण कृष्णतणुरे, तेणे मगन थया मने घणुरे। थया शिष्य आवी बहु जनरे, सहु मानी खामीनुं वचनरे ॥१३॥ जुनी जायगाना जे रहेनाररे, तेवो माने नहि नरनाररे। त्यारे श्रीवैष्ण-वने रीश चडीरे, आव्या खामिपासळ ते घडीरे ॥१४॥ कहुं आज कालनो तुं आव्योरे, आहि आविने तुं घणुं फाव्योरे। सर्व लोकने लीधा तें वाळीरे, एवा रांकशुं अमने माळीरे ॥१५॥ माटे जीव्यानो खप होय तारेरे, भागिजाज्ये समझी सवारेरे। एम कही उत्तरादि गियारे, त्यारे खामी मने विचारियारे॥१६॥ थाय उपाधि आपणे माट्यरे, त्यारे इयां रह्यामां छुं खाट्यरे। कृष्णप्रिय जेह वृंदावनरे, जाइ तियां करीए आनंदरे ॥१७॥ पछी त्यांथकी चाल्या उमंगेरे, चाल्या बीजा शिष्य बहु संगेरे। आव्या बृंदावन तेह वाररे, निररूया गोविंदजि करी प्याररे ॥१८॥ जोइ मुरति ए सुखखाणरे, जाण्युं कृष्ण प्रत्यक्षप्रमाणरे । पाम्या आश्चर्य वरणि मनरे, वाध्यो आनंद थया मगनरे ॥१९॥ पछी ते खळे वाळी आसनरे, बेठा सरल राखी खामी तनरे । गुरुए कहा। महानिधि मंत्ररे, जपे मनमांइ ते निरंत्ररे ॥२०॥ एकाम करी

मन आपरे, कयों श्रीकृष्णमंत्रनो जापरे। त्यांतो तर्त स्फुर्यु तेज अतिरे, तेमां दीठा रमाराधापतिरे ॥२१॥ मनोहर मुरति जे कृष्णरे, तेनां थयांछे पोताने द्रष्णरे। प्रुख मोरलीने भुजा दोयरे, स्यामसुंदर नटवर सोयरे ॥२२॥ शोभे भूषण ग्रुगट शिशेरे, गळे वैजयंती माळा ते दिसेरे। एवा श्रीकृष्ण खामिए निरख्यारे, निरस्ति हैयामांहि हरख्यारे ॥२३॥ दीठी म्रति तेज दिनेशरे, पछी बोल्या खामी नामी शिशरे। कहे धन्य आ रूप रसाळरे, धन्यधन्य दीनना द्याळरे ॥२४॥ करे स्ववन मने थइ दीनरे, उभा जागळे थइ आधीनरे। कहे लीधी अमारी संभाळरे, धन्यधन्य दीनना दयाळरे ॥२५॥ तमे संतनी करोछो सायरे, वळी बहु-नामी प्रहोछो बांयरे । तेने मुको नहि कोइ काळरे, धन्यधन्य दीनना दयाळरे ॥२६॥ तमे संतहिते धरीक्तनरे, कसी निजजननी जतनरे । एवा करुणानिधि कुपाळरे, धन्यधन्य दीनना दयाळरे ॥२७॥ तमे दासतणां दुःख कापीरे, करो प्रसन्न दर्शन आपीरे। निजजनना छो प्रतिपाळरे, धन्यधन्य दीनना द्याळरे ॥२८॥ तमे व्रजजन हेत काजरे, आच्या व्रजमांहि व्रजराजरे। कर्यो सुखियां गोपी गोवाळरे, धन्यधन्य दीनना दयाळरे ॥२९॥ एम कर्युं खामिए स्तवनरे, सुणी प्रश्वजी थया प्रसन्नरे । मागो रामानंद मुजपासरे, जेह मागो ते पुरुं हुं आञ्चरे ॥३०॥ त्यारे स्वामी कहे द्रष्ण तमारुरे, थाय मने हुं ज्यारे संभारुरे। वळी पूजानी सामग्री लीजेरे, एदी कृपा अमपर कीजेरे ॥३१॥ वळी जेम राखो तेम रहुंरे, हुंतो तमारे आशरे छउंरे। कहे कृष्ण उद्भव छो तमेरे, इयां शापे आच्या तमे अमेरे ॥३२॥ माटे काढो संप्रदाय नवीरे, आजधकी कहुंछुं उद्धवीरे। एम कही अंतर्धान

थयारे, खामी जागी बहु हरिखयारे ॥३३॥ पुरुषोत्तम कुष्णने पामीरे, थया पूरणकाम ते खामीरे । पछी ज्यारे जरे च्यानरे, त्यारे देखे कृष्ण भगवानरे ॥३४॥ वळी पूजतां प्रेमे प्रति-मारे, देखे श्रीकृष्णने नित्य वेमारे । पूजा हार आपे जेजे प्रीत्येरे, लीये प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण नित्येरे ॥३५॥ तेणे परमसुख शांति पामीरे, थया मगन मनमां स्वामीरे। रह्या मास एक वृंदावनरे, थया शिष्य त्यां मुमुक्षु जनरे ॥३६॥ पछी गुरुनी आज्ञा संमारीरे, कृष्ण-मक्ति भूमिए वधारीरे। त्यांथी बहु शिष्य लइ संगेरे, गया प्रया-गमां उछरंगेरे ॥३७॥ तियांपण कीधा शिष्य बहुरे, जित्या आपे मतवादी सहरे। रह्या केटलाक माम तियारे, मक्ति धर्म दोय शिष्य थयारे ॥३८॥ एतो कथा में कहीछे आगेरे, तेतो सुणी सौवे अनुरागेरे। पछी जक्तगुरु खामी जेहरे, फर्या तीरथ सरवे वेहरे ॥३९॥ त्यांथी आव्या ए रेवताचळेरे, कृष्णे कीडा करीछे जे स्थळेरे । वर्ष एक रह्या एणे ठामरे, कर्यों मुम्रुश्च जीवनां कामरे ॥४०॥ त्यागी गृही बळी नरनाररे, ते खामिए ओधार्या अपाररे । थया शिष्य ते सरवे आवीरे, तेने कृष्णनी भक्ति करावीरे ॥४१॥ संप्रदायना मारगमांइरे, रह्योतो जे अधर्म छपा-इरे। कापी जड ते अधर्मतणीरे, कृष्णभक्ति विस्तारी छे घणीरे ॥४२॥ एवा रामानंदस्वामी जेहरे, छेतो रामानुजजिना तेहरे। पण रामानुजना आश्रितरे, जाणी अवर न करी प्रीवरे ॥४३॥ कहे रामानुजना आ नहिरे, एम मनमां मानियुं सहिरे। एवं स्वामिनं चरित्र जेहरे, कह्यं पवित्र सहुने तेहरे ॥४४॥ ते खामिना साधु जे पंचासरे, निवृत्तिवाळा जगथी उदासरे। रामानंदजिनी आग-न्यायेरे, रह्या हता गाम लोजमांयेरे ॥४५॥ तेमां सुखानंद एक

संतरे, आच्या नावा वाच्ये गुणवंतरे । निरस्या नीलकंठने त्यांहरे, थया मगन अति मनमांहरे ॥४६॥ ते देखतां द्रग ठयां दोयरे, कहे आवा में न दीठा कोहरे । पछी नम्या ते नम्रता आणीरे, अतिदीनताए बोल्या वाणीरे ॥४७॥ घन्य वर्णी कियांथी आवियारे, हवे जावानुं धार्युंछे कियारे । मोटां भाग्य थयां दरशनरे, तमने निरखी हुं थयो पावनरे ॥४८॥ तम जेवानां दर्शन क्यांथीरे, थोडे पुण्ये करी थातां नथीरे । कोह पूरव जन्मने पुण्येरे, थयां दर्शन तमारां मनेरे ॥४९॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिकते भ-कार्वतामणिमध्ये रामानंदमुनिनुं आख्यान कह्यं ए नामे आहित्रशासुं प्रकरणम् ॥३८॥

पूर्वछायो-अतिउत्तम आख्याननी, कही वणपुछि में वात । हवे श्रीहरिनी कथा, कहुं सुणी सहु साक्षात ॥१॥ महा मनोहर मुरति, शोमे वरणिने वेष । शिखा खत्र सीयामणुं, श्रिक्षे ते संदर केश ॥२॥ नासाप्रे ष्टित्त रहे, अने दृष्टि ते अनिमिश्च । एवा थका त्यां आविया, बहुनामी कृष्ण दिनेश ॥३॥ आवी नाहि ए वाव्यमां, पछी बेठा कांठे नाथ । एवे समे सुखानंद आव्या, निरस्ती थया सनाथ ॥४॥ चोपाइ-निरस्ती नाथने पाम्या आश्चर्य, अंगे त्याग अति तपश्चर्य। शील संतोष ने श्वमा अति, जाणुं घरी वैराग्ये मूरति ॥५॥ आवा साधु में न दीठा क्यांद्र, जागे माग्य रहे ए जो आंइ। पछी प्रीत्येश्चं पुछवा लाग्या, कोण गुरु क्यां तमारी जाग्या ॥६॥ कहे हिर सुणो साधु वात, निह गुरु खजन मात तात । जेथी छुटिए सर्वे संताप, तेज गुरु खजन माई वाप ॥७॥ त्यारे बोल्या सुखानंद संत, महाराज एज के सिदांत ।

पण पुछवानी एक रीत्य, माटे पुर्छुछुं हुं करी प्रीत्य ॥८॥ त्यारे कहे नीलकंठ कथी, आच्या उत्तरकोशळ देशथी। सर्व तीर्थ फरता जोता धाम, अमे आव्याछउं आणे गाम ॥९॥ अमे कह्युं अमारुं वृतांत, तमे कोणना शिष्य छो संत । पछी बोल्या सुखानंद तैये, अमे रामानंदजिना छैये ॥१०॥ अममांहि मोटा मुक्तानंद, तेनी आज्ञामां रहुं वर्णिइंद्र । आव्यो आ वाव्ये नावा हुं जाज, त्यांतो तमे मळ्या महाराज ॥११॥ मोहं भाग्य मान्युं आज मारुं, मने दर्शन थयुं तमारुं। एम कहीने लाग्याछे पाय, आवो अमारी जायगा मांय ॥१२॥ इयां वसेछे संत सुजाण, वर्तेछे पंचवत प्रमाण । प्रभ्र तियां लगी पधारीजे, दया करीने दर्शन दीजे ॥१३॥ मुक्तानंदजी जे इयां रहेछे, ते तम जेवाने मळवा इच्छेछे। गुरुआज्ञाए अमे रहुंछुं, तम जेवानी सेवा करुंछुं ॥१४॥ मुक्तानंदिजि संत छे एवा, सहुने दर्शन करवा जेवा । माटे तमे पधारोने त्यांइ, नहितो निश्चे ए आवशे आंइ ॥१५॥ त्यारे वर्णी बोल्या एम वाण, तमे सांभळो संत सुजाण । श्रहेर पुर नगर ने गाम, अमे जाता नथी केने धाम ॥१६॥ फर्या विषम वन सघळे, रहेता नित्य नवा तरुतळे । पण एवानां दर्शन सारुं, चाली मानीश वचन तमारूं ॥१७॥ पछी संत सांथे वर्णिराय, आव्या आपे धर्मशाळामांय । उठी संते कर्यो नमस्कार, नम्या हरि सहुने तेवार ॥१८॥ पछी बेठा घटे तेम सहु, शोभी समा ते समामां बहु । सर्वे वर्णिसाम्नं जोइ रिया, देखी हरि आश्चर्य पामिया ॥१९॥ तप तेज तने शांतपणुं, देखी मन नेण लोभ्यां घणुं। कहे आवा न दीठा सांभळया, आजमोरे पण नथी मळया ॥२०॥ बाळपणामां आवा छे शुद्ध, माटे मनुष्य नहि छे विशुध।

कांती चंद्र कांती छे आ अर्क, कांती अग्नि के खामी कार्तिक ॥२१॥ कांतो निरन्धुक्त आ निदान, कांतो तप छे मुरतिमान । कांतो बद्रिपति छे आ आप, जुवो एना आव्यानो प्रताप ॥२२॥ आपणां नेण न लोभे क्यांइ, तेती रियां छे एमां लीभाइ। माटे आपणां मोटां छे भाग्य, मळ्या मूर्तिमान आ वैराग्य ॥२३॥ आनी सेवा करो करभामी, तो रीझरो रामानंदस्वामी। पछी संत सेवामांहि रिया, मुक्तानंद भोजन करावियां ॥२४॥ पछी जितेंद्रिय साधुने जाणी, राजी थइ हरि बोल्या वाणी। कहे अमे रहेशुं तमपास, करशं टेल्य करे जेम दास ॥२५॥ पछी संतमां रह्या महाराज, पुछ्युं प्रश्न परीक्षाने काज। कहे नीलकंठ सुणो संत, तमे जाणोछो सर्वे सिद्धांत ॥२६॥ माटे करुंछुं प्रश्न महाराज, उत्तर सुणवा इच्छुंछुं आज। जीव ईश्वर माया ब्रह्म जेह, परब्रह्म रूप कही तेह ॥२७॥ कहेडयो जुजवां विगत्य पाडी, जेम छे तेम देज्यो देखाडी। एवां सक्ष्म प्रश्नने सांगळी, बोल्या मुक्तानंदिज त्यां वळी ॥२८॥ कहे सुण्युं गुरुमुखे अमे, कहुं ते वरणि सुणो तमे । स्थुळ सक्ष्म कारण देह, तेमां व्याप्यो नखशिखा तेह।।२९।। इंद्रि अंतः करण ए आधारे, करे किया नानाप्रकारे। वळी जाणो अजन्मा छे एह, नित्य निरंश अखंड तेह ॥३०॥ छे प्रकाशक ते न छेदाय, न बळे न सडे न सुकाय । एवं जाणज्यो जीवतुं रूप, हवे कहुं ईश्वरनुं खरूप ॥३१॥ विराट स्त्रात्मा देह जाणो, अव्याकृतमां व्याप्या प्रमाणो । उत्पत्ति स्थिति प्रलय जेह, करे सर्वे जगतनो तेह ॥३२॥ एह कह्यं ईश्वरनुं रूप, हवे कहुं मायानुं खरूप । जक्तमांहि कहीए जीव जेह, तेना उद्भवनुं क्षेत्र तेह ॥३३॥ अनादि तममय ते कहीए, जडचिदात्मक ए लहीए।

कार्यकारण रूप ए जाणो, भगवाननी शक्ति प्रमाणो ॥३४॥ त्रण गुणात्मक ए कहीए, अजन्मा अज्ञानरूप लहीए। एवं मायानुं रूप सरेछे, हरिआश्रित एने तरेछे ॥३५॥ हवे सुंणो ब्रह्मनिरूपण, सत्य ज्ञान अनंत पूरण। अखंड ने अक्षर एतुं नाम, पुरुषोत्तमने रहेवानुं धाम ॥३६॥ मूर्तिमान अमूर्त कहेवाय, शुद्ध नित्य विकार विनाय । माया ईश्वर जीवतत्त्व जेह, तेनुं प्रकाशक जाणो तेह ॥३७॥ वळी सर्वाधार एह ब्रह्म, जाणो वर्णिराट एह मर्म । हवे परब्रह्मने कहीए छीए, जेनो कहेतां ते पार न लइए ॥३८॥ नारायण वासुदेव कहेवाय, स्वतंत्र प्रकाशक लेवाय । आनंदमय दिव्यमूरत, विष्णुं कृष्ण ने कहीए अच्युत ॥३९॥ वळी कहीए अन्यय भगवान, अक्षर माया काळ जे निदान । तेमां शक्तिए अन्वय थया, वळी मूर्तिमान जुदा रह्या ॥४०॥ काळ मायाना नियंता जेह, सर्वकारणना कारण तेह। एह परमात्मा परब्रह्म, मुमुक्षु जीवोने लेवो मर्म ॥४१॥ ए छे सर्वने उपास्या जेवा, सुणो वर्णि परब्रह्म एवा । कर्यो उत्तर में सुण्या प्रमाण, यथारथतो सद्गुरु जाणे ॥४२॥ तेतो देखे हस्तामलक वळी, देखाडेछे मुमुक्षुने मळी। एम कर्या उत्तर मुक्तानंद, सुणी वणी पाम्याछे आनंद ॥४३॥ साधुस्त्रभाव ने सरल चित्त, जाणी हरि बोल्या करी श्रीत । हेम्रुनि कर्यो उत्तर तमे, थयो यथारथ जाण्यो अमे ॥४४॥ ए प्रश्न में पुछ्यांछे बहुने, कहेतां कठण थयांछे सहुने । तेनी तमने लागी नहि बार, माटे तमे मोटा निरधार ॥४५॥ करी मुनि तमारां दर्शन, मारा मनमां थयो मगन । त्यारे मुक्तानंद कहे महाराज, में दिठा छे बहु तपिराज ॥४६॥ पण तम जेवा एक तमे, हुं कहीए मुखथी घणुं अमे। प्रश्न करी

समप्तवो उत्तर, एवापण नोय झाझा नर ॥४७॥ एम कहेतां सांमळतां गाथ, वाच्युं हेत रह्या संतसाथ । नित्य प्रश्नना उत्तर थाय, सुणी साधुने हर्ष न माय ॥४८॥ संस्कृत ने प्राकृत प्रश्न जे, करे उत्तर न थाय बीजे। पछी डाह्या शियाणा जे हता, मनुष्यषुद्धि तेमां न करता ॥४९॥ छे अकळ आप भगवन, एम जाणी सेवे संतजन । थाय कृष्णकथा तियां नित्य, सुणे नाथ पोते दइ चित्त ॥५०॥ राख्या निम तेमां नव चुके, करे तप तेपण न मुके । देखी दृष्टि श्रीहरिनी संत, माने आतो मोटा छ अत्यंत ॥५१॥ त्यारे साधु कहे भगवान, स्थिरदृष्टि करो केनुं च्यान । त्यारे बोलिया वरणिराज, सुणो सुक्तानंदजी महाराज ॥५२॥ राधाआदि जे सर्वेना खामी, ते इष्ट मारा अंतरजामी। व्या विष्णु शिवना जे देव, तेनी करुं हुं नित्य सेव ॥५३॥ बाराह आदि जे अवतार, ते सरवेना जे धरनार । एवा कृष्ण परमक्ष जाणो, मारे तेनुं ध्यान परमाणो ॥५४॥ वळी करुंछुं सेवा पूजन, नित्य समरण ने कीरतन । ते विना नथी जीवोने गति, मारेपण नथी बीजे मति ॥५५॥ एम बोलिया छे बहुनामी, छेतो पोतेज श्रीकृष्णस्वामी । पण बोलवानी एह रीत, तेम बोलेछे करणानिकेत ॥५६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-खामिशिष्यनिष्कुलानदमुनिवरिचते भक्तिवतामणिमध्ये प्रश्लोत्तरनामे भोगजचा ळिशमुं प्रकरणम् ॥३९॥

पूर्वछायो-शुभमति सहु सांभळो, एम बोल्या भावे मगवंत । ते सुणी शुक्तानंद जिए, कह्युं पोतानुं वरतंत ।।१।। अमे पण श्रीकृष्णने, भावे भजुं अगवान । गुरुनी कृपाए करी, वळी बेखुं मूर्तिमान ।।२।। ते गुरु रामानंद जि, उद्भवनो अवतार ।

स्रमुक्षुने आशरवा, योग्य निश्चे निरधार ॥३॥ तेनी कृपाए करी जन, देखे गोलोकादिक घाम। मोरलीधर श्रीकृष्ण जे, ते देखे समाविए स्याम ॥४॥ चोपाइ-एतो कही में बीजानी वात, वमेती देखोछी साक्षात । तेती एमने वश्च छे एह, नधी ए वातमांहि संदेह ॥५॥ वळी रामानंद ने श्रीकृष्ण, तेनां प्रथक म जाणज्यो द्रष्ण। एतो जीवोना कल्याण काज, पोते स्वयं कृष्ण रह्या 🕏 आज ।।६।। गुरु उद्भव विना नथी अन्य, ते छे भागवतमां वचन 🖡 इच्छ्या आ लोक तजवा काजे, त्यारे विचार्युं कृष्णमहाराजे ॥७॥ मारुं ज्ञान हुं केने आपीश, ज्ञानाचार्य ते केने स्थापीश । जोतां दीठा उद्धवर्जि एक, आप्युंछे ज्ञान करी विवेक ॥८॥ उद्धव मारा आत्मा गणुं, नथी मुजथी न्यून ए अणुं। एम कहि उद्धवने शान, आपी थयाछे अंतरधान ॥९॥ ते उद्धव तेज रामानंद, तेना अमे छीए वर्णिइंद । करीए छीए श्रीकृष्णभजन, एवां सुण्यां वर्णिए वचन।।१०।। पछी सांभरिआवीए वात, जे कहीहती पोताने तात । जाण्या उद्भव ते रामानंद, क्यारे मळे ने पाग्नं आनंद ॥११॥ मळे तो सेवाए करुं प्रस्न, तो मळे प्रत्यक्ष मने कृष्ण । कहे सकानंदप्रत्ये हरि, मने जाणज्यो तमारो करी।।१२॥ जेने होय हेतनां वचन, कहेज्यो मने थइने प्रसन्न । तेते तमे करज्यो उपाय, जेणे सद्य खामिने मळाय॥१३॥ एम कही कह्युं निजवतंत, तेने सांभळि बोलिया संत । जाणुं छे ब्राह्मणमां जनम, कर्यांछे अति-तप् विषम ॥१४॥ पछी सौवे कह्यं घन्यधन्य, तमने थाशे स्वामिनां दर्शन । हमणां खामी छे भ्रजनगर, सुंदरमृतिं जे मनोहर ॥१५॥ ते आवशे ज्यारे देश आणे, थाशे दर्शन सौने ते टाणे। हमणां न करो जावानो घाट, मानो वचन जुवो तमे वाट ॥१६॥ एवां

सुणी साधुनां वचन, रह्या तियां स्थिर करी मन । करे साधुनी सेवा अपार, नित्यप्रत्ये करी बहु प्यार ॥१७॥ जोइ सेवावृत्ति ते अत्यंत, करे हेत सहु मळी संत । पोतानेतो मिक्त अति रजे, आपतकाळे धर्म न तजे ॥१८॥ शीत उष्ण वरषातनां दुःख, सहे शरीरे प्यास ने भुख । तेने जोइने सरवे जन, पामे विसाय पोताने मन ॥१९॥ एम करतां चैत्रमास गियो, संदेशो खामिनो न आवियो । त्यारे थया अतिशे उदास, न थयुं द्रष्ण मेले निश्वास ॥२०॥ सर्वे संतने कहे शिश नामी, क्यारे मळशे रामा-नंदस्त्रामी । वित्यो नायदो नाव्या दयाळ, मारां भाग्य कठण आ काळ ॥२१॥ एम कही भरे नयणे नीर, दर्शन विना दिले दिलगीर । एम करतां विने दिनरात, करे वैराग्य त्यागनी वात ॥२२॥ सर्वे संत करेछे विचार, केम रहेशे आ जाग्य मोक्षार। आवा वैराग्यवान न कोइ, आवे लाज एनी दशा जोइ ॥२३॥ जाय स्नान करवाने ज्यारे, पाछुं मंदिर न अवाय त्यारे। वाटे कांटा कांकरा ने ठेश, न देखाय दृष्टि अनिमेष ॥२४॥ न रहे निजदेह संभाळ, तोय बोले दयाए दयाळ। कहे मन जीवेश्वर एने। देखुंछुं हुं माया ब्रह्म तेने ॥२५॥ नथी कोइ मुजथी अकळ, जाणुं जेम हथेळिनुं जळ। ज्यांज्यां जायछे मन तमारुं, तेपण नथी अजाण्युं अमारुं ।।२६।। एवी वात करे हरि ज्यारे, सर्वे संत सत्य कहे त्यारे । रहे पोताने सहज स्वभाव, अतिनारीतणा ते अभाव ॥२७॥ आवे नारी तणो गंध ज्यारे, रहे नहि पेटे अन त्यारे। अति द्रव्य त्रिय तन त्याग, वळी अंगे अत्यंत वैराग्य ॥२८॥ वळीवळी करे एम वातुं, द्रष्ण खामिनुं केम नथी थातुं। ज्यारे मळशे खामी रामानंद, त्यारे मनमां मानीश आनंद ॥२९॥ कहे मुक्तानंदने

भगवान, तमे करोने खामिनुं ध्यान। तमारी वृत्तिमां मेलि वृत्ति, जोउं खामी श्रीजिनी मुरति ॥३०॥ पछी संते धर्युं ज्यारे घ्यान, तेने मेळ जोयुं भगवान । त्यारे दीठा रामानंदस्वामी, थया राजि रहि नहि खामी।।३१।।दीठा कंज अरुणवर्ण पाय, रुडी ऊर्घ्वरेखा छै तेमांय। जमणा अंगोठाने नखे रेख, तेतो शोभेछे वळी विशेख ॥३२॥ करभ सरखी शोभा उरतणी, वळी नाभि गंभीर छे वणी। मूर्ति पुष्ट छे महाराज केरी, बळी श्वेत घोति दिठी पहेरी ॥३३॥ गौरवान छे मूरति सारी, मोटी फांदे शोभे सुखकारी। पडे वळ त्रण त्यां विशाळ, उर ओपेछे तरुतमाल ॥३४॥ तियां शोमे सुंदर रोमराजी, कंठे कमळमाळा रही विराजी। भ्रज गजसुंढसम शोमे, ओपे अरुण पंकल पोंचा उमे ॥३५॥ जेम कंजनी शोमे कळियो, तेम शोभेछे हाथआंगळियो । थडे जाडी उपर पातळी, एवी दीठी में दशे आंगळी ॥३६॥ नखआवली शोभेछे घणी, जाण्युं हार बणी मणितणी। कंठ कंबुसमान छे एवं, मुख शोभे पूरण शक्षि जेवुं ॥३७॥ तियां दीठा अधर प्रवाळ, दंत दाड्यमकळि रसाळ। सइ कहुं ते शोभा मुखनी, शोभे नासिका चंचु शुकनी ॥३८॥ नयणां कमळदळ विशाळ, भर्यां करुणारसे रसाळ। अति अकुटि भाल विराजे, त्यां ऊर्ध्वपुंडू तिलक राजे ॥३९॥ रह्या छोटाछोटा श्रवण शोभि, दीठी शिशपर शिखा उभि । माथे ओढीछे घोळी पछेडी, करुणारस रह्याछे रेडी ॥४०॥ कृपाए जोइ रह्याछे सार्धु, पुरेछे निजजननी हामुं। इसतां खाडा पडेछे वे गाले, वळी चालेछे सुंदर चाले ॥४१॥ चरणे चालतां चमके चाखडी, हाथे छे नीला रंगनी छडी। एवी मूर्ति दीठी मनोहर, शोभासागर सुख सुंदर

॥४२॥ त्यारे संत कहे सत्य वात, एतो खामी श्रीजि छे साधात। तमे आपोछो जेजे एथांण, तेमज छे प्रत्यक्ष प्रमाण ॥४३॥ जेबुं छे रामानंदजिनुं रूप, तेवुं तमेज कह्युं खरूप। तमे दीठीछे जेवी मूरति, तेमां फेर नथी एक रति ॥४४॥ यथारथ मूरति छे जेवी, तमेपण दिठी प्रभु तेवी । त्यारे बोल्या हरि एम वळी, तमे सुणो संत सहु मळी।।४५॥ स्वामी रामानंदजिनुं पंड, तेने देखुंछुं घ्याने अखंड। पण मळशे प्रत्यक्ष प्रमाण, त्यारे टळशे अंतरे ताण ॥४६॥ एम कही थाय दिलगीर, वळी भरे नयणमां नीर। एम चरित्र करे अविनाशी, जोइ संत रहेछे विमाशी॥४७॥ कहे आ छे कोइक समर्थ, एती आन्या छे आपणे अर्थ। एने करवुं रह्युं नथी लेश, आपेछे आपणने उपदेश ॥४८॥ आपणे करीए छीए ध्यान, त्यारे रहेके मन तन भान । वळी ज्यांज्यां मन दिये दोहं, जइ ग्रहेके पदार्थ खोडुं ॥४९॥ ते ए जाणेछे मननी घात, नथी एथी अजाणी कोइ वात । तमे जुवोने सहु विचारी, आवा कोइ दीठा तनधारी।।५०।। ब्रह्मसृष्टिमां न जडे गोते, आती पूरणब्ह्य छे पोते। समझी संत रहे परसन, हरे फरे करे दरशन ॥५१॥ एम करतां वित्या नव मास, त्यारे अतिशे थया उदास। अही आपणे आशुं जो थयुं, कहो केम न फाट्युं आ हैयुं।।५२।। जळ कादव जुजवी जाति, त्रितम वियोगे फाटेछे छाति । ज ह मीननी प्रीत प्रमाण, पियु वियोगे परहरे प्राण ॥५३॥ कुंजिलत बीते घट माम, तजे तन थइने निराश। आतो वीति गया नव मास, एम कहीने थया उदास ॥५४॥ कहे मुक्तानंदने महाराज, आयो आज्ञा जाउं दर्शन काज। तमे कर्योतो वायदो जेहः विचारोने बीति गयो तेह ॥५५॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमु-निविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीस्वामिनी मूर्तिनुं ध्यान करीने कहुं एनामे चाळिशमुं प्रकरणम् ॥ ४०॥

पूर्वछायो -- आणी उदासी अंतरे, एम बोल्या वरणिराट। ते सुणी मुक्तानंदजि, अति करेछे उचाट ॥१॥ आवा त्यागी तपसवी, निरमोही वैराग्यवान । निस्पृहपणुं जोइ जाणे, रखे जाता रहे निदान ॥२॥ कांइक उपाय करुं, जेणे रहे वरणिइंद । पछी मीठी वाणीए, बोल्या ते मुक्तानंद ॥३॥ वैशाखशुदीनो वायदो, ते नहि पडे खोटो नाथ। तियां लगी तमे रहो, कहुं करगरी जोडि हाथ ॥४॥ चोपाई-तमने कहीए छीए अमे एह, तेती जोइने तमारुं देह । तमे करी तन छे दुबछं, नहि पोचाय शहेर छे वेगळं ॥५॥ खारा समुद्रनी छे खाडी, तेतो भ्रुज जातां आवे आडी । नथी सिधि जावा पगवाट, अमे कहीए छीए तेह माट ॥६॥ हमणां रहो जाळविने पळ, हुं मेलुंछुं लिखने कागळ। तेनो वळतो उत्तर आवे, करबुं सहुने जेम खामी कावे।।७॥ तेनी आगन्या विना न जावुं, अमने तो जणायछे आवुं। त्यारे बोल्या हरि तेह पळ, सारुं लखो खामिने कागळ।।८।। पछी मुक्तानंदजि महाराज, बेठा कागळ लखवा काज। खस्ति श्रीभ्रजनगरमांइ, खामी रामानंद सुखदाइ ॥९॥ दीनबंधु पतितपावन, भक्तजनने मनमावन। पुण्य पवित्र श्रौढ प्रताम, शरणागतना शमावो ताप ॥१०॥ क्रपानिधि करुणाना धाम, पतितपावन पूरणकाम। दयासिंधु दिलना दयाळ, निजजनतणा प्रतिपाळ ॥११॥ अनाथना नाथ अधमोद्धार, तमने करुं इं नमस्कार । कल्याणकारी जे अनेक गुण, तेणे करी तमे छो पुरण ॥१२॥ सिद्ध सिद्धियो सर्वे कहेवाय, तेती सेवेछे तमारा ११ भ०चिं०

पाय। शुद्ध भक्त जे लाखो करोडी, ते तमने नमे कर जोडी ॥१३॥ आपइच्छाए मनुष्याकृति, तमे धरी प्रभ्रु अमवति । एवा तमे जन सुखकारी, प्रभु वांचज्यो विनति मारी ।।१४।। अत्र लोजथी लख्यो कागळ, तम कृपाए सुखी सकळ। तमारा सुखना समाचार, लखज्यो मारा प्राणआधार ॥१५॥ बीजुं लखवा कारण जेह, स्वामी सांभळज्यो तमे तेह। कोसळ देशथी आव्याछे मुनि, कहुं वात हवे हुं तेहुनि ॥१६॥ देहमांहि जेटली छे नाडी, देखायछे ते सर्वे उघाडी। त्याग वैराग्य तने छे अति, जाणुं आपे तपनी मूरति ।।१७॥ नीलकंठ नामे निदान छे, शिव जेवा वैराग्यवान छ । मेघजेवा सहुना सुखधाम, देखी दर्प हरे कोटी काम ॥१८॥ वर्णिवेष दृष्टि अनिमिष, ब्रह्मस्थितिमां रहेछे हमेश। उदारमति अचपळता. पासळे कांइ नथी राखता ॥१९॥ किशोर अवस्थाने उतरी, आव्या अत्र तीरथमां फरी । सुंदर मुख ने माथा उपर, केश नाना भ्रुरा छे सुंदर ॥२०॥ बोलेछे स्पष्ट वाणी मुख, नारी-गंधथी पामेछे दुःख। मान मत्सर नथी धारता, प्रभ्र विना नथी संभारता ॥२१॥ जीर्ण वलकळ ने मृगछाळा, हाथमांहि छे तुळसी माळा। सरल क्रियामां सदा रहेछे, मुनिना धर्मने शिखवेछे।।२२॥ राखेळे गुरुभाव अममां, वृत्ति लागी रहीछे तममां। रसरहित जमेछे अन्न, तेहपण बीजे त्रिजे दन ॥२३॥ क्यारेक फळ फुल निदान, क्यारे करे बारि वायुपान । क्यारे अयाच्युं अन्न आव्युं लीए, वयारे मळ्युंपण मुकि दीए।।२४।। क्यारेक मरचां मिढी आवळ्य, जमे एज एकछं केवळ। खारुं खाडुं तीखुं तमतमुं, रस निरस बरोबर सम्रुं ।।२५।। टंक टाणानी टेवज नथी, अतिनिस्पृह रहेछे देहथी। जेजे कियाओ करेछे एह, तनधारिए न थाय तेह ॥२६॥

ग्रीष्म प्रावृट ने शरद ऋतु, हेमंत शीत ने वळी वसंतु। छोबे ऋतुमां बसवुं वने, वहालुं लागेछे पोताने मने ॥२७॥ मेडी मोल आवासमां रहेवुं, ते जाणेछे कारागृह जेवुं। उनाळेतो तापेछे अगनि, चोमासे सहे धारा मेघनि ॥२८॥ शियाळे बेसेछे जळमांइ, तेणे तन गयुंछे सुकाइ। कियां बाळपणानी रमत, कियां पामवो सिद्धोनो मत ॥२९॥ बाळपणे सिद्धदशा जोइ, अमे संशय करुं सहु कोइ। एना तपना तेजने मांइ, अमारुं तप गयुं ढंकाइ।।३०।। जैम दिनकर आगळ दिवो, ए पासे त्याग अमारो एवो । एनी बाततो ए प्रमाणे छे, सर्वे योगकळाने जाणेछे ॥३१॥ तोय शिष्य थइने रह्या छे, जेनी अतिअपार किया छे। केणे थातो नथी निर-धार, जांणुं पाम्या छे शास्त्रनो पार ॥३२॥ पुछेछे प्रश्न अलप कांइ, तेमां पंडित रहेछे मुंझाइ। सभामांहि वाद प्रतिवादे, बोलेखे पोते शास्त्रमर्यादे ॥३३॥ त्यारे पंडितना तर्क सर्व, थाय बंध ने न रहे गर्व । पुछे प्रश्न कोइ पोतापास, त्यारे बहु रीत्ये करे समास ।।३४।। त्यारे संशय करे एम मन, आ शुं आव्या पोते भग-वन । वेसुं ध्याने ज्यांज्यां मन जाय, तेने देखेळे साक्षिने न्याय ॥३५॥ दुरिजन वचननां बाण, सहेवा पोते वज्रप्रमाण। एवा क्षमार्वत महामति, परदुःखे पीडायछे अति ॥३६॥कोमळता कही नथी जाति, उपमापण नथी देवाति । सर्षप फुल माखण ने कंज, जाणुं पाम्या कोमळता रंज ॥३७॥ सर्व साधुता जेजे कहेवाय, तेतो रही छे जाणुं एह मांय । तम विना एवा गुण बीजे, नथी सांमळ्या साचुं कहीजे।।३८॥ एनां चरित्र जोइने अमे, जाणुं दृढता जोवा आव्या तमे। वळी तमारां दर्शन काज, अति आतुर रहेछे महाराज ।।३९।। तेने रोकिने राख्याछे आंइ, कहोतो आवे

तमपास त्यांइ। यांनि वात में लखी जणावी, राजि हो तेम मुकज्यो कहावी ॥४०॥ लरूपुंछे मारी बुद्धि प्रमाण, सर्वे जाणी लेज्यो सुजाण । ओछुं अधिकुं जे लखाणुं होय, करज्यो क्षमा अपराध सोय ॥४१॥ दया करीने वांचज्यो पत्र, घटे तेम लखावज्यो उत्र । तेनी जोइ रह्या छीए बाट, आब्ये उत्तर टळशे उचाट ॥४२॥ वारेवारे विनति महाराज, करुंछुं हुं आ वरणि काज । हशे तमने गमतुं ते थारो, बीजा डाह्यानुं डहापण जारो ॥४३॥ थोडे लख्ये बहु मानज्यो नाथ, राखज्यो दया प्रश्च ग्रुजमाथ। एवी पत्र लख्यो मुक्तानंदे, वांच्यो सांभळ्यो सह मुनिष्टंदे ॥४४॥ कहे मुनि धन्य छो महाराज, अतिरुडो पत्र लख्यो आज । वांची आवशे वहेला दयाळ, प्रभु लेशे आपणी संभाळ ॥४५॥ पछी बोल्या एम मुक्तानंद, सुणो नीलकंठ सुनिइंद । लख्यो स्वामी प्रत्ये पत्र अमे, कांइक लखोने कहुं छुं तमे ॥४६॥ सुणी मुक्तानंदनां वचन, विचार्युछे वरणिए मन । हुं शुं लखी जणाबुं खामिने, कह्युं न घटे अंत-र्जामिने ॥४७॥ जाणे मननी वारता तेने, सर्वे लोक हस्तामळ जेने । एथी अजाण्युं नथी लगार, जाणे सर्वे अंतरमांहि बार ॥४८॥ ए आगे करवी चतुराइ, ते विचारि लेवुं मनमांइ। अमारे तो नथी एवो घाट, लखुं तमे कहोछो तेहमाट ॥४९॥ एम कहीने बेठा एकांत्य, लखवा कागळ करीछे खांत्य। काजु कागळ लिधोछे कर, मांडी पाटी गोठण उपर ॥५०॥ जमणा करमां कलम लीधी, लखवा पत्रिकानी इच्छा कीथी। प्रथम करि मने विचार, मांड्यो लखवा शुभ समाचार ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये मुक्तानंदस्वामिए पत्र छख्यो एनामे एकताळिशमुं प्रकरणम् ॥४१॥

पूर्वछायो-स्वस्ति श्रीभुजनगरमां, रह्या राजअधिराज । सर्वे शुभ शोभा त्यां रहे, जियां आप विराजो महाराज ॥१॥ सर्वे सद्गुण मणितणी, धरि रह्या तमे माळ। भक्तजनना मंडळमां, बहु शोभोछो दयाळ ॥२॥ जे जन आवे आशरे, तेने आपोछो अभयदान । कृष्णभक्ति प्रकट करी, आ समे तमे भगवान ॥३॥ सर्वे गुरुना गुरु तमे, आपे उद्धव छो तमे आज । एवा खामी रामानंदजि, जयकारी प्रवर्ती महाराज ॥४॥ चोपाई-तमे साक्षातकार उद्धव, प्रकट्या जीव तारवाने भव । धर्मरक्षा करवाने काज, तमे जन्म लीधोछे महाराज ॥५॥ अवधपुरी अजयविपर, लीधो जन्म सुमति उदर । एवा उद्धव तमे रामानंद, जिज्ञास जीवना सुखकंद ॥६॥ तेने पृथ्वी स्पार्शे नमस्कार, करुं छुं हुं हजारो हजार। एम करी लखुंछुं विनति, तमे सांभळज्यो महामति।।७॥ नीलकंठ वर्णी मारुं नाम, तम शरण विना नथी ठाम। एवी हुं आच्यो शरण तमारी, खामी सहाय करज्यो अमारी ॥८॥ कोस-ळदेशमां मेली संबंधि, कृष्ण मळवा वनवाट लिधि । पछी फर्यो हुं सर्वे तीरथे, कृष्ण प्रकट मळे एह अर्थे ॥९॥ एम करतां आव्यो लीज आंइ, रह्योछुं तमारा संतमांइ । कृष्ण प्रत्यक्ष मळवा काज, करुं आग्रह ते कहुं महाराज ॥१०॥ तप करुंछुं कठण तने, नथी मोंळी हुं पडतो मने । चारे मास चोमासाना जेह, करुं धारणा पारणा हुं तेह ॥११॥ वर्षो वरष कार्तिक मास, करुंछुं सामटा उपवास। वळी ए मासमां कोइ समे, करुं कुच्छ्रवतने ते अमे ॥१२॥ त्यारपछी माघमास मांय, करुं पाराक कुच्छ्र कहेवाय। चांद्रायण एकादशी लइ, सर्वे व्रत करुंछुं हुं सइ ॥१३॥ कृष्ण प्रसन्न करवाने काज, एनुं दुःख मने नथी महाराज। पंच विषयथी मन उतारी,

करुंछुं तप कठण भारी ॥१४॥ तेणेकरिने शरीरमांइ, लोहि मांस गयुंछे सुकाइ । प्राण रह्यातणी एक रीत, नथी राखी में चितव्युं चित ॥१५॥ कृष्णद्रश्न आशा सुधावेल, तेणे जांणो आ प्राण राखेल। नहितो अन्न विना मारो देह, वळी चाले एवा प्राण जेह ॥१६॥ तेने रहेवा बीर्ज आलंबन, नथी वहु में विचार्य मन । कळियुगे अन्नसमा प्राण, सर्वे जाणेछे जाण अजाग ॥१७॥ माटे मारा प्राण नथी एवा, सह जाणेछे सतयुग जेवा। वळी अष्टांग-योगथी घणुं, उदन्युंछे जे ऐश्वर्यदणुं ॥१८॥ तेणेकरी देहिकया जेह, वळी तप उपवास तेह । नथी पडतां ते कठण कांइ, तेती प्रश्च तमारी कुपाइ ॥१९॥ एको कृष्णभक्त भने जाणी, मळज्यो मारे माथे महेर आणी। मारे माततात बंधु लैये, सुहद स्वामी गुरु छुष्ण कैये । २०।। तेह कृष्णविषे छे सनेह, यंधांणाछे मन प्राण देह । ते विना बीजे प्रीत बंधाणी, तेती श्रीकृष्णना भक्त जाणी ॥२१॥ ते विना पंच विषय देनार, वा होय संबंधि नरनार । तेने नोय जो ऋष्णमां प्रीत्य, तो तज्ञं तेने वैरिनी रीत्य ॥२२॥ तेमां काढशो दोष जो तमे,तियां कहीए छीए खामी अमे। आगे त्याग्युं एम मोटेमोटे, तेने आबी नहि कांइ खोटे ॥२३॥ जुबो विभीषणे तज्यो आत, तेम तजी भरतजिए मात। तजी विदुरे कुळनी विधि, ऋषिपत्नीए तज्यां संबंधि।।२४।। गोपीए तज्यो पतिनो संग, तज्यो पुत्र वेनराजा अंग । तज्यो प्रह्लादे पिताने वळी, तेम गुरु तज्यो राजा बळी ॥२५॥ तेनी अपकीर्ति नव थइ, साम्रुं कीर्ति शास्त्रमांहि कइ। माटे ए रीत्य अनादि खरी, कृष्णविमुख मेल्यां प्रहरी।।२६॥ माटे कृष्णमक्तं मने वहाला, बीजा सर्वे लाग्याछे नमाला । जेने तमारा जनशुं नेह, तेज याम्याछे मनुष्यदेह ॥२७॥ बीजा जीव छे

पशुसमान, जेने विषयसंबंधि छेज्ञान । तेमां ने पशुमां फेर नथी, एम विचारुंछुं हुं मनथी।।२८।। मनुष्यदेहने इच्छेछे देव, ते पामी न करी हरिसेव । तेती पशु पुछिशिंगहीण, मर होय गुणी पर-बीण ॥२९॥ कुळ कीर्ति रुडा गुण रूप, होय ऐश्वर्ये करी अनूप। तेतो जक्तमां शोभेछे घणुं, जेम शोभे फळ इंद्रामणुं ॥३०॥ सर्वे गुणतो शोभेछे त्यारे, कृष्णभक्ति करे जन ज्यारे । कृष्णभक्ति-हीण गुण होय, वण छुणे व्यंजनसम सोय ॥३१॥ भक्तिहीण ब्रह्मलोक जाय, तोपण काळथकी न मुकाय । मगवाननुं अंतरमां सुख, नथी पामता हरिविमुख ॥३२॥ माटे कृष्णनी भक्ति छे मोटी, जेथी सुखी थया कोटिकोटी। शिव ब्रह्मा इंद्र शुकादेली, करेछे भक्ति मानने मेली ॥३३॥ जेम करेछे बीजा सह जीव, तेम करेछे ब्रह्मा ने शिव। राधाआदि शक्तियो अपार, करे सेवा दासी जेम द्वार ।।३४॥ अल्प जीव कृष्णभक्ति करे, तो ते काळ कर्मभयथी तरे। ब्रह्मा होय जो भक्तिए हीणो, तो तेपण छे काळ-चविणो ॥३५॥ एवं माहात्म्य श्रीकृष्णतणं, सुण्यं शास्त्र साधुथी में घणुं। माटे मेली आळस हुं अंगे, करुंछुं उब्र तप उमंगे ।।३६॥ तेतो कृष्ण प्रसन्न थावा माट, मळे प्रत्यक्ष ए मने घाट। पामशे चित्त निरांत्य त्यारे, मळशे कृष्ण प्रकट ज्यारे ॥३७॥ माटे संतवचने बंधाइ, रह्योछुं तमारा साधुमांइ। वळी जोउंछुं तमारी वाट, अतिविरहमां करुंछुं उचाट।।३८॥ कृष्णकीर्ति विना पदगान, शब्द लागे त्रिशूळ समान । नारी रूपाळी लागेछे एवी, जाणुं श्रुखी राक्षसणी जेवी ॥३९॥ वळी सुगंधी पुष्पनी माळ, तेतो लागेछे कं-ठमा व्याळ। चंदन केसर ने कुंकुम, ते लेपन लागे प्कसम।।४०।। कृष्ण विषे रह्युं मारुं मन, रहेवुं प्रासादे लागेछे वन। क्षिणां घाटां अं-

बर छे जेह, थयां सर्वसम मने तेह ॥४१॥ नानाप्रकारनां जे भोजन, ते लागेछे झेर जेवां अन्न। वळी जेजे वस्तु सुखकारी, ते सर्वे मने थह्छे खारी ॥४२॥ कृष्णदर्शन विना छुं बेलो, म्वामी मेलज्यो सं-देशो वहेलो। तमारुं दर्शन ज्यारे थाशे, त्यारे सर्वे दुःख मारां जाशे ।।४३।। माटे कुपा करी दर्शन देज्यो, विरहाब्धिमां बुडां बांये ग्रेज्यो। जैम वर्तेछे पोताने मन, एवां लख्यां वर्णिए वचन 118811 जेवुंछे पोतानुं वरतंत, तेतो लखतां न आवे अंत। लख्युं संक्षेपे सार एटलुं, न लखाय जेम छे तेटलुं ॥४५॥ए छे मुमुक्षु ने उपदेश, ऋद्यो कृष्णभक्तनो रहस्य। पण कृष्ण बीजा नथी कोइ, समझो श्रीपुरु-बोत्तम सोइ ॥४६॥ एम पत्री लखी पुरी कीधी, लइ ग्रुकानंद-जिने दीधी। पछी मुक्तानंदे पत्र लीधी, पोताना पत्र भेटो ते कीयो ॥४७॥ बिडी बेड लर्ख्यु शिरनाम, पछी तेड्या भट्ट मया-राम । कह्यं आ कागळ उतावळ्ये, पहोचाडो श्रीखामिनी पासळ्ये ॥४८॥ कहेज्यो मुखे सर्वे समाचार,आवे वहेला ते करज्यो विचार । पछी मयाराम लागी पाय, चाल्या भुजनगर नेराय ॥४९॥ सप्त दिने पहोच्या भुज शहर, खामी हता गंगाराम वेर। निरखी वित्र पाम्योछे आनंद, केवा शोभे छे ते सुखकंद ॥५०॥ नेणां कमळदळसम दोय, पूर्ण शशिसम ग्रुख सोय । गौर शरीर अजान कर, सुंदर श्वेत पहेर्यांछे वस्तर ॥५१॥ वांकी अक्रुटि मंदमंद हास, प्रसन्नवद्ने करेछे विलास । कमळ सरिखां छे चरण दोय, भक्त रह्याछे ते साम्रं जोय ॥५२॥ आपेछे निजजनने आनंद, सु-खदायी खामी रामानंद । एवा निरखी मयारामे नाथ, आप्या पत्र वे स्वामिने हाथ ॥५३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद्र-

स्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्मुनिविर्चिते भक्तचितामणिमध्ये नीलकंठवर्णिए पत्र लख्यो एनामे वेताळिशमुं प्रकरणम् ॥४२॥

पूर्वछायो-राजी थइ रामानंदजिए, लीधा पत्र ते बेउ हाथ। वर्णी आव्यानी वात वांची, राजी थया आपे नाथ ॥१॥ पोता-विषे अतिभाव छे, तपेकरी कुश छे शरीर। एवां वचन विचारिने, आव्यां पोताने नयणे नीर ॥२॥ गदगद कंठे गिरा थइ, धीरा रहिने वांच्या कागळ। पछी तेहनी वारता, कही हरिजनने आगळ ।।३।। सुंदर आदि सतसंगी, सुणवा आव्या सहु कोय । नीलकंठजिना गुणने, कहेतां सुणतां तप्त न होय ॥४॥ चोपाई — **धन्य** धन्य ए वरणिराट, आव्ये टळ्यो सरवे उचाट। कही वर्णिनी मोटप्य बहु, सुणी सतसंगिए ते सहु ॥५॥ पछी पत्रनो प्रतिउत्तर, लखेछे पोते अतिसुंदर । ब्रह्मचारिनी प्रशंसा करी, रुडो उत्तर लखेछे हरि ॥६॥ श्रीलोजपुरमां रह्या संत, ते मुजने वहाला छो अत्यंत । तीर्थवासिनी करोछो टेल, तेमां पळ नथी पामता वेल ॥७॥ मांदा साधुनी करवी सेव, वळी तकेशुं राखवी टेव । तेतो कोइथी बनी न आवे, तेह तमेज करोछो भावे ॥८॥ दुःखीने तमे द्योछो आनंद, एवा परमार्थी मुनिइंद् । अष्टभाते त्रिया त्यागी, एवा संत तमे बडभागी।।९।। माटे तमारा त्रह्मचर्यमांइ, कहुं विष्न पडशो मां कांइ। मारी आशिष्थी म्रनिजन, नहि आवे ब्रह्मचर्ये विघन ॥१०॥ ते ब्रह्मचर्ये छे ब्रह्मस्वरूप, कहुं सनत्सुजातीये अनूप। श्रीभुज्यी लखितंग अमे, करज्यो आशिष ग्रहण तमे ॥११॥ श्रीकृष्ण अनुग्रह प्रतापे, छीए सुखी संतो अमे आपे। पत्र पोता छे तमारा बेउं, भट्ट मयाराम लाच्या तेउं ॥१२॥ वांची जाण्यो सर्वे अभिप्राय, जेजे लख्युंछे

कागळमांय । तमपासे आच्या ब्रह्मचार, तेपण जाण्याछे समा-चार ।।१३।। जेजे रीत लखी एनी तमे, तेनी वात कहीए छीए अमे । एनी किया जेजे तमे कहि, तेतो एके मनुष्यनी नहि ।।१४।। माटे साधारण पुरुष एह, तमे जाणशो मां मुनि तेह । निरम्मुक्त ए छे निरधार, श्वेतद्वीप धामना रहेनार ॥१५॥ कांतो बद्रिकाश्रमना ग्रुक्त, आव्याछे तप ने त्यागे युक्त । ईश्वरइच्छाए आव्याछे आंइ, बीजी वात जाणशो मां कांइ ॥१६॥ ए जे आव्याछे तमारे पास, तेनो अमे कर्योछे तपास। माटे एने गमे तेवीरीत्ये, करज्यो सेवा सहु मळी प्रीत्ये ॥१७॥ एनी पासेथी योगनी कळा, तमे शिखज्यो ग्रुनि सघळा। नेति धोति ने नौलि कुंजरी, बस्ति वे परकारनी खरी।।१८।।तेणे शरीरनी शुद्धि थाय, तमे शिखज्यो सह मुनिराय । पछी अनुक्रमे करी एह, शिखज्यो अष्टांगयोग तेह ॥१९॥ यम नियम आसन कहीए प्राणायाम प्रत्याहार लहीए। धारणा ध्यान ने जे समाधि, ए कहे तेम लेज्यो शिखी साधि ॥२०॥ अष्टांगयोग अभ्यास विना, उठे अंतरे घाट नवीना । शुद्ध ब्रह्मचर्य नव पळे. माटे जरुर करबुं सघळे ॥२१॥ एम करशो त्यारे इंद्रियजित, कहेवाशो तमे संत पुनित । कामरूप शत्रु तो जिताय, जो स्त्रीसंगनो त्याग थाय ॥२२॥ ब्रह्मचर्य राखवा जे इच्छे, न जुवे नारी भली भ्रंडीछे। स्त्रीनी कथा केदिये न सुणे, न कहे तेना अवगुण गुणे ॥२३॥ स्त्रीने रमवानां जेजे स्थळ, न जाबुं त्यागिने त्यां कोइ पळ ! अतिनानी होय जो योषित, जाणी जोवी नहि दइ चित्त ॥२४॥ चित्रप्रतिमानी जे सुंद्री, न अडवुं न जोबुं द्रग भरी । नारी चित्रनी पण न करवी, एना मर्मनी वात प्रहरवी ॥२५॥ एनी वात कहेवी नहि कांइ, भेळं

चालबुं नहि वाटमांइ। संकेते पण भाषण न करबुं, नारी स्पर्शेल पट प्रहरवुं ॥२६॥ नारीविषेनो संकल्प त्यागी, रहेवुं प्रभु-पदे अनुरागी । कृष्णभक्त त्यागी प्राणअंत, न स्पर्शे नारी त्यांपरजंत ॥२७॥ नारी नहाति धोती होय जियां, ब्रह्मचारिने न जावुं तियां। जे घरमां सुती होय नारी, तियां सुवुं नहि ब्रह्म-चारी ॥२८॥ चार हाथथी चालबुं दूर, एवा नियम राखवा जरुर । एटलां वत पाळे जे योगी, थाय अंतरे तेज अरोगी ॥२९॥ जगे दुर्लभ योगी छे एवा, ते ब्रह्मादिकने वंद्या जेवा। ए रीत्ये ब्रह्मचर्य रखाय, एम न रहे ते अष्ट थाय ॥३०॥ क्रोध मान मद अमरश, मत्सर नानाभात्यना रस । ए योगिने विन्न करनार, माटे तजवां ते निरधार ॥३१॥ आहार निद्रा ते युक्त करवुं, व्यसन फेलमात्र प्रहरतुं। मद्य मांसनो स्पर्श प्रहरीए, द्रोह प्राणि-मात्रनो न करीए।।३२॥ केदि मन कर्म ने वचने, आपे मरखुं न मारखुं केने । चोरी करवा चित्ते न चहाबुं, वर्णसंकर योगिने न थाबुं ॥३३॥ एवा धर्मवान सुनि प्रेह, श्रीकृष्णने पण वहाला तेह । मुक्तानंदजिने बीजा संत, तमे सांभळज्यो गुणवंत ॥३४॥ नीलकं-ठमांहि गुरुभाव, राखज्यो तमे करी उछाव । शिखज्यो सर्वे योगनी रीत्य, धर्मविषे रहेज्यो करी प्रीत्य ॥३५॥ तपेकरी कुश छे वरणी, करज्यो सेवा अन्नजळे घणी। ए छे नाना ए नहि करो षाट, तमे वये मोटा छो तेमाट ॥३६॥ अमे बीतते वैशाख मासे, आवर्छ संतो तमारी पासे। त्यांसुधी राखज्यो करी स्नेह, रखे जाता रहे ए निस्पृह ॥३७॥ एवा समाचार घणी घणी, लख्यो उत्तर एम पत्रतणो । पछी नीलकंठनी पत्रीनो, लखेछे खामी उत्तर एनो ।।३८॥ श्वेतद्वीपवासी निरम्भुक्त, तेमां ग्रुख्य अति-

तेजे युक्त । नीलकंठ जणाओछो एवा, तपेकरी छो नरवीर जेवा ॥३९॥ एह वातमां नथी संदेह, ते आव्याछो धरी नरदेह । एवा तमे तेनो जे कागळ, आव्योछे ते अमारी पासळ ॥४०॥ वांची जाण्यो सर्वे समाचार, सुणी क्रिया में कर्यो विचार। तेतो मनुष्यथकी न थाय, जोयुंछे विचारी मनमांय ॥४१॥ ज्ञान वैराग्य भक्ति द्रढाव, नियम धर्मनिष्टा शांतिभाव। पूर्व जन्मनुं छे ते तमारे, तेनुं नथी आश्चर्य अमारे !।४२।। तमे देखोछो ध्यानमां जेवा, नथी फेर श्रीकृष्ण छे एवा । साधुमां रहीने जोज्यो वाट, आवशुं अमे मां करो उचाट ॥४३॥ वैशाख मास उतर्या टांणे, आवीश हुं गाम पिपलाणे । आव्या जाणीने आवज्यो तमे, तियां मळशुं तमने अमे ।।४४॥ तमने दर्शननी छे जे ताण, ते हुं जाणुंछुं वर्णी सुजाण । पण यां आव्यानुं नथी ठीक, वचे लागेछे दुष्टनी बीक ॥४५॥ माटे तमारे आवदुं नहि, होय प्रीतितो मानज्यो सहि । सर्ने साधुने योग शिखवज्यो, आनंदे संतजनमां रहेज्यो ॥४६॥ जेम तमने इच्छा छे मारी, तेम अमने इच्छा छे तमारी । माटे आवीश हुं उतावळ्ये, थाशे सुख ते तमने मळ्ये ॥४७॥ तम जेवा जे भक्तनी संग, ते करवा मारे छे उमंग। रहेज्यो धर्ममांहि सावधान, धर्म वहालो मने भगवान ॥४८॥ धर्मयुक्त मक्त रहे दूर, पण जाणुंछुं तेने हजुर। बळी तम जेवानां चरण-तोय, स्पर्शि मनुष्य पावन होय ॥४९॥ तम जेवानी करे जे सेव, तेणे पूज्याछे सर्वे देव । एवा साधुमां प्रीति छे मारी, तेत्री नथी में देहमां धारी ॥५०॥ एवा कृष्णभक्त धर्मवान, ते मारुं हृदय छे निदान। माटे क्षोम म करशो कांइ, मळशुं आपणे पिप्पलमांइ ।।५१।। माटे आज्ञा विना नहि आवो, आवशोतो थाशे पसतावो।

जो छे अतिशे हेत तमारुं, तोय इयां आव्यानुं छे वारुं ॥५२॥ करज्यो साधुनो आदरभाव, राखज्यो अंगे सहज खभाव। तपे करी छे करश तन, माटे जमज्यो कांइक अस ॥५३॥ हवे तप करशो मां एवं, पडे तन न मळे एजेवं । ज्ञान भक्ति तप निजधर्म, तेनुं साधनरूप ए मर्म ॥५४॥ माटे अमसारू ए देहने, करबुं पोषण कहुंछुं तेहने । एइ देहवडे महाराज, बहु करवा धार्याछे काज ॥५५॥ एम खामीए विचारी मन, एवां लख्यां कागळे वचन । पछी बीड्योछे कागळ हाथे, मोकल्यो मयारामजि साथे ॥५६॥पछी मयाराम त्यांथी चाल्यो,दिन साते आवी पत्र आल्यो। आप्यो पत्र साधुने ते बीड्यो, लइ मुक्तानंदे हृदे भीड्यो ॥५७॥ पछी वर्णी अने मुक्तानंद, वांची पत्रने पाम्या आनंद। पछी स्वामिनी आज्ञामांइ,रह्या नीलकंठ पोते त्यांइ॥५८॥शीखवेछे नित्य योगकळा, तेह शीखेछे संत सघळा। ते गुरुकुपाए ततकाळे, शीखी लिधीछे सर्वे मराळे ॥५९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये रामानंदस्वामिए पत्रनो उत्तर लख्यो एनामे त्रेताळिशमुं प्रकरणम्॥४३॥

पूर्वछायो-पछी योग शीखवतां, करतां ते तप अभ्यास । अहोनिश एम करतां, वही गयो वैशाख मास ॥१॥ त्यारे वर्णिए विचारियुं, आज काल आवे अविनाश । एम करतां विह गयो, अरघो ते ज्येष्ठ मास ॥२॥ वळता वर्णी व्याकुळ थइ, जुवे वाट वारमवार । एक तप ने चिंता बीजी, तेणे कृश थयाछे अपार ॥३॥ आतुरता मन अतिघणी, थइ खामिने मळवा माट । खामिपण पछी त्यांथकी, इच्छ्या देखवा वर्णिराट ॥४॥ चोपाइ-थया उतावळा ततकाळ, भ्रजनगरमांथी दयाळ । सुवर्ण सरीखो

आण्योछे रथ, बेठा ते उपरे समरथ ॥५॥ चलाव्यो रथ शहेर-बजार, आव्यां दर्शने बहु नरनार । तेने जीताजीता जगदा-थार, आव्या शहरथकी पोते बार ॥६॥ संगे आव्याछे वळावा जन, नथी वळतां करेछे रुदन । तेने आपेछे महाराज धीर, कहेके म भरो नयणे नीर।।७॥ आ समो नथी रोयानो जन, करी लियो कहुं छुं दर्शन । त्यारे जन छुइ नीर नयणे, बोल्याछे अति-दीनता वयणे ।।८।। कहे वहेला आवज्यो दयाळ, लेज्यो नाथ अमारी संभाळ। एम कहीने जोडिया हाथ, त्यारे तेप्रत्ये कहेछे नाथ ॥९॥ जन सर्वे रहेज्यो सावचेत, राखज्यो हरिजनशुं हेत। अमे आवशुं हमणां बळी, पण प्राकृत नहि शके कळी ॥१०॥ एम कहीने चालिया नाथ, संत वे चारने लइ साथ। सांझेसांझे करता मुकाम, आव्या खामी पिपलाणे गाम ॥११॥ करी महाराजे मोटी मेर, आव्या महेता नृसिंहने घेर । पछी विपर कुरजि नामे, तेने मोकलियो लोजगामे ॥१२॥ कह्यं तेडीलावो संतजन, मर आवी करे दरशन । चाल्यो ब्राह्मण लागिने पाय, आव्यो उताबळो लोजमांय ॥१३॥ आपी संतने जइ वधामणी, खामी पंधारिया तेहतणी। कह्युं खामिए मोकल्युं कावी, करो दर्शन संत सह आवी ॥१४॥ एवां अमृतवचन सांभळी, पाम्या आनंद संतमंडळी। कहे नीलकंठ ब्रह्मचारी, चालो हमणां करी तैयारी ॥१५॥ त्यारे संत कहे सुणो नाथ, इंदु उग्ये सहु चालशुं साथ । पछी चालिया उगते चंद, नीलकंठजि ने मुक्तानंद ॥१६॥ देवानंद ने परवतभाइ, चाल्या जेठाभक्त आदि दइ। दर्शन करवानी इच्छा छे घणी, बांधी दृष्टि सहुए खामिभणी ।।१७।। वर्णी तने कुश छे वळी, न चलाणुं पड्या भोमे ढळी। पछी

सर्वे बेठा पासे आवी, चांपे हाथ पग हेत लावी ॥१८॥ त्यारे सत्ता आवीछे शरीरे, पछी उठी चाल्या धीरेधीरे। त्यारे सर्वे मळी कहे जन, आम केम थाशे दरशन ॥१९॥ करो योगधारणा द्याळ, तो पोचिए सहु ततकाळ । त्यारे तेम करी चाल्या नाथ, तैये केणे न पोचाणुं साथ ॥२०॥ जेम छुट्यो कमानथी तीर, तेम पहोच्या ओझते अचिर । बहे प्रचंड पुरे ते नदी, पडे जेते न निसरे कदी ॥२१॥ पड्या एवा पुरमांहि पोत्ये, शरसम उतर्या सहु जोते । बीजा उतर्या त्रापेशुं पार, पछी सहु आव्या गाम-मोझार ॥२२॥ ज्येष्ठवदी बारशने दन, कर्युं सहुए स्वामिनुं दर-शन । अतिगौर ने पुष्ट छे तन, अंगे पहेर्याछे श्वेत वसन ॥२३॥ सुंदर मुख ने कमळनेण, मंदहासे मुख सुखदेण । उर विशाळ अजानकर, कंजसम चरण सुंदर ॥२४॥ भक्ते पूज्याछे पुष्पचंदने, वेठा दीटा सभामांहि जने । परम हितकारी बहुनामी, दीटा सिंहासनपर खामी ॥२५॥ तेने देखीने पाम्या आनंद, त्यारे उठ्या खामी रामानंद । कर्या नीलकंठे दंडवत, तेने उठाड्या स्वामीए तरत ।।२६।। प्रेमे मळिने बेसार्या पास, करी बिजानी बहु आशवास । जेवा कह्याता साधुए मळी, तेवा दिठा छे वर्णिए वळी ॥२७॥ पाम्या परमानंद सुख भारि, आव्यां हर्षनां नयणे वारि । थया ब्रह्मचारी रोमांचिते, जोइ रह्या साम्रुं बहुप्रीत्ये ॥२८॥ तैम जोइरह्या स्वामी हेते, एक मीटे मटकारहिते। पछी पुछेछे एम महाराज, क्यांथी आव्या तमे वर्णिराज ॥२९॥ कह्यं ग्रुक्ता-नंदे वरतंत, सुणी राजी थया भगवंत । पछी खामिजिए घणां-घणां, कर्यो वस्ताण वरणितणां ॥३०॥ पछी गदगद कंठे गिरा, बोल्या ब्रह्मचारी रही घीरा । मारो मनोरथ महाराज, थयो

सुफळ सर्वे आज ॥३१॥ तमे साक्षात कृष्णनी मक्ति, प्रवर्तावी आ युगमां अति । एवा जनहितकारी तमे, मळ्ये जन्म सुफळ मान्यो अमे ।।३२।। त्यारे खामी कहे सत्य वात, तेमज अमे छुं रिक्रयात । आव्या क्यांथी चाली तमे आज, हशो ग्रुख्या तमे महाराज ॥३३॥ पछी खादु फळ मगावियां, सुंदर फराळ करावियां । पछी वर्णि-राज मुनिइंद, बेठा देखि सहु पाम्या आनंद ॥३४॥ एम करतां थयो सायंकाळ, उठ्या पूजा करवा दयाळ । पूजा सामग्री लड़ बहुविधि, सेवा श्रीकृष्णदेवनी कीधी ॥३५॥ तेदि हति रहेवा एकादशी, कर्युं जागरण सहु मळी निशी । करतां कथा कीर-तन गान, बोल्या वर्णिप्रत्ये भगवान ॥३६॥ कोण देश कोण जन्म जाग्य, कीण कुळभूषण बडभाग्य । कीण मात तात गीत्र लहीए, कोण प्रवर शाखा वेद कहीए।।३७।। कोण रीत्ये उपन्यो वैराग्य, केम कर्यो खजननो त्याग । कोण इष्टदेव छे उपास, केम कर्यो तमे बनवास ।।३८।। कहो तपना भेदनी विधि, योगसाधना कैपेर किधि । तीर्थयात्रा तीर्थना रहेनार, तेने जित्या ते कोण प्रकार ॥३९॥ एटली वात पुछी खामी ज्यारे, कही अनुक्रमें करी त्यारे। सुणी विस्तारे वारता सहु, खामी-आनंद पामिया बहु ॥४०॥ पछी बोल्या खामी सुखकारी, तमे सांभळो हे ब्रह्मचारी। धर्म विष्र जे तात तमारा, तेतो शिष्य थयाता अमारा ॥४१॥ भक्ति धर्म दोय जे दंपती, ते ग्रंथी पाम्यां दीक्षा भागवती। तेना सुत तमे ब्रह्मचार, तेतो अमारा छो निरधार ॥४२॥ तमारा मात तात जे बेहु, मळ्यांतां मने प्रया-गमां तेह । एतो रहेतांतां कोशळ देश, करतां ग्रुग्रक्षने उपदेश ॥४३॥ अहिंसादि रखावतां नियमे, कृष्णभक्ति करावतां प्रेमे ।

तमे तेथी अधिक अत्यंत, गुण लक्षणे छो बुद्धिवंत ॥४४॥ तमने देखतां एवा जे मृत्य, तेने जणाओ छोज अमृत । एवी सुंदर सारी जे वात, कहेतां सुणतां गइ अर्ध रात ॥४५॥ त्यारे दीउंछे आश्चर्य एक, जाण्युं उगिया अर्क अनेक। श्रीखामिना रोमरी-मप्रति, दीठा तेजना समूह अति ॥४६॥ तेह तेज दशे दिशमांइ, रह्यं घरबार प्रत्ये छाइ। पछी हतुं रात्ये तम काळं, ते टळिने थयुं अजवाळुं ॥४७॥ रह्युं एवाएवुं पहोरवार, जोइ विस्मय पाम्या नरनार । पछी सर्वे तेज संकेलाइ, मळ्युं खामिनी मूरतिमांइ ॥४८॥ जेम चोमासामां अभ्र थाय, शरदऋतुमां शून्ये समाय । त्यारे वर्णी बोल्या शिश नामी, गुणे कृष्णसमान छे खामी ॥४९॥ एमां कृष्ण निरंतर रहेछे, आ स्वामीने वश श्रीकृष्ण छे। एमां असत्य नथी जो कांइ, एवं निश्चय कर्यु मनमांइ ॥५०॥ पछी गुरुए मान्याथका त्यांइ, रह्या खामिने संगे सदाइ । बेउ मूर-तिने जोइ जन, पाम्या आनंद अतिशे मन ॥५१॥ खामिपण वार्णे-गुण जोइ, कृष्णसमान मानेछे सोइ। जाण्युं धर्मनी रक्षाने काज, प्रकट्याछे श्रीकृष्ण महाराज ॥५२॥एम परस्पर अतिप्रीत्ये, करे वात अलौकिक नित्ये। सुणी जन पामे छे आनंद, कहे धन्य-धन्य सुखकंद ॥५३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वा-मिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये रामानंदस्वामिने नीलकंठ मळ्या ए नामे चुवाळिशमुं प्रकरणम् ॥४४॥

पूर्वछायो-पछी लोकमां एम जाणियुं, खामिपासे आव्याछे संत । नानि वयमां न थाये एवां, कर्या छे तप अनंत ॥१॥ ते सुणी देशोदेशथी, आवेछे नर ने नार । योगी त्यागी दर्शने, आवे लोक हजारो हजार ॥२॥ ते मनुष्यने खामी पोते, ओळ-

खावेछे ब्रह्मचार । कुश तने तपसी अति, जोइ विस्मय पामे नर-नार ॥३॥ पछी पुछेछे खामिने, क्यांथी आव्या आ वर्णीराज । नानि वयमां मोटा अति, तप करेछे महाराज ॥४॥ चोपाइ---जोने पहेरिछे यज्ञोपवीत, जटा शिशे शांति अतिचित्त । नाडियो जे शरीर मोझार, सर्वे निसरिरहीछे बार ॥५॥ ऊर्ध्वपुंडू ने तुळ-सनी माळा, उदार छे पासे मृगछाळा। ध्याने करी स्थंभ्यांछे लोचन, अति विसारि मुक्युंछेतन ॥६॥ बहु निस्पृही ने निरमान, एवा आ कोण छे भगवान। त्यारे खामी कहे सुणो तेइ, आव्या कोशळ देशथी एइ।।७।। एनां मातापिता इतां जेह, अतिधर्मवाळां नेउ तेह। करतां भगवाननी भक्ति, ते सुणतां पोते हेते अति ॥८॥ भक्ति ज्ञान वैराग्य माहातम्य, जेम सांभळ्युंछे रहेछे तेम। एणे सर्वे संबंधिने त्यागी, गयाता वनमां बढभागी ॥९॥ तियां घोर तप अति करी, कर्या भक्तिए प्रस्न श्रीहरि। त्यांथी आव्याछे हरि-इच्छाये, कर्यां तप ते ध्रुवे न थाये ॥१०॥ एवां खामिनां वचन सांभळी, अतिविस्मय पाम्या जन बळी। पछी निरखी हरखी जन, गया पोतपोताने भवन ॥११॥ पछी जाणी डाह्याने चतुर, राख्या खामिए पोताहजुर । कृष्णपूजामां प्रवीण जाणी, राख्या आपवा सामग्री आणी ॥१२॥ पछी पोते पोतानी जे सेव, करे वहेला उठी ततखेव । पछी खामिने पूजवा समे, करे परिचर्या जेम गमे ॥१३॥ तुळसी चंदन पुष्प ने धूप, लावे नैवेद्य आणी अनूप। जेम मनतणी जाणे कोये, लाविआपे पोते जेजे जोये।।१४॥ पछी राजी थया तेह माथे, थया वज्ञ पोते वर्णि साथे। एम रही करी पूजा घणी, रामानंदजिए कृष्णतणी ॥१५॥ आपी पूजासामगरी जेह, लीधी साक्षात सरवे तेह । ते उद्धव विना विजा कोइ, नथी

देखतां ते जन सोइ॥१६॥ पछी खामी इछचा मनमांय, मारीपेठे वर्णिने देखाय । त्यारे श्रीकृष्णने खामी कहेछे, वर्णी दर्शन तमारां इच्छेछे ॥१७॥ पछी हसी बोल्या भगवान, देशुं वर्णिने दर्शनदान । एम कही दीधुं दरशन, निरखी वर्णी थया परसन ।।१८।। पछी गुरुनी सेवामां रह्या, एवा हरि स्वामिने भाविया । आपे अन्नप्रसादि ते जमे, करे तेते जे खामिने गमे ।।१९।। पछी ज्यारेज्यारे पूजे स्वामी, त्यारे नित्य देखे बहुनामी। पछी वर्णिए जाण्युं एरीत्ये, पूजुं हुं दिये दर्शन प्रीत्ये ॥२०॥ लियेछे पूजा जे खामी दीये, तेम मारीपण प्रभ्र लीये। एम लेशे प्रभ्र पूजा ज्यारे, हुं कुतारथ मानिश त्यारे ॥२१॥ ते श्रीखामिनी सेवाए करी, करशे मनोरथ पुरो हरि। पछी खामिनी सेवा श्रद्धाये, करतां वीत्युंछे चोमासुं त्यांये ॥२२॥ संवत् अढार वर्ष सत्तावन, कार्ति-कशुदी दन पावन । एकादशी प्रबोधनी नाम, अतिसुंदर सुखनुं थाम ॥२३॥ तेदि महादीक्षा देवाने काज, इछ्या रामानंदिज महाराज । पछी महादीक्षा लेवाने माटे, कर्यो उपवास वर्णिराटे ।।२४।। पछी श्रीकृष्णमंत्रनो जाप, कर्यो महादीक्षा लेवाने आप । तियां तेड्यो बाह्मण अमळ, पोताना संप्रदायमां कुशळ ॥२५॥ तेपासे वेदशास्त्रनी विधि, करावी तेते सरवे कीधी। पछी श्रीक्र-ष्णनो मंत्र जेह, अष्टाक्षर कहेवायछे तेह ॥२६॥ कह्यो जमणा कानमां तेवार, अर्थे सहित करी उचार । प्रबोधनी एकादशी दन, आप्युं महादीक्षारूपि धन ॥२७॥ बहुविधे वाजां वजहावी, कर्या उत्सव संत तेडावी। आव्या ब्रह्मचारी वळी संत, वध्यो आनंद सहुने अत्यंत ॥२८॥ कहा एजे श्रीकृष्णनो मंत्र, तेनो अर्थ कहा धार्यो अंत्र । अंतःकरणनी षुतियो जेह, करवा निरोध मंत्र छे एह

।।२९।। थाय हृदयमांहि प्रकाश, पामे कृष्णदर्शन फळ दास। एह मंत्रफळ सुखकारी, कहे खामी सुणो ब्रह्मचारी ।।३०।। देहस्मृति ज्यांलगण होय, धर्म तजवी नहि कहुं सोय। ते धर्म कह्या ताते तमारे, तमे पाळोछो ते अनुसारे ॥३१॥ वळी पाळज्यो विशेष तमे, ए शिखामण्य दउंछुं अमे । कृष्णपूजा मने बारे करज्यो, पंचाध्याय पाट ओचरज्यो ॥३२॥ आप शक्ति प्रमाणे परम, पाठ करवो वासुदेवमाहात्म्य । फळ दळ प्रसादिनुं लेवुं, जळपण प्रसा-दिनुं पिवुं ।।३३।। कृष्णनिवेदनुं अन्न जेह, जमवुं अधिक करी स्रोह। पहोर रात्य जातां नित्य सुर्चु, पहोर पाछलि रात्ये उठवुं॥३४॥ पृथ्वीपर करवुं आसन, करवुं कृष्णनाम कीरतन । कृष्णभक्ति विना कोइ काळ, वृथा न जावा देवो दयाळ ॥३५॥ जे ग्रंथ कृष्णमाहातम्ये सहित, ते सुणज्यो कहेज्यो करी हेत । एम धर्म-उपदेश आप्या, शिष्यमां मुख्य मोटेरा स्थाप्या ॥३६॥ पछी अर्थे सहित पाड्युं नाम, लेतां जन पामे सुखधाम। सहजे संतने सुखर्मंडार, एह अरथने अनुसार ।।३७॥ सहजानंद जगवंद जेह, कह्यं नाम तमारुं छे तेह । तप स्वभावे आकारे करी, नारायण-सम तमे हरि ॥३८॥ माटे नारायणमुनि नाम, कहेशे सर्वे पुरुष ने वाम । एम नाम खामिरामानंदे, कह्यां ते सांभळ्यां सुखकंदे ।।३९॥ पछी वर्णिखामिनी तेवारे, करी पूजा पोडश उपचारे I करी प्रदक्षिणा दंडवत, पछी पूज्याछे संत समस्त ॥४०॥ पूज्या वर्णी विप्र मलिविधि, वेदशास्त्रविधि पुरी कीधि। पछी हाथ जोडी उमा आगे, करे स्तुति अतिअनुरागे ॥४१॥ त्यारे खामी कहे ग्रुज-पास, मागो वर जेवी होय आश । त्यारे वर्णि कहे मागुवं ए छे, जेम तमारी पूजा कृष्ण लेखे।।४२।। वळी प्रकट दीएछे दर्शन, तेम मारे

थाय भगवन । एह मागुंछुं हुं महाराज, बीजि इच्छा नथी मारे आज।।४३॥ त्यारे खामी कहे सत्यवचन, लेशे पूजा ने देशे दर्शन। एम कहेतां सांभळतां वात, गयो दिन ने पडिछे रात ॥४४॥ कर्युं जागरण सहु मळी जन, गायां श्रीकृष्णनां कीरतन । एम करतां थयुं सवार, करावी रुडी रसोयुं त्यार ॥४५॥ जम्या ब्राह्मण ने ब्रह्मचारी, साधु सतसंगी नरनारी । सहु जमाड्या स्वामिरा-मानंदे, कर्यो मोटो उत्सव आनंदे ॥४६॥ आप्यां वस्त्र ने दक्षिणा बहु, राजिथइ गया द्विज सहु। पछी खामिनी पेठ्ये पूजन, लिये नित्ये ते प्रीत्ये श्रीकृष्ण ॥४७॥ तेणे राजी थया हरि घणुं, मान्युं पोते कृतारथपणुं । वळी आपे एमज दर्शन, तेणे पोते रहेछे प्रसन्न ।।४८।। द्विभुज रूप राधिकासंगे, सुंदर वेणुं वजाडे उमंगे । मनोहर मूर्ति नटवर, देखे छेलछबिलो सुंदर ॥४९॥ क्यारेक रमा-संगे रंगराज, क्यारेक रुक्मिणीसंगे महाराज। क्यारेक सखासंगे अरज्जन, क्यारेक एकाएक थाय दर्शन॥५०॥ क्यारेक द्विभुज चतु-र्श्वज देखे, देखे अतिमोद मनलेखे। एम आपे धर्यु नरनाट्य, करे चरित्र पोते तेमाट ॥५१॥ वेश तपस्विनो छे तेकाज, करे मनु-ष्यचरित्र महाराज। एम कृष्णनी बुद्धिए करी, सेवेछे गुरुने पोते हरि ॥५२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनि-ष्कुलानंद्मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीरामानंद्स्वामिए नीलकंठ-वर्णिने महादीक्षा आपी एनामे पिसताब्रिशमुं प्रकरणम् ॥४५॥

पूर्वछायो- संदर कथा सांभळो, थया खामिना वर्णी शिष्य। डाह्या सर्वे सदगुण जेमां, असाधारण अहोनिश ॥१॥ एवा हरि बुद्धिवंतशुं, खामिए राख्यो सखाभाव। कांइक कामकारणे, पुछे पोते करी उछाव ॥२॥ जियांजियां पोते विचर्या, तियांतियां वर्णि

साथ । रैवताचळ आस पासळे, कर्या बहु जीव सनाथ ॥३॥ कृष्णनी भक्ति अतिशे, प्रवर्तावी जनमांय। जिज्ञास जीव जोइने, पोते फर्या ग्रेवा बांय ।।४।। चोपाइ—क्यांक पक्ष क्यांक रह्या मासरे, एम फर्या देश अविनाशरे। एम रहेतां देतां दर्शन क्यामरे, आव्या पोते जेतपुर गामरे।।५।। तियां उनड नामे राजनरे, तेणे राख्याछे करी स्तवनरे । कह्युं आ जे सरवे छे मारुंरे, तेतो जाणज्यो खामी तमारुरे ॥६॥ पछी रह्या तियां रामानंदरे, सर्वे जनने देवा आनंदरे। रहे सेवामां हरि तत्पररे, करे सेवा स्वामिनी सुंदररे ॥७॥ गुणे करी अधिक छो सहुथीरे, गुण स्नाभाविक छे आव्या नथीरे । सर्वे काळ वळी सर्वे स्वळरे, खस्बरूपविषे रहे अचळरे।।८।। सत्य शौच दया क्षमा त्यागरे, संतोष आर्जव ने वैरा-ग्यरे । शम दम साम्य उपरतिरे, तप तेज तितिक्षाना पतिरे ॥९॥ शास्त्रज्ञान ऐश्वर्यता अतिरे, बळ शूरपणुं ने समृतिरे । खतंत्र कुशळ कांति धैर्यरे, चित्तकोमळ वाक्यचातुर्यरे ॥१०॥ नम्रता शील सह ओज वळरे, भग स्थिर गंभीर अकळरे। आस्तिक अदंभी अमा-नरे, कीर्ति मौन गर्व निह दानरे ।।११॥ मिताहार डाह्या मित्र-पणुरे, सर्वे उपकारि दया घणुरे। काम क्षोभ न पामते चित्तरे, अद्रोह षड उरमि जितरे ॥१२॥ आपे परने मान ते वर्णुरे, अपरिग्रह ब्रह्मण्यपणुरे । शरणागतवत्सळ अनीहरे, एहआदि सद-गुण जेहरे ॥१३॥ तेह देखिने सरवे जनरे, पामे विसय पोताने मनरे । एवा गुणवाळा जोइ सहुरे, माने मोटा हरिजिने बहुरे ।।१४।। एवा गुणवाळा ब्रह्मचारीरे, करे सेवा खामिश्रीनी सारीरे। एम अहोनिश सेवा करतांरे, वीत्यां वर्ष दोय संग रहेतांरे ॥१५॥ थार्यो धर्मानेथम ते न मुकेरे, करे तप योगमां न चुकेरे । जोह

स्वामी एवा वर्णिरायरे, स्थापी धर्मधुर एह मांयरे ॥१६॥ आपे इच्छ्या अंतर्धान थावारे, मांड्युं वर्णिने वचन मनावारे। जे वहे-वार न जाणे लगाररे, तेने इच्छ्या सोंपवा वहेवाररे ॥१७॥ कहे स्वामी सांभळो सुजाणरे, कहुं वचन ते करवुं प्रमाणरे । जे मारा आश्रित नरनाररे, तेने राखवां धर्ममोझाररे ॥१८॥ तमे वासु-देवमाहात्म्यरे, तेनो पाठ कर्यानुं छे निमरे। तेमां वर्णाश्रमना जे धर्मरे, कह्या स्त्रीना धर्म अतिपरमरे ॥१९॥तेमां रखावज्यो सहुने तमेरे, एम आज्ञा करुंछुं अमेरे। करज्यो कृष्णनी पूजातो एवीरे. करी विष्ठलेशे वळी जेवीरे ॥२०॥ तेतो श्रीकृष्ण तमारे विषेरे. विराजि रह्याछे अहोनिशरे । तेना त्रत उपवास जेमरे, करवा वैष्णव करेछे तेमरे।।२१॥ तमे शास्त्रमां जाणोछो घणुंरे, माटे मानो वचन मुजतणुरे । मारा स्थानक उपर रहेवारे, नथी बीजा कोइ तम जेवारे ॥२२॥ जेदिना मे निरूर्याछे तमनेरे, कर्योछे में मनी-रथ मनेरे । ते पुरो करो वरणिराटरे, करवा योग्य छो कहुंछुं तेमाटरे ॥२३॥ तमारा वैराग्यनी जे वातरे, अतितीव हुं जाणुं छुं तातरे। पण ए काज तमथी थायरे, बीजाने ते केम कहेबायरे ।।२४।। तम जेवातो तमे छो एकरे, अमे जोधुंछे करी विवेकरे। तमने निर्छेप अति जाणीरे, निरबंध जोइ ऋहुं वाणीरे ॥२५॥ वसन भूषण वाहन जेहरे, ग्रहण करज्यो आपे जन तेहरे । निज-जननी पूरज्यो हामरे, करज्यो रक्षा तेनी आठुं जामरे ॥२६॥ कळिदोप लागवा मां देज्योरे, शरणागतने उगारी लेज्योरे । तथे समर्थ छो तपोधनरे, द्रव्य नारी नहि करे बंधनरे ॥२०॥ गुणेकरी छो ऋष्णसमानरे, एम जाणेछे सहु निदानरे । अतिधीर जणाणा अमनेरे, माटे मोटा कर्याछे तमनेरे ॥२८॥ एवी सांभळी

स्वामिनी वाणीरे, बोल्या प्रश्नुजि उदासी आणीरे। स्वामी तमारी आगन्या जेमरे, करबुं घटे सरवेने तेमरे ॥२९॥ पण ब्रह्मचर्यव्रत जेहरे, तेने पाळतो एवो हुं तेहरे। तेने मानवुं आवुं वचनरे, नथी समर्थ हुं भगवनरे ॥३०॥ लोकशास्त्रमां वात छे एवीरे, ब्रह्म-चर्यने निंदवा जेवीरे । जेनी गंध ग्रंथी न सहेवायरे, तेने पासे में केम रहेवायरे ॥३१॥ वळी नारीने संगे सदायरे, मोटा ग्रुग्रुश्चने बंध थायरे। मुक्तपण पड्या एने मळीरे, तेनी वात में अवणे सांभळीरे ॥३२॥ सौभरि ने वळी एकलशंगरे, एने संगे जाग्योछे अनंगरे। काम जागे त्यां कोधज होयरे, कोध त्यां मोह जाणवी सोयरे ॥३३॥ मोहथकी थाय स्मृतिनाशरे, स्मृतिनाशे बुद्धि-विनाशरे । पछी मोक्षने मार्गथी पडेरे, एने संगे अघमगे चडेरे ।।३४।। माटे विदुंछुं एना संगथीरे, केम वचन मनाशे ग्रंथीरे। एना विश्वासमांहि जे रह्यारे, हता मोटा तेपण छोटा थयारे ॥३५॥ जुवो शिव ने ब्रह्मानी वातरे, लखिछे शास्त्रमांहि विख्यातरे। एनो जेणे विश्वास कीधोरे, तेने अंतरघाटे गळी लिधोरे ॥३६॥ काम क्रोध मद लोभ मोहरे, भय शोकादि शत्रुसमूहरे। एह प्रकटे अंतरमांयरे, तेणेकरी कर्मबंध थायरे ॥३७॥ माटे बुद्धिवान जे कहेवायरे, तेणे एने संगे न रहेवायरे। माटे प्रतीति न करवी मननीरे, ए समझण्य कृष्णना जननीरे ॥३८॥ जो दयाए करे मनसंगरे, थाय भरतपेट्ये व्रवभंगरे । माटे अग्रिमांहि बळिजाबुंरे, सारं विष हळाहळ खाबुंरे ॥३९॥ पण नारीतणो परसंगरे, अति-भुंडो लागे भने अंगरे। तेम द्रव्य ते गमतुं नथीरे, तेनी वात कहुं हवे कथीरे ॥४०॥ मोटा धर्मवाळो होय जेहरे, थाय अष्ट द्रव्यसारु तेहरे। जुवो निमि वसिष्टनी वातरे, पूर्वनी पुराणमां

विख्यातरे ॥४१॥ दिधा लोभे सामसामा शापरे, तेणे दुःख पाम्या दोय आपरे । वसिष्ठ ते वेश्यासुत थयारे, निमि जनक जीवथी गयारे ।।४२।। एम द्रव्यमां रह्यो संतापरे, द्रव्यसारु थाय बहु पापरे। माटे समञ्जए करवो विवेकरे, स्नीद्रव्यसम बंध नहि एकरे ॥४३॥ वळी देश काळ किया देवरे, शास्त्र दीक्षा मंत्र संग भेवरे । एह सबळे होय सबळुरे, अने अबळे होय अबळुरे ॥४४॥ जेवुं सेवे तेवी थाय मत्यरे, करे कर्म पछी सत्यासत्यरे। कर्मप्रमाणे फळ लहेरे, माटे विवेकी वेगळा रहेरे ॥४५॥ पिवे डाह्यो भोळो भांग्य मद्यरे, थाय बेउ घेला जाणी सद्यरे। तेम दाम वाम फेले करीरे, सत्वगुणी ज्ञानी भुले हरिरे ॥४६॥ माटे खामाविक गुण जेहरे, द्रव्य त्रियामां रह्या छे तेहरे। एम खाभाविक गुण होयरे, ते त्यागवा समर्थ नहि कोयरे ॥४७॥ माटे ए प्रसंगमांहि क्यारेरे, खाभाविक रुचि नहि मारेरे। पण तमे आज्ञा एवी कीधीरे, कहो करुं हवे कोण विधिरे ॥४८॥ पामे चित्त खेद अति मारुंरे, कही थाय मारुं जेम सारुंरे । सर्वे धर्म पळाववा खामीरे, तमे समर्थ छो बहुनामीरे ॥४९॥ माटे एमां मारुं छं छे कामरे, एथी वीजुं कहो सुखधामरे। एम नारायणमुनि जेहरे, कहुं पोतानुं हारद तेहरे ॥५०॥ त्यागियोने देवा उपदेशरे, एम बोलिया वर्णिदिनेशरे। एतो पोते छे पुरुषोत्तमरे, जेने नेतिनेति कहे निगमरे ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये श्रीनारायणमुनिए पोतानी रुचि कही एनामे छेंता छिशमुं प्रकरणम् ॥४६॥

पूर्वछायो-एवं सुणी खामी बोलिया, सुणो हरि शुद्धबुद्धि-वान । हार्द तमारा हैयातणुं, ते सर्वे जाण्युं मे सुजाण ॥१॥

पण हुं करुं ते विचारी करुं, वण विचारे न करुं लेश। बंध थातां देखुं जेहने, तेने नापुं एवी उपदेश ॥२॥ हुंपण हमणां रही छउं, आ पवित्र पृथिवीमोझार । धर्म पळाववा समर्थ छुं, सर्वे वात मानो निरधार ॥३॥ हवे पण मारे जाबुं थाशे, भूमि तजी ब्रह्ममहोल। शिखामण्य सद्शिष्य जाणी, आपुंछुं मित अडोल॥४॥ चोपाइ--मारो मनोरथ सर्वे सारोरे, कहुं वचन ते रुदे धारोरे। तम विना धर्मधुर जेहरे, बिजाधकी न उपडे तेहरे ॥५॥ माटे मानो वचन वार्णिरायरे, तमने बंधन नहि थायरे। तमे करशो जो नारीशुं वातरे, नहि बंधाओं कहुंछुं तातरे ॥६॥ होय युवतियूथ अपाररे, तमे रहेज्यो ते नारी मोझाररे। सदा रहेशो तेमां निर्लेपरे, बि-जानेतो बोल्ये चडे केफरे ॥७॥ तमे कंचन कांताए करीरे, निश्च नहि बंधाओ श्रीहरिरे। तम्ने साक्षात सविता मळीरे, आप्योछे वर तमने वळीरे ॥८॥ सूर्यनारायण थइ राजीरे, रह्या हृद्य तमारे विराजीरे। तमे नारायण सुखकारीरे, निरलेप ने निर-विकारीरे ॥९॥ एवा समर्थ छो सत्यवातरे, माटे कहुं छुं तमने तातरे। बीजा सर्वे संत छे आ सारारे, पण एनेती राखवा न्यारारे ॥१०॥ बीजा ब्रह्मचारी संत सोइरे, नारीवात सांभळशे कोइरे। थारो अष्ट जारो नरकमांइरे, तेमां फेर म जाणशो कांइरे ॥११॥ माटे रक्षा ते करज्यो एनीरे, होय आश्रित तमारा तेलीरे । द्रव्य-नारीथी उगारी लेज्योरे, एवी शिखामण नित्य देज्योरे ॥१२॥ कहुं सांभळज्यो सहु जनरे, एम मनाच्युं गुरुए वचनरे । इच्छा नथी उरमांहि जेनीरे, वात मनावी खामिए तेनीरे ॥१३॥ ज्यारे आगन्या मानी ए शुद्धरे, त्यारे खामी बोलिया विशुद्धरे। सर्वे संतने कहुं बोलावीरे, सांभळो शिष्य सर्वे आवीरे ॥१८॥

A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR

आ श्रीनारायणमुनि जे छेरे, आजधी मारे ठेकाणे रहेछेरे। मानज्यो सहु आनां वचनरे, जेह आश्रित हो मारा जनरे ॥१५॥ त्यारे सर्वे जने जोड्या हाथरे, सारुं मान्युं अमे मारा नाथरे। त्यारे हरि पोते उभा थयारे, गुरु आगे हाथ जोडि-रह्यारे ॥१६॥ त्यारे स्वामी कहे हुंछुं प्रसन्नरे, मागो मुजपासेथी वचनरे। एवी ब्रह्मांडे वस्तु न कांयरे, जे मागो ने अमे न अपायरे ॥१७॥ अतिहेत भर्या सुख बदनरे, एवां सुण्यां स्वामिनां वचनरे। पछी वोल्याछे वार्णराटरे, स्वामी प्रसन्न जाण्या तेमाटरे ॥१८॥ खामी वर देवा योग्य जो हउंरे, तो करजोडी तमने कहुंरे। मागुं प्रथम ए गुरुरायरे, कृष्णचरणकंजे प्रीति थायरे ।।१९।। वळी हरिजनने होय दुःखरे, थाय मने ए भोगदे सुखरे। कृष्णभक्त जो पूर्वने कर्मेरे, अन वस्त्र पामे परिश्रमेरे ॥२०॥ एनुं कष्ट आवे मुजमांयरे, एह सुखमां रहे सदायरे। रुडी हरिकथा हरिजनरे, तेनो संग देज्यो निशदनरे ॥२१॥ वळी हरिना गुणनेनिषेरे, मारी वाणी ते रहेज्यो हमेशरे। कृष्णकथामां रहेज्यो आ कानरे, हरिसेवामां हाथ निदानरे ॥२२॥ हरिस्मृतिमां मारुं मनरे, मागुंछुं हुं रहेज्यो निशदनरे। कृष्णदर्शनमांइ मारां नेणरे, मागुंछुं हुं रहेज्यो दिनारेणरे ॥२३॥ देह अंतः करण कियायरे, नित्य हरिनी भगति थायरे। एह माग्युं ते देज्यो उमंगेरे, केदि राखशो मां दुष्टसंगेरे।।२४॥ एटला वर मुज़ने देज्योरे, मारी प्रा-रथना सुणि लेज्योरे । एवं सुणी बोल्या गुरु वाणीरे, शुद्ध आश्यवाळा शिष्य जाणीरे ॥२५॥ कह्यं मनोरथ जे तमारोरे, निश्चय पुरो थाशे उर घारोरे । एवी वर वरणिने आपीरे, राख्या पोताने ठेकाणे स्थापीरे ॥२६॥ पछी शिष्य लइ निजसाथरे, आव्या

गाम फणेणिये नाथरे । तेदि हतो एकादशी दनरे, कर्यो उत्सव सहु मळि जनरे ॥२७॥ द्वादशीये संत विप्र जनरे, तेने करावियां छे भोजनरे । आप्यां विश्रने सुंदर दानरे, कर्यां भद्रानदीमां हि स्नानरे ॥२८॥ बेठा एकांत्ये पद्मआसनेरे, कृष्णमूरति चिंतवी मनेरे । करी समाधि कृष्णमां रइरे, त्यारे देहनी विस्मृति थइरे ॥२९॥ पछी श्रीकृष्ण इच्छाए करीरे, उद्धयजिए देह प्रहरीरे । गया विशाळांप्रत्ये ते वळीरे, पूर्वे हित तेवी देह मळीरे ॥३०॥ पाम्या सिद्धदेह तेह वाररे, कृष्णभक्ति करवा निरधाररे । संवत् अढार वर्ष अष्ठावनरे, मागशरशुदी तेरश दनरे ॥३१॥ वार देवगुरु दन जाणोरे, मुक्युं तन तेदि परमाणोरे । जन करतांहतां कीर्तनरे, तेने जणाणुं तजियुं तनरे ॥३२॥ जोइ नाडी चालतां न जाणीरे, त्यारे जनने आव्यां आंख्ये पाणीरे । मळी जन करे बहु शोकरे, कहे तज्युं उद्धवे आ लोकरे ॥३३॥ जाण्युं सहुवे हरिधाम गयारे, एवं सुणिने व्याक्कळ थय।रे । रुवे जन नेणेभरि नीररे, कोइ धरी शके नहि धीररे ॥३४॥ हावभाव हसबुं संभारीरे, मिठी बोलनी मनमां धारीरे। मनोहर मूरति विचारीरे, बहु रुवेछे नरने नारीरे ।।३५।। वळी वरणिआदी जे संतरे, सर्वे शोकातुर छे अत्यंतरे । पछी नाहिने आव्यां जे जनरे, लाव्या अबीर गुलाल चंदनरे ॥३६॥ पूजाने वंदना बहुविधिरे, शास्त्रप्रमाणे सर्वे किधिरे। पछी करी सुंदर विमानरे, तेमां तन बेसार्युं निदानरे ॥३७॥ लइचाल्या भद्रा-नदी कांठेरे, वित्र विष्णुसूक्त करी पाठेरे । झांझ मृदंगे गायछे जनरे, गायामांहि थायछे रुदनरे ॥३८॥ पछी भद्रावतीतीरे गियारे, शोधी सुंदर भूमिका तियांरे । तियां उतारी विमान जनरे, लाव्यां तुळसी पिपळो चंदनरे ।।३९।। एह काष्ठतणुं चिता रच्युंरे,

नवरावी तने घी चरच्खुंरे। चितामां पधराव्धुं तेवाररे, कर्यो कृष्णे अप्रिसंस्काररे ॥४०॥ बहु घृत होमी बाळी देहरे,नाखी वानि जळ-मांहि तेहरे। सर्वे शास्त्रविधि करी स्नानरे, आव्या सर्वे संत निज-स्थानरे ॥४१॥ पछी तेदि उपवास करीरे, बीजे दिवसे लखी पत-रीरे। सुणी सर्वे साधु हरिजनरे, अतिव्याकुळ थयाछे मनरे ॥४२॥ कर्यो स्नान तज्यां घरकामरे, मळी आव्याछे फणेणि गामरे। नयणे वरसे आंसुनी धाररे, खामिमांहि छे स्नेह अपाररे ॥४३॥ घडिघडिनां सुख सांभरेरे, तेणे आंखमां आंसुडां झरेरे। छुइछुइने नाखेछे नीररे, अतिशोकेछे मन अधीररे ॥४४॥ ब्रह्मभावने पाम्या उद्भवरे, करवो शोक तेनो असंभवरे। तीय समतो नथी तनता-परे, करे वियोगमांहि विलापरे ॥४५॥ तेने जोइ नारायणग्रुनिरे, करेछे मनुवार सहुनीरे। आपी धिरज्य उतार्या जनरे, एम करतां थयो बीजो दनरे ॥४६॥ ते दिवसथी तेरमा सुधिरे, वांची गीता ते वित्र सुबुद्धिरे। शास्त्रविधिये कह्युं जे अन्नरे, तेनुं कर्युंछे सहुए भोजनरे ॥४७॥ पाळवानुं पाळ्युं श्राद्ध कीधुंरे, दान देवानुं ते दान दीधुरे। कुर्युं बारमुं जेम घटितरे, जमाड्या वाडव करी प्रीत्यरे ।।४८।। तेरमे त्रिश वरणि साथरे, जमाडी आप्यां वस्न ते हाथरे । पछी आव्या हता हरिजनरे, तेने पण कराव्यां भोजनरे ॥४९॥ वळी एह गामना रहेनाररे, तेहपण जम्या नरनाररे । पछी सर्वे मळी हरिजनरे, कर्युं कृष्णदेवनुं पूजनरे ॥५०॥ सुंदर वह्म घरेणां पेरावीरे, पूज्या महाराजने प्रेम लावीरे । गीताना वांचनाराने वळीरे, आप्यां वस्त्र द्रव्य सहुए मळीरे ॥५१॥ यथायोग्य किया सर्वे किथिरे, जेम कहिछे शास्त्रमां विधिरे। तेना खरचतणुं जे धनरे, भरि आप्युं मळी सहु जनरे ॥५२॥ निजपोच प्रमाणे

सौ गृहस्थेरे, खरच उपाडि लिधुं समस्तेरे। थयो उत्सव पूरण ज्यारेरे, दिन चौदमो थयोछे त्यारेरे।।५३।। इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिव्यनिष्कुलानंदम्निविरचिते भक्तचि-तामणिमध्ये रामानंदस्वामिए नारायणमुनिने धर्मधुर सोंपिने देहत्याग कर्यो एनामे सडताळिशमुं प्रकरणम् ॥४७॥

पूर्वछायो-सुंदर सारी कथा कहुं, त्यार पछिनी जाणज्यो जेह । अतिचरित्र पवित्र छे, सहु सुणज्यो करी सनेह ॥१॥ सतसंगी खामितणा, निरमळ अति नरनार । हरि वेठा सभा करी, त्यागिसंत गृही ब्रह्मचार ॥२॥ मुख आगे मुकुंद आदि, बेठा बहु ब्रह्मचार । त्यारपछी ग्रुक्तानंदआदि, बेठा संत अपार ॥३॥ त्यार-पछी मयारामआदि, बेठा द्विज सुजाण। त्यारपछी मुळजि आदि, बेठा क्षत्रि प्रमाण ॥४॥ चोपाई—बेठा वैश्य पर्वतादि जेहरे, ग्रद्र काळानाइ आदि तेहरे । बेठा पुरुष पुरुषमां मळीरे, तेकेड्ये बैठि बायुंमंडळीरे ॥५॥ द्विज लाडकी आदि जे बाइरे, बेठी जेम न अडे कोइ भाइरे । बीजा आश्रित जन छे जेहरे, बहु मळी बेठा सहु तेहरे ॥६॥ सर्वे हाथ जोडी पाय नमेरे, अमारा गुरुमूर्ति छो तमेरे । वळी सहजे आपोछो आनंदरे, माटे सत्यनाम सहजानंदरे ॥७॥ सदगुणे शोभानुं छो धामरे, वळी तमे छो स्वामिने ठामरे । माटे अमने जाणी तमारांरे, कहेज्यो शिखनां वचन सारारे ॥८॥ प्रभु तमारी आज्ञाने विषेरे, रहेशुं श्रद्धा-सहित हमेशेरे । माटे कहेबुं घटे तेम कहेज्योरे, सारी सुखनी शिखामण्य देज्योरे ॥९॥ एम सहु मळी कहे जनरे, तेनां सांभळ्यां नाथे वचनरे । पछी बोल्या नाराणग्रुनिरे, शिखामण हित-कारी सहुनीरे।।१०॥ कह्यं धर्मशास्त्रने वचनेरे, धर्ममाहि राखवा

जननेरे। कहे नर देव ने पितररे, शेष शिक्ष सुर ने इतररे।।११॥ जेजे पाम्या सुख ने मोटाइरे, तेतो रहेतांथकां धर्ममांइरे। कह्युं छे श्रुतिस्मृतिमां एमरे, सत्यधर्मने मुकाय केमरे ॥१२॥ तेतो मोटा पुरुषने मळेरे, त्यारे सहुसहुना धर्म पळेरे। ते वासुदेवमाहातम्य मांइरे, कह्याछे सहुना धर्म त्यांइरे ॥१३॥ एम उद्भवस्वामिए कह्युंछेरे, ते सर्वे मारे हैये रह्युंछेरे । माटे धर्मने सह अनुसरीरे, भावे कृष्णनी भगति करोरे ॥१४॥ पाळो एटली आगन्या मारीरे, जेणे सुखी थाओ नरनारीरे। एह शिखामणनां वचनरे, सर्वे हृद-यमां धारज्यो जनरे ॥१५॥ वळी प्राकृत जीवनी रीतेरे, शोक स्वामिनो म करो चित्तेरे । एवं अखंडरूप अविनाशरे, तेतो केदिये न थाय नाशरे ॥१६॥ थाय प्रकट भूमिये महाराजरे, तेती जीवोना कल्याण काजरे। एवं उद्भव ने अंतर्ध्यानरे, तेतो खतंत्र-पणे निदानरे ॥१७॥ पण काळ करमने वशरे, नोय जीवोपेरे परवशरे। एम समझे छे दैवी जनरे, आसुरी मोह पामेछे मनरे ॥१८॥ माटे शोकने सरवे तजोरे, प्रत्यक्ष परमेश्वरने भजोरे। मानी मनमां उपदेशरे, हवे जाओ सहु देश प्रदेशरे ॥१९॥ हुंपण जाउंछुं पुर धोराजिरे, तमे रहेज्यो सहु जन राजिरे। कहुं सांभळज्यो सहु जनरे, एम बोल्या प्रभुजि वचनरे ॥२०॥ सुणी शोक तज्यो सहु जनरे, जाण्या प्रश्वजिने गुरु मनरे। पछी गयां घेरे नरनारीरे, हदे हरिनी मुरति धारीरे ॥२१॥ हरि निजगुरुने विरहेरे, चित्ते क्षोभ ने दुःखी छे देहेरे । पण अंतरदर्शने करीरे, धारी रह्माछे धीरज हरिरे ॥२२॥ पोते हयों ते सर्वेनो शोकरे, माटे हरिनाम कहे लोकरे। पछी बहु संत लड़ साथरे, त्यांथी चाल्या नीलकंठ नाथरे ॥२३॥ धर्म प्रवर्तावामां छे चित्तरे, आव्या

धोराजि संते सहितरे। तियां अतिहेते करी जनरे, कर्यु प्रश्नजिनुं ते पूजनरे ॥२४॥ दइ दर्शन आव्या भाडेररे, निजजन पर करी मेररे । यांथी माणावद्र गया नाथरे, निरखी जन थयांछे सना-थरे ॥२५॥ त्यांथी पिपलाणामां पधार्यारे, जनने मन मोद वधार्यारे । त्यांथी आव्या गाम अगत्राहरे, जियां भक्त छे पर्वत माइरे ॥२६॥ त्यांथी आव्या गाम कालवाणीरे, निजदास पर दया आणीरे। कियां एक दिन कियां दोयरे, कियां त्रण दिन रह्या सोयरे ॥२७॥ सहुने ज्ञान आपी समझाव्यारे, पोतपोताने धर्मे रखाव्यारे । पोते गुरुनी आगन्या मानीरे, बेठा वाहनपर सुखदानीरे ॥२८॥ भारेभारे वस्त्र ने भूषणरे, पहेर्या जनहिते ते जीवनरे । स्त्रियोने धर्ममां रखावारे, बोरुया तेशुं तेने सुख थावारे।।२९।। कर्युं मोटी उपाधिनुं ग्रहणरे, पण रति नश्री अंतः-करणरे। कोइ समे ने कोइ ठेकाणेरे, नथी आसक्त सौ जन जाणेरे ॥३०॥ सर्वे धर्मने स्थापवा काजरे, गया मांगरोळे महाराजरे। शहेर बार छे सुंदर वटरे, शोभे सिंधुतीरे त्यां निकटरे ॥३१॥ कर्युं एकांते वडे आसनरे, तियां आव्याछे जिज्ञासु जनरे। करी दर्शन पाम्या आनंदरे, वाध्यो हर्ष जोइ जगवंदरे ॥३२॥ तियां संत वसे छे समोहरे, जेने काम कोध नहि मोहरे। व्यापकानंद स्वरूपानंदरे, एहादि निरस्वी पाम्या आनंदरे ॥३३॥ गोवर्धन दामोदर जेहरे, रामचंद सुरचंद तेहरे। रतनजि आद्ये ए वणिकरे, क्षत्रि मंछाराम भक्त एकरे ॥३४॥ धनजि माधो आणंदभाइरे, त्रिकम ने राजु भाणवाइरे। एहादि लइ ग्रूद्र अपाररे, सहु आविबेठां नरनाररे ॥३५॥ करे सेवा पुछे समाचाररे, भले पथार्या प्राणआधाररे । तेहप्रत्ये हरि धिरा रहीरे, जेम छे तेम वारता

कहीरे ॥३६॥ कह्यं स्वामी रामानंद जेहरे, गया स्वधाममां तजि देहरे। सुणी सर्वे शोकातुर थयारे, खामी आपणने छळि गयारे ।।३७।। त्यारे हरि कहे संत सुजाणरे, प्रभु रह्या छे प्रकट प्रमाणरे। बहु समर्थ छे बाळ नानारे, सहु जाणशे नहि रहे छानारे ॥३८॥ एम कहीने घीरज आपीरे, शोक खामिनी कोरनो कापीरे। पछी वाव्य तियां एक हतिरे, जेनुं खादु जळ मीठुं अतिरे ॥३९॥ तेती काळे करी बुराणिरे, नावे कामे ते कोइने पाणिरे। तेतो गळावि आपे महाराजेरे, सहुने जळ पिवाने काजेरे ॥४०॥ काढ्यो गाळ ने जळ निसर्थुरे, पछी कर्यु ए वान्यतुं भर्युरे। कर्यो मोटो उत्सव ते दिनरे, तेड्या ब्राह्मण करवा भोजनरे ॥४१॥ थोडो घणो लीघो सराजामरे, आदर्युं तेपर मोडुं कामरे। द्विज शहेरना सर्वे नोतर्यारे, तेणे मनमान्या मोदक कर्यारे ॥४२॥ तीर्थवासिने काजे तैयाररे, कर्यों शिरो पुरी ने कंसाररे। सतसंगिने कह्यं वचनरे, जमो आज उत्सवनुं अन्नरे ॥४३॥ कहे कविश्वासी केम थाशेरे, सिधुं खुटशे ने लाज जारोरे। पण न खुट्युं सीधुं ने लोटरे, नावी दाळ मशा-लानी खोट्यरे ॥४४॥ जम्या द्विज हजारो हजाररे, बीजा सत्संनी जम्या अपाररे । रुडीरीत्ये शुं कर्यों समैयोरे, तेतो मुखे केम जाय कैयोरे ॥४५॥ देवतानी तृपतिने काजेरे, कराव्यो हवन महारा-जैरे। करतां पूजन देवतातणुंरे, दीठुं जने त्यां आश्चर्य घणुंरे ॥४६॥ सतसंगी साधु सह कोइरे, सह रहांतां हरिने जोहरे। त्यांतो थयुं अलौकि दर्शनरे, जोइ मगन थयां सहु जनरे ॥४७॥ दीठां चार आयुध चारे हाथेरे, सारी मुगट धर्योछे माथेरे। पहेर्या पीतांबर् हेमरूपरे, घनश्याम मूरति अनुपरे ॥४८॥ श्रीवत्स चिह्न शोभेछे घणुंरे, एवं दर्शन थयुं हरितणुंरे । तेने डाबे पडखे १३ भ०चिं०

दयाळरे, दिठी श्वेत मूरति विश्वाळरे ॥४९॥ चार मुख ने अष्ट छे द्रगरे, चार हाथ ने चार छे पगरे। जोडिरह्या जुग कर आगेरे, प्रहि एके पूजा अनुरागेरे ॥५०॥ एक हाथमां छे धर्मशास्त्ररे, श्वेतां-बरे शोभेछे सुंदररे। अंगोअंग शोभे अलंकाररे, रत्नजडित मुगट साररे ॥५१॥ अतिशांत एवा धर्म माळीरे, जोयुं जमणिकोरे निहा-ळीरे। दिठां द्विश्वजवाळां भगतिरे, वस्त्र घरेणे शोभेछे अतिरे ॥५२॥ गौरतन कनक कर थाळीरे, पूजाविधि लीधीछे ते माळीरे । एवा विष्णु भक्ति धर्म जोइरे, बाम्या विसाय जन सहु कोइरे ॥५३॥ कहे मनुष्याकारे आ ग्रुराररे, एवं दीठं छे ग्रुहूर्त वाररे। पछी पूजाविधि पुरो थियोरे, सर्वे जन मन मोद आवियोरे ॥५४॥ पछी वेदवित जे ब्रह्मनरे, बीजां मळ्यां हतां वहु जनरे। करी निश्चय ते थया आश्रितरे, रह्यां वचनमां करी प्रीत्यरे ॥५५॥ मेली बीजा देवनी उपासरे, थयां श्रीकृष्णदेवनां दासरे। एम निज ऐश्वर्य अनृपरे, देखाङ्युं ए प्रकारनुं रूपरे ॥५६॥ जोइ बाह्मण ने बीजां जनरे, दृढ निश्चय करी लिधुं मनरे। एह देखाड्यो प्रौढ प्रतापरे, जोइ जन मगन थयां आपरे।।५७॥ ऋतु वसंत समानेविषेरे, कर्युं चरित्र ए जगदीशेरे। एह चरित्र श्रीहरितणुरे, कह्युं थोडं ने रह्युंछे घणुरे ।।५८।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचिंतामणिमध्ये श्रीमांगरोळे महाराजे उत्सव कर्यो 'एनामे अडता ळिशमुं प्रकरणम् ॥४८॥

पूर्वछायो-शुभमति सहु सांभळो, अतिप्रतापी कृष्णदेव। त्यार पछिनी वारता, कहुं सांभळो सहु ततखेव॥१॥ अतिसामधिं वाबरे, जनमन मनावा काज। लोकमां अलौकिकपणुं, देखाडेछे महाराज॥२॥ जे सुख न सुण्युं श्रवणे, नयणे न दिदुं निरधार।

तेह सुख आ भूमिमां, भोगवेछे नर ने नार ॥३॥ तेह प्रताप श्रीहरितणो, जाणे जन सहु कीय । त्यार पछिनी कथा कहुं, सह सांमळज्यो चित्तप्रोय।।४।। चोपाई-प्रश्रु समर्थ सुखना धाम, बेठा संतमांहि घनश्याम । करे ध्यान धारणानी वात, सुणी जन थाय रिळयात ॥५॥ पछी थया थोडाघणा दन, बेसे संत नै करे भजन । त्यांतो ध्यानमां दीठा दयाळ, सहजानंद जनप्रतिपाळ ।।६।। जेना एकैक अंगे निदान, कोटि सूरज शशिसमान। निसरेछे तेजना समोह, घनक्याम मुरति छे सोह ॥७॥ अंगे पहेयाँ पीतांबर नाथे, मोरम्रगट धर्योछे माथे। कौस्तुभमणि वैजयंतिमाळा, दिव्य घरेणे शोभे रूपाळा ॥८॥ वेउ हाथे वजाडे छे वेण, एवा कृष्ण दिठा सुखदेण। थयुं एवं साक्षातकार द्रष्ण, जाण्या पूर्ण पुरुषोत्तम कुष्ण ॥९॥ पछी करी परस्पर वात, थया संत राजी रिक्रयात । सहजे सहजे आपेछे आनंद, सुखदायी खामी सहजानंद ॥१०॥ सहजे सहजे थायछे समाध्य, जे कोइ देवने छे जो दुराध्य। पछी चलाव्युं एज प्रकरण, थाय समाधि होय स्मरण ॥११॥ बाळ जोबन ने बृद्ध वळी, थाय धारणा ने पडे ढळी। द्विज क्षत्रि वैक्य श्रद्र चार, होय कोइ नर वळी नार ॥१२॥ पडे नजरे थाय प्राण लीन, मर होय कोइ जो मलिन । रामउपासीश्रामने देखे, कृष्ण-उपासी कृष्णने पेखे ॥१३॥ नृसिंहउपासी देखे नृसिंग, देखे इष्ट थाय दले दंग। शिवउपासी देखे शिवने, थाय दर्शन बहु जीवने ।।१४।। देवीउपासक देखे देवी, आवे ध्यानमां मूरति एवी। आवे जैन देखे तीर्थंकर, वळी म्लेछ देखे पेगांबर ॥१५॥ पीरउपासी देखे पीरने, वीरउपासी देखे वीरने । देखे ब्रह्मने ब्रह्मउपासी, एकरस चिद्धनराशि ॥१६॥ वामनउपासी देखे वामन, लछमनना

देखे लल्जमन । देखे हनुमानना हनुमान, थाय मार्गिने धणिनुं ध्यान ॥१७॥ सर्यउपासी सर्य निहाळे, भैरवउपासी भैरव भाळे। एम आप आपणा जे देव, देखे ध्यानमांहि ततखेव ॥१८॥ होय पापी ते देखे कृतांत, जेवुं देखे कहे तेवुं वृतांत । कोह देखें छे शेष गणेश, थाय धारणा एम हमेश ॥१९॥ देखे सुरपुर ने कैलास, कोइ सत्यलोक वैक्वंठवास। कोइ गोलोक ब्रह्मनगरी, एम देखाडे ध्यानमां हरि ॥२०॥ कोइ देखे देहनुं खरूप, महा मलिन जाणे नरककूप। देखे पोतानुं पारकुं मन, जेम देखे तेम कहे जन।।२१॥ एम देखाड्यो प्रताप घणो, सङ्कु जाणे आ महाराजतणो । देखे नाथने नाडी तणाय, निरखी खामिने समाधि थाय ॥२२॥ पछी सहुने वात साची लागी, थया सत्संगी खमत त्यागी। चारी संप्र-दायना संत आव्या, जाणी कल्याण स्वामिना काव्या ॥२३॥ तेने शिखवेछे योगकळा, शिखे जन मळी ते सघळा। जेजे देखेँ समाध्ये साक्षात, सुणो सहु कहे तेनी वात ॥२४॥ राधा पार्षदादि व्रजपति, देखे गोलोकमां करी गति। वैक्वंठ रमा ने पार्षद, देखें समाधिमां हरि सद्य।।२५॥ कोइ देखें महापुरुष अभेव, श्वेत-द्वीपमुक्त नासुदेव । रमा पार्षद भूमापुरुष, देखे तेजमंडळ सुजस ॥२६॥ कोइ नरनारायण ऋषि, देखे विशालाने थाय खुशि। को-इने योगेश्वर भगवान, तेनुं करावे जनने घ्यान ॥२७॥ क्षीरसागरे कमुळासाथ, देखे शेषपर सुता नाथ। कोइ देखे हिरण्यमय श्याम, अर्कविवसहित सुखधाम ॥२८॥ यज्ञपुरुषरूप जन जोय, माने सहुनुं कारण हरि सोय । कोइ नाडी प्राणने संकेली, देखे प्रकट मूर्ति रसिली ।।२९।। प्राण राखवा त्यागवा तर्त, थया खतंत्र जन समर्थ । कोइ सिद्धासन पद्मासन, जाणे वीर वज्रासन जन ।।३०।।

खस्ति शवासने राखी प्राण, थाय तन सम काष्ठ पापाण। बाळ युवा बुद्ध त्रिया जेह, ध्यानमांथी न नीसरे तेह ॥३१॥ तेमांथी केने प्रहरे जगाडे, केने बेपोरे केने वे दाडे। केने पक्ष मास मासे दीय, जागे त्रण चार मासे कीय ॥३२॥ थोडे काळे बहु काळे उठाडे, शब्द संकरपे जोइ जगाडे । कोइ न जामे नावे देहमां, तेने जोरे लावे तन तेमां ॥३३॥ कोइ ब्रह्मपुर वैकुंठ जेह, करे गोलोकनी वात तेह। श्वेतद्वीप त्रिलोक निहाळी, कहे सुरासुर स्थान भाळी ।।३४।। कहे स्थान अज हरि हरनुं, कहे लोकालोकथी परनुं। भूगोळ खगोळ के पाताळ, उत्पति स्थिति ने प्रलयकाळ।।३५॥ एवा जोइ पाकी स्थितिवाळा, तेने शिखवेछे योगकळा। शिखवे नाडी र्खेचिने मेले, सर्वे अंगेथी प्राण संकेले ॥३६॥ एक अंगे लावे जीन प्राण, एम शिखवे सहुने सुजाण । पछी अंग कापे बाळे कोय, तेनी पीडा पंडे लेश नीय ॥३७॥ कोइ रह्या अंतर्दष्टि करी, कोइ देखे दृष्टि आगे हरि। कोइ एकनेत्रे मूर्ति लावे, कोइ दोय द्रगमां ठेरावे ।।३८।। कोइ उक्टां पलटावे नेण, एम शिखवेछे सुखदेण। तेमां मूर्ति मिटेथी न जाय, अक्षिविद्या एनाम कहेवाय।।३९।। फेरि नेत्र ताणे नाडी प्राण, एह अक्षिविद्यानुं एधांण । अनिमेष रहे द्रग दोय, एवं शिखवे श्रीहरि सोय ॥४०॥ पट चक्रमांथी चक्र एक, शिखवे प्राण रुंधवा चिवेक। एकचके रही सुणे बहुरव, एकचके रही गणे प्रणव ॥४१॥ इंडा विंगळा सुषुम्णा नाडी, तेने मारगे चलावे दाडी । रवि चंद्रज्ञं क्रोक पमाडे, कोइने सुरपुर देखाडे ।।४२।। करावे अन्यतनमां प्रवेश, जागे परना मननी अशेष। वळी परना प्राण करे रुंध, एवं शिखवे जनने सबुद्ध ॥४३॥ जाणे परना अंतरनी आपे, तेतो श्रीहरिने परतापे। एवी प्रताप

न जाय कैये, सहु विचारि रह्याछे हैये।।४४।। पर्छी वात चाली गामीगाम, कहे प्रकट्या पूरणकाम । वळी बांध्यां सदावत बहु, सुणी सहु नाम तेनां कहुं ॥४५॥ माणावद्र लोज मांगरोळे, थाय तीर्थवासी त्यां टोळे। अगत्राइ भाडेर धोराजी, तियां जमे साधु थाय शजी ॥४६॥ जामवाळि भ्रज ने नगर, फणेणी साकळी जेतपर । कोटडं गढडं कारियाणी, आवे तीर्थवासी तियां ताणी ।।४७।। जेतलपुर ने श्रीनगर, एह आदि बीजां बहु पुर । दिये सदावत देदेकार, सर्वे जन करे जेजेकार ॥४८॥ एम आनंद उत्सव थाय, गुण श्रीहरिजिना गवाय । पछी महाराज कहे मुनिराय, अमे जार्छ सतसंगमांय ।।४९।। तमे राजी आनंदमां रहेज्यो, रुडि-रीत्ये सदावत देज्यो। एम कही खामिसहजानंद, चाल्या जनने देवा आनंद ॥५०॥ त्यांथी आव्या मेघपुरमांय, मळ्या मुक्तानंद-खामी त्यांय । तेतो गयाहता कच्छदेश, देवा सहुने सारो उपदेश ॥५१॥ तेणे सुणिति समाधिकाने, नोती मनाणी मायाने भाने। तेना व्योममां फोम न रइ, बोल्या सत्संगनो पक्ष लइ ॥५२॥ कहे सहनी समजण काची, मानी जुठी समाधिने साची। आटला दिन सत्संग करी, घडिकमां मति केम फरी।।५३।। महाराज दियो पाखंड मेली, सतसंगमां न थावुं फेली । समाधि कांइ नथी सोयली, मोटा योगिने पण दोयली ॥५४॥ तेतो जेने तेने केम थाय, बिजा माने अमे न मनाय । पछी हरि बोल्या धीरा रही, मुक्तानंदजिने वात कही।।५५॥ कहे सहु मळी करेछे जन, खामी रामानंदनुं भजन । तेमांथी एने जणातुं हशे, तेतो वारशो पण तेम कहेशे ॥५६॥ एम वात करी बहुवार, पण मनाणी नहि लगार। पछी पासे हता संतदास, जैने अंतरे छे परकाश ॥५७॥

Marketen ...

तेने बेसार्या धारणामांइ, नाडी प्राण रह्या नहि कांइ। कहे मुक्ता-नंदने श्रीहरि, जुवो धारणा धीरज्ये करी ॥५८॥ जुवो हाथ ने पगनी नाडी, जो जागेतो उठाडो जगाडी। मुक्तानंदजिये कर्यो विचार, नश्री वात खोटी निरधार ॥५९॥ आबुं नथी दिठुं ने सांभळ्युं, तेतो केम करी जाय कळ्युं। पछी महाराजे तेने जगाडी, कह्युं वात करो व्यक्ति पाडी ॥६०॥ संतदासना छे सत्य बोल, कहे दीठो में ब्रह्ममहोल । तेमां मूरति दीठी में दोय, उद्भव ने श्रीकृष्णनी सोय ॥६१॥ उद्भव ते रामानंदरूप, श्रीकृष्ण ते आ हरिखरूप। शिव ब्रह्मा ने सनकादिक, बीजा ऋषि मुनि त्यां अनेक।।६२।। एहादि बहु मुक्तसमोहे, तेणे विद्या दिठा एह दोहे। एह दोय छे तेजनो पुंज, कोटि अग्नि अर्क शशि सर्ज ॥६३॥ तेज तेज तेज तियां अति, तेमां दीठी ए दोय मूरति । स्वामिरामानंद बोल्या एम, मुक्तानंदे मान्युं नहि केम ॥६४॥ साची वात जुठी केम थारो, अंत्ये साचुं हरो ते मनारो । वळी वीजा जे समाधि-वान, तेणे एनुं ए कह्युं निदान ॥६५॥ वळता मुंझाणा न सुझ्युं कांइ, पछी जोयुंछे अंतरमांइ। हतो पोताने जेनो विश्वास, ते दीठा जेठो माधवदास ॥६६॥ माधवदासे करी वात मोटी, मानो ग्रुक्तानंद नथी खोटी । ग्रुक्तानंद संशयवंत थया, यांथी सह कालवाणीए गया।।६७॥ आव्या सांभिकिने सहु जन, निर्षि नाथने थयां मगन । बिजां आव्यां बाळां भोळां बहु, तेतो सुखी समा-धिए सहु ।।६८।। थाय धारणा न रहे नाडी, मेले कोरे उपाडी उपाडी। एवी सामधीं सहुने देखाडी, कह्युं एकने आव्य जगाडी ॥६९॥ तैये सर्वे झटोझट जाग्यां, आवी प्रभुजिने पाये लाग्यां । कहे महाराज मळे जो कोटी, केम करशे समाधिने खोटी ॥७०॥

सुणी मुक्तानंदे मेल्युं मान, प्रभु तमे पूरण भगवान । पछी नम्न-ताए पाय नम्या, प्रश्च करज्यो अमपर क्षमा ॥७१॥ पछी प्रेमेशुं पूजिया नाथ, करी स्तुति ने जोडिया हाथ। त्यारे प्रभुजि प्रसन्न थया, करी मुक्तानंदजिने दया ॥७२॥ पछी मुक्तानंदने वचने, थाय समाधि बहु जनने । देखे खर्ग कैलास वैकुंठ, तेमां जराय न मळे जुठ ॥७३॥ देखे गोलोक श्वेतद्वीपने, जोइ ब्रह्मपुर हर्षे मने । एहआदि बिजां बहु घाम, जागी जन लिये तेनां नाम । ७४॥ पछी एज प्रकरण चलाव्युं, सर्वे जनतपे मन भाव्युं । जेजे संत बेसारे भजने, थाय समाधि तेने वचने ॥७५॥ संत विना बिजां जन जेह, थाय समाधि करावे तेह। ते प्रताप छे महाराजतणी, शुं कहीए बळी वर्णवी घणो ॥७६॥ त्यारपछी गया गुजरात्य, कहुं तेहनी सांभळो वात । जइ अमदाबादमां आप, तियां देखाड्यो प्रौढ प्रताप ॥७७॥ आवे दर्शने कोइ नरनार, तेना हृदयमां दिसे मोरार । थाय समाधि न रहे नाडी, नाथ उठाडे तेने जगाडी ॥७८॥ सर्वे लोक आश्वर्य पामियां, नाथचरणे शिश नामियां। जन मळी करे जेजेकार, प्रभु प्रकट्या थयो अवतार ॥७९॥ एवी वात श्रवणे सांभळी, उठ्या भेख अंतरमां बळी । आव्या मारवा मळी असुर, जेम उल्लकने उग्यो सुर ॥८०॥ पछी नाथे निर्मा-नने प्रद्युं, आपे समर्थपण सर्वे सद्युं। एमां करवुं हतुं जे काज, करी चाल्या त्यांथी महाराज ॥८१॥ संत जोइने पामिया सुख, थयुं दुष्ट पापियाने दुःख । दिव्यचरित्र करी ग्रुरारी, आव्या सोर-ठमां सुखकारी ॥८२॥ इतिश्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वाभिशिष्यनिष्कुलानंदगुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये महाराजे समाधितुं प्रकरण चलान्युं एनामे ओगणपचासम् प्रकरणम् ॥४९॥

पूर्वछायो-ध्यान धारणा अति घणी, लिये समाधिये जन सुख। जोइ प्रताप महाराजनी, दिलमां न मनाय दुःख।।१॥ चोपाइ-एवो पौढ प्रताप जणाच्यो, देखी दासने आनंद आच्यो । सर्वे जनने चडी खुमारी, निर्धि सहजानंद सुखकारी ॥२॥ बोले मित्तमांहि अतिमोर्ड, एक खामी सत्य बीजं खोडं। खामी मळये कल्याण छे कोट्य, बिजि वातमां आवशे खोट्य ।।३।। ज्यारे सेवशो स्वामिनां चरण, त्यारे जाशे जनम ने मरण। बीजे शीद रह्याछी बंधाइ, मेलो मत आवो संतमांइ॥४॥ मन्न मांस दारी चोरी मेली, आवो सतसंगमां मटो फेली। गांजा भांग्य मफर केफ मेली, मेलो माजम लसण डुंगळी ॥५॥ पय पाणी गळी वळी पीजे, सतसंगमां परीत्ये रहीजे। एवी वात करे संत सहुं, सुणी थाय सतसंगी बहु ।।६।। वळी गुरु जे सत्य असत्य, तेनी देखाडे पाडी विगत्य। साधु असाधुनी ओळखाण, तेनां देखाडे सर्वे एघांण ॥७॥ सर्वे शास्त्रतणी सांख्य लावी, दिये असाधुने ओळखावी। कहे असाधुथी न सरे अर्थ, एतो लेवाने बेठा छे गर्थ ॥८॥ माटे सतसंग सह करो, सीद लख चोराशिमां फरो। एवी वात श्रवणे सांभळी, सर्वे असाधु उठिया नळी ॥९॥ प्रथम भेखमां द्वेषज पेठो, कळि मळी एने घेर बेठो । जियांतियांथी उठ्याछे बळी, मांड्या संतने मारवा मळी ।।१०।। जोज्यो जीवनम्रुक्तनुं जोर, आपणने कीधा चोखा चोर । आपणा शिष्य प्रमोदी लीधा, दह उपदेश पोताना कीधा ॥११॥ माटे आजथी सहु एम धारो, जेने ज्यां मळे त्यां एने मारो । लइ छुगडां तुंबडां फोडो, वळि सदाव्रत एनां त्रोडो ॥१२॥ एम परियाणी असुरसेना, मारे साधुने वांकज विना। गर्ज गिध ने श्वान शियाळ, काक चिलए वर्णचंडाळ॥१३॥एनी

जणाय जुजवी जात्य, मळे मारणे छे एक नात्य। एम दाम वामे फेले एक, एवा भेळा थयाछे अनेक ॥१४॥ आव्या जायमा उपर मळी, मांख्या साधुने मारवा वळी । नाखे गेडी धोका ने लाकडी, करी झाझि पथरानी झडी ॥१५॥ तेतो साधुए शरीरे सह्यं,अति-निरमानिवत ब्रह्मं। असंते असंतपणुं करी, पछी गया ए सरवे फरी ।।१६।। पछी खामी कहे सुणो संत, आतो भेखे उपाङ्युं अतंत । आपणे तो खम्या घणुंघणुं, कोणे न कर्युं उपर आपणुं ॥१७॥ हवे सदावतनुं शुं काम,मेलो उपाडी म पुछो नाम। ज्यारे प्रभुने गमीयुं एम, त्यारे आपणे करवुं तेम ॥१८॥ त्रोड्यां सदावत तेह काळे, पछी बांधि मंडळी दयाळे। संतो विचरो देशविदेश, जेम छे तेम राखज्यो वेश ॥१९॥ वर्तज्यो पंचत्रत प्रमाणे, जे कोइ लख्यां छे वेदपुराणे। अष्टभात्ये त्रिया धन त्याग, राखज्यो उरे अति वैराग ॥२०॥ सुंदर मूरति राखज्यो सारी, तेने पूजज्यो प्रेम वधारी। बहु-विधनां वाजां वजाडी, करज्यो आनंदे उत्सव दहाडी।।२१।। कथा कीर्तन वात करज्यो, एम देशविदेशे फरज्यो। अस वस्त्र जे आपशे तमने, तेतो नहि जाय हाथ जमने ॥२२॥ वळी वात तमारी सांभळशे, तेनां जन्ममरण दुःख टळशे। भावे करशे तमारुं दर्शन, तेनुं थाशे निरमळ मन ॥२३॥ माटे मोटो उपकार एह, तमारे पण करवो तेह। पछी संत राजी सहु थया, मागी आगन्या फरवा गया ॥२४॥ फर्या सोरठ देश हालार, पछी आव्या पंचाळमोझार । भाळयो भाल ने गुर्जरदेश, कर्यो सिद्धपुरे परवेश ।।२५॥ थयो सिद्धपुरनो समैयो, कर्यो उत्सव न जाय कह्यो। सर्वे संत हता हरि मेळा, महाराजे करी मोटी लीळा ॥२६॥ सारी संत महाराजे समैयो, कर्यो सिद्धपुरनो ते कह्यो। पछी पोते सोरठमां

आव्या, मेघपुरमां वित्र जमाव्या ॥२७॥ राख्या ब्राह्मणने षद मास, जिमजिमने थया उदास। पछी बृंदातणो विवाह करी, आव्या काठियावाड्यमां फरी ॥२८॥ सुंदर सारुं कारियाणी गाम, भक्त वसे तियां मांची नाम । तेने घेर पधार्या महाराज, करवा अनेक जीवनां काज ॥२९॥ मांचे बहु करी मनुवार, जुक्ते जमाड्या प्राणआधार । पछी पासे वेठा जोडी पाण, बोल्या महाराजप्रत्ये सुजाण ।।३०।। नाथ अमारा कुळमां एक, नाम एभलं जाणे विवेक। तेनो पवित्र छे परिवार, तेतो तमने इच्छेछे अपार ॥३१॥ कांतो त्यां जइ दर्शन दीजे, नहितो तेने तेडावि यां लीजे। त्यारे एम बोल्या महाराज, एतो सरवे छे भक्तराज ॥३२॥ इयां जावानुं थाशे अमारे, निश्चे मानज्यो मने तमारे । रहेशुं अमे तियां घणुं-घणुं, करशुं मनमान्युं एहतणुं ।।३३।। ज्यारे थाशे अमारुं दर्शनः त्यारे नहि रहे बीजे मन । एम जणायछे वात अमने, निजभक्त जाणी कहुं तमने ॥३४॥ सुणी मांचे ए सरवे वात, थया अति पोते रिक्रियात । एम करतां थोडेघणे दने, आव्यां सरवे ए मळी दर्शने ॥३५॥ आवी निरख्या नयणां भरी नाथ, जोइ जीवन थयां सनाथ । जेवा जोया नयणे निरखी, तेवा लीधा छे अंतरे लखी ॥३६॥ जोयुं महाराजे हेतेशुं ज्यारे, थयां मने मगन जन त्यारे। पछी सर्वे बोल्यां जोडी हाथ, असे छीए तमारां हेनाथ ॥३७॥ अमपर करी हरि मेर, आवो दया करी अमधेर । एवी सांभळी जननी वात, थया प्रभु पोते रिळयात ॥३८॥ तेह विना आव्यां बहु जन, करे नाथनां सहु दर्शन । आव्या देशप्रदेशना संघ, नरनारी जे अति अन्य ।।३९॥ करे पूजा गाय कीरतन, थाय कथा

सुणे सहु जन। देशोदेशनां दर्शने आवे, आपे आज्ञा तलाव गळावे ॥४०॥ एम करे नित्य नवी लीळा, दिये सुख करी जन भेळा। पछी साधुने आपीछे शीख, हवे फरवा जाओतो ठीक ॥४१॥ पछी संतने शीखज आपी, रहेज्यो निर्भय कही पिठ्य स्थापी। संत सधाविया नामी शिश, पोते पधार्या गुर्जरदेश॥४२॥ गया संत मळी झालाबाड्य, आवी असुरे रचावी राड्य। सर्वे साधुने दुःखज दीधां, वळी बस्न शास्त्र छंटि लीधां ॥४३॥ त्रोडि माळा करी बहु जेली, लीधां तुंबडां तिलक ठेली । जोरे ठाकोरमूरति लीथी, तेने भांगिने खंडित **की**थी ॥४४॥ एट**छं करी असाधु गया,** तीय संत संतपणे रह्या । पछी मुक्तानंद बोच्या मुखे, संतो शोक तजी रहेज्यो सुखे ॥४५॥ थयुं गमतुं मोविंदतणुं, जुवो ज्ञाने हुं गयुं आपणुं । एम कही चाल्या प्रभुपास, हता गुजरात्ये अविनाश ॥४६॥ जइ निरख्या नयणे नाथ, जोइ जीवन थया सनाथ । साम्रं जोइ राजी थया राज, कहो केम थयुं महाराज ॥४७॥ त्यारे संत बोल्या करभामी, सर्वे जाणोछो अंतरजामी । असुरे बहु दुःखज दीधुं, तेनुं उपर केणे न कीधुं ॥४८॥ पीड्या संतने वांक विनाय, लोभी राजाए न कयों न्याय । पछी सर्वे आच्या आंहि मळी, हवे कही तेम करीए बळी ॥४९॥ कहे महाराज थयुं ए सारुं, एम गमतुं हतुं अमारुं । एनी माळा तिरुकने मेलो, आपणे अलक्ष्यपणे खेलो ॥५०॥ एम कहीने आव्या वेलाल, राख्या कांईक संगे मराल । पछी बांधी संतनी मंडळी, पोते पथारिया कच्छ वळी ॥५१॥ एम उद्धारवा बहु जन, फरे संत ने श्रीभगवन । सहे उपहास जगकेरी, तोये न करे रीश लेश

फेरी ॥५२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्त्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्र एनामे पचा-समुं प्रकरणम् ॥५०॥

रागसामेरी-पछी प्रभुजि पथारिया, कच्छदेशमांहि कुपाळ। देवा दर्शन दासने, दीनबंधु दीनदयाळ ॥१॥ बाळ बृद्ध अंघ अपंग, अंगे अबळाजन । गामोगाम ने भवन भवन, दिघां तेने दर्शन ।।२।। आधुइ सापर कोट कंथा, भचाउ ने भुजमां गया। जियां स्वामी रामानंदजि, रहेता बहु करी दया।।३॥ मानकुवा ने मांडवी, गजोख पुनडी गामजि । डोण्य तेरा ताल काळे, फरिया सुंदर श्यामजि ॥४॥ पछी पोते प्रसन्न थइ, उत्सवनी इच्छा करी। दासने दरशन देवा, फेरवी कंकोतरी ॥५॥ देश सोरठ दुर्ग जुनो, तियां सहु आवज्यो तमे। सुंदर चैतर मासमां, शुदी पुन्यमे आवशुं अमे ॥६॥ पछी पोते पधारिया, कच्छदेशथी हालार। सत्संगी सहु संगे लइ, चाल्या प्राणआधार ॥७॥ पछी पोते आवी करी, बहु लीळा घोरा-जिये। संत सहुने सुख देवा, अतिशे मन राजिये।।८।। त्यांथी पधार्या गढ जुने, संगे सर्वे साथ छे। आसपासे दास दीसे, वचमां पीते नाथ छे ॥९॥ दइ ददामां चालिया, पुरबजारे पोते हरि अनेक जीवने उपरे, दर्शननी दया करी।।१०।। आश्रम वर्ण ओजलनी, जे आडे रह्यांतां आवरी। तेने घेर पधारिया, हेत जोइ पोते हरि ॥११॥ भोजन बहु भवने कर्या, फरिया सर्वे शहर। दीन दुरबळ दास उपर, महाराजे करी मेर ॥१२॥ वाजित्र बहुविधनां, वजडावियां वाजिपरे । संगे समृह जन लेइ, चाल्या कुंड दामोदरे ॥१३॥ नाहि दामोदर कुंडमां, ब्राह्मणने मरिभा-गिया। दिल उदारे दान दिघां, जेजे मुखे मागियां।।१४॥ जयजय

शब्दे जन बोले, मनमां मगन घणुं । पछी पोते प्रेमे करी, कर्यु देशैन दामोदरतणुं ॥१५॥ पछी पधार्या शहेरमां,आव्या हाटकेश्वर पोते हरि। दरशन करी देवनां, तियां विराजिया दया करी।।१६॥ शिवसेवक पाय लागी, मागी माया मुख दुःख कइ। तेनुं दारिद्र कापियुं, महोर शत पांच दइ।।१७॥ पछी पधार्या पुरवजारे, जोवा नारी जरुखे चडी । नाथ निर्खि हैये हरुखी, धन्यधन्य मानी घडी ।।१८॥ पछी हार अपार फुलना, प्रभुने पहेराविया। जेवा नयणे निरखिया, तेवा अंतरे उतारिया ॥१९॥ त्यांथी उतारे आविया, पुछी सीधानी सामगरी। विवने जमाडवाने, तेडाविया भावे भरी ।।२०।। जमवानुं जाणी ब्राह्मण, राजी थया मनमां । असुर जने विधन कीधुं, ब्राह्मणना भोजनमां ॥२१॥ स्मिधु जमाङ्युं संघने, पछी पोते पण पधारिया। एवी लीळा करी आपे, शहेर बारा आवीरिया ।।२२।। पछी संतने शीख आपी, फरो करो हरिवारता । जेजे वचन कह्यां अमे, तेह रखे विसारता ॥२३॥ प्रकट प्रमाण वात करज्यो, आस्तिक जनने आगळे। अमेपण आ संघ वळावी, आवशुं तमपासळे।।२४।।पछी संत सधाविया, फरिया ते देशोदेश। अनेकजीवने आगळ्ये, करे हितनो उपदेश॥२५॥दाम वामथी दूर वरते, तजी रस रसनातणो । तेने देखी दुष्ट दाज्या, मांड्यो द्वेष अतिघणो ॥२६॥ जियां तियांथी जलमी जोरे, उठे असुर मारवा । नर नरेश नजरे देखे, कोइ न आवे वारवा ॥२७॥ एक असुर आवे आपे, संतापे संत सोयने । कद्रजनी पेठे कष्ट सहे, कहे नहि तोय कोयने ॥२८॥ वळित तेनी वारता, सांभळी श्रीभगवान । अति दुःखाणा दिलमां, भाव्युं नहि भोजन पान ॥२९॥ पछी संत पासळे, पधारिया पोते इरि । देइ दर्शन

A PARTIE NAME OF THE PARTIE NAME

मळि वळी, साधु शुं वात करी ॥३०॥ सुणो संत श्रीहरि कहे, आपणे बहुबहु सह्युं । जेमजेम आपणे क्षमा करी, तेमतेम दुष्टे दुःख दयुं ।।३१।। आज पछी एक मारुं, वचन रुदीये घारवुं । दुष्ट आवे जो मारवा, तेने थोडंघणुं डरावडुं ॥३२॥ त्यारे ते संत बोलिया, महाराज नहि कही एम । भुंडा भुंडाइ नहि तजे तो, भला भलाइ तजे केम ॥३३॥ त्यारे प्रश्नुजि बोलिया, धन्यधन्य धन्य संत तमे। जडभरत कद्रज जेवा, क्षमावान ओळख्या अमे ।।३४।। जयदेव जेवा मे जाणिया, क्षमावंत तमे खरा । तमतुल्य त्रिलोकमां, मानो नथी ग्रुनिवरा ॥३५॥ तमारी क्षमावडे, श्राहो नाश असुर जननो । वणमारे ए मरशे, तमे त्रास तजज्यो तननो ॥३६॥ श्रमासम खडग नहि, जरणासम नहि जापरे । धीरज सम दाल नहि, मौनसम नहि शापरे ॥३७॥ क्षमावान जननो, जो असुर सुर द्रोह करे। देव दानव मानव मुनि ते, एह पापे आपे मरे ।।३८॥ माटे तमे मानज्यो, आव्यो असुरनो अंत आजथी। सुखे भजो श्रीकृष्णने, ए खरुं कहुं खोदुं नथी ॥३९॥ तमजेवा निरमानिनो, जेणे जेणे द्रोह कर्यो । जुवो विचारी आ जगतमां, आजमीयें कोण ठयों ॥४०॥ माटे एनो वेष उतारीने, अलक्ष्यपणे रहो तमे । पछी माळा पहेरज्यो, ज्यारे आगन्या करुं अमे ॥४१॥ त्यारे संत कहे सारुं खामी, जेम कहो तेम करशुं। माळा तिलक मुकी अमे, अलक्ष्यपणे फरशुं ॥४२॥ पछी कापी चोटी कंठियो, मुखसामुं जोइ हरि हशा। उतारी माळा मुद्रिका, ग्रही निरमानी दशा ॥४३॥ कहुं गाम कालवाणिए, हता परमहंस पांचशे। पंचत्रते पूरा शूरा, वैराग्य त्याग उरनेविषे॥४४॥ श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि शिष्यनिष्कुलानंद-इति

मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये साधुने श्रीजिमहाराजे कंठितिलकनो त्याग करावीने परमहंस कर्या एनामे एकावनमुं प्रकरणम् ॥ ५१ ॥

रागसामेरी-दुरवासाना शापथी, ऋषिए धर्या हता देह । तेह मळ्या छे महाराजने, करी अतिशे सनेह ॥१॥ एवा संतशिरो-मणि, तेना ते कहुं हवे नाम । ते सांभळतां सुख उपजे, वळी पामे परमधाम ।।२।। मोटा मुक्त महाराजना, भाइ रामदास अकाम । पंचवतनी मूरति, जेने वहाला सुंदरक्याम ॥३॥ मुक्तानंद छे नाम ग्रुख्य, शुक्रमुनि आदि अपार । सुंदर नाम सहु सांभळी, कहुं नामतणो निर्धार ॥४॥ खरूपानंद ने व्यापकानंद, ब्रह्मानंद ने गोविंद । नित्यानंद ने चैतन्यानंद, शांतानंद ने आनंद ॥५॥ शुकानंद निरंजनानंद, अद्वैतानंद ए नाम छे। अच्युतानंद अनंतानंद, आत्मानंद अकाम छे ॥६॥ अचित्यानंद ने अमोघा-नंद, अखंडानंद अजित जे। अद्भुतानंद अरिहन्नानंद, गोपाळानंद ब्रह्मवित जे ॥७॥ अरूपानंद अनुभवानंद, अक्षरानंद आधारिज । अपारानंद अष्टावक्रानंद, आदित्यानंद उदारिज ।।८।। अचळानंद अवधूतानंद, अजन्मानंद अजितम्रुनि । अखिलानंद अमूर्तानंद, एम नंदसंज्ञा सहुनी ॥९॥ अखिलब्रह्मांडेश्वरानंद, आकाशानंद ॐकारानंदजि । एक एकमां अपार बीजां, नामनां छे बृंदजि ॥१०॥ वीर्यानंद वैष्णवानंद, विश्वामचैतन्यानंद छे। वैराग्यानंद ने वस्रभानंद, विश्वरूपानंद खच्छंद छे ॥११॥ खयंत्रकाशानंद सदानंद, प्रज्ञानंद परमानंद वळी । परमचैतन्यानंद नाम, परम-हंस बोळा मळी ॥१२॥ वेदांतानंद वैकुंठानंद, कैवल्यानंद कृष्णा-नंद कहीए। महानुभावानंद ग्रुकुंदानंद, ज्ञानानंद घणा लहीए ॥१३॥ भगवदानंद भागेश्वरानंद, शिवानंद बहु संगन्या। श्यामा-

नंद ने राधवानंद, अक्रोधानंद क्रोध विना ॥१४॥ तत्वानंद त्रिविक्रमानंद, त्रिक्रमानंद तदरूप छे। निजानंद निजबोधानंद, सचिदानंद खरूप छ ॥१५॥ नियमानंद निर्मानानंद, निर्होभा-नंद निष्कामजि । निःखादानंद निःस्पृहानंद, नरनारायणानंद नामजि ॥१६॥ कल्याणानंद कौशिकानंद, जिज्ञासानंद जुक्ता-नंद जे । जक्तखंडानंद जगदीशानंद, चिन्मयानंद चिदानंद ते ॥१७॥ ईश्वरानंद परमेश्वरानंद, बलभद्रानंद नाम बहुजि । दयानंद दयाळानंद, भजनानंद ए सहुजि ॥१८॥ हर्यानंद नरहर्यानंद, धर्मानंद परमधर्मानंद ते । पुरुषोत्तमानंद प्रकाशानंद, त्यागानंद जगवंद जे ॥१९॥ सिद्धानंद सत्येश्वरानंद, शंकरानंद सुजाण छे । सञ्जनानंद ने सत्यानंद, कृपानंद मळये कल्याण छे।।२०।। केशवानंद कपिलेश्वरानंद, प्रभुतानंद प्रवीणिज । माधवानंद महापुरुषानंद, सत्क्रियानंद सुखदेणजि॥२१॥धीरा-नंद दृष्टप्रकाशानंद, घ्यानानंद घ्यान धरे। प्रभानंद ने पुरुषानंद, सांख्यानंद आनंद करे॥२२॥ चिदानंद चिद्रूपानंद, भास्करानंद भजे हरि । ऋषभानंद रामरत्नानंद, योगेश्वरानंद जाणो फरि ॥२३॥ निर्गुणानंद सद्घणानंद, गुणातीतानंदु गंभीरजि । नृसिं-हानंद निर्देद्वानंद, निरालंबानंद महाधीरजि ॥२४॥ विदेहानंद निःसंदेहानंद, निर्विकारानंदजि । विज्ञानानंद विश्वासानंद, देवानंद खच्छंदजि ॥२५॥ दित्यानंद वासुदेवानंद, निरपक्षानंद नचित्रजि । गणेशानंद गोतीतानंद, लक्ष्मणानंद अजित्रजि ॥२६॥ निवृत्तानंद नीलकंठानंद, अशोकानंद ओपे घणुं। आज्ञा-नंद अविनाशानंद, भद्रानंद भावानंद भणुं ॥२७॥ भवानानंद ने भूधरानंद, वळी अछेद्यात्मानंद छे। मायातीतानंद मंजु-१४ म•चिं०

केशानंद, रामानुजानंद सुखानंद छे ॥२८॥ हंसानंद हरिभ-जनानंद, हयग्रीवानंद हरिरूप जे। प्रद्युम्नानंद प्रतोषानंद, सर्यानंद खरूप जे।।२९॥ नरोत्तमानंद नारायणानंद, निर्मळानंद निर्मळ छे। परमात्मानंद प्रशांतानंद, मुक्तात्मानंद अकळ छे ॥३०॥ सवित्रानंद सत्येश्वरानंद, सुज्ञानंद सुजाण छे । यज्ञना-थानंद ज्योतीश्वरानंद, प्रबोधानंद प्रमाण छे ॥३१॥ रामचंद्रा-नंद रमेश्वरानंद, रासमंडळेश्वरानंद कहीए । प्रभ्वानंद पद्मना-भानद, वळी विश्वात्मानंद लहीए ॥३२॥ सुदेहानंद सर्वज्ञानंद, स्वरूपानंद शून्यातीतजि । योगानंद जगन्नियासानंद, अक्षर-रूपानंद अजितजि ॥३३॥ तापसानंद त्रिगुणातीतानंद, जगत्प्र-काशानंद जडभरतजि। गवेंद्रानंद गोलोकेश्वरानंद, श्वेतद्वीपानंद समर्थजि ॥३४॥ तूर्यानंद तूर्यातीतानंद, पतितपावन नाम छे। वामनानंद विवेकानंद, दृढवतानंद सुख्धाम छे।।३५।। श्रीगुरु-चरणरतानंद, निर्विशेषानंद कहीए। अनिरुद्धानंद अभेदानंद, मधुसदनानंद लहीए ॥३६॥ मंगळानंद मोहनानंद, वळी अन्य-यान्मानंद जे । सुवतानंद संशितवतानंद, वळी ज्ञानवल्लभानंद ते ॥३७॥ विचारानंद विश्वधरानंद, ज्ञानानंद क्षेमानंद खरा। सुखदानंद घनश्यामानंद, जिष्णवानंद योगेश्वरा ॥३८॥ अवदा-तानंद अतिप्रकाशानंद, मुक्तिदानंद वरदानंद कहीए। सुवर्णा-नंट श्रीनिवासानंद, बाळमुकुंदानंद लहीए ॥३९॥ प्रभानंद भास्करानंद, सुशीलानंद मनोहरा। आकाशनिवासानंद जाणो, प्रसादानंद नंद दहरा ॥४०॥ पवित्रानंद परमकैवल्यानंद, पद्म-धरानंद नरानंद छे। भूमानंद भक्तेश्वरानंद, सत्यधर्मानंद आनंद छे ॥४१॥ अनुपमानंद अक्षरनिवासानंद, गदाधरानंद करुणानंद

कहीए। शंखधरानंद सर्वेप्रकाशानंद, वळी सुखप्रकाशानंद लहीए ॥४२॥ चिदाकाशानंद चतुरात्मानंद, वळी चतुर्भुजानंद चतुं। हिरण्यगर्भानंद हरिप्रकाञानंद । वंशिधरानंद वर्णायुं । १४३॥ माया-जितानंद पुनितानंद, धामानंद रामशरणानंद 🐫 । एकएक नाम-मांहि, मानो मुनिनां ष्टंद छे ॥४४॥ पुंडरीका आनंद प्रधानपुरु-षेश्वरानंद, प्राणदातानंद प्रतापानंद जे । पावनानंद प्रकाशात्मा-नंद, प्रथितानंद प्रमेष्टानंद ते ॥४५॥ प्रमोदानंत पुण्यकी त्यानंद, पुण्यानंद कृतज्ञानंद कहीए। कारणानंद क्रोधहानंद, कुमीदानंद <mark>लोकाष्यक्षानंद लहीए ॥४६॥ विधात्रानद विशामनिद, वृपाक</mark>-प्यानंद वळी । वस्वानंद विश्वकर्मानंद, विश्वकरीनानंद वेदानंद मळी ॥४७॥ वेदांतानंद विजयानंद, विश्वतानंद विश्वानंद छे। वर्धनानंद विविक्तानंद, विशिष्टानंद खच्छंद छै।।४८॥ निर्मस्ताः रानंद निर्शृतानंद, धर्माध्यक्षानंद ध्रुवानंद छे । श्रिरानंद स्वविष्ठानंद, अप्रमेयानंद आनंद छे।।४९।। वृद्धपानंद वसुदानंद, व्यवसायानंद विद्यानंद वंदु। विषमानद विशालानंद, विम्रुक्तानंद जोइ आनंदु । ५०॥ विशोकानंद विश्वमूर्त्यानंद, हिरण्यमयानंद हवे । नैकरूपानंद नंदनानंद, नंदानंद निष्कुलानद कवे ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये परमहंसनां नाम कह्यां एनामे बावनमुं प्रकरणम् ॥५२॥

रागसामेरी-बीजां बाकी जे रह्यां, तेषण कहुं नाम । जे जन मन दइ सांभळे, तेह पामे परम धाम ॥१॥ अनादिसिद्धानंद उत्तमानंद, अग्राह्यानंद अछेद्यानंद जे । अलिंगानंद अनघानंद, अतींद्रियानंद अनिर्देशानंद ते ॥२॥ उदारानंद अनिलानंद, असं-

ख्येयानंद अतुलानंदजि । अव्यक्तरूपानंद अनंतजिदानंद, अका-मानंद अनुक्लानंदजि ॥३॥ आदिदेवानंद अयोनिजानंद, अक्षो-भ्यानंद उद्भवानंद छे। आदित्यवर्णानंद उदारात्मानंद, इज्यानंद ईशानंद् छे।।४।। अजितानंद उपेंद्रानंद, ईश्वरेश्वरानंद श्रुत्थानंदए। दुराधर्मानंद दुर्रुमानंद, दुर्मर्षणानंद सुदेवानंद ते ॥५॥ दक्षानंद दर्पहानंद, दुर्जयानंद दिव्यमूर्त्यानंद छे। भूतावासानंद ब्रह्मण्या-नंद, भक्तवत्यसानंद आनंद छे।।६॥ हरिभूषणानंद भावनानंद, भूगर्भानंद भूमानंद भणुं । आजिष्ण्वानंद अनिमेषानंद, गुरुगम्या-नंद गणुं ।।७।। महानंद महेश्वरानंद, महोत्सवानंद वंदु । महे-श्वासानंद महाशक्त्यानंद, महाभागानंद कही आनंदु ॥८॥ महें-द्रानंद महामखानंद, ज्ञानगम्यानंद गाइए । महाकमीनंद महा-भूतानंद, गुद्धानंद कही सुखिया थइए ॥९॥ धन्यानंद धरणी-धरानंद, वळी धृतातमानंद जेह। धर्मयूपानंद धनंजयानंद, त्रिलो-केशानद तेह ॥१०॥ सत्कर्त्रानंद संवत्सरानंद, शमात्मानंद सोय। सहस्रशीर्धानंद सामगानंद, सर्वविदानंद जोय ॥११॥ सहिष्या-नंद सत्वस्थानंद, सहस्रानंद जेह । सिद्धार्तानंद सिद्धसंकल्पानंद, सत्यप्रक्रमानंद तेह ॥१२॥ सिद्धिदानद श्रुतिसागरानंद, सत्य-कृतानंद संन्यासानंदित । श्रीगर्भानंद शत्रुहानंद, सुदर्शनानंद हरिकृष्णानंदजि ॥१३॥ सुमुखानंद सुक्षमानंद, सुभगानंद नाम सांभळे। शांतिदानंद सत्कीर्त्यानंद, सुलभानंदे पाप बळे।।१४॥ सत्यसंघानंद सत्यधर्मानंद, सद्गत्यानंद सुणो सहु । सुनेत्रानंद सद्धतानंद, शरणानंद सत्यानंद कहुं ॥१५॥ साक्ष्यानंद सुकृत्या-नंद, सुधर्मानंद ज्येष्ठानंद जे । चतुरात्मानंद चतुर्वेदानंद, वळी चतुर्व्युहानंद ते ॥१६॥ शाश्वतानंद छिन्नसंशयानंद, हृषी-

केशानंद कहीए । जितकोधानंद योगेशानंद, त्रिलोकानंद बुद्धा-नंद लहीए ॥१७॥ लोकनाथानंद रासेश्वरानंद, यज्ञानंद जयानंद जाणिए । निर्मत्सरानंद निव्नतानंद, परमहंस परमाणिए ॥१८॥ जेहजेहनां में नाम जाण्यां, तेहतेह कह्यां सिंह। पण सर्वनामनी साध्य संतो, मानज्यो मने नहि ॥१९॥ एहआदि अनंत मुनिनां, आवियां वळी बृंद । संक्षेपे कही सुणावियां, एम कहे निष्कुळानंद ॥२०॥ सुंदर नाम संन्यासिनां, जेने त्रणे एपणानो त्याग। विवेकी विचारवंता, उरमां अतिवैराग्य ॥२१॥ देवानंद दोय पूर्णानंद, श्रीधरानंद संन्यासिजि । शंकरानंद ने माधवानंद, केशवानंद हरिउपासिजि।।२२।। शिवानंद वासुदेवानंद, नित्यानंद कृष्णानंद कहीए।पद्मनाभानंद पुरुषोत्तमानंद, जनार्दनानंद लहीए॥२३॥ ज्ञानानंद अनंतानंद, वैष्णवानंद वळी । एहआदि अनेक संन्यासी, शोभेछे सर्वे मळी ॥२४॥ विजां नाम बहुकतणां, अति-उत्तम जाणो एह । त्यागी धन त्रियातणा, जेने सहजानंदशुं स्रोह ॥२५॥ मुकुंदानंद मुख्य मोटा, ब्रह्मचारी जयरामजि। वासु-देव वैकुंठ विष्णु, हरिकृष्ण हरिरामजि ॥२६॥ राघव रणछोड ऋषीकेशव, रामकृष्ण पूरणारामजि । नारायण गोविंद गोपाळ, गिरिधर आनंद अकामजि ॥२७॥ जज्ञनाय छखो छैने, एइआदि अपाररे । सर्वे अंगे शुद्ध साचा, भगवानना ब्रह्मचाररे ॥२८॥ बीजा दास बहु कर्या, तेहनां ते कहुं नाम। एकएकथी अधिक अंगे, निरलोभी निष्काम ॥२९॥ राघवदास माधवदास, गंगादास गोवरधन । हरिदास गांभीरदास, गणो ज्ञानदास पावन ॥३०॥ विष्णुदास ने प्रभुदास, सेवादास शीतळदास जे । प्रेमदास पुरुषोत्तमदास, रामदास ने संतदास ते ॥३१॥ नारायणदास

निर्रेपदास, वळी कल्याणदास कहीए। कपिलदास ने कृष्णदास, लक्ष्मणदास लहीए ॥३२॥ दयाळदास द्वारिकादास, भगवानदास भजे हरि । हरिदास हनुमानदास, जयरामदास जानकीदासरि ॥३३॥ एहादि जन मानी वचन, समिनने सुखिया थया। बीजा जन बहु हरिना, विश्वासे वळगी रह्या ॥३४॥ एम जुक्ते जुजवो, कर्यों नामनो निरधार । भावे जे जन सांभळे, ते उतरे भवपार ॥३५॥ आपी नाम करी आगन्या, तमे फरो देशविदेश। करो कल्याण जीवनां, आपी रुडो उपदेश ॥३६॥ पछी प्रभ्रने पाय लागि, वळी बोलिया एम वात । भलि उपाधि आळशि, आज अमे थया रळियात ॥३७॥ त्यागशोभा संतनी, एम कहे वेद पुराण। त्यागी थइ तन सुख इच्छे, एज मोटो अजाण ॥३८॥ तम विना त्रिलोकमांहि, हित कोण करे हरि। आज अमे सुखिया थया, तम दयाळु दया करी।।३९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये साधु संन्यासि ब्रह्मचारि तथा दासनां नाम कद्यां एनामे त्रेपनमुं प्रकरणम् ॥५३॥

चोपाइ-थया परमहंस सर्वे संत, अंगे त्याग वैराग्य अत्यंत । चौद लोकनां सुख जे कहावे, उलटा अन्नजेवां न भावे ॥१॥ एक कमंडळ कंथा कौपीन, एने अर्थे न थाय आधीन । करे भिक्षा मागिने मध्याह्ने, जक्तवात न सांभळे काने ॥२॥ अष्ट प्रकारे त्रियाना त्यागी, एम विचरेछे बडमागी । धन धातु जे सोना सहित, तेने भ्रूच्ये न चिंतवे चित्त ॥३॥ खान पान पट वळी पेखी, दल रिश्ने निह तेने देखी । पूजा चंदन पुष्पनी माळ, तेने मानेछे मनमां न्याळ ॥४॥ जेजे कावेछे संसारिसुख, तेने जाणेछे दलमां इ:ख । देह'इंद्रिय वळी मन प्राण, तेने शत्रु समझ्या सुजाण ॥५॥

मान मोटाइ मनमां न भावे, सुतां बेठां हरिगुण गावे। एवी रीत्ये फरे जगमांइ, निरबंध न बंधाय क्यांइ।।६।। करे ज्ञानवारता अपार, जेणे थाय जीवनो उद्धार । करी वातने कांइ न मागे, माने सह सारी बहु लागे।।७।। जन जोडे हाथ जोइ त्यागी, विजा भेखतुं पडियुं मागी। भेख दाझे लाजे मुख कहेतां, पड्या खोटा विना रेणि रहेतां ॥८॥ जेजे राखीछे साधुए रीत, बीजे न मळे विचारो चित्त । सर्वे सारतणुं जेह सार, सोंप्युं संतने प्राणआधार ॥९॥ जेजे साधुने सोंपी संपत्ति, ते सराये श्वेतद्वीपपति । प्रभ्र पोतेछे दीनद्याळ, जाणी निजजन करी संभाळ ॥१०॥ संत शुभगुणे अति ओपे, काम कोघ ने लोभ न लोपे। साधु सर्वे वळी हरिजन, तेतुं हरिए हर्युं विघन ॥११॥ अतोल सुख संतने आप्युं, सर्वे श्रुतणु मूळ काप्युं। साधु सरवे रहेज्यो आनंदे, हवे नहिं पडो कोइ फंदे ।।१२॥ तम जेवा नथी कोइ आज, एम श्रीमुखे कहे महाराज।सीद जोइए तमारे प्रवृत्तिं, तमे प्रहिरहोने निवृत्ति॥१३॥ सदावतमां शीद बंघावो, तमे गुण गोविंदना गावो। सदावत मेलशुं संकेली, ठाला फांसनुं खायछे फेली ॥१४॥ एने अर्थे जे खरचता अन्न, तेनो करशुं हवे जगन। एवी सांभळी वालानी वाणी, सर्वे संते सत्य करी जाणी ॥१५॥ कहे संत सुणो महाराज, सर्वे जणाणुं अमने आज। हवे जेम कहो तेम करीए, आपो आज्ञा ते शिर धरीए।।१६।। त्यारे नाथ कहे सुणो संत, मेली सोरठ फरो नचित । पछी ज्यां कहुं। त्यां संत गया, प्रभ्र पोते सोरठमां रह्या ॥१७॥ पछी सतसंगी लइ साथ, फर्या गामगाम वळी नाथ। पाण खाण्य लोज मांगरोळे, मळे हरिजन हेतबोळे ॥१८॥ त्यांथी आविया काणक गाम, भक्त जेठासगरने धाम । पछी आव्याछे

कालवाणिए, वसे मक्त नाथो त्यां जाणिए ॥१९॥ त्यांथी आव्या मढडे मुरार, तियां करीछे लीळा अपार । जेठो जोइने पाम्यो आनंद, जेने मळेल खामिरामानंद ॥२०॥ पछी त्यांथी आव्या अगत्राये, राख्या प्रीत्ये शुं पर्वतभाये । तियां आव्योछे काठिनो साथ, तेनेसंगे चाल्या पोते नाथ ॥२१॥ आखुं पिपलाणुं मेघपर, तियां आविया स्यामसुंदर । रह्या दिन दश्तपांच त्यां इ, पाछा आव्या पिपलाणामांइ ॥२२॥ रह्या तियां दिन दोयचार, पछी बोलिया प्राणआधार। जोने केवो उग्योछे आ सूर, जाणुं रुधिरमां भरपुर ॥२३॥ कहे मुळजिने महाराज, कन्य जे जे करवुं होय आज। एम कहीने चालिया नाथ, सखा सर्वे हता पोता साथ ॥२४॥ आव्या मे-घपुरे महाराज, कहे नहि रहीए आहि आंज। एवं जाणी जने ताण्य करी, क्यो अपराध अमारो हरि।।२५।।रहो राजिथइ आज रात्य, वहेला चालज्यो सहु प्रभात्य। एम अजाण्ये अतिशे ताण्युं, पण थावानुं छे ते न जाण्युं।।२६।। पछी आव्याछे गाममां नाथ, घायो मारवा असुरसाथ । मुक्या मूलजिए तियां प्राण, आव्या प्रभुपासे असुराण ।।२७।। दगेभर्या हथियार हाथ, तेने जोइने चालिया नाथ। पछी आविया मूळजिपास, जाणी प्रभुजि पोतानो दास ॥२८॥ राखि रह्योतो आंख्यमां जीव, जोवा परम हितकारी पिव। ज्यारे जोया नयणे भरी नाथ, मुक्युं तन चेतन चार्ल्युं साथ ॥२९॥ करी क्षमा बोल्या नहि स्याम, पछी आव्याछे भाडेरगाम । त्यांथी पधारिया छे धोराजी, आव्या खांडाघारे बेसी वाजी ॥३०॥ पछी गोंडल बंधिए गया, बेउ रात्य नाथ तियां रह्या । मोटा भक्त जियां मुळभाइ, जेने हेत घणुं हरिमांइ ॥३१॥ तेने घेर रह्या पीते राज, पछी सरघारे आच्या महाराज । तियां काठिने शिखज

करी, पोते पघार्या हालारे हरि ॥३२॥ एक रात्य राजकोट रह्या, त्यांथी पछी खिरसरे गया। तियां भक्त वसे लाखोभाई, रह्या रात्य एक सुखदाइ।।३३॥ पछी मोंडे आव्या भक्तमाव्ये, त्यांथी अलैये ने शेखपाट्य । हरि करी घणी मोटी महेर, आव्या भक्त लालजिने घेर ॥३४॥ त्यांथी पधार्या भादरामांइ, मास एक रह्या पोते त्यांइ। पछी बोलिया प्राणजीवन, करीए जेतलपुरे जगन ॥३५॥ जइ गोविंदस्वामिने कहेज्यो, तमे यज्ञना काममां रहेज्यो। बीजो कागळ लिखयो लइ, वर्ण थोडे वात घणी कई ॥३६॥ मांचा सुरा सोमला अलैया, मुछ नांजा मांतरा मानैया। अजा जीवा वीरदास वळी, लाधा काळा कमळिश मळी।।३७।। एह सर्वे तिज घरबार, थाज्यो परमहंस निरधार । जेम मोटामोटा घर मेली, भज्या हरि तजी जगजेली ॥३८॥ माटे मानज्यो आज्ञा अमारी, मुकज्यो सहु मनमां विचारी। एटली एने आगन्या करी, पोते रह्या कांइक त्यां हरि ॥३९॥ एम करतां आवीछे दिवाळी, प्रेमे पूज्या जने वनमाळी । सुंदर भोजन सारां करीने, हेते जमाडीया छे हरिने ॥४०॥ जेगे जोयाछे ज्याम सुजाण, थइ समाधि न रह्यां प्राण । तेने जगाडी जगजीवन, पछी प्रभ्रुए कर्युं भोजन ॥४१॥ थयां सुखी जन लीळा भाळी, आसो वदी अमांस दिवाळी। तेदि गयाता भादरे राज, मेर करीने पोते महाराज ॥४२॥ दीधां दासने दर्शन बहु, निर्खि नाथ सुखी थयां सहु। धन्य देश गाम ने भ्रवन । जियां रमिया प्राणजीवन ॥४३॥ धन्यधन्य ए नर ने नार, जेमें नयणे निरख्या मोरार। नथी वात जैनडी ए वात, जाषे छे मोटा संत साक्षात ॥४४॥ पूर्वछायो-जेजे चरित्र में चर्चुं, छे सर्वे अलौकिक एह। तेने लौकिक जे

लेखशे, महा मूढशिरोमणि तेह ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिता-मणिमध्ये हरिचरित्र एनामे चोपनमुं प्रकरणम् ॥५४॥

चोपाइ-पछी यांथकी चालिया नाथ, लीधा सेवक पोते बे साथ। त्यांथी आव्या कोठारियामांइ, रहे भक्त त्यां आणदि-बाइ ॥१॥ तेना अंतरमां सुख अति, देखे अखंड प्रश्वनी मूरति। तीय अंतरमां रहे ताण, मळवा मूरति प्रकट प्रमाण ॥२॥ तेने समजावी सर्वे रीत, पछी यांथकी चाल्या अजित । लीघो सेवक एकने संगे, चाल्या अलबेलो उछरंगे।।३।। त्यांथी पधारिया गाम भेले, आप्यां विप्रने वस्त्र छिबले । दीधां दुधरेंडा फांट भरी, पछी त्यांथकी चालिया हरि ॥४॥ मळे वाटमांहि जेजे जन, तेने नाथ दिये दरशन । त्यांथी चालिया सुंदरश्याम, आव्या माळिए पूरणकाम ॥५॥ तियां दिन रह्यो घडी चार, कहे राज जाशुं रणपार । आव्या रणमध्ये अविनाश, त्यांतो कहे लागी ग्रुख प्यास ॥६॥ आच्यो एक पुरुष अकळ, तेणे जाच्युं छे आविने जळ । हतुं पासे पाणी पिळ एक, तेपण आपचुं एवी छे टेक ॥७॥ पछी नाथ बोल्या एम वाणी, आवो ओरा पीवुं होय पाणी। पोता-नितो पिडाने न जोइ, हरि विना न कहे बिजुं कोइ॥८॥ पोतानातो पिडाताता प्राण, तोय न करी नकारनी वाण। तियां मीठां थयां सिंधुजळ, सुंदर खादु नीर निरमळ ॥९॥ पिथां पोते ने पोताने दास, पछी त्यांथी चाल्या अविनाश । वांसे रह्यो सेवक एसारुं, चारुयुं जळ त्यां निसर्युं खारुं ॥१०॥ एवी लीळा करता मोरार, पछी आविवाछे रणवार । दिव्यदेहे रामानंदस्वामी, मळ्या तेने चाल्या शिश्व नामी ॥११॥ रह्या अरण्यमांहि रास्य

एवा, चाले वाटमां उन्मत्त जेवा । पछी आव्युं त्यां जळनुं ताळ, नाया दास ने पोते दयाळ ॥१२॥ त्यांथी चालिया पूरणब्रह्म. पड्यो पोताने बहु परिश्रम । पछी सेवकने कहे क्याम, चांपो कळ-तर पहोचिए गाम ॥१३॥ पछी त्यांथी चालिया दयाळ, आच्युं अरण्यमां एक ताळ। तियां बेठीहती बेउ नारी, थई समाधि जोइ सुखकारी ।।१४॥ त्यांथी चाल्या पोते ततकाळ, वाटे जाता-दिठा बेउ बाळ। पछी परस्पर बोल्यां बाळ, आजो चाल्या जायछे दयाळ ॥१५॥ पछी त्यांथकी आधुइ आव्या, घणुं जनतणे मन भाव्या । दिन दोय पोते तियां बश्या, संगे दास तेने जोइ हस्या ॥१६॥ हवे परमहंसदशा ग्रहो, श्रीद दुःखना दरियामां वहो। एम कही मुनिदशा दीधी, पोते कच्छ जावा इच्छा कीधी ॥१७॥ चाल्या आधुइथी अविनाश, कीथां सुखी दरशने दास। पछी आविया भ्रजनगर, जने निररूया ज्यामसुंदर ॥१८॥ इयां रह्या पोते बहु दिन, तियां तेडाविया मुनिजन । आव्या संत ते सरवे मळी, नवा परमहंसनी मंडळी ॥१९॥ घणे हेते मळ्या सामा जइ, दीधां दर्शन प्रसन्न थइ। बहु दिवस राखिया पास, पछी एम बोल्या अविनाश ॥२०॥ जेम मोरे मान्युंतुं वचन, तेवुं जाणज्यो बीजुं आ जन। जेम वचने थया वैरागी, सुख-संपत्ति सरवे त्यागी ॥२१॥ हवे वचने पाछा वळी जाओ, घेर बेटा हरिगुण गाओ । त्यारे संत कहे सुणो श्याम, एवं करवं नहि हवे काम ॥२२॥ प्रथम बेसारी हरि करीए, हवे बेसारवा न खरीए। सोंपी सुंदर सारो सुवाग, तेनो केम करावो छो त्याग ॥२३॥ पण हशे अममां कचाइ, एवं जाण्यं तमे मनमांइ। नहितो एवं वचन न दाखो, निसर्या कूपमां केम नाखो ॥२४॥

बेडी हेड्य ने बळे बंधाय, पडे कोटडी भागसिमांय । छुटे तेपण कोइक दने, न छुटाय जे बांध्या भवने ॥२५॥ तेमांथी काढिया प्रहि हाथ, हवे शीदने नाखोछो नाथ। पछी बोलिया छे भग-वंत, एम समझशो मां तमे संत ॥२६॥ आज करवां छे कैक काज, निश्चे मानो तमे मुनिराज । तमे पुरा छो परमहंस, नथी तम्मां जक्तनो अंश ॥२७॥ एम समझाविया बहुविधि, पछी सर्वेने शीखज दिधि। पोते नाथ रह्या भुजमांय, नित्ये आनंद उत्सव थाय ।।२८।। जाय जमवा जनने घेर, करी मनमोहनजि मेर । एक भक्तजन जीवराम, तेनी मातानुं हरबाइ नाम ॥२९॥ तेने प्रेम-मांहि टेव पडी, जमाडे बरफी पेंडा सुखडी । जो मनमान्युं न जमे जीवन, तो तजे सप्तदिन लगी अन ॥३०॥ एवं जोइ हेत जन-तणुं, रहे भुजनगरमां घणुं। एकएकथी अधिक अंगे, सहु राचियां हरिने रंगे।।३१।। भाव भजनमां सावधान, विजी वातने न दिये कान। एवा जनने दर्शन दइ, चाल्या नाथ साधुसाथे लइ॥३२॥ फरे कच्छदेशमां कृपाळ, दिये दर्शन सहुने दयाळ। पछी नाथ मांडवीए आच्या, तियां सर्वे संतने बोलाव्या ॥३३॥ आव्या मुनि-जन सहु मळी, नाथे तेडाच्या एवं सांभळी। आवी उतर्या तळाव तटे, मुखे खामिनारायण रटे ॥३४॥ करे वात वाली घणिघणी, चडे खरी खुमारी तेतणी। वळी त्याग वैराग्य बतावे, काचुं शोचुं प्रभुने न भावे ।।३५॥ जैमजेम वात करे नाथ, तेम धारिलिये सहु साथ । वळी नित्यप्रत्ये दर्शन थाय, तेनी मस्ति अति मन-मांय ॥३६॥ दीधां दर्शन ते बहु दन, थवा जन सरवे मगन। पछी एम बोल्या महाराज, तमे सांभळो सहु मुनिराज ॥३७॥ हवे जाओ संत सर्ने बृंद, करो अमदाबादमां आनंद। उत्रख्यो

सहु शहेरबार, करज्यो कथाकीर्त्तन उचार ॥३८॥ भणो सच्छास्त संतने पासे, रहेज्यो सर्वे मळी त्यां चोमासे । थाशे जेतलपुरे जगन, त्यां जमशे घणा विव्रजन ॥३९॥ आवे तेडवातो तमे जाज्यो, नहितो बेठा हरिगुण गाज्यो। एम कहीने संत चलाव्या, पोते श्रीहरि शहेरमां आव्या ॥४०॥ संत पोत्या छे अमदाबाद, थाय निस्य त्यां ब्रह्मसंवाद । एम करतां वित्या कइ दन, थयो जेतलपुरे जगन ॥४१॥ करे गोविंदमुनि मोरे थइ, नाम नाना-भाइनुं ते लइ । जमे ब्राह्मण न आवे पार, थइरह्योछे जयजय-कार।।४२॥ जम्या ब्राह्मण भाव करीने, सुंदर मोदकं पेट भरीने। पछी पुरो कराच्यो जगन, नरनारी करे धन्यधन्य ।।४३।। पाम्या आश्चर्य मनमोझार, थयो निरविघन निरधार । एम पुरो थयोछे जगन, पोते पधार्या नोता जीवन ॥४४॥ पछी संतने तियां तेडाच्या, संत सहु जेतलपुर आव्या । तेपण जम्याता जगनमांये, स्वामिसहजानंदनी आज्ञाये ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंद खामि शिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे प्रथम यज्ञ कराव्यो एनामे पंचावनमुं प्रकरणम्॥५५॥

चोपाइ-पछी कच्छदेशथी कृपाछ, आच्या पंचाळे दीनद-याछ। संगे लइने साधु बेचार, प्रथम आविया देश हालार ॥१॥ गामो गाममां दर्शन दिधां, सर्वे जन कृतारथ किथां। पछी आविया सरधारमांइ,हरिभक्त काठी आच्या त्यांइ॥२॥पछीत्यांथी चालिया महाराज, आविरह्या पिपरिडए राज। बीजे दिवसे बोटाद आच्या, अदे भगे भावेशुं जमाच्या ॥३॥ रह्या दिवस बे करी मेर, सोमला ने मांतराने घेर। पछी त्यांथी आच्या कारीयाणी, वरसे मेघ पडे बहु पाणी ॥४॥ वसे भक्त त्यां मांचो वीरदास, रह्या तियां हरि चार मास। आव्या गढडेथी हरिजन, जेनां त्यागे सुकाणांछे तन ॥५॥ आञ्या देशदेशथकी दास, नयणे निरखया अविनाश। आव्या वागड कच्छ हालारी, सोरठ वाळाकनां नरनारी ॥६॥ आन्यां पांचाळी ने घोलवाडी, भाल गुजरात झालावाडी। आन्यो सुरतथी संघ वळी, घणुं रह्योछे रंगडो ढळी।।७।। आवे सहु लागे हरिपाय, नाथ निरखी त्रपत न थाय । आव्या संत ते सरवे मळी, हति अमदावादे मंडळी ॥८॥ पछी प्रभुतणी पूजा करी, जम्या बहु सरकरा हरि। सुंदर वस्त्र क्यामळियो पहेरी, दिये दर्शन दासने लहेरी ॥९॥ करे वात अलौकिक आपे, सर्वे जनना संशय कापे। जाय नाथजि नित्य तळावे, जनपासळ सर गळावे ॥१०॥ गातावाता आवे पछी घेर, नित्यत्रत्ये थाय लीलालेर। सुंदर घोडे चडे गिरधारी, थाय चमर जुवे नरनारी ।।११।। पछी यज्ञ कराव्यो महाराजे, तेड्या ब्राह्मण जमवाकाजे। थया तळावे चोका चाळीश, चडी घोडे फरे जगदीश।।१२॥ जम्या ब्राह्मण दक्षिणा दिधी, पछी सर्वेने शीखज किथी। सारा सुंदर वरसमांय, आसी-वदि तेरश कहेवाय ॥१३॥ तेदि यज्ञ कर्यो भगवाने, दिठी नजरे नथी सुणी काने। पछी आच्यो दिवाळीनो दन, जनपर हरि छे प्रसन्न।।१४।। दिये दर्शन दिवस रात, वळी घणी घणी करे वात। एम आनंद उत्सव करी, पछी संतव्रत्ये वोल्या हरि ॥१५॥ संत सांभळोने सहु मळी, तमे बांधो हवे बे मंडळी। एक नवानगरमां जाओ, बीजा सुरत शहेर जगाओ ॥१६॥ पछी संत गया वेउ शहेर, राखी मूर्ति रुदे रुडिपेर । लटकाळो छोगाळो छविलो, राख्यो संते हृदामां रंगिलो ॥१७॥ तेनुं घरता अंतरे ध्यान, चाल्या संत थइ सावधान । पछी क्यामळिए शुंशुं किथुं, फरी सहुने दर्शन दिधुं

।।१८।। त्यांथी वालो गया वढवाण, दवे तुळसीनुं करवा कल्याण । तुळसी बोल्योतो करूं जगन, पड्यो खोटो न खरचाणुं धन ॥१९॥ त्यांथी चालिया सुंदरक्याम, वालो आव्या रामगरी गाम। दिघां ्रासने दुर्शन भावे, आव्या दुर्केथी मछियावे ॥२०॥ वळी विछि-याच्य मोडासर, त्यांथी आविया जेतलपर । रह्या रात्य त्यां पूरण-काम, पछी आविया डभाण गाम।।२१।। वळी पीज नडियाद गया, ाछी उमरेठे जइरह्या । तियां भक्त रहे रूपराम, प्रभु पधारिया तेने थाम ॥२२॥ रह्या सात दिन सुधि तियां, बहु प्रताप जणाव्यो इयां। थाय ध्यानधारणा अपार, जोइ निश्रय करे नरनार ॥२३॥ पछी यांथकी श्याम सधान्या, आघा जइ पाछा वळी आन्या। करी मुक्यांतां जने भोजन, तेने घेर जम्याछे जीवन ॥२४॥ दइ दर्शन चाल्या दयाळ, आव्या चांगामां नाथ कृपाळ । भक्त नथु लखे लीधो लाव, त्यांथी आन्या रोण्यमामे माव ॥२५॥ पिराणानी पिराइ वेरावी, एना मेतने अलफी पहेरावी। पछी मतियां मळ्यां सहु आवी, रोइ काकानी अलफी सुकावी ॥२६॥ त्यांथी आव्या बोचासण गाम, भक्त काशिदासजिने धाम। त्यांथी वेल्ये बेसि बहु-नामी, आञ्या बुधजे अंतरजामी ॥२७॥ हर्वुतुं हठिमाइने स्वपन, थयुं तेवानुं तेवुं दर्शन । त्यांथी आव्या जेतलपुर वळी, आव्या सहु दर्शने सांभळी ॥२८॥ बाळ बृद्ध ने जोवन जेह; आच्या सहु-मळि दर्शने तेह। जन कहे भले आव्या जीवन, काले छे उत्तरायन दन ॥२९॥ तैये नाथ कहे तेडो ब्राह्मण, जमे मगाविए घृत मण। प्रथम मंडाण मणथी कर्युं, पछी पुछतां पांचसें ठर्युं ।।३०।। जेमजेम पुष्यु बळी जने, तेमतेम वधार्यु जीवने । मोर्ये नोतरं ने पछी सीधं, एम यझनुं परियाण कीधुं ॥३१॥ एतो छे अतिपरचानी

वात, तेतो जाणेछे संत साक्षात । एम नाथे कर्यो निरधार, मांज्यो आरंभ न करी वार ॥३२॥ लीधां घी गोळ घउं दळाव्या, तळिया मोदक मोटा वळाच्या। करी लाडवा भर्या कोठार, बिजो आण्यो समाज अपार ॥३३॥ मांड्यो जेतलपुरमां जंग, आव्या ब्राह्मण तेडाच्या संग । रच्यो मंडप वेदविधिए, कर्यो कुंड ते होमवा घीए ।।३४।। भणे ब्राह्मण मंडपमांइ, दिये आहृति घृतनी त्यांइ। जपे मंत्र ने होमेछे अन्न, थाय विधिए युक्त जगन ॥३५॥ जमे ब्राह्मण न राखे खामी, जमो भायो जमाडे छे खामी। जम्या जेवाछे मोदक मोटा, खाओ खुब करी देह खोटा ॥३६॥ जमतांजमतां जाय प्राण, तेनां आपणा कुळमां बखाण । जमे ब्राह्मण जोरजोराइ, अतिमोद भर्या मनमांइ ॥३७॥ बेसे पंगत्यो न आवे पार, जमे विप्र हजारो हजार । जम्या जोरे न खुट्युं जमण, खाइ खाइने काया ब्राह्मण ॥३८॥ एम जम्या अष्टादश दन, पछी पुरो कराव्यो जगन । दिधां दान दक्षिणा दयाळे, पाळी वेदविधि प्रतिपाळे ॥३९॥ एम पुरो कर्यो अतिरुद्र, जम्या द्विज क्षत्रि वैज्य शुद्र। कोइ जम्या विना नव रह्यं, आढिविना अन्न बहु दयुं ।।४०।। जमे जन बोले जेजेकार, धन्य धन्य थायछे उचार। देशोदेशथी आव्याता जन, निर्खि नाथने थया मगन ॥४१॥ तियां पुछ्युंतुं प्रश्न महाराजे, करतां उत्तर विपर लाजे । थयां स्याम मुख साइ ढळी, बोल्या नहि रह्या अंतरे बळी ॥४२॥ पछी सर्वेने शीखज दिधी, एवी लीला श्रीमहाराजे किथी। पोपशुदि सप्तमी छे सारी, हरिजन लेज्यो हैये धारी ।।४३।। तेदि पुरो थयोछे जगन, सर्वे राजि थया साधुजन। दुष्ट जाणे नहि थाय जगन, कर्यो नाथे ते निरविधन।।४४।। करी यज्ञने जीवन चाल्या, पश्चिमदेशमां दर्शन आल्यां। सर्वे जक्तमां

जणाणी वात, कहे स्वामी श्रीहरि साक्षात ।।४५।। एवं सुणी दाझ्यां दुरिजन, कहे अजाणे कर्यों जगन। नथी भेखने खबर खरी, त्यारे गयो ए जगन करी।।४६।। हवे भेख थाशुं सर्वे भेळा, केम करी ए करशे मेळा। जमराण आवशे जमात्यो, तेदि छे ए स्वामिजिनी वातो।।४७!। खाद्यं रुपैया एसारु लाखो, पण पंथ एनो नहि राखो । एम परस्पर परियाण्युं, एना मननुं महाराजे जाण्युं ॥४८॥ सर्वे संतप्रत्ये कहे हरि, करीए जगन आपणे फरी। पछी हरिजनने तेडाव्या, मळी जेतलपुर ते आव्या ॥४९॥ रह्या दन दोचार ए ठाम, पछी गया खोखराद्य गाम । परमहंस संन्यासी छे संगे, बीते दिन आनंद उमंगे ॥५०॥ आव्या सतसंगी सहु मळी, थारो उत्सव एवं सांभळी। नाथ निर्वि सुखी थया सहु, दिये दर्शन प्रसन्न बहु ॥५१॥ गाममांय तो संघ न माय, त्यारे बारे सुवा संत जाय। गाय कीर्चन थाय किलोल, आवे दर्शने जन हिलोल ॥५२॥ एम आनंद उत्सव थाय, नित्ये नावा कांकरीए जाय। गातावाता आवे वळी घेर, एम थाय बहु लीलालेर॥५३॥ करे वात प्रभु ज्यारे आप, तेमां जणावे बहु प्रताप। कांइक भूत भविष्यनुं भांखे, दिये जणावी केड्ये न राखे।।५४।। कहे जगन करशुं जरुर, आवुं बिजुं नथी कोइ पुर। गाममांय संकोच छे सरे, होम थाशे गामने गोंदरे ॥५५॥ तेतो जाणशे सरवे जन, कहेशे भलो कर्यो ए जगन। एम करे हरि ज्यारे वात, सुणी जन थाय रिळयात ॥५६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-खामिशिष्यनिष्कुलानंद्रमुनिविरचिते भक्तिचितामणिमध्ये जेतलपर यज्ञ कर्यो एनामे छपनमुं प्रकरणम् ॥५६॥

१५ म०चि०

राग सिंधुकडखो-एवं सांभळिने आवियं, वळी दुष्टजननं दळ । साधुने मांड्या संतापवा, बहुबहु देखाडे बळ ॥१॥ संत श्रीनगरमांहि, नित्य जाताता भिक्षाअर्थ । तेने असुरे आवी आं-तर्या, मारे करे अति अनस्थ ॥२॥ गेडी धोका पडे लाकडी, वळी कंदे भांगि कटियुं। कर्या प्रहार कडियाळिए, तेतो संते सरवे सह्युं ।।३।। तपसी ऋषि कुश तनमां, तेनेमाथे मोट चडा-विया । मनगमतो मार देता, उतारापर लइ गिया ॥४॥ तियां जइ ताडन करी, फरी बांधिया बहुपेर । असुरने हाथ आवी-पड्या, जेने जराये न मळे मेर ॥५॥ कोइ कहे कान नाक कापी, कोइ कहे करो घात जीवनी । कोइ कहे भुज चरण भांगो, एम बोले सेना शिवनी ॥६॥ भाखे भुंडी गाळो मुखथी, तेतो जेजे बोले ते थोडियुं। जाणुं मस्तक पांचग्नुं, कापी ब्रह्मानुं चोडीयुं।।७॥ कोइक संत कले वकले, असुरहाथ आव्यो नहि। तेणे खबर खोखरे वळी, आविने सर्वे कही ॥८॥ सुणी श्रीहरि श्रवणे, अंगे उभि थइ रोमावळी । एवा कोण अवनि उपरे, जे मारा संतने मारे वळी ॥९॥ करी नजर अति करडी, थयां लोचन लाल विशाळ । अक्कटिभ्रंग चडावियो, देखी कंपवा लाग्यो काळ ।।१०॥ शशि सुरज जांखा पड्या, वळी उठियो अज अकलाइ । शिव कहे संहार वळशे, आज नथी रहेवानुं कांइ ॥११॥ इंद्र सुरने भय उपज्यो, वळी दले डर्या दिगपाळ । जोइ कोप महा-राजनो, तेणे कंप्यो पत्रग पयाळ ॥१२॥ वळता प्रभुजि बोलिया, सुणी संत मानज्यो सत्य । आ राज्यमां रहेवुं नहि, तमे जाओ शहेर सुरत्य ॥१३॥ अधर्मी अधिपति अति, जियां धर्मनी वात गइ । तियां तमजेवा संतने, पळ एकपण रहेवुं नइ ॥१४॥

चालो संत तमे चोंपशुं, वळि अति उतावळा आंहिथी। साधु सर्वे सधावजो, अमे रहेशुं आंहि धोकापंथी ॥१५॥ पछी चरणे लागी चालिया, बळी संत सर्वे मंडळी । संत चारशे सामटा थइ, गइ सुरत मुक्तमंडळी ॥१६॥ पछी रह्या पोता पासळे, वळी खरी ते क्षत्रिजात । तेने ते आगळ श्रीहरि, करवा ते लाग्या वात ॥१७॥ कहो भाइ केम करशुं, आतो असुरे उपाडि झालियुं। संतने तैये शीख आपी, ज्यारे आपणुं नव चालियुं ॥१८॥ एवुं सुणी क्षत्रि खगशिया, प्रसु पाछा वाळी संतने। तमारा प्रताप-थकी, जुवो अमारी रमत्यने ॥१९॥ आज अवसर आवियो, जैने मागे मोटा सुर । अमारा इष्टने पीडिया, तेने जोशुं अमे जरुर ।।२०।। पड्ये कामे पुठ्य फेरवे, वळी करगरे कायर हुइ । धिकधिक तेना जीवतने, एनी जनिता भारे मुद्द ॥२१॥ गाम गरास कोट कारणे, वळी रणे चडे चडिचोट। भूपमडे शिर पडि रडे, एम लडी थाय लोटपोट ॥२२॥ एह रीत्य क्षत्रितणी, तेनी जाणे सह कोइ बात । खोटासारु वेखे धन मुके, आतो साचुं छे साक्षात ॥२३॥ आपो अमने आगन्या, जे जोइए एतुं अमे जोर । शुंथाशे विचारा श्वानथी, छे प्रभु अमारीकोर ॥२४॥ पछी प्रभुजि बोलिया, आज जाळवो सहु आपणे। काल्य जाशुं कांकरीए, पछी बणबुं होय ते-मर बणे ॥२५॥ एम वात करतां वहीगइ, रही नहि रंचे रात्य । पहोर एक पोढि जागिया, पोत्ये प्रभुजि पर-भात्य ॥२६॥ कहे थाओ सष्टु साबधा, नावा कांकरीए सर्। बाळ वृद्ध ने बाइमात्र, तेती रहेज्यो सर्वे घर ॥२७॥ आपे अश्वने उपरे, तरत थया असवार । सर्वे सखा सञ्ज थइ, संगे चालिया अपार ॥२८॥ अश्वे अखार ओळखी, अने धीरज नव शके धरी।

पग न मांडे पृथिवी, जाणुं उडशे पांखुं करी ॥२९॥ पछी नाहि नाथ पाछा वळ्या, अने आविने उतर्या बार । पोते पथार्या पुरमां, त्यां आव्या असुर अपार ॥३०॥ अतिकाळा क्रोधवाळा, बळी वेष जेना विकराळ छे। जोर जटाळा लांबिकोटाळा, कहीए केवा जेवा काळ छे ॥३१॥ मुछ मरडे कांडां करडे, वळी भर्या बरडे भाथ छे। कैक भ्रुरा अतिलंबुरा, पुरा पांच ते हाथ छे ॥३२॥ खडग खांडां हाथ पबेडां, समशेर सांग्य कर ग्रहि। वंदुक बरछी खरि खरचि, असुर भ्रुर आव्या लइ।।३३।। डाढां मोटां पहेरि लंगोटां, डोडु दिये मारवा। चार दशा आव्या धशा, ठाउको कर ठारवा ॥३४॥ वडा वैरि लीया घेरी, जमताहता जीवन वळी। मोटी डाढी खडग काढी, मारवाने बुट्या मळी ॥३५॥ विषे मांड्या वळी वारवा, पण माने नहि मदेभयी। काढी खडग करमां, हरिजनपर घाव कर्या ।।३६॥ हरिजन कहे हवे पापियो, उभा रहेज्यो एह पगे। अमपर तमे घाव किथा, अमे न बोल्या त्यांलगे।।३७॥ सिंह सरिखा शोभता, वळी युद्धमां जाणे घणुं । धाया धणेणि मारवा, खमे खडग कोण क्षत्रितणुं ॥३८॥ चार पा<sup>ड्या</sup> चोकमां, जे हता असुरमां अधिपति । विजा भणेणि भागिया, भाइयो आपणी पण आ गति ॥३९॥ वणठल वेरागा फरतां नागां, भाग्या भ्रुर भ्रुली दिशा। रहेतां मरडतां अतिठरडातां, खासडां खातां खुच खक्या ॥४०॥ अति असोयां बहु बफोयां, कोइकोइने भेळं नइ। मार्यामार्या कहे मुख्यी, एम रियोपियो रह्यं थइ।।४१॥ जाणिने मुक्यां जीवतां, बहु लागी महाराजनी बीक । नहितो एके एकने, करवां ते हतां ठीक ॥४२॥ पछी आब्या पाछा वळी, कर्या प्रभुने प्रणाम । त्यारे

नाथ कहे आपणे, हवे रहेवुं नहि आ ठाम ॥४३॥ हिर हिरिजन हेतु सहुना, कल्पष्टक्ष सम कहेवाय । तेमां जे जन जेवुं चितवे, तेने ते तेवुं थाय ॥४४॥ नरतन घरी नाथजी, वळी स्र्यसम शोभे घणुं । पण पापिने न पडे पाधरुं, नडे पाप पोतातणुं ॥४५॥ एम भार उतयों भूमिनो, वैशाखबिद चतुर्दशी । तेदि पापी मारिया जे, आव्याता मारवा घशी ॥४६॥ इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचि-तामणिमध्ये असुरनो नाश कर्यो एनामे सत्तावनमुं प्रकरणम् ॥५७॥

चोपाइ-पछी त्यांथी चाल्या अविनाश, जोइ असुर नरनो नाश । गया वेलाल्य सलकि गाम, पछी कच्छमां सधाव्या श्याम ।।१।। त्यांथी कागळ मोकल्यो नाथे, एवं शीद कर्यं अमसाथे । अमारे नोतुं करबुं एम, तमारेपण घटे ए केम ॥२॥ एतो थयुंछे अजाणमांइ, तेनो धोखी करशो मां कांइ। एतो करावनारा छे कोक, तेनो शीदने राखवी शोक ॥३॥ अमे तमे तो एकज छीए, घणुंघणुं शुं मुखर्थी कहीए । अमे करशुं जगन डभाण, तियां आवज्यो सर्वे सुजाण ॥४॥ धारो ते अमे चाकरी करशुं, तमे करशो मां तमारुं नरशुं। त्यांतो एकाएक हता अमे, तेवा समामां आविया तमे ॥५॥ एवो पत्र लख्यो अविनाशे, आव्यो असुराधीशने पाशे । साम दाम दंड भेदे भर्यो, वांची कागळ विचार करों ।।६।। न करो नुगरानी यां वात, जेणे मार्या साधु साक्षात । एम समजी मनमां विचारी, पछी वेशिरह्या जख मारी ॥७॥ पछी शुंशुं कर्युं भगवाने, कहुं सांभळज्यो सहु काने। आदयों छे डमाणे जगन, आव्या चौदिशेथी हरिजन ॥८॥ शाळ दाळ ने दळाच्या घडुं, लिधां घी गोळ मिसरी बहुं। छोये रसना

भर्या कोठार, तेनो कहेतां ते न आवे पार ॥९॥ पछी पोत्ये पधार्या महाराज, पुरो करवो जगन ए काज । रह्या दन दोय एह ठाम, पछी गया घोडासर गाम ॥१०॥ त्यांथी नाथ गया हाथ-रोळी, त्यां तेडावी संतमंडळी। आव्या भील ने भीलभूपति, हाथ जोडिने करी विनति ॥११॥ भले आव्या तमे भगवान, दीघां अमने दर्शन दान । उभा आगळ जोडिने पाण, अमे छीए तमारा वेचाण ॥१२॥ कांइक सोंपज्यो अमने काज, एवं सुणी ने बोल्या महाराज। आवा साधु होय निरमान, तेनी रक्षा करवी निदान ॥१३॥ डभाणमांहि थाशे जगन, तेमां करवा इच्छेछे विधन । महामदे भर्या जे अभागी, तेने केम गमे आवा त्यागी ।।१४।। माटे एनुं करो उपराछं, थायतो करज्यो रखवाछं । त्यारे बोल्यो भीलनो भूपति, एनो भार नथी मारे रति ॥१५॥ मर आवे पृथ्वीपति राय, मानुं तरणा जेवो मनमाय । पण मांगुंछुं जोडी हुं हाथ, मारे घेर पधारिये नाथ ॥१६॥ पछी बेसार्या पालिखपर, राय तेडिचाल्यो निजघर । बहु हेतेकरी पधराव्या, भरी थाळ मोतिडे बधाच्या ॥१७॥ पछी सुरतथी सत्संगी आच्या, प्रभ्र सारु पोशाग ते लाव्या । शोभे सुरवाळ जामो जरी, शिर बांधि छे पाघ सोनेरी ॥१८॥ बांधी कमरे कसुंबी शाल, निरखी जन थयांछे निहाल । चमर छतर अबदागरी, ते रह्याछे हरिपर धरी ।।१९॥ धूप दीप उतारी आरति, पछी करजोडी करी विनति । जोइ राजी थयो रिळयात, प्रभु सांभळज्यो एक वात ।।२०।। अमपर महेर अतिकीजे, आवुं सहुने दर्शन दीजे। पछी बेठा पालखीए हरि, दिधां शहेरमां दर्शन फरी ॥२१॥ मिर्खि नाथने थयो सनाथ, सहु कहे धन्यधन्य नाथ। पछी प्रभु

कहे सुणो राजन, जाये डमाणे करवा जगन॥२२॥ सर्वे सञ्ज थाओ तमे शूर, जावुं जोशे आपणे जरुर । पछी राजा कहे सुणो नाथ, कहोतो लाख भील लउं साथ ॥२३॥ त्यारे बोलिया एम महा-राज, नथी आपणे एवडुं काज । कांइ थोडा घणा लियो संग, विजा छे अमसंगे तोरंग॥२४॥ सञ्ज थइ चाल्यो भीलराज, बेठा पालखिपर महाराज। वाजे ढोल ददामा निशाण, शोभा बहु शुं कहुं वखाण ॥२५॥ आव्या डभाण ढुंकडा ज्यारे, थया घोडे असवार त्यारे। घोडो शोभेछे घणुं रूपाळो, मांड्यो साज उपर शोभाळो ॥२६॥ कोटे कोटियुं हूलर हार, पगे झांझरनो झम-कार। चांदी चोकडे मोंबडे जडी, माथे करीछे कलंगी खडी ॥२७॥ शोभे ताविथे घुघरी सार, केड्ये कनकभूपणनी हार । काठुंजिन कनकनुं राजे, दोय पाघडे मोर विराजे । १८।। अंगो-अंग शोभा सइ भणुं, शोभे घोडो घरेणामां घणुं । सारां शील सोयामणो लागे, चाले घमके घुघरियो वागे ॥२९॥ घीरो चाले ने लिये वारकी, भ्रोड्ये पहोचाय नहि कोइथकी। एवे अश्वे चड्या महाराज, देवा दासने दर्शन काज ॥३०॥ लीधी सर्वे संघनी संभाळ, करे चोकी रुडि रखवाळ । पछी अश्वपरथी उतरी, बेठा पालखिए पोत्ये हरि।।३१।। धीरेधीरे दियेछे दर्शन, घणुं जनपर छे प्रसन्न। पछी आच्या पाकशाळामांय, घडी एक बेठा पोत्ये त्यांय ॥३२॥ पुछी पाकनी खबर खरी, कह्युं मोदक मुक्याछे करी। पछी मोटो कराच्यो माळ, तियां बेठाछे दीन-दयाळ ॥३३॥ निर्खे नरनारी मळी बृंद, जेम चकोर चिंतवे चंद । एम करतां वीति गइ रेण, पहोर एक पोढ्या कमळनेण ॥३४॥ पछी जागिया प्राणआघार, तर्त घोडे थया असवार ! फरी

ᆌ

जोइछे सीम संघळी, पछी आविया मंडपे वळी ॥३५॥ तियां बाह्यण हता हजार, करता वेदनो प्रखे उचार। भणे मंत्र ने आहृति दीए, वहे परनाळां अखंड घीए।।३६।। होमे हविष्याम जव तल, निरदोष जगन अवल । नाली केळि लविंग सोपारी, होमे एला खादी शाळ सारी ॥३७॥ बहुविधनी लइ सामगरी, होमेछे वेदविधिए करी। बेठा पोत्ये तियां घडी चार, पछी आच्या पंगत्य मोझार ॥३८॥ बेठि पंगत्य बाह्मणतणी, कोइथकी ते न जाय गणी। जमे ब्राह्मण भाव भरीने, जुवे पोते पंगत्य फरीने ॥३९॥ पछी जिमने उठ्या विपर, गया द्विज उतारा उपर । एम जम्या दन दशसुधी, पछी आवी एकदि कुबुधी ॥४०॥ आवी असुरे कर्यों प्रवेश, त्यारे द्विजे आदर्यों छे द्वेष । कहे कांइक करी उपाय, शुं विचारी रह्या मनमांय ॥४१॥ आतो पुरो थयो ते जगन, तेमां कांइ न पड्युं विघन । सीधां खरच्यामां न राखी खामी, करीए विभवो आपणे वामी ॥४२॥ पहेलां आपणां मनुष्य जमाडो, बीजां कळेकरीने खमाडो। पछी करीए कतोहल भारी, पडशे भंगाण थारो खुवारी ॥४३॥ पछी कोण केने ओळखेछे, घणा वित्र आपणी पखे छे। लोट लाडवा छंटिज लेशुं, बीजा तळावमां नाखिदेशुं ॥४४॥ गोळ घी कुडलां लेशुं हाथे, जाशुं अंघारे उपाडी माथे। एकएक लइ जाग्नुं मोंटली, जमशुं घी गोळ ने रोटली ॥४५॥ एम परियाणीया वळी वामी, तेतो जाणेछे अंतरजामी । जोज्यो जीवतणी अवळाइ, केवुं विचारियुं खाइखाइ।।४६॥ एवं जाणिने हसिया हरि, पछी जीवने जुगति करी। आव्या पाकशाळाने मोझार, करी कळ काठ्या वामी बार ॥४७॥ आहा उमा राख्या आणी पाळा, हाथ करी लिधी

पाकशाळा। दइ डारो हाथ लिधी असि, डरी दुष्ट उमा दूर खसि 118८।। करवुं हतुं अवळं अपार, होस रही ते हैं यामोझार। बेठा हाथ धसी पछी हेठा, बहु समर्थ श्रीहरि दिठा।।४९।। इति श्रीमदेकां-तिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्त-चितामणिमध्ये यज्ञनो आरंभ कर्यो एनामे अष्ठावनमुं प्रकरणम्।।५८।।

राग सामेरी-वळता ते विप्र बोलिया, महाराज हां कहोछो तमे। जेम आपो आगन्या, तेम सहु करीए अमे ॥१॥ महाराज कहे एक तमे, एक अमारी तमसाथ । तमे लेज्यो लाडवा, ए लेशे जेष्टिका हाथ ॥२॥ पिरशे पोतानां पारकां, जो करशो जराय । तो तमने ए ताडशे, तेनी राव रोष न कांय ॥३॥ पछी भर्यां मोदकनां गाडलां, तेणे जुता जोद्ध जुवाण । पाक फरे पंगत्यमां, एम जमाडे जीवनप्राण ॥४॥ तीय ब्राह्मण शुंडाइ न तजे, लइ बेठा एकएक लाकडी । तैये महाराज कहे काठियो, तमे आवो सहु घोडे चडी ॥५॥ लेवरावी सहुने लाठियो, काठी आविया घोडे चडी। विना गोळिए वछोडियो, त्यां बंधुको बहु पडी ।।६।। भांगी भडाके कोठियो, सुंदर दाळनी सोळ । जाणे दुष्ट विघन पाडशुं, साम्रुं पड्या पोताने रोळ ॥७॥ खोटे डारे डराविया, कहे उठशो जमतां कोय । जरुर तेने मारशुं, तमे उठज्यो एवं जोय ।।८।। जुक्तिकरीने जमाडिया, नव पडवा दीधुं विधन । एम रुडी रीतशुं, महाराजे कराव्यो जगन ॥९॥ पछी दिवस बळते, तेड्या पुराणी पंडित। करी चरचा चोकमां, त्यांथइ पोतानी जित ॥१०॥ लाखो लोक भेळा थया, निरखवा नयणे नाथ । तेमां नर तसकरा, आव्याता नाखवा हाथ ॥११॥ जोयो सरवे संघने, बहु खबडदार दीठा खरा। पछी अश्वउपरे,

आवी ताकिया तसकरा ।।१२।। त्रण दिवसना भ्रख्या तर्षा, नयणे निद्रा नव करी। आविने जुवे अश्वने, त्यां घोडे घोडे दीठा हरि ॥१३॥ पछी प्रभुने पाये लाग्या, कहे दया करज्यो दयाळ। ज्यांथी गुन्हा छुटिये, त्यां कर्या गुन्हा कृपाळ ॥१४॥ पछी सतसंगी धइ, वळी गया पोताने घेर । एम पोते अनेक रीत्ये, करि ते लीलालेर ॥१५॥ दासनां दुःख कापवा, आपवा दर्शन दान । हरे फरे हरि संघमां, बळी बेसे मेडे भगवान ॥१६॥ मेडाउपर महाप्रश्च, पल मेलिने पोढ्या घडी। अजाणे एक जन आव्यो, मनफर मेडे चडी ॥१७॥ जबकी जीवन जागिया, वळी अचानक उठ्या हरी। कोण हतुं अमपासळे, एम किहने रीश करी ॥१८॥ पहेर्याहतां बहुपेरनां, वळी घरेणां घणांघणां। अंगोअंग ओपतां, सुंदर ते स्वर्णतणां ॥१९॥ वेढ विंटी ने कन-ककडां, पोंची अंगोठी ओपति । बाजु काजु बेरखा बळी, शोभे काने कुंडळ अति।।२०।। कंठे हार ते हेमना, हुलर हीरा सांकळी। अंगोअंग आभूषण पहेरी, पोढ्याता पोते वळी ॥२१॥ एवा समामां उठाडिया, वळी जाल्म नरे जगदीश । तेसारु सहु उपरे, महाराजे करी रीश ॥२२॥ पछी आभूपण उतारियां, अने फेंकियां फरतां वळी। अंबर एक अंगे राख्युं, विजां मेलियां सर्वे मळी ॥२३॥ केणे न जवाय पासळे, बळी वीक लागे सहुने। जोइ जीवन रुठडा, वळी दुःख थयुं बहुने ॥२४॥ पछी भाइ रामदासजि, धीरेधीरे पासे गया । महाराज वस्त्र ओहिये, अम-उपर करी दया ॥२५॥ पछी बस्न पहेरियां, हसी प्रभुजि बोल्या वळी। इती उदासी अति घणी, पण हवेतो सर्वे टळी।।२६॥ पछी वित्र तेडाविया, तमे करो शीव्र रसोइ। लाखो माणस

जमरो, वळी केम रह्याछो सोइ ॥२७॥ ब्राह्मण भेळाणा उंघमां, सुता ते सदने संताय । ते एकोएकने उठाडिया, प्रभु पोते झाली बांय । २८।। पछी मनमान्या मोदक करी, जमे वाडव यूथनां यूथ । पार न आवे पंगत्यनो, वळी मळ्या वित्र वरुथ ॥२९॥ ओपे सीधां अतिधणां, माने साठ्य त्यां शत पांच। कोइ रीते सराजामनी, बळी आवे नहि लेश लांच ॥३०॥ जेजेकार ते थइ रह्यो, आपे अन्न ते अतिघणुं। भेट्य वांधी न्नाह्मणे, जे जिमये ते आपणुं ॥३१॥ पछी यइ पूर्णाहुति, यज्ञ निर्विधन थयो । वंका शिर डंका दइ, प्रौढ प्रताप जणावियो ॥३२॥ पछी विद्या जोइ वित्रनी, दीधां दान दक्षिणा वणी। राजी करी वळी वाडवा, वळाविया भ्रवनभणी ॥३३॥ वळी खरचतां खुळा नहि, वध्या लाखवा लाखो सिंह । गोळ घीने दाळ रसाळ, वळी पिष्टनो पार नहि ॥३४॥ पछी पुछ्यं नाथने, आ मोदकतुं केम करीए । आपो घरोघर गाममां, एम हुकम कीधो हरिए ॥३५॥ पछी मांड्या आपवा, भरिभरी मोदक टोपला। आलतां खुट्या नहि, पोता लाडवा अतिभला।।३६॥ वहेंचतां वधी पड्या, ते नाख्या जळमां जंतुने। महाराजे आपी आगन्या, वळी साजामांदा संतने॥३७॥ पछी संघ सर्वेने शीख आपी, जाओ सहुसहुने घेर । पंच वरतने पाळज्यो, प्रभ्र भजज्यो रुडि पेर ॥३८॥ पछी पोत्ये पद्मारिया, करी ते जयजयकार । करी लीळा डमाणमां, अलबेले अपरम-पार ॥३९॥ पोत्ये यज्ञ पुरो कर्यो, पोषशुदी पुन्यमतिथि। तेदि यज्ञ पुरो थयो, कर्यो यथायोग्य कांइक कह्यो ॥४०॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदसुनिविरिचते

भक्तवितामणिमध्ये हभाणमां यज्ञनी समाप्ति करी एनामे ओगण-साठ्यमुं प्रकरणम् ॥५९॥

चोपाइ एम यज्ञ करी जदुनाथ, चाल्या क्यामळो सखाने साथ । रह्या जेतलपुरमां जइ, संघ सरवे संगाथे लइ ॥१॥ त्यांथी संघने शीखज करी, पोते चाल्या पश्चिमदेशे हरि । सारो पहेरी सुंदर सुरवाळ, झगे जरकज्ञी जामो विशाळ ॥२॥ माथे बांघीछे पाच सोनेरी, कमर कशी केसर रेटा केरी। वाजु काजु कुंडळ रूपाळां, हाथे हेमकडां वे वळाळां ॥३॥ हैये हार अपार शोभाळा, उर उतरी मोतिनी माळा। कोटे कनकनी कंठी शोभे, शिशे शिरपेच जोइ मन लोभे ॥४॥ चड्या घणामूले हरि घोडे, बीजा सखा असवार जोडे । चाल्या वाटमां एवाना एवा, सर्वे जनने दर्शन देवा ॥५॥ जेजे वाटमां आवीयां गाम, तेणे निरख्या सुंदर क्याम । देता दर्शन दीनदयाळ, आच्या प्रभुजी देश पंचाळ ॥६॥ सुंदर गाम सारंगपुर नाम, तियां पधार्या सुंदर क्याम । रुडा भक्त जीवो ने राठोड, आव्या हरि करी तियां घोड ।।७।। रही रात्य एक तियां राज, आव्या कारियाणी महाराज । तियां भक्त वसे एक मांचो, निह ते कोइ नियममां काचो ॥८॥ निरलोमी ने अतिनिष्कामी, तेने घेर पधारिया खामी। तियां रह्या हरि एक दिन, पछी आव्या गढडे जीवन ।।९।। मक्त समागी एमल जियां, रह्या कांइक कुपाछ तियां। पछी त्यांथी सधाविया श्याम, आव्या नाथ करियाणे गाम ॥१०॥ तियां रहा रात्य एक हरि, आव्या रायपर कृपा करी। सखा सरवे छे स्यामसाथ, आञ्या कोटडे वंधिये नाथ ॥११॥ गया गोंडळ ने जेतपर, आच्या धोराजि स्यामसुंदर ! जह जमनावडे

जगदीश, त्यांथी पाछो कर्यो परवेश ॥१२॥ आव्या दुधिवदर कंडोरडे, त्यांथी पधारिया कालावडे । भक्त जादवजिने भ्रुवन, रह्या रात्य त्यां प्राणजीवन ॥१३॥ त्यांथी सखाने शीखज दइ, पोते चाल्या सेवक वे लइ। त्यांथी मोडे गया करी महेर, भक्त रणमलजिने घेर ॥१४॥ पछी आव्या अलैये जीवनः, भक्त नारा-यणने भवन । त्यांथी गयाछे भादरे गाम, भक्त डोसो ज्यां रतनोराम ।।१५।। रह्या रात्य करी हरि महेर, वसता वशरामने वेर । पछी त्यांथी कर्यो परवेश, गया जोडियेथी कच्छदेश ।।१६॥ आवी अंजारमां रात्य रह्या, त्यांथी वालो धमडके गया। भक्त रामसिंघ रायघणे, करी सेवा भरी भावे घणे ॥१७॥ तियां रह्या दन दोयचार, पछी भ्रज पधार्या मोरार । दइ जनने दर्शनदान, तियां रह्या पोते भगवान ॥१८॥ कर्यो हुतासनीनो समैयो, आप्यो आनंद न जाय कहीयो। अति उडाडे रंग गुलाल, कर्यो अलवेले अलौकि ख्याल ॥१९॥ लीघो लावो नाथसाथ जने, फागणशुदी पुन्यमने दने । तेदि भुजमां उत्सव कयों, सर्वे जने मने मोद भर्यो ॥२०॥ करी अलबेले लीलालेर, गंगाराम हीरजिने घेर । दइ सुंदरने सुख क्याम, त्यांथी गया मानकुवे गाम ॥२१॥ तियां भक्त अदोभाइ नाम, वळी तेजो केशव ने श्याम । तेने दीघांछे दर्शनदान, त्यांथी तेरे गया भगवान ॥२२॥ तियां तेडाविया सर्वे संत, दिधां दर्शन सुख अत्यंत । त्यांथी आविया काळे-तळाव, जोइ मक्त भीमजिनो भाव ॥२३॥ रह्या दिन दोचारेक त्यांइ, पछी फरी आव्या तेरामांइ। भक्त नागजि संघजि सुतार, तियां आव्या ग्रुनि ने मोरार ॥२४॥ करी रसोइ जमाड्या संत, जम्या जन मेळा भगवंत । पछी बोलिया सुंद्रश्याम, भरिलि-

योने जळनां ठाम ॥२५॥ एम कहीने संत चलाच्या, वालो पोते वळाववा आच्या । पछी मळ्या सहुने महाराज, तमे राजी रहेज्यो मुनिराज ॥२६॥ एम कहीने शीखज दिधी, पोते वाट मांडवीनी लिधी। तियां मक्त मेघो वशराम, टोपण देविश सुंदर नाम ॥२७॥ तेने दइ दरशन नाथ, सर्वे जनने कर्यो सनाथ । त्यांथी नाथ बेठाछे नावडे, आव्या भादरे अहैये मोडे ॥२८॥ करीं कंडोरडानी चोराशी, आव्या घोराजिए अविनाशी। रहे भाडेर पातलभाइ, रह्या एक दिन प्रभ्र त्यांइ ॥२९॥ मेघपुर आव्या करी महेर, सोनी नारायणभक्तने घेर। त्यांथी प्रभु आव्या पिपलाणे, राख्या हरिने जनक्ल्याणे ॥३०॥ पछी आव्या आखे अलबेली, दवे नारायण घेर छविली । त्यांथी आच्या वालो अगत्राइ, जियां वसेछे पर्वतभाइ ॥३१॥ तियां रह्या हरि बहुदिन, तैंडाविया तियां हरिजन । करवा उत्सव अष्टमीकेरो, हैयामांहि छे हर्ष घणेरो ॥३२॥ तियां मोटो मंडप कराव्यो, मांहि मेडो कर्यो मनभाव्यो । तियां वेठा वालो बनमाळी, सुंदर मूरति रुडी रूपाळी ॥३३॥ जोइ जनने समाधि थाय, करे लीळा नावा नित्य जाय । पछी द्विज धनहीन जोइ, तेना सुतने आपी जनोइ ॥२४॥ फर्या फुलेके गाममां नाथ, अंसे असि श्रीफळ लइ हाथ । पछी आच्यो अष्टमीनो दन, बहु गुलाल लाविया जन ॥३५॥ भरे मुठी हेते हरि हाथे, नाखे नाथ निज-जन माथे। थया रंगे राता सहु जन, पाडे ताळी करे कीरतन ।।३६।। एम सारो उत्सव कर्यो च्यामे, अलबेले अगत्राइ गामे । आप्यो आनंद जनने जीवने, श्रावणवदी अष्टमीने दिने ॥३७॥ तेदि लीळा करी अगत्राये, करावी आंबे पर्वतभाये। पछी पधा-

रिया गढ जुने, साथे लिघोछे संघ सहुने ॥३८॥ संघ देखी दुष्ट दाजिया, पछी राजापासे रावे गिया । लेशे साहेब शहेर तमारुं, एनं माणस उतारो बारुं ।।३९॥ तैये राजा कहे सुणो तमे, एनं दीधुं करुं राज्य अमे । एह लेशेतो सुखेथी लियो, एने गाममां आववा दियो ॥४०॥ पछी शहेरमां श्याम पधार्या, निजजनने मोद वधार्या । पोते दिवस एक त्यां रह्या, पछी नावा दामोदर मया ॥४१॥ नाइ निसर्या मोहनलाल. चर्च्यु चंदन विपरे भाल। तेने दीधीछे दक्षिणा बोळी, आपी महोर नाथे अणतोळी ॥४२॥ पछी आविया शहेरमां इयाम, त्यां वाले कर्यो विश्राम। त्यांथी चालीया क्याम सुंदर, आव्या नरसिंहमेताने मंदिर ॥४३॥ तियां बेसिया घडी बेचार, पछी आवियाछे पुर बहार । सर्वे संघ संगे लइ क्याम, पछी आविया फणेणी गाम ॥४४॥ तियां सर्वेने शीखज दिधी, एवी लीळा अलबेले किथी। सर्वे जनने सुखिया करि, पोते पथार्या पांचाळे हरि ॥४५॥ बहुबहु लीळा करे लाल, जोइ जनने थाय निहाल। जे कोइ योगिना ध्यानमां नावे, ते अलबेलो लाड लडावे।।४६॥ करे लीटा अतिशे अपार, कहेतां कोण पामे तेनो पार । जेम सभर भयों मेराण, पिवे पंखी ते चांत्रप्रमाण ॥४७॥ तेम अति अगाध महाराज, कोण कळे तोले कविराज। पण जे पिये ते सुखी थाय, निश्चे निष्कुळानंद एम गाय । १४८।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकशीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचिंतामणिमध्ये साठ्यमुं प्रकरणम् ॥६०॥

चोपाइ-पछी पधार्या देश पंचाळरे, जियां वसेछे दास दयाळरे। सर्वे संसारनां सुख त्यागिरे, एक प्रश्रुपद अनुरागिरे ॥१॥ पंचविषयथी प्रीत उतारीरे, पंचवत प्रेमे रह्यां धारीरे।

दिधां देहतणां सुख नाखीरे, रह्यां अंतरे प्रभुने राखीरे ॥२॥ एवा जन जक्तथी उदासिरे, तियां आव्या आपे अविनाशिरे। जोइ जनना हैयानुं हेतरे, आच्या प्रभुजि सखा समेतरे ॥३॥ तेने दिघांछे दर्शन दानरे, बहुभावे करी भगवानरे। अंध अपंग बुढा ने बाळरे, असमर्थ अबळा लाजाळरे ॥४॥ तेने दया करी हरि आपरे, दीधां दर्शन टाळिया तापरे। पछी जने पुछचा समाचाररे, कह्या हरिए करी विस्ताररे ॥५॥ जेजे पुछता ग-याछे जनरे, तेते कहेता गयाछे जीवनरे। पछी पुछी जगतनी वातरे, कही राजी थइ रिक्रयातरे ॥६॥ जेने नोतु अवाणुं जग-नेरे, तेपण मगन थया सुणी मनेरे। कहे धन्यधन्य महारा-जरे, एवो जगन थाय कोणे आजरे ॥७॥ बीजा खरचे बहुबहु धनरे, पण न थाय निरविधनरे। कैंक जनतणा जीव जायरे, एवं सुण्युंछे जगनमांयरे ॥८॥ छटे चोर के खरची खुटेरे, थाय फजेती शकोरां फुटरे । तेतो तमे कर्यो निर्विधनरे, जगजीवन प्रस् जगनरे ॥९॥ कहे नाथ एनो इयो विचाररे, एवा करीए जगन अपाररे । कहोतो करीए वर्षो वरवरे, एकएकथी बीजो सर-सरे ॥१०॥ एम कही कर्यु परियाणरे, तेड्या संत समीपे सुजा-णरे । मुक्तानंद ने मोटेरा भाइरे, ब्रह्मानंद नित्यानंद त्याइरे ॥११॥ कहे नाथ सुणो संत मळीरे, करीए विष्णुयज्ञ एक वळीरे । जुओ गुजरखंड विचारीरे, कोण ठेकाणे जायगा सारीरे ॥१२॥ बोल्या संत सांभळज्यो इयामरे, यज्ञ जेवुं जेतलपुर गामरे। तियां सुंदर कोट तळावरे, वळी गाममां छे घणो भावरे ॥१३॥ त्यारे बोल्या सुंदर क्यामरे, एतो अमने न गम्युं गामरे। एनो धणी छे धर्मनो द्वेपिरे, तेतो यज्ञ करवा केम देशेरे

॥१४॥ मोर्थे मेळा थयाता ब्राह्मणरे, तेने पुछ्युं इतुं अमे प्रश्नरे। द्विज अत्रि वैश्य शुद्र वळीरे, कह्युं केम पूजे माता मळीरे ॥१५॥ चारे वर्णनी एक छे रीत्यरे, कहे कांइ छे एहमां वीगत्यरे । तैये बोलिया शास्त्री सुजाणरे, सांभळो कहुं श्रुतिप्रमाणरे ॥१६॥ द्विज क्षत्रि वैश्य जे कहेवायरे, तेने मद्यमांसे न पूजायरे। बीजा होय जेजे शूद्र वर्णरे, तेनां वेदथी बारां आचर्णरे ॥१७॥ त्यारे कह्युं में सांभळि लहीएरे, बीजा करे तेने केवा कहीएरे। त्यारे शास्त्री कहे ए मलेखरे, पापी ढेढ भंगियाथी नीचरे ॥१८॥ त्यारे मे कह्युं सर्वे सांभळज्योरे, एवा हो ते एमां जइ भळज्योरे। ते दिवसना दाज्याछे वामीरे, वस्त मेलीछे राजाने भामीरे ॥१९॥ माटे जरुर करशे विघ-नरे, तियां पुरो नहि थाय जगनरे। त्यारे संत कहे जमशे ब्राह्म-णोरे, केम नाखरो निजभाणे पाणोरे ॥२०॥ त्यारे कहे महाराज सारुरे, करो मनमाने ज्यां तमारुरे । पछी जेतलपुरनुं ठेरावीरे, करी सामग्री सरवे आवीरे ॥२१॥ लीधां घी गोळ ने घउं वणारे, कर्या गंज शाळ दाळतणारे। कोइवातनी न राखी खामीरे, त्यांतो पथारिया पोते खामीरे ॥२२॥ आव्या संघाये संघने लहरे, नेड्या वणतेड्या आव्या कइरे । आव्या तेडाव्या सरवे संतरे, आव्या संघ नावे तेनो अंतरे ॥२३॥ दिये दर्शन प्रमन्न होइरे, लिये जन सुख सुख जोइरे। पछी बोलिया जगजीवनरे, द्रष्ण प्रणा ए मोटो जगनरे ॥२४॥ बीजुं यज्ञ आ थाय न थायरे, तेनुं नथी अमारे जो कांयरे। एम कही जणावे जननेरे, दिये रात्य दिवस द्रष्ण-नेरे ॥२५॥ पूजे जन जीवनने मळीरे, लावे पूजा विध्वेविध्ये वळीरे । चर्चि चंदन हार पहेरावेरे, गुंथी गजरा तोरा घरावेरे ॥२६॥ करे पुष्पूना कंकण काजुरे, बांधे बेरखा सुंदर बाजुरे। १६ मॅ०चिं०

करे फुलनो फेटो पछेडीरे, बळी जमाडे उतारे तेडीरे।।२७॥ दिये दर्शन एवाना एवारे, जगजीवन छे जोया जेवारे। एम करेछे लीळा अपाररे, निर्खि सुख लिये नरनाररे ॥२८॥ एवं देखिने दाजिया वामीरे, कहुं नरेशने शिश्व नामीरे। कहे सांमळी श्रवणे राजनरे, जेसारु करें छे खामी जगनरे ॥२९॥ जे दिनो ए जगन थाय छेरे, तेदिनो राजतेज जाय छेरे। एने जझे मुवो तात तारोरे, हवे आञ्योछे तमारो वारोरे ॥३०॥ माटे जीवबुं होये राजनरे, तो न करवा दियो जगनरे । सुणी आवी नरेशने आंधीरे, कहे जाओ लावो एने बांघीरे ॥३१॥ एम कर्यु परियाण त्यांहरे, जाण्युं अंतरजामिए आंइरे । जोयुं विचारी करशे विघनरे, अमे रहेशुंतो पिडाशे जनरे ॥३२॥ पछी प्रभुजी चडिया घोडेरे, लड् संघने गया चरोडेरे। पछी केड्ये आवीकटकाइरे, आव्या भगवा करवा भुंडाइरे ॥३३॥ तेणे स्वामी सधाव्या सांभळीरे, गया धुड फाकता ते वळीरे । पछी सांझे आव्या पोते नाथरे, असि कशेल सखा छे साथरे ॥३४॥ संतो तमारी रक्षाने काजरे, सखे घार्या छे आयुध आजरे। हवे अमेतो जाशुं डमाणरे, तमे रहेज्यो यां संत सुजाणरे ॥३५॥ पछी पधारिया पोते क्यामरे, सखा लइने डभाण गामरे। तियां जइने हतुं जे सिधुरे, तेतो सरवे मगावी लिधुरे ।।३६।। तेणे जमाडिया जन बहुरे, वर्ण अढार ने वळी मउरे । आप्यां जमाडी बळी वसनरे, एम कीधोछे नाथे जग-नरे ॥३७॥ आञ्या भगवा कहे भ्रुल्या अमेरे, अतिसमर्थ छो खामी तमेरे । अमे अमारुं अवछं कीधुरे, अर्थ विना अपराध लीधुरे ॥३८॥ त्यारे महाराज कहे नथी कांइरे, जाओ जमो जेत-लपुरमांहरे। पछी जमाडी जोगिनी इंडंरे, कर्युं वामिए वामिनुं

शुंडरे ॥३९॥ करवा इता जगन हमेशरे, न करवा दीधा ते नरेशरे । तेतो कहुं इतुं पोते पहेलुंरे, थयुं तेमनुं तेमज छेलुंरे ॥४०॥
एम जगन थयो ए जाणोरे, महाशुदी पंचमी प्रमाणोरे । जोइ
राजी थया हरिजनरे, दुःख पामिया पापिया मनरे ॥४१॥ इति
श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदगुनिविरचिते भक्ताचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे श्रीहरि पांचाळथी जेतलपुर
पधारि यज्ञ कर्यो एनामे एकसळ्यमुं प्रकरणम् ॥६१॥

चोपाइ-पोते दयाळ हता डभाण, सुंदरवर स्याम सुजाण। त्यांथी चालिया अंतरजामी, आव्या बुधेजमां बहुनामी ॥१॥ हरिभक्त तियां हठिभाइ, रह्या रात्य तियां सुखदाइ। त्यांथी आव्या पछमे महाराज, जियां भक्त ओधव जेराज ॥२॥ रही रात्य एक तेने घेर, त्यांथी वालो आच्याछे झिंझर । संगे भक्त हतो मेरजेठो, अतिष्टद्ध अंगे वळी दिठो ॥३॥ तेने पहेराच्यो सुंदर स्वांग, जामी जरी ने सीनेरी पाग । रही राख्य ने चाल्या दयास्त्र, आच्या कुंडसमांहि कृपास्त्र ॥४॥ मोटा मक्त मामैयो ने राम, तेने घेर रह्या जुग जाम । त्यांथी सारंगपुर आविया, दिन त्रण सुधी तियां रह्या ॥५॥ पछी आच्या नागडंके नाथ, सर्वे सखा छे पोताने साथ। तियां भक्त सुरो सवसंगी, हरिभक्त जक्तथी असंगी ॥६॥ तेने घेर गिरिधर गया, दिन चारसुधी तियां रह्या । अतिहेते जमाड्या जीवन, प्रभु जनपर छे प्रसन ॥७॥ देवा दर्शन जनमन भाव्यां, सुंदर वस्त्र श्यामळे मगाव्यां । वाले पहेर्यो सोनेरी सुवाग, जेणे जोया तेनां मोटां भाग्य ॥८॥ पछी त्यांथी क्यामळो सधाच्या, पोते नाथ पिपरहिये आच्या । तियां भक्त पवित्र जे पीठो, तेने घेर रह्या भाव मीठो ॥९॥ त्यांथी

चालिया संदरश्याम, गया भक्त मांतराने गाम। त्यांथी भोंयरे मोजन कींधुं, भक्त नाजाने दर्शन दीधुं ॥१०॥ पछी त्यांथी आव्या गोखलाणे, जाग्यां भाग्य भक्त जीवो जाणे। त्यांथी चालिया पूरणकाम, आव्या कुपाळ करीयाणे गाम ॥११॥ तियां रह्या राजी थइ बहु, आव्या दास दरशने सहु। एम करतां हुता-सनी आवी, करी लीळा लाले मनभावी ॥१२॥ तियां उडाड्यो वाले गुलाल, सर्वे सखा कर्या रंगे लाल। वळी करे घुन्य ताली वाजे, लोक लाजवाळा जोइ लाजे ॥१३॥ करी उत्सव ने पछी मान, आप्यो अलैयाने शिरपाव । कह्यं राखज्यो आवोज वेश, फरी आवज्यो वाळाक देश ॥१४॥ सखा संगे लइ दश विश, करज्यो प्रश्वनी वातो हमेश । एने एटली आगन्य। करी, पछी त्यांथी पधारिया हरि।।१५॥ वसे कोटडे प्रेम पुतळी, तेने घेर गया वालो वळी । त्यांथी पधार्या नडाले गाम, जियां भक्त गंगेव ने राम ॥१६॥ तियां जमाड्या लखमणे राज, पछी बंधिये गया महा-राज। रात्य शेठ जुठा घेर रह्या, पछी गोंडळथी वडे गया॥१७॥ त्यांथी भादरे प्रभु पधार्या, देइ दर्शन मोद वधार्यो। पछी त्यांथी पिपलिये आव्या, घणुं मानबाइ मन भाव्या ॥१८॥ त्यांथी रण उतरिया राज, आव्या कच्छदेश महाराज। करी कच्छमां कृपा कुपाळे, दीघां दर्शन सहुने दयाळे ॥१९॥ बागड पावर ऋछ अब-डासे, कर्यो हरिनां दर्शन दासे । करी भुजे भीम एकादशी, पछी पधारिया वांणे बेशी ॥२०॥ उत्तरी हरि आव्या हालार, आप्यां दासने सुख अपार। जेजे वाटमां आवेछे गाम, तियां वाली करे विश्वराम ॥२१॥ दिये दर्शन प्रसन्न घणुं, मन छे सोरठ जावातणुं। त्यांथी आविया गढ जिरणे, रह्या रात्य न जाणिया केणे ॥२२॥

पछी त्यांथी चाल्या अलबेलो, आव्या अगत्राइ छेल छिबलो । रह्या दिन दश तियां श्याम, पछी आविया पंचाळे गाम ॥२३॥ भक्तिशोमणि झिणोभाइ, तियां रह्या इयाम सुखदाइ। सर्वे जनने दर्शन दीधां, करी कृपा कृतारथ कीधां।।२४।। पछी त्यांथी पधारिया हरि, आव्या माणावद्र महेर करी। जियां भक्त वसे मया-राम, गोविंद भाणो आंबो वाघो नाम ॥२५॥ वळी वसता आदि जे जन, तेने नाथे दिधां दरशन । पछी त्यांथकी आविया श्याम, देता दरशन गामोगाम ॥२६॥ आव्या करीयाणे पोते कृपाळ, देवा दर्शन सहुने द्याछ । तियां आवियाछे संतदास, महामुक्त अंतरे प्रकाश ॥२७॥ सदेहे जाय हिमालापार, पोते गया आव्या दोयवार । आपइच्छाए आवे ने जाय, बीजा कोइ थकी न जवाय ॥२८॥ तेनी खबर पुछी अविनाशे, सर्वे कहीछे ते संतदासे। कहे नाथ सुणो संतदास, रहो सत्संगमां करी वास ।।२९।। एम कहिने समस्या किथी, संते वाट हिमालानी लिथी। पछी तेडा-विया सर्वे संत, देवा दासने सुख अत्यंत ॥३०॥ मेरया राजा भग-तने राजे, कहेज्यो आवे सहु दर्शनकाजे । आव्या संत ते सरवे मळी, हती देशोदेश जे मंडळी ॥३१॥ सर्वे आविया प्रभुजि पास, आवी निरिखया अविनाश । सामा आविने मळिया श्याम, पुरी संतना हैयानी हाम ॥३२॥ पछी बेठा संत ने श्रीहरि, तेने पुछ्युं वाले श्रेमे करी। संत सुखिया छो तमे सहु, हमणां दुबळा दिसोछो बहु ॥३३॥ कांइक अधिकुं जमज्यो अन्न, सुखे थाय प्रभुनु भजन। एम कहुं छे दया करीने,पण त्याग वालो छे हरिने ॥३४॥ पछी जनने जमाड्या नाथे, प्रेमे पिरव्युं पोताने हाथे । जे प्रसादिने इच्छेछे अन, तोय मळति नथी एक रन ॥३५॥ जे प्रसादिसारु शिव आप,

सहो पारवतिजिनो शाप। ते प्रसादी पामी सहु संते, दिधी भावे करी भगवंते।।३६॥ अतिअढळ ढळया अविनाशी, श्यामसुंदर वर सुखराशी। बळी नावा जाय ज्यारे नाथ, त्यारे संत लिये सहु साथ ।।३७।। तियां फेरवे अश्वने हरि, जुवे जन सहु द्रग भरी। जुवे जनने जीवनप्राण, देखी वेपने करे वखाण ॥३८॥ कहे सहुतणुं तेज वळी, आव्युं आ संतमां सर्वे मळी। एम कही राजि बहु थिया, पछी नाथ उतारे आविया !।३९।। एम करतां लीळा नित्य नवी, पछी जनमाष्टमी ते आबी। कर्यो उत्सव अति आनंदे, सुख लीधुं सहु जनवृंदे ।।४०।। गामोगामथी आव्या हता दास, तेणे निरिखया अविनाश । तियां मेघ झरे झरमरिया, रमे अल-बेलो आनंद भरिया ॥४१॥ जोइ जन थयांछे मगन, एम वीत्यो अष्टमीनो दन । एवी लीळा अलबेले करी, पछी त्यांथी पधारिया हरि ॥४२॥ आञ्या सुखपुरे सुखसिंधु, दीनदयाळ दीनना बंधु। रह्या पोते तियां दिन चार, आप्यां संतने सुख अपार ॥४३॥ त्यांथी आच्या सारंगपुरे नाथ, सखा संत सहु पोतासाथ। दिये दर्शन प्रसन्न होइ, थाय मगन जन मुख जोइ ॥४४॥ वळी मर्भे बोले मरवाळो, जाणे जननी छेल छोगाळो । मर्मे भरी हरि करी हास, आप्यो बापुभाइने संन्यास ॥४५॥ जेने जेम थायछे समास, तेने तेम करे अविनाश । माटे जाणवा अंतरजामी, पछी संतप्रत्ये बोल्या खामी ॥४६॥ संतो जाओ हवे सहु मळी, फरो देशो-देशमां मंडळी । जेने भणवुं होय ते भणज्यो, सहु नियममां कुशळ रहेज्यो ॥४७॥ जेजे थाय नियममांथी बारुं, एतो नथी गमतुं अमारुं। त्यारे संत कहे सत्य खामी, एम कही चाल्या शिश

नामी ।।४८।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यः निष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे अष्टमी-उत्सव एनामे वासठ्यमुं प्रकरणम् ॥६२॥

राग सामेरी-पछी प्रभुजि पधारिया, पोने ते गुर्जर देश। लीळा करी गुजरातमां, पांचाळे कर्यो प्रवेश ॥१॥ सतसंगी सोर-ठनां, हालारनां हरिजन। तेने उपर दया करी, दीधां महुने दर्शन ॥२॥ दास उपर दयाळने, दया दलमां अतिघणी । जाणे मारा जनने, दियुं संपत्ति सुखतणी ॥३॥ जप तप तीरथ करते, नावे धरते जोगिने ध्यान । ते आवे जनने भुवन चाली, महेर करी महेरवान ॥४॥ फरे करे पावन पृथिवी, जुबे जाणे अजाणे जन । जक्त आश्चर्य जोड्ने, करे भाव अभावे भजन ॥५॥ जेने दर्शने दुष्कृत नाशे, अने स्परसे नाशे पाप । तेह हरिने संभारतां, सहु शुद्ध थयांछे आप ॥६॥ लाग्यो भय लुंटक जनने, अने पापिने पीडा थइ। डर्या नर तसकरा, अने दुष्ट दुःख पाम्या सइ ॥७॥ कळिमां सतजुग कीधो, प्रभु पोते प्रकटी । ते जाणे जन पोतातणा, न जाणे कुडियां कपटी ॥८॥ खान पान पटवडे, सर्वे जन सुखी बहु । ते प्रतापं महाराजनी, प्रकट जन जाणे सहु ॥९॥ पुरुषोतम पूरण प्रकट्या, अनेक जीव उद्धारवा । दया करी फरे देशमां, निजजननां कारज सारवा ॥१०॥ जेजे देशमां दास हता, भजता हता भगवान । गोती तेनां गाम पोते, दीघां दर्शन दान ॥११॥ पछी आवी पंचाळमां, अने लीघा सखा साथ । घोडेचडी गुजरातमां, आव्या डभाणे नाथ ॥१२॥ दर्शन दीघां दासने, दयाळे दया करी । संतने मुख आपवा, प्रधारिया पोते हरि ॥१३॥ ते सांभळि सतसंगी सर्वे, आवियां ततकाळ।

वेल्य घोडा गाडले, बेसारी बुढां बाळ ॥१४॥ नयणे निर्खि नाथने, बळी हरस्विया हैये घणुं । अंतरमां सुख आवियुं, ग्रुख जोइ मोहनतणुं ॥१५॥ पछी हाथ जोडी हरि आगे, करे विनति वारमवार । प्रश्च भले पधारिया, लिधी अमारी सार ॥१६॥ पछी प्रभुने पूजिया, वळी चरच्यां चंदन घणां । पुष्पहार पहेराविया, कर्यां छोगलां फुलतणां ॥१७॥ अंबर सुंदर आभूषण, अरिपां अलबेलने । धूप दीप करी आरती, पाय लाग्यां छिबला छेलने ॥१८॥ भोजन व्यंजन भिल भाते, जमाडीया जीवनने। जम्या भूधर भावशुं, करवा जन प्रसन्नने ॥१९॥ पछी बांध्यो हिंडोळो बारणे, सुंदर वडे सोयामणे। तियां विराज्या नाथजी, जोइ जन जाय भामणे ।।२०।। एम कैक दन दर्शन दइ, नवला ते नेह वधारिया । पछी सर्वेने शीख आपी, पोतेपण पंघारिया ॥२१॥ आवे जाय सर्वे देशे, पण रहे घणुं पांचाळ । निजजनने सुख देवा, करे लीळा दयाळ ॥२२॥ बाळ जोबन घुद्धजन, वळी नरनारी कहेबाय । जक्तवात जाणे नहि, सहु गुण हरिना गाय ॥२३॥ पछी एक दिन नाथ कहे, सत्संगी सहुने जणावज्यो । अमे आवशुं वउठे, तमे पण त्यां आवज्यो ॥२४॥ सुंदर मास सोहामणी, कार्तिकश्चदि पुन्यम कैये। आञ्यांतां जन आगळे, पोतेषण आव्या तैये ॥२५॥ पधार्या पश्रमदेशथी, बुधेजमां दिन दो रहा। पछी वालो वउठे, अश्वे चडिने आविया ॥२६॥ संच्यासमे श्रीहरि, प्रश्रुजि पथारिया । दर्शन दइ दासने, तेना ते ताप निवारिया ॥२७॥ पछी फरिया संघमां, दर्शन देवा श्रीहरि । लाखो लोके लाव लीघो, निरखिया लोचन भरी।।२८॥ पछी आवी उतर्या, वळी सुंदर शोधी जाग्य । सतसंगिने इसं-

गिनो, करियो छे विभाग ॥२९॥ पछी पोते विराजिया, वेल्य उपर वालम वळी। सतसंगिने संत सर्वे, बेठी मुनिनी मंडळी ॥३०॥ सतसंगी सर्वे कहे, दियो आगन्या दयाळ । अमे तमारे कारणे, कराविये सुंदर थाळ ॥३१॥ आपिये अमने आगन्या, संतमारु कराविये रसोइ। त्यारे महाराज कहे सारुं, करावज्यो सहु कोइ ॥३२॥ पछी एह समे आरोगिया, वळी पुरी सुंदर पाक । उड़बळ भात दाळ अवल, सुंदर तळेलां शाक ॥३३॥ जमी जीवन पोढिया, कयों वेल्य उपर विशराम । निरखतां जन नाथने, बहिगया चारे जाम ॥३४॥ पछी प्रभाते प्रभु जागी, नावा चालिया नाथ । नारीजुथ नोंखुं करी, लीधा सखा सर्वे साथ ॥३५॥ पछी नाहि नाथ पधारिया, गया गाममां घोडे चडी । सेवकने शिरपाव आप्यो, शिवने पाय पडी ॥३६॥ पछी उतारे पधारिया, देइ ददामां दयाळ । आवी बेठा तरुतळे, नाहि जमवा जन प्रतिपाळ ॥३७॥ जम्या हरि जुगत्ये करी, जेम घटे तेम बेसी आसने। पछी सर्वे थाळ लइ, दिधी प्रसादी दासने ॥३८॥ एम अलौकिक करी लीळा, वउठामां वाले वळी। पछी सहुने शीख आपी, संत फरो बांधि मंडळी ॥३९॥ पछी पोते पथा-रिया, करी कारज मोदुं सही । जेणे निष्ट्या नाथने, ते जम-हाथ जावाना नहि ॥४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजा-नंद्खामिशिष्यनिष्कुलानंद्मुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये वडठानो समयो कर्यो एनामे त्रेसठ्यमुं प्रकरणम् ॥६३॥

चोपाइ—पछी पोते गया गुजरात, रह्या डभाणमां दोय रात । हति संतनी मंडली साथ, वळतां वरताले आविया नाथ ॥१॥ तियां रह्या हरि संत सहु, करी लीळा आप्यां सुख बहु । रह्या पंच

रात्य पोते तियां, पछी यांथी बुधेजे आविया ॥२॥ त्यांथी चालिया समर्थ स्वामी, आव्या बोचासणे वहुनामी। बामणगाम ने एकलबारे, पोता सरसवणि महीपारे ॥३॥ जइ पादरे पाछा वळि-या, आवी वरताले संतने मळिया। त्यांथी चालि उमरेटे गया, देवा दर्शन प्रसन्न थया ॥४॥ बाजां बाजते पधार्या इयाम, आव्युं सामैये सघळं गामं । दीघां दासने दर्शन दान, रही रात्य चाल्या भगवान ।।५॥ भाव गामना लोकने वहु, आव्यां पुरवारां मळी सहु। तेने दर्शन दइ दयाळ, करी कल्याण चाल्या कृपाळ ॥६॥ संगे आप्योतो भोजन थाळ, यथायोग्य जम्या ते दयाळ। पछी अभ्या डड्सर गाम, कर्यो कठलाल्ये विशराम ॥७॥ आंतरोळी उंटडिये महादेव, तियां पधार्या देवाधिदेव । तियां शिवनां दर्शन कीथां, वस्र सर्वे सेवकने दीधां ॥८॥ आप्या रुपैया मुठडी भरी, पछी त्यांथी पधारिया हरि। आग्या छ्वांग्य सलकि गाम, पछी प्रांतिये पधार्या इयाम ॥९॥ त्यांथी चालिया श्यामसुंदर, आव्या वाल्यमजि विजापर। त्यांथी गेरिते गया गोपाळ, विशनम् पधार्या दयाळ ॥१०॥ तियां जमाड्या ब्राह्मण घणा, करी मोदक मिसरितणा। त्यांथी गया उंझे महेसाणे, तियां जनने जमाड्या पराणे । ११।। पछी आव्या कर्जिसण नाथ, सखा सांख्ययोगी हता साथ। पछी महाराज मोटेरे आव्या, शहरना सतसंगी बोलाव्या ॥१२॥ त्यांथी जेतलपुर पथार्था, जनने हैंये हर्ष वधार्या। एम फरी हरि सर्वे गाम, कर्या छे निज-जननां काम ॥१३॥ दास अर्थे फर्या सर्वे देश, पछी कर्यो पांचाळे प्रवेश । तियां दासने दर्शन दीशां, मळी नाथ कुतारथ कीषां ॥१४॥ पछी आच्योछे फागण मास, थया होळी रमवा

हुलास । तियां हरिजनने तेडाच्या, दश्चविश संतपण आव्या ।।१५।। पछी सुंदर आण्यो समाज, रंग केशर रमवा काज। तेल फुलेल गुलाल घणा, मेल्यो समाज न राखी मणा ॥१६॥ सखा ताकी रह्याछे तयार, जमे जीवन एटली वार । ज्यारे जमिलि-धुंछे जीवने, तियां आविने घेरिया जने ॥१७॥ लाव्यां रंग सुरंग गुलाल, घेरिलिधाछे घरमां लाल । छांटे रंग उडे छोळ्युं घणी, चडी गरदी गुलालतणी ॥१८॥ रंग सोरंगे रंग्या रंगिलो, रसबस थयाछे छविलो। पछी नाथ कहे सुणो तमे, मागो फगवा ते आपिये असे ॥१९॥ एम करी अलबेले वात, सुणी जन थया रळियात । वारु मागशुं अमे महाराज, देज्यो राजी थइ तमे राज ॥२०॥ त्यारे राज कहे राजी छैये, मागो मन-मांन्युं अमे देये। त्यारे बोल्या जन जोडी हाथ, तम पासे ए मागिये नाथ ॥२१॥ महाबळवंत माया तमारी, जेणे आवरियां नरनारी। एवं वरदान दिजिये आपे, एह माया अमने न न्यापे ॥२२॥ वळी तमारेविषे जीवन, नावे मनुष्यबुद्धि कोइ दन। जेजे लीळा करो तमे लाल, तेने समझं अलौकिक ख्याल ॥२३॥ सतसंगी जे तमारा कहावे, तेनो केदि अभाव न आवे। देश काळ ने कियाए करी, केदि तमने न भुलिये हरि ॥२४॥ काम क्रोध ने लोभ कुमति, मोह ज्यापिने न फरे मति। तमने भजतां आडुं जे पड़े, मागिये ए अमने न नडे ॥२५॥ एटढुं मागिये छैये अमे, देज्यो दया करी हरि तमे। वळी न मागिए अमे जेह, तमे सुणी लेज्यो हिर तेह ॥२६॥ केदि देशो मां देहाभिमान, जेणे करी विसरो भगवान । केदि कुसुंगनो संग म देज्यो, अधर्मथकी उगारी लेज्यो ॥२७॥ केदि देशो मां संसारि

सुख, देशो मां प्रभु वास विमुख । देशो मां प्रभु जक्तमोटाइ, मद मत्सर ईरषा कांइ ॥२८॥ देशो मां देहसुख संयोग, देशो मां हरिजननो वियोग । देशो मां हरिजननो अभाव, देशो मां अहंकारी खभाव ॥२९॥ देशो मां संग नास्तिकनो राय, मेली तमने जे कर्मने गाय। ए आदि नथी मागता अमे, देशो मां दया करीने तमे ॥३०॥ पछी बोलिया स्थामसुंदर, जाओ आप्यो तमने ए वर । मारी मायामां नहि मुंझाओ, देहादिकमां नहि बंधाओ ॥२१॥ मारी कियामां नहि आवे दोप, मने समझशो सदा अदोप । एम कह्युं थइ रिक्रयात, सहुए सत्य करी मानी भात ।।३२।। दीघा दासने फगवा एवा, बीजुं कोण समर्थ एवं देवा । एम रम्या रंगभर होळी, हरिसाथे हरिजन टोळी ॥३३॥ थया रसबस रंगभिनो, चालो नावा कहे नाथ दीनो । पछी पोते थया असवार, संगे चालिया सखा अपार ॥३४॥ गातावाता नावा नाथ गया, करी लीळा नातांनातां तियां । नाहि नाथ चाल्या सखा संगे, अति आनंद मर्गाछे अंगे ॥३५॥ आव्या संत बे नाथे बोलाव्या, कही अमसारु भेट शुं लाव्या । कहे संत लाव्या फुलहार, नाथ कहे आवी लावी आ बार 112६11 पछी अश्वथी हेठा उतर्या, संते पुष्पना शणगार कर्या । कंठे आरोप्या फुलना हार, बांध्या बाजु ते शोभे अपार ॥३७॥ तोरा गजरा फुलना धर्या, काने गुच्छ ते फुलना कर्या । बांये बेरखा कंकण सार, कर्या फुलतणा सणगार ॥३८॥ धूप दीप उतारी आरति, करी करजोडिने विनति । करी पूजा ने लागिया पाय, निर्व्ह नाथ त्रपत न थाय ॥३९॥ क्याम सङ्गो शोभेछे अति, मनोहर सुंदर मूरति। नयणां भरिने निर्खेछे जन, जोइ जीवन थया मगन ॥४०॥

जयजय कहे निजदास, लीधुं सुख दीधुं अविनाश । करी लीका अलौकिक क्यामे, शोमावंत सारंगपुर गामे ॥४१॥ कर्यो समैयो सुंदर जाणो, फागणशुदी पुन्यम प्रमाणो । ते दिवसे नाथे लीका किथी, पछी सर्वेने शीखज दिथी ॥४२॥ इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्चिते भक्तिं-तामिणमध्ये श्रीहरिचरित्रे महाराज सारंगपुर पथार्य एनामे चोसठमुं प्रकरणम् ॥६४॥

चोपाइ-पछी संत चाल्या सहु मळी, महामुक्ततणी जे मंडळी। सर्वे गुजरदेशमां गया, कैक पुरमां पढवा रह्या ॥१॥ सतसंगी गया सर्वे घेर, थइ सुखी सहु बहुपेर । जोड् लीळाने चडी खुमारी, उतरे नहि केनी उतारी ॥२॥ करे चर्चा परस्पर ज्यारे, थाय केफभरी वात त्यारे। सहुने चित्ते चङ्गो रंगचोळ, आवी अंतरे मस्ति अतोळ ।।३।। थयुं प्रकट जाणे कल्याण, नहि ऊधारी वातनी वाण । होय परचा हजारो हजार, जाणे जन न जाणे संसार ॥४॥ जे कोइ सतसंगी नाम कावे, पंचत्रतने पाळे पळावे। ते आ लोक परलोकने मांइ, रहे सुखी ते जन सदाइ ॥५॥ जेदि आवे आ देहनो काळ, तेदि आवे तेखवा दयाळ। रथ वेल्प विमान ने वाजी, मुके देह घणुं थइ राजी ॥६॥ कहे आच्याछे तेडवा नाथ, हुं जाउंछुं महाराजने साथ। मानज्यो मारुं हितवचन, सहु खामिनुं करज्यो भजन ॥७॥ एम कहीने मुकेछे देह, सर्वे जाणे सतसंगी तेह । कैक क्रुसंगी तेपण जाणे, थाय दर्शन प्रकट प्रमाणे ।।८।। ज्यारे मरे कुसंगिमां कोइ, नजरे जमिकरने जोइ । जातां जमहाथ जोइ कुसंगी, पछी समझी थाय सतसंगी ॥९॥ एम वधतो जाय सतसंग, जोइ रीत्य चिचे चहे रंग। आवे संत करे वहु वात, ते सांभळी थाय रिक्रयात ।।१०।। वळी पूर्ण पुरुषोत्तम जेह, मळे प्रकट प्रमाण तेह । तेना संत पंचवते पुरा, ए आगळे विजातो अधुरा ॥११॥ एवा संत-शिरोमणि जेह, फरे देशप्रदेशमां तेह । जेनां आगन्याकारी छे अंग, केदि न करे वचननो भंग ॥१२॥ तेने आपियुं एम वचन, जाज्यो तवरे मळी मुनिजन । आवी शक्या तो आवशुं अमे, नहितो नहाज्यो नर्मदामां तमे ।।१३॥ एवी संतने आगन्या आपी, पछी जाण्युं वध्या घणा पापी। तैये काळने आगन्या किथि, मुवा पापी जीव बहुविधि ॥१४॥ पोते छांना रह्या घशुं वयाम, काळे की धुं छे काळ दुं काम। पोते लीधो तपस्तीनो वेष, रह्या गुप्त वधारिया केश ॥१५॥ पहेरे खेस ने ओढे चोफाळ, माथे शोमेछे सुंदर बाळ । पहेरी टोपी ओपी शोमातणी, स्याममूर्ति ते पुष्ट छे घणी।।१६।। रहे छाना न जाणे कोइ जन, करे एकांति दास दर्शन। एम वीतिगया बहु दिन, कोइ जाणिशके नहि जन ॥१७॥ पछी आन्योछे वसंत मास, सुणि वसंत सांभरिया दास। पछी बोलिया दीनदयाळ, लावो तेडी संत ततकाळ ॥१८॥ थइ खबर आविया संत, वालो राजी रमवा वसंत । पहेरी वस्त्र जरिनां जीवन, घणुं जन उपर छे प्रसन ॥१९॥ आवे संत मळे भरि बाथ, जुबे अमृतदृष्टिए नाथ। घणा दिनना जन हता प्यासी, थया तप्त जोइ अविनाशी ॥२०॥ पछी नाथ कहे सुणो दास, आतो जायछे फागण मास । गावो फाग ने धुम मचाबो, नित्य नावे अवसर आवो ॥२१॥ करो रमवातणो समाज, एम बोल्या राजि थइ राज । पछी संते कर्ये। सराजाम, होळी हरिशुं रमवा हाम ॥२२॥ पछी कढाच्यो रंग सोरंग, केस

केसर कसुंबो पतंग। भर्या चरु कडायां ने कडा, वळी गोळा मांटला ने घडा ॥२३॥ लाव्या तेल गुलाल अपीर, सम थया सखा ग्रूरवीर । पछी नाथ कहे सुणो जन, आपो अमने सखा थइ प्रसन ॥२४॥ पछी दशविश संखा लीधा, बेउ टोडा बरोबर की घा। सांख्ययोगी सखा श्याम साथे, ली घी हेम पीचकारी हाथे ॥२५॥ पछी मगावियो रंग पासे, भरी पीचकारी अवि-नाग्ने । छांटी एकएक सहु माथे, पछी नाख्योछे गुलाल नाथे ॥२६॥ सखा सहु थया रंगचोळ, पछी मच्योछे खेल अतोळ। छुटे पीचकारी बहु छोळे, एक**वी**जाने झालिने रोळे ॥२७॥ नाखे उपर अबीर गुलाल, तेण सखा थया सहु लाल । वाजे ढोल ने ददामां गडे, कांसा त्रांसानी घ्रोशज पडे ॥२८॥ लथवथ जूथ रमे होळी, सामसामि छे सरखी टोळी । नाथ उपर नाख्योछे रंग, तेणे शोभेछे सुंदर अंग ॥२९॥ सर्वे वस्त्र रंगाणां अंगनां, श्वेत लाल थयां एक रंगनां। मुख लाल ने कमळनेण, शोभे सुंदर ते सुखदेण।।३०।। हसवे दिसेछे दंतपंगति, ओपे अनारकविधी अति। बांध्युं बोकानुं सुंदर फेंटे, कशी कमर रूपाळे रेंटे ॥३१॥ छूटी कसमां दिसेछे छाति, तेनी शोभा कही नथी जाति । वेढ विंटि ने कडां छे हाथे, नाथ रमेछे सखाने साथे ॥३२॥ होडाहोडमां कोइ न हारे, वचमां पडी कोइ न वारे। एम रमतां जाम बेउ गिया, मटी बपोर छाया निमया ॥३३॥ पछी नाथे हाथे पाडी ताळी, करी नामनी धुन्य रसाळी। करी धुन्य कहे एम वालो, सर्वे नदीए नावाने चालो ॥३४॥ पछी पोते चडियाछे घोडे, सखा जूथ सरवे छे जोडे। नावा नीरमां पेठाछे नाथ, सहु नाह्याछे क्यामने साथ ॥३५॥ नाहि नाथ ने निसर्या बारे, कर्यों कुंकुमनी इंदु त्यारे। पछी अश्वे थया असवार, आव्या महाराज गाम-मोक्षार ॥३६॥ पछी संत सर्वे ते आव्या, थइ रसोइ जमवा बोलाव्या। पछी पीरइयुं पोताने हाथे, एम जमाडिया जन नाथे ॥३०॥ सर्वे रीते कीधा सुखी संत, करी लीळा अलीकि अलंत। दिन दशसुधी संत रह्या, पछी पोते वळावाने गया ॥३८॥ कारियाणी ने कुंडळ गाम, तियांसुधी आव्या पोते इयाम। पछी सहुने शीखज करी, पोते पाछा वळिया छे हरि ॥३९॥ एवो कयीं समयो जीवने, फागणशुदी पुनमने दिने। तेदि गढडे रिमया होळी, सुखी थइ गया संतटोळी ॥४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदसुनिविरचिते भक्तचिता-मणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे गढडे हुतासनिउत्सव एनामे पांसठमुं प्रकरणम् ॥६५॥

राग सामेरी—पोते पर्धार्या गढहे, अने संत गया गुजरात। अपार लीळा करे हरि, तेनी किह न जाये वात ।।१।। शेष महेश ने शारदा, हरिचरित्र पार नव लहे। अज न पामे पार जेनो, नेतिनेति निगम कहे।।२।। अपार लीळा अपार सामर्थ्य, अपार अतिचरित्र छे। अपार तेज प्रताप अति, अपार यश पवित्र छे।।३।। अपार करुणा अपार कृपा, अपार दया दलमां। अपार भीर गंभीर घणा, नव कळाय कोइ काळमां।।४।। अपार महिमा अपार मोळाप, अपार दाता उदार छे। अपार कळा अपार कीरित, वळी गुण जैना अपार छे।।५।। अपार लीळा एक जिभाए, किव कही केम शके। महानिधिमां चिडिया चंचे, उलेचतां आपे थाके।।६।। जेनुं मनन करतां मन थाके, चिंतवतां चित्त सिह। जेनुं वर्णन करतां वाणी थाके, तेने कोण शके कहि।।७।। जेम

अंडज उडे आकाशमां, एकएकथी उंचा चडे। पहोच राखे पहोचवा पण, अंबरने कोइ न अडे ।।८।। तेम कवि कोटिक कथे, एकएकथी बुद्धिबळे। पण अपार अपार कहि छुटे, अकळने कोण कळे ॥९॥ ते हरि नरतन भरी, करे लीळा कोटि घणी। ते सांगोपांग सर्वे कहेवा, नथी सामर्थि मुजतणी ॥१०॥ कडुं किंचित कोटिअंशे, सुंदर चरित्र श्यामनां । चतुर नरने शक्य न आवे, छे हरिभक्तना कामनां ॥११॥ तुक चोक ने जह शमकनं, जाणपणुं तेने हुदे। कविपणाना कषायमांह, हरिगुणमां दोष वदे ॥१२॥ चर्णेचर्णे चितवन हरितुं, जे काव्यमां नव थाय। तेने विवेकी एम वदे, तीर्थ काकतुं कहेत्राय ॥१३॥ माटे उद्दापण दूर करीने, कही लीळा लालनी । सर्वे जन मळि सांभळो, कहुं वात वळी वरतालनी ॥१४॥ वरताले वालम आविया, इरिजनने कर्यु जाण । नरनारी एम चालियां, जेम नदी मळवा मेराण ।।१५।। बाळ बृद्ध बेशी वाहने, आव्यां दर्शन कारणे । प्रभु पधार्या सांभळी, कोइ रह्यं नहि घरबारणे ॥१६॥ संत सर्वे तेडा-विया, आविया मुनिजन मंडळी । नाथ निरिख हैये हरखी, लाग्या पाये लळीलळी ॥१७॥ सतसंगी सर्वे मळ्या, नर नारी निरमळ छे घणां । पुरुषनो नहि पार गणतां, मळ्यां यूथ युव-तित्तणां ।।१८।। तेणे दर्शन करी हरिनां, प्रेमे लागिया पाय । मले प्रधार्या भाग्य मोटां, आज कह्यां नव जाय ॥१९॥ सर्वे जनने सुखी किथां, दिधां दरशन दान। अमे तमारे तमे अमारे, एम बोलिया भगवान ॥२०॥ एम बात करतां वहीगइ, वळी रजनी रंगेभरी। प्रभाते अतिप्रसम वदने, इसिने बोल्या हरि ।।२१।। आज दिन छे उत्सवनी, सर्वे सुको संत सुजाज । १७ भ०चिं०

रंग करावी रमवा, एम बोल्या सुखमेराण ॥२२॥ जोइतुं इतुं जेह बनने, ते वाले कह्युं वचन । उठ्या दास उताबळा, करवा प्रभुजि प्रसम्न ॥२३॥ पछी रुडा रंग कढाविया, बळी घणो मंगाच्यो गुलाल । पीचकारी बहुपेरनी, मोरे करी मेलिति मराल ॥२४॥ चरु रंगेडां रंगे भर्यां, वळी भरियां मोटां माट । महाराज बेटा माळिए, जन जोइ रद्या वळी वाट ॥२५॥ तैये मोहने मोरथी, नास्ति गुलालनी मुठ्य । पछी सखा सञ्ज थया, वळी थइ रम-वानी छुट्य ॥२६॥ पछी पांच दश पोतापासे, लीघा ते संत सुजाण । नास्ते रंग बहु नाथजि, जन उपर जीवनप्राण ॥२७॥ चाले पीचकारी चौ दिशे, बळी जाण्युं मंडाणो मेघ। आंख्य न दीये उघाडवा, वहे शेड्य समूहनो वेघ ॥२८॥ त्रिकम भरि-भरि त्रांसळां, नासे रंग केशरतणो । जयजय मुखे जन बोले, उडे अबीर गुलाल घणो ॥२९॥ चडी गरदी गुलालनी, बळी थयो अरुण प्रकाश । देव आच्या देखवा, रमे हरि हरिना दास ॥३०॥ रमतां रंग खुटि गयो, पछी प्रभुजिए कळ करी। ताळी पाडि धून्य करतां, रंग मगाच्यो बहु भरी ।।३१।। पछी नाथे हाथशुं, रसंबस करीया जन । भिल भजावी हुतासनी, वळी पोते थइ प्रसम् ।।३२।। पछी नावा चालिया, नाहिने आवीया नाथ । गातावाता गाममां, पधार्या सखाने साथ ॥३३॥ पछी बेसारी पंगति, मुनिजननी जमवा काज । पोते आव्या पिरसवा, घणुं राजी थइने राज ॥३४॥ एह दिवस अलबेलडे, अलाकिक लीळा करी। बीजे दिवस पुरवारणे, पधारीया पोते हरि ॥३५॥ एक सुंदर आंबो सोयामणो, त्यां बांध्यो हिंडोळो हेतशुं। अलबेलो त्यां आविया, सर्वे सखा समेतछं ॥३६॥ हिंडोळे हरि विराजिया,

त्यां आव्या जन अपार । पार न आवे पेखतां, बहु मळियां नर-नार ॥३७॥ संतने आपी आगन्या, करो पूजा तमे प्रीत्यशुं। केसर चंदन कुसुममाळा, धूप दीप आरती रीत्यशुं ॥३८॥ संत सुंदर साज लइ, करी पूजा परमानंदनी । चरण चरचि चंदने, छापी छाति म्रुनिष्टंदनी ॥३९॥ आनंद आपी अतिघणी, पछी उमा थया अविनाश । हरिजन सहु हार लइ, वळी उभाहता हरिपास ।।४०।। कैक हार पहेर्या कंठमां, अने कैक बांधिया बांय । कैक चरणे बांधिया, एम फुलीरह्या फुलमांय ॥४१॥ हिंडोळेहार वळगाडीया, कैक आरोप्या आंबाडाळ । कैक बांध्या छडीए, तेनी करी कावड्य दयाळ ॥४२॥ एवी अनंत लीळा करी हरि, जनने करवा ध्यान । आपी सुख एम अतिष्णुं, पछी चालिया भगवान ।। ४३॥ एवी लीळा करी हरि, फागणवदी सातम्य सिंह । करी लीळा वरतालमां, ते संक्षेपे कांइक किहा ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुंलानंद्मुनि-विरिचते भक्तिवामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे वरतालडत्सव एनामे छासठ्यमुं प्रकरणम् ॥६६॥

चोपाइ-करी लीळा पधारिया लाल, गया देशप्रदेश मराल।
पछी सतसंगी सहु मळी, जोइ लीळा गयां घेर वळी ।।१।। फरे
संत करे बहु वात, संभारी लीळा रहे रिळयात। कहे संत मळी
वात ज्यारे, त्यारे हरिनां चरित्र संभारे।।२।। कहे आपणां भाग्य
अपार, प्रकट मळ्या प्राणआधार। जेने इच्छे मोटा ग्रुनिजन,
तेनां आपणे थाय दर्शन।।३।। जेने इच्छे अतिघणुं अज, प्रशुचरणनी पामवा रज। जेने इच्छे अतिघणुं ईश, ते आपणे मळ्या
जगदीश।।।। जेने इच्छेछे शेष सुरेश, शिश सूर्य शारदा गणेश।

जैने इच्छेछे कोड तेत्रिय, जेने इच्छेछे मोटा मुनीश ॥५॥ जेने इच्छेछे रुडा ऋषिराय, ते मळया आपणे अणइच्छाय । माटे आपणां पुण्य अपार, भले आव्यो आ समे अवतार ॥६॥ अति आपणां भाग्य अतोल, त्रिलोके नहि आपणी तोल । धन्य अहो मोई ए आश्चर्य, एवं शुं आपणुं तपश्चर्य।।७।। आतो महेर करीछे महा-राज, करी कृपा ते आपणे काज । एम परस्पर कहेछे दास, एम करतां वीत्या पंच मास ॥८॥ पछी पोते पधारिया हरि, दासने दया दर्शननी करी। पश्चिमदेशथी पधार्या नाथ, सांरूययोगी सखा लइ साथ ॥९॥ गुजरधर चडोतर देश, गाम संजाये कर्यो प्रवेश। पथार्या बामणोली गाम, जइ डभाणे कर्यो विश्राम॥१०॥ त्यांथी चाली उमरेठे गया, तियां रात्य पोते एक रह्या । वळता वळी आव्या वरताल, तियां तेडाव्या मुनि मराल ॥११॥ दया करीने दिधां दर्शन, पछी मुनिने पुछ्युं प्रशन । कुपासाष्य किया-साध्य वळी, कियो पक्ष मान्यो तमे मळी ॥१२॥ ए प्रश्न पुछिए छीए अमे, जेम जणाय तेम कहेज्यो तमे। तैये एक कहे कुपासाध्य हरि, एक कहे कियापण खरी ॥१३॥ एम परस्पर चर्चा करे, एकविजामां आशंका धरे। सुणी संवाद जननो जीवन, करे पड-कारा थाय प्रसम् ॥१४॥ दिन दोचार रह्या त्यां राज, पछी डाकोरे गया महाराज। पछी उमरेठे आव्या अलबेल, त्यां बुठो घन घणी चाली रेल ॥१५॥ फरी दिये दरशन दान, अति सोंघा थया भगवान । मोटा ग्रुनिना ध्यानमां नावे, ते अणतेडे आंगणे आवे ॥१६॥ फरी हरि आव्या वस्ताल, त्यांथी गया जेवलपुरे लाल । तियांथी पछी सघाविया इयाम, आव्या कुपाछं कर्जि-सण गाम ॥१७॥ तियां आविने तेडाच्या जन, अतिराजि छे देवा दर्शन । आध्या सतसंगी ने संत वळी, जीवनमुक्त मुनिनी मंडळी ॥१८॥ स्पर्शी चरण बेठा सनमुख, जोइ जीवन पामियां सुख । हेत समेते करे हरि बात, सांभळी संत थाय रळियात ॥१९॥ काजु गरबी गवरावे कीर्तन, दिवस आखो दिये दर्शन। जमे रमे संत करे किलोल, आपे अलबेलो सुख अतोल ॥२०॥ आसपास गामे इरिजन, पधरावे पोताने भ्रुवन । भोजन व्यंजन हेते करावी, जमाडे हरिने भाव लावी ॥२१॥ पछी जमाडिया सर्वे संत, लिये लाव अलौकिक अत्यंत। एम करतां आवी अष्टमी, पुछ्यं नाने-भाये चरणे नमी ॥२२॥ महाराज आव्यो उत्सवदन, करीए उत्सव जो हो प्रसन्न । पछी हरिए हसी करी वात, करो उत्सव छीए रिळयात ॥२३॥ पछी हिंडोळो कराव्यो हेते, बेठा प्रभुजि जननी ब्रीत्ये । पछी महाराजनी पूजा करी, लाव्या चंदन भाजन भरी ॥२४॥ चर्चि चंदन कुंकुमे पाय, ते छाप्या जने रुदिया मांय। जे स्पर्शि थयो काळी निःशंक, ते पदनो थयो उरमां अंक ॥२५॥ जे पदरजे तरी ऋषिनार, ते पद लीघां छाति मोझार । थयां जन मगन मन घणां, कोइ रीत्यनी न रही मणा ॥२६॥ पछी संतने शीखज दिधी, एवी लीळा श्रीमहाराजे किथी । थया जन सरवे मगन, श्रावणवदी अष्टमीने दन ॥२७॥ तेदि लीळा कर्जि-सणे करी, हवे कहुं जे करियुं हरि। पछी कांइक छाना ते रहा, नाथ पछी नारदिपुर गया ॥२८॥ मेउ गाम लांगणोज आव्या, निजजन मने घणुं भाव्या। पछी त्यांथी प्रश्च पाछा वळया, जेत-लपुर जनने मळया ॥२९॥ श्वेत वस्त्र अंगे श्रोमा घणी, कंठे माळा पहेरी फुलतणी। करे कंकण फुलना काजु, तोरा गजरा फुलना बाजु ॥३०॥ रेणिसमे आच्या भगवान, दिघां दासने दर्शन दान।

देइ दर्शनने वात करी, साकार रूप समझावा हरि ॥३१॥ पछी जन कहे पधारो महाराज, करो रसोइ ते जमवा काज। चाल्या सखा संगे वनमाळी, करता धुन्य वजाडता ताळी ॥३२॥ जन घेर जइ जम्या जीवन, पछी बोलाव्या पासे मुनिजन । संकीर्ण घर जन न समाय, थया सघन मळी मुनिराय ॥३३॥ एम उभा जमाडिया जन, पिरइयुं पोते थइ प्रसन्न । जेने जोइ पड्यो भुलो ब्रह्मन, एम जमाड्युं जननुं अन ॥३४॥ पछी त्यांथकी चालिया नाथ, सखा सर्वे हता हरिसाथ। एके आबी करी छत्रछांय, ते हरिने न गम्यं मनमांय ।।३५॥ चाले चटकता चाल्य गजगति, खेदबिंदुए शोभे भाल अति । आवि बेठा आसोपालव छांये, निर्धि नाथ हैये हर्ख न माये।।३६॥ पछी पूजा करवाने जन, पोत्ये हाथे उतार्या चंदन । करी पूजाने पहेराव्या हार, नखशिख कर्या फुल शणगार ॥३७॥ धृप दीप उतारी आरती, पछी करी करजोडी विनति । वळता नावा चालिया नाथ, सर्वे सखा नाह्या श्यामसाथ ॥३८॥ पछी पधार्या हरि पुरमांय, मोटी वात करी एक त्यांय । कियां जन ने कियां भगवन, एवं समझी संकोचाय जन॥३९॥ माटे हरिशं करवो संबंध, तात गुरु सखा भाइवंध। एम कही पछी उभा थया, करी मुनिने मळवानी दया ॥४०॥ मळता मर्म करी हरि हक्या, भेटतां जन अल्या देहदशा। एवी लीळा अलीकिक करी, पछी पांचाळे पघार्या हरि।।४१।। पांचाळ देशमां गढडुं गाम, तियां यधार्या सुंदरश्याम । आश्री दासने दीधां दर्शन, निर्खि नाथ थयां सुखी जन ॥४२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रनामे सहसठ्यमुं प्रकरणम् ॥६०॥

राग सामेरी-पछी प्रभु गढडे गया, तियां तेडाविया संत । एकांतनुं सुख आपवा, हैये हेत छे अत्यंत ॥१॥ समझ संत सुजाण जे, सतसंगमां जे मुखिया। ते संतने तेडाविया, दइ दर्शन करवा सुखिया ॥२॥ आव्या संतशिरोमणि, जियां इता सुंदर इयाम । चरण स्पर्शि नाथनां, वळी थया पूरणकाम ॥३॥ पछी मुक्तानंदजिए, पुछ्युं प्रभुने प्रशन । नाथ तमारुं गमतु जे, होय ते करीए साधन ॥४॥ पछी प्रभुजि बोलिया, तमे सांमळो सर्वे जन । ज्यारे प्रभुने पामिये, त्यारे सर्वे थयां साधन ॥५॥ पछी जेजे करवुं, तेहनी ते कहुं वात । गुरुसंतने भजवा, श्रीहरि जे साक्षात ।।६।। चैतन्य चैतन्य एक नहि, इंद्रिय मन जीव ईश्वर । एकएकथी अधिक एह, तेथी पर परमेश्वर ॥७॥ संत असंत एक नहि, ते विवेकबुद्धि धारवी। में करी जे लीळा अलौकिक, तेने वारमवार संभारवी।।८।। मारा जनने अंतकाळे, जरुर मारे आववुं। बिरुद मारुं ए न बदले, ते सर्वे जनने जणाववुं ॥९॥ दासना दास थइने, वळी जे रहे सतसंगमां। भक्ति तेनी भली मानिश, राचिश तेना रंगमां ॥१०॥ मारां लोक मारी मूरति, ते सत्य निर्गुण छे सिंह । तेने असत्य जे जाणशे, ते नास्तिक मारा निह ।।११।। मारुं धार्यु असत्य सत्य थायछे, समरथ मारुं नाम सिंह । मारी दृष्टिए जक्त उपजे समे, अनेक रूपे माया थइ ॥१२॥ प्रकटरूपे सतसंगमां, रहुंछुं रुडिपेर । वळी अवनिए अवतार लहुं, नृप योगी विप्रने घेर ॥१३॥ जन एटलुं ए जाणवुं, जे कही तमने वात । निःशंक रही नाथ कहे, सुणी जन थाय रिक्रयात ॥१४॥ पछी जनने जमाडवा, पाक कराविया बहु-पेर । सुंदर आसन आलियां, संत बेसाक्या ते उपर ॥१५॥

शोभे पोते सुंदर पटके, लटके नाडी नवरंगी। पलवटवाळी अति-रूपाळी, शोभे सुथनी सोरंगी ।।१६।। बीरंज बोळी गळी मोळी, घृत साकरमांहि घणां । कडी वडी पकोडी पुरी, व्यंजन विध-विध्यतणां ।।१७।। भात घोळां दुध बोळां, रोटली रसाळियो । जमे जन जीवन जमाडे, वळी ठेलीभरे थाळियो ॥१८॥ आंबा लिंबुनां आथणां, वळी आदांकेरां अतिघणां। आपे नाथ हाथशुं, जमे जन न भुके मणां ॥१९॥ जमिजमिने जन सरवे, परिपूरण षोते थिया । पछी दुध साकर दोबटे, देवा आपे आविया ॥२०॥ लिये न लिये दिये पराणे, हरि पीरशे हाथडे । नाना पाडे ठाम संताडे, तेने ते रेडे माथडे ॥२१॥ जोरे जमाडि हार पमाडी, प्रकी चळ करावियां। लविंग सोपारी एलची आपी, मुखबास मन भाविया ॥२२॥ अतिघणां सुख आपवा, जणाय मरजी जीवननी। एवी लीळा अपार करी, कही में एक दिननी ॥२३॥ रमवा रास हैये हुलास, पहेर्यों अंबर सुंदर अतिभलां । पाघ पेचाळी अति-रुपाळी, छाजे तियां बहु छोगलां ॥२४॥ फरे फुदडी रंगझडी, गुलालनी करे घणी। पछी दिन वळते करी, जने पूजा जीव-नतणी ।।२५।। चंदन चरची हार सुंदर, प्रश्चने पहेराविया । धूप दीप ने आरती, उतारवा जन आविया।।२६॥ पूजा करिने पाय लाग्यां, चरण छातिये छापियां । सनप्रुख बेशी श्यामळे, अल-बेले सुख आपियां ॥२७॥ इसतां रमतां रुद्ध जमतां, वीते दन रुहिपट्ट । एम कांइक दिन वीते, आबी पछी कपिला छठ्य ।।२८।। पछी प्रश्च प्रकट थइ, दिघां दर्शन दासने । जन जोइ मगन थया, अरुबेसा अविनाधने ॥२९॥ देशदेशथी दास आज्या, तेमे दर्शन आपियां। जेणे नयणे निरख्या, तेनां ते करमण

कापियां।।३०।। सुंदर वस्त्र पहेरी सारां, काजु कसुंबी रंगनां। वेड विटी कडां काजु, बाजु जडेल नंगनां ॥३१॥ कमर कशी रहा इसी, वसी जनमन मूरति । मोटा मुनिना ध्यानमां नावे, जेने नेतिनेति कहे श्रुति ॥३२॥ ते हरि दया करी, दिये दर्शन प्रसंख घणुं। जेह जने जीवन जोया, भाग्य तेना हुं शुं भणुं।।३३॥ पछी प्रश्नुजि पधारिया, नावा ते नदीए नायजि । नातां नातां सुंदर गातां, सरवे सखा साथजि ॥३४॥ नाहि नाथ पघारिया, जने कराव्यां भोजन भावतां। तर्त ताजां तयार तेह, जमाज्या जीवन आवतां ॥३५॥ पछी जन जमाडिया, पंगति करी पोते पिरशुं। अनेक भात्यनां भोजन भाजन, जोइ जन मन हररूयुं ।।३६।। जोराजोर जमाडिया, जेम जमाडतल भगवान छे। जेम-जेम आले तेम न झाले, सखापण सावधान छे ॥३७॥ पछी सांझे धुन्य करी, हरि बेठा पोते ढोलिए। आपी संतने आगन्या, हलिसपद हवे बोलिए।।३८॥ गातांवातां वीते रजनी, सुंदर सु**ख** आप्यां घणां । जुगत्ये जन जमाडिया, कोइ रीत्ये नव राखी मणा ॥३९॥ सुंदर सारो कयों समैयो, भादरवा वदी षष्टमी । तेदि गढडे करी लीढा, कही कथा में रस अमी ॥४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे कपिलाछठ्यनो उत्सव कर्यो एनामे अडसट्यमुं प्रकरणम् ॥६८॥

नोपाइ-एवी लीळा अलौकिक कीघी, पछी संतने शीखज दीघी। संत चाल्या गया गुजरात, करता सुंदर लीळानी वात ॥१॥ खातां पितां सुतां खपनमां, करे मनन लीळातुं मनमां। ज्यारे सुताथकी जन जागे, धन्यधन्य नाथ केवा लागे॥२॥जाप्रत खम सुषुप्तिमांय, प्रश्च विना न संमारे कांय। जेजे लीळा किधि भगवाने, संत चिंतवे ते नित्य ध्याने ॥३॥ ज्यारे ध्यानमां बेसेछे जन, जोइ मृरति थाय मगन। क्यारे देखेछे जरकशी वाधे, शाल दुशाल कसुंबी पांचे।।४।। क्यारे देखे फुलमां फुलता, क्यारे देखे रंगडामां राता । क्यारे देखे नाखता गुलाल, कर पीचकारी करे ख्याल ॥५॥ क्यारे देखे अश्वे असवार, क्यारे लेता लटकेशुं हार । क्यारे देखे पंगत्यमां फरता, लड़ मोदक मनवार्य करता ॥६॥ क्यारे देखे चंदननी खोरे, क्यारे देखे अलता हिंडोरे। क्यारे देखे कपूरनी माळ, क्यारे देखे पूज्याछे मराळ॥७॥ एम अनेकरीत्ये अलवेलो, आवे ध्यानमां छेल छबिलो। तेनी मांहो-मांहि करे बात, सुणी संत रहे रिक्रयान ॥८॥ एम करतां कांयेक दिन गिया, तियां प्रभु पोते पधारिया। वरताले वाल्यमजि आच्या, गामोगामथी संत बोलाव्या ॥९॥ आत्री लाग्या प्रभुजिने पाय, नाथ निर्खिने तृप्त न थाय । कोइ करे करी कर चांपे, कोइ चरण ग्रहि छाति छापे।।१०। कोइ करे पादोदक पान, जुवे जननुं हेत भगवान । सुंदर शोभे बोरिनो चोफाळ, ओढी वेठा ते बाटे दयाळ ॥११॥ हेते जोयुंछे सहुने हेरी, दृष्टि करीछे असृत केरी। पछी बोलिया प्राणजीवन, यांती माता नथी हरिजन ॥१२॥ सर्वे चालिए पुरने बार, करे दर्शन सहु नरनार । पछी सुंदर एक आंबली, संघन छाये ते शोभे छे भली।।१३॥ तियां जने जोइ पाट ढाळी, तियां वेठा आबी वनमाळी । थयां दर्शन सहु साथने, सर्वे जोइ रह्याछे नाथने ॥१४॥ जेजे जन दरशने आवे, कोइ पुष्प पत्र फळ लावे। आणिमुके महाराजनी आगे, पछी कर जोडी पाय लागे ॥१५॥ कहे भले आव्या भगवान,

दिधां अमने दर्शन दान । एम करे स्तवन जन रह्या, तियां बेउ जाम वहीगया ॥१६॥ पछी बोलिया प्राणआधार, हजी रमोइने सइ वार । त्यारे जोइने आवीयो जन, चालो महाराज थयां भोजन ॥१७॥ पछी पधार्या प्राणजीवन, सखा साथे लड् मुनिजन । तियां कर्यो अन्नकोट अति, जम्या जुगते ते प्राणपति ॥१८॥ पछी संतनी पंगति किथी, पिरव्युं प्रभुए बहुविधि । फर्या पंगत्यमां पंच वार, जम्या जन थयो जेजेकार ॥१९॥ पछी औच्याछे आंबले फरी, बेटा पाट उपर पोते हरि । तियां प्रश्न उत्तर बहु किथां, संते मन मान्यां सुख लिधां ॥२०॥ पछी सांझे पुरी दीपमाळ, अतिसुंदर शोभे विशाळ । करी कमान्यो कांगरा राजे, तियां सुंदर दिवा विराजे ॥२१॥ कर्या झाड दोय दीपतणां, थइ शोभा जुवे जन घणां । बेठा मध्ये पोते महाराज, दासने देवा दर्शन काज ॥२२॥ जोइ जन थयांछे मगन, सहु कहे प्रभु धन्यधन्य । आव्यो आनंद माय न मन, पछी गावा लाग्या कीरतन ॥२३॥ गाय गरबी ने रमेछे रास, फरतां फुदडि देखिया दास। जोइ जन उठ्या अलवेल, आव्या खांतिलो करवा खेल ॥२४॥ रमे जन भमे पोते भेळा, एम करेछे लाडिलो लीळा। नित्य करे नवलो विहार, तेनो कहेतां आवे केम पार ॥२५॥ आवे सतसंगी नरनार, लावे पूजा ने पूजे मीरार । एकदि जने जमाड्या हरि, बहु प्रेम भरी पूजा करी।।२६।। सुंदर पहेरावियो सुरवाळ, झगे जरकशी नामानी चाळ। शिर बांधिछे सोनेरी पाम, नथी शोमा तेनी कह्या लाग ॥२७॥ पछी घोडे थया असवार, संगे सस्ता हजारोहजार। पछी गया बामणोली गाम, देवा दर्शन सुंदर श्याम ॥२८॥ देइ दर्शन ने दुःख काप्यां, अतिअलौ**किक सुख** 

आप्यां । जन कहे भले हरि आच्या, सोना रूपाने फुले वधाच्या ॥२९॥ पछी मुनि प्रया मनभाव्या, भरी थाळ मोतिडे वधाव्या । तियां राष्य सुंदर रूपाळी, बेठा हिंडोळे त्यां वनमाळी ॥३०॥ गाय संन ने थाय किलोल, एम आपेछे सुख अतोल। पछी अश्वे थपा असवार; दीठी सुंदर भृमि त्यां सार ॥३१॥ तियां घोडुं **सेल**व्युं खांतिले, अतिउतावळं अलवेले । घ्रोडे अश्व उडे जाणुं पांखे, एम देखाय दासनी आंखे ॥३२॥ पछी हळवीहळवी चाले, आच्या वालमजि वरताले । आविबेठा आंबलिनी छांये, सर्वे संत-पण आब्या त्यांये ॥३३॥ बीजा आबीया जन अपार, लावे पूजा ने पुष्पना हार । वीजा सुंदर सुखडां लाव्या, नाथ आगळे थाळ **भरा**च्या ॥३४३। जोयां सुंदर सारां सुखडां, रुडां लाग्यां अति रम-कडां। जोइ निर्मळ जन विवेकी, तेने आप्यांछे दूरथी फेंकी ॥३५॥ नाना करे आपे आडा हाथ, तीय आपता न रहे नाथ। देखी दास करे हास बहु, जोइ लीळा आनंदियां सहु ॥३६॥ एम करेछे लीळा अपार, सुखसागर प्राणआधार । वळते दिने गया वलासण, देवा दर्शन अशरणशरण ॥३७॥ सर्वे संत हता वळी साथ, पोते घोडले चड्याता नाथ । गातावाता जने निजघेरे, पधराच्या प्रभु रुडिपेरे ॥३८॥ बांधि हिंडोळो बेसार्या हरि, पछी अतिहेते पूजा करी । पछी जमाड्या जीवनप्राण, जमाड्या संत सर्वे सुजाण ।।३९॥ देइ दर्शन चाल्या दयाळ, संगे शोभेछे सुनि मराळ। दिन बीजे गया बीजे गाम, वसे भक्त वळोटबुं नाम ॥४०॥ तियां दासने दर्शन दीधां, कापी कलमप कल्याण कीधां। जमी जन जीवन पधार्या, दासने मन मोद वधार्या ॥४१॥ एम करें कीळा अपार, कोण जन पामे तेनो पार। माटे संक्षेपे

कही संभळावी, मारा जाण्यामां जेटली आवी ॥४२॥ एवी लीळा करी अविनाशे, आसुवदीने दिन अमासे। तेदि करी लीळा वर-ताले, सुखदायक सुंदरवर वाले ॥४३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदस्रुनिविरिचते भक्तविताम-णिमध्ये नारायणचरित्रे वरतालमां पधार्या ने फुले वयाच्या एनामे अगोणसतेरसुं प्रकरणम् ॥६९॥

रागसामेरी-पछी नाथ पधारिया, गया ते गढढे गाम । दर्शन दइ दासने, वळी कर्या पूरणकाम ॥१॥ जन मळी जीव-नने, बळी लळीलाग्या पाय । नयणे निरखी नाथने, हैये ते हरस न माय ।।२।। दास मळी महाराजने, वळी पुछेछे बहु वाल्यमां । कहो कृपा करी अमने, ज्ञि लीळा करी वरतालमां ॥३॥ केटलां मनुष्य मळ्यां हतां, करतां पूजा कइपेर । केम तमने जमाडतां, पधरावी पोताने घेर ॥४॥ पछी प्रभुजि बोलिया, सहु सांभळज्यो हरिजन। भक्ति जेवी गुजरातमां, तेवी आज नथी त्रिभुवन॥५॥ रात्य दिवस अम पासळे, वळी उभां रहे एक पगे । मूर्ति न मेले भिटथी, बळी मटकुं न भरे द्रगे ।।६।। गातां गुण गोविंदना, वहिजाय सर्वे जामनी । काय नहि कीर्तन करतां, भाविक वहु नर भामिनी ॥७॥ अति दुर्बळ कळ न पाडे, फळ फुल खाइ रहे । ज्यारे अमे जम्यानुं कहीए, त्यारे जम्या छीए एम कहे ॥८॥ एक-एकथी अधिक अंगे, रंग छे सतसंगनो । एवा जनने जोइने, आनंद उमंगे अंगनो ॥९॥ त्यारे हरिजन बोलिया, एने नाथ आंहि तेडाविए। एवा मोटा हरिजननी, ओलखाण्य अमने पडाविए ।।१०।। महाराज कहे कोइ मिष विना, ए केम आंही आवे बळी। हुतासनिनो उत्सव करीए, तो आवे ए सर्वे मळी ॥११॥ त्यारे

हरिजन हरिखया, सांभळी वाल्यमनी वातडी । नाथ उत्सव आंहि करो, तो धन्यभाग्य धन्य घडी ॥१२॥ पछी ठेरावी ठीक कर्यु, वळी संत सर्वे बोलाविया । सर्वे देशना सतसंगी, संघ लइ सहु आविया ।।१३।। हता हुतासनी आगळे, दिवस दशविश वळी । संत ने हरिभक्त सर्वे, आविया त्यारे मळी।।१४।।दर्शन करी दया-ळतुं, संत सुख पाम्या अति । प्रसन्नवदन करी हरि, बोलिया प्राणपति ॥१५॥ अमे तेडाच्या तमने, ते पुन्यममोरे दन गांचमे । वहेला आच्या दिन विश आडे, बेनुं विचार्यं निह तमे।।१६।। मलुं तमे मले आच्या, हवे रही सह राजि थइ। यांती पुरुं पाडशे पण, बीजे आवुं करवुं नहि ॥१७॥ पछी करी रसोइ चालति, पिरसे पोते पंगत्यमां । जमे जन मगन थइ, आपे हरि आरत्यमां ॥१८॥ भोजन करी भात्यभात्यनां, बिक्र ज्ञाक पाक सोयामणां । दुघ दही दिये दोवटे, आदां केरीनां आथणां ।।१९।। बेसे पुरा पांचसें, परमहंसनी पंगति । जेमजेम झाझं जमे, तेम अलबेलो राजि अति।।२०।। एकाएकथी अधिक अधिक, रसोइ रुडी करे। सुंदर पाक पंगत्यमां, नित्य प्रत्ये नवला फरे ॥२१॥ एम जन जमाडतां, वळी दिवस विश वहिगया। अभयकुंवर उत्तमे, तियां-लगी संत राखिया।।२२।। पछी आवी हुतासनी, रुडा रंग रमवा कराविया । केशुं केशर कसुंत्रो वळी, पतंग रंग बनाविया ॥२३॥ हरि विराजता हता हिंडोळे, त्यां सखा रंग आव्या लड् । नारूयो नाथने उपरे, पछी रम्यानी छुटी थइ ॥२४॥ रंग सोरंग लावे सखा, नांखे नाथने बहुपेरे। अलवेलो थइ आकळा, लाल चड्या छिंब उपरे ॥२५॥ पछी जीवने कह्युं जनने, आ रमवानी रीत्य

नहि। करो तडां तेवतेवडां, तो अमेपण रमिए सहि॥२६॥ पछी बांधी बे मंडळी, वळी इयाम सखा सञ्ज थया। चाले बहु पीचकारियो, लाल ढाल आडी दह रह्या ॥२७॥ पछी फांडु मांडि केंक्या, गुलालनी लाले घणी। तेनी गगनमां गरदि चडी, सोरंग रंग रातातणी।।२८।। कनककंठी कोटमां, वळी रुडी लागे रमतां। रसबस थया रसियो, घणुं सखाने मन गमता ॥२९॥ वाजे वाजां बहुविध्यनां, ढोल ददामां त्रांसां तियां। खर उच्चे सरणाइ बोले, रुडां रवाज वळी कांशियां ॥३०॥ सामसामा रमे रंगे, हारे नहि हिमत घणी। निर्जर आच्या निरखवा, रमत्य जन जीवनतणी 11३१।। पछी प्रभुजि बोलिया, जिल्या सर्वे जन तमे। मेलो पीच-कारी पाणिथी, फगवामां मळशुं अमे ॥३२॥ पछी जन राजी थया, जयजय शब्दे बोलिया । आज प्रभुने मळ्युं, तेणे तनमां बहु फुलिया।।३३।। पछी नावाकाजे नाथिज, चालिया घोडे चडी। सखासंगे क्यामळो, रम्या रसियो रंगझडी ॥३४॥ खुब घोडो खेलवी, नाह्या पछी नाथजि। गातावाता गाममांहि, आव्या सखा साथजि ॥३५॥ रुडी रूपाळी करी रसोयो, जुगते जन जमा-डिया। सर्या मनोरथ मनना, त्यांलगि रमाडिया ॥३६॥ पछी नाध बाध भरी, भेट्या मर्वे जनने । संत सर्वे मगन थया, स्पर्शि जगजीवनने ।।३७।। अनुपम उत्सव करी, फरी शीख आपी संतने। साधु सर्वे चालिया, राखी रुदे भगवंतने ॥३८॥ अनुपम उत्सव कर्यों, फागणशुदी पुन्यम दने। करी लीळा गढडे, ते करावी हरि-जने ॥३९॥ जया ललिता जन मोटां, सतसंगमां शिरोमणि। प्रीत्ये वाल्यम वश कर्या, एनी कहीए मोठ्यप शुं घणी ॥४०॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह्जानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरिचिते भक्तचितामणिमध्ये नारायणचरित्रे हुतासनिनो उत्सव कर्यो एनामे सिक्तेरमुं प्रकरणम् ॥७०॥

चोपाइ-पछी संत चाल्या सहु मळी, करता वात वाल्य-मनी वळी। एक कहे सुणो मुनिसाथ, केवा रमता नटवर नाथ ।।१।। एक कहे सांभळो मराल, केवी लिधिति रमतां ढाल। एक कहे सुणो संत वळी, केवो नाखताता रंग वळी ॥२॥ एक कहे सुणो मुनिराज, केवा शोभताता महाराज। एक कहे जुवीने संभारी, केवी नाखताता पीचकारी।।३।। एक कहे लटकाळो लाल, केवो उडाडताता गुलाल। एम कहे मांहोमांहि मळी, केवो रह्योतो रंगडो ढळी ॥४॥ फरता पंगत्यमां पाक लइ, नाना करतां जाता जोरे दइ। एक कहे सुणो ऋषिराय, लाल आव्याहता लेरमांय ।।५।। आज लीळा करी जे दयाळे, एवी करी नोति कोइ काळे। आगे अनेक धर्या अवतार, बहु जननी करवा उद्धार ।।६।। छेतो एना एज आ श्रीहरि, पण आवी लीळा नोति करी। आज आप्यां जे संतने सुख, तेतो कह्यां जाय केम मुख ॥७॥ माटे मोटां भाग्य छे आपणां, आज न राखी महाराजे मणा। एम बात करतां ते बळी, गइ देशप्रदेश मंडळी ॥८॥ करे बात फरे द्धनिजन, एम करतां वीत्या कांइक दन । पछी आवीछे जनमा-ष्टमी, संत आव्या चडोतरे भमी ॥९॥ सहु विटिरह्या वरताल, इयां आवशे लाडिली लाल। एम बाट जुवे सहु साथ, कहे जोबने तेट्याछे नाथ ॥१०॥ बाट जोतां वाल्यमजि आच्या, तियां सर्वे संतने बोलाव्या । संत आविलाग्या प्रश्च पाय, नाथ निरिब तुस न थाय ॥११॥ दिये दर्शन प्रसम करे, निज दासतणां दुःस

हरे। बेठा उच्चे आसन अविनाश, साम्रं जोइ रह्या सहु दास ॥१२॥ एवे समे अत्तर एक लाव्यो, अलबेलाने चर्चवा आव्यो । तेतो लइलिधुं हरि हाथे, चर्चि संतनी नासिका नाथे ॥१३॥ चर्चि नासिकाने बोल्या नाथ, तमे सांभळज्यो सहु साथ। बिजा भेख थाशे धृड्यधाणी, रहेशे तमारा मुखनुं पाणी ॥१४॥ एम कहिने बेठा आसन, सुणी संत थयाछे मगन। पछी संते कयाँ गुण-गान, तेने सुणी रिङ्या भगवान ॥१५॥ आपी माथेथी सोनेरी मोळ, काजु कसुंबि रंगे झकोळ। पछी हरिजने हेत करी, काजु केवडानी टोपी धरी ॥१६॥ तेतो हरिए लिधि छे हाथे, मेली मुक्तानंदजिने माथे। विजा पासे हता जे मराल, तेने आपियुं फुलनी माळ ॥१७॥ पछी सुरतथी सत्संगी आव्या, पूजा प्रभु जिने काजे लाव्या। हार हेमकडां बांये बाजु, वेढ विदी कुंडिळयां काजु ।।१८।। कडी वेल्य ने कटिकंदोरो, माळा मादळियां पाय-तोडो । शाल दुशाल ने जामो जरी, रेटो फेंटो ने पाघ सोनेरी ।।१९॥ धूप दीप अगर आरती, फुल केसर कपूरवति। एम लड् बहु उपचार, प्रेमे पूज्या छे प्राणआधार ॥२०॥ करी पूजा ने जोड्या छे हाथ, जन गायछे जयजय गाथ। पछी रच्यो छे हिंडोळो सार, वालो झलेछे वनमोझार ॥२१॥ भ्रोभे इपामळियो भिने वान, वालो त्रोडेछे ताळिनुं तान। करे करनां लटकां काजु, जोइ जनतणुं मन राजु ॥२२॥ पछी उभा थया अलबेल, स्थं म प्रहिने दिधिछे ठेल । हाले हिंडोळो झुलेछे हरि, जयजय रह्या जन करी ॥२३॥ एम करेछे लीळा अपार, निरखि सुख लीये नरनार। पछी अलबेला आगळे जन, करी नृत्य ने करे प्रसन् ॥२४॥ पछी राजि थया वहु राज, मळ्या संतमंडळने महाराज। १८ भ०चि०

पछी संत चंदन घसि लाव्या, मळी प्रश्नने पूजवा आव्या ॥२५॥ ब्रेमे पूजिया प्राणआधार, कंठे आरोप्या फुलना हार । चर्च्या चंदने चरण दोय, जने उरमां छापियां सोय ॥२६॥ अति राजिमां छे रंग रसीयो, सर्वे जनतणे मन वसियो। पछी थयुंछे पंगत्यटाणुं, बेठा संत शोभा शी वखाणुं ॥२७॥ जाणे बेठी छे हंसनी द्वार, एकएकथी ओपे अपार । पछी मोदक लइ महा-राज, आच्या प्रश्च पिरसवा काज ॥२८॥ जमे जन जमाडे जीवन, बहुभात्यनां लावी भोजन। एम आपेछे सुख अपार, तेनो कहेतां आवे केम पार ॥२९॥ कराच्याता हरिजने थाळ, तेतो जम्या संत ने दयाळ। जमी बेठा मुनि सहु मळी, सारी शोभेछे संत-मंडळी ॥३०॥ पछी नाथ कहे संत शूरा, आमां कोण कठण वर्ते पूरा । जेवा छे आ आतमानंद, एवा हो ते बोलो मुनिइंद ॥३१॥ पछी संत उठ्या जोडी हाथ, जेम कहो तेम करीए नाथ। कहोतो मटकुं न भरिये मिटे, कहोतो अन्न न जमिये पेटे ॥३२॥ कहोतो तजिये छादननो संग, रहिये हिममां उघाडे अंग। कहोतो पिवुं तिन दैये पाणी, रहिए मौन न बोलिए वाणी ॥२३॥ कहोतो बेसिये आसन वाळी, नव जोये आ देह संभाळी। एम हिमत छे मनमांय, तमे कहो ते केम न थाय ॥३४॥ एम बोल्या ज्यारे मुनिजन, सुणी प्रभुजि थया प्रसन्त । कहे नाथ सुणी साधु शूर, एती अमने जणाय जरुर ।।३५।। तमे बोल्या ते सरवे सार्च, वीजामांय 'पण नथी काचुं। एकएकथी अधिक छो तमे, एवुं जाण्युंछे जरुर अमे ॥३६॥ एक बात कहुं मानी तेह, आपणे आतमा नहि देह । मानो चैतन्यरूप तमारुं, दुःखरूप देह तेह न्यारं ॥३७॥ एम कहीछे संतने वात, सुणी साधु थया रिक-

यात। कहे नाथ सुणो सह जन, पुरो थयो उत्सवनो दिन ॥३८॥ सर्वे सधावज्यो ग्रुनि तमे, यांथी चालशुं सरवे अमे। एम कही प्रभुजी पधार्या, संते निर्धि अंतरे उतार्या ॥३९॥ आप्यां सुख जनने जीवने, श्रावणवदी अष्टमीने दिने। तेदि कर्योछे उत्सव वाले, कराव्यो जोवन्वरताले ॥४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदग्रुनिविर्विते भक्ताचितामणिमध्ये श्रीनारायणचरित्रे जनमाष्टमीनो उत्सव कर्यो एनामे एकोतेरमुं प्रकरणम् ॥५१॥

राग सामेरी-एम नित्ये नवी नाथजि, करे लीळा सुंदर श्याम । संत रह्या गुजरात्यमां, पोते आव्या गढडे गाम ॥२॥ अति-राजि अलबेलडो, करे इसिहसिने वातडी । संतमंडळने स्यामळो, घणुं सरायछे घडिघडि ॥१॥ परमहंस जेवा पृथ्वीमां, आज नथी कोइ अंगे। तन मननां सुख त्यागि, राच्याछे प्रभुने रंगे॥३॥ त्याग वैराग्ये त्रण्य लोकमां, नावे जोड्ये कोइ जन । तेने जोइ अंतर मार्रु, थायछे परसन ॥४॥ एम कहे अलवेलडो, मोटप्य मुनि-जननी । सुणी हरिजन मनमां, इच्छा करी दर्शननी ॥५॥ जने वहेल्यु जोतरी, चाल्या सर्वे सखा साथजि। संगे सुंदर व्यामळो, पोते पधार्या नाथजि ॥६॥ वाटमांहि विविध भात्ये, लीळा लाल करे घणी । जोइ जन मन मोद पाम्या, सामर्थि श्रीहरितणी ॥७॥ पछी जइ जेतलपुरमां, छबिलो छाना रह्या। दिन दोचारेक त्यां रहि. पछी वालमजि वळी आविया ॥८॥ त्यारपछी पधारिया ते, वळी वरताल गाम । देवा दर्शन दासने, आव्या ते सुंदर क्याम ॥९॥ संत सर्वे सांभळि वळी, आव्या अलवेला कने। सुंदर ज्याम सलुणी मृतिं, निर्खि नयणां भरि जने।।१०।। संतने बहु सुख आप्यां, करी

हरि वात हितनी । सुणि जन मन मगन थयां, स्थिर थइ वृत्ति चित्तनी ॥११॥ पछी बीजे दिन बोलिया, संत सांभळो सह वात। अमे आंइथी मधावशुं, आपो शिख थइ रळियात ॥१२॥ राजि थइ शिख आपशो, तो राखशुं खबर अमे। पण सतसंगमां नहि रहीए, जो राखशो ताणी तमे ॥१३॥ माटे आपो आगन्या, कहुं करगरी तम आगळे। प्रसन्न थइ पधारशुं, तो रहेशे मेळाप कागळे ।:१४॥ सुणी संत शोके पंडिया, राजी नहि रुवे घणुं। प्राणगतवत थयां, सुणी वचन जीवनतणुं।।१५।। टगमग जुवे रुवे वळी, बोली न शके वदने । अलबेलानी उदासी जोइ, रही नहि धीरज मने ॥१६॥ पछी साधु रामदासजिये, करजोडी वह्यं करगरी। जेम कही तेम करशुं, तमे रहो सत्संगमां हरि ॥१७॥ पछी प्रभुजि प्रसन्न थइ, कही वात सर्वे अंगनी। मोटा संत राखज्यो तमे, खबर सतसंगनी ॥१८॥ एम कहीने पंधारिया, गया गाम डभाण । सतसंगी ने संत सर्वे, संगे चाल्या सुजाण ॥१९॥ तियां दिन एक रहीने, वळी आविया वरताल। त्यांथी आपी आगन्या, आवो मोटामोटा मराल ।।२०।। त्यांथी प्रभुजि पधारिया, गया बोचायण गाम । सुंदर ष्टुक्ष जोइने, कर्यो वाडीये विश्राम ॥२१॥ पछी त्यांथी चालिया, वळी गुवासद गामे गया। आपी अंगर सोखडे, वळी टंकारिये रजनी रह्या ॥२२॥ त्यांथी चाल्या चोपशुं, नाथ नर्मदा उतर्या । मनिपुरमां महाराज रही, सवारे त्यांथी संचर्या ॥२३॥ चोकिमां पहोर चार रही, प्रभाते त्यांथी पधारिया। सुरत शहेरने ममीप गामे, उधनामां आवी रह्या ॥२४॥ शहेरमां संभळावियुं, सतसंगी आन्या सहु मळी। भोजन व्यंजन पूजाविधि, लाविया लाखोः वळी ॥२५॥ हार अपार पहेराविया, करे धूप दीप आरती कहा

उत्तम वस्तु आगळ्य ग्रुकी, सुखडीनी सीमा नहि ॥२६॥ संघ्या-सुधि सतसंगीए, लिधो लाव लोचन भरि। पछी आपी आगन्या, जाओ घेर सहु कहे हरि ॥२७॥ त्यांथी नाथ पधारिया, वळी रह्या रजनी वनमां । वाघनुं विघन टाळी, चाल्या त्यांथी मगनमां ।।२८।। चिखलिये पोर चार रहि, धर्मपुर पोते रह्या । नयणे निर्खि नाथने, सहु संतजन सुखी थया ॥२९॥ गयांहतां बाइ गाम बीजे, नाम कुशळ कुंवेरित । तर्त त्यांथी आवियां, सुणी प्रश्च पधार्या घेरजि॥३०॥नयणे निरखि नाथने, सनाथ थइ एम जाणियुं। अहो मारां भाग्य में।टां, एम कही आनंद आणियुं।।३१॥पछी हायजोडी कह्यं नाथने, महाराज राज करो तमे । तमे अमारा अधिपति, सहुदास थइ रहेशुं अमे ॥३२॥ अजाणे दिन आटला, अमे रहातां राजा श्रइ । हवे तमे तमारुं साचवी, आ सर्व तमारुं मारुं नहि ।।३३।। पछी प्रभुजि बोलिया, नथी राज्य करका आविया। अनेक जीव उद्धारवा, आ भूमिए भिमये रिया ॥३४॥ ए राज्य तमारुं तमे करी, पण अंतरमां राखज्यो हरि । जो रहेशे उपाधि अंतरे, तो खोट्य मोटी जाशे खरी ॥३५॥ वाइ कहे हवे तमने मुकी, बीजी बला कोण राखरो । सुधासम स्याम तमने, मुकी विष कोण चाखरो ॥३६॥ एवं सुणी प्रभु प्रसन्न थया, पछी नैड्यो संघ सुरततणो । आव्या सर्वे सतसंगी, लाव्या पूजवा समाज घणो ।।३७।। सुंदर बस्त्र पहेरावियां, धर्यो वडो मुगट माथे वस्री । भूप दीप करी आरती, पछी लाग्यां पाये सहु लळी ५३८॥ पछी राजन राजि थइ, करी करजोडिने विनित । आज करो अस-वारी हरि, कुपा करी अमारीवति ॥३९॥ पछी आपी आगन्या, सारुं जाओ अमे अवशुं । पछी राजा राजि थइ, शणगारी

असवारी मावर्श्च ।।४०।। सुंदर गज शणगारीयो, ते उपरे बेठा हरि। शहर सर्वे सनाथ थयुं, नाथ निर्द्धा नयणां मरी॥४१॥ त्यां वाजे वाजां अतिघणां, वळी बळे मशालो बहोळियुं। एम अनेक जीवने, आप्युं सुख अणतोळियुं ॥४२॥ एम अनंत करी लीळा, पछी वांसदे आविया । सामैये सुखपाल लाबी, राये मोतिडे वधाविया ॥४३॥ पछी प्रभ्र पधराविया, भूपे भ्रुवन पोता-तणे। धूप दीप करी आरती, प्रभ्र पूजिया प्रेमे घणे ॥४४॥ पछी चरण चर्चि चंदने, बळी बेनां पगलां पडावियां। प्रीत्ये पोताने पूजवा, रायसिंहे शिश चडावियां ॥४५॥ पछी हता दास पास हरिने, तेने करी पहेरामणी । त्रण दिवस त्यां रही, पछी पधार्या धर्मपुरभणी ॥४६॥ आवी त्यां उत्सव कर्यो, वसंतपंच-मीनो बळी । जोइ लीळा जन मनमां, मगन थयां सहु मळी ॥४७॥ पछी प्रभुने पूजिया, बाइये बहु प्रेमे करी। सुंदर वस्त्र अरपि अंगे, आप्या रुपैया थाळ मरी ॥४८॥ पछी हरिये हाथशुं, आप्या रूपैया दीन दासने । संत पोते त्यागी तने, कोण राखे एह काशने ॥४९॥ अनंत लीळा त्यां ऋरी, ते कहे न आवे वातमां । पछी त्यांथी चाल्या हरि, आविया गुजरातमां ॥५०॥ समयो सारो कर्यो, महाशुदी पंचमीने दिने । धर्मपुरे कुशळकुं-वर, त्यां करी लीळा जीवने ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रव-तिकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तार्चेतामणि-मध्ये नारायणचरित्रे महाराज धर्मपुर पधार्या ने त्यां वसंतर्वचमीनो उत्सव कर्यो एनामे वांतेरमुं अकरणम् ॥७२॥

चोपाइ-पछी बरताले वालो आविया, दिन दोयक पोते त्यां रह्या । पोते पथार्या देश पांचाळ, दीनबंधु जे दीनदयाळ ॥१॥

संत सरवे रह्या गुजरात, करे हरिजन आगे वात सह करी लियो धरकाज, हमणां करशे उत्सव महाराज ॥२॥ आवी हुतासनी दिन थोडे, प्रभु पधारशे चडी घोडे। एवं सांमळी सतसंगी जन, करे मनोरथ वळी मन ॥३॥ हवे तेडावशे प्रभु ज्यारे, जाशुं सहु मळी दर्शने त्यारे। कहे एक कराबुं पोञ्चाग, ञ्चाल दुञ्चाल सोनेरी पाग ४ जामो जरी सुंदर सुखाळ, सारो सोनेरी छेडे चोफाळ। एक कहे वेढ विंटी कडां, कराविश कनकनां रुडां ॥५॥ बाजु काजु कुडळ रुपाळां, रुडी उत्तरी सांकळी माळा । एक कहे कराचुं कंदोरो, शिरपेचने सोनेरी तोरो।।६।। एक कहे पूजिश हुं नाथ, घशी चंदन सुंदर हाथ। एक कहे करीश आरती, नमी चरण करीश विनति ।।७।। एम करे मनोरथ दास, त्यांतो आवियो फागण मास । देशोदेश कंकोतरी फेरी, फुलडोलना उत्सव केरी ॥८॥ आपी आज्ञा जनने महाराजे, करज्यो समाज रमवा काजे। अमे आवशुं वरताल वहेला, पंचदिन हुतासनी पहेला ॥९॥ पछी संते कराव्यो समाज, हेते हरिशुं रमवा काज। रुडीं रीत्यना कहाव्या रंग, भर्या होज जमुना ने गंग ॥१०॥ सुंदर पीचकारी करावी, रमशे हरि हरिजन आबी। बहुपेरे कराव्या समाज, त्यांतो पोते पथार्या महाराज ।।११।। आवी दासने दर्शन दीधां, निार्खे नाथ जने सुख लीधां। आप्यो दासने अतिआनंद, पोते पधार्या पुरणचंद ॥१२॥ आच्या हरि सखानी हेडीए, उतर्या जोबननी मेडीए। पछी तेडिया संत समस्त, आव्या सांख्ययोगी घणा गृहस्थ। १३।। मळ्या मनुष्य अतिअपार, पछी प्रभु आव्या पुरबहार । दिये दर्शन दीनदयाळं, अतिकरुणाए भर्या कृपाळं ।।१४।। तियां आव्यो उत्सवनो दन, कर्युं रसिये रमवानुं मन। भरी झोळी उडाडे गुलाल,

तेणे सखा थया सहु लाल ॥१५॥ नाखे पीचकारी भरी रस, रंगे सखा कीधा रसबस । सखा शोमेछे सुंदर रंगे, रमे अल-बेलो उछरंगे ॥१६॥ पछी सखे कर्योतो हिंडोळो, सारो शोभित सुंदर पहोळो । बार बारणे ओपे अनूप, जोया जेवुंछे जाळिनुं रूप ॥१७॥ पांच शिखरे शोभे निदान, जाणिये वैकुंठनुं विमान । काज कनकना कोटिमां स्टेके, बहु फुल ने हारे ते वेके ॥१८॥ रुडो रच्यो मळी मुनिराज, एवे हिंडोळे वेठा महाराज । पछी धर्यो ग्रुगट सुजाणे, शोभे सूर्यतेज परमाणे ॥१९॥ अतिशोभा दियेछे अपार, नंग पंगतिनो नहि पार। जड्यां मणि माण्यक ने मोति, करेछे हीरा झवेर ज्योति ॥२०॥ जोइ वज्र रुचकनी जात्य, लाल नीले पीळे पाडि भात्य । नंग झगमग करे जोत्य, जाणुं रवि शशि थया उद्योत ॥२१॥ एवां रुडां रतननो जड्यो, घणेघणे हेते करी घड्यो। एवो मुकट धर्योछे नाथे, पहेर्या कन-कर्ना कर्डा वे हाथे ॥२२॥ करे वेढ विंटि बांये बाजु, मकराकृत कुंडळ काने काजु। शिरपेच ने सोनेरी तोरो, केड्ये बांध्यो कनक कंदोरो ॥२३॥ हैथे पहेर्याछे हेमना हार, शोभे फुलनी माळा अपार । कर्यां तिलक केसरतणा, तेणे शोभेछे सुंदर घणा ॥२४॥ पछी जने करीछे आरति, थाय जयजय शब्द त्यां अति। मळ्या जन त्यां अति अपार, लइ उभाछे फुलना हार ॥२५॥ पण प्रभुने केम अपाय, अतिभिड्य पासे न जवाय। तेना मनोरथ पुरा कीधा, हाथ छडिवड्ये हार लीधा ॥२६॥ पछी माथेथी ग्रुगट उतारी, सुंदर सोनेरी पाघ ते धारी । तेनां दीधां सहुने दर्शन, कर्यां जनना मन प्रसन ॥२७॥ पछी सहुनी पुरवा हाम, इले हिंडोळे सुंदर स्थाम । हाले हिंडोळो वायुने वेघ, थइ मगन झरे

तियां मेघ ॥२८॥ तियां आविने थोभ्यां विमान, गाय गांधर्व त्यां गुणगान । तियां जयजय बोलेछे जन, एम लीळा करेछे जीवन ॥२९॥ वीति एम आनंदमां रात्य, उग्यो सर हवुं पर-भात्य । त्यारे क्यामळियो सज थया, सखाने संगे रमवा रह्या ॥३०॥ चाले चौदिशे पीचकारी घणी, चडी गरदी गुलालतणी। चड्या रमते रसियो राज, सुख संतने आपवा काज ॥३१॥ रमे सामसामा नव हारे, वचमां पडी कोइ न वारे । एव खेलेछे खांतिलो होळी, नाखे भरी गुलालनी झोळी ॥३२॥ वाजे वाजां त्यां ढोल नगारां, त्रांसां शरणाइ रवाज सारां। बहु मचीछे रंगनी झडी, जुवे अमर विमाने चडी ॥३३॥ रमे हरिसंगे हरिजन, करे नर अमर धन्यधन्य। पछी प्रभुजि चडिया घोडे, सखा लीधाछे सरवे नोडे ॥३४॥ फरे संघमां दिये दर्शन, करे जननां मन प्रसन। एम लीळा करेछे लाडिलो, रंगमां रसवय छे छेलो ॥३५॥ एम प्रभु रम्या सखा साथ, पछी नावाने चालिया नाथ। नाहि नाथ ने आच्या उतारे, थयो जमण थाळ तैवारे ॥३६॥ जिमया पोते जीवनप्राण, जमाड्याछे जने करी ताण। पछी संतनी पंक्ति बेसारी, आव्या पीरसवा शिरिधारी ॥३७॥ जमे जन जमाडे जीवन, एम लीळा करी बहु दिन । आप्युं सुख एम बहु-विधि, पछी संतने शीखज दिधि ॥३८॥ एम उत्सन कयो अवि-नाशे, कराव्यो बापु रणछोडदासे । करी वस्ताल देश विदिति, धन्य नर ए नारीनी प्रीति ॥३९॥ कर्यो उत्सव जगजीवने, फागणशुदि पुन्यमने दने। तेदि सुंदर उत्सव करी, पछी पांचाळे पधार्या हरि ॥४०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तिवितामणिमध्ये नारायणचरित्रे

महाराज हिंडोळे झुल्या ने घणुंज ऐश्वर्य जणाव्युं एनामे त्रोते-रमुं प्रकरणम् ॥७३॥

राग सामेरी-घणुं रहे हरि गढडे, ने आवे जाय बीजे देश। संत फरे सर्वे देशमां, करे हितनो उपदेश ॥१॥ लीळा संभारी लालनी, तेनी करे मांहोमांहि वात । उतरे नहि केफ अंगथी, घणुं रहे राजी रळियात ॥२॥ अष्टमी ने एकादशी, फुलडोल दिवाळिने दन । रामनवमीने वसंतपंचमी, बाट जोइ रहे सहु जन ॥३॥ वाट जोतां वरतालमां, आव्या दयाळ दया करी । हेत जोइ हरिजननां, तेने दिये दर्शन फरिफरी।।४॥ फरे सर्वे देशमां, अने जुवे सघळां गाम । वरताल्य डभाण जेतलपुर, ते करियां निजधाम ॥५॥अलबेलो पधारिया, कार्तिकशुदी एकादशी। तेदि जेतलपुरे करी उत्सव, 'तेडाविया सर्वे ऋषि ॥६॥ तियां जाम चारतं जागरण करी, गाया गुण गोत्रिंदतणा । रमतां गातां गरिवयो, सुख संते ते लीधां घणां ॥७॥ नित्य निव लीळा करे, भेळा सुनि-जनने लहि । पवित्र करे पृथिवी, चरणनी रजे सहि ॥८॥ जियां जियां जीवन फर्या, तियां कर्यो जननां काज । अनेक जीव उद्धार रवा, फरे मुनि ने महाराज ॥९॥ एम करतां आवियो, रुडो ते फागण मास। रमवा रुडी हुतासनी, हैवे हरखिया हरिदास॥१०॥ पछी प्रभुजि बोलिया, संतो शोधो सुंदर ठाम । ओण करीए हुता-सनी, एवं गोतिकाढो गाम ॥११॥ वारमवार वरतालमां, उत्सव कर्या अतिघणा । खुंखुं खम्या ते सतसंगी, धन्य जन एमां नहि मणा ॥१२॥ माटे विजी जायगा, जोइ काढो तमे जन । संते मांड्युं शोधवा, सुणी वाल्यमजिनुं वचन ॥१३॥वामणगाम ने बोचासणे, सतसंगी सारा सहि । पण जळ छायानी जुगति, वरताल जेवी

विजे निह ॥१४॥ वाल्यम कहे वरताल जेव्वं, नथी बीजुं कोइ **गांम ।** सतसंगना मध्यमां, सुंदर छे एह ठाम ॥१५॥ जाओ तमे त्यां मोरथी, सारो करावजो समाज। आ दिने अमे आवशुं, एम बोलिया महाराज ॥१६॥ वारमवार वर्षीवर्षे, हलवांमण छे होजनी । करो चिराबंध चोकसी, थाय सुंदर रमत्य मोजनी ॥१७॥ पछी पाका होज करावीने, एक चोतरो चणावियो। अलबेलाने बेसवा, सुंदर सारो बणावियो ॥१८॥ पछी प्रभुजि पधारिया, आबी बेठा एह चोतरे। आसपासे बहु दास दिसे, सुखे सहु दर्शन करे॥१९॥ अनेक जन जोइ रह्या, नरनारीनां वळी बृंद। शोभे सुंदर श्यामळो, जैम तारामंडळमां चंद ॥२०॥ दिये सुख बहु दासने, वळी दयाळ दया करी। जन मन रंजन करवा, करे लीळा फरिफरी।।२१॥ कर्यों तो उत्सव आगळे, वळी तेत्रानो तेवो कर्यों। अतिआनंदे अलबेलडो, वळी रमे होळी रंगेभर्यो ॥२२॥ लाव्या गुलालनां गांडलां, ते वहेंचि आप्यां संतने । भर्या होज बेंड रंगनां, रमवा भक्त भगवंतने ॥२३॥ पछी अलबेलो उभा थइ, वळी फेंकि फांडुं गुलालनी। तेसमानी शोभा मुखथी, कही न जाये लालनी॥२४॥ पछी सखा सञ्ज थया, खेल खुब खरो मचावियो । लागी झडी बहु रंगनी, अरुण वर्ण अंबर थयो ॥२५॥ परस्पर पीचकारियोनी, छुटे शेड्युं सामटी । आंख्य न दिये उघाडवा, जाणुं आव्यो घन घणो उलटी ॥२६॥ गुलाल लाल नाखे घणो, झळके करमां कडां बळी। थाय सलावा तेहना, जाणुं चमके घनमां विजळी ॥२७॥ रसबस थया रसियो, शोभे सखा रंगमां लाल। आनंद देवा दासने, एवी करे अलैकिक ख्याल ॥२८॥ रमतां रमतां रंगमां, वळी पहोर दोये वही गया। हरि हरिजन होळी रमतां, होडमां नव्य हारिया ॥२९॥ पछी नाथे हाथशुं, वळी पाडी ताळी ते घडी । जित्याजित्या सहु आपणे, हवे मेलो पीचकारी पडी ॥३०॥ पछी जन मगन थइने, नावा चाल्या नीरमां। रंग सोरंगे क्यामळो, घणुं शोभेछे शरीरमां ॥३१॥ नाहिने अव्यानाथजि, जन जमाड्या भावे भरी। पछी मुनिमंडळने, पोते पिरब्धुं हाथे करी ॥३२॥ जेजेकार करी जीवन, आव्या पुरवहार फरी। आवी बेठा आंबले, हरिजन ने पोते हरि ॥३३॥ त्यां गाथ पद ने थाय वातो, प्रश्न उत्तर अतिघणां । एम संतने सांझ सुधी, दिधां सुख दर्शनतणां ॥३४॥ पछी हाथ जोडी हरिजन कहे, तमे हिंडोळे वेसी हरि । मनोरथ जन मनना, तमे पुरो प्रभु कृपा करी ॥३५॥ पछी प्रभु प्रसन्न थइने, हिंडोळे वेठा हरि । जने जीवनने मुगट धरी, करी पूजा भावे भरी।।३६॥अंबर सुंदर आभूषण, प्रश्चने पहेरावियां। कुसुममाद्या कंठे अर्षि, सुंदर छोगां धरावियां।।३७० पछी उतारी आरती, प्रेमे पाये लाग्या नाथने । पछी हरि हिंडोळे झुली, आप्यां सुख सहु साथने।।३८॥,एम लीटा अतिघणी, करी कृपानिधिये। जनमन रंजन कर्या, वाल्यमे बहुविधिये ॥३९॥ एवीरीत्ये करी इत्सव, पांचाछे प्रभु गया । संत सर्वे मंडळी वळी, गुजरधर-मांहि रह्या ॥४०॥ एक जिमे अनंत लीळा, कहीए मुखयी केटली। शेष महेश ने शारदा कहे, तीय कहेबाय नहि तेटली ॥४१॥ अपरमपार लीळा करी, फागणशुदी पुन्यम दने। करी लीळा वरतालमां, करावी हरिजन जोबने ॥४२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्ताचिता-मणिमध्ये उत्सव कर्यों ने रंग रम्या एनामें चुवोतेरमुं प्रकरणम् ॥०४॥ चोपाइ-पछी श्याम सोरठ पथार्था, जनने मन मोद वधार्या।

गामोगाममां देइ दर्शन, करे जननां मन प्रसन ॥१॥ खंभाळं रायपर पिंपळ, रही बंधिये गया गोंडळ। गाम गोंडळनो जे राजन, नाम हठिभाइ हरिजन ॥२॥ सखासहित सामा सहु आव्या, अतिहेते प्रभु पधराव्या। पछी बोलिया इयाम सुजाण, तमे सांभळो नरपति वाण ।।३॥ अमे त्यागी ने राज्य तमारे, केम मळशे तमारे अमारे। जेम तमने राज्यनी खुमारी, तेम त्यागिने त्यागनी भारी।।४।। माटे मोटा जो जाणो अमने, तो मानज्यो जे कहीए तमने । तैये जोड्याछे राजाए हाथ, जेम कही तेम करशुं नाथ ॥५॥ पछी पधार्या तेने भवन, रह्या रात्य ने जम्या जीवन। पछी शीख मागिने संघाच्या, श्रोड करी धीराजिये आच्या ।।६।) रही रात्य ने सधाव्या स्याम, त्यांथी आव्याछे भाडेर गाम । त्यां निजजनने सुख आप्यां, देइ दर्शन ने दुःख काप्यां ।।७।। पछी आव्या माणावद्रमांइ, रह्या रात्य एक पोते त्यांइ । पछी त्यांथी पधार्या पंचाळे, दिधां दासने दर्शन दयाळे ॥८॥ तियां रह्या राजी थइ बहु, आव्या सांभळी दर्शन सहु । आखा अजाब्य ने अगत्राइ, गढमक पिप्पल पोरछाइ ॥९॥ मेघपुर मांगरोळ लोज, कालवाणी समेधु सुत्रोज । गणोद जाळियुं उप-लेडुं, आवे दर्शन न जुवे छेडुं ॥१०॥ बाल जोवन ने मृद्ध वळी, आव्यां प्रभु पधार्या सांभळी। सहु आवीने निरख्या नाथ, जोइ जीवन थया सनाथ ॥११॥ करी पूजा ने लाग्यांछे पाय, अति-हेत हैयामां न माय। कहे कर जोडी एम जन, घणें दहाडे दीघां दरशन ।।१२।। एम कही भर्यां नीर नयणे, पछी प्रभु रोल्या मीठे वयणे। सांभळी सतसंगी सोरठी, तमे सहु सुसी छो सारिपठी ।।१३।। अमे फरीएछीए देश सहु, पण तमे वालां मने

बहु। अमे प्रथम प्रकट थइ, करी आ देशमां लीळा कह। १८।। वळी आ देशमां खामी मळ्या, रामानंद जे न जाय कळ्या। तेना सतसंगी तमे कहावो, माटे मारे मने अतिभावो ॥१५॥ **एवी सां**भळी वालानी वात, सहु थयां अतिरळियात। पछी आव्यो दुर्बळ एक दास, अकिंचन नहि बस्त्र पास ॥१६॥ तेने आप्यां अंबर करावी, वळी मुठडी मोरे भरावी । काप्युं दारिद्र एम जननुं, हतुं दुःख जे वहुं दननुं ॥१७॥ बिजां सहु सुखी थयां जन, करी प्रभुजिनां दरशन । दिन दशविश तियां रह्या, पछी गाम पिपलाणे गया ॥१८॥ आखुं अगत्राइ गाम फरी, पाछा पंचाळे अविया हरिं। रही रात्य सत्रारे सधाच्या, त्यांथी माणावद्र-मांहि आव्या ॥१९॥ दीघां दासने दर्शन दान, रही रात्य चाल्या भगवान । आव्या जाळिये सुंदर ज्याम, रह्या पहोर एक एह ठाम ॥२०॥ पछी जने कराच्यां भोजन, जमी चालिया त्यांथी जीवन। षीजे रह्या नहि कियां नाथ, आव्या वंधिये सखाने साथ ॥२१॥ त्यांथी चाल्या रंगभिनो राज, आव्या गाम गढडे महा-राज । दिधां दासने दर्शन दान, जने निरख्या भावे भगवान ॥२२॥ पछी पुछ्युं जने लागी पाय, केवा सतसंगी सोरठमांय। कहो कुपा करीने अमने, केवुं हेत करता तमने ॥२३॥ पछी बोलिया प्राणजीवन, तमे सांभळो सहु मळी जन ! सोरठदेशना सत-संगी जेह, अतिनिर्मळ कोमळ तेह ॥२४॥ नहि छळ कपट लगार, बहु विश्वासी छे नरनार । घणुं नहि डहापण चतुराइ, निश्रय प्रभुनो पर्वत प्राइ।।२५॥ जेदिना एने खामी मळ्या छे, तेदिना सर्वे संशय टळ्या छे। निरुत्थान छे नर ने नारी, एकएकथी समझण्ये भारी ॥२६॥ एवा जन थोडा मळे जोते, जेने मळ्या रामानंद

पोते। त्यारे जन कहे सत्य महाराज, एवा जन नहि विजा आज ॥२७॥ जेनां तमे करोछो बखाण, एतो एवाज छे परमाण। एम हरिहरिजन मळी, करी बात ते सर्वे सांभळी।।२८।। एम नित्य नवी वातो करे, सुणी जन हृदे सहु धरे। एमकर्ता वीत्यो एक मास, पछी प्रभुजि थया उदास ॥२९॥ लिधो सेवक एक संगात्ये, उठि चाल्या पोते अरधि रात्ये। गढडाथी उत्तरमां गाम, रहे सतसंगी सुखपुर नाम ॥३०॥ तियां पधार्या दर्शन देवा, तेने घेर हतो वळी विवा। तियां मळ्यां हतां नरनार, दीठां उन्मत्त सरखां अपार ॥३१॥ नहि केने विचार विवेक, चड्यो केफ विवानो विशेक। करे मांहोमांहि बहु हांसी, एवं जोहने थया उदासी ॥३२॥ आव्या हता उदासी टाळवा, त्यांती सामुंना अधिका हवा। पण कहुं निह् केने कांइ, प्रभु समिझ रह्या मनमांइ॥३३॥पछी तर्त त्यांथी उठि-चाल्या, रह्या निह नाथ केना झाल्या ! कहे अमे जाशुं दूर देश, पाछो यां नहि करीए प्रवेश ॥३४॥ पछी हरिजने जोड्या हाथ, एवं करवं नहि मारा नाथ । होय जीवमां अवगुण घणा, जोया न घटे नाथ तेतणा ॥३५॥ माटे दयाछ दया करीने, आवो गाममां पाछा फरिने । पछी प्रभु कहे सांभळी तमे, जाओ जरुर आवशुं अमे ।।३६।। पण आ पळे पाछा वळीने, नहि आवीए मानो मळीने । पछी त्यांथकी पोते सधाच्या, आघा जइने गढडे आव्या ॥३७॥ आवी लखाच्यो कागळ एक, तेमां एटलो लख्यो विवेक । आपणा जे सतसंगी होय, तेती भांड भवाइ न जीय ॥३८॥ सांख्ययोगी होय बाइ भाइ, तेने जावुं निह विवामांइ। कर्मयोगी जे जाय विवाय, तेपण गीत प्रभुजिनां गाय ॥३९॥ एह आगन्या छे जो अमारी, सहु रहेज्यो एम नरनारी । एम नहि रहे जन जेह, नहि अमारा सतसंगी तेह ॥४०॥ एवी लखाबी कागळे वात, पछी पोते थया रळीयात। थया राजि पोते त्यारे राज, ज्यारे की धुंछे एटछं काज ॥४१॥ एवा संत सुखदायी क्याम, दास दोषनिवारण नाम। शोभानिधि ते संतने आपी, बीजां कलंक सरवे कापी॥४२॥ जेणे वेसे जगतमां दाग, एवां कराव्यां कुलक्षण त्याम। तेणे शोभेछे सतसंग घणो, ते प्रताप महाप्रभु तणो ॥४३॥ इति श्रीमदेकांति-कधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्त-चिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे महाराजे गढडेथी सर्वहरिजनना उपर कागळ लख्यो एनामे पंचोतेरमं प्रकरणम्॥७५॥

राग सामेरी-हवे गुजरधरमां संत फरता, करता हरिनी बारता । पंचवते पूरा शूरा, प्रभुने संभारता ॥१॥ तेणे मनमां विचारियुं, हजि नाथजि केम नावीया। आज काल करतां, दर्शन विना दिन बहु गिया।।२॥ एम शोच करीने संत सुता, तेने स्वममां आव्या हरि । सखा संगे क्यामळो, जाणुं पधार्या दया करी ।।३।। श्वेत वस्न पहेरी लेरी, जाणुं आविया अश्वे चडी । संत मन मगन थइ, करे धन्यधन्य आज घडी ॥४॥ एक कहे महाराजने में, गुंजाहार पहेरावीया । बाजु काजु कुंडळ करी, फुलना तोरा धरावीया ॥५॥ एक कहे जाणुं चंदन घशी, चरच्युं मारा हाथशुं। एक कहे जाणुं अलवेलाने, मेटियो भरी बाथशुं 11६11 एक कहे जाणुं नाथनां, चरण छाप्यां छातिये। एक कहे एवी दिठी मूरति, तेतो नव्य जाय कहो।।।। एक कहे में सखा दीठा, संगे सुंदर क्यामने । एम संते खममांही, दिठा पूरण-कामने ।।८।। प्रभाते उठी परस्पर, वात करवा लागिया। जाण्युं पधार्या वाल्यमो, संत सहुनां दुःख भांगियां ॥९॥ पछी नाहि

जन जीवननी, वाट छुवेछे सहु मळी । एम करतां पधारीया, वाल्यमजि पोते वळी ॥१०॥ जेवा दिठाता खमामांइ, तेवाना तेवा पधारिया । दर्शन दइ दासने, नवला ते नेह वधारीया ।।११।। जन सहु मगन थया, निर्खि नटवर नाथने । पाय लागी पासके, बळी उभा जोडी हाथने ॥१२॥ पछी प्रश्नुजि बोलिया, जाओं तैडावो सर्वे जनने । संतने खबर करज्यो, मर करे आवी द्र्शनने ।।१३।। पछी सांभिकने सर्वे आव्या, सतसंगी ने संत वळी । नाथ निरखि हैये हरखि, लाग्यां पाय प्रभुने लळी ॥१४॥ संत-मंडळ सर्वे आव्यां, बेठा जोइ जीवनने । अलबेले अमृतदृष्टे, जीया सर्वे जनने ॥१५॥ अनंत सुख आप्यां वाले, काप्यां दुःख दासतणां। मीठीवाण्ये बोली मोहन, राजि कर्या संत घणा।।१६॥ पछी दिवस वळते, आबी अवल एकादशी। सतसंगी नरनारी सहु, रह्या व्रत मळी ऋषि ॥१७॥ जेतलपुरनी जाग्यमां, मनुष्य तो मायां नहि । पछी प्रभुजि विराजिया, तडागतटे वटे जइ ॥१८॥ त्यां अनंत जन आविया, लाविया पूजा प्रीतशुं । अंबर भूषण अंगे अरपि, चरण चित्रच्यां चित्रशुं ॥१९॥ पछी संत शीखंड घशी, लाव्याता भाजन भरी। मरजि जोइ महाराजनी, सर्वे अंगमां अरचा करी।।२०।। सुंदर हार सुमनना, प्रभुने पहे-राविया । पोंची बाजु काजु कुंडळ, गजरा तोरा धराविया ॥२१॥ धूप दीप करी आरति, सहु लिळे पाये लागिया। पछी प्रभुजि गाममां, घोडे चिंड जमवा गिया ॥२२॥ जिम जीवन आविया, नाया पछी नीरमां । चोळि चंदन उतारियं, जे चरम्यंहतं शरी-रमां।।२३।। पछी पहोर पाछले, वालो पघार्या वाडिवे। एम सुख अलबेलडो, दिये दासने दाडिदाडिये ॥२४॥ अनंत वातो त्यां १९ भ०वि०

करी, सुणी संत सहु मगन थिया। पछी सखासंगे स्यामळो, मोले मलपता आवीया ॥२५॥ जने त्यां जागरण कर्युं, गायां कीर्तन अतिघणां। पाटे बेशी पातळे, सुण्यां पद संततणां।।२६।। पछी प्रभुजि बोलिया, तमे सांमळो हरिजन सहु। अतिरहस्य एकांतनी, एक वाल्यपनी वात कहुं ॥२७॥ आ सभामां आपण सहनां, तेजोमय तन छे । छटा छुटेछे तेजनी, जाणुं प्रकटिया कोटि इंदु छे ।।२८।। वळी कहुं एक वारता, सर्वे कीधुं आपणुं थायछे । सुख दुःख वळी जय पराजय, यत्किचित् जे कहे-वायछे ॥२९॥ जेजे आपणने नव गमे, ते जीव केम शके करी। खुवो सर्वे जक्तमां, कोण शकेछे फेल आचरी ॥३०॥ वळी रीत्य आपणी, जे जीवने नथी गमति । जोटंछुं एवा जीवने, छे केनी केनी एवी मति ॥३१॥ तेने शोधी सामटो, एक दंड देवा तान छे। कोइ न प्रीछे परचो, एवं करवं मारे निदान छे।।३२॥ जेवुं अमारा अंगमां, सुखदुःख राखुंछुं सहि । तेवुं जाणज्यो जक्तमां, कहुं सत्य एमां संशय नहि ॥३३॥ वळी आपणे राखियां, षट रसनां व्रतमान । तेदि सर्वे जक्तमां, केने खावा न रह्यं धान ॥३४॥ जेदि अमे छाना रह्या, अने वळी वधार्या केश। तेदिना आ भूविषे, सहु निस्तेज थया नरेश ॥३५॥ वळी अमे अंगमां, आण्यो हतो मंदवाड । तेदाडे आ जक्तमां, बहु जीवनो गयो थियाड ॥३६॥ एम जणायछे एकता, महरा पिंड ब्रह्मांडमां मळी। जे होय आ अंगमां, ते ब्रह्मांडमां होय वळी ॥३७॥ तेमाटे तमे सांभळो, सतसंगी सहु नरनार । जेजे थायछे जक्तमां, तेनो बीजो नथी करनार ॥३८॥ सुख दुःख आवे सर्वे भेळं, तेमां राखज्यो स्थिर मति। जाळविश मारा जनने, वळी करीश जतन

अति ॥३९॥ एम करतां जो पंड पडशे, तो आगळ सुख छे अतिघणुं। पण व्रत टेक जो टाळशो तो, भोगवशो सह सहतणुं ॥४०॥ नहितो तमे नचिंत रहेज्यो, करबुं तमारे कांइ नथी। जे मळ्याछे तमने, ते पार छे अक्षरथी ॥४१॥ एम वात करी हरि, त्यारफ्छी पोते पोहिया। सुणी वात सतसंगीए, अतिशे राजी थिया । ४२।। पछी प्रभाते उठी पोते, दयाळे दातण कर्यु । नाया पछी नाथजि, जने हार पहेरावी छोगुं धर्युं ॥४३॥ पछी जने जमाडिया, प्रभुने प्रीत्ये करी। जमी पोते श्यामळे, पछी संत जमाड्या भावे भरी।।४४।। एम दिन दशसुधी, लटकाळे लीळा करी। पछी पोते पधारिया, पश्चिम देशे श्रीहरि ॥४५॥ एवी अनुपम करी लीळा, जेठशुदि एदादशी दने। लीळा करावी जेतलपुरे, गंगादास आंसजि जने ॥४६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसह जानंद खामिशिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते मणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे महाराजे पुरुषोत्तमपणुं कह्युं एनामे छोतेरमुं प्रकरणम् ॥७६॥

चोपाइ-पछी वीत्या थोडा घणा दन, आच्या बरताले जगनीवन । आमोवदी अमासने दन, कर्युं दीप उत्सवनुं मन ।१॥ आच्या तेडाच्या सर्वे दास, जोइ जीवन मन हुलाम। करे नित्य नवी लीजा लाल, जोइ जन थायछे निहाल ॥२॥ जेम अन्यलोक थाय मेळा, एम समझक्यो मां एह लीळा। जेने कहुं छुं फरिफरि अमे, तेनी रीत्य सांभळज्यो तमे ॥३॥ नर इच्छे छे नरेश थावा, राजा इच्छे अमरलोक जावा। अमर इच्छे इंद्रपदवी, इंद्र इच्छे थावा आद्य कवि ॥४॥ विधिषर ते विराट कहीए, ते पर प्रधान प्रकृष लहीए। तेपर मूळप्रकृति पुरुष, तेथीपर अक्षर

सुजश ॥५॥ अक्षर पर पुरुषोत्तम जेह, तेणे धर्यु मनुष्यनुं देह। तेनुं दर्शन ने स्पर्श क्यांथी, सहु विचारो ने मनमांथी ॥६॥ जे छे मन वाणीने अगम, तेतो आज थयाछे सुगम । अतिदुर्लभ दर्शन जेनां, कहुंछुं आ चरित्र हुं तेनां ॥७॥ जे कोइ जाण्ये अजाण्ये सांभळशे, तेना जन्ममरण ताप टळशे । जे कोइ समझे जथारथ जन, तेनुं थारो तेजोमय तन ॥८॥ माहात्म्य सहित समझरो खरूप, ते तन मुकतां अक्षररूप । छेतो वात मोटी एवी घणी, नावे प्रतीत कहेतां तेतणी ॥९॥ पण जाण्ये अजाण्ये जे जन, करशे महाप्रभुनां दर्शन । वळी सुणशे आ लीळा चरित्र, ते नर थाशे निश्रय पवित्र ।।१०॥ माटे कहुंछुं फरिफरीने, सहु सांभळो चित्त धरीने । पछी आव्योछे उत्सवनी दन, पुरी दीपमाळा मळी जन । ११। तियां सुंदर वेदी रूपाळी, आवीं बेठा तियां वनमाळी। जयजय बोले जनष्टंद, जाण्युं प्रकट्या पूरणचंद ॥१२॥ दीपे दीप जोत्य त्यां अपार, जाष्युं बण्युं तेजनुं अगार । प्रकाशमय मंदि-रमांये, शोमे मूरति अति शोभाये ॥१३॥ अंबर आभूषण अंगे जेह, सर्वे तेजोमय दीठां तेह। एम लौकिकमांइ अलौकि, जोइ जनमन रह्यां छकी ॥१४॥ दीघां दर्शन एवां दयाळे, दयासिंधु जनप्रतिपाळे। सर्वे जन थयांछे सनाथ, जोइ नटवर सुंदर नाथ ॥१५॥ गाय कीर्तन थाय कीलोल, मळ्या हरिजनना हिलोल। नरनारीनो न आवे पार, मळ्या म्रुनि हजारोहजार ॥१६॥ सर्वे जोइ रहा इरिसाम्रं, पुरी करीछे हैयानी हाम्रं। एम बीति गइ अर्ध रात, पछी वालोजि कहे सुणो वात।।१७॥ अमे जार्श हवे पुरमांय, तमे रात्य रहेज्यो सहु आंय। एम कहीने प्रभुजि पंचार्या, जनने मन मोद वधार्या ।।१८।। आवी नाथजि पोढ्या

आवासे, सखा पांच सात हता पासे। ज्यारे पोढिने जाग्या प्रभात, त्यारे पुछी रसोइनी वात ॥१९॥ त्यारे बोल्या नारायण गिर, थइ रसोइ काळ अचिर । पछी दातण करी दयाळ, नाइ नाथ जम्या पछी थाळ ॥२०॥ जम्या जीवन जनहित काज, पछी तेडाव्यो संतसमाज। तेने जमाड्या जुगते करी, आप्यां भोजन भाजन भरी ॥२१॥ बहुभात्यनां कर्यातां अस्र, हतो असकोटनो ए दन। कर्या पंगत्यमां पंचवार, घणिघणि करी मनुवार ॥२२॥ जमो संतो कंसार छे केवा, मालपुडा छे जमना जेवा। एम नाथ करे ताण्य झाझी, तेम नारायणगिर राजि ॥२३॥ जन जम्या थयो जेजेकार, पछी आंबले आच्या आधार। सर्वे दासने दर्शन दिधां, अतिआनंद मगन किथां ॥२४॥ एम लीळा करी बहु दन, पछी पधार्या प्राणजीवन । संत गया सहु आसपास, पोते कर्यो गढडे निवास ॥२५॥ रह्या दिवस थोडाक त्यांइ, वळी आविया वरतालमांइ। आवी तेडाविया आचारज, करवा कांइक एनुं कारज ।।२६।। सामा जइने सनमान कीर्धु, रुडिरीत्ये तेने मान दीधुं । पाटे बेसारी पूजा करावी, फुलमाळा तो पोते पहेरावी ॥२७॥ रुडीरीत्यनी रसोइ दिधी, चोंपे करीने चाकरी किधी। पछी बोल्या वेदांताचारज, पुछो तमे प्रश्न मने आज ॥२८॥ पछी प्रभु बोल्या एम रही, अमे त्यागी ने तमे छो गृही । पुछतां वळी प्रश्न तमने, घणो विचार थायछे अमने ॥२९॥ त्यारे बोल्या आचारज एम, एवं मनमां धारोछो केम । ब्रह्मविद्या बत्रीश प्रकार, कहोतो कही देखाई आ वार ॥३०॥ पुछो जे कांइ पुछ ई होये, नथी खोट्य ए वातनी कोये। एवं सुणी बोल्या अविनास, लियो प्रश्न पुर्छु तमपास ॥३१॥ ज्यारे गुरु करे कोइ शिष्य, आपे महा-

वाक्य उपदेश । तेने पुछुं हुं जुजना पाडी, दियो द्वादश रूप देखाडी ।।३२।। एमां करीश आशंका हु घणी, नहि चाले चतु-राइ तमतणी । प्रज्ञानमानंद ब्रह्म जेह, वळी अयमात्मा ब्रह्म तेह ॥३३॥ अहं ब्रह्मासि जेह कहीए, तत्त्वमसि ते केम लहीए। तैये बोल्या आंचार्य तेवार, एनापण छे वे परकार ॥३४॥ एम कहीने वाळ्याछे गोटा, कर्या उत्तर ते थया खोटा। पछी प्रभु पाय लागी चाल्या, आव्या दांत रह्या नहि झाल्या ।:३५।: वळी पुळ्युं पोते बीजे दिन, क्यांथी थया वेद उतपन । कहेको अनादि छे एह वेद, तोय कह्यो जोशे तेनो भेद ॥३६॥ कहेशो वेद नारायण-थकी, तोय व्यक्ति पाडि जोशे पकी। पछी बोल्या आचारज सोय, एनापण प्रकार छे दोय ॥३७॥ ज्यारे प्रलय थायछे ब्रह्मांड, त्यारे वड एक रहेछे अखंड । तियां रहेछे नारायण वेद, एकतो एम समझवो मेद् ॥३८॥ त्यारे महाराजने आवी हांसी, पण हस्या नहि अविनाशी। कहे नाथ सुणोने आचार्य, एनुं अमने थायछे आश्वर्य ॥३९॥ ज्यारे पंचभूत नाग्न थाय, त्यारे वडे ते केम रहेवाय। एनो उत्तर छे कांइ एते, आवडे तो कही बीजि-रीत्ये ॥४०॥ बारु एतो रहेवा हवे दियो, बीजुं प्रश्न ते सांभळी लियो । भगवाने कह्युं गीता मांय, जीव अंश ते मारो कहे-वाय । १४१।। तैये चोल्या आचारज एम, प्रभुतो अंश्व ऋहेवाय केम। एने अक्षरनी अंश कहीए, फ्छी नायजी बोल्याछे तैए ॥४२॥ अक्षरशब्दनो अर्थ छे शियो, प्रथम एना उत्तरतो दियो। कहे न क्षरे अक्षर तेह, एनो अर्थतो थायछे एह ॥४३॥ त्यारे नाथ कहें जीव केम खयों, जो खयों तो अक्षर न ठयों। बळी जीव छे अछेद्य अभेद, त्यारे अक्षरमां केम छेद ॥४४॥ उनो एम

उत्तर नीय कांय, नथी समझाववा संप्रदाय। तीय अजाण्या थइने नाथ, लाग्या पाय पछी जोडी हाथ ॥४५॥ आचारजनी मुंझांणी मत्य, थयो गाभरो गइ हिमत्य। हतो अहंकार जे एने मने, तेतो गळ्यो जाण्युं सहु जने ॥४६॥ नाथ कहे एने कहेशो मां कीय, आपो हपैया इत एने दोय। एम दया करी एने माथे, एणे भुंडं कर्युं एने हाथे ॥४०॥ आगळ जड़ने अविद्या करी, नाखी रज स्र्यसामी खरी। तेतो पडी एना मुखमांइ, सरजने अडि नहि कांइ ॥४८॥ एवं चरित्र करी दयाळ, पछी पधार्या देश पंचाळ। करी लीळा ए वरताले वसी, मागशरशुदि एका-दशी ॥४९॥ तेदि लीळा करी वरताल, सहु जनने कर्या नियाल। एम चरित्र करे नित्य ननां, निजजनने सुख आपवा ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तिचंतामणिमध्ये नारायणचरित्रे वेदांताचार्यने जित्यो एनामे सत्योतेरमुं प्रकरणम् ॥५०॥

राग सामेरी-पट्टी प्रश्नुजि बोलिया, अमे करी लीका अनेक। हवे वरषोवर्पमां, उत्सव करशुं एक ॥१॥ होळी दिवाळी ने अष्टमी, रामनवमी ने शिवरातरी। जया विजया एकादशी, पापमोचनी ने धातरी। २॥ एह दिवस उत्सव कर्यों, त्यां तेडाच्या हरिजन। हवे अणतेडे आवज्यों, प्रबोधनी एकादशी दिन ॥३॥ कार्तिकश्चदी एकादशी, तेहनुं प्रबोधनी नाम । तेदि सतसंगी संत सहु, आवज्यों बढताल गाम ॥४॥ एवं सांभळी श्रवणे, चाल्या देशोदेशथी दास। उत्सव उपर आविया, ब्रह्मचारी संत संन्यास ॥५॥ पूर्वदेश अयोध्या प्रांतथी, आव्या छं जन अनंत। काशी मिथिलाप्रांतथी, आव्या गंगासागरना

संत ॥६॥ शोणभद्र प्रांतना, प्रयाग प्रांतना जन । गया पुर-षोत्तमपुरीथी, आव्या करवा दरशन । १७।। मथुरां बृंदावन प्रांतमां, जे हता ग्रुग्रुक्ष जीव । अवंति नगरीथी आविया, नयणे निरखवा पिव ॥८॥ उत्तरदेशथी आविया, काश्मीर ने कुरुक्षेत्रथी। हर-द्वार पुष्कर प्रांतना, आच्या अर्बुदाचळ पवित्रथी ।।९।। मारुदेश सिद्धपद प्रांतना, एह आदि देश अपार । दर्शन करवा दया-ळनां, सहु आवियां नरनार ॥१०॥ पश्चिम देशथी आविया, सिंधुप्रांतना सेवनार। कछ वागड वालाक सोरठ, आव्या पांचा-ळना रहेनार ।।११।। सौभीर आभीर हालारना, जियांजियां हता जन । तेह सर्वे आविया, करवा हरिदर्शन ॥१२॥ दक्षिणदेशथी दर्शने, आव्या जन उमंगथी। सेतुबंध रामेश्वरना, आव्या वेंक-टाद्रि श्रीरंगथी ॥१३॥ पद्मनाम प्रांतना, आव्या मलियाद्रिप्रांति मळी। श्विव विष्णुकांची प्रांतना, दंडकारण्य प्रांतना वळी॥१४॥ विंध्याचळ प्रांतना, वळी तपती नर्मदातटना । आव्या सहु सहु देशथी, रटहा नारायण रटना ॥१५॥ केटलेक जोड्यां गाडलां, केटलांकने रथ वेल्य वळी। केटलांक बेठां घोडले, विजां पग-पाळां आच्यां मळी ॥१६॥ वाळ जोवन वृद्ध वनिता, घेरे कोइ न रह्या खमी। नारायणने दर्शने, आव्यां चार वर्ण चार आश्रमी ॥१७॥ मही साभर वात्रज वचे, रुखो चडोतर देश। दृक्ष जियां विधविधनां, वळी फुले फळे हमेश ॥१८॥ अंब कदंब उदंबरा, वळी अवल आंबली आंमळी। मउडा रुडां बकुल विलां, श्रीफळ शोभे सिताफळी ।।१९।। पिंपर वड बळी पिप्पळा, जांबु लिंबु ने जामफळी । रुढी रायण्य ने रोहिडा, कोठी कोटिम ने इद्की ॥२०॥ केश्वर कणेर केषडा, अवल छांया आसुतणी।

संदर दूस सोयामणां, तेनी जाति नव जाय गणी ॥२१॥ कुरू वेली फुलि तियां, एकएकथी अतिघणी। चंपा चमेली गुलाम गेरा, शी कहुं शोभा तेतणी ॥२२॥ सघन वन छाया घणी, रोनी ढळी वळी लवा खरी। जनमन रंजन जाणुं, वनमोवन मेल्या करी।।२३।। तियां सारस इंस शुक्र मेना, कोकिला किलोल करे । मोर चकोर चात्रक चकवा, मिटी वाण्ये ओचरे ॥२४॥ तियां सर सरिता सोयामणां, वळी वाच्य ने क्कवा कह । अमळ जळ अखुट भर्या, जियां तोयनो त्रोटो नइ ॥२५॥ एवा उत्तम देशमां, वळी वसे वरताल गाम । अनेक उत्सव करी हरि, करियुं निजघाम ॥२६॥ तियां सर्वे सतसंगी वळी, संघ लड्ने उतर्यो । नारायणने निरखवा, अतिहैयामां हरषे मर्या ॥२७॥ कैक सर ने कूप तीरे, कैक उतर्या गाम सुवनमां । कैक उतर्या पृक्ष वाञ्ये, वळी केक वाडी वनमां ॥२८॥ एम सर्वे सीममां, वळी मनुष्य माय नहि । गाय पद गीविंदनां, जयजय शब्द रह्यो थइ।।२९।। परस्पर पुछे मळी वळी, अलबेली कैये आवशे। ज्यारे जोशुं जगपति, त्यारे नयणां सुफळ कावशे ॥३०॥ सुंदर मुरति च्यामनी, नखशिखासुधी निरखशुं। अंगोअंग अवलोकतां, वळी हैयामां घणुं हरखशुं ॥३१॥ ऊर्ध्वरेखा अष्टकोण आदि, जांबु जव जोशुं जैये 🕪 केतु कमळ कुलिश जोतां, अंतर सुख थाशे तैये ।।३२॥ खर्ति अंकुश सोयामणां, वळी दक्षिण पगमां देखशुं । नव चिह्न निरखशुं, त्यारे जन्म सुफळ लेखशुं ॥३३॥ वाम पगमां विलोकशुं, मत्स्य त्रिकोण कळश व्योमने। घनुष घेनुपग पेखी, सुख थाशे जोये सोमने ॥३४॥ एडी रुडी आंगळी, पग अंगोठे रेखा नखे । गुलफ जंघा जातु जोतां, चिह्न दोय मळी वाग पखे

॥३५॥ करभसम सरखा उरु, नाभि उंडी गंभीर घणी। उर तरुतमाल शोभे, क्यारे जोशुं छिब छिबलातणी ॥३६॥ कंठ कंब्रसमान सुंदर, भुज गजकरसम बळी। हस्तकमळ अरुण ओपे, किल विल एवी आंगळी ॥३७॥ अजबकर आजान बाहु, नख निरिष जोशुं जैये। कंठमां तिल अवल जोतां, सुख त्यारे थाशे हैये ॥३८॥ चिबुक अधर दशन देखी, लेखशुं लावो लोचने । नासिकापासे तिल निरस्ती, पुरशुं मनोरथ मने ॥३९॥ कमळ-नयण अवण सुभग, वाम काने एक तिल वळी। अक्कटि भालनुं चिह्न चितवतां, दुःख सर्वे जाशे टळी ॥४०॥ शिरे सुंदर शिखा सारी, जोशुं निहाळि नयणे। एवी मूर्ति अवलोकशुं, यालो बोलावशे मीठे वयणे ॥४१॥ एम परस्पर करे वातो, अलवेलो जैये आवशे । दइ दरशन दासने, हरि हेते सहुने बोलावशे ॥४२॥ वाट जुवे वाल्यमतणी, वळी जुवे बारुणी दिशे। मोहनजिने मळवा, सहु हरिजन मनमां हिसे । ४३॥ उच्ची शब्द सांभळे जैये, तैये जाणे आव्या जगपति । नाथजिने निरखवा, अंतरमां आतुर अति ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामित्रिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तचितामणिमध्ये सर्वे हरिजन महाराजने दर्शने आव्या एनामे अट्टोतेरमुं प्रकरणम् ॥७८॥

चोपाइ-अलबेलोजि अंतरजामी, जे कोई सर्वेतणा काबे खामी। तेणे जाणि छे जननी ताण, चाल्या गढडेथी क्याम सुजाण।।१॥ आपे अश्वे थया असवार, संगे सखा हजारोहजार। तेपण तोरंगे थया तयार, शोभे अश्व अतिशे अपार।।२॥ मेला मजिठा नीला नवरंग, राता माता जे ताता तोरंग। हरडा हांसला रोझा रूपाळा, आकळा उतावळा बावळा।।३॥वळी घोडी

घणी जातवंति, एकएकथी ओपेछे अति । हर्णी माणकवर्णी विजळी, कपिक्यांडि केशर वांगळी ॥४॥ लखी लक्षमी लाडकी लाल, बेरी बोदली चांदरी उताल। मली माछली रेडी रूपाळी, पांखाळी सोझवाळी शिंगाळी ॥५॥ तिखि ताजण्युं जवाद्यं जाणो, फुलमाल पदुइ प्रमाणी । छिबली ने छोगाळी ए आदि, घषी घोडी रुडी रायजादि ॥६॥ कर्यां काठिए सञ्ज केकाण, मांडियां शंखलादि पलाण । चड्या माणकीए महाराज, तेणे मांड्योछे सोनेरी साज ॥७॥ चाली बोडातणी घणी घट, स्याम संगे छे सखा सुभट । आवे वाटमांहि गाम घणां, करे दर्शन जन हरि-तणां ।।८।। कोइ कहे रहो इयां राज, कोइ कहे जमी चालो महा-राज। कोइ कहे रही घडिवार, असे चालवा छीए तयार ॥९॥ एम आवी आडां जन फरे, तेने अलबेली उत्तर करे। कहे केड्येथी आवज्यो तमे, छीए आज उतावळा अमे ॥१०॥ एम कहीने धोडवी घोडी, माण्यकवर्णी जे माणकी रुडी । जाण्युं छुट्यो कमानथी तिर, खर्यों तारी अंबरे अचिर ॥११॥ जाण्युं पांखे उड्यो पन्नगारि, वेग तोप गोळाथकी भारि । सखा सह रहा साम्रं जोइ, संगे पहोचिशक्या निह कोइ॥१२॥ पछी केड्येथी किथोछे धोड, जोरे हांके घोडां जोडाजोड । फरके छोगां माथे मोटी पागे, करे अमर पंखा एवं ठागे ॥१३॥ अति पर्शेवे पलळ्यां अंग, घणे श्वासे भराणा तोरंग । त्यारे पोताछे प्रश्रुजिपास, आंबातळे दिठा अविनाश ॥१४॥ एक करे ग्रहि केशवाळी, बीजे करे ग्रहि आंबा डाळी । सामुं जोइने हिर हिसया, कहे केड्ये केम रहीगिया ॥१५॥ त्यारे बोल्या सखा कर जोडी, नाथ अमे थाक्या श्रोडीश्रोडी। पण कोइथी पहोचाणुं नहि, तेहसारु केट्ये

गया रहि ॥१६॥ आबुं धोडशो जो तमे नाथ, तो अमे पहोचि-शकिए न साथ । एम कहीने जोडिया पाण, पछी संगे चालिया सुजाण ॥१७॥ मेली भद्रा आवी भोगवती, त्यांथी उतर्या सामर-मती । संगे इता संन्यासी ने संत, ब्रह्मचारी ने भक्त अनंत ।।१८॥ त्यांथी चाल्याछे लाडीलो लाल, आव्या वाल्यमजी वर-ताल । तेतुं सत्संगीने थयुं जाण, आच्या सामैये सर्वे सुजाण ।।१९।। ताल मृदंग त्रासां ने भेरी, सुंदर खरे शरणाइ घेरी । रणसिंगां ने ढोल ददामां, गातां वातां आव्या सहु सामां ॥२०॥ बाळ जोवन ने चूद्ध वळी, आवी लाग्यां पाय सहु लळी। पछी मुनिने पंडिया पाय, वळतां मळ्या परस्पर मांय ॥२१॥ भाइ मळ्या सरवे भाइयोने, बाइयो मळी सर्वे बाइयोने । पछी गातां-वातां आव्या गाम, तैये बोलिया सुंदरक्याम ॥२२॥ गाममांतो छे भिड्य घणेरी, संघ मनुष्ये सघन थइ शेरी । चालो पुरश्री पूरव दिशे, एम जनने कह्युं जगदीशे ॥२३॥ तरु तलाव तटे सघन, शोभे विविध भात्यनां वन । अतिमोटां ने घाटी छे छांय, म्रुनि उत्तरिया सर्वे त्यांय ॥२४॥ एक अतिमोटो त्यां आंबलो, घणो घाटो छांयो जेनो भलो । तियां उत्तरिया अविनाश, सर्वे बेठा आवी दास पास ।।२५।। पछी बोलिया प्राण आधार, तमे सांभळो सहु नरनार । आजतो छे दशमीनो दन, तमे करो मोजन सहु जन ॥२६॥ एम अलबेले आगन्या दिधी, सर्वे दासे ते सांभळी लिधी। एक भक्त ब्राह्मण गंगाबाइ, जेने भाव घणो प्रभुमांइ ॥२७॥ रुडी करतां आवडे रसोइ, कीघां जमण मरजी जोइ । प्रुर्यो मोजन व्यंजने थाळ, लाष्या बेठाहता ज्यां दयाळ ॥२८॥ पछी जीवन जमवा काज, उठ्या मुखे हसिने महाराज।

कर्यों माव मरीने मोजन, पछी दीधुं जने आचमन ॥२९॥ दिधी प्रसादी निजदासने, पछी अलबेली आव्या आसने । बळे बहोळी मेताबुं मञाल, बेठा म्रुनिना मध्यमां लाल ॥३०॥ करता प्रश्न उत्तरनी वात, एम वहिगइ अर्घ रात। पछी पुरमां पधार्या नाथ, सखा पोताना छइने साथ ॥३१॥ तियां जई पोढ्या प्राणपति, थोडं सोइ जाग्या जनवति । तर्त घोडे थया असवार, सर्वे संघनी लिधी छे सार ॥३२॥ पछी आव्या आंबले महाराज, दासने देवा दर्शन काज। बाल जोबन बृद्ध वनिता, आव्यां हरिपासे हरखतां ॥३३॥ लाव्यां वस्त्र विविध भात्यनां, आभूषण जुजवी जात्यनां । चंदन पुष्प तुलसी ने धूप, दीप समीप नैवेद्य अनुप ॥३४॥ एह आदि अनेक सामगरी, लाव्यां सहु सहुना थाल गरी। जियां बेठाता जगजीवन, तियां आव्या सहु हरिजन ॥३५॥ मुनिसहित महाराजने निर्ख्या, निर्खि जन मनमांहि हरूयी। पछी पूजा करी नरनारे, पूज्या प्रश्नु षोडश उपचारे ॥३६॥ पुरुषे . पूजा ते मुनिनी किथी, दंडवत प्रदक्षिणा दिघी । पछी बेठा सामा जोडी हाथ, नयणे निर्खेंछे नटवर नाथ ॥३७॥ पछी बोलिया प्राणजीवन, तमे सांभळज्यो सहु जन । तमने जे मळीछे मुरति, तेने निगम कहे नेतिनेति ॥३८॥ अतिअपार अक्षरातीत, थइ तमारे तेसाथे प्रीत । भक्त जक्तमांहि छे जो घणा, उपासक अव-तार्तणा ॥३९॥ जेजे मूरति जनने भावे, ते मूर्ति निजधाम पही-चावे। पण सर्वेपार जे प्रापति, ते छे तमारे कहे प्राणपति ॥४०॥ एवां सुणी वालानां वचन, जन कहे प्रभु धन्यधन्य। सहु अंतरे आनंद पाम्या, गयो शोक संशय सहु वाम्या ॥४१॥ एम बहु दिन सुख दिधां, घणुं जनने मगन किंघां। पछी बोलिया प्राण-

जीवन, जाओ सहु सहुने भवन ॥४२॥ रहेज्यो निर्भय सहु नरनारी, राखज्यो व्रतमान विचारी । कार्तिकशुदी एकादशी दने, कर्यो उत्सव जगजीवने ॥४३॥ एवी लीळा करी वरताले, वालो पंचार्या देश पांचाले । सहु जनने थावा आनंद, गाय प्रेमेशुं निष्कुलानंद ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामिशिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे प्रवोधनीनो उत्सव कर्यो एनामे ओगणाएशिसुं प्रकरणम् ॥७९॥

राग सामेरी-पछी सतसंगमां शिरोमणि, वासी गढडा गामना । अतित्यागी तपसी तने, वाला सुंदर श्यामना ॥१॥ ते प्रीत्येशुं लाग्या पुछवा, नाथिज तमे सांभळो । लीळा करी वळी गुजरदेशे, पवित्र कयों सघळो ॥२॥ हवे हरि दया करी, करो उत्सव आहि तमे । सतसंगी ने संतनां तो, दरशन करीए अमे ।।३।। आपो अमने आगन्या, करीए सामान रसोझ्नो ! नोतरुं दिवस विशनुं, तेमां भाग न करवो कोइनो ॥४॥ वळतां वालम बोलिया, घणो दाखडो पडशे वळी । मानो अमारी आगन्या, करो सामान बेन बेउ मळी ॥५॥ पछी मानी महाराजनी आग-न्या, घणां मिसरी घृत मंगावियां । पडसुदिना पाक कराव्या, मोजन मन भावियां ॥६॥ पछी मेली मुनिने कंकोतरी, सतसं-गीने तेडाविया। संत अवणे सांभळी, बळी तरत तियां आविया ।।।।। आवी पाय लाग्या प्रभुने, निरिखया नयणां भरी। पछी सर्वे संतने वळी, हेतेशुं मळ्या हरि ।।८।। अतिहेत समेतशुं, पछी संतने बोलाविया। इसिइसिने बोले हरि, कहे नाथ भले आविया ।।९।। पछी करी रसोइ चालती, मनमान्या मोदक मोतिया। जलेदार जलेबियो, दिजा पाक नव जाय कहा। । १०।। बेसे

परमहंस पंगति, वळी पीरसे पोते हरि । जमे जन जीवन पोत्ये, जमाडे जोरे करी ॥११॥ माथे हाथ मुकी आपे, मोदक मनग-मता। दिये जलेबी जनने, बळी सुखमांहि जमतां ॥१२॥ सुंदर शाक सोयामणां, षृंताक ने वडीतणां । रुडी कडी वळी रायतां, पंगत्यमां पीरसे घणां ॥१३॥ कळी काजु गांठिया, फरसाण्य फेरे फ़ुलवडी। मर्यां हवेजे मजियां, वळी फेरने वडांवडी ॥१४॥ उड्यळ पापड अडदना, वळी आदां केरीनां आथणां। भोजन व्यंजन भावे भरी, आपे अलबेलो घणां ॥१५॥ दुध दृहि दोवटे, वळी पीरसे पंगत्यमां। वारमवार मनुवार करे, आवी हरि आरत्यमां ।।१६।। एकएकथी अधिक अधिक, थाय रसोयो नवी नित्ये। तेमतेम जन जमाडनार, राजि थाय रुडी रीत्ये।।१७॥ एम दिवस विशसुधी, जमाडिया निजजनने । संतने अतिसुख आप्युं, दइ हरि दर्शनने ॥१८॥ नित्येनित्ये नवी वारता, बळी करे हरि कृपा करी। जन सहु मगन थाय, सुंदर वाण्ये बोले हरि ।।१९।। मेडे रुडे रसियो, वळी बेसे नित्ये पोते जइ । नर-नारी हरिजनने, मगन करे दर्शन दइ॥२०॥ सुंदर वस पहेरी सारां, सोनेरी शोभे घणां। शाल दुञ्जाल पाघ जामा, रूडा कसुंबि रंगतणां ॥२१॥ हार अपार फुलना, वळी लावे हरिजन हेत्छुं। अलबेलानी कोटमां, पहेरावे बहु प्रीत्यश्चं ॥२२॥ वळी उभाथइ हरि आरती, करे करताळी दइ । लटकां जोइ लालनां, लखी जन राखे लह ॥२३॥ एम सुख आपतां, बळी दिवस विश वहिगया। दर्शन करी दयाळनां, संत सहु सुखिया थया ॥२४॥ एम करतां आवियो, वळी उत्सव फुलबोलने । रसियाने रमवा वळी, आण्यो रंग अदोलनो ॥२५॥ सखासंगे इयामळो, रमवा

रुडी रीत्यशुं । जणजण प्रत्ये जुजवी, पीचकारी करावी प्रीत्यशुं ।।२६।। पछी सुंदर रंग मगावियो, अलवेलो उभा ओरडे । सखा उपर क्यामळो, रेडे रंग रुडे घडे ॥२७॥ पडे बहु पीचकारीयो बळी, उडे गुलाल अतिघणो । चडी गरदी गगनमां, खेल मच्यो मुनि महाराजतणो ॥२८॥ रंगे रंगाणा रसियो, वेणे ओपेछे अति अंगे। सखा शुद्ध भुलि गया, रमतां वळी रसिया संगे ॥२९॥ वाजां बाजे अतिघणां, आव्या अमर जोवा आनंदर्शुं । जयजय शब्दे जन बोले, स्याम खेले सखा बृंदशुं ॥३०॥ सुंदर रंगे अरुण ओपे, बदन वाल्यमतणुं । जाणुं कमळ उपर्ये, अरुटिमृंग श्वीस्या घणुं ।।३१।। एम ओपे अलबेलडो, रसवसमां रसियो । छेल छविलो रंगनो रेलो, जनतण मन वसियो ॥३२॥ रमे रंगे सखासंगे, अंगे आनंद अतिघणे। ते समानी शोभा मुखथी, केट-लिक कवि भणे ॥३३॥ पछी रखावी रमत्यने, वालो नावा चाल्या नदीये। एवी लीळा जोइने, कंगाल न मनाय केदिये॥३४॥ जेनुं नाम लेतां निरदोष थाय, अने दर्शने दुष्कृत्य टळे। पाप पूरवनां थाय प्रलय, जेनी कीरति सांभळे ॥३५॥ तेनी लीळा जोइ जेणे, भाग्य तेनां हुं शुं भणुं । त्रिलोकमां नहि तुल्य तेने, वळी कहीए शुंशुं घणुं ॥३६॥ एवा जन जीवन वळी, नाह्या वळी नीरमां । सखासंगे क्यामळो, क्षोभे घणुं क्षरीरमां ॥३७॥ पछी नाहि पधारिया, अलबेली आव्या आसने । सुंदर रसोइ करी सारी। भरि राखिति वासणे ॥३८॥ जीवन जन जुगत्ये जम्या, अने रम्या रंगे होळी हरि। धन्यधन्य गाम गढडं, ज्यां लाडिले लीळा करी ॥३९॥ एम लीळा लाले करी, फागणशुदी पुन्यम दने । तेदि उत्सव करावियो, जया लिलता उत्तम जने ॥४०॥

इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद-मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे रंग रम्या एनामे एंसिमुं प्रकरणम् ॥८०॥

चोपाइ-एवी लीळा अलबेले किथी, पछी संतने शिखज दिधी। कहे नाथ सुणो सहु जन, तमे रहेज्यो मनमां मगन॥१॥ वळी करशुं उत्सव अमे, मिळ आवज्यो मुनियो तमे। जाओ फरी करो हरिवात, रहेज्यो राजि तमे रळियात ॥२॥ घणाघणा उत्सव करीने, दइश सुख हुं फरिफरिने । अति तमने लडाववा लाड, मारा मनमां छे घणी चाड ॥३॥ करुं तमने पूरणकाम, एम बोलिया सुंदर इयाम । संत सांभळी बालानी वाणी, चाल्या आनंद उरमां आणी 🖂 । कैंक गयाछे गुजरदेश, कैंके कर्यों कच्छे प्रवेश । वःगड सोरठ वालाके वळी, गइ मारु देशमां मंडळी ।।५।। कैक पोत्याछे पूरवमांय, करवा वात प्रभुजिनी त्यांय । एम सर्वे देशे संत गथा, जेने राख्या ते पामळे रह्या ॥६॥ एम आनंदमां सहु संत, करे लीळानी वातो अत्यंत । चिंतवे नित्य चरित्र चित्ते, करे परस्पर वातो प्रीते । धा तेणे आनंद अंगे न माय, रात्य दिवस राजिये जाय । करे बात प्रश्वनी विस्तारी, सुणे परस्पर नरनारी ।।८।। साची वात श्रवणे सांमळी, थाय सत्संगी क्रसंगी टळी । आपे ज्ञानदान एम संत, फरे जममां तारवा जंत ॥९॥ जियांजियां म्रुनिजन फरे, तियां पृथिवी पावन करे । एवा संत जन सुखकारी, अतिपवित्र परउपकारी ॥१०॥ जेने एक हरिनी छे आश, सर्वे जक्तथी रहेछे उदास। जेने पूरण-ब्रह्मशुं श्रीत, अन्य वस्तु न चिंतवे चित्त ॥११॥ एवा संत सह शिरोमणि, कहीए मोटप्य शुं एनी घणी । परमारथ अर्थे छे २० भ०चिं०

फरवुं, बच्चे जीवनुं कल्याण करवुं ॥१२॥ सुखदायक सहु जनना, अतिउदार मोटा मनना । एवा संत अत्यंत उदार, तेणे कर्योछे एम विचार ॥१३॥ वरति वसंतक्षतु रूपाळी, आव्यां वन नाव्या वनमाळी । आव्या अंव कदंच अपार, केशु केशरनी नहि पार ॥१४॥ आञ्यां चंपा चमेलीए फुल, फुल्या गुलाब गेहेरा अप्रुल । फुली सुंदर फुले सेवती, बिजां बनदेलि फुली अति ॥१५॥ आव्या तरु ते भार अढार, केम नाविया धर्मकुमार । एम कहीने थया उदास, अतिदले दलगीर दास ॥१६॥ कोइ गदगद वाणीए बोले, कोइ आतुर,अंतरे डोले। कोइने अख्यां नयणे नीर, सहु अंतरे पाम्या अधीर ॥१७॥ जळ विना जेम अकळाय मीन, स्वीत विना जेम चातक दीन । मेघ विना जेम अकळाय मोर, चंद्र भिना अकळाय चकोर ॥१८॥ एम अति अकळाणा जन, पछी करवा बेठा भजन । धारी मूरति अंतरमांय, जपे नारायणने जिभाय ।।१९।। एम बेठाछे घडी बेचार, थयां शुक्रन शुभ तेवार । केनी भुजा फरकी जमणी, केनी फरकी आंख्य नमणी।।२०।। केनी फरकी छे पंगनी पेनी, कहे परस्पर बात तेनी । करतां वात ते शकुनतणी, आबी त्यां वालानी वधामणी ॥२१॥ कहे अमे गढडेथी आच्या, सर्वे मुनिने तियां तेडाच्या। एवं संते श्रवणे सांभळी, चाली गामोगामथी मंडळी ।।२२।। आव्या संत प्रश्च-जिने पास, आपे उठिमळ्या अविनाश। अति हेते हसिने बोलाव्या, कहे नाथ संत भले आव्या ॥२३॥ आज क्यांथकी आविया चाली, करो भिक्षा कहे कर झाली। सुंदर रसोइ करीछे सारी, शक पाक ताजां छे तयारी ॥२४॥ पछी बेठी संतनी पंगति, आपे पीरसे आनंदे अति । नित्य नवी रसोयो करावे, जोरेजोरे

जमाडी हरावे ॥२५॥ अतिआनंदमां अलवेली, दिये छाकमछोळ छिबलो । नाना करतां भरिदिये भाणुं, ए समानी शोभा शुं वसाणुं ॥२६॥ शिशे शोमेछे सोनेरी रेटो, केड्ये कश्योछे कसुंबी फेंटो। पहेरी सुथणी सुंदर शोमे, जोइ नाडी रुडी मन लोमे ॥२७॥ गळे पहेर्या गुलावना हार, तोरा लेके ने बेके अपार । कोटे शोभे कनकनी माळा, करमां कनकवडां रूपाळा ॥२८॥ हाथे मुद्रिकामांय छे मणि, तेनी झगमगे जीत्य घणी। करे लटकां ने लाडवा हाथ, जमे जन जमाडेछे नाथ ॥२९॥ वळी करे अलौकिक वान, सुणी संत थाय रिळयात। एम वीति गया दश दिन, आव्या बोटादना हरिजन ॥३०॥ आवी लाग्या प्रभुजिने 'पाय, अतिहरषे भर्या मनमांय। कहे आविए अमारे गाम, हरि पुरीए सहुनी हाँम ॥३१॥ सर्वे जोइ रहा जन वाट, वाला तमारां दर्शनमाट। सर्वे संतसहित पधारो, हरिजनने हर्ष वधारो ॥३२॥ सर्वे करी मुक्योछे समाज, तमारे प्रतापे महा-राज । एवं सुणी राजि हरि थया, सारुं आवशुं अमे सहु तियां ॥३३॥ पछी ज्यामळियो सज थइ, चाल्या संगे सखा संत लइ। शोभे श्रीहरि घोडानी घटे, आवी उत्तर्या तळाव तटे ॥३४॥ देशदेशना आव्याता दास, तेपण उत्तरिया आसपास। पछी उठिया दीनदयाळ, सर्वे संघनी लेवा संभाळ ॥३५॥ फर्या उतारेउतारे नाथ, कहे सुखिया छो सहु साथ। कांइ जोइए ते मगावी लेज्यो, खरचि नोय तो अमने कहेंज्यो ॥३६॥ एम पुछियुं सहु दासने, पछी अलबेलो आच्या आसने। गाडा उपर ढोलियो ढाळी, तियां पोढ्या पोत्ये वनमाळी ॥३७॥ सतसंगि ने सरवे संत, रह्या रात्य मेळा भगवंत । अतिआनंदमां गइ रेण, पछी जागिया कमळनेण

॥३८॥ तर्त मगाव्यो वाजी तेवार, तेपर नाथ थया असवार । जोइ सीमने वाडी सघळी, पछी नाहिने आविया वळी ॥३९॥ आवी गाममां दर्शन दिधां, सर्वे जन कृतारथ किथां। पछी सुंदर करी रसोइ, जम्या नाथ जनभाव जोइ॥४०॥ पछी जमा-डिया मर्वे संत, करी मनवार आपे अत्यंत । पछी पधारिया पुरबार। आव्यां दर्शने सहु नरनार ५४१॥ अतिआनंदमां वीत्यो दन, करी आरती जम्या जीवन । पछी गवैये गावणुं लीधुं, गाइ जीवत सुफळ कीधुं ॥४२॥ बहुवार दिधां दरशन, पछी गाममां आव्या जीवन । तियां पोढिया प्राणआधार, सुखआनंदे थयुं सन्नार ॥४३॥ पछी घोडे चड्या गिरिधारी, आव्या संघ-मांहि सुखकारी। पछी मर्वे जन लड् साथ, आव्या गाममांहि पोत्ये नाथ ॥४४॥ शहेर बजारे संत न माय, उडे गुलाल होळी रमाय । वाजे ढोल ददांमां सरणाइ, जय शब्दे रह्यो नभ छाइ 118411 एम रंगे रम्या हरि होळी, संगे लइ मुनिजन टोळी 1 पछी नाहिने आविया नाथ, आव्या सर्वे संतजन साथ ॥४६॥ आवी कर्यों प्रभुए भोजन, पछी जमाडिया सर्वे जन । त्यांथी आविया दरबारमांय, हतो मंडप चोतरो त्यांय ॥४७॥ तियां बेठा राजा अधिराज, आच्या मछ त्यां रमवा काज । रमी मछ ने मजरो किथो, आपी रुपैया शिरपात्र दिथो ॥४८॥ पछी संतने तेडाच्या नाथे, आप्या प्रसादी मोदक हाथे। पछी संतने शिखज दिधी, एवी लीळा बोटादमां कीधी ॥४९॥ लिघो लाबो अलौकिक जने, फागणशुदी पुन्यमने दने । तेदि उत्सव कर्यो महाराजे, संतने सुख आपवा काजे ॥५०॥ सोमलो भक्त वळी हमीर, भगा हीरा भगत सुधीर । एह आदि हरिजन जेह, तेणे कराव्यो उत्सव तेह ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजा-नंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये हरिचरित्रे महाराजे बोटादमां फुलदोलनो उत्सव कर्यो एनामे एका शिमुं प्रकरणम् ॥८१॥

राग सामेरी-पछी पधार्या गढडे, हरिजनने हेते हरि । रही दिन थोडाघणा, अमदाबाद जावा इच्छा करी ॥१। पछी प्रभुजि पधारिया, श्रीनगर सुंदर ध्याम । देवा दरशन दासने, पुरवा हैयानी हाम।।२।। दास वहु दिवसना, दरशन विना दुःखी हता । तेने ते सुख आपवा, आच्या सखा समीपे शोभता ।।३॥ पुरपति राजि अति, नरपति आवी निमयो । दाइयां कुमति कुमो-दनी, जाणी हरिअर्क उदय थयो ॥४॥ हरिजन मन हुउक्यां, जेम फ़ुल्यां कमळनां वन । नाथ नयणे निरखी, अति मन थयां छे मगन ॥५॥ पछी गातेवाते गाममां, प्रभुने पधराविया । अविद्या जनने उपरे, जित्यना डंका वजाविया ॥६॥ पांच दिवस पुरमां, आपे रह्या अलबेल । पछी पोत्ये पधारिया, संगे ससा लइ रंगरेल ॥७॥ केक चढ्यां चोतरे, केक चड्यां अगाशी अटा-रिये। जुवे झरुखा गोखमां, कड्क बेठां नारिये ॥८॥ पडे श्रोंश पडघमतणी, घणी भिड्य चौटा चोकमां । बाल जोबन चुद्ध वनिता, बोले जयजय लोकमां ॥९॥ नरनारीये नाथ निरस्ती, लावो लिधो लोचननो । मीटे मनोहर मूरति, जोइ पुर्यो मनो-रथ मननो ॥१०॥ दासने दरशन देता, धीरेधीरे हाले हरि। समृह जन सनेह्युं, नाथ निर्खे नयणां भरी ॥११॥ पछी पोत्ये पंचारिया, प्रभुजि पुरवारणे । अनेक जन जीवन जोह, कळी जाय वालाने वारणे ॥१२॥ एम दह दर्शन दासने, चारया दीन-

दयाळ । जनमन रंजन करवा, हरि आविया वेलाल्य ॥१३॥ अतिउत्सव करी जने, प्रभु घेरे पधराविया । धृप दीप करी आरती, भावे भोजनथाळ धराविया।।१४॥ रसेभरी रसोइ करी, पछी परमहंस जमाडिया। आम्रफळ हरि हाथे आपी, मुनि मोद पमाडिया ।।१५।। पछी त्यांथी पधारिया, आवी कणभे रजनी रह्मा । हरिपुर प्रसाद लइ, मेमदावादे आविया ॥१६॥ दिशां दर्शन दासने, दयाळे दिन दोय तियां । संतने सुख आपता, पछी वाल्यम वडथल गया ॥१७॥ जनमन मगन थया, नाथ नयणे निरखी। गातांवातां गाममां, पधराविया हैये हरखी।।१८॥ तेने ध्रवन भाव करी, हरि हेते पधारिया। दासने दर्शन दह, नवला ते नेह वधारिया ॥१९॥ जने सुंदर भोजन करावी, जमाड्या जीवनने । पछी सर्वे संतने, कराव्यां भोजनने ॥२०॥ शाक पाक सोयामणां, आम्रफळ उपर फरे । हिर मोदक लड हाथे, पीरसतां मनुवार करे ॥२१॥ एम सुख अतिघणुं, आपी सुंदरस्याम । पछी प्रभुजि पथारिया, आविया डहुसर गाम ॥२२॥ दीघां दरशन दासने, जीवन भवन तेने जह । नरनारी नाथ निरस्वी, कृतारथ थयां कइ ॥२३॥ एम आनंद आपता, उम-रेठमां हरि आविया । बाळ जोवन युद्धना, मनमां ते घणुं भाविया ॥२४॥ समैये वळी सहु मळी, आवियां नर ने नार। भाव जोइ भवन तेने, पधारिया मोरार ॥२५॥ शहरमां संघ साम्यो नहि, पछी उतर्या पुरबारणे । उंचे आसने बेठा वालो, देवा दरशन कारणे ।।२६॥ पछी हरिजने हाथ जोडी, वालाने विनति करी। भोजन करवा घेर अमारे, आविये आपे हरि ॥२७॥ रसोह रस रोटलीनी, करीछे तमकारणे। जमी तमे जन जमाडो,

आज अमारे वारणे ॥२८॥ पछी प्रभुजि पधारिया, निजजन हेते जम्या हरि। संतने भोजन करात्री, चालिया त्यांथी फरी ॥२९॥ वाटमां जे गाम आवे, तेमां वसे वरण अहार । सह आवे दर्शने, भावे भर्यो नरनार ॥३०॥ त्यांथी शाम खे रयाम आवी, रह्या हरि त्यां रात्य । हेते करी हरिजनने, बहु बहु करी त्यां वात ॥३१॥ एम आनंद आपता, आच्या आणंद गाम । अस्तारी संतसहित हरि, भक्तवत्सळ सुखधाम ॥३२॥ पुरवासी हरिजन सरवे, सामां आव्यां नरनार । दर्शन करी महाराजनां, आनंद पाम्यां अपार ॥३३॥ ढोल नगारां वजाविने, घेर पंघराव्या घनश्याम । जमाड्यां भोजन भावतां, पूरण कर्यो निजकाम ॥३४॥ केशर चंदन भाव करी, पूजिया पूरणब्रह्म। पुरुषोत्तम अक्षरपति, कोइ न जाणे मर्म ॥३५॥ भाग्यवंते हरि पूजिया, अभागी रहां नर वाम । त्यांथी संत हरि हालिया, निर्मानी सन अभिराम ॥३६॥ निशावास वस्ताल रही, गाम गाने गोविंद आविया । हेत जोइ हरिजननां, एक रजनी त्यां रह्या ॥३७॥ बीजे दिन बोचासणे, आवीया अविनाश । त्यां निर्मळ जन नाथनो, तेनुं नाम काशीदास ॥३८॥ तियां प्रभुजि पधारिया, दया करी दीनदयाळ । हरिजन मन हरिख वळी, पूजिया ततकाळ ॥३९॥ धूप दीप करी आरती, अतिभावे भूधर जमाडिया। परुंग सुंदर पाथरी, पळ एक प्रभुने पोढाडिया ॥४०॥ पछी ग्रुनिजनने, जमाडवा पंगत्य करी। परमहंसने पीरसवा, त्यां आविया आपे हरि ॥४१॥ संत जमाडी श्यामळे, पछी सर्वेने शिख करी। पोते पधार्या पांचाळमां, एम आपी सुख श्रीहरि ॥४२॥ पवित्र करवा पृथिवी, एम फरे सुंदरक्याम । जेजे जने निरिवया, ते थयां

पूरणकाम ॥४३॥ धन्यधन्य ए देश गामने, धन्य सर सरिता वन । धन्य ए वापी कूपने, जेनां जळ पिवे जीवन ॥४४॥ धन्य भवन ए जननां, ज्यां प्रभुनां पगलां थयां । सत्य वैकुंठ सरखां, वळी केम करी जाय कहाां ॥४५॥ जियांजियां हरि विचर्या, तियां पापी कोइ प्राण तजे। ते जाय नहि जमपुरमां, रहे नहि पाप रजे ।।४६।। एवी ए मोटी वारता, प्राकृत नर प्रिछे नइ । समझे संतिशिरोमणि, जेनी अप्राकृत दृष्टि थइ।।४७।। नित्ये चरित्र नाथनां, जे सांभळशे श्रद्धा करी। ते नर काळनी जाळमांइ, पडे नहि पाछो फरी ॥४८॥ पतितने पावन करवा, चरित्र छे भग-वाननां । सांभळतां सद्य शुद्ध थाय, जाय पाप ते जननां ॥४९॥ वारमवार विस्तार करी, गाशे गुण गोविंदना। ते जन सर्व दुःख वामग्ने, पामशे दन आनंदना ॥५०॥ हरिजन मन हुलशी, सुणी चरित्र सुधारस सार । अज्ञानिने अभाव थाय, लागे सुमल खार ॥५१॥ एम सहुने सुख आप्यां, ज्येठशुदी नवमीने दने। एटली लीळा करी हरि, आच्या उत्तमने भ्रुवने ॥५२॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रे श्रीहरि गढडे पधार्या एनामे ब्याशिमुं त्रकरणम् ॥८२॥

चोपाइ-रह्या गढडे चातुरमास, पछी एम बोल्या अवि-नाश । कोइ नर आपे अस धन, कोइ वसुधा वारि वसन ॥१॥ कोइ आपे गज बाज गाय, बिजां बहु दान ने कहेवाय । सर्वे दानमां अधिक जेह, सहु मळी बळी शोधो तेह ॥२॥ कळता बोलिया संत सुजाण, सांभळो मारा जीवनप्राण। अभयदान अधिक सहुथी, एनी बरोबर बीजुं नथी ॥२॥ तेतो दान तमथी देवाय,

तमने निरखे ते निर्भय थाय । एवी सांभळी संतनी वात, वालो कहे चालो गुजरात ॥४॥ पछी काठिये सज्यां केकाण, मांड्यां घणमुले घोडे पलाण । हांहां करतां गुजरधर आव्या, कर्जिसण जइ संत बोलाच्या ॥५॥ दिन दोय रह्या एह ठाम, पछी वालो आव्या बहु गाम । पुरबहार उतरिया नाथ, सर्वे संत हता पोता-साथ ॥६॥ कीधां प्रश्न उत्तर प्रसंग, बोल्या जेनां जेवां हतां अंग। त्यांथी चालिया सुंदर क्याम, आव्या ओलेथी आद्रेज गाम ॥७॥ तियां अन्नकोट उत्सव करी, आपी सुख चाल्या त्यांथी हरि । भक्त एक रहे कोलबड़े, तेह गामे उत्तरिया वडे ।।८॥ तेने घेर जम्या जइ नाथ, आप्या मुनिने मौदक हाथ। करे लीळा जन मनभावे, त्यांथी अलबेलो आव्या उनावे ॥९॥ तियां भक्त रुडो रामदास, तेने घेर गया अविनाश। नरनारी अपार हरख्यां, थयां राजि नाथजि निरख्या ॥१०॥ धूव दीप उतारी आरती, जुगते जमाड्या प्राणपति । विजी बहुरीत्ये करी रसोइ, जम्या नाथ हाथे संत सोइ ।।११।। जम्या जन हुवो जेजेकार, रहि रात्य त्यां चाल्या मोरार । एक गाम नामे छे नादरी, तियां पधारिया पोते हरि ॥१२॥ त्यां सुंदर कराव्योतो थाळ, जम्या सखासहित द्याळ। त्यांथी माणसे आव्या महाराज, आच्या बहु लोक दर्शन काज ॥१३॥ सहु जनतणे मन भाव्या, राजासहित सामैये आव्या । प्रश्रु उत्तरिया पुरवार, करे दर्शन सहु नरनार ॥१४॥ सुंदर मूरति सहुने भावे, प्रेमे पुष्पना हार पहेरावे । दिये दर्शन दीनद्याळ, तियां कराच्यां भोजन थाळ ।।१५॥ जम्या जीवन ने सखा साथ, पछी त्यांथी पधारीया नाथ। आवे मारगमां गाम घणां, करे दर्शन लोक तेतणां ॥१६॥ पछी

बाल्यमो आञ्या विहार, तियां रजनी रह्या मोरार। वाले वेदनो भेद देखाड्यो, हिंसा अहिंसा संशय उखाड्यो ॥१७॥ पछी त्यांथी पंधारिया क्याम, आव्या गिरिधर गेरिते गाम । तियां भक्त वसे मावसार, अतिनिर्मळ दले उदार ॥१८॥ तेणे पवित्र पाक करावी, आप्या मोदक मुनिने आवी। कइंक जम्या त्यां जग आधार, पछी घोडे थया असवार ॥१९॥ त्यांथी आव्या बाम-णवे नाथ, करी रसोइ पोताने हाथ। सखा सहित जमाडिया संत, पछी पोते जम्या भगवंत ॥२०॥ रही रात्य नाथ त्यांथी चाल्या, चाल्या अश्व रहे नहि झाल्या । वाजमां वडनगर आच्या, भावे सुबो ते सामैयुं लाव्या ॥२१॥ वाजां वाजता गाममां गया, नरनारीने दर्शन थयां । बाळ जोबन ने बृद्ध जेह, निर्धि थाय कृतारथ तेह ।।२२।। चाल्या शहेर मध्ये सुखकारी, देवा दर्शन सहने मोरारी। आबी उतर्या सरोबरपाळ, कराव्यां भोजन त्यां रसाळ ॥२३॥ तियां भावे जम्या भगवंत, पछी जमाडिया सर्वे संत । तियां रह्या निशा एक नाथ, पछी चाल्या इयाम सखासाथ ॥२४॥ त्यांथी आव्या विशनग्र बळी, आव्या लोक सामैये सहु मळी । गातांवातां पधराच्या घेर, करी सेवा सुंदर सारी पेर ॥२५॥ बहुजनने दर्शन दीधां, जने जोइ सुफळ द्रग किधां। पछी पधार्यो जनने भोवन, भावे कराव्यां तेणे भोजन ॥२६॥ पछी सरवे संत बोलाव्या, पिरक्या पोते मोदक मनभाव्या। पछी शहेर सर्वेमांहि फर्या, बहु जीव कुतारथ कर्या ॥२७॥ पछी पथार्या शिवने मंद्र, दिधां दर्शन सुखसमुद्र । मोटेमोटे जोड्या आवी हाथ, अमे छीए जो तमारा नाथ ।।२८।। सर्वे जाणे एम मनमांय, खामी विना सुख नथी क्यांय। करी दर्शन प्रसन्न थाय,

अति हैयामां हर्ष न माय ॥२९॥ त्यांथी चाल्या पछी अलबेलो, देता दर्शन छेल छिबलो। वाटे आवीयुं एक तळाव, तेमां नाह्या मनोहर माव ॥३०॥ त्यांथी श्वामिकयो सञ्ज थइ, आव्या गिरघारी गाम वसइ। आपे जमी जमाडिया दास, पछी त्यांथी चाल्या अविनाश ॥३१॥ मेउमांहि भक्त भावसार, नाम भूषण प्रेमी अपार । तेने घेर पधारिया नाथ, सर्वे संत हता हरिसाथ ॥३२॥ अतिहेते सनमुख आवी, करी पूजा घेरे पधरावी । सुंदर भोजने कराव्यो थाळ, घणे हेते जमाड्या दयाळ ॥३३॥ मुनि-काजे मालपुवा कीधा, हरिहाथे पीरसवा दीधा। जेमजेम जमे बहु संत, तेम भूषण राजि अत्यंत ॥३४॥ ज्याम सारा शोभे मुनिमांय, आव्या दर्शने बहु लोक त्यांय। दइ दर्शनदाननी मोज, पछी नाथ आव्या लांगणोज ॥३५॥ त्यां हरिजनतुं हेत जोइ, तेने भुवन जम्या रसोइ । त्यांथी आव्या डांगरवे दयाळ, संगे समृह मुनिमराळ॥३६॥ एम सतसंगमांहि फर्या, कैक जीवने निहाल कर्या । जेजे वाटमां आवेछे गाम, तेते जननां सारेछे काम ॥३७॥ आव्या अडाळज एह फेरे, रही रात्य पधार्या मोटेरे। नाह्या साभरमतीमां नाथ, सर्वे सखा नाह्या हरिसाथ ॥३८॥ पछी श्रीनगरे आच्या इयाम, रह्या नाथ रात्य एह ठाम। त्यांथी जेतलपुर पधार्या, जनने मन मोद वधार्या ॥३९॥ तियां रह्या कांइक कृपाळ, पछी चालिया दीनदयाळ । बाटे मोडिने तस्कर मान, आव्या वैराटे श्रीमगवान ॥४०॥ तियां संतने शिखज दिधी, पिपलि जावा आगन्या कीधी। तियां मक्त रहे दादोभाइ, करवा उत्सव छे मनमांइ॥४१॥ रहेज्यो राखे तियांलगी तमे, एने कह्यंतुं आवशुं अमे । तेतो अमथी नहि जवाय, कहेड्यो राजि

रहेज्यो मनमांय ॥४२॥ एम कहीने चालिया नाथ, सखा सांख्ययोगी लइ साथ। हरि हालतां जन दुःखाणां, अति हेतमां हैयां भराणां ॥४३॥ पोते गया गढडे महाराज, करी अनेक जीवनां काज। दर्श स्पर्श कर्या जेजे जने, ते न जाय कृतांत भवने ॥४४॥ एवं आच्या अभयदान दइ, जे समान बीजं दान नइ। एवी कर्यो मोटो उपकार, जेमां अनेक जननी उद्धार ॥४५॥ कर्या पावन दर्शने जन, कार्तिकवदी ते बीजने दन। तेदी फरी हरि गुजरात, करी लीळा कही तेनी वात ॥४६॥ इति श्रीमदेकां-तिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्त-चिंतामणिमध्ये नारायणचरित्रे आदेजे अस्रकोटनो उत्सव कर्यो एनामे त्रियाशिमुं प्रकरणम् ॥८३॥

रागसामेरी-पछी गाम गढडे, आविया ते अलबेल। करे लीळा ललितभात्ये, रसियोजि रंगरेल ॥१॥ दिये आनंद दासने, अतिहास विलास हरि करी। सुंदर मनोहर मूरति, जन निरखे नयणां भरी ॥२॥ नात्रा जाय नित्ये नीरमां, सखा सर्वे संग लड् । संत संगे क्यामळो, अति रंगे रमे राजि थइ।।३॥ उछाळे जळ अतिघणां, सामसामा सखा मळी। एककोरे अलबेली थइ, वधारे रमत्य वळी ॥४॥ करे क्रीडा जळमांहि, सखा संगे क्यामरे। अनेक जीव जीवन जोइ, थाय पूरणकामरे ॥५॥ नाहि निसर्या नाथजि, जळमांहिथी वळी वहार । वस्त्र पहेरी वाल्यमो, थया अश्व उपर असवार ॥६॥ आत्री बेठा ओशरिये, सुंदर ढळावी ढोलियो । शोभे समूह संतनो, तेतो नव्य जाय बोलियो ॥७॥ प्रश्न उत्तर अतिभणा, मांहोमांहि मळी करे। पछी प्रश्न लड् पोते, अलबेलोजि ओचरे ॥८॥ करे अलैकिक उत्तर आपे, सुण्यो नीय

केदि श्रवणे । सांभळी जन मगन थाय, धन्यधन्य सहु भणे।।९।। नित्य नवी करे वारता, वळी नाय नित्य नीरमां। श्वेत वस्त्र सुम-नहारे, शोभे घणुं शरीरमां ॥१०॥ एम लीळा बहु करता, श्रावण भाद्र वहीगया। आव्यो आसी आनंदकारी, दिवाळीना दिन थया ॥११॥ कर्यो उत्सव अन्नकोटनो, संत सहु त्यां आविया। विविधभात्ये भोजन करी, नाथे हाथे जमाविया ॥१२॥ पुरी माळा त्यां दीपनी, ते अतिशे शोभे घणी। श्वेतद्वीप सरिख दिसे, शोमा ए सदनतापी ॥१३॥ सुंदर सिंहासन उपरे, अल-बेलो बेठा वळी। धूप दीप ने आरती, मुनिजने करी मळी॥१४॥ जयजय शब्दे करी, सहु नरनारी ओचरे। एवी अलाकिक लीळा, जनकारणे जीवन करे ।।१५॥ पछी आपी आगन्या, मुनि जाओ तमे गुजरात । अमेपण त्यां आवशुं, तमे सत्य मानज्यो वात ॥१६॥ संत सर्वे सधाविया, हरिम्रति धारी उर । ते केड्ये आव्यो कळजुगी, एक अजब गेबी असुर ॥१७॥ कपटबुद्धि मति उंधी, सुधी वात समझे नहीं । पूरण पापी मांससुरापी, नकटी नायेंने संगे सहि ।।१८।। एना कुळना कइक विजा, जे गाममां गेव हता । तेपण तेने जइमळ्या, छेडो नाखी थया छता ॥१९॥ गेबिये गैबनां डिंग दिधां, ने साचां मान्यां सांभळी। खामी जाशे ज्यां सबकी, तियां केड्ये जाइश वळी ॥२०॥ जो जाय ए जळमां, वळी नभ पयाले परवरे। केडेकेडे हुं जाउं तियां, आज ए नव्य उगरे ॥२१॥ आपे परचो अमने, दिये डेरी उपाडि आ तटे । एम मूरख आगळे, दिधां डिंग दोवटे ॥२२॥ बोले बे कांटा बोरडी, एक वांको ने सुधी सहि। पोथी पुराण पार वातो, बापला समझो नहि ॥२३॥ बहु दिन चर्यो ए बोरडिये, आज मळया

शिंगाळा खामीने। आजतो ए उगरे जो, मळे मने करभामीने ।।२४।। इलां करीने हालो हवे, शुं रह्याछो जोइने । बंधुक एनी बंघ करुं, करवाल न कापे कोइने ॥२५॥ सतसंगी एवं सांभळी, सद्घ सामा चालिया सजी । पापी पाछा भागिया, आ वात म्रुवानी निपजी ॥२६॥ अन्यजन आडां फरी, सतसंगी पाछा वाळिया । असुरे एम जाणियुं जे, थया अमारा पाळिया ॥२७॥ पछी उतारे 'एकांत किथी, भागति रात्ये भागियो । जो सवारे **धरज उगरोतो, जरुर जाणे जीव गयो ॥२८॥ एम** असुरनुं विघन टाळी, ज्यामळियोजि सञ्ज थया। दरशन देवा दामने, दयाळे करी दया ।।२९।। पछी प्रभुजि पथारिया, जेतलपुरे जीवन । तियां संत तेडाविया, सहु आविया मुनिजन ॥३०॥ अमदावादथी आविया, मोटेरा मुक्तानंदिज । सामा जइ श्रीहरिये, आपियुं आनंदजि ।।३१।। दिघां दरशन दासने, संत निरखी सुखिया थया। दिवस दोय तियां रही, पछी क्याम श्रीनगर गया॥३२॥ हेत जोइ हरिजननां, भुवन तेने पधारिया । रेणि रही सुख दइ, नवला नेह वधारिया ॥३३॥ पछी दिवस वळते, जोयां डेरां देवने । अनंत जीव ओधारवा, ते केम तजे टेवने ।।३४॥ शहेर फरी महेर करी, दिधां ते द्रशन दान । अभय करी आव्या हरि, भयभंजन भगवान ॥३५॥ त्यांथी पाछा पधारिया, जेतलपुरने मांय । संतने सुख आपवा, रह्या दन दोय त्यांय ।।३६॥ पछी त्यांथी आविया, मोहन मेमदाबाद ! पुर बाहेर उतर्या, त्यां कयों ज्ञानसंवाद ॥३७॥ जनप्रत्ये जीवन कहे, जेने जेटलो सत-संग । तेने तेटला पापनो, थाय बाहेर भितर भंग ।।३८।। तमे जाणो अमे त्यागियुं, खान पान सुख संसार । शीत उष्ण सहि

शरीरे, भजिए छीए मोरार ॥३९॥ आग्ये मोटा अधिपति, जेनां अतिकोमळ अंग । एक तननी जतनमां, जन रहेता बहुबहु संग ॥४०॥ तेणेपण प्रभुकारणे, कर्या तन मन सुख त्याग । सद्यां कष्ट शरीरमां, धन्यधन्य तेनो वैराग्य ॥४१॥ एना जेटलुं आपणे, कांई त्याग्युं नथी तनथी। माटे संशय मुखदुःखनी, मेलिदेवी तनमनथी।।४२॥ अमे जोने आविया, तम कारणे तनधरी। मन-वाणी पहोचे नहि, रहे नेतिनेति निगम करी ॥४३॥ माटे अमारा दाखडा, साम्रुं जोज्यो सहु मळी। अन्य वासना अंतरे, कोइ राखशों मां कहु वळी ॥४४॥ नरने नारी नारीने नरनी, वळी पुत्रनी प्यास रहि । तो बहोळा पुत्र पुरुष मळशे, थाशे फजेति बहु सिह ।।४५॥ मारो मुकी आशरो, जे विषयसुखने वांछशे। ते सुख नहि पामे खपने, साम्रं पड्या दुःखमां पचशे ॥४६॥ एटली बात करी हरि, पछी पुरमां पधारिया । भोजन बहु भवन करी, जनमन मोद वधारिया।।४७॥ पछी जमाडि संतने, त्यांथी चालिया ततकाळ। देगामे दर्शन दइ, आव्या डमाणे दयाळ ॥४८॥ त्यां रात्य रही सुख दइ, रसोइ रुडी जम्या । पछी आवी वरताल्यमां, दिन सातसुधी खम्या।।४९॥ एक वृद्ध साधु विकार विना, नाथनी नजरे आवियो । प्रसम्न थइ पोते पछी, सुंदर स्वांग पहेरावियो ॥५०॥ बहु वात करी हरि, संतने सुखिया कर्या। अनेक जन जीवन जोइने, भवसागरनो भय तर्या ॥५१॥ पछी त्यांथी पधारिया, आविया बुधेज गाम । जेजे जने नाथ निरख्या, ते थया पूरणकाम ॥५२॥ त्यांथी हये चडी हरि, जम्या गीराड्ये गीरस घणां । हेत जोइ हरिजननुं, जमतां नव राखी मणा ॥५३॥ पछी पछमे पघारिया, त्यां रह्या हरि एक रात्य । त्यांथी तरत चालिया, पोते प्रभुजि परमात्य ॥५४॥ धन्य घोलेरा गाममां, वसे मक्त पुंजोभाइ एक । जैने सनेह घणो श्यामग्रं, अति उरमांहि विवेक ॥५५॥ तेने भवन मावग्रं, पधारिया पोते हरि । जनमन मगन थया, नाथ निरख्या नयणां भरी ॥५६॥ सुंदर भोजन व्यंजन कराव्यां, जमाडिया जीवनने । हेत जोइ हरिजननं, जम्या भावे तेना भोजनने ॥५७॥ आपी सुख अतिघणां, पछी आविया गढडे हरि । पोते प्रेमे पधारिया, मागश्ररग्रदी चोथे फरी ॥५८॥ इतिश्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीस-हजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्त्विते भक्तिचंवामिशिष्यं हरि-चरित्रे श्रीहरिए गडडे अन्नकोटनो उत्सव कर्यो एनामे चोराशिमुं प्रकरणम् ॥८४॥

सों दामने दर्शन दीधां, जननां मन मगन कीधां ॥१॥ बेठा वाल्यम आसन वाळी, जन सहु रह्या साम्रं भाळी। जेम चंदने जुवे चक्रोर, जेम मेधने जुवेछे मोर ॥२॥ एम सर्वे रह्या साम्रं जोइ, मीटे मटकुं न भरे कोइ। पछी बोलिया प्राणजी-वन, तमे छो सुखिया सहु जन ॥३॥ पछी बोलिया प्राणजी-वन, तमे छो सुखिया सहु जन ॥३॥ पछी सोदर भोजन करी, जनहेते जम्या तियां हरि ॥४॥ अतिहेते बोले वालो वळी, सर्वे राजि थाय ते सांभळी। देशदेशना दास संभारी, वखाणे तेने देव मुरारी ॥५॥ विजी वहुबहु करे वात, सुणी जन थाय रिलेया । एम करतां मास दोय थया, दिन दश तेउपर गया ॥६॥ त्यारे बोलिया जीवनप्राण, सुणो संत सरवे सुजाण। हति असुरनी जे उपाधि, ते आ समे शमिगइ बाधि ॥७॥ थयुं राज्य हवे

न्यायवाळं, सर्वे गरीव रांकने सुखाळं। हवे जोर जुलम न थाय, तम जेवा साधु न पीडाय ।।८।। माटे राखो प्रथमनी रीत, अति-सुंदर परम पुनित । एम कह्यं जनने महाराजे, तेवी रीत्य राखी मुनिराजे ॥९॥ पछी आव्योछे फागण मास, होळी रमवा थया हुलास । भाल मध्ये गाम मिछियाच्य, वसे भक्त तेने अतिभाव ।।१०।। तेणे हरिने तेडाच्या हेते, तियां पधार्या प्रभुजि प्रीते । सखासहित आव्या भगवान, दिधां दासने दर्शनदान ॥११॥ देशदेशना सत्संगी आव्या, तियां सर्वे मुनिने बोलाव्या। करवा उत्सव देवा दर्शन, अतिराजि छे प्राणजीवन॥१२॥ मिठी वाणीए सहुने बोलावे, वात वालानी सहुने भावे। वळी प्रश्न उत्तर तियां थाय, जन गुण गोविंदना गाय ॥१३॥ पछी आव्यो उत्सवनो दन, रमवा राजि जनशुं जीवन। थया अलबेलो अस-वार, संगे सखा हजारी हजार ॥१४॥ भरी फांट्यो ने फेंके गुलाल, चडी गरदी गगनमां लाल। रसवस थया सखा रंगे, रमतां रंग रसिया संगे ॥१५॥ वाजे वाजां विविधनां कइ, जेजेकार रह्यो तियां थइ। एम रमे रंगभिनो होळी, संगे लइ मुनिजन टोळी ॥१६॥ सहु जननी पुरीछे हाम, पछी नाह्या सरोवरमां स्याम । त्यांथी अलबेलो आव्या उतारे, थइ रुडी रसोइ तेवारे ॥१७॥ जम्या जीवन जन जमाड्या, सर्वे संतने मोद पमाड्या। जने बांध्यो हिंदोळो त्यां बार, हरि बेठा हिंदोळा मोझार ॥१८॥ पछी झुल्या हिंदोळे जीवन, सर्वे जनने कर्या मगन। पछी मेडीये बेठा महाराज, आव्या मछ त्यां रमवा काज ॥१९॥ दिठी जेठिनी रमत्य सारी, रिझी दिधो शिरपाव उतारी। एम लीळा करी अलबेले, दिधां दर्शन छेल छिबले ॥२०॥ करी लीळा त्यां २१ मर्श्विर

बहु जीवने, फागणशुदी पुन्यमने दने। तेदि लीळा करी मिछि-याव्ये, करावी फुइबाईये भावे ॥२१॥ पछी त्यांथी चाल्या तत-काळ, आव्या ददुके दीनदयाळ । तियां भक्त वसेछे भाविक, जेने आशरो खामिनो एक ॥२२॥ नेणे तेडी मुनिजन साथ, रुडी रसोये जमाड्या नाथ । पछी जमाडी संतनी मंडळी, करी सुंदर रसोइ गळी ॥२३॥ प्रभु पोते पीरसवा उठ्या, दास उपर दयाछ शुख्या । लइ लाइ करे मनुवार, जमाडी संत पमाध्या हार ।।२४।। एमं आपी सुख अतिषणां, कर्यां राजि मन जनतणां । पछी अलबेले आगन्या किथी, सर्वे संतने शीखज दिथी॥२५॥ पछी रह्या तियां एक रात्य, त्यांथी प्रभु पधार्या प्रभात्य । जोइ जनना मननो भाव, पाछा पधारिया मछियाव ॥२६॥ रह्या तियां पोते पंच दन, दिधां दया करी दरशन । पछी त्यांथी चाल्या ततकाळ, आव्या क्यामळो गाम शियाळ ॥२७॥ तियां भक्त बसे तुलाधार, रुडो जन ने मन उदार । तेने घेर उतर्या महाराज, कराच्यां भोजन नाथकाज ॥२८॥ त्यांथी जिम चाल्या अलंबेलो, रह्या रोझके छेल छविलो । त्यांथी चालिया सुंदरक्याम, आन्या गोविंद गढडे गाम ॥२९॥ सर्वे जन करे जेजेकार, धन्यधन्य ए थाय उचार । एवी फीरति काने मांभळी, सर्वे असुर उठ्याछे बळी ।।३०।। कहे असुर सरवे मळी, सतसंगीने नाखिये दळी । एम पापी मळी परियाण्या, देशदेशना असुर आण्या ।।३१।। मोटे दैत्ये मनशुबो करी, आव्या वहु बळे बंधुको भरी । सहु दिशेथी लिधाछे घेरी, खरा खेधकु साधुना वेरी ॥३२॥ मांहोमांहि बोले एम पापी, नाखो सत्संगी सहुने कापी। चोंपे चडाबी बंधुको हैये, बोलीया हरिना भक्त तैये ॥३३॥ करो घाव छं रह्या विचारी, पछी जुवो रमत्य अमारी। तैये असुरे बंधुको दागी, उडी आग्य ने डाढियो लागी ॥३४॥ पछी एवं जणाणुंछे एने, आज न मुके जीवता केने । पछी पापी पाछा पग भरी, गया काळां मोढां सह करी ॥३५॥ पड्या पापी पाछा पापवश, मास ज्येठशुदी चउदश । तेदि दुष्टे ए रच्योतो दगो, दगो अंते नोय केनो सगो।।३६॥ पापी पोताना पापमां गया, हरिभक्त ते निर्भय रह्मा । पछी त्यांथी सधाविया इयाम, आव्या नाथ कारीयाणी गाम ॥३७॥ रह्या दन दोचार ए ठाम, पछी आविया गढडे गाम । आव्या साधु रामदास काज, कर्यु रामदासे तन त्याज ।।३८॥ ज्येठवदी ते छठ्यने दन, तेदि त्याग्युंछे तेमणे तन । एह काजे रह्या एक रात, पाछा प्रभु पंघार्या प्रभात ॥३९॥ दिन दशपांच तियां रह्या, करी जित गढडे आविया । आवी तीरथ-वासीने काजे, बंधाव्युं सदावत महाराजे ॥४०॥ आपे अन जमे जन वहु, सुणी आवे अन्नारथी सहु । बांधी धर्मनी ध्वजा ते बहार, दिये अस बहु देदेकार ॥४१॥ बीजि जमे मुनिनी मंडळी, थाय आनंद उत्सव वळी । एम कर्तां वीत्युंछे चोमासुं, गयो भाद्र ने आवियो आसु ॥४२॥ पछी सुरतथी सत्संगी आव्या, प्रभुने काजे पोशाग लाव्या । लाव्या पाघ सुंदर शोभाळी, नामे अंकित अतिरूपाळी ॥४३॥ लाव्या वाघो सुंदर सुरवाळ, बहु प्रेमेशुं पूज्या दयाळ । थया राजि पोने महाराज, पहेर्यो वस्त्र जनहेत काज ॥४४॥ जेना सेवक आतमाराम, माने पोताने पूर-णकाम । तेना खामीने केम कहेवाय, जे अप्राकृत पूजाने चाय ॥४५॥ माटे जनना भावने जोइ, लिये पूजा प्रसम मन होइ। एम करतां आवी दिवाळी, पूरी दीपनी माळा रूपाळी ॥४६॥ तियां बेठा अलवेलो आवी, सुंदर म्राति सहुने भावी। जोइ जन थयाछे मगन, सहु कहे स्वामी धन्यधन्य ॥४७॥ पछी बहुमाते कयां भोजन, विधविधनां कर्या व्यंजन। धणे अन्ने अनकोट कीधो, बाले प्रेमेशुं प्रसाद लीधो ॥४८॥ पछी जमाङ्यो जननो साथ, प्रश्च पीरसे पोताने हाथ। दीधुं नाथे सुख लीधुं जने, कार्तिकशुदी एकमने दने ॥४९॥ तेदि आव्या ग्रुनि सहु मळी, देशोदेश जे हति मंडळी। करावियो उत्सव ए दने, जया ललिता उत्तम जने ॥५०॥ इति शीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तियामणिमध्ये हरिचरित्रे गढडे अन्नकोटनो उत्सव कर्यो एनामे पंचासिमुं प्रकरणम् ॥८५॥

राग सामेरी—पछी संतने आपी आगन्या, जाओ फरवा सहु मळी। ज्यारे अमे तेडाविये, त्यारे आवज्यो तमे वळी।।१।। अणतेड्ये नवा आवजुं, वळी लोपी अमारुं वचन। हेत होयतो हिरिनी मूरित, न विसारवी निशदन।।२।। आगन्या विना जे आवजुं, तेमां राजि अमे निह रित । वचनप्रमाणे जे वरते, तेउपरे प्रसन्न अति।।३।। शिश सरज शेष सिंधु, सर्वे रहे अनारा वचनमां। वारि वसुधा वहनि, महत डरे वळी मनमां।।४।। भव ब्रह्मा भुले निह, डरे वचनथी दिगपाळ। सुरासुर इंद्र अंबा, कंपे वचनथी, काळ।।५।। तेह सर्वे एम जाणे, जे वडा थया वचनथी। एवां वचन आजनां, तमे जाण्यां के जाण्यां नथी।।६॥ एवां वचन जो जाणो अमारां, तो पाळो सहु सुजाण। एवं नमाय अंतरे, तो केम मान्यं के कल्याण।।७।। माटे सहु सुजाण छो, वळी सांभळीछे बहु वारता। छोटां मोटां वचन अमारां, तेने रखे विसारता।।८।। एटली वात करी हिर, पछी शीख दीधी

संतने । मळी वळी मस्तान करी, मोकल्या गुणवंतने ॥९॥ नाथ निरिख हैये हरखी, लिख लीधा अंतरे। सुख लइ मगन थइ, चाल्या देशोवशांतरे ॥१०॥ जियांजियां आपी आगन्या, तियां-तियां संत महु गया । हेन जोइ हरिजननां, गीरधरिज गढडे रह्या ॥११॥ नाथ कहे सहु साथने, आज संत छे जे आपणा । सर्वे अंगे में शोधिया, कोड्रेशत्ये नथी मणा।।१२॥ ज्ञान भक्ति वैराग्य वळी, तपतणी सहु मूरति। शमदमादि साधने संपन्न, अंगे अध नहि रति ॥१३॥ एम वारमवार वालो, गाय ते गुण संतना । पछी कांइक दिन वीते, आव्या दिन वसंतना ॥१४॥ कर्यो उत्सव आनंदमां, वसंतपंचमीनो वळी। आसपासथी दास तेड्या, आव्या संत सहु मळी ॥१५॥ ताने गान गाय तियां, सर्वे मळी वळी संत । एम आनंदे उत्सव करतां, वीत्यो वळी वसंत ॥१६॥ पछी आवी हुतासनी, त्यां हरिजने रंग घोळिया। अलबेलाने उपरे, कळश केशरना ढोळिया ॥१७॥ लागी झडी त्यां रंगनी, उडे गुलाल अतिघणो। खुब तियां खेल मच्यो, हरि ने हरिजनतणों ।।१८॥ पछी नाथे हाथशुं, रंगे रंग्या सहु संतने । रसबस करी रसिये, आप्यां सुख अनंतने ॥१९॥ एम रमी हुतासनी, नाह्या पछी जह नीरमां। सखासंगे स्यामळो, शोभेछे शरीरमां ॥२०॥ पछी सुंदर भोजन करी, जने जमाख्या नाथने । जमी सुंदर स्थामळे, जमाड्या सखा साथने ॥२१॥ एम लीळा वाले करी, फागणशुदी पुन्यम दने। अचितव्यो उत्सव कर्यो, जनकारणे श्रीजीवने ॥२२॥ एक उत्सव शुं कहुं, नित्यनित्य उत्सव थायछे । नर नारी नियमधारी, गुण गोविं-दना गायछे ॥२३॥ नित्य संतसमृह जमे, ते गमे मनमां अति-

घणुं। जया ललिता जन जोडी, उदार मन उत्तमतणुं ॥२४॥ सदा समीपे क्यामने, बीते वरप ते पलसम । आनंदमां निशदिन वीते, तेनी न पड़े गम ॥२५॥ पछी सुंदर श्रावणे, आविछे जन्माएभी । हरिजन कहे मुनि तेडीये, कोइ वातनी नथी कमी ॥२६॥ पछी नाथजि बोलिया, सहु संत छे परदेशमां । आस-पाम जे आंहि छे, एतो आवेछे हमेशमां ॥२७॥ तेने पछी तेडाविया, उत्सव करवा आनंदमां । सखासंगे क्यामळो, राजि रमवा जनषृंदमां ॥२८॥ पापीए परीयाण कीधुं, तेमां विपत पाडवा बळी। उत्सवना दिन उपरे, आविया असुर मळी 🗄२९॥ आज एनो उत्सव छे, तेमां विघन पाडिये। मरिजाये जीवथी, पण भुंडुं एनुं देखाडिये ।।३०।। आश्रय एनो ओळखी, वळी करी हरिए वारता। आपणे आंहिथी चालिये, ए जाय पाछा जख-मारता ॥३१॥ पछी हरिजन हरि पोते, प्रभुजि पधारिया। असुरनुं नव उपज्युं, जेवा आव्या तेवा गया ॥३२॥ एह विघन टाळी बळी, अलबेलोजि आविया । पछी असकोट उपरे, संत सहने बोलाविया ॥३३॥ करी उत्सव अश्वकोटनो, पछी संतने क्रींख करी । नरनारायण देवनी, फेरवी कंकोतरी ॥३४॥ सत संगी सरवे मळी, श्रीनगर सहु आवज्यो । नरनारायण देवनी, मुरतियो पधरावज्यो ॥३५॥ अमेपण त्यां आवशुं, ते जरुर तमे जाणज्यो। सारो समैयो सुधारशुं, अंतरे प्रतीत आणज्यो।।३६॥ आच्या पछी अलबेलडो, महावदी दशमी दिने। तेदि प्रभुजि पधारिया, श्रीजेतलपुर पत्तने ॥३७॥ दीधां दर्शन दासने, हरि-जने निरख्या श्रीहरि । सतसंगी सुखिया थया, नाथ निहाळ्या नयणां भरी ॥३८॥ पछी दिवस वळते, श्रीनगरे स्थाम सधा- विया । जोइ उतरवा जायगा, पाछा जेतलपुरे आविया ॥३९॥ भक्त एक भाविक वसे, गाम असलाली तियां। तेने भवन भोजन करी, संघे सहित सरे गया ॥४०॥ कर्या उतारा कांकरीये, देशदेशना दास आविया । रथ वेल्य ने पालखी, उंट घोडां गाडलां लाविया ॥४१॥ वाळ जोबन षृद्ध वळी, मनुष्य त्यां मळ्यां घणां। कोइ केने नव्य ओळखे, आव्या दास बहु देशतणां ॥४२॥ उचे आसने बेसी वालो, दासने दर्शन दिये। सनमुख बेसे संत सहु, निरिखने सुख लिये ॥४३॥ नरपित राजि अति, ते प्रश्च-पासे आविया। पछी दिवस वळते, पोते प्रभुजि त्यां गया॥४४॥ अतिहेते आसन आपी, प्रेमेशुं पूजा करी । पछी जेजे पुछियुं, आप्यो उत्तर तेनो हरि ॥४५॥ राजा अतिराजि थइ, पछी प्रभुने पाय लागिया। एनुं कारज करी हरि, क्याम संघमां आविया ॥४६॥ पछी दिवस वळते, पधरावी छे मूरति । नरनारायण देव डेरे, बेठा बेउ बदरीपति ॥४७॥ अनेक जन त्यां आविया, निरखवा नरवीरने। दर्शन करी दयाळनां, पामिया सुख अचिरने ।।४८।। सुंदर मास सोयामणो, फागणशुदी हतीया तिथि। तेदिने स्थापन कर्युं, वालो आव्या विशाळावनथी ॥४९॥ विकट अद्रि बद्रि आडा, जइ न शके त्यां कोइ। अतिअगम ते सुगम थया, हरिजननां हेत जोइ॥५०॥ भाग्य मोटां ए भूमिनां, ज्यां पधार्या पोते धणी । नरनारी नाथ विना, पीडाति प्रजा घणी ॥५१॥ पछी उतारी आरती, नाथ राखज्यो नजर महेरनी। पछी दिवस वळते, करी चोराशी शहेरनी ॥५२॥ करी कारज एटलुं, श्यामिळयो सधाविया। घणग्रुले घोडे चडी, जयतल-पुरे जइ रह्या ॥५३॥ पछी त्यांथी पधारिया, दयाळ देश पांचाळ। करी कारज एटलुं, आव्या गढडे गोपाळ ॥५४॥ अनंत लीळा करी हरि, वळी अनंत लीळा करशे। एवी कोण कविराज छे, जे अथ इति ओचरशे॥५५॥ शेष महेश-शारदा, जेना गुण गातां थाके। नेतिनेति कहि रहे निगम, तेने कोण कही शके॥५६॥ गांधर्व गुनि नारदम्नी, गणपित अति गायछे। यह बळे जाय बोलवा, पण जेम छे तेम शुं कहेवायछे॥५७॥ माटे मनमां विचारियुं, एना गुण अपार छे। कहिकहिने कहे कवि, तोय हारवा निरधार छे॥५८॥ भूरज जळकण जे गणे, वनपात गातरोमावली। मेघझण्यकण किंव गणे, अनंतना उडुगण मळी॥५९॥ एतो सरवे अनंत छे, पण तेनो अंत कोइक लहे। एवा कोटिकोटि मळे, पण हरिगुण कोण कहे॥६०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तिचंतामणिमध्ये हरिचरित्रे नरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा करी एनामे ख्याशिमुं प्रकरणम्॥८६॥

पूर्वछायो-कहुं लीळा वळी लालनी, जे करी हरि अविनाश । संत समीपे राखिया, राजी थइ पट मास ।।१।। तेहमांहि जेजे कर्यु, ते कहुं सांभळज्यो जन । चरित्र सुणतां स्यामनां, वळी थाय परमपावन ।।२।। चोपाइ-घणुं रह्याछे गढडामांइ, करी हुतासनी वळी त्यांइ । उष्णऋतु वीति एह ठाम, बहु राजि छे सुंदरस्याम ।।३।। पछी आवियुं चातुरमासुं, दुष्टे दुष्टपणुं परकाशुं। पछी, त्यांथी चालिया मोरार, आव्या सारंगपुर मोझार ।।४।। साथे हतुं संतनुं मंडळ, महामुक्त अंतरे अमळ । तेसहित सारंगपुर आव्या, घणुं जनतणे मन भाव्या ।।५।। भक्त भाविक जीवो खाचर, हरि उत्तरिया तेने घर । सुंदर भोजन करी

रसाळ, जम्या नाथ जमाड्या मराळ ॥६॥ वळतो आव्यो अष्टमीनो दन, सर्वे व्रत रह्या मुनिजन । पछी पोते पधारिया बार, आव्या दर्शने बहु नरनार ॥७॥ सुंदर गांडले पलंग ढाळी, ते उपर बेठा वनमाळी। करे उत्तर प्रश्न त्यां अति, श्वेत वस्त्रे शोभेछे मुरति ।।। दिये दर्शन प्रसन्न घणुं, निर्खि हर्षे मन जनतणुं। एम अष्टमी उत्सव कीधो, जने लाव अलौकिक लीधो ॥९॥ जने राख्यांतां नियम जुजवां, उपवास अलुणां जमवां। तेने प्रभुजिये कह्यं कथी, तमे वालां छो मने आजर्था ॥१०॥ पछी परमहंसने काजे, करी रसोइ सुंदर साजे । पोते पीरशुं पंगत्यमांइ, करी वात ते हेतनी त्यांइ ॥११॥ सर्वे संते ए वात सांमळी, गया फरवा बांधी मंडळी । बीजा आव्या हता हरिजन, तेपण गया पोताने भवन ॥१२॥ पोते रह्या सारंगपुर गाम, संत गया कांइ रह्या ए ठाम । जोइ मरजी महाराज केरी, संत आवे जाय वारि-फेरी ॥१३॥ वीति गयो तियां दोढ मास, नित्य दर्शन करतां दास। कर्यो समैयो सारो मोहने, आवणवदी अष्टमीने दने ॥१४॥ पछी पधार्या गढंड नाथ, संत लीधाछे सरवे साथ। रह्या दन दश एह ठामे, पछी आव्या कारियाणी गामे ॥१५॥ सुणी सत-संगी सहु आच्या, पाये लागी घेरे पधराच्या। आपी आसन करावी रसोइ, जम्या हरि भाव तेनो जोइ।।१६।। पछी जमा-डिया मुनिजन, एम आनंदे वीत्यो ए दन। नित्य नाथ दिये दरशन, थाय उत्तर ने परशन ॥१७॥ एम करतां वीत्या कांइ दन, बोल्या प्रभुजि थइ प्रसन्न । आसुना दिन केटला गया, क्यारे आवशे दशमी विजया ॥१८॥ त्यारे बोलिया वसतो खाचर, छे नजिक कही जोड्या कर । नाथ मागुंछुं एक वचन,

आपो आगन्या थइ प्रमन्न ॥१९॥ करो उत्सव दशरातणो, नेडो संततो हुं राजी घणो। एवं सुणिने बोलिया नाथ, सारुं तेडावो संतनो माथ ॥२०॥ पछी संत आच्या महु मळी, हति देशोदेश ज मंडळी। आबी लाग्या प्रमुजिने पाय, निर्खी हर्ष हैयामां न माय ।।२१।। पछी नाथे जोयुं संतसाम्रं, पुरी निजसेवकनी हाम्रं। पछी बोलिया जगजीवन, संतो आज उत्मवनो दिन । २२॥ गाओं गरबी उत्मव करो, आज अंगमां आनंद भरो। पछी संते उत्सव आद्यों, यारी समैयो सुंदर कर्यो ॥२३॥ पर्छा रुडी कराबी रसोइ, जम्या जीवन ने जन सोइ। पछी संत राख्या निजसाथ, दिये दर्शन प्रसन्न नाथ ॥२४॥ त्यां आव्यां दिवनां हरिजन, विणिक प्रेमबाइ पावन । लाव्यां पोशाग प्रश्नने काजे, पहेर्यो पासे जइने महाराजे ॥२५॥ सुरवाळ जामी ने पाघडी, रेटो फेंटो चकमो चाखडी। धर्यु छत्र छिबलाने शीश, घणे प्रेमे पूज्या जगदीश ॥२६॥ पछी प्रभुजि थया प्रसन्न, आवी बेठा पोताने आसन । भट्ट दीनानाथ बडभाग्य, आप्यो वाले तेने ए सुवाग्य ॥२७॥ एम करतां आवी दिवाळी, त्यारे बोल्या वालो वनमाळी। आतो आव्यो उत्सव अन्नकोट, करवी सारी न राखवी खोट ॥२८॥ जाओ लावो सुखडिया आ घडी, करावो बह्र भात्ये सुखडी। जेम कह्युंछे जगजीवन, जोइ मरजि कर्युं तेम जन ॥२९॥ करी दीपमाळा बहु सारी, मध्ये बेठाछे पोते ग्रुरारी। पहेरी सुरवाळ जामो जरी, शिर बांधि छे पाघ सोनेरी ॥३०॥ कंठे पहेर्या छे फुलना हार, जुवे जन करी मनप्यार । हसिहसि जुवे हरि साम्रं, 'पुरे जनना मननी हाम्रं ॥३१॥ पछी बोलिया श्रीमहाराज, संतो गाओ ने गरबी आज। पछी संत थया साव-

धान, रच्यो रास कर्युं बहु गान ॥३२॥ पछी रिक्षि बोल्या अलवेल, संतो खुब करो आज खेल। एम कहीने खेल खमाड्यो, जनने मन मोद पमाड्यो ॥३३॥ एम करतां वीति मध्य रात, वाले करी बहुबहु वात। पछी पोढिया प्राणजीवन, संत गया आपणे आसन ॥३४॥ एम करतां थयुं सवार, पोढी जागीया प्राणआधार । दीधां संतने दर्शन दान, बेशी पर्यंकपर भगवान ॥३५॥ पछी करावियो अन्नकोट, ज्ञाक पाक ने अन अबोट । भात्यभात्यनी सुखडी सारी, बहुमात्ये तळी तरकारी ॥३६॥ जम्या प्रेमेशुं पोते जीवन, पछी जमाडिया सर्वे जन। पोते पिरशुं पंगत्यमांय, कर्या संत राजी बहु त्यांय ॥३७॥ एम कर्यो उत्सव आनंदे, लीधुं सुख बहु संतर्श्दे। थाय रसोइ नित्य नवली, एकएकथकी घणुं मली ॥३८॥ एम वीतिगया त्रण मास, राख्या संत सरवेने पास । पछी एक दिवसे महाराजे, मूळा मंगाच्या संतने काजे ॥३९॥ कैक संतने आपिया हाथे, बीजा उछाळी नाखिया नाथे। लीधा जने जाणी परसादी, उठ्या संत मोटा मरजादी ॥४०॥ कर्यो उत्सव अनुपम जाणो, आसोवदी दिवाळी प्रमाणो । कयों कारियाणी मांहि संते, कराव्यो भावे भक्त वसते ॥४१॥ बहु लीळा करी एह ठाम, पछी त्यांथी चाल्या संत क्याम । बहु सत्संगी बोटादमांय, रह्या रात्य एक हरि त्यांय ॥४२॥ जमी जीवने जमाड्या जन, पछी त्यांथी चाल्या अगवन। मीटो भक्त छे सुरो खाचर, आब्या गाम ठोये तेने घेर ॥४३॥ थया राजि बहु सहु जन, करी प्रभुजिनां दरशन । अतिहेतेशुं आप्या उतारा, जेने जेम घटे तेम सारा ॥४४॥ करी चालती रुडी रसोयुं, देतां पाछुंबाळि नव्व जोयुं। थाय वृंताकनां शाक

घणां, करेल श्रीहरि हाथतणां ॥४५॥ करे एकला घृतमां शाक, जमें संत तजी परो पाक । निजकरे पीरसेछे नाथ, जोरेजोरे जमें संत साथ ॥४६॥ नित्य करेंछे नवली लीळा, सर्वे संतने राख्याछे भेळा। एम करतां वीत्या घणा दन, दिधां जनने बहु दर्शन ॥४७॥ पछी बोलिया श्रीमहाराज, तमे सांभळो सहु ग्रुनि-राज । जेदिनां आच्यां अयोष्यावासी, थयु सारुं में जोयुं तपासी ।।४८।। सतसंगतुं जाभियुं मूळ, ज्यारे आव्युं ए धर्वतुं कुळ। एम कही बोलाव्या वे भाइ, आप्यां वस्त्र सारां सुखदाइ ॥४९॥ पछी संत बोल्या जोडी हाथ, अतिसारुं थयुं कृपानाथ । एह आवतां हरख्याछुं अमे, तेतो जाणोछो सरवे तमे ॥५०॥ भाइ आवतां थइ भलाइ, दुष्ट बोलतां रह्या लजाइ । हरिजनने हर्ष न माय, नित्ये आनंद उत्सव थाय ॥५१॥ एम करतां आव्यो वसंत, आव्या दर्शने जन अनंत । प्रेमे लाग्यां प्रभुजिने पाय, नाथ निर्वि तृप्त न थाय ॥५२॥ वाले जाणी उत्सवनो दन, पोते थया अतिशे प्रसन्न । पहेरी वसंति वसन लाल, लीधो फांटमां भरी गुलाल ॥५३॥ नाख्यो नाथे हाथे जनमाथे, जोइ लटकां लीधुं सुखसाथे। चडी गर्दी गुलालनी घाटी, फेंकी फांडुं गांय जामानी फाटी ॥५४॥ एम उत्सव कर्यो आनंदे, जोइ लावो लीघो जनबंदे। पछी मगावी प्रसादी घणी, तर्त ताजा गोळ तलतणि ॥५५॥ दिधी दासने दोवट नाथे, दया करी हरि दोय हाथे। एम करतां लीळा अपार, पछी बोलिया जगदाधार ॥५६॥ बहु सारो थयो आ समैयो, हवे सहु संतने शीख दियो । पछी संत गया आसपास, हुतासनीना उत्स-वनी आश्च ।।५७॥ पछी आवीछे पूरणमासी, लीधी राकेश राहुए ग्रासी। मोडुं ग्रहण थयुं महाभारी, थइ निशा अतिशे अंधारी

॥५८॥ उयारे शुद्ध थयो शशि अंगे, त्यारे नावा चाल्या नाथ संगे। गाडां घोडलांनो नहि पार, चाल्या जन हजारोहजार ॥५९॥ गातांवातां नाया भद्रावती, पछी आव्या आसन प्राण-पति। एम करे लीळा नित्य नाथ, जोइ सुखी थया जनसाथ ।।६०।। कर्यो उत्सव आनंदे ते कैयो, महाशुदी पंचमी समैरो । कर्यो गाम लोये रुडीपेर, भक्त सुराखाचरने घेर ॥६१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिधिर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रे श्रीहरिए छोये वसंतर्वचमीनो समैयो कर्यो एनामे सत्याशिमुं प्रकरणम् ॥८०॥

पूर्वछायो-एटली लीळा त्यां करी, पछी पधार्या सुंदर-क्याम । फुलदोल उत्सव उपरे, चाल्या पंचाळे गाम ॥१॥ संत सहुने जणावियुं, धीरेधीरे आवज्यो त्यांय । एम कही रथउपर वेसी, पधार्या सोरठमांय ॥२॥ चोपाइ-आवे वाटमांहि पुर गाम, सुभागी नर निरखे इयाम। प्रथम पिपरडी गामे आच्या, भक्त भाणजिने मन भाव्या ॥३॥ रुडी करावी तर्त रसोइ, जम्या हरि भाव तेनो जोइ। पछी जमाडिया म्रुनिजन, घृत पीरशुं पोते जीवन।।४।। एम राजि करी निजदास, पछी त्यांथी चाल्या अवि-नाश । आव्या हाथसणि रह्या रात, त्यांथी प्रभु चाल्या परभात ॥५॥ आच्या जसदणमां जीवन, दीधुं पुरपतिने दर्शन । रही म्रहूर्त एक मुरारी, पछी तर्त करी असवारी ।।६।। आवी अरण्ये नदी निर्मळी, बेसी जम्या त्यां सुखडी गळी। त्यांथी आव्याछे बंधिये गाम, सुखसागर सुंदरक्याम ॥७॥ रह्या रात्य त्यां दोय दयाळ, पछी त्यांथी चाल्या ततकाळ । आव्या गोंडळमांहि गोविंद, संगे हरिजननुं छे बृंद ॥८॥ आवी उतरिया उपवन, तियां

जम्या हरि हरिजन । सात भात्यनी हती सुखडी, शाक वृंताक खीचडी रुडी !!९।। पोते पीरशी जमाड्या जन, एम सहुने कर्या प्रसन्न । पछी त्यांथी चाल्या अलबेल, करी असवारी न करी वेल ।।१०।। इया गाममां आव्या दयाळ, पोताकारणे कराव्यो थाळ। आप्या मुनिने मोदक हाथ, बहु लीळा करी इयां नाथ ॥११॥ रही रात्य चाल्या मगवान, देता जनने दर्शन दान।आवी सीममां सरिता सारी, तियां जम्याछे पोते मुरारी ॥१२॥ पछी जमाडिया निजजन, अति प्रभुजि थइ प्रसन्न । त्यांथी आव्या कंडोरडे गाम, दिधां दासने दर्शन उपाम।।१३।। रह्या रात्य झांझ-मेर आवी, निजकरे रसोइ बनाबी । पोने पीरशुं प्रेमे अधिक, करी चोकी टाळी वळी बीक ॥१४॥ त्यांथी चाल्याछे घोडले चडी, रह्या उपलेटे एक घडी । पछी जाळिये आव्या जीवन, भक्त हीराभाइने भवन ॥१५॥ रही रात्य जम्या जगवृंद, त्यांथी आविया गाम गणोद । देखी उपवन आंबाछांय, रह्या रात्य एक पोते त्यांय ॥१६॥ प्रपतिने करी प्रमन्न, आव्या माणाव-दरे मोहन । रह्या तियां पोते घडी चार, पछी आव्या पंचाळा मोझार ॥१७॥ धन्यधन्य पंचाळातां जन, जेनां निर्मळ उदार मन । प्रश्च पहाराच्या सारु भवने, नियम राख्यांतां नरनारी जने ॥१८॥ तेने वीति गया कइ काळ, त्यारे पधार्या दीनदयाळ । निरखि हरखियां नर नारी, घेरे पवार्या देव मुरारी ॥१९॥ बहु प्रेमेशं लागिया पाय, हेते आव्यांछे हैयां भराय । बोले गदगद गीरा वयणे, हाल्यां हेतनां आंसु नयणे ॥२०॥ वळी सुलियां तनभानने, एम भेटिया भगवानने । पछी हरि करी करुणादृष्टि, जेम मृत्यपर अमृतवृष्टि ॥२१॥ त्यारे सरवे थयां सचेत,

बोल्यां हरिसाथे करी हेत । कहे आज थयां कृतारथ, प्रसु आव्ये सर्या सर्वे अर्थ ॥२२॥ आज धन्य घडी धन्य बार, तमे पशार्या प्राणआधार । पुण्य अमारानी नहि पार, जाग्यां माग्य अतिशे अपार ॥२३॥ आज बहु दिननां दुःख भाग्यां, एम कही सहु पाये लाग्यां। पछी आपी सुंदर आसन, कर्यां भात्यभात्यनां भोजन ॥२४॥ बहुहेते जमाख्या जीवन, पछी पुछ्युं प्रभुने प्रश्नन । क्यारे आवशे बाइयोनो संघ, आज राख्यो भलो तमे रंग ॥२५॥ क्यारे आवसे मुनिनो साथ, एवं सांभळीने बोल्या नाथ। संघ सरवे आवशे काल्य, वणतेख्या नहि आवे मराळ॥२६॥ त्यारे जन बोल्या जोडी हाथ, सर्वे तेंडावो मुनिनो साथ । कोइ वातनी नहि आवे खामी, तेह तमारे प्रतापे खामी ॥२७॥ पछी महाराजे मुनि बोलाव्या, सर्वे संत तर्त तियां आव्या । आव्या संघने आप्या उतारा, मुनि उतरिया पुरबारा ॥२८॥ करी चालती रुडी रसोयुं, पाछुंबाळि वावरतां न जोयुं । मामे जळ तियां आपे घृत, जेवुं जोइए तेवुं मळे तरत ॥२९॥ कोइ वातनी खोळा न आवे, जमे जन जेने जेवुं भावे। जेमजेम जमे मुनिजन, तेमतेम राजि थाय मन ॥३०॥ संत सर्वे थया सुखाळा, नाथ निर्धि मगन मराळा । थाय आखो दिवस दर्शन, होय अति उत्तर प्रशन ॥३१॥ करे वालो वात अतिभारी, सुणी मगन थाय नरनारी। एम वीति गया दिन सोळ, आव्यो नजिक उत्सव फुलदोळ ॥३२॥ आव्या देश प्रदेशना संघ, करवा दर्शन मने उमंग । मनुष्य न मायां गाम मोझार, सर्वे उतिरयां पुरबार ॥३३॥ तियां मोटो कर्यो एक मंच, बहु मंगाव्यो रमवा संच । केशुं केसर गुलाल घणो, काढ्यो रंग ते पतंगतणो।।३४॥ पछी मुनिने कहे महाराज, गाओ

गरबी उभा थइ आज । त्यारे मुनि थयाछे हुलास, रच्यो रंगभर सुंदर रास ॥३५॥ जोया रमतां जीवने जन, पोते कर्युं रमवानुं मन । संदर पहेरी सारो सुरवाळ, झगे जरकशी जामानी चाळ ।।३६।। श्रीश बांधिके पाघ सोनेरी, उठ्या आपे कमर कशी करी। आव्या सखामां सुंदरश्याम, रमे रंगभर पूरणकाम ॥३७॥ करे लटकां वजाडे ताळी, शोभे संतमध्ये वनमाळी । वाजे वाजित्र ढोल नगारां, पुरे खर शरणाइ सारा ॥३८३ रमे रसियोजि रंग-रेल, छोगावाळो छबिलोजि छेल । जोइ जन करे जेजेकार, निर्खे नभे अमर अपार ॥३९॥ खेल अलैकिक खुब मचाव्यो, जोइ जनने आनंद आव्यो । रमे नाथसाथे नव हारे, कोये वचमां पडी न वारे ॥४०॥ जाणुं अखंड खेल मंडाणो, नहि आळशे एम जणाणी। त्यारे वाल्यमे वात विचारी, आन सर्वे जाशे जन हारी ।।४१।। त्यारे केम रमशे ए काल्य, एवं जाणी वाले करी वाल्य । संतो आळसो आज रमत्य, काल्ये रमवानी राखो हिमत्य ॥४२॥ करी एटली लीळा ए दने, जन पोताना साथे जीवने । एम रंगे वहीगइ रात, पोढी प्रभ्र जाग्या परभात ॥४३॥ आवी ढोलिये बेठा गोविंद, कहे लावो पूजा मुनिवृंद। पछी संत लाव्या पूजा सारी, अत्तर केशर चंदन उतारी ॥४४॥ आवी चरच्युं वालाने अंगे, चरच्यां चरण अतिउमंगे। तियां मगान्यो रंग, सोरंग, नाख्यो अलबेले सखाने अंग ॥४५॥ बहु मचावी रंगनी झडी, नाखे गुलाल भरे आंखडी। पछी सखे लिधो रंग हाथे, नारूयो अलबेलाजिने माथे ॥४६॥ त्यारे घांघा थया गिरिधारी, करी तर्त घोडे असवारी। पछी पधारिया पुर-बार, संगे सखा हजारोहजार ॥४७॥ आबी बेठाछे मंचे महा-

राज, कहे सांभळो सहु मुनिराज । लावो रंग छांदु मारे हाथे, जेजे जन रह्या तेने माथे ॥४८॥ पछी रंग लइ अलबेले, छांट्यो सहुने उपर छेले। पछी भरी गुलालनी झोळी, नाखी नाथे रंगी संतटोळी ॥४९॥ उडे गुलाल अंबर छायो, चडी गर्दमां सर छपायो। पछी महाराज कहे मुनिराय, हवे रमो परस्पर मांय।।५०।। सारो रंग भर।व्यो छे होजे, बेउ टोडा करी रमो मोजे । पछी सखा थया सावधान, मच्यो खेल जुवे भगवान ॥५१॥ चाले परस्पर पीचकारी, उडे रंग सोरंगनां वारी। जाणुं आवियो मेघ अपाडे, चाल्यां पुर भर्यां नीर खाडे ॥५२॥ मची झडी चाल्यो रंग रेली, थयो कीच रची जाएं एंली। एम रमे मुनि मांहो-मांय, वाजे बहु वार्जितर त्यांय १५३॥ होडाहोडमां कोइ नहारे, जित्याजित्या त्यां शब्द उचारे। एम खुब मचावियो खेल, जोइ एम बोल्या अलबेल १५४॥ संतो राखोराखो रमवानुं, थायछे अवेर जमवातुं। चालो नावाने सरवे साय, एम कह्युं वजाडिने हाथ । ५५॥ पछी आपे करी असवारी, चाल्या सखासंगे सुख-कारी । पोते पहेर्या हता वस्त्र अंगे, तेतो सर्वे रंगाणांता रंगे ॥५६॥ आप्यां उतारी झिणाभाइने, एम आविया नाथ नाइने । पछी जने कराव्यां भोजन, घडी पोढिने जम्या जीवन ॥५७॥ मुनि-काजे मोदक मोतैया, करी राख्याता सारा सेवैया । ते पीरशा पंगत्यमां नाथ, जन जमाडिया निजहाथ ॥५८॥ अतिआनंदे जमिया जन, तोय खातां खुट्युं नहि अन्न। पर्छा नोदक लइ ग्रुरारी, आप्या सर्वे संघने संभारी ॥५९॥ एम लीळा करी अलबेले, करावी झिणेभाये एकिले। आप्यां सहुने सुख अनेक, करी लीळा ते २२ भ०चिं०

कही कांयेक ।।६०।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यमिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रे श्रीजि-महाराजे फुळदोळनो उत्सव कर्यो एनामे अठ्याशिमुं प्रकरणम् ॥८८॥

पूर्वछायो-एटली लीळा त्यां करी, पछी पधार्या पांचाळ। अनंत जीव उद्धारवा, फरे देशोदेश दयाळ ॥१॥ चोपाइ-पछी त्यांथी चाल्या सुखकारी, आव्या माणावदर मुरारी। रही रात्य ने कर्यां भोजन, पछी त्यांथी पधार्या जीवन ॥२॥ करी गाम गणोदे विश्राम, आब्या जाळिये सुंदर इयाम । तियां जिमया संते सहित, जने जमाडिया करी प्रीत ॥३॥ पछी त्यांशी चाल्या अविनाशी, शोभे सुंदर रात्य उजाशी । कर्यो वाटमां कांइक ढाळ, आच्या द्धिवदर दयाळ ॥४॥ सुंदर शीरानी करी रसोइ, जम्या जन संघे हता सोइ । पछी सुंदर सांझनी वेळे, चाल्या नाथ संघ लइ भेळे ॥५॥ चालतां वीतिया चारे जाम, आच्या बंधिये सुंदरक्याम । रह्या रजनी आनंदे अति, आच्या पिपलिये प्राणपति ॥६॥ हरिभक्ते जमाड्या त्यां हेते, सर्वे मुनिने संघसमेते। त्यांथी चालिया सुंदरक्याम, कर्यो रायपुरे विज्ञराम ॥७॥ त्यांथी आविया गाम वांकिये, एम गामोगाम दर्शन दिये। त्यांथी आविया गढडामांय, दिन त्रण रह्या पोते त्यांय ॥८॥ पछी त्यांथी चालिया दयाळ, आव्या कारियाणिये कुपाळ। पछी नाथे कही एम वात, संतो तमे जाओ गुजरात ।।९।। सारी मूर-तियो सुखदाइ, पधरावशुं वरतालमांइ। तेनेअर्थे करावो मंदिर, सारुं सरस सहुथी सुंदर ॥१०॥ तेनी रीत्य समझावी कइ, जाओ आदरो त्यां तमे जइ। आपी आगन्या संत सधाव्या, पोते गाम गढडामां आच्या ॥११॥ त्यांथी पधार्या कच्छ भ्रजभणी, करवा

प्रतिष्ठा नरवीरतणी । दिघां सहु दासने दरशन, प्रभु जनपर छे प्रसम ॥१२॥ पछी भावेशुं भुजनगर, बेसारिया नारायण नर । आवी महर्तमां मनगमी, वैशाखशुदी कहीए पंचमी ॥१३॥ तेदि नरनारायण राय, बेसार्या भुजनगरमांय। एम करी बहु शुभ काम, पछी पधार्या गढडे गाम ॥१४॥ अतिद्याळ द्या अपार, अति कृपाळ कृपाभंडार। करे आचरण जेजे महाराज, तेती सहु जीवने सुखकाज ॥१५॥ करे चरित्र नवलां नित्य, जन राखे चितविने चित्त । दास उपर छे दया अति, सुखसागर ज्याम मूरति ॥१६॥ दिये दासने दर्शनदान, जन जुवे भावे भगवान। करे वात नित्य प्रत्ये नवी, सुणी आश्चर्य थाय अनुभवी।।१७॥ लिये सुख अलौकिक सह, एवी वातो करे वालो बहु। एम आनंदमां दिन जाय, जन गुण गोविंदना गाय ॥१८॥ जाय जुग ते पळसमान, नित्ये भेळा रहेतां भगवान । एम करतां आवी अष्टमी, कृष्णजन्म तिथि मनगमी ॥१९॥ मोटा उत्सवनो एइ दिन, तेड्या समैयापर मुनिजन । आव्यां संत सहुनां मंडळ, मोटा मुक्त जे अति अमळ ॥२०॥ आवी लाग्या प्रभुजिने पाय, स्पर्शि पद ने मोद न माय। वाले अतिवाल्यपे बोलाव्या, संतो समैयापर भले आव्या ॥२१॥ संतो सर्वे आव्या तमे मळी, रखे रहीजाये कोइ मंडळी। संत कहे आन्यो सहु साथ, देशप्रदेशे हरो कोइ नाथ ॥२२॥ कहे नाथ ते आवशे सोइ, एम कही करावी रसोइ। थइ चालती रुडी रसोइ, जमे जन मगन मन होइ ।।२३।। एम करतां वीत्या दिन चार, आवी अष्टमी शुभ तेवार। रद्या वत मुनि सहुमळी, सांख्ययोगी बाइयोनी मंडळी ॥२४॥ चाल्या नावा नाथ साथे लड्, नाह्या निर्मल जलमां जड़। नाड

निसरिने बोल्या नाथ, तमे सांभळज्यो सहु साथ ॥२५॥ हरि-मंदिरमारु हमेश, लेवो एकुको पथरो शीश। आज अमेपण एक लेशुं, वासुदेवनी भक्ति करीशुं ॥२६॥ पछी सोनेरी पाघने माथे, लिधो छे एक पथरो नाथे। एम नाइ आव्या नाथ घेर, आव्यो भक्त भाविक ए वेर ॥२७॥ जाति वैक्य वेणीभाइ नाम, लाव्या पूजा प्जवाने क्याम । काजु कनककडांनी जोड, अपि नाथ हाथे पुर्या कोड ॥२८॥ पछी मुनि मळी रच्यो रास, रम्या संतसंगे अविनाश । एम कर्यो उत्सव आनंदे, लीधुं सुख मळी मुनिष्टंदे ॥२९॥ वळतो आव्यो नवमीनो दिन, जने कर्या सुंदर भोजन । मुनिकाजे मोदक मोतैया, कर्या काजु जाय नहि कह्या ।।३०।। पोते पीरशे प्रभुजी हाथे, अतिहेते निजजन माथे। लइ मोदक मनवार्यु करे, कडी वडी फुलवडी फरे ॥३१॥ कढ्यां दुध साकर उजळी, फरे उपर भातमां वळी। एम जुक्ते जमा-**डिया दास, पछी एम बोल्या अविनाश ॥३२॥ मुणो संत सहु** जनष्टंद, रहो स्रोमासुं करो आनंद। क्यांये मागवा न जार्त्र अन्न. करवुं दरवारमांथी भोजन ॥३३॥ एवी छुणी वाल्यमनी वात, सर्वे संत थया रिक्रयात । नित्य दयाळ दर्शन दिये, निर्षि नाथ जन सुख लिये ।।३४।। तियां वरषे गर्जनाये घन, बोले मोर बपैया मगन । बोले दादुर अति आनंदे, जाणुं धुन्य मांडी म्रुनि-ष्टंदे ॥३५॥ झळके विजाळ वारमवार, वरसे मेघ वळी एकधार । नदीए आच्यां नवलां जळ, अतिसुंदर सारां अमळ ॥३६॥ नित्ये नावा जाये त्यां नाथ, सर्वे संग लइ मुनिसाथ। नाही पाछावळे जन ज्यारे, लिये एक एक शिला त्यारे ।।३७।। तेणे करी शोभे जन घणुं, जाणुं सैन्य चाल्युं रामतणुं। तेने देखी

दाझे दुष्ट छाति, जे कोइ होय रावणनी जाति ॥३८॥ दैत्य दैत्यतणो धर्म पाळे, साधु साधुनो धर्म संमाळे। संत सदा सुखी दलमांइ, एवी वात गणे नहि कांइ ॥३९॥ सुणे वाल्यमसुखनी वात, संशय शोकनी न रहे जात। नित्य वात नविनवि थाय, सुणी आनंदमां दिन जाय ॥४०॥ एम करतां सुख विलास, वहिगयोछे चातुरमास। आव्या दशरा दिवाळीना दन, करवो उत्सव कहे भगवन ॥४१॥ अन्नकोटनो उत्सव कहुं, आव्या सतसंगी तियां सह । हतो समीपे संतसमाज, रची दीपमाळा मुनिराज ॥४२॥ बळे दिवा हजारेहजारुं, थियो प्रकाश गयुं अंधारुं। बेठा अलबेलो तियां आवी, मनोहर मृतिं मनभावी ॥४३॥ शोमे वस्त्र आभूषण अति, जनमन हरण मूरति । हसि-हिस जुवे जनसाम्रं, पुरे जनना मननी हाम्रं ॥४४॥ परम आनं-दमां दन पळता, आच्यो अन्नकोट दन वळता । पुर्यो अन्नकोट अति अने, लेहा चोश्य ने भक्ष्य भोजने ॥४५॥ कहेतां पार न आवे पाकनो, ताजी भाजी सीमा नहि शाकनो। हेते जम्या पोते जनहाथ, पछी जमाडवा मुनिसाथ ॥४६॥ कशी कमर उठिया हरि, मोटी पंगति मुनिनी करी । लीघा मोतैया लाडवा लाले, मागे एक तियां त्रण आले ॥४७॥ साटा पेंडा जलेबी ने खाजां, दळ मगदळ मेशुब झाजां । सेव सुवाळी लापशी शिरो, फरे कंसार साकरकेरो ॥४८॥ बहु हवेजे भजियां बण्यां, कळि गाठिया फुलवडी चण्या । सुंदर शाक पिरश्यां पंगत्ये, एम जमाड्या जन जुगत्ये ॥४९॥ पछी नाथ कहे सुणो वात, हवे जाये सह गुजरात । आवी प्रबोधनी दिन थोडे, चालो सह जाइए मळी जोडे ॥५०॥ लक्ष्मीजि ने नारायण आप, थाशे वरताले तेहनो स्थाप । करी एटली आगन्या वाले, थह मगन मानी मराले ॥५१॥ राख्या संत पासे सुख दहने, श्रावणविद चतुरथी लहने । त्यांथी राखी मुनिनी मंडळी, कार्तिकशुदि बीजलगे वळी ॥५२॥ कर्यो उत्सव एटला दन, जम्या मुनि भावतां भोजन । धन्य जया लिलता वे जन, जेणे प्रभुने कर्या प्रसम् ॥५३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि शिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये भुज वैशाखशुदि पंच-मीने दिवस नरनारायण पधराव्या ने गढडे अन्नकोटनो उत्सव ए नामे नेवाशिमुं प्रकरणम् ॥८९॥

पूर्वछायो-चाल्या पछी गढडाथकी, संघ लइने सुंदर-इयाम । भक्त भाविक बोटादमां, रह्या रात्य एक एह ठाम ॥१॥ चोपाइ-पछी त्यांथी चाल्या संघसाथ, आव्या सुंदरीयाणे श्रीनाथ । जमी जन जीवन संधान्या, जइ वागड अणियाळि आव्या ॥२॥ रहे जसके रोजके जन, दीघां दयाळे तेने दर्शन । पछी रह्या कमियाळे नाथ, जाणी जखम जननो हाथ ॥३॥ जिम बोरु रह्या गळियाणे, आच्या वरतालमां संध्या टाणे। दीधां दासने दर्शन दान, निरूर्या जने भावे भगवान ॥४॥ पछी जन बोल्या जोडी हाथ, भले आव्या अनाधना नाथ। बहु दिनना हता पियासि, दीधां दर्शन आज अविनाशि ॥५॥ एम कही बेठा सनग्रुख, नाथ निरखी निगम्या दुःख । जने रसोइ करावी भली, जम्या तेमांथी नाथ रोटली ॥६॥ पासे हता मुनी बे मराळ, आप्यो अलबेले तेने थाळ। पछी पोढिया प्राणजीवन, जाग्या ब्राह्म मुहूर्ते भगवन ॥७॥ करी दातण ने स्नान कीथां, पछी दासने दर्शन दीधां। पछी श्रीनारायणनी मूर्ति, जोइ बखाणि

छे वळी अति ॥८॥ पछी वडोद्राथकी जन, आव्यां इतां करवा दर्शन । तेना संघमां जड्ने क्याम, दइ दर्शन ने पुरी हाम ॥९॥ पछी जने कराव्याता थाळ, जम्या दया करीने दयाळ। पछी बाल दुबाल अंगरखी, हाथे पहेराव्यां हरिने हरखी ॥१०॥ भूप दीप उतारी आरति, पछी करजोडी करी विनति। भले प्रकट्या प्राणआधार, अम जेवानी करवा उधार ॥११॥ आज सुफळ थयो जनम, मळ्या प्रकट पुरुपोत्तम । हवे छीए तमारां हो नाथ, कुळ कुटुंब अमे यहु साथ ॥१२॥ पछी नाथ कहे निभेय रहीए, छो अमारा झाझुं शुं कहीए । कही एटखं चालिया नाथ, गया चोतरे सहु जनसाथ ॥१३॥ तियां कर्या उत्तर प्रशन, सुणी महु जन थया मगन। एवी वात करी अविनाशे, सुणी अतिहेते करी दासे ॥१४॥ एवी वात थाय नित्यनित्य, सांभळे जन दइ मनचित्त । सारा सुंदर वरपमांय, कार्तिकशुदी द्वादशी कहेवाय ॥१५॥ तेदि मुहूर्त जोइ शुम अति, स्थापी श्रीनाराय-णनी मूरति। वेदविधि करी विप्रजने, पधराव्या प्रभु शुभ दने ॥१६॥ लक्ष्मीनारायण सुखदाय, स्थाप्या मध्यना मंदिर-मांय। भक्ति धर्म पोतानुं स्वरूप, स्थाप्युं उत्तर डेरे अनूप ॥१७॥ राधा ने वृंदावनविहारी, पासे पोतानी मूरति सारी। कर्यो दक्षिण डेरामां स्थाप, निजजनना टाळवा ताप ॥१८॥ तीयां वरत्योछे जयजयकार, धन्यधन्य बोले नरनार। पछी जमाडिया विप्रजन, आप्यां मनवांछित भोजन ॥१९॥ दीधि दक्षिणा वस्त्र रुपैया, तेणे वित्र राजी मन थया। पछी पांच दिवस पोते रह्या, त्यांथी वसोये वालो आविया ॥२०॥ वसे वसोमांहि जन घणां, सर्वे प्यासी प्रभुद्दीनतणां । तेने घरोघर

जइ नाथ, दइ दर्शन कयाँ सनाथ ॥२१॥ पछी संगे हता मुनि-जन, तेने काजे कर्यांतां भोजन । तेती पिरशियां पीते बळी, जमाडी सह संतमंडळी ॥२२॥ पछी घोडे थया असवार, कयों ग्रुनिने नमस्कार । ग्रुनि रहेज्यो आनंदमां तमे, मळशुं वेला वेला वळी अमे ॥२३॥ एम कही चाल्या भगवान, सर्वे संत थया शोकवान । अही बहु दिन राख्या साथ, आज गया विजोगिने नाथ ॥२४॥ अही नित्ये थातां दरशन, एक हता एवा पण दन। आज मुकिने चाल्या मोहन, हवे क्यारे थाशे दरशन ॥२५॥ एम कही अकळाणा अति, पछी अंतरे धारी म्रति । थया सचैत सह मुनेश, गया फरवा देशप्रदेश ॥२६॥ तेदि जमता पानिवडी नाथ, ते जमाडतो हुं मारे हाथ। त्यांथी आव्या वटामण गाम, रह्या रात्य त्यां सुंदरश्याम ॥२७॥ जमी जाखडेथी कमियाळे, दीधां दर्शन जनने दयाळे। रही रात्य चाल्या त्यांथी नाथ, लइ मुक्तानंदजिने साथ ॥२८॥ गांफ खर्ड्य झिंझर रह्या जाणी, त्यांथी कुंडळ ने कारीयाणी। पछी आव्या गढडे महाराज, करी अलबेलो एह काज ॥२९॥ तियां रधा राजी थइ आपे, दिये दर्शन ने दुःख कापे। जन जमाडे प्रभुने प्रीत्ये, जमे पानबिडी पोते नित्ये ॥३०॥ जम्या पान दिन पचिवा, पछी न जमिया जगदीश। त्यारपछी रह्या दिन दश, लिधो अभागिये अपजश ॥३१॥ पछी दुष्टनी दुष्टता जाणी, प्रभ्र पंधारिया कारियाणी । तियां रह्या दन दोयचार । पछी आञ्या गढडा मोझार ॥३२॥ गढडामां रहे घणुंघणुं, धन्य भाग्य ए भूमिकातणुं। एक रही गइ बात अनुप, सुण्या सरखी छे सुसद्भव ।।३३॥ आगे आन्यांतां अयोध्यावासी, तेनी वात

में नोति प्रकाशी। तेह हवे कहुं छुं विस्तारी, सुणी सुख पामे नरनारी ।।३४।। अनुक्रमे मळी के न मळी, पण कहेवीछे वात सघळी । रामप्रताप ने इच्छाराम, तेतो रह्या हता निजधाम ॥३५॥ तियां संते वात जइ करी, तमारे घेरे प्रकट्या हरि। कही एघाणी सहित वात, आबी प्रतीति थया रळीआत ॥३६॥ एवं सुणी चाल्या ततकाळ, वृद्ध जोवन ने नाना बाळ ! संगे लइ अश्व ने पालखी, आव्यां सहजमां न थयां दुःखी ॥३७॥ पश्चिम खंडमां पंचाळ देश, जियां हरि विचरे हमेश। काजु गाम वरताल जाणी, पोते हता त्यां शारंगपाणी ॥३८॥ तियां आव्यां अयोध्यानां वासी, सामा जइ मळ्या अविनाशी। कार्तिक मास शुदी चतुरथी, तेदि आव्यां अयोध्यापुरथी ॥३९॥ आव्यां अयोध्यावासी ए दन, कर्या महाराजनां दरशन । मळी लेळि लाग्यां सहु पाय, चाल्यां नीर ते नयणामांय ॥४०॥ करी रुदन चरण न मुके, आंख्यमांहिथी आंसु न सुके । हेते हिबसे वियोगदुःखे, भांग्या अक्षर बोलेछे मुखे ॥४१॥ हेमहाराज आवुं केम कींधुं, चाल्या फरिने दर्शन न दीधुं। जेम दर्शन न दिधुं दयाळ, तेम पाछि न लिधि संभाळ ॥४२॥ शियो वांक अमारो होनाथ, चाल्या अमने करी अनाथ। वाला तमे अमने विसायी, अमे विलखिविलखि हार्यो ॥४३॥ तमे चाल्या त्यांथी जगदीश, तेने वर्ष थयां अठ्याविश । तेमां एक संदेशो न कहाव्यो, एवडो शियो अभाव आव्यो ॥४४॥ हशे वांक वालाजि अमारो, एमां दोष नथी जो तमारो । हशे अपराध अमारा नाथ, जोशो मां एम कही जोड्या हाथ।।४५॥ नाथ कहे नथी दोष तमारो, छे खभाव एवोज अमारो । जियां रहीए तियां हिकमळी, विसार्या न संभा-

रीए बळी ।।४६।। होय हरिमांहि हेत जेने, अमे नित्य संभारुं तेने। बिजां साथेछे थोडेरुं हेत, एम बोल्या करुणानिकेत ।।४७।। जेम हतुं पोतानुं वर्तन, तेम जणावि दीधुं जीवन। एम मळ्या सबंधिने स्याम, पाम्या अयोध्यावासी आराम ।।४८।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्ताचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रे श्रीलक्ष्मीनारायणदेवनी प्रतिष्ठा करी ने त्यां अयोध्यावासी आव्या एनामे नेवुमुं प्रकरणम् ॥९०॥

पूर्वछायो-अयोध्यावासी आविया, हरिप्रसादनो परिवार। सबंधी श्रीमहाराजनां, सतसंगनो शणगार ॥१॥ चोपाइ-थयां राजी अयोध्यानां वासी, तयणे निरूर्या क्याम सुखराशी। पछी संगे तेडी तेने श्याम, आव्या प्रभुजि गढडे गाम ॥२॥ तेने आप्यां उत्तरवा घर, घणुं घटित सारां सुंदर । पछी करीछे रुडी रसोइ, जम्या मात्र भाव तेनो जोइ ॥३॥ पछी जम्या छे अयोध्यावासी, वळति वाल्यमे वात प्रकाशी । पुछचां देश नगर ने गाम, पुछचां सर्वे ठेकाणां ने ठाम ॥४॥ पुछचां वन वाडी वृक्ष वट, पुछचां नदी तळाव ने तट । पुछचां शहेर बजारो ने घर, पुछचां त्यागी गृही नारी नर ॥५॥ पुछ्यां हरिमंदिर धर्मशाळा, पुछ्यां तीरथ घाट सघळा । तेनां आपिआपिन एंघाण, कर्यां सर्वे स्वळनां वस्राण ।।६।। पर्छा कह्युं वासी अयोध्याने, कांइक दीठा सांभ-ळ्या छे काने । सर्वे यथारथ नव जाणुं, एम कहीने जोडीछे पाणुं ॥७॥ पछी बोल्या आपे अविनाशी, तमे सांभळो अयोध्या-वासी । जेजे स्थळनां लीघांछे नाम, तेमां फरता अमे आठुं जाम ।।८।। रहेता रमता घटे तेनुं जमता, इता नाना सहुने गमता। पडी टेव तेणे बहु फरता, मोटिमोटि नदीयो उत्रता ॥९॥

रहेता थोडुं अमे घरमांय, आज इयां काल वळी क्यांय। हतुं हेत हरिकथामांइ, बीजी वात न गमति कांइ ॥१०॥ गमता मक्ति-वान त्यागी ज्ञानी, भुंडा लागता देहाभिमानी । हतो स्वभाव चटकिदार, कठण बचन न सहेता लगार ॥११॥ हांसी मशकरी न गमे क्यारे, ठठा ठिंगाइशुं वेर मारे । जे कोइ बेठुं होय अम-पास, तेपण करी शके नहि हास ॥१२॥ अमे कह्यो अमारो खभाव, एम कही रह्या मौन माव। पछी बोल्या अयोध्या रहे-नार, एमां नथी प्रभु फेरफार ॥१३॥ एम करतां सांभळतां वात, वहिगइ विनोदमां रात । पछी दिवस बीजे दयाळे, कह्युं जेजे पुष्ठियुं कृपाळे ॥१४॥ सुत मामानो मनछाराम, अतिवृद्ध जाणो बहुनाम। तेन पुछेछे सुंदरस्याम, कही अमारा कुळनां नाम॥१५॥ बालपणामां अमे निसर्या, कुळ कुटुंबनां नाम विसर्या । माटे कुलपरंपरा जेह, कहो परिवार सहित तेह ॥१६॥ त्यारे बोल्या अयोध्याना वासी, तमे सांभळज्यो सुखराशी । जेजे जाण्यां सांभळ्यां मे नाम, तेह कहुं सुणी मारा ज्याम ॥१७॥ पुण्यवान पांडे कन्हिराम, रहे शर्वारे इटारगाम । तेना सुत ते बालकराम, तेनी त्रिया भाग्यमानी नाम ॥१८॥ तेना सुत एक सुभमति, दोषे रहित दयाळ अति । नाम हरिप्रसाद ते कहीए, तेतो धर्मनो अवतार लहीए।।१९॥ मोटा यशवाळा सहु जाणे, सारा खभाव सहु वखाणे। एवा हरिप्रसादनो कहुं, जेना पुण्यनो पार न लहुं ।।२०।। लुणापारना त्रवाडी कहीए, बाळकृष्णना कालु ते लहीए। तेने घेर छे भवानी नार, तेती अतिपवित्र उदार ॥२१॥ तेने त्रण सुत सुता त्रण, तेह कहुं सुणो अञ्चरणश्चरण । विश्वराम सुबुद्ध घेलहि, कालुसुत कहा त्रण तेहि ॥२२॥ चंदन वसंता ने

बालाबाइ, कालुसुता ए त्रण कहेवाइ। चंदनपति पांडे शरधार, वसंतापति बलधिधार ॥२३॥ बालाबाइ जे निश्चे भगति, तेना हरिप्रसादजि पति । कहुं तेनो हवे परिवार, तमे सांभळो प्राण-आधार ॥२४॥ तेना सुत सुखरूप त्रण, तमे सहित भवदुःख-हरण । मोटेरा ते श्रीरामश्रताप, बीजा तमे श्रीहरिजि आप ॥२५॥ त्रिजा इछारामजि कहेवाय, जेनी मोट्यप कही न जाय। बेउ भाइ अतिशे उदार, जेनो यश उत्तम अपार ॥२६॥ सर्वे रीत्ये सुखिया छे एइ, एक तम विना दुःखी तेह । नीलकंठ आव्या तमे आंइ, बिजा केड्ये रह्या जे बे भाइ ॥२७॥ कहुं तेनी हवे परिवार, तमने मळवा इच्छता अपार । रामप्रताप घेरे सुवासी, तेतो तम विना हतां उदासी ॥२८॥ तेना त्रण सुत एक सुता, तेनां नाम परम पुनिता । नंदराम ने ठाकोरराम, त्रिजा अयोध्या-प्रसाद नाम ॥२९॥ सुता श्रीघनुवा निरधार, पांडे जोखननो परिवार । नंद्घेर छे लक्षमी नार, रामशरण सुत निरधार ॥३०॥ नारायण प्रसाद हरिचंद्र, चोथा सुतपण छे सुंदर । ठाकोरराम घेर शिवकुंत्ररी, रामसुख सुत दो दीकरी ॥३१॥ अयोध्या घेर सुनंदा नार, कह्यो जोखननो परिवार । इच्छाराम घेर वसुमति, जेने प्रभ्रमांहि प्रीत्य अति ॥३२॥ तेना पुत्र पंच पुण्यवान, सुता बेउ ते कहुं निदान । गोपाळिज रघुवीर नाम, बृंदावन वळी सीताराम ।।३३॥ पांचमो सुत नाथ बदरी, सुता फुलश्री ने फुलझरी। इच्छारामनो ए परिवार, गोपाळिज घेर मेनां नार ॥३४॥ रघ्रुवीरने घेर वीरजा, बाकी कहुं हवे त्रण बिजा। बूंदा-वन घेर इंदिरावासी, सीताराम घेर इदिरासी ॥३५॥ ए हरिप्र-साद परिवार, धर्मकुळ अतुल उदार। कहेतां सुणतां तेहनां

नाम, थाय पवित्र पामिये धाम ॥३६॥ वळी ए देशना जे रहे-वासी, तेपण तम विना छे उदासी । रात्यदन संभारेछे बहु, तम विना आतुर छे सहु ॥३७॥ एम कह्युंछे मनछारामे, सुणी लिधुंछे सुंदर स्यामे । पछी पुछी बीजी बहु बात, सुणी सहु थया रिळयात ।।३८।। एम करतां कांयेक दिन गिया, पछी वसं-तना दिन आविया। त्यारे वाल्यमे कर्यो विचार, तेडाव्या त्यां संत मोटा चार ॥३९॥ कहे सहुं मळी जुवो विचारी, आ गादीना कोण अधिकारी। आव्युंछे अमारा जाण्यामांइ, तेमां फेर रहेशे नहि कांइ ॥४०॥ रामप्रताप ने इच्छाराम, तेना सुत सारा सुखधाम। एने आपुं आ गादी अमारी, अतिसारुं छे जुवो विचारी ॥४१॥ जेवुं अमारुं कुळ मनाशे, तेने तुल्य बिर्जु केम थाशे। त्यारे संत कहे साची वात, आज अमे थया रिळ-यात ।।४२।। तमे कर्याछे संत जे घणा, तेमांपण नथी कांइ मणा। पण आ वातनुं उंडुं मूळ, कांजे कावेछे धर्मनुं कुळ ॥४३॥ पछी पुछ्युं परस्पर बहुने, गमी बात हैयामां सहुने । पछी वित्या थोडा घणा दन, आव्या वस्ताले जगजीवन ॥४४॥ सर्वे संबंधी लेइ संघाथ, आच्या उत्सव करवा नाथ। कर्यो अन्नकोट उत्सव आवी, परबोधनी ते मली मजावी ॥४५॥ कीघा दत्तपुत्र पोते दोय, अवध्यप्रसाद रघुवीर सोय । आपी गादी आचारज कीधा, तेने मंदिर देश वहेंची दिधा ॥४६॥ करी दिधुं चोखुं एम आपे, केड्ये कोइ केने न संतापे । एवीरीत्ये करी एह काम, पछी पधार्या गढडे गाम ॥४७॥ सर्वे दासने दर्शन दीघां, करी वात कृतारथ कीथां। नित्य निर्ले मूर्ति मनगमी, त्यांतो आवी वसंत-पंचमी ॥४८॥ लाव्या गुलाल ने रंग घणो, कर्यो सामान रम-

वातणो । अति आनंदे भर्याछे नाथ, नाखेछे रंग पोताने हाथ ।।४९।। रेढे रंग ने नाखे गुलाल, तेणे सखा थया सहु लाल । सखे नाख्योछे नाथने रंग, तेणे शोभेछे श्यामनुं अंग ।।५०।। सर्वे वस्त्र थयां रंगे रातां, जोइ जन तृप्त नथी थातां । पल्ली नावाने चालिया नाथ, सर्वे सखा लइ पोतासाथ ।।५१।। नाही आवी जम्यां नाथ जन, कर्यों उत्सव थइ प्रसन्त्र । एम आपेछे जनने आनंद, घणे हेते श्रीसहजानंद ॥५२।। इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्चिते भक्तिनं तामणिमध्ये अयोध्याप्रसादिज ने रघुवीरिजिने आचार्य कर्या ने वसंतपंचमीनो उत्सव कर्यों एनामे एकाणुंमुं प्रकरणम् ॥९१॥

पूर्वछायो-त्यार पछी एक समे, बेठा सभामांहि इयाम । दिये दर्शन दासने, हरिजननी पुरे हाम ॥१॥ मिठी मिटे मावजि, ज्यारे जोया सरवे जन । दोषे रहित दास देखी, पोते थया प्रसन्न ॥२॥ पछी प्रभुजि बोलिया, तमे सांभळज्यो सहु जन। आपणे सहु उद्भवना, तेने करबुं तीर्थ अटन ॥३॥ म्रुनि संन्यासी त्यागी गृही, सुणो अवध्यवासी आप । जाओ श्रीद्वारामति, नाही लही आवो सहु छाप ॥४॥ चोपाइ-मळे तीर्थे मोटा मुनि-जन, थाय रामकृष्णनां दर्शन । मारकंडेय धौम्य लोमश, धमीदि करे तीर्थ अवश ॥५॥ सर्वे तीर्थ छे सुखरूप, तेमांपण द्वारिकां अनुप । तमे अवध्यवासी रही दूर, माटे जावुं तमारे जरुर ॥६॥ जेदि थयो यादवनो नाश, परस्पर लडी परभास । तेदि समुद्रे जळ हिलोळी, कृष्णभुवन विना पुरी बोळी ॥७॥ कुळ संहारी श्रीकृष्ण पोते, रह्या निजघेर नाथ गुपते। माटे मोदुं तीर्थ द्वारा-मति, जियां अखंड रहे यदुपति ॥८॥ माटे गृही त्यागिने त्यां

जावुं, विधिसहित गोमतीमां न्हावुं । यथायोग्य दान तियां देवुं, सत्यपुरुष पूजि फळ लेवुं ॥९॥ एम सर्वेने आगन्या किथी, निजदासने शिक्षा ए दिघी । पछी कौशलशासिने कह्यं, निश्चे तमारे जावानुं थयुं ॥१०॥ मनछाराम नंदराम दोय, जाओ गोपाळ सुफळ सोय । प्रथम पहेला श्रीरामप्रताप, तेपण गयाता द्वारकां आप ॥११॥ उद्धवसंप्रदायनी ए रीत, जावुं द्वारकां थावुं पुनित । नाहि गोमती विप्र जमाडो, पिंड दइ पित्रि पार पमाडो ।।१२।। छापे अंकित करी शरीर, बेट जइ आवो बहेला वीर । त्यारे बोल्याछे संबंधी सउं, सारुं जाशुं राजि अमे छउं ॥१३॥ पण भोमियो जोइए जरुर, जाणे वाट घाट गाम पुर। त्यारे सभासाम्रं जोयुं स्वामी, दीठा सिचदानंद निष्कामी ॥१४॥ दृढ-समाधि निर्भय नर्चित, जेने प्रकट प्रश्चशुं प्रीत । तेने आगन्या आपीछे नाथे, तमे जाओ धर्मकुळ साथे ॥१५॥ तमे जइ पाछा आवो जन, करी रणछोडजिनां दर्शन। पछी आवशे मुनि समस्त, ज्यारे थाशे शीत ऋतु अस्त ॥१६॥ हशे वासुदेवनी इच्छाय, मुनि ने अमे आवशुं त्यांय । तमे तो सहु थाओ तियार, बांधो टीमण म करो वार ॥१७॥ पछी मुनि बोल्या कर भामी, सुखे जात्रा करावीश खामी । पछी तीरथे जावाने काजे, जोव-राव्युं मुहूर्त महाराजे ॥१८॥ भट मयारामे एम काव्युं, शुदी नवमीनुं मुहूर्त आर्च्यु । पछी नाथे आज्ञा तेने करी, चाल्या द्वारिकां सरता हरि ॥१९॥ माघवदी एकमने दन, नाह्या विष्र गोमती दइ धन । देखी परदेशि धाया गुगळी, जेम पिंडे आवे काक मळी।।२०।। करी टिलां ने कहे अमे गर, लेवा नाणुं थया ततपर । नोय त्यागी ने तीरथे आढी, पण ग्रुनिने नहातां

ना पाडी।।२१।। वायस सरखे विंटिने लीधा, मोटा मुनिने नावा न दीधा। बाळ जोबन ने घुद्ध वळी, दिये डारा कहे मारशुं मळी ॥२२॥ तुंतो सिद्धनुं कुंपछं दिसे, नाणा विना नावा मन हिसे। काट्य कंथा कोपीनेथी दाम, एम बोहे पुरुष ने वाम ॥२३॥ तोय म्रुनिनुं मन न क्षोभ्युं, कृष्णरमण रजे मन लोभ्यु । चित्ते चिंडि श्रीकृष्ण मूरति, हवी मुनिने अंतरवरित ॥२४॥ थइ समाधि अल्या शरीर, पड्युं पिंड गोमतीने तीर । तियां आव्यां अयोध्या रहेनार, मुनि न जागे करे पोकार ॥२५॥ कहे गोपाळ सहु सगाने, केम लइ चालछुं संगे आने। दिन पांच दशमां जागशे, रहेर्छ तो दन बहु भागरो ॥२६॥ माटे म करो चिंता एनी कांइ, चालो छापुं लइ बेटमांइ। मुनि मेलि गया आरांभडे, लिधि चौंपे छापो दामवडे ॥२७॥ बेसी वाणे गया बेटमांइ, कर्या दर्शन पूजा दामे त्यांइ। करी तीरथं विधि शोभती, पंच दन रही आव्या गोमती।।२८॥ शोध्या सिंदानंद न मळ्या, अव-ध्यवासी सहुने पुछी बळ्या । हवे कहुं मुनिने जे वीति, सहु सुणो ए धामनी रीति ॥२९॥ मुनि अस तजी त्रण दहाडे, नाह्या विना गया आरांभडे। जइ उतर्या लांघण चोरे, ज्यां अस विना जन बकोरे ॥३०॥ तियां तीर्थवासी तावे घणुं, पडे उपराउपर लांघणुं। बाल जोबन ने वृद्ध बहु, विना असे व्याकुळ छे सहु ।।३१।। कैक कुटे पेट शिश छाती, भाइयो भ्रख नथी जो खमाती। माटे दीयो छापो दया करी, अमे अन विना जार्श्व मरी॥३२॥ नापे छाप द्रव्यना लेनार, जेने नहि दया महेर लगार। तीर्थ-वासी पाडे बुंमराण, आपो छापो आप्यां जाणुं प्राण ॥३३॥ तैये बोल्यो चारणीयो आप, धन विनातो नहि दैये छाप । मरिमटो

जाओ ठालां घेर, तेनी अमारे नहि दया महेर ॥३४॥ एवं देखी आरांभडामांहि, मुनि करवा लाग्या त्राहित्राहि। आतो गाम यमपुरी जेवुं, कहीए कुरुक्षेत्र वळी एवुं ॥३५॥ जेवा गोमती-मांहि गुगळी, पापी अधिक एथी आ बळी। सर्वे दुःखतणा जे देनार, आहि आवि वश्यां नरनार ॥३६॥ माटे नहि दया केने लेश, वारु पुछि जोउं खोटी मेश। कहे मुनि सुणो भाइयो वात, तमे कृष्णभक्त छो साक्षात ॥३७॥ दियो छापो तमे दया करी, जाउं वेट हुं निरखुं हरि। तैये सांमळि मुनिना बोल, हिस कहां तु छी पशुतील ॥३८॥ आवे धुता घणा तुज जेवा, विना धने छापो बहु लेवा। गर्ज होयतो धन देइने, बुढा जा घर छापो लइने ॥३९॥ तैये बोलिया मुनि सुभागी, भाइ धन त्रिया अमे त्यागी। कहे तुं जेवा त्यागिने लाणुं, राखे कंथा कोपीनमां नाणुं।।४०।।पछी कंथा दिधी मुनि हाथे, जोइ पटकी पृथवी माथे। कहे जटामां ज्यांत्यांहि राखे, साधु नोय कोइ धन पाखे ॥४१॥ अमेतो नहि साधु तेजेवा, अमे खामिनारायण सेव्या। ज्यारे तुंज खामी-जिनो साधु, त्यारे तो नाणुं बेससे वाधु ॥४२॥ तारा खामिपासे बहु धन, करेछे मोटामोटा जगन। माटे शीद खोटी थाछ ठाली, छाप लेती धन लाबी आली ॥४३॥ एवे समे आन्यो एक खाखी, रोळी राखमांहि देह आखी। होह चिपियो हिघोछे हाथे, जटा मोटी विंटि वळी माथे ॥४४॥ किथी केफेकरी आंख्यो राती, चाले मरडावो काढवो छाती। भांग्य गांजानी भेळी कोथळी, बोले गळेथी वाणी गोगळी ॥४५॥ आवी अटक्यो कहे हो मने छापुं, अमे त्यागी तुंने घन नापुं। बोल्यो अडबंगा-इमां गाळ, सुणी उठ्यो चारण ततकाळ ॥४६॥ झाली डाढी चुंथी जटा बळी, महोर पांच माथेथी निकळी। कह्युं जो मुनि आंहिनी रीत्य, अमारे तो पैसासाथे प्रीत्य ॥४७॥ साधु तुं धन आप्य ने लाबी, नहि तो थाशे गति तारी आबी। कहे मुनि जटा मारे नथी, कंथा कौवीनमां धन क्यांथी ॥४८॥ पछी चाल्यो चारण हांसी करी, शीद वणमोते जाछ मरी । जो आवे तारा बापनो बाप, धन विना न आपिये छाप ॥४९॥ पछी मुनि भयाछे उदासी, दीठां पीडातां तीरथवासी। परदुःखे दुःखाणुंछे मन, चाल्या कहे न लेवुं आंहि अन ॥५०॥ वेसी वेडिमांहि पहोत्या बेट, पडी लांघणे मळियुं पेट। करवा दर्शन पोळ्यमां पेठा, छाप विना दरवाणिये दीठा ॥५१॥ कहे जाछ भाग्यो कियां भगवा, तुं शुं आञ्योछो अमने ठगवा । छाप विना जाछ छांनोछांनो, छो कपटी कोइ साधु शानो ॥५२॥ दइ ठेला उगामी ठपाट, मुनि हसि वेठा सामे हाट। तियां आव्यो बाह्मण गुगळो, धरनो धर्मथकी वेगळो ॥५३॥ तेने कहे एम मुनिराज, मने दर्शन करावी महाराज । विष्र कहे आंहिनी एवीरीत्य, केवळ पैसासाथे सहुने प्रीत्य । ५४॥ नाणुं लद्द वेचे निजनारने, आपे सुता भगिनी जारने । तेनी आ शहरमां नहि लाज, बीजां बहुबहु करे अकाज ॥५५॥ तारि पासे होय धन कांड़, चाल्य उतारुं हुं घरमांइ । सर्वे वाते थाइश सुखियो, नहितो जाइश द्रष्णनो दुःखियो ॥५६॥ तैये कहे मुनि खामिना छीए, दाम वाम थकी दूर रहीए। तैये बोल्यो बळी वित्र जन, तारा गुरुपासे बोळं धन ॥५७॥ बळी कहेवायछे प्रभु आपे, तेने मुकी आच्यो शिये पापे । एम कहिने ब्राह्मण गयो, मुनिने मन क्षोभ न थयो ॥५८॥ विजां बहु आवे पुरवासी, देखी निरधन ने करे हांसी। कैक डरावे देखाडे आंख्य, अतिदृष्ट दले धनधांख्य ॥५९॥ बळतुं ग्रुनिये मन विचार्यं, त्यांगी आवशे आंहि हजारं। तेह ग्रुनिनी शिपेर थाशे, दर्शन विना दुःखी थह जाशे ॥६०॥ पळ एक हुं आंहि न रहुं, वछं वाट पांचाळनी लहुं। पण करी गुरुए आगन्या, आविश मां छाप दर्शन विना ॥६१॥ एह वचन खटके शरीर, केम करशे हवे बलबीर। छाप दर्शन विना पाछो जाउं, गुरुजिनो गुनेगार थाउं॥६२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक श्रीसहजानंदस्वामि-शिप्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये अयोध्यावासि ने सिचदानंदमुनि द्वारिकां गया एनामे बांणुंमुं प्रकरणम्॥९२॥

पूर्वछायो-जेवी गणीये गोमती, तेवुंज आरांभड गाम। बेट पण विज्ञं नहि, जाणुं त्रणे धर्मनां धाम ॥१॥ ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य शूद्र, सहु करे दामदाम । पैसा कारण प्राण लेवा, बेठां पुरुष ने वाम ॥२॥ दाम विना दरशननी, छुटी ते न करे छेक। आश तजी मुनि अंतरे, पछी कयों एम विवेक ॥३॥ अंतरजामी आपशे, दरशन जाणी निजदास। दृढ आसने बेठा ग्रुनि, मनमां आणी विश्ववास ॥४॥ चोपाइ-पछी मुनि बेठा हह ध्याने, मांड्युं अखंड भजन एकताने। हता आपे लक्षवान अति, हदे देखे हरिनी मूरित ॥५॥ तोय गुरुए कहुं छे वचन, तेम करवा इच्छेछे दर्शन । थया ए ठामे उपवास चार, वळी तिज तोयनो आधार ।।६॥ मुनि हाथ जोडी हरि आगे, करें स्तवन दर्शन मारे। जय कृष्ण प्रसन्न थाओ आज, दियो दर्शन मने महाराज ॥७॥ जय जदुपति जगवंद, जय रुक्मिणीयति राजंद । जय भव ब्रह्मापति नाथ, जय स्तवन करे सुरसाथ ॥८॥ कीर्ति भक्ति सत्य धर्म कहीए, तेना आश्रयरूप हरि लहीए। द्वारामति पवि

दीन जाणी, करो मेर लेर मन आणी ।।९।। तमे आगे उगा-रिया दास, करी असुरजननो नाश। पुर्या द्रौपदी चिर दयाळ, आव्या गरुड तजि ततकाळ ॥१०॥ ताण्या केश दुष्टे करी अन्या, तेनी त्रिया करी केश विना। वळी दुखासा देवा शाप, आव्या शिष्य संगे लइ आप ॥११॥ तेथी पांडव उगारी लीघा, जमी शाक दूस सह की घा। पारिजातक खर्मथी आणी, राजी करी सत्यभामा राणी।।१२।। भौमासुर मारी कर्यु काम, हर्यो गर्व सुरे-शनो श्याम । विजां करी बहुवहु काज, जन आगे उगार्यी महा-राज ॥१३॥ उद्धवीय हुं तमने आश्ररी, कोटिकोटि जतन मे करी। केम देता नथी दरशन, राय रणछोड थइ प्रसन्न ॥१४॥ आवी केम करी कठणाइ, हुंतो विचारुंछुं मनमांइ। वसुदेवदेवकी वंधावी, करी लीळा गोकुळमां आवी ।।१५।। राख्यां वार वर्ष बंधिखाणे, तेतो सहु जगतमां जाणे। तेदी कर्युतं कठण मन, नथी तज्युं हुं इजि मोहन ॥१६॥ घणुं हेत करी गोपीसाथ, तेने तजी आव्या आंहि नाथ । मेली रोती रझळती वने, तेनी महेर नाबी कांइ मने ।।१७।। तेनी तेज मेली नथी मति, मारी केम सांभळी विनति । वळी करी निजकुळ नाश, आवी आंहि बस्या अविनाश ।।१८।। जाणी यादव भूमिनो भार, कर्यो छोटा मोटानो संहार । एज बेगमां चट्युछे मन, तेसारु पीडोछो निज-जन ।।१९।। पापी पासळे जन पीडावो, तमे दीनबंधु शाना कहावो । धनवाळा धका वहु आपे, निरधनने नित्य संतापे ।।२०।। प्रश्च त्यागी जे तमारा जन, तेने पासळ क्यांथकी धन । तेनुं करता नथी उपराछ, तमे कावोछो दीनदयाछ ॥२१॥ निर्धननुं धन छो महाराज, वळी कहावो गरीब नवाज। अनाथना

नाथ मगवान, कांरे न सुणो विनति कान ॥२२॥ तमने वहाला उद्भव अत्यंत, तेना संप्रदायनो हुं संत । जेवो छउं तेवो नाथ तमारी, वालाजि मुजने म विसारी ॥२३॥ थाय छोरु कछोरु जो कीय, तजे नहि तेने तात तीय । एम कहिने धरियुं ध्यान, दीठा अंतरमां भगवान ॥२४॥ आरत्यवाननी आरत्य जाणी, मळया मुनिने शारंगपाणी । महावदि एकादशी विजया, ते निशि मुनिपर रिक्षिया ॥२५॥ दीघां अंतरमां दर्शन नाथे, रुक्ष्मी सत्यभामा छे साथे। कोटि सर्यसम अजवाळे, उद्धव सात्यिक चमर ढाळे ॥२६॥ अर्जुने छत्र कनकतुं धर्यु, नौत्तम रूपे मुनि-मन हुं । नील कलेवर नीरद जेवं, मुनि करे दरशन एवं ॥२७॥ दीठा अंतरे अंतरजामी, वाध्युं आनंद वेदना वामी । पछी भावे बोल्या मगवान, मुनि माग्यमाग्य वरदान ॥२८॥ जे मागिश मुनि मुज पासे, ते आपीश अधिक हुलासे। एम कही अंतर्धान थिया, मुनि ध्यानथी तर्त जागिया ॥२९॥ थइ व्याकुळ नीसर्या वहार, दीठा तेमना तेम ग्रुरार । अंबर आभूषण अति मारी, माथे मुगट छे सुखकारी ॥३०॥ कंठे हार मनोहर मोति, प्रसन्तमुखे शोभे शशिज्योति। भुज चारमां आयुध चार, शंख चक्र गदा पद्म सार ॥३१॥ एवां आयुध धरिने हाथे, दिधां दर्शन द्वारिकानाथे। वळी प्रेमाधीन मुनि जोया, सहुं कष्ट जाणी नाथ मोह्या ॥३२॥ पछी अलवेलो अहळ ढळ्या, मुनिने उरमां लइ मळ्या। वालो कहे तमने जे वहालुं, मागोमागो धुनि-बर आलुं ।।३३।। मुनि कहे जय मंगळू मूरति, यदुपति न मेलुं उरथी। तमे छो करुणाना दरीया, दर्शन दइ दुःख संकट हरियां ॥३४॥ हवे मागुंछुं हुं बहुनामी, सुणो चित्त दइ मारा खामी।

अमारे गुरुए आज्ञा किघी, त्यागी गृहीए ञिश घरी लिघी॥३५॥ द्वारिकानी यात्रा करिलेवी, हमणां आज्ञा अमने छे एवी। म्रुनि कहे गृही धन धरशे, त्यागी केम करी तीर्थ करशे ॥३६॥ मने जे वीति ते कहिदाखुं, एविष्ये लोक पीडाय लाखुं। गोम-तीमां नातां बंधि किथी, मने छापोपण नव दिथी ॥३७॥ थया उपवास अगियार, त्यारे तमे मळिया मुरार । नमेरा बेठा पइसा लेवा, न मळे त्यागिने नाणुं देवा ॥३८॥ माटे ए मागुं चित्त धरिए, सहुने तीर्थ थाय तेम करिए। पछी नाथ बोलिया विचारी, कह्युं वचन सर्वे हितकारी ॥३९॥ मुनि सत्य माने वात मारी, सर्वे पुरीश इच्छा हुं तारी । लोभी निर्दय तीर्थ रहेनारा, छुंटे धन पीडे जन मारा ॥४०॥ तेमाटे वरताल आवीश, सर्वे तीरथ संगे लावीश। लक्ष्मीनारायणनी म्रति, तेमां वसिश कृहे यदुपति ॥४१॥ छाप गोमती संगे लइश, त्यागि गृहिने दर्शन दइश । थाशे सहुने दर्शन त्यांइ, हवे नथी रहेवुं पळ आंइ ॥४२॥ सत्य वचन मानो मुनि मारुं, तमे आवे थयुं घणुं सारुं। हवे सुखे चालो तमे यांथी, जुवे वाट गोमतीए संगाथी।।४३।। एम मुनिने कहि भगवान, पछी थयाछे अंतरधान। मुनिए विचार्यं मनमांये, थयां दरशन गुरुक्तपाये ॥४४॥ पछी मगन थइ मुनि वळ्या, आवी अयोध्यावासिने मळ्या । पुछि खत्रर परस्परे, कह्यं न कह्यं ते मुनिवरे ॥४५॥ हतो दिवस ते द्वादिश, करी पारणां त्यां रह्या निशि। थयुं सन्नार चालिया सहु, सांभरे द्वारकां वहुवहु ॥४६॥ दले दुःखी सुवे सहु ज्यारे, देखे स्वममां कृष्णने त्यारे। जाणुं संगे आवेछे महाराज, भेळो लइ सर्वे समाज ॥४७॥ एम नित्ये करता दर्शन, आच्या गढडामां सहु

जन । संध्यासमे समामांहि इयाम, बेठाता संतना सुखधाम ॥४८॥ तियां कर्या दंडवत आवी, हेते लिधा पासळ बोलावी। भले जइ आव्या द्वारामति, धन्यधन्य तमारी भगति॥४९॥ पछी बोल्या मुनिवर आपे, आव्या कुशळ तमप्रतापे। स्नान छाप दर्श-नतुं दुःख, तेतो केम कह्युं जाय मुख ॥५०॥ सुणि त्यागी थयाछे उदासे, तियां आपणे केम जवारो । वर दीधानी वात कही ज्यारे, त्यागी प्रसन्न थया सहु त्यारे ॥५१॥ सुणी गुरुए कर्यो सतकार, भाग्यवान तुं साधु अपार । मुनि कहे प्रताप तमारो, हवे वरताल वहेला पथारो ॥५२॥ खामी प्रसन थइ एम कहां, जावुं वरताले निश्चे ए थयुं। फुलदोल जे फागणशुदि, पहोचवुं पुन्यम दन तेदि।।५३॥ त्यागी गृही बाइ भाइ जेह, लखी कागळ तेडाच्या तेह । ते रात्रि सहु सरण करता, सर्वे संत आनंदमां सुता ॥५४॥ दिठा स्वमामां लाडिलो लाल, रमा सहित जाता वरताल । बोल्या परस्पर परभात, कही खन्नानी गुरुने वात ।।५५।। खामी कहे सत्य वात सारी, करो वरताल जावा तैयारी। चाल्या सातम्ये सहु जनवृंद, गढडेथी खामी सहजानंद ॥५६॥ करी उत्सवपर तैयारी, संगे लेइ घोडानी असवारी। वाजिवाम ब्रहि डावे हाथे, लीधा सुभट जन बहु साथे ॥५७॥ वोडी शोमे सोनेरी माजे, श्वेत वस्त्र पहेर्यां छे महाराजे। केशर कुंकम तिलक कर्या, नौत्तम रूपे जनमन हर्या ॥५८॥ मजले मजले थाय उतारा, संघ सहित रहे गाम बारा । कुंडळ खसतेथी बोरु रह्या, शिंजि-वाडेथी वरताल गया ॥५९॥ शुदी एकादशी वरताल, आव्या नाथ साथ लइ मराल । आव्या तेदिज द्वारकानाथ, राणी रुक्मिणी लइ साथ ॥६०॥ लक्ष्मीनारायणरूपे कृष्ण, करे बहु

देशनां जन द्रष्ण । द्वारीकांथी रणछोड आव्या, वस्या वरताले जनमन भाव्या ॥६१॥ कर्यो उत्सव फुलदोल भारी, पूज्या शिष्ये स्वामिए मुरारी। द्वारिकांथी चाल्या जेदी नाथ, सर्वे देव तीर्थ आव्यां साथ !!६२॥ घार तळाव सुंदर अति, कृष्ण कहे त्यां रहो गोमती। बीजा देव तीर्थ आसपास, वाले कराच्यो वर-ताले वास ॥६३॥ फह्यं स्वमामां द्वारिकानाथे, मारां आयुध छापच्यो हाथे। वचने छाप आपी वरताल, नरनारी थयां सहु निहाल ॥६४॥॥ रामनवमीए पूजा करी, विमळा एकादशी अर्च्या हरि। तियां जयजय बोलेछे जन, देखी दुएनां दाक्षियां मन ॥६५॥ एम थाय लीळा नित्य नवी, कहे एक मुखे केम कवि । नित्य तळावे विराजे नाथ, मुनि सतसंगी लइ साथ ।।६६।। तियां थाय उत्तर प्रशन, करे अनेक जन दर्शन। वाजे वार्जित्र तियां अपार, लावे पूजा जन बहु हार ॥६७॥ लइ पीच-कारी हरि हाथ, रमे रंगे सखासंगे नाथ। वळी आपी आज्ञा अविनाश, गाओ गरबी रमो जन रास ॥६८॥ गाळे सर सत-संगी सह, देखी राजि थाय वालो वहु। ज्यारे आवे उतारे महाराज, उपडावे इंख्यो मंदिरकाज ॥६९॥ एक दिन राजि थइ नाथ, मळ्या मुनिने भरीभरी बाथ। वळी जमाडे जनने आपे, एतो वात आवे केम मापे ॥७०॥ एम लीळा करी बहु द्न, जोइ जन थयाछे मगन । कर्यो उत्सव एक मासनो, पुरीयो मनोरथ दासनो ॥७१॥ पछी प्रभुजि त्यांथी पधार्या, आवी गढडे आनंद वधार्या । सुंदर वर्ष ते सारुं कहीए, चैत्रशुदी एका-दशी लहीए।।७२॥ तेदि उत्सव कराव्यो वाले, आव्या द्वारका-नाथ वरताले । सत्य वात नजरनी दिठी, लागे हरिजनने ए

मिठी ॥७३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्थामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये सचिदानंदस्वामिए स्तुति करी ने द्वारिकांनाथे दर्शन दिधां ने वरताल आव्या एनामे त्राणुंमुं प्रकरणम् ॥९३॥

पूर्वछायो-वळी लीळा वरतालनी, कहुं एकादशीनी अनुप । पोते प्रभुजि पथारिया, श्यामळियो सुखरूप ॥१॥ सुंदर समैयो आवियो, कार्तिक शुदी एकादशी। आव्यो दिन उत्स-वनो, कहे संतने हरि हुलशी ॥२॥ अवश्य समैयो आपणे, करवी ते वरपो वरपनो। सतसंगी त्यां सह मळे, लिये लाभ दर्श स्पर्शनो ॥३॥ एम कहिने कंकोतरी, मेली लखिने महा-राज । वरताल वहेला आवज्यो, सतसंगी सहु मुनिराज ॥४॥ चोपाइ-पछी पोते थयाछे तयार, संगे लइ सखा असवार। पहेर्यो अंबर सुंदर अंगे, शोभे श्यामळी सखाने संगे ॥५॥ करे मजलेमजले मुकाम, पुरे जनना मननी हाम । कारीयाणी कमि-यार्छ गाम, आच्या आडेवे सुंदरभ्याम ॥६॥ त्यांथी वालो आच्या वरताल, निर्षि जन थयाछे निहाल। जन जोइ पाम्याछे आनंद, जयजय बोले जनवृंद ।।७॥ दिये दर्शन प्रसन्न नाथ, निर्धि सुख लिये सहु साथ । हरि हसि जोयुं सहु साम्रं, पुरी जनना मननी हामुं ॥८॥ जन जोडी उमां सहु हाथ, आपो आगन्या अमने नाथ । कराविये रसोइ तमकाज, जमो महेर करीने महाराज ॥९॥ हरिए भाव भगतनी जोइ, कहुं करी उत्तम रसीइ। पछी जने भोजन बनाच्यां, जम्या जीवन ते मन माच्यां ॥१०॥ पछी वसन भूषण पहेरावी, करी आरती ते मन भावी। पछी जन लाग्यां संहु पाय, रहेज्यो नाथिज अंतरमांय ॥११॥ अमे

্মি৽ ৭৪

छीए नाथजि तमारां, सगां सबंधी सहु अमारां। तेने कहेछे हिस जीवन, सारुं करज्यो सहु भजन ॥१२॥ एम जमे जनने उतारे, जन जमाडी कारज्य सारे । कोइ चरचे चंदन उतारी, कोइ छांटे गुलावनां वारि ॥१३॥ कोइ चोळे अत्तर आवी अंगे, कोय पहेरावे हार उमंगे। कोइ तोरा गजरा फुलना, पहेरावे हार मोंबा पुलना ॥१४॥ एम लाबो लिये सहु जन, प्रभु छे सहुपर प्रसन्न । पछी एम बोल्या अविनाशी, सुणो सत्संगी मुनि संन्यासी ॥१५॥ जुवो राधाकृष्णनी मृरति, अमारीपण शोभेछे अति । तेम नारायण लक्ष्मीपति, सारां शोभेछे धर्म भगति ॥१६॥ थयो जेदिथी एहनो स्थाप, थयां तेदिथी सह निष्पाप । एम वात करेछे महाराज, सुणे सतसंगी मुनिराज ॥१७॥ सांभळी जन हरख्यां अपार, जयजय बोले नरनार । तेदि वत हतुं एकादशी, पुरी दीपमाळा तेह निशि ॥१८॥ तियां बपोरिया अंजवाळे, नाथ सभा उभा थइ भाळे । आज मळ्या मनुष्य अपार, बहु पुरुप ने बहु नार ॥१९॥ सारा समैया सुंदर थया, एम कहिने हरि हसिया। पर्छी द्वादशी पारणा करी, आविवेठाछे चौतरे हरि ॥२०॥ तियां वाजित्र वाजे अपार, करे दर्शन सहु नरनार । लावे पूजा पूजवा आधार, फऋ फुल ने अमूल्य हार ॥२१॥ तेणे शोभेछे स्याम म्रति, थाय उत्तर प्रश्न अति। एम लीटा करे भगवान, दिये दनभर दर्शनदान ॥२२॥ सर्वे सुख लिये जन जोइ, एम करतां वीत्या दन दोइ। पछी आव्यो पुन्यमनो दन, आव्या दरशने वहु जन ॥२३॥ तेने दर्शन दिधां दयाळे, अतिसामर्थ्य सहित कृपाळे। तेतो दर्शन करिने गया, सतसंगी त्यां सर्वे रह्या ॥२४॥ पछी सांझे पुरी दीपमाळ, वेठा

आसन उचे दयाळ। सर्वे जन जोइ रह्या साम्रं, निर्खि नाथ पुरे हैये हाम्रं ॥२५॥ पछी नाथ वोल्या एम वाण, सर्वे सांभळो संत सुजाण । पुरो थयो उत्सवनी दन, जाज्यो ज्यांज्यां कह्युं त्यां जन ॥२६॥ कांइक संत रहेज्यो अमसाथ, जावुं सुरत बोल्या एम नाथ । एम कहीने उभा थया वळी, आवो मिळवे मंडळी मंडळी ॥२७॥ अलवेलोजि अइळ ढळ्या, सर्वे संतने हेते शुं मळ्या। संत चाल्या सहु शिख मागी, त्रीते पाय प्रभुजिने लागी ।।२८।। पछी पोते करीछे तैयारी, चाल्या सुरतपर सुखकारी । अलबेलोजि अंतरजामी, अव्या बोचासणे बहुनामी ॥२९॥ तियां सुंदर करी रसोइ, जम्या नाथ सखा संत सोइ। रही रात्य चाल्या ततकाळ, आव्या देवाणे दीनद्याळ ॥३०॥ पुर-पति सुमति छे सारो, कर्यों तेने ते घेर उतारो । सह राजि थया निजजन, करी महाराजनां दरशन ॥३१॥ सुंदर करात्री सारी रसोइ, जम्या नाथ भाव तेनो जोइ। करवा अनेक जीवनां काज, पछी मही उतर्या महाराज ॥३२॥ तेने तेडे आवियुं तळात्र, तियां बेसि बोल्या पछी माव । आंहिंथी आवशे कोण गाम, कियां करशुं आज विशराम ॥३३॥ तैये एक बोल्यो हरिजन, वाला आवी अमारे भवन । पछी मुनि एके जोड्या हाथ, हवे सिधा पथारिये नाथ ॥३४॥ वहु दिननी अर्जि छे मारी, प्रभु पुरि करो त्यां पधारी । त्यांथी नाथ थया असवार, उतर्या गाम कारेलि बहार ॥३५॥ तियां कराव्यो सुंदर थाळ, जम्या दया करिने दयाळ । आपी सखाने सुखडी सारी, रह्या रात्य तियां सुखकारी ।।३६।। त्यांथी चाल्याछे दीनदयाळ, महेर करी संभार्या मराळ। जाओ लावो मुनिने बोलावी, करे दर्शन संत सहु आवी

॥३७॥ पछी त्यांथी चाल्या अलवेल, चाले वेगे करे नहि वेल। आच्युं अरण्ये एक सरोवर, तियां उतर्या क्याम सुंदर ॥३८॥ नाह्या नीर जोइ निरमळ, पूजा करी पिघां मिष्ट जळ । पछी त्यांथी थया असवार, आव्या आमोद्ये प्राण आवार ॥३९॥ तियां भट्ट वसे दीनानाथ, सदा रहेछे जे क्यामने साथ । वळी वणिक हरजीवन, निर्खि नाथने थयो मगन ॥४०॥ पछी उभो जोडी आगे हाथ, करो भोजन रहो आंहि नाथ। त्यारे ज्याम कहे सांभळो जन, करावज्यो मुनिने भोजन॥४१॥एम कहीने चालिया स्वामी, आव्या गाम बुवे बहुनामी। तियां भक्त वसे कानदास, आच्या तेने घेर अविनाश ॥४२॥ इरी भोजन रजनी रह्या, तियां उत्तर ने प्रश्न थया। आव्याता त्यां मोटा महीपति, निर्खि नाथने करी विनति ॥४३॥ त्रभ्र अमे तमारा जो छीए, घणुं घणुं शुं मुख्यी कहीए। तियां कविए कर्यु स्तवन, द्विज नाम ते गोवरधन ॥४४॥ सुणि नाधे कर्यो सतकार, तें कहा एवा छे जगदाधार। एम कही उठ्या अविनाशि, सदा स्यामसंदर सुख-राशि ॥४५॥ रह्या रात्य सुखे एह ठाम, पछी आव्याछे केलोद गाम । तियां पुर्यो जनमन भाव, त्यांथी आवी उतर्या तळाव ॥४६॥ सुंदर सारुं त्यां शरकरा वारी, करी पान चाल्या सुख-कारी । आव्या शहेर भरुचमां स्याम, पुरी जनना मननी हाम १।४७।। पछी त्यार करावियां झाझ, संघे सहित उतर्या महा-राज। नदी नर्मदा नामे ते सइ, स्पर्शि चरण पावन थइ ॥ ४८॥ घडी वेठा वालो तेने तट, तियां राजि कर्याछे खेवट। त्यांथी चाल्या चतुर सुजाण, कर्या अंकलेश्वरे मेलाण ॥४९॥ आवी पाय लाग्यो पुरपति, आज आव्या नाथ अमवति । हती घणा

दिवसनी हाम, आज निर्खि सर्यो मारां काम ॥५०॥ दह दर-शन तेने द्याळ, पछी जम्या नाथ ने मराल । पछी वेल्यपर पोढ्या क्याम, रह्या रात्य वाली एह गाम ॥५१॥ थयुं सवार चालिया संत, संघमेळा शोभे भगवंत। कहे सखाने श्रीभग-बान, हालो हवे जाइए हिंदुस्थान ॥५२॥ सुंदर जनमभूमि अमारी, एम कहे सखाने सुखकारी। एवी वात कहेतां वाटमांइ, आवी नदी उतरिया त्यांइ ॥५३॥ करी स्नान पूजा एह ठाम, सुंदर साथु जमी चाल्या क्याम । शोभे सखासंगे वालो आप, निर्सि नरनारी थाय निष्पाप ॥५४॥ त्यांथी आविछे एक तलाइ, शोमे बृक्षु त्यां सुंदर छाइ। तियां भद्र थया भगवान, दीघां दासने द्रशनदान ॥५५॥ त्यांथी चालिया दीनदयाळ, आव्या नाथजी गाम कोशाल। आबी उतर्या वाटिका जोइ, तियां करिछे आपे रसोइ ॥५६॥ कर्या सुंदर सुरण शाक, घणे घृते पकाविया पाक । आपे जमी जमाडिया जन, रह्या रजनी त्यां भगवान ॥५७॥ तियां आव्या सुरतना वासी, नरनारी जे प्रकट उपासी । रथ वेल्य लाव्या घणी गाडी, जेम उमंगे मेघ अपाडी ॥५८॥ पूर्व-छायो-कहुं लीढा हुं केटली, एक जिमे जश अपार। अनंत लीका लालनी, कोय नर न पामे पार ॥५९॥ पछी त्यांथी पधारिया, उतर्या तापीतीर । संगे सहित स्यामळी, नाह्या निरमळ नीर ॥६०॥ इति श्रीमदेकांतिकथर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामित्रिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे वरताल्ये प्रयोधनीनो उत्सव कर्यो एनामे चोराणुंमुं प्रकरणम् ॥९४॥

पूर्वछायो-संदर शहेर सुरतना, सतसंगी सर्वे सुजाण । प्रश्रु त्यां पधारिया, जनहेते जीवन प्राण ॥१॥ चोपाइ-पछी

त्यांथी चालिया दयाळ, दिटी वाटे वाटिका विशाळ। जोइ जायगा सुंदर सारी, वहे पासे निरमळ वारी ॥२॥ तियां विवि-ध्यनां वेलि वन, विजां जनने रहेवा भवन । तियां उत्तरिया अविनाश, आव्या दरशने बहु दास ॥३॥ लाव्या हार पूजा बहुपेर, आच्या जन जेम सिंधुलेर । करी पूजा लागे सहु पाय, बाला आवा रहेज्यो उरमांय ॥४॥ एम स्तवन करे बहु जन, कहे भले आच्या भगवन । आज अमपर अढळ ढळ्या, बहु दनना बायदा बळ्या ।।५॥ एवी सांभळी दासनी वाणी, हेते बोलाव्या पोताना जाणी। पछी जने कराच्यां भोजन, जम्या भाव जोइ मगवन ॥६॥ जम्या सखा बहु मुनिजन, पछी थइ संध्या वीखो दन । रह्या रात्य सुखे एह ठामे, पछी शुंशुं कर्यु सुखधामे ।।७।। पोढी जागिया जीवनप्राण, करवा बहु जीवनां कल्याण। कर्यो नित्यविधि ते दयाळे, दयासिंधु दीनप्रतिपाळे तटा। त्यांथी उठ्या पोते भगवान, दिधां दासने दर्शनदान । पछी जन लाच्या सुखपाल, सुंदर दर्पणे दिसे विशाल ॥९॥ तेणे बेटा पछी बहु-नामी, अलबेलोजि अंतरजामी। वाजे वार्जित्र आगे अपार, धायां दरशने सहु नरनार ॥१०॥ धीरे धीरे धरे पग भोइ, जन मगन थया नाथ जोइ। पछी शिवालय गया सुजाण, करवा बहु जीवनां कल्याण ॥११॥ त्यांथी वळ्याछे दीनदयाळ, कह्युं जन थयो प्रभु थाळ । हति रसोइ नजिक पास, जने जमाडिया अविनाश ।।१२।। पछी ब्रेमेशुं पूजिया नाथ, सुंदर वस्त्र पहेरा-वियां हाथ। चर्च्यां चंदन अत्तर भारी, अर्पि हार आरती उतारी ॥१३॥ पछी आगे उभां जोडी हाथ, जयजय बोले मुखे गाथ ! पुजि नाथ लीधो लावो भारे, पछी प्रभुजि आव्या उतारे

॥१४॥ तियां शोभ सुंदर आंवली, घणि घाटि छे छांया जो मली । तियां बेठा आवी बहुनामी, अलबेलो जे अंतरजामी ।।१५॥ कहे मुनिप्रत्ये भगवंत, जमी सज थाओ सह संत । आज जाबुंछे शहरमां सहुते, देवा दर्शन जन बहुने ॥१६॥ एवी बात करी ज्यारे वाले, मानिलिधि ते सहु मराले । त्यांतो त्यार थयांतां भोजन, जमी सज थया मुनिजन ॥१७॥ एम करतां वीति घडी चार, आव्यो सामो शहेरसरदार । तेतुं नाम अर्देश-रजि छे, अतिडायो जाते पारिश छे ॥१८॥ मोटा पुराणी पंडित संगे, आव्यो तेडवा अतिउमंगे । रथ वेल्य पालखी पेदळ, बहु वाजित्र संगे सबळ ॥१९॥ आवी लाग्यो प्रश्नुजिने पाय, निर्खि हरूयों अति मनमांय । पछी अलबेलो अढळ ढळ्या, नाथ बाथ भरी तेने मळ्या ॥२०॥ नाथ कहे सुखी छो तन मने, कहे सुखी हुं आज दर्शने। बहुदिननी जोतोतो बाट, बाला तमारा दर्शनमाट ॥२१॥ बहु ताण्युं तमे अमसाथे, आज महेर करी मुजमाथे । जेम आच्याछी आज लहेरमां, तेम नाथ पधारी शहे-रमां ।।२२।। करे दर्शन सहु नरनार, थाय बहु जीव भवपार । नाथ कहे सारुं चालशुं त्यांइ, पण रहेवा रुई बहु आंइ ॥२३॥ पछी तर्त थया असवार, चाल्या सुरत शहेरमोझार। आगे पल-टण पांळा अपार, बिजा मनुष्य हजारी हजार ॥२४॥ बाजे विवि-धनां वाजां वटी, ढोल त्रांसां कासां ने वांसळी। भेरी शुंगळ रणशिंगां तुरी, रही शरणायुं खर पुरि ॥२५॥ थाय घोर नगा-रांनी घणी, बहु शोभे असवारी वणी । चाले धीरेधीरे पग धरे, जुवे जन तेनां मन हरे ॥२६॥ शोभे श्यामळो सुंदर घोडे, सारा सखा बीजा बहु जोड़्ये। शोभे सुरवाळ श्वेत अंगी, शिशे

रेटो कसुंबी सोरंगी।।२७।। होळे चमर तेपर दाँस, शोभे अतिरुडा अबिनाश । केडे रथ वेल गाडी घणी, वहु शोभा पालखिनी बणी ॥२८॥ एम शोभेछे वहु समाज, चाल्या मुनिसंगे महा-राज । विजां बहु जन संगे सुजाण, चाल्या जेम उलट्यो मेराण ।।२९।। चडी गर्द ढंकाणो गगन, जेम घटा काढी चड्यो घन । एवीरीत्ये प्रभुजि पधार्या, जनने मन मोद वधार्या।।३०।। आव्या शहरमां सुंदर क्याम, धायां दर्शने पुरुष ने वाम । आवी उमा छे वहु बजारे, लेखुं न थाय लाख हजारे ॥३१॥ कैक चड्यां अटारी झरुखे, कैक गढ़ घर वळी गोखे। पहेरी नीली पीळी लाल साडी, श्वेते ग्रोभे जेम फुलवाडी ॥३२॥ जेम व्योमे विमा-ननी हार, एम उंचां चड्यां नरनार । हाथ जोडी बोले एम जन, जयजयं नाथ घन्यघन्य ॥३३॥ भले पघारिया तमे नाथ, आज सहु अमे थयां सनाथ । तेनी बंदना मानी मुरार, आव्या उतारे वाडी मोझार ॥३४॥ पछी वेठा अगाशिए आप, निर्धि बहु जन थया निष्पाप । देतां दर्शन आथम्यो दिन, पछी भूधरे कर्यों भोजन ॥३५॥ जमी पोढिया प्राण आधार, वीति रजनी थयुं सवार । त्यारे जागिया जगजीयन, दिथां सहु जनने दर्शन ॥३६॥ पछी हिंडोळो सुंदर सार, लाव्यो भावे भगत सुतार । ते उपर वेठा अविनाश, निर्खि मगन थयां निजदास ॥३०॥ तियां वाजे वाजित्र अपार, जेजेशब्द बोले नरनार । गान ताने गाय गुणिजन, करे मुनिजन कीरतन ॥३८॥ आवे लोक हजारे हजार, करे दरशन नरनार। थाय रसोइ सुंदर सारी, जमाडे जन पंक्ति वेसारी ॥३९॥ अति आनंद उत्सव थाय, बहु हर्प-भर्या दिन जाय । एम करतां वीत्या दिन दोइ, बोल्यो पुरपति

राजि होइ ॥४०॥ बहु मतपंथ छे संसार, तेतो दाम ने वामना यार । आतो धन त्रिया दोय त्यागी, जेनी लगनि साहेबशुं लागी ।।४१।। आवा संत नथी जगमांय, एनां दरशन कहो केम थाय । महेर करीए आंहि पधारे, नहि तो अवस्य जाबुं त्यां मारे ॥४२॥ एवो भाव भूपतिनो जाणी, पोते पधार्या शारंग-पाणी। अति आदर दइ राजन, पुछचा पुछवा जेवा जे प्रश्न ॥४३॥ तेनो उत्तर दीधो दयाळ, सुणी राजि थयोछे भूपाळ । कही संप्रदाय उद्धवी रीत्य, लखिलिधि राये करी प्रीत्य ॥४४॥ पछी बहु करी सनमान, पधराच्या पाछा भगवान । बीजा राजा रहे पुरमांइ, प्रभु पधारिया बळी त्यांइ ॥४५॥ तेणे अति कर्यु सनमान, भावे भरी पूज्या भगवान । चुवा चंदन गुलाब वारी, आण्युं अत्तर सुगंधि भारी ॥४६॥ तेणे पूजि पछी जोड्या हाथ, करी स्तवन नामियुं माथ। कहे भले पंघायी महाराज, थया पावन सहु अमे आज ॥४७॥ एम करी विनति भूपाळ, पाछा पधराविया द्याळ । पछी शिरपाव छाव भरिने, लाञ्या उतारे आप्या हरिने ॥४८॥ वळते दिवस अरदेशरे, प्रभ्र पधराव्या निज्ञधेरे। सर्वे मुनिसहित महाराज, पधराव्या समारी समाज ।।४९।। दीप मञालो मेताबु वाञ्ची, बहु काच हांडियो प्रकाशी। मध्ये ढोलियो सुंदर ढाळी, तेपर पधराव्या वनमाळी ॥५०॥ पछी पूजिया दीनदयाळ, त्यारपछी पूजिया मराळ। पछी थयां उत्तर ने प्रश्न, कर्यों संते पछी कीरतन ॥५१॥ सुणि राजि थया सहु जन, पछी यांथी चाल्या भगवन। आवी उतारे रजनी रह्या, जमी सवारे साबदा थया।।५२॥ आच्या वळाववा सहु मळी, बहु गाजते वाजते वळी । धीरेधीरे देता दरशन, आच्या पुरवहारा भगवन ॥५३॥ २४ भ०चिं०

बेठा बाग मस्तुमां वे घडी, आपी अर्देशरने पाघडी। पछी तर्त थया असर्वार, आव्या गाम कोशाल मोझार ॥५४॥ रही रात्य बेठा रथे राज, खांते खेडवा सारु महाराज । आपे सारथि थइ सुजाण, कर्यो अंकलेश्वरे मेलाण ॥५५॥ त्यांथी नर्मदा उतरिया नाथ, पछी वेरियो मुनिनो साथ । पोते आविया केलोद गाम, रही रात्य त्यां चालिया क्याम ॥५६॥ आव्या आमोदमां दया करी, जम्या सखासहित श्रीहरि । पछी तर्त करीछे तैयारी, चाल्या जनतणा हितकारी ॥५७॥ आव्या कारेली गामे कृपाळ, मही सिंह उतर्या दयाछ । पछी रह्या बदलपुरे रात, त्यांथी थघारिया परभात ॥५८॥ आव्यां आडां खंभातनां जन, तेने दइ चाल्या दरशन । त्यांथी आञ्या गुडेले गोपाळ, कर्या आपे त्यां शाक रसाळ ॥५९॥ जमी जमाडिया निजजन, पछी त्यांथी चाल्या भगवन । आवी रात्य घोलेरामां रह्या, त्यांथी कारीया-णिये आविया ॥६०॥ एम करी बहुनां कल्याण, आव्या गढडे स्थाम सुजाण । सारा वरषमां सुखराशी, मागशर शुदी एकादशी ॥६१॥ तेदि आविया सुरत जइ, जन बहुने अभयदान दइ । कर्यो दिगविजय जगमांइ, खोटा गुरु रह्या खत्ता खाइ ॥६२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदखामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिचरित्रे महाराज सुरत पधार्या ने अर्देशरने पाघ आपी एनामे पंचाणुमुं प्रकरणम् ॥९५॥

पूर्वछायो-उत्सव नित्य अति घणा, थाय अहोनिश आनंद । तापत्रय तियां निह, जियां खामी राजे सुखकंद ॥१॥ सुंदर ऋतु सोयामणि, वळी वरतियो वसंत । अतिराजि अलबेलडो, दिये दासने सुख अत्यंत ॥२॥ वासी वालाक देशनां, जन निरमळ जेह । दया करी तेने दर्शननी, जोइ सर्लंगिनो सनेह ॥३॥ मिष लड्ड जन जाननुं, चालिया श्याम सुजाण । पूरण ब्रह्म पथारिया, करवा कोटिनां कल्याण ॥४॥ चौपाइ-सौंख्या जानमां सुंदरक्याम, करवा अनेक जननां काम। पहोर एकमां परियाण की धुं, गाम सघछं जमाडी ली धुं ॥५॥ पछी चौंपेशुं चलावी जान, चाल्या भेळा पोते भगवान । किथी मालपुरामां मुकाम, त्यांथी पहोत्या पिठवडी गाम ॥६॥ आव्या सतसंगी सर्वे सामैये, अतिहेत माय नहि हैये। बाळ जोबन ने बुद्ध वळी, आव्या सामा वालाने सांभळी ॥७॥ गाते वाते पघराव्या घेर, करी सेवा सारी रुडिपेर । सुंदर सारी करावी रसोइ, जम्या नाथ भाव तेनो जोइ ॥८॥ पछी जमाड्यो जननो साथ, उभा हरि आगे जोडी हाथ। कहे धन्यधन्य दीनद्याळ, भिल लिधि अमारी संभाळ ॥९॥ करी मोटी अमपर महेर, प्रश्च ब्रेमे पधारिया घेर । तमे विरुद् पाळ्युं बहुनामी, छो पतितना पावन स्वामी ॥१०॥ एवां सुण्यां दासनां वचन, बोल्या प्रश्रुजि थइ प्रसन्त । नोतुं आंइ आव्यानुं परियाण, आव्या जोइने तमारी ताण ।।११।। एम कही हेतनां वचन, बहु राजि कर्या निजजन । पछी पोढिया प्राणआधार, वीति रात्य ने थयुं सवार ॥१२॥ त्यारे उठ्या आपे अविनाश, थया रथी प्रद्वि कर राश । चाल्या वाटे आवे गाम घणां, करे दर्शन जन हरितणां ॥१३॥ एम देतां दरशन दान, करे जन मगन भगवान। पछी पहोत्या भटबद्र गाम, रह्या रात्य सुखे तियां क्याम ॥१४॥ करी विवाह वळ्या अविनाशि, क्याम सुंदरवर सुखराशि। आवे आडां वाटे जन बहु, करे नाथनां दर्शन स्रष्टु ।।१५॥ त्यांथी रह्या वावेरामां रात, दर् दर्शन

चाल्या प्रभात । आय्या गोरडके करी महेर, भक्त चांदु मांत-राने घेर ॥१६॥ करी रसोइ जमाख्या जन, जम्या भावे पोते भगवन । त्यांथी चाल्या चतुर सुजाण, कर्या पिठवडीए मेलाण 11१७। तियां मुळो भगो बोल्या मळी, हिरो हरजि भायो रुडो वळी ! कहे रहो यां दिन दोय चार, करे दर्शन सहु नरनार ।।१८।। बहु दहाडे पथार्याछो तमे, नहि जावा दैये हरि अमे । एषी सांभळी जननी वाण, पण न मान्युं चाल्या सुजाण ॥१९॥ चाल्या राततणा चारे जाम, पाछा आव्या मालपरे गाम। तियां रुष्टां कराव्यां मोजन, आपे जमी जमाडिया जन ॥२०॥ पछी आच्या गढपुर गाम, करी अनेक जनना काम। जेजे जने जोयाछे जीवन, ते न जाय जमने भवन॥२१॥दइ अनेकने अभ-यदान, पाछा पथारिया भगवान । जेजे कर्तव्य छे हरितशुं, तेमां जाणो कल्याण आपणुं ॥२२॥ एम करतां वीत्या कांइ दन, चाल्या गुजरात्ये भगवन । चाल्या गढडेथी गिरिधारी, आल्या सारंगपुर सुखकारी ॥२३॥ सुंदरियाणे शिरामणि करी, रह्या रात बागडमां हरि । कंथारीये करीने भोजन, रह्या शियाणिमां भगवन ।।२४।। त्यांथी तावी आवी हरि रह्या, पछी करी देव-क्रिये दया। तियां आच्या दरशने दास, नयणे निरखवा अवि-नाश ॥२५॥ तेने दर्शन दह दयाळ, त्यांथी चाल्या पछी तत-काळ । आच्या ददुके देवाधिदेव, करी हरिजने बहु सेव ॥२६॥ पछी त्यांथी आव्या मछियावे, तियां तेड्या मुनि भरी भावे । हरिजने जमाच्या जीवन, पछी जम्या सखा ग्रुनिजन ॥२७॥ रही रात्य चाल्या भगवान, देता दासने दर्शनदान । आव्युं अरण्ये एक तळाव, तियां जम्या मनोहर माव।।२८।। पछी अमदावादमां आव्या, घणुं जनतणे मन भाव्या । फुलदोलना उत्सव माथे, आख्या मुनि ने महाराज साथे ॥२९॥ हेते प्रीते जमाडिया जने, ञ्चाक पाक सुंदर भोजने । पछी आच्यो द्वतासनी दन, रम्या सखासंगे भगवन ॥३०॥ सारा सुंदर रंग मगाव्या, घणा माट घडा भरी लाव्या । तेतो हरिए लइ लीवा हाथे, ढोळ्या सर्वे मुनिजन माथे ।।३१॥ पछी उपर नाख्यो गुलाल, तेणे सखा थया रंगे लाल । धन्य शोभेछे संतमंडळी, नाखे, रंगमिनो रंग वळी ॥३२॥ खुब खांतिले मचाच्यो खेल, वाळी रसिये रंगनी रेल । पछी अलवेली अढळ ढळया, सर्वे मुनिने महाराज मळ्या ।।३३॥ करी उत्सव स्याम सघाच्या, अविनाशी असलाली आव्या। तियां मक्त वसे वेणीभाइ, जम्या स्याम तियां सुख-दाइ ॥३४॥ पछी जमाडिया मुनिजन, सर्वे लोके कर्या दरशन । पछी त्यांथी चाल्या भगवन, आव्या जेतलपुरे जीवन ॥३५॥ त्यांथी चालिया लाडिलो लाल, आव्या वालमजि वरताल। तियां दासने दर्शन दीघां, बहु जन कुतारथ कीघां ॥३६॥ देश देशना आव्याता संघ, हरिमक्त अंतरे अनघ। तेने दर्शन दह दयाळ, लिधि सर्वे जननी संभाळ ॥३७॥ सर्वे साम्रं जोयं अमि नेणे, वळी बोलाविया मीठे वेणे। सहु जन ते मगन थया, वियोग दुःख विसरी गया।।३८॥ पछी हरिने पूजिया हेते, वळी जमाड्या पूरण प्रीते । नित्ये नयणे निरखी नाथ, मुख जोइ सुख लिये साथ ॥३९॥ कोइ चंदन चरचे घञ्ची, कोइ हार पहे-रावेछे हशी। कोइ अत्तर चरचे आवी, लागे पाय अंबर पहे-रावी ।।४०।। कोइ अर्थे आभूषण अंग, कोइ करे आरती उमंग । कोइ छापेछे छातिये पाव, कोइ मेटे भरी जनभाव ॥४१॥ एम पुरे मनोरथ मनना, बाळे खंग खोयला दनना। करतां प्रश्नुजिने परसभ, आवियो रामनवमीनो दन ॥४२॥ रह्यां व्रत नरनारी जन, जाणी प्रश्न जनमनो दन। दशमी दने सहते जोह, दिधि सीलारामने जनोइ ॥४३॥ तियां जमाडिया विप्रजन, आप्यां सुंदर सारां भोजन। वेदविधिए कर्युं ए काम, धर्मरक्षक सुंदर- क्याम ॥४४॥ करी अलबेलो एटखं काज, आव्या गढडे श्रीम- हाराज। सुणे सह कथा सुखराशी, करी लीळा ते कही प्रकाशी ॥४५॥इति श्रीमदेकांतिकधर्मश्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुला- लानंदसुनिविरिचिते भक्तवितामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे अमदाबाद फुल- दोलनो उन्सब करीने पाछा गढडे प्रधार्य एनामे छन्नुसुं प्रकरणम॥९६॥

पूर्वछायो-लखुं लीळा वळी लालनी, जे वाले करी वरताल। कहेतां चिरत्र नाथनां, मारे अंतरे आवे वहाल।।१।। वालो कहे पंचपंचनी, मळी मंडळी चालो मराळ। वाटे जनने जाळबच्यो, द्या राखी दले द्याळ।।२।। कहक बार अमे कहुं, तमे सांभिळ्युं सोवार। कामपडे ते वातनो, नथी रहेतो उर विचार।।३।। एम कहीने चालिया, रह्या राख्य ते गांफ गाम। त्यांथी चाल्या चारताले विश्वआधार, करवा लाडिलो लीळा अपार। सर्वे संतने कहुं वचन, तमे आवज्यो उत्सव दन।।५।। एम करतां उत्सव आव्यो, सर्वे संतत्यो मन भाव्यो। कहे महाराज तेडावो द्वनि, हवे छुटि छे संत सहुनी।।६।। आव्या संत सरवे सांभळी, हती गामोगाम जे मंडली। आवी लाग्या प्रश्वजिने पाय, नाथ निर्धि हरस न माय।।७।। कहे नाथ आव्या मले संत, करो उतारा जोह एकांत। पछी बहु संत उत्तर्या बहार, केक उत्तर्या मंदिर मोझार

॥८॥ करे दर्शन प्रसन्न नाथ, लिये सुख सहु जन साथ। याय मासुक मोदक सारा, जमे जन प्रश्न पीरसनारा ॥९॥ करे मन-वार मीदक लइ, संत शान करे मौन रइ। पछी बोलिया राज अधिराज, एम मौन न रहेवुं महाराज ॥१०॥ जेजे जोइए ते मागिने लेवुं, पण शान करीने न कहेवुं। एवी सांभळी वालानी वात, सर्वे संत थया रिळयात ॥११॥ एम जमाडी जनपंगति, कर्या ग्रुनिने मगन अति । पडी सांझ पुरी दीपमाळ, बेठा उचे आसने दयाळ ॥१२॥ आच्यां बुरानपुरनां जन, करवा कृपाळनां दरशन। लाव्या कसुंबि रेटो रूपाळो, छेडाकोरे सोनेरी शोमाळो ॥१३॥ ते बंधाच्यो महाराजने माथे, कर्या दर्शन सहु जनसाथे। बहु बपोरिया तियां बळे, जाणुं श्वेतद्वीप झळमळे ॥१४॥ तियां बेठा वालो वनमाळी, अति शोमेछे समा रूपाळी। थाय उत्तर ने प्रश्न अति, सुख आपे सुखमय मूरति ॥१५॥ पछी पधार्या पोढवा नाध, सखा एकांतिक लड्ड साथ। ज्यारे जागिया जग-जीवन, दिघां दास सहुने दर्शन ॥१६॥ पछी बोलिया प्राण-आधार, पुरी अन्नकोट सुँदरसार। पछी जने पुर्यो अन्नकोट, शाक पाकनी न राखी खोट ॥१७॥ करी आरती अन्नकोट तणी, बनी शोभा जाय नहि भणी। तियां जिमया जीवनप्राण, पछी जमाड्या संत सुजाण ॥१८॥ एम लीळा करे अविनाश, जोइ सुख लिये सहु दास । वसे वडोदरे एक जन, तेनुं नाम छे जगजी-वन ॥१९॥ तेणे प्रेमे कराव्यो पोशाग, सारो सोनेरी बुद्दे सुवाग। तेडी उतारे जमाड्या नाथ, पछी पोशाग पहेराव्यो हाय ॥२०॥ पहेरी पोशाग प्राणजीवन, दिधां सहु जनने दरशन । एम करे निस्य लीळा निव, केम कही शके तेने कवि ॥२१॥ थाय उत्सव

ते अहोनिश, दिये दासने सुख हमेश । पछी आव्यो एकादशी दन, नाम प्रबोधनी ते पावन ॥२२॥ तेदि उत्सव कर्यों आनंदे, सुख लीधुं सहु ज़नदृंदे । पछी रह्या दन दोय चार, आप्यां संतने सुख अपार ॥२३॥ अलबेलोजि अढळ ढळ्या, सर्वे मुनिने नाथजि मळ्या। थयो सुंदर सारो समैयो, तेतो मुखथी न जाय कहीयो ॥२४॥ आप्युं सुख हरिए हुलशी, कार्तिकशुदि कहीए एकादशी। तेदि उत्सव करी दयाळ, पछी पधार्या देश पांचाळ ।।२५।। आव्या गढडामांहि गोविंद, सुखदायि खामी सहजानंद। थया थोडाघणा पछी दन, कहुं हवे जे कर्यु जीवन ॥२६॥ एक सोरठ देशमां जन, नाम हेमतसिंह पावन । जेने प्रीत घणी प्रभुमांइ, खामी विना वहाछं निह कांइ ॥२७॥ करी तन धन कुरबाण, थइ रह्या प्रभुना वेचाण । भक्त अति एकांतिक अवल, भुले निह प्रभुजिने पल ॥२८॥ निजधेर प्रभु पधरावी, हुतास-नीनी लीळा कराची ! अतिहेते कराच्यो समैयो, तेतो मुख्यी न जाय कहीयो ॥२९॥ सर्वे रीत्ये राजि करी राज, करी लिधुंछे पोतानुं काज। ज्यारे सर्वे काज सुधार्यु, त्यारे मनमां एम विचार्थु ।।३०।। जे कारणे आ मनुष्यदेह, तेती किधुंछे सर्वे तेह ! रही एक मने अभिलाप, करे पुरी जाउं प्रभुपास ॥३१॥ पछी चाल्या त्यांथी झिणोभाइ, आव्या गढडे नाथ हता त्यांइ। अति-हरखे निररूयां नाथ, पछी वेठा पासे जोडी हाथ ॥३२॥ पछी हेते हरिए बोलाव्या, झिणाभाइ भले तमे आव्या। त्यारे क्षिणोभाइ कहे महाराज, आव्योछउं मनोरथे आज ॥३३॥ पुरो करो मारो मनोरथ, करवा प्रश्च तमे छो समर्थ । कहुं जीरण-गढने मांइ, करो मंदिर सुंदर त्यांइ ॥३४॥ तेमां सारी मूरित

बेसारो, करो पुरो मनोरथ मारो । विजी पण एटली छे आश, प्रभु राखिये तमारे पास ।।३५।। कहे नाथ आप्यो कोल एह, थारो तमे जे धार्युं छे तेह। एम वात करीने दयाळ, पछी जम्याछे सुंदर थाळ ॥३६॥ आपी क्षिणाभाइने प्रसादि, जेने इच्छेछे भव ब्रह्मादि । पछी क्षिणाशाइ भेळा संत, मुक्या मंदिर करवा धीमंत ॥३७॥ तेह दिवसे घोलेरेथकी, आव्या भक्त पुंजोभाइ नकी। तेणेपण जोड्या आवी हाथ, मारी विनति सुणिये नाथ ॥३८॥ एक घोलेरे मंदिर कीजे, सहु जनने आनंद दीजे। एवं सांभिकिने बोल्या नाथ, लियो मेलिये मुनि तमसाथ ॥३९॥ मेल्या वेउ ठेकाणे मराळ, मंदिर थावा लाग्यां ततकाळ । तियां संत जाय कइ आवे, नित्य खबर मंदिरनी लावे ॥४०॥ थोडा दहाडामां मंदिर थाशे, एवी वात करे प्रश्रुपासे । एवं सांभळी उत्तम कहेछे, मारे पण ए घाट रहेछे ॥४१॥ करो मंदिर जो तमे आंइ, थाये राजी अमे बेन भाइ । तेनेपण कह्यं एम नाथे, एतो करावशुं अमो हाथे।।४२॥ एम कही मंदिर आदर्या, मास थोडाकमां पुरां कर्यां। थयुं घोलेरे मंदिर पहेलां, कहाव्युं बाला आवी वेला वेला ॥४३॥ हता वाल्यमजि वरताल, आव्या तेडवा तियां मराल । कह्यं थयुं मंदिर समापति, आवी पधरा-विये मूरति ॥४४॥ एवं सांभळी चालिया स्याम, आवी रह्या गलियाणे गाम । त्यांथी नाथ आव्याछे पिपळी, राजि थया दादोभाइ मळी ॥४५॥ त्यांथी आच्या घोलेरे महाराज, मूर्ति स्थापन करवा काज। सर्वे संघ ने साधु छे साथ, एवी रीत्ये पधा-रिया नाथ ॥४६॥ सारुं वरप सुंदर कहीए, वैशाखशुदी तेरश लहीए। सारो सुंदर ए शुभ दन, तेदि पधराव्या मदनमोहन ॥४७॥

कयों सुंदर सारो समयो, तेतो न जाय गुख्थी कहीयो। जम्या ब्राह्मण ने हरिजन, विजानेपण आपियुं अस्न ॥४८॥ करी उत्सव ने नाथ चाल्या, जइ गढडे दर्शन आल्यां। पछी गयाता गढाळी गाम, भक्त आंबानुं करवा काम ॥४९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिता-मणिमध्ये वैशाखशुदी तेरशने दिवस मदनमोहनजिनी प्रतिष्टा करी एनामे सन्ताणमुं प्रकरणम् ॥९७॥

पूर्वछायो-त्यारपछी जेजे कर्यु, कहुं सांभळज्यो सह संत्। थोडेघणे दने करी, रुडो वरत्यो ऋतु वसंत ॥१॥ सुंदरियाणे शिरोमणि, सतसंगी शेठ सुजाण । जक्तविरक्त भक्त भला, करुं तेनां छुं हुं बखाण ॥२॥ चोपाइ-धन्य भक्त जक्तथी उदासी, त्रोडी सहुद्यं भज्या अविनाशी। एवी साची भगति सांभळी, सर्वे सगां कुदुंबी उठ्यां बळी ॥३॥ कहे आपणे वैणावी जन, करिये वछभकुळनुं भजन। तेहमांहि ते न्यून शुं दिछं, जे नवा धर्ममां मन बेठुं ॥४॥ पछी सत्संगी बोल्याछे तैये, नवो धर्म एने केम कहीये। एतो धर्म छे जुनो अनाद्य, सहु वर्ते छे शास्त्रमयीद ॥५॥ आपणानुंतो नथी ठेकाणुं, तमे जाणो ने हुंपण जार्णु । काम कोध लोभ मोह वळी, तेण सहुने मुक्याछे गळी ॥६॥ गीतामां जे कह्या नरकद्वार, तेमां वस्ते ए तदाकार। माटे एमांते कांइ न दिहुं, त्यारे सत्संगमां मन बेहुं ॥७॥ एवं सांभळी सगां कुदुंब, सर्वे मळीने खाधा छे सम। एने आपणे नहि वेवार, आजथी ए करो नात्य बहार ॥८॥ तेने वीति गयां पट वर्ष, तोय मेल्यो नहि अमरप । गया खधामे तेहनो तात, त्यारे न तेडि नोतरे नात ॥९॥ पछी आध्याछे प्रश्नुजि पास, शेठ वनी पुंजी

हरिदास । आबी करी हरिने विनति, प्रश्च पधारिये प्राणपति ।।१०।। सर्वे संग लड् मुनिसाथ, सखासहित पधारिये नाथ। पछी संत संगे लइ क्याम, हरि आच्या सुंदरियाणे गाम ॥११॥ सर्वे अयोध्यावासि छे संगे, प्रश्च पधार्या अति उमंगे। गातेवाते तेडि लाष्या घेर, करी सेवा सारी बहुपेर ॥१२॥ सुंदर भोजन व्यंजन करी, अतिहेते जमाडिया हरि । पछी मोतैया मोदक लइ, नाथे जन जमाडिया जइ ॥१३॥ बहुबहु करी मनुवार, फर्यो पंगत्यमां पंचवार । एम नित्ये जमाडेहे नाथ, जमे जन ते हरिने हाथ ॥१४॥ बहुबहु दिये दरशन, अति अलबेलो छे त्रसम् । बहु प्रश्न ने उत्तर थाय, संत रमे रास गीत गाय ।।१५॥ पछी आवी वसंतपंचमी, सुखदायक सहुने गमी। लाव्या रंग सोरंग गुलाल, लइ त्रांसळी उठिया लाल ॥१६॥ नाखे रंग रंगे सखासाथ, अति आपे रंगाणाछे नाथ। पछी लइ गुलालनी झोळी, फेंके फांडुं रमे हरि होळी ॥१७॥ रंगे रमिने आव्या उतारे, आप्यां वस्त्र जनने तेवारे। आपे जिमने जन जमाड्या, अति दासने हर्ष पमाड्या ।।१८।। एम उत्सव करी दयाळ, आच्या महाराज ते भेंशजाळ। रही रात्य पधारिया श्याम, आव्या नागडके लोये गाम ॥१९॥ त्यांथी बोटाद आव्या बहुनामी, जम्या संत पोते बळी स्वामी। पछी आव्या गढडे गोविंद, आपी सहु जनने आनंद ॥२०॥ त्यारपछी थोडेघणे दन, चाल्या गुजरदेशे जीवन । करी मजलेमजले मुकाम, चाल्या सुखमां सुंदर श्याम ॥२१॥ आष्या अमदावाद दयाळ, संगे जनसमूह मराळ। आव्या सत्संगी सहु सामैये, बनि शोभा जाय नहि कैये ॥२२॥ वहुविधनां वाजां त्यां वाजे, आव्यां लोक दरशन काजे। चारे आश्रम ने वर्ण चार, आव्या

दरशने नरनार ॥२३॥ गातेवाते पधार्या महाराज, कैक जननां करवा काज । आबी उतर्या मंदिरमांइ, नरनारायण राजे त्यांइ ।।२४।। सतसंगी सांख्ययोगी संत, उतर्या भक्त ने भगवंत । कर्यों सुंदर सारां भोजन, जम्या जन ने भावे जीवन ॥२५॥ पछी पोढिया जीवनप्राण, जाग्या सुखे सवारे सुजाण। जाग्या प्रभुजि प्रभात काळे, कयों नित्यविधि त्यां द्याळे ॥२६॥ पछी चोतरे पाट ढळावी, तेह उपर बेठाछे आवी। जोयुं अमृतदृष्टिए आप, हर्या जनतणा तनताप ॥२७॥ पछी जन प्रश्रुपूजा काज, लाविया बहुविधि समाज। तेणे पूजिया प्राणआधार, कंठे आरोप्या क्षंदर हार ॥२८॥ घेरी सुगंधे गुलाबफुल, तोरा गजरा तेना अमृत्य । ते लइ अर्प्याछे हरिने अंगे, पछी पाय लाग्याछे उमंगे ।।२९।। एम लिये लावो वळी जन, दिये दन सारो दरशन । वळी आवेछे पुरना जन, करवा कुपानिधिनां दर्शन ॥३०॥ कैक आविने पुछे प्रशन, तेनो उत्तर आपे जीवन । सुणी उत्तर मगन थाय, पामी आश्चर्यने घर जाय ॥३१॥ एम लीळा करे अल-बेलो, रंगरसियो छेल छविलो। पहेरी वस्त्र अनुपम अंगी, शिर-पाघ वसंति सोरंगी ॥३२॥ एवां दर्शन दिये दयाळ, निर्धि मगन जन मराल। एम करतां सात दन गया, आव्यो हतासनी दन तियां ॥३३॥ पछी मगाव्या रंग सोरंग, केशु कसुंबि रंग-पतंग । लाच्या सखा आप्यो हरिहाथे, नाथे ढोळ्यो सह सखा माथे ॥३४॥ नाख्यो उपरे रंग गुलाल, तेणे सखा थया सह लाल। जैम फुल्युं कमळदळ वळी, तेम शोभेछे संतमंडळी ॥३५॥ डोडो कमळमध्ये दयाळ, फरित पांखिड शोभे मराल। एम खेले सखा संगे नाथ, निर्खि जन थायछे सनाथ ॥३६॥ वाजे वार्जित्र

त्यां अपार, बोले जय सहु नरनार। पछी नावाने चालिया नाथ, सर्वे सूखा जन लेइ साथ ॥३७॥ नाही महाराज मोटेरे गया, दइ दर्शन तर्त आविया । आवी बेठाछे उंचे आसन, दिये सह जनने दर्शन ॥३८॥ एम करतां वीतिछे रात, सुखे पोढी जाग्या परभात । करी दातण नाह्या दयाळ, जम्या जनहेते हरि थाळ ॥३९॥ पछी जमाडिया जन सोइ, हित घेबरनी ते रसोइ। फर्या पंगत्यमां पंच वार, बहुबहु करी मनुवार ॥४०॥ एम आनंदे उत्सव करी, पछी त्यांथी पधारिया हरि । आव्या असलालिये महाराज, संगे हरिजन मुनिराज ॥४१॥ कर्या सुंदर सारां भोजन, जम्या नाथ जमाडीया जन । धन्यधन्य भक्त वेणिभाइ, जेनी श्रीत अति प्रभुमांइ ॥४२॥ तेना मनोरथ पुरा करी, पछी त्यांथकी चालिया हरि। गाम जेतलपुरमां जन, मक्त आसजि आदि पावन ॥४३॥ तेने घेर पंघार्या गोविंद, संगे सखा लइ जनष्टंद । तियां भक्ते कराव्यां भोजन, जम्या नाथ साथे संखाजन ॥४४॥ पछी साथे लद्द सर्वे समाज, आव्या मेम-दाबाद महाराज। रहि रात्य आव्या वरताल, करवा लीळा अलौकिक लाल ॥४५॥ हतो उत्सव आडो पक्ष एक, राख्या संत करी दया नेक। नित्ये दिये दरशन दान, बंहु भावे करी भगवान ॥४६॥ थाय प्रश्न ने उत्तर अति, सुख आपे सुखमय मूरति। कहे जेने मळ्या भगवन, तेने कोइ न व्यापे विधन।।४७॥ जेम वेज वसुधानुं करे, तेनी चोट पाछी नव फरे। तेम प्रभुने मळतां जन, रहेवुं सदाय निःशंक मन ॥४८॥ एवी वातो करे बहुबहु, सुणी मगन थाय जन सहु। पछी आव्यो उत्सवनी दन, आव्यां दरशने बहु जन ॥४९॥ रामनवमी ने एकादशी, कर्या उत्सव हेते हुलशी। कर्या विप्रे वेदना उचार, होम्यां छंडे हिविष्याम सार ॥५०॥ वेदिविधिये उत्सव करी, आप्यां दान पछी हर्ष भरी। घोडी पलाण चर्म ने असि, आपी पार्डी सिहित महिपी॥५१॥ धेनु सबित्स ओढाडी झुल्य, आप्यां बस्न कसुंबि अमूल्य। सोनादोरों ने पोश रुपैया, लइ द्विज राजि बहु थया॥५२॥ एम उत्सव आनंदे करि, पछी त्यांथकी पधार्या हरि। आव्या पांचाळ देशमां नाथ, सर्वे लइ निजजन साथ॥५२॥ आविति ब्रह्मानंदने भाग, तेह उपाधि करावी त्याग। निरवंधनुं बंधन कापी, निजसमीपनी सेवा आपी॥५४॥ कर्या सुखी ते सुखने राशी, चैत्रशुदि सुंदर एकादशी। तेदि उत्सव कर्यो अविनाशी, करी लीळा ते कही प्रकाशी॥५५॥ इति श्रीमदेकांतिकथर्मप्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्तवित्यमित्रवर्तकशीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवर्ति भक्तवित्यमित्रवर्ति अस्ति स्वर्ति स्वर्ति सुलित्यमित्रवर्ति सुलिति सुलित

पूर्वछायो-त्यार पछी जेजे थयुं, कहुं सांभळो सहु दह मन।
असुराण जोराण जक्तमां, मळी पीडीया हरिजन ॥१॥ पाणी
मळी परियाणिया, हरिजन हणवा हेत । तेनी सहाय करी हरि,
खरी रीतछुं रणखेत ॥२॥ दृष्ट रणमां दृष्ठिया, असुरपति अति
जेह । बार आगळ बसे पुरा, तर्त भाग्या तेह ॥३॥ भूमिनो भार
उतारियो, श्रावणशुदी दशमी दने । तेदि असुर मारिया, हरि
इच्छाएथी हरिजने ॥४॥ चोपाइ-पछी आव्यो अष्टमीनो दन,
तेड्या उत्सवपर, सुनिजन । आव्या सतसंगी सरवे मळी, अटमीनो समयो सांभळी ॥५॥ आवी लाग्या प्रश्चितने पाय, निर्धि
नाथने तस न थाय । बाले बोलाव्या मीठे वयणे, वळी जोयुं

अमृत नयणे ॥६॥ तेणे करी हर्या जनताप, कर्या सुखी अलबेले आप । पछी अष्टमीउत्सव कीघो, सहु जनने आनंद दीघो।।७॥ पछी पधारिया वरताल, करवा लीळा अलौकिक लाल ! सुणी आव्या सतसंगी सहु, तेह विना विज्ञां लोक वहु ।।८।। आवी लागे प्रभुजिने पाय, करी दुईन प्रसन्न थाय । नित्य निव करे वालो वात, सुणि सहु थाय रिक्रयात ॥९॥ वळी लक्ष्मीनारायण जेह, वासुदेव ने श्रीकृष्ण तेह । तेनी मूरतिने नित्यनिख, दिये प्रदक्षिणा करी प्रीत्य ।।१०।। दिये प्रक्रमा ते दोय शत, पछी करे पांच दंडवत । एम करतां वीत्या मास दोय, आव्यो दीपउःसव दिन सोय ॥११॥ पुरी दीपमाळा शोभे घणुं, जाणुं मंदिर बण्युं मणितणुं । जोइ जन थयां छे थिकत, लागे पाय करी बहु प्रीत ॥१२॥ करे दर्शन नर ने नार, मुखे बोहे जयजयकार । वीत्यो उत्सव वळते दने, पुर्यो अन्नकोट बहु अन्ने ॥१३॥ जम्या नाथ जमाडिया जन, पोते पिरञ्युं थइ प्रसन्त । एम आपेछे सुख अपार, नित्यप्रत्ये ते प्राणआधार ॥१४॥ एम करतां प्रवोधनी आवी, एकादशी जनमन भावी । तेदि उत्सव कर्यो अनुप, सर्वे संतने जे सुखरूप ॥१५॥ पछी बीत्या थोडा घणा दन, कर्यु वडोदरे जावा मन । वडोदरे पधराव्या काजे, लख्या कागळ ते वहु राजे ॥१६॥ कहे एकवार आवी आंहि, वाला वडोदरा शहरमाहि। मने दर्शन दियो दयाळ, दीनबंधु दीनप्रतिपाळ ।।१७।। एकवार करुं दरशन, नथी बीजि इच्छा मारे मन । आवी आंहिलगि तमे नाथ, नहितो आवीश हुं जोडी हाथ।।१८॥ त्यारे महाराजे मुकियुं कहावी, देशुं दर्शन तमने आवी । पछी पधार्या सुंदरक्याम, आबी उतर्या सांकर्दे गाम ॥१९॥ करी रसोइ

जमाट्या नाथ, जम्या सखा हता जेह साथ । जमी पोढिया क्याम सनेह, बुठो माषठे आवी त्यां मेह ॥२०॥ थयुं सवार सधाव्या स्याम, आव्या छविलोजि छ।णिगाम । मुक्युं शिया-जिये त्यां सामैदुं, बनि शोभा जाय निह कहीयुं ॥२१॥ आव्या पायगा पाळा अपार, सामा शणगार्या गज चार । तेउपर अंवाडी जरिनी, सिंह शोभा कहुं हुं हरिनी ॥२२॥ चित्र विचित्र भात्यने रंगे, शोभे हस्ति वसन सोरंगे। वळी उंट शणगारी सारां, धर्यो तेपर मोटां नगारां ॥२३॥ बिजा घाल्याछे घोडे आनक, बनी जोयासरिख बानक। पडे नगारे श्रोश धीमेरी, शोभे नेजा निशाण नफेरी ॥२४॥ वाजे पडघम भेळी वांसळी, भेर भ्रंगळ ने घुइ वळी । बोले शरणाइ खरे सारी, वाजे वाजां ते मंगळ-कारी ।।२५॥ रथ वेल्य गाडी घणी मेना, आव्या सामैये समृह तेना। बनी शोभा सामैयानी बहु, सुणी लोक आव्या सामा सहु ।।२६।। आवी लाग्यां प्रभुजिने पाय, निर्धे नाथ हरख न माय। कहे सहु जोडी एम हाथ, आवो बेसो अंबाडिए नाथ ॥२७॥ दया करी दियो दरशन, करो प्रभुजि शहेर पावन । पछी कृपा करीने कृपाछ, वेठा दंतिउपर दयाछ ॥२८॥ नारुपंतनाना बेठा साथे, करे चमर नाथने माथे। बनी शोभा जाय नहि कइ, जैजैशब्द रह्यो तियां थइ ॥२९॥ कर्यां दरशन सह दासे, निर्सि पुरी करी मन आशे । वेठा बीजे गजे संत चार, संगे अयोध्यावासी उदार ॥३०॥ पछी धीरेधीरेशुं चालता, आन्या नाथ दर्शन आलता। झांझ मृदंग लइ मंडळी, गाय गरैया वधाइ वळी ॥३१॥ आच्या शहेरमां श्रीमहाराज, बहु जीवनां करवा काज । छुवे अमृत नजरे नाथ, वळी जोडेछे सहुने हाथ

॥३२॥ नरनारी जे शहेरनां जन, निर्धि नाथने थयां पावन । एक पृथवी ने त्रण माळे, चिंड लोक नाथने निहाळे ॥३३॥ नरनारी करी दरशन, करे कर जोडिने स्तवन । नीली पीळी पहेरी लाल साडी, शोभे फुलि जेम फुलवाडी ॥३४॥ एम वनी वजार ने शेरी, सहुनी नजर नाथपर ठेरी। जैम चित्रमां लख्या चितारे, निर्खि मनुष्य मटकुं न मारे ॥३५॥ जोइ मोहनने मन मोह्यं, नोतं जोवं तेणेपण जोयं। एम सहुनां लीधां चित्त चोरी, करे केम जेने हाथ दोरी ॥३६॥ पछी आव्या पुरपति पास, निरूपी शियाजिए अविनाश। पछी पधराव्या हवेलीमांय, करी दंडवत लाग्यो पाय ॥३७॥ त्यारे हरि मळ्या ग्रहि हाथे, करी मोटी महेर एने माथे। पछी श्रीते पाट ढाळ्यो राजे, श्रीमहा-राजने वेसवा काजे ॥३८॥ ते उपर वेठा हरि आपे, बळ्या पापिया पोताने पापे। करी प्रीत्येशुं पूज्या राजने, पूजि प्रभ्र पाम्यो मोद मने ॥३९॥ पछी उभो आग्ये जोडी हाथ, कहे धन्यधन्य मारा नाथ । आज थयां मने दरशन, कोइक पूर्व जनमने पुण्य ॥४०॥ एम कही लाग्यो पाय वळी, थया राजी ते नाथ सांभळी। पछी पधार्या शहेरमां स्याम, कर्या अनेक जीवनां काम ।।४१।। फरी दर्शन सहुने दीघां, बहु जन कृतास्थ कीथां। पछी पधार्या नाथ उतारें, चाल्यो महीपति मोर त्यारे ॥४२॥ काजु तंबु कनात्य रावटी, करी उभी सोयक सामटी। तियां उतार्या दीनदयाळ, राये जमवा कराव्यो थाळ ॥४३॥ पछी निजसंबंधिने हाथे, कर्यां सुंदर भोजन नाथे। पछी वेठा सिंहासने रयाम, आव्युं दर्शने सघछं गाम ॥४४॥ सोनारुपातणां फुल लइ, आवी वधावे वालाने कइ । वहु लावेछे फुलना हार, लिये २५ भ०चिं०

प्रीतेशुं प्राणआधार ॥४५॥ मिठा मेवा ने सुंदर फळ, लावे दुधरेंडा कइ दळ। ठाले हाथे नाथपासे नावे, नाळी केळी इक्षु आदि लावे ॥४६॥ मोटामोटा जे शहरमां हता, तेपण आच्याछे हाथ जोडता। अतिसामधि जोइ अपार, जोडी हाथ नमे नर-नार ॥४७॥ एम नमावी सहुने शीश, उठ्या जित करी जगदीश। आवी उतारे पोढिया नाथ, यह जीवने करी सनाथ ॥४८॥ सर्वे संत छ पोताने साथे, जम्या करी रसोइ ते हाथे । बुठो अति तियां वरसात, एम करतां थयुं परभात ॥४९॥ पछी जागिया जीवनप्राण, करवा बहु जीवनां कल्याण । दीधां दर्शन सहुने व्यामे, निर्द्या नयणां भरी सह गामे ॥५०॥ थाय उत्तर ने प्रश्न षहु, जाणे जित स्वामिजिनी सहु। एम सर्वेने पाछेरा पाडी, वात पोतानी सत्य देखाडी ॥५१॥ मतपंथतणुं मान हर्यु, सत्य वचन श्रीखामिनुं कर्युं। जे कह्यंतुं खामिरामानंदे, रही घोराजि-मांहि आनंदे ॥५२॥ भेख खपशे सह खडताळे, क्युं वचन सस्य दयाळे। एम वीति गया दिन त्रण, पछी पधार्या अशरण शरण ॥५३॥ जेबी रीत्यनुं सामैयुं लाव्या, तेथी विशेके बळावा आव्या। वळी पधराच्या राये घर, करी प्रीत्ये पूजा बहुपेर ॥५४॥ सारो पोशाग शिरपेच जेह, आप्यो नरेशे नाथने तेह। वळी कहेछे वारमवार, वहेला आवज्यो प्राणआधार ॥५५॥ ज्यारे तेखां विनति करी, त्यारे बहेला पंधारज्यो हरि । पछी नाथ कहे तेडशो तमे, जाणो जरुर आवशुं अमे ॥५६॥ एम कहिने उठ्या दयाळ, त्यारे भावेशुं भेट्यो भूपाळ । पछी शीख मागी चाल्या श्याम, बेठा अंबाडिये सुखधाम ॥५७॥ देता सहुने दर्शनदान, आब्या शहरवहारा भगवान । गज बाज वाजित्र अपार, आव्य

वद्धाववा नरनार ॥५८॥ तेह सवेंने शिखज दीधी, एवी लीळा वडोदरे किधी। पछी घोडे थया असवार, आव्या सांकर्दा गाम मोझार ॥५९॥ त्यांथी वालो आव्या वरताल, करी लीळा अलाकिक लाल। दोढ मासलिंग तियां रह्या, निजसबंधि गढडे गया ॥६०॥ पछी शिक्षापत्री लखी सारी, आपी सतसंगिने सुखकारी। त्यांथी पधार्या सुंदर क्याम, गुणसागर गढडे गाम ॥६१॥ कयों उत्सव एम जीवने, कारतिकवदी त्रीज दने। तेदि करी वडोदरे लीळा, हता संत सतसंगी मेळा॥६२॥ इति श्रीमदेकां- तिकधर्मपवर्तकश्रीसहजानंदखामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिवरिचते भक्त- चिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे गढडे जनमाष्ट्रनी उत्सव प्यार्था ने व्यं शिक्षापत्री लिख एनामे नवाणुंमुं प्रकरणम्॥९९॥

पूर्वछायो-सर्वे जन मळी सांभळो, कहुं तारपछिनी वात ।
प्रभु पथार्या गढहे, एम लीळा करी गुजरात ॥१॥ घनक्याम
गढहे आविया, सर्वे संतने लेड् साथ। जन मळि लळि पाय लागी,
सहु थया सनाथ ॥२॥ निर्धि हरिख हाथ जोडी, ज्यारे वेठा
जन मळी। त्यारे सनेहे क्यामळे वाले, वालप्ये बोलाव्या वळी
॥३॥ छो सहु जन सुखिया, एम हेतेशुं कहुं हरि। त्यारे जन कहे
सुखिया छीए, प्रभु तमारे दर्शने करी ॥४॥ चोपाइ-एम
कहेतां सांभळतां वातरे, वीते आनंदमां दिन रात्यरे। नित्य
निवनिव वातो करेरे, सुखी जन अंतरमां घरेरे ॥५॥ एम वीतिगया त्रण मासरे, त्यारे एम बोल्या अविनाशरे। हवे सहु जाये
वरतालरे, वाट जोता हशे ते मरालरे ॥६॥ एम कही करी
सावधाहरे, चाल्यां संगे सहु वाह भाहरे। आव्या कारीयाणिये

जीवनरे, निर्खि जन थयाछे मगनरे ॥७॥ पछी हाथ जोडि वेठां पासरे, त्यारे बोलिया छे अविनाशरे । कह्युं सावदा थाओ सरवरे, जाये वरताल करवा उत्सवरे ॥८॥ बोल्या वसतो राघव त्यांइरे, प्रसु करोने उत्सव आंइरे। एम कहीने राख्या महा-राजरे, हुतासनीना उत्सव काजरे ॥९॥ लाव्या गुलाल ने रंग घणारे, रम्या नाथ राखी नहि मणारे । जोइ रंगना भरिया नाथरे, सहु जन थयाछे सनाथरे ।।१०।। एम करी उत्सव कारी-याणिरे, पछी चालिया शारंगपाणिरे। आव्या वालम वरताल-मांहरे, दन पहोर नोतो चड्यो त्यांहरे ॥११॥ आच्या संत वालाने सांभळीरे, करवा दर्शन आविया मळीरे। आव्या संघ लइ सतसंगीरे, बाळ जोवन युद्ध उमंगीरे।।१२।। लाव्या बहुपेरे पूजाविधिरे, तेणे प्रभुजिनी पूजा किधिरे। नाथ निर्दि सुखी यया सहरे, हरिये हेत देखाड्युं छे बहुरे ॥१३॥ पछी नाथ कहे आणीवाररे, करीये मंडपनो परथाररे। त्यारे सर्वे कहे सारुं बहुरे, अमे राजिछीए संत सहुरे ॥१४॥ पछी लावे इंट्यो सहु साथरे, चाले पोतेपण भेळा नाथरे। थाय ओटो एम अहोनिशरे, दिये दर्शन हरि हमेशरे ॥१५॥ मळे सांझे सहुने दयाळुरे, देखी अंग कामे कचराळुरे। एम पुरो कर्यो परथाररे, पुरी पुरणी कर्यो भंडाररे ॥१६॥ थयो रामनवमीनो समैयोरे, कर्यो उत्सवन जाय कहीयोरे । पछी प्रभुजि गढडे आवीरे, सर्वे संत लिधाछे बोला-वीरे ॥१७॥ कर्यो अष्टमीनो उत्सव भारीरे, सहुने सुख दिधां सुखकारीरे। करी दशरा पंधार्या नाथरे, लइ संत सतसंगी साथरे ॥१८॥ गया करमड गामे केशवरे, करवा अन्नकोटनो उत्सवरे। कर्यो उत्सव जमाड्या संतरे, फेर्या लाडु वेसारी पंगतरे ॥१९॥

त्यांथी अमदावाद पधार्यारे, जनने मन मोद वघार्यारे। आनंदस्त्रामीए कराव्यो साजरे, प्रीत्ये प्रभ्रुने पूजवा काजरे ॥२०॥ सारो सुरवाळ जामो जरीरे, शिर बंधावी पाध सोनेरीरे । कंठे माळा पहेराची शोभतीरे, करी धूप दीप ने आरतीरे ॥२१॥ लागी पाय पछीडियो लावीरे, नाथ हाथे संतने अलावीरे । एम करी उत्सव आनंदरे, चाल्या प्रश्च पोते सखावृंदरे ॥२२॥ आव्या असलालि भगवंतरे, आपे जमी जमाडिया संतरे। त्यांथी आच्या जेतलपुर नाथरे, रही रात्य जम्या सहु साथरे ॥२३॥ करी गामिं माहि भोजनरे, आच्या मेमदावादे जीवनरे। रही रात्य वात करी वालेरे, त्यांथी आच्या पछी वरतालेरे ॥२४॥ कीधो प्रबोधनीनो समैयोरे, थयो उत्सव न जाय कहीयोरे। पोते रह्या तियां दोय मासरे, झोळी मगावी साधुने पासरे ॥२५॥ पछी त्यांथकी गढडे आवीरे, कर्या संतने राजि जमावीरे। तेने मुक्या जुनागढ मांइरे, पण पोतेतो रह्याछे त्यांइरे ॥२६॥ रही थोडा घगा तियां दनरे, कर्यु वरताले जावानुं मनरे। कारीयाणी चोकडी धोलेरेरे, रह्या पिपलिये एह फेरेरे ॥२७॥ जमी कमियाळे त्रसंडे रह्यारे, त्यांथी नाथ वरताले आवियारे । रामनवमीनो उत्सव करीरे, षाछा आविया गढडे फरीरे ॥२८॥ पछी ज्येष्ठ अष्टमीये नाथेरे, नाख्यो गढडे मंदिर पायो हाथेरे । सुंदर मंदिर मोदं आद्र्युरे, खोळी खांट्य ने मुहूर्त कर्युरे ॥२९॥ राख्या चार मास साधु संगेरे, पछी अमदाबाद गया उमंगेरे। कारीयाणि सारंगपुर रह्यारे, त्यांथी वागड कंथारीए गयारे ॥३०॥ रह्या रात शीयाणिए श्यामरे, त्यांथी तावी देवळीये गामरे। त्यांथी नळ उतरिने नाथरे, रह्या रात घोडे संत साथरे ।।३१।। जमी ददुके रह्या कुवारेरे,

रह्या रात्य मनिपर त्यारेरे । त्यांथी अमदावादे आवियारे, थोडुं रही असलालि गयारे।।३२।। वाळ्या शंकरे चरचा काजरे, करी चरचा जित्या महाराजरे । पछी आव्या जेतलपुर गामरे, त्यांथी वरताले पंघार्या क्यामरे ॥३३॥ तियां रह्या कांइक घनक्यामरे, पछी आविया गढडे गामरे। आवी करवा मांड्युं मंदिररे, अति उतावळुं नहि धीररे।।३४।। दिये अखंड ते दरशनरे, जन उपर छे परसनरे । कर्यो फुलदोल तियां वालेरे, पछी पधारिया वरता-हेरे ॥३५॥ कारीयाणि मांहि रात्य रह्यारे, त्यांथी नावडे घोलेरे गयारे। पीपलिथी वरसंडे गामरे, त्यांथी आविया वरताल धामरे ॥३६॥ करी रामनवमी रुडी तियारे, आव्या जन दरशन थियारे। करी बहु जीवनां त्यां काजरे, पाछा गढडे आव्या महाराजरे ॥३७॥ मांड्युं मंदिरनुं काम लेवारे, अति उतावछं करी देवारे। अष्टमी लीळा करी लालरे, वळी चाल्या पोते वरतालरे ॥३८॥ सारंगपुर सुंदरियाणे ज्यामरे, आव्या धंधुके खसते गामरे । जमी कमियाळे बोरु रह्यारे, त्यांथी शिंजिवाडे गाम गयारे ॥३९॥ त्यांथी आव्या वरताले जीवनरे, निजजनने देवा दरशनरे । तियां आव्या सतसंगी संतरे, भावे निरिखया भगवंतरे ॥४०॥ आपे साधुने रसोयो सारीरे, हरि पिरसे हेत वधारीरे। गोळ लाडु जलेबी मोतैयारे, आपे नाथ हाथे करी दयारे ।।४१।। लियो लाडु संतो करी प्याररे, एम कही करे मनुवाररे। रह्या थोडा घणा तियां दनरे, पछी चाल्या गढडे जीवनरे ।।४२।। पिपलान्य वटामण रह्यारे, त्यांथी कमियाळे वाली आवियारे । रही प्रविष्ये रात्य क्यामरे, आव्या त्यांथी कारी-याणी गामरे ॥४३॥ पछी गढडे आविने रहारे, तियां थोडा

घणा दन थयारे। त्यांतो तेखाच्या साहेब मोटेरे, वेसि गाडी गया राजकोटेरे ॥४४॥ तियां साहेबे कर्युं सनमानरे, आच्यो मामो ने आप्युं आसनरे। पछी प्रीत्ये बेठो प्रभु पासेरे, हेते पुछवा लाग्यो हुलासेरे ॥४५॥ पुछ्यां प्रीत्येशुं प्रश्न ते घणांरे, आप्या उत्तर नाथे ते तणारे । सुणी साहेब तेह अवणेरे, पछी बोस्पी छे दीनता वेणेरे ॥४६॥ जेवा मोटा सांभळ्याता अमेरे, तेवा खामिनारायण छो तमेरे। करज्यो गुना मारा बकशिशरे, एम कहिने नामियुं शिशरे ॥४७॥ त्यारे एम बोल्या महाराजरे, अति सारुं तमारुं छे राजरे । सर्वे लोक ते पाम्या छे सुखरे, नथी भय विग्रह कांइ दुःखरे ।।४८।। पण एम कहेछे लोक मांपरे, दुःख पामेछे ब्राह्मण गायरे। त्यारे साहेन बोल्यो सांमळीरे, करश्चं तपास सहु अमे मळीरे ॥४९॥ पण तमारा तीरथमांयरे, नथी देतो हुं मारवा गायरे। एम कही घुना वकशाव्यारे, पछी श्रीत्ये पहेरामणी लाव्यारे ॥५०॥ करी पहेरामणी पूज्या हाथरे, मागि शिख चाल्या पछी नाथरे। बेसी गाडिये गढडे पथारीरे, दिशां दर्शन हेत वधारीरे ॥५१॥ संत पोताने वहाला छ घणारे, आप्यां सुख राखी नहि मणारे। पछी द्विज दन सारी जोहरे, आपी बाळक बेने जनोइरे ॥५२॥ पछी मंदिर पासनो कूपरे, पासे बेसी कराव्यो अनुपरे । त्यांतो आव्यो रामनवमी दनरे, आव्या उत्सवपर बहु जनरे ॥५३॥ तेने दयाळे दर्शन दीथारे, कहि वादी ने सुखियां की धांरे। करी दर्शन जन घेर गयारे, पोते जेम इता तेम रहारे ॥५४॥ पण पोताने वहाला छ संतरे, ' तेने आपियां सुख अत्यंतरे । बीजां कीधां मोटां बहु कामरे, निजसामर्थि देखाडी क्यामरे ॥५५॥ ज्ञान ध्याननां नगारां गडेरे, एवी रीखे

रह्या छे गढडेरे । रह्या तियां एम अविनाशरे, त्यांतो पुछेछे पोताना दासरे ॥५६॥ तेने पोतपोताना जे धर्मरे, तेनो कही समजावेछे मर्मरे । त्यांतो जुनागढनुं मंदिररे, थयुं पुरुं पधार्या महाघीररे ॥५७॥ चाल्या पछी पोते सुखधामरे, आवी रह्याछे वांकिये गामरे । त्यांथी सरतानपुरे गयारे, पछी जुनागढमां आवियारे ॥५८॥ आव्या महेर करी महाराजरे, मूर्तियो पध-राववा काजरे। रणछोडजि त्रिकमजि जेहरे, राधारमण सिद्धे-श्वर तेहरे ॥५९॥ तेनी मूरतियो पधरावीरे, कर्यो उत्सव मोटो त्यां आवीरे । पछी सहु संतने मळ्या स्यामरे, पाछा आविया गढडे गामरे ॥६०॥ पछी तियां रह्या अविनाशरे, दिवे सुख लिये सहु दासरे । त्यांतो मंदिर थयुं तयाररे, जोइ मुहूर्त सुंदर साररे ॥६१॥ पधराच्या पोते गोपीनाथरे, कह्युं आमां रहेशुं सुणो गाथरे । कर्यो उत्सव मोटो ए दनरे, वळता तियांज रह्या जीवनरे ॥६२॥ पछी तीव वैराग्य छे जेहरे, तेने पामिने थया निःस्पृहरे। जडभरत वर्तता जेमरे, पोते पण आदर्युंछे तेमरे॥६३॥ जमें न जमें क्यारेक अन्नरे, क्यारे फळ फुल पिये पवनरे। क्यारे कंद मूळ पान वारिरे, मेली देह ममत विसारीरे ॥६४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि शिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीहरिचरित्रे गढडे उतावळुं मंदिर करवा मांड्युं ने जन्माष्टमीनो उत्सव करीने जुनागढ मूर्तियो पधराववा पधार्या ने त्यां प्रतिष्ठा करीने गढडे पधार्या ने त्यां गोपीनाथजिनी प्रतिष्ठा करी एनामे सोमुं प्रकरणम् ॥१००॥

पूर्वछायो-एवा खामी श्रीहरि तेनां, चरित्र अति अनुप । पाछा प्रथमथी संक्षेपे, कहु सांभळज्यो सुखरूप ॥१॥ पोते पुरुषोत्तम प्रकटी, बहु वावरि सामर्थ्य । जोरे लेवा जीव शरणे, एज सारवा अर्थ ॥२॥ पापी परदारापथि, मद्यपानी मांसारी सोइ। तस्कर परप्राणहर, तरे करे आश्रय कोइ।।३।। पोता बळे महा पंच पापी, कर्या भवजळ पार । लोभी लंपटी कपटी कामी, कोण पुरुष ने कोण नार ॥४॥ चोपाइ-एवा अघवंता नरनार, आवे शरणे पामे भवपार। पामे समाधि सुख प्राणपति, थाय लोक परलोकमां गति ॥५॥ सुरपुर ने देखे कैलास, वैकुंठ हरि हरिना दास। गोलोक ने श्वेतद्वीप सोंइ, धाम अक्षर जन ते सोइ ॥६॥ जेजे लोकमां आचरण जेह, देखे कहे जथारथ तेह। जेजे लोकना जे अधिपति, करे प्रकट प्रभुनी विनति॥७॥ एम जन जोइ बहु धाम, माने पोताने पूरणकाम। वळी देखे ब्रह्मांडे ब्रह्मांड, देखे पोतानुं पारकुं पंड ॥८॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार, देखे प्राण इंद्रियपरिवार । घाट शुभ अशुभ जे थाय, तेती पर पोताना जणाय ॥९॥ एम देखे समाधिये जन, करे प्रकट प्रमाण भजन । परापार जे पूरणब्रह्म, जेने नेतिनेति कहे निगम ॥१०॥ तेज सुखदाय सहजानंद, जगजीवन जे जगवंद। जे कोइ सर्वे कारणना कारण, तेणे कर्युछे तन धारण ॥११॥ सर्वे अवतारना अवतारी, तेज सहजानंद सुखकारी। जे कोइ सर्वे धामना धामी, जाणो तेज सहजानंद स्वामी।।१२।। शशि धर अज अमरेश, शेप महेश देव गणेश । पृथ्वी पाथ पावक पवन, दिगपाल काल माया घन ॥१३॥ एहआदि जे विजां अनेक, जेनी न लोपे आगन्या एक । तेज मूरति जाणिने जन, करे सहजानं-दनुं भजन ॥१४॥ अतिप्रत्यक्ष प्ररोक्ष न लेश, एवी वातो थाय देशोदेश। थाय प्रकट पूजा बहुपेर, प्रकट गुण गाय घेरघेर ॥१५॥

थाय अर्चा पूजा ने आरती, करे स्तवन जन विनति। धरे मोरमुगट वनमाल, छत्र चमर करे मराल ॥१६॥ पूजा प्रकट प्रकट भजन, करे नरनारी बहु भजन । निरसंशय थइ नरनार, भजे प्रकट प्रमाण आधार ॥१७॥ तेनां हरे दुःख दीनबंधु, कृपाळ दयाळ सुखसिंधु । काम क्रोध लोभ मोह आदि, नड्याछे जे जीवने अनादि ॥१८॥ एवा अत्रु अजितने जिति, करावे निजचरणे प्रीति। एम अनंत जीव उद्धार्या, भवसागर पार उतार्या ॥१९॥ द्विज क्षत्रि वैश्य शुद्र लइ, नरनार उधारियां कइ। पेखी पोतानी सामर्थी रयाम, आप्यां आश्रितने निजधाम।।२०।। श्वेतद्वीप वैकुंठ गोलोक, पाम्या अक्षरधाम अशोक। छते तने छे मगन जन, वळी करे प्रकट भजन ॥२१॥ माने मळ्या श्रीहरि साक्षात, न करे कोइ वायदे वात । विजा मतपंथ मोळा पड्या, रह्या तेपण सड्या बगड्या ॥२२॥ एमां जीव मुमुक्षु जे हता, आव्या प्रकट प्रसुने गोतता । उदय अस्तमांइ एक वात, प्रश्च सहजानंदिज साक्षात ॥२३॥ बाळ जोबन ने बृद्ध जेह, तैने न रह्यो तेमां संदेह। एम प्रकटपणे नरनार, करे भजन सहु अपार ॥२४॥ देव भैरव भवानी पीर, वळी वैताळ वैताळी वीर। मंत्र जंत्र ने मुंठ कामण, दैत्य भूत प्रेव पितृगण ॥२५॥ टोणा नाटक चेटक चोटे, तेनी बीक नहि मिप खोटे। एम प्रकट प्रभुने पामी, जिजि शंका ते सरवे वामी ॥२६॥ नहि अंतरे कोइनो भार, पासी प्रकट धर्मकुमार । वटी निजनिज धर्म पाळे, एकट मूरति नाथ निहाळे ॥२७॥ प्रकट प्रभुनुं करे भजन, तेणे जन रहेछे मगन। कोइ वातनी न रही शंका, दीधा काळ मायापर डंका ॥२८॥ अति प्रकटनं बळ लइ, बीजी वाततणी बीक गइ। एम अकटपणानी

वात, जणाणी जगमांहि विख्यात ॥२९॥ थाय परचा अति अपार, न माने एवो कोण गमार। ज्यारे मुके सतसंगी देह, आवे नाथ तेडवाने तेह ॥३०॥ मरे विमुख करी हायहाय, मुवा पछी जमपुर जाय। एम देखी दो प्रसिद्ध विधि, मजे सहजानंद सुख-निधि ।।३१।। वाटे घाटे ए थाय उच्चार, प्रभु प्रकट विना अंधार ! नथी वात ए छानी छपाड्ये, छे छतराई ते चोडेघाडे ॥३२॥ एवं करीने प्रकटपणुं, कर्युं कल्याण बहु जीवतणुं। पछी नाथे विचार्युं अंतरे, ज्यारे हुं नहि हुउं आ घरे ॥३३॥ त्यारे मारा आश्रित नरनार, थाशे निरालंब निरधार । माटे एने करुं आलंबन, विजां थाशे जे आगळ्ये जन ॥३४॥ तेनां कल्याण करवा सारुं, करी मंदिर मूर्तियो वेसारुं । वळी मारुं गुरुपणुं जेह, स्थापुं धर्मकुळमांहि तेह ॥३५॥ एम विचारिने ततखेव, पछी नरना-रायण देव। लक्ष्मीनारायणादिक सारी, पोतानी मूरतियो बेसारी ॥३६॥ अवध्यप्रसाद ने रघुवीर, कर्या आचार्य गुणे गंभीर । मूर्तिद्वारे ऐश्वर्य जणात्री, पुर्या परचा समाधि करावी ||३७|| इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये पुरुपोक्तमनो महिमा तथा प्रकटपणुं कहुं एनामे एकसो ने एकमुं प्रकरणम् ॥१०१॥

पूर्वछायो-अनंत लीळा अनंत चरित्र, अनंत सामर्थ्य सोइ।
अनंत प्रताप अनंत परचा, कविजन न लखे कोइ।।१॥
अपार माहात्म्य अपार महिमा, मोटप्य अपरमपार। अपार
गंभीर अपार गरवा, कवि कोण करे निरधार॥२॥ पंखि जेम
पांख बळे, उष्टे पार लेवा आकाश। सरुं ते नावे शृत्यनं, निथे
पामे तन नाश।।२॥ एम चरित्र महाराजनां, छे जो अनंत

अपार । केतांकेतां कहेवाय नहि, एम निश्रय छे निरधार ॥४॥ नर जे उत्तर पंथनो, इच्छे आ तने लेवा अंत । पहोच्यानी प्रतीत करवी, एज भोळाइ अत्यंत ॥५॥ उडुगण कण भूमितणा, जळकण जाणे जन । वनपात गातरोमावळी, गणे असकण खंडधन ।।६।। एह सर्वे अपारनो पार, लिये कविजन कोइ। हरिचरित्रनो पार हजारुं, सरुं न लिये सोइ।।७॥ जेनुं वर्णन करतां वाणी थाके, मनन करतां मन। चितवन करतां चित्तं थाके, एम निश्च जाणज्यो जन ।।८।१ चोपाइ-धरी हरि कृष्ण अवतार, करे छीळा अनंत अपार । उठे बेसे बोले जुवे जमे, हाले चाले हरि हसे रमे ।।९।। सुवे जागे मारो कांइ जेह, आवे जाय उभा रहे तेह। चाले चटके लटके चाल, करे करनां लटकां लाल।।१०॥ क्षिक सांभळे ने लिये दिये, केम लखाय जे पाय पिये। पूजे पूजावे पिरसे हाथे, अतिहेत करे जनमाथे ॥११॥ पहेरे पहे-रावे वस्त्र धरेणां, सरवे चरित्र छे सुखदेणां। त्यागे तगावे वढे वखाणे, माने मनावे जणावे जाणे ॥१२॥ करे दातण ने मुख धुवे, बस्न लासे झीणे मुख छुवे। चोळे तनमां तेल फुलेल, नाय उने नीरे अलबेल ॥१३॥ जेजे किया छे कुपासिंधुनी, लखवा जेवी जे दीनबंधुनी । थिरा उतावळा पाव धरे, चाले चाल्य छाल मनहरे ।।१४।। खीजे रीजे राजि रहे राखे, कांइक भूत भविष्यनुं भाखे । डरे डरावे देखाडे बीक, राखे रखावे ठेरावे ठीक ॥१५॥ बुद्धिपाररे विचार करे, धरे ध्यान ज्ञान अनुसरे। गाये गवरावे त्रोडे तान, सुणे सुणावे समजावे सान ॥१६॥ जेजें लीळा करे भगवान, तेते लखवा जेवी निदान । सदा सांमळवी वळी कहेवी, सर्वे धार्या विचारवा जेवी ॥१७॥ धीति

पोति पीतांत्रर शाल, जामो जरी सोय सुरवाल। पाघ **क**सुंबि सोनेरी कोरे, धर्युं छोगलियुं चित्त चोरे।।१८।। वेढ विंटि कर कडां काज, शोभे पोंचि अंगुठि ने बाजु । हीरासांकळि हूलर हार, शोभे अंगोअंग शणगार ॥१९॥ काने कुंडळ कलंगि वौरो, माथे मुगट कंटे सोनादोरो। सोनासांकळां उतरी ओपी, मोति-माळा कंटमां आरोपी ।।२०।। चर्च्या चंदन केशर सुगंध, तोरा गजरा ने बाजुबंध । हैये हार अपार फुलना, पहेर्या महाराजे मोंघा मुलना ॥२१॥ वेठा डोळे हिंदोळे दयाळ, करे पूजा आरती मराळ । जेजे लीळा करी अविनाश, तेते लखना जेनीछे दास ॥२२॥ केसु केशर कसुंबी रंग, प्रीत्ये रीत्ये कढाव्यो पतंग । रंग सीरंग गेरा गुलाल, भरे झोळि रंगे टोळी लाल ॥२३॥ अलवेल खेल अति करे, मांहोमांहि अंगे रंग भरे। जोइ जन तनभान टळे, थाय समाधि अंतरे बळे ॥२४॥ बळी देखाय देश प्रदेशे, प्रेमि-जननां हेत हमेशे। एवी लीळा अनंत अपार, कहो केम आवे कहेतां पार ॥२५॥ गज वाज रथ वेल्य जेह, मेना सुखपाल पालखी तेह। जेजे वाहने वेसे वाल्यम, तेते विसारवा जेवा केम ॥२६॥ खाट पाट पलंग खुरशी, जियां वेठा श्रीहरि हूलसी। खेल लौकि अलोकिक करे, नावे पार लख्ये तेनो सरे ॥२०॥ कोटि ब्रह्मांड रहे जेने रोम, कोटि कवि रवि शिव सोम । तेती धरी नरतन नाथ, रमे गोविंद सखाने साथ ॥२८॥ जेनां दर्शन दुर्लभ सहुने, आपे दर्शन ते जन बहुने। अधी ऊर्ध्व विदुध विमान, जुवे देवांगना भगवान ॥२९॥ श्वेतद्वीप वैकुंठ गोलोके, आवी मुक्तमंडल विलोके। निर्धि निरन जाय निजधाम, पामी परम सुख विश्राम ॥३०॥ एम अलवेलो सुख दिये, नर निर्जर निरन

लिये। लोके परलोके आनंद आले, तेतो लख्या विना केम चाले ॥३१॥ करे लीळा अवनि उपर, धन्य ध्यान कर्या जेवी घर । धन्य रम्था भम्या जियां रिह्या, स्पर्शि रज मळे कही कियां ॥३२॥ धन्य आंबा आंबलिनी छांय, बेठा ज्यां हरि करी सभाय । धन्य गिरिगह्वर वाटी वन, जियांजियां भम्या भगवन ॥३३॥ धन्य नदी ताल वापी कूप, जियां नाह्या स्थाम सुखरूप। तीर्थ क्षेत्र पवित्र जे थाम, धन्य फर्या ज्यां सुंदरश्याम ॥३४॥ खंड देश . शहेर गाम घोष, फरी हरि कर्या ते अदोष। मेडी मोल अगाशी अवास, जियां कर्यों वाल्यमजिये वास ॥३५॥ बहु बंगला हवेली होज, जियां रह्या हरि करी मोज । ज्यांज्यां वास कर्यों मारे वाले, तेतो लख्या विना केम चाले ॥३६॥ मळ्या योगी भोगी जे भूपाळ, कोइ जटी मुंडी कंठमाळ । पीर फकीर जंगम जेह, भट पंडित पुराणी तेह ॥३७॥ ज्यांज्यां मळी करी चरचाय, जिति वादी लगाडिया पाय । शैवी शक्ति वैष्णवी वेदांति, तेने अंतरे थइ अशांति ।।३८।। बहु जीव हता जे बेहाल, मळी नाथने कर्या **मिहाल। दह दरश स्परश आप, टाळ्या पापिना पाप संताप ॥३९॥** कर्क यज्ञ जनोहनां काज, सदावत जमे मुनिराज। विवा वाजन ने खर्चजान, जियां गया थया मजमान ॥४०॥ कर्या सारा उत्सव समैया, तेतो केम जाय लख्या कहीया। देश प्रदेशे परचा दीथा, बहु जीव सनग्रुख कीथा ॥४१॥ सर्थे संभारी लखिजो लैबे, मझा शत सरिखा जो हैये। नहि रसना शेपना सम, गिरा शारदा सम नहि गम ॥४२॥ लख्ये लंबोदर कर नथी, सुणे पृथुसम कान क्यांथी। नथी आयुष लोमशतणी, नथी बुद्धि ते विधिथी घणी।।४३।। नथी कवि वाल्मीक व्यास, करे सर्वे गुणनो

प्रकाश! एवा एवा समर्थ अपार, बुद्धिसागर बहु विचार ॥४४॥ तेहतणी पण सुणी वाणी, सहु रह्याछे अगम जाणी। कियां एह ने आपणे जाणो, खग भानु खद्योत प्रमाणो ॥४५॥ अस्प आयुप ने अल्पबुद्धि, अल्प सामर्थ्य न लहि शुद्धि । कह्युं काला-वाला करी कांइ, हशे समुं वसमुं ते मांइ ॥४६॥ आगे कहेवा रही अभिलाप, हुवां क्षीण नेणप्रकाश । हति हैयामां हि घणी हाम, लखवा चरित्र सुंदर क्याम ॥४७॥ पण जियांलगि प्राण रहेशे, जिभा खामि सहजानंद कहेशे। तेह विना कहे बीजुं केम, पिंड आंठि अंतरमां एम ॥४८॥ कान नहि सुणे विजो उचार, नेत्र नहि जुवे विजो आकार। त्वचा नहि करे भेट्य विजानी, नासा नहि लिये सुगंधि नानी ॥४९॥ मन नहि करे मनन अन्य, बुद्धि नहि करे निश्चे हरि विन्य। चित्त न चित्तवे बीजी वात, अहंकार हुं हरिनो साक्षात ॥५०॥ शिश नहि नमे अन्य पाय, रुदे बीजुं ध्यान नहि धराय। कर नहि जुते अन्यने आगे, वीजे पंथे नहि चलाय पागे ॥५१॥ माटे ज्यांलगि रहे तनश्वास, तज्ञं नहि त्यांलगि ए अध्यास । हरिगुण गातां छुटे तन, तेमां मगन छे मारुं मन ॥५२॥ धन्य अवण रिझ्या हरिजशे, धन्य त्वचा प्रभुपद स्परशे । धन्य नेण जुवे हरिमूर्ति, धन्य जिभा कहे हरि-कीर्ति ॥५३॥ धन्यधन्य ए सर्वे समाज, जेणेकरी रीझे महाराज। ए छे वात अलेखामां अति, न पडे प्राकृत जीवने गति ॥५४॥ मनवाणीने अगम जेह, पूरण पुरुषोत्तम तेह । तेतो धरी मतु-व्यनु तन, जन हेते फरेछे जीवन ॥५५॥ तेनां लीळाचरित्रने गातां,थाय निर्मळ जळ जश्च नातां। माटे नाम चरित्र सामर्थ, कहेशुं नहि खोये जनम व्यर्थ॥५६॥ निजधर्मे वर्ते जन जेह, कहेशुं सर्वे संभारिने तेह। अतिपवित्र चरित्र गातां, नथी मुजथकी ते मुकातां ।।५७।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये पुरुपोक्तमनो महिमा कथन-<mark>नामे ए</mark>कसो ने बीजुं प्रकरणम् ॥१०२॥

पूर्वछायो-अनेक लीळा अनेक चरित्र, करी कर्यो जननी उद्धार । सुंदर निर्गुण मूरति, तेने वंदु हुं वारमवार ।।१॥ अनेक नामना नामी खामी, सर्वना सुखधाम । अनेक एकनी म्रति, अनेक एकनां नाम ॥२॥ ते प्रभु प्रकटपणे फरे, करे जीवनां कल्याण । मनोहर मूर्ति महाराजनी, तेने प्रणमुं जोडी हुं पाण ।।३।। पुरुषोत्तम पूरण पोते, अढळक ढळ्या आ वार । तेनां चरित्र पवित्र अति, वळी कहुं करी विस्तार ॥४॥ एक समे मुनि सहु मळी, आविया प्रभुजि पास । अतिहेते स्तुति करवा, हइये थयाछे हूलास ॥५॥ चोपाइ-नमो कृष्ण नमो नारायण, नमो जीवश्रेयपरायण। नमो बळवंत बहुनामी, नमो अकळ अंतर-जामी ॥६॥ नमो सह जीवना सुखकारी, नमो दीनवंधु दुःख-हारी ! नमो दासना त्रासविनाश, नमो सहुना आदि अविनाश ॥७॥ नमो पुरुषोत्तम सहुपार, नमो अक्षरधामआधार । नमो निर्गुण सगुण स्वामी, सर्वे धामतणा तमे धामी ॥८॥ नमो अपरमपार अकळ, नमो सर्वना स्याम सबळ । नमो क्षर अक्षर नियंता, नमो गुणपार गुणवंता ॥९॥ नमो अवतारना अवतारी, नमो संततणा सुखकारी। नमो दीनना बंधु दयाळ, नमो भक्त-वत्सळ प्रतिवाळ ॥१०॥ नमो क्रपाना सिंधु क्रपाळ, नमो दयाना निधि दयाछ । नमो प्रभुजि पूरणकाम, नमो संततगा सुखधाम ।।११।। नमो ईशतणा महाईश, नमो भक्तपति जगदीश । नमो

परमेश्वर परब्रह्म, नमो भवतारण त्रिक्रम ॥१२॥ नमो वासुदेव वरदेण, नमो केशव कमळनेण। नमो गोपाळ गोक्कचंद, नमो गोपीवल्लभ गोविंद ॥१३॥ नमो नाथ गोवर्धनधारी, नमो बाळ-मुकंद मुरारी। नमो पद्मनाभ पीतांबर, नमो पुनित परमेश्वर ॥१४॥ नमो पवित्र परमानंद, नमो पद्माक्ष पृथविवंद । नमो नारायण निर्विकार, नेमो नृसिंह नरकनिवार ॥१५॥ नमो नरोत्तम नरवीर, नमी नागनाथण सुधीर। नमी रघुनाथ रामचंद्र, नमी राघत सुख-समुद्र ॥१६॥ नमो राजीवलोचन राम, नमो रमापति राजनाम । नमो वामनजि विश्वेश्वर, नमो विश्वरूप विश्वंभर ॥१७॥ नमो विश्वेश विष्णु ने व्यास, वेदवल्लभ वाणीप्रकाश । नमो दामोदरजि द्याळ, नमो देव देवकीजि बाळ॥१८॥ नमो दीननाथजी दैत्यारी, नमो देवेश देव ग्रुरारी । नमो माधव मधुस्दन, नमो ग्रुढंद ग्रुष्टिक-मर्दन।।१९।।नमो महाबाहु मंजुकेश, नमो महाधीर श्रीदेवेश। नमो केशव करुणाधाम, नमी कौमीदकीधर नाम ॥२०॥ नमी कामेश कृष्ण दयाळ, नमो कौस्तुभित्रय कृपाळ । नमो भूधर भुवनानंद, नमो भूतनाथ भववंद ॥२१॥ नमो भुवनैक भुजगेश, नमो भवनसावण ईश् । नमो जनार्दन जदुराय, नमो जमनाथ तव पाय ॥२२॥ नमो जक्त जाड्यन विनाश, नमो जगदाधार अविनाश । नमो सचिदानंद चराचर, नमो चतुर्भ्रज चक्रघर ॥२३॥ नमो श्रियनाथ श्रियपति, नमो श्रीवरप्रद छो अति । नमो श्रीधर श्रीसुरेश्वर, नमी सौम्य श्रीवन्सांकधर ॥२४॥ नमी योगेश जीवनप्राण, नमो यशोदानंद सुजाण। नमो यम्रनाजळ किलोल, नमो संपूरण कळा सोळ ॥२५॥ नमो श्रीहरिजि शाळग्राम, शुद्ध शंखचकधर नाम । नमो सुरासुर सदा संब, नमो साधुबछम २६ भ०चि०

अभेव ।।२६।। नमी त्रिविक्रम तपोइंद्र, नमी त्रिस्थळ तीर्थराजेंद्र । नमो लीळाधर लक्ष्मीवर, नमो लोकवंद लोकेश्वर ॥२७॥ नमो अनंत अच्युत अनादि, अघहर आनंदरूप आदि । नमो हरि हळधरश्रात, नमो हिरण्याक्षहन नाथ ॥२८॥ नमो अक्षरधाम आधार, तमे संतना सुखभंडार । संत हेते धरी अवतार, करो अनेक जीव उद्धार ॥२९॥ ज्यारे ज्यारे जेवुं पडे काम, त्यारे तेवुं तन धरो क्याम । नमो मत्स्य तमने मुरारी, नमो कच्छरूप सुख-कारी।।३०॥ नमो तमने वाराहरूप, नमो तमने नरहरि भूप। नमो तमने वामन नाम, नमो तमने परशुराम ॥३१॥ नमो तमने श्रीरामचंद्र, नमी तमंने राज्यराजेंद्र । नमी तमने कृष्ण कृपाळ, नमो देवकीनंद दयाछ।।३२।। नमो बुद्ध तमे बहुनामी, नमो अकळ अंतरजामी। नमो कलकि करुणाधाम, धरो तन करो जनकाम ।।३३।। तमे धरी पुरुष अवतार, ब्रह्मा आद्ये रच्यो आ संमार। तमे सुयज्ञ शरीरधारी, हरि त्रिलोकपीडा निवारी ।।३४।। धर्यु कपिल तन मातकाज, कह्युं सांख्यतत्त्व मुनिराज । तमे थइ दत्तात्रेय नाथ, कर्या यद् हैहय सनाथ ॥३५॥ तमे सनकादिक तनधारी, आत्मतत्त्वनी वात विस्तारी। तमे नारायण तप करता, काम क्रोध लोभ मदहरता ॥३६॥ वळी धरी तन भगवान, दिधुं ध्रुवने तमे वरदान । तमे ज्यारे पृथुतन धर्यु, त्यारे पृथिवी दोहन कर्युं ॥३७॥ तमे ऋषभरूपे हरि थया, पुत्र बोधी परमहंस रह्या। तमे हयग्रीवतनधारी, वेदमय वाणीयो उचारी ॥३८॥ ज्यारे हरि अवतार धार्यो, त्यारे ग्राहथी गज उगार्यो । थया हरि हंसरूप जेवा, ब्रह्मा नारदने ज्ञान देवा ।।३९॥ तमे धन्वंतरी तन-धारी, टाळ्यो रोग आयुष वधारी । तमे धरी व्यास अवतार,

कर्या एक वेद वदि चार ॥४०॥ तमे नारदनुं तन लयुं, नैष्क्रम्ये सान्वततंत्र कह्युं । एवा बहु धरी अवतार, कर्या अनंत जीव उद्धार ।।४१।। तमे मत्स्य थइने मुरारी, लाव्या वेद शंखासुर मारी। थड़ कूर्मरूपे ते अकळ, धर्यो पीठपर मंद्राचळ ॥४२॥ धरी वारा-हरूप दयाळ, राखी पृथवीजाति पयाळ । तमे नृसिंहतन धरी नाथ, हण्यो हिरण्यकशिपु हाथ ॥४३॥ कर्यु प्रह्लादनुं प्रतिपाळ, दासत्रास निवार्यो दयाळ । वामनरूप धरीने महाराज, बळी छळयो इंद्रराज्यकाज ॥४४॥ धरी परशुराम अवतार, हण्या क्षत्रि एकविश बार । तमे रामरूपे थइ राज, मार्या रावण बांधि सिंधु-पाज ॥४५॥ तमे धरी कृष्णअवतार, कर्यो चरित्र अपरमपार । मारी पूतना भाग्युं शकट, मार्थे तृणावंत ते विकट ॥४६॥ यम-लार्जुन मूळ उखाडी, मार्यो वत्स वक चांच फाडी। कालि नाथि पिधी दावानळ, मार्यो धेनुक ते महाखळ ॥४७॥ थया बाळ वत्म तमे वळी, अल्यो ब्रह्मा शक्यो नहि कळी। धारी गिरि इंद्रदर्प मोड्यो, व्याळ वरुणथी नंद छोड्यो ॥४८॥ ग्रंख-चूड वृषभ ने केशी, तमे मार्थी व्योमासुर देषी। हण्यो कंस ते अंश असुर, मार्यो अघासुर महाभूर ॥४९॥ मार्यो काळजवन जरा-संध, बाण भाम मार्यो महाअघ । मार्यो शालव ने शिशुपाळ, हण्यो दंतवक ने दयाळ ॥५०॥ एवं करी कृष्ण अवतारे, मार्या दुष्ट बहु तेह वारे । करी चरित्र गोकुळचंद, आप्यां निजजनने आनंद ॥५१॥ तमे धरी बुद्ध अवतार, देख्युं अवनिए अघ अपार। हण्या दैत्य बोध्या बहु जीव, तंते पार कर्या ततखेव ॥५२॥ पेखि पाषंडी भुवे अपार, तमे लेशो कल्की अवतार। आद्य अंते मध्ये अवतार, सर्वे तमारा ते निरधार ॥५३॥ जेजे कर्या पृथ्वीपर काज, तेतो सर्वे तमे महाराज। वळी थाशे थायछे जे कांह, तेतो सर्वे तमारी इच्छाय। १५४।। माटे नमोनमो नाथ तमने, मोटे भाग्ये मळिया छो अमने। एम स्तवन कर्यु जोडी हाथ, त्यारे बोलिया श्रीमुखे नाथ। १५५।। पूर्वछायो — जेजे जन तमे कहां, ते सर्वे सांभळ्युं कान। एह मांयछं अमे न कर्यं, तमे केम जाण्या भगवान। १५६।। इतिश्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ध्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये सर्व मुनिजन मळिने सर्व अवतारना अवतारी महाराजने जाणीने स्तुति करी एनामे एकसो ने त्रणमुं प्रकरणम्। १०३।।

राग सामेरी-नाथ कहे सहु सांभळी, जेणे करी कहा भगवान। आ तने ते नव कर्युं, अमथुं करोछो अनुमान ॥१॥ वेद अमे वाळ्या नथी, नथी शंखासुर आदि मारिया। जेणे-करी भगवान जाणो, ते मत्स्य प्रभु मोर्ये थिया ॥२॥ पिठ्य उपर गिरि धरी, नथी मथीयो अमे मेराण। चौद रत्न लिघां तेतो, कूर्म प्रभु प्रमाण ॥३॥ हिरण्याक्ष हणी पृथवी, वालि नथि आ वार । जे प्राक्रमे प्रभु कह्या, एतो वाराह अवतार ॥४॥ हिरण्यकशिपु मारीने, करी जन प्रह्लादनी सार । एह प्रतापे प्रभु खरा, तेती नृसिंह अवतार ॥५॥ पंड वधारी मरी पृथिवी, बिक छिकेने लिधुं राज। तेह अमे कीधुं नथी, एतो वामनजि महाराज॥६॥ तातने हेते इण्या क्षत्रि, फेरी फरशि एकविश वार। ते प्रतापे प्रस् कहोतो, एतो परशुराम अवतार ॥७॥ खर इखर ने कुंभकर्ण, नथी मार्यो में रावण राज । एतो प्रभु रघुनाथजि, बांधी पाज पत्नीकाज ॥८॥ काळी नाथी कर गिरि घरी, इंद्रनुं मान उखा-डियुं । ब्रह्माने मनभंग करी, विश्व माने मुखमां देखाडियुं ॥९॥

अघासुर बकासुर केशी, वत्स धेनुकासुर वृषभ । व्योमासुर मौमा-सुर वळी, सुरदानव मधुकैटभ ॥१०॥ कंस ने वळी कालयवन, शंखचूड ने शालव सिंह । बाणासुर शिशुपाळ सरखा, जरासंध जेवा कहि ॥११॥ दंतवकादि दुष्ट दम्या, रम्या व्रजयुवति संग। एह प्राक्रमे कृष्ण प्रभु, तेतो अमे न कर्या अंग।।१२।। जोइ दृष्ट यज्ञ करता, मद्य ने मांसारी थया । तेने मोह पमाडि जीव तार्या, ते प्रभु बुद्धजि कह्या ॥१३॥ पाखंडी बहु प्रकटी, सत्यधर्म नाश करशे। जीवने शुद्ध बोध देवा, कलकि तन धरशे ॥१४॥ एह-आदि अनंत देह, धर्या धरणि उपरे। खळबळ खंडन करी, तार्या जन बहु एणिपेरे ॥१५॥ एम अनेक अवतारमां, बहुबहु करियां काज। एहमांयछ अममां, कहो शुं दीठुं तमे आज॥१६॥ एह प्राक्रमे प्रभ्रपणुं, अममांहि एके नथी। न मानो तो जुवो मजरे, कहुं तमने हुं शुं कथी ।।१७।। एम वात करी हरि, सर्वे संत सांभळता। सुणी वचन वालातणां, सुनि मरकी बोल्या वळता।।१८।। नभ कहे हुं नभ नहि, कहे पवन हुं नहि पवन। तेज कहे हुं तेज निह, एम कह्युं श्रीभगवान ॥१९॥ जळ कहे हुं जळ नहि, धरा कहे हुं धरा सहि। सिंधु कहे हुं सिंधु शानी, तेम प्रभु कहे हुं प्रभु नहि।।२०।। सूर्य कहे हुं सूर्य शियो, शशि कहे हुं शशि नथी। एनो उत्तर एक न मळे, जने विचार्य मनथी॥२१॥ एम आच्युं ए वातमां, संतजने समझि लयुं। आपणेतो आनंद छे, पण बिजानुं तो घर गयुं ॥२२॥ एवं सुणी संत सरवे, लाग्या शिश डोलाववा । केवी वात करी हरि, दुष्ट जन भुलाववा ॥२३॥ हरिजन मन हरिखयां, जोइ जीवननी जुगति। आवी वाते अन्य जननुं, अवळुं थाशे अति ॥२४॥ मस्तजाति भगवाननी,

इच्छा आवे तेम ओचरे। संत सुणी मुख पामे, असंतने अवळुं करे ॥२५॥ संत सर्वे लीळा जाणी, चित्तमां नित्य चिंतवे । असंत कहे आपण जेवा, मनुष्य करी मन लेखवे।।२६॥ मनुष्य जाणी मोटामोटा, अभिने भुला पड्या । आप युद्धिए अनुमान करी, थड मुकी डाळे चड्या ॥२७॥ मनुष्यचरित्र जोइने, पारवती नव प्रिछियां। रोता देखी श्रीरामने, भवानी भुली गयां ॥२८॥ पनंगारि पार्षद मोटो, नित्य रहे हरिने संगे । नागपासे नाथ बांध्या, देखीने भुल्यो अंगे ॥२९॥ ब्रह्मा आव्या भाळवा, भुल्या अन्य आचारमां। चरित्र जोइ महाराजनां, विधि पड्या विचारमां ।।३०।। हर्या वत्स वळी बालकां, पछी आविने पेखियुं। बहुविधिए विलोकियुं, पण अणु न्यून न देखियुं ।।३१।। एवा एवाने एम धयुं, तो अवरनो शियो आशरो । चरित्र जोइ चळे नहि, तेह भक्त हरिनो खरो ॥३२॥ नरतन धरी नाथजि, कांइ कांइ होये करता । सुता बेठा जागता, खाता पिता ओचरता ॥३३॥ जेजे चरित्र करे हरि, ते जननां मन हरवा। ललित लीळा लालनी, छे मुनिने ध्यान धरवा ॥३४॥ एम समझि संत सर्वे, मोह न पामे मनमां। जैमजेम लीळा जुवे, तेमतेम रहे मगनमां ॥३५॥ जेजे बात हरिए करी, ते सर्वे संते सांभळी । पाडी ना प्रभु-पणानी, पण संतनी मति नव चळी ॥३६॥ पछी संत बोलिया, म्रिन विचारी मनथी। मत्स्यादि देहे कर्यां प्राक्रम, तेतो तमे कर्यां नथी ॥३७॥ पण जेवुं जणायछे अमने, तेवुं कहेशुं करभामिने । समझी समागम कर्योंछे, जाणी अंतरजामिने ॥३८। आगळ तमे जे ओचर्या, तेनुं एम जणायछे आज । निरसंशय निश्रय

करी, कहेशुं कर जोडी महाराज ।।३९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रव-र्तकश्रीसहज्ञानदस्वामिशिष्यनिष्कुलानदमुनिविरचिते भक्तचितामणि-मध्ये हरिमनुष्यचरित्रकथननामे एकनो ने चोथुं प्रकरणम् ॥१०४॥

चोपाइ-त्यारे बोलिया सरवे मंत, तमे सांभळो श्रीभग-वंत । वेद वाळ्या मन्स्य तन धारी, शंखामुरने नार्यो मुरारि ॥१॥ शंखासुर इतो महाबळी, पेच प्राक्रमे पूरण वळी। तेने काम कोधे मळी मार्यो, लोभ मोह आगळते ए हार्यो ॥२॥ एवा काम लोभ ने जे कोध, महा जबर छे जगजोध। तेने जिति कयों जेजेकार, एथी कीण मोटी अवतार ।।३।। धरी कमठ रूप सुजाण, मध्यो मंद्राचळ ते मेराण। देव दानव नेतरु ताणि, बळे वहोयुं समुद्रपाणि 🗝 🛭 एवा सुर असुर बळिया, तेनेपण काम कोधे गळिया । एवा काम कोघ लोभ भारी, सुरासुर सुक्या जेणे मारी ॥५॥ नेनो नाश कर्यो निग्धार, तेवी कोण मोटो अवतार । धरी वाराहरूप महाराज, हण्यो हिरण्याक्ष पृथवी काज ।।६।। हिर्ण्याक्ष महाबळवंत, बहु प्राक्रमी युद्धे अत्यंत । लइ गदा गयो म्दर्गलोक, देखी देव पाम्या महु दोक ॥७॥ लाग्यो भय भाग्या महु सुर, दइ डारो ने बळ्यों असुर । पछी के काळ सिंधुमां फर्यो, लेरिसाथे गदायुद्ध कर्यो ॥८॥ त्यांथी गयो वरुणने पाम, मांहि दुष्ट ने उपर दाम। जोडी हाथ जाच्यो युद्ध जाणो, ते वरुणथी नत्र अपाणी ॥९॥ एवी महाबळियो जीराण, तेपण काम-क्रोधनो वेचाण। एवा काम क्रोध लोभ लॉंठा, जेणे सहुने कर्या पारीठा ।।१०।। एवा कामादि कर्यों संहार, एथी कीण मोटो अव-तार । धरी नृहरिरूप अनूप, मार्यो हिरण्यकशिषु भूप ॥११॥ हिरण्यकशिपु महा बळवान, करी तप थयो भगवान । महातपे तेजे

परतापी, लीधुं राज्य इंद्रनुं उत्थापी ॥१२॥ आप तपबळे करी भूप, थयो दश दिगपालरूप। ओगणपचास वायु अनुप, थयो ते बार सर्यस्वरूप ।।१३।। अष्ट वसु वळी लोकपाळ, थयो सर्वे रूपे ते भूपाळ । लोकपाळ गुण पोते ग्रहि, यज्ञभाग लिये आपे जहि ॥१४॥ एवो हतो प्राक्रमी जे अति, तेने मोह लोभे लीधो जिति। काम कोध मन इंद्रिसाथ, एने आगळ वस्त्यो अनाथ ॥१५॥ एवा काम कोध लोभ मोह, मन इंद्रियआदि जे समोह। तेने वश कर्याछे आ वार, एथी कोण मोटो अवतार ॥१६॥ वामनरूप धरीने दयाळ, करी इंद्रतणी प्रतिपाळ। इंद्र सुरतणी अधिपति, जेने घेर श्रचीजेवी सती।।१७।। तेनेपण कयें। कामे कंगाल, ऋषिघेर जह थयो बेहाल । एवा कामादिक जे करुर, जेथी बच्या नहि सुरा-सुर ॥१८॥ एवा पापिनो कीधो प्रहार, एथी कोण मोटो अव-तार । धरी परशुराम अवतार, मार्या क्षत्रि एकविश वार ॥१९॥ कर्युं तातहेत एह काज, हता तात तने तिपराज । है हये कर्यु एवं काम, बीजा जीवनुं शुं पुछो नाम ॥२०॥ एवो क्रोध वा काम के लोभ, जेणे सहुनां मन कर्यां क्षोम। तेनो शोधिने कर्यो संहार, एथी कोण मोटो अवतार ॥२१॥ श्रीरामजि अवतार धारी, मार्यो रावण महा अहंकारी। रावण तपे पामी वरदान, थयो बहु अजित बळवान गरिया जित्यो खर्ग मृत्यु ने पाताळ, थयो महा अभिमानी भूपाळ। जित्या ब्रह्मा इंद्र सुर सर्व, रह्या नहि कोइनो ते गर्व ॥२३॥ जित्यो घन पवन जमराय, जित्या नवग्रह ने जराय। एवो महाबळी अहंकारी, तेने लीधो कामकोध मारी।।२४।। ते काम क्रोधनो आण्यो अंत, तेने कोण न कहे भगवंत। कर्यो कृष्णे चरित्र अपार, बहु दुष्टनी कर्यो संहार ॥२५॥ दुष्ट हता बहु

बळवंत, प्राक्रमी ने मायावी अत्यंत । आप जोरे जिति सहु जन, थया पृथ्वीए पोते राजन ॥२६॥ जरासंघ शिशुपाळ आदि, अनम्र अहंकारी अनादि । जेनी नमति नहि परछाय, महा अभिमानी मनमाय ॥२७॥ तेने काम क्रोधे लोभे मळी, नाख्या मोह ममताए दळी। एवा काम कोधादिक कोटा, जैने आगे हायी छोटा मोटा ॥२८॥ एवा दुष्ट जेथकी हणाय, तेतो सर्वथी मोटा गणाय। काम क्रोध लोभ जे चंडाळ, एथी सुंडं थाय ततकाळ ॥२९॥ स्वर्गलोकथकी पाछा पाडे, विधिलोकथी मूळ उखाडे। पाडे वैकुंठ लोकथी वळी, पाडे अन्य लोकथकी मळी ॥३०॥ जेजे प्रापतिमांहिथी पड्या, तेह सर्वेने ए शत्रु नड्या। माटे एने दिये जे विदारी, तेती अवतारना अवतारी ॥३१॥ सूक्ष्मदृष्टिवाळाने ए सुजे, स्थूळदृष्टिवाळा ते न बुजे। माटे आज छे वात अलेखे, जाडी बुद्धिवाळा ते न देखे ॥३२॥ आगे थया जे जे अवतार, कयों दैवी जीवनो उद्धार। दैवी आसुरी संपत्ति-वाळा, आज सहुने कर्या सुखाळा ॥३३॥ सान्त्रिक राजसी तामसी जन, आज सहुने कर्या पावन । जे कोइ ध्यान धारणा समाध्य, पाम्या तमथी जीव अगाध्य ॥३४॥ नाडी प्राणनो करी निरोध, कर्यो बहु प्रकारनी बोध। अंतर फेरवी आश्रित कीधा, बहु जीवने शरणे लीधा ॥२५॥ अजजंघथी थया अदेव, हता जगे गुरु शिष्य एव । यक्ष रक्ष जे अजे उपाच्या, पाछा तेह मळी खावा आव्या ॥३६॥ बळिवगासे नारी त्रण बनी, पुंश्रली ने स्वैरिणी कामिनी। एवा गुरु शिष्य ने संसारी, वळी त्रण प्रका-रनी नारी ।।३७।। एवा जीव उद्घारिया कइ, माटे कहुं हुं मोटप्य सिंह । आज प्रकटाच्यो छे प्रताप, एवो आगळ्ये न कर्यो आप

॥३८॥ आज जनने आप्यां जे सुख, तेती कह्युं जाय केम ग्रुख। सर्वथकी पारं छो महाराज, ते अमने मळ्या तमे आज।।३९।। दर्श स्पर्श तमारुं ने क्यांथी, थोडे भाग्ये करी थातुं नथी। जाण्ये अजाण्ये जोडे जे हाथ, ते जन केदि न थाय अनाथ ॥४०॥ अजाण्ये करे असृतपान, तोय अमर करे निदान। पारम स्परशे लोह अजाणे, थाय कंचन जगत जाणे ॥४१॥ रवि मळे रहे नहि रात, जळ-पाने पियासनो पात । जेम अजाणे अग्निने संगे, शीत व्यापे नहि बळी अंगे ॥४२॥ तेम स्परशतां पूरण ब्रह्म, जाये कोटी जनमनां कर्म । थाय अभय जन ते अंगे, प्रकट पुरुषोत्तम प्रसंगे ॥४३॥ शशिमांयथी वरसे आग्य, रवि करे किरणनो त्याग । विद्युत-मांहिथी वहनि वटे, चंदनमांथी शितळता घटे ॥४४॥ शून्य तजे ते शब्दप्रसंग, वायु तजे सपरश अंग। तजे तेज रूप रस तोय, तजे गंध पृथवीने जोय ॥४५॥ एम थाय कोइ काळे वळी, एवी वास्ता नथी सांभळी। पण कदाचित एम होय, हरि मळ्ये अभद्र न तोय ॥४६॥ वसुधानुं वेजुं कोइ करे, तेनी चोट ठाली केम ठरे। तेम श्रीपुरुषोत्तम स्परशे, तेनुं अकाज कहो केम हशे ॥४७॥ कोइरीत्ये पुरुषोत्तम भजे, तेनुं अकाज न होय रजे। कामभावे भजि व्रज-नार, मात तात तजि परिवार ॥४८॥ सनेहे वसुदेव देवकी, दुष्टभावेकरी भजी बकी। भये भजियो कंस भूपाळ, वैरद्वेषे भज्यो शिशुपाळ ॥४९॥ सखाभावे भज्या अरजुने, भक्तिये भज्या नारदजने। दासभावे हनु ने खगेश, स्नेहभावे युधिष्ठिर नरेश ॥५०॥ एतो सर्वे पाम्या सुख अंगे, रही प्रकटने परसंगे। पुरुषोत्तम प्रकट होय ज्यारे, क्रिया साधन न लेवुं त्यारे ॥५१॥ आपे दरश स्परश दइ, करे भवपार जीव कइ। माटे आज

पुरुषोत्तम तमे, निश्चय करीने जाण्याछे अमे ॥५२॥ वळी कोटि-कोटि रवि शशि, तेना तेजसमूहनो राशि। वळी प्रकृति पुरुषथि ईनाम, एवं अक्षरब्रह्म जे धाम ॥५३॥ तेमां ब्रह्मरूप जे सक्ळ, कोटिकोटि मुक्तनां मंडळ। तेनेमध्ये रह्या एवा तमे, ते तमने जाण्या प्रभु अमे ॥५४॥ वळी अक्षरधाम गोलोक, एहादि बीजां धाम अशोक । तेनुं ऐश्वर्य जेजे कहेवाय, तेतो सर्वे रह्युं तममांय ॥५५॥ वळी त्रकृति पुरुषादि धाम, अतिऐश्वर्य जे अभिराम । ते तमारा ध्यान करनार, सर्वे देखेळे तेह मोझार ॥५६॥ वळी सह अवतारस्वरूप, एनां ऐश्वर्य जेजे अनूप । ते तममां देखे ध्यान-वान, माटे सहुना कारण भगवान ॥५७॥ छो अवतारी जे अवतार कहीए, तेनां चरित्र ते तमारां लहीए। एह वातमां नथी संदेह, वळी कहीए जणायछे जेह ॥५८॥ जेह जन तमारा आश्रित, वैराग्य ज्ञान स्वधर्मसहित । महातम्ययुक्त भक्ति अनन्य, करे तमारे प्रतापे जन ॥५९॥ एवो प्रताप अतिअपार, तमे प्रकटाव्योछे आ वार । तेतो सहु जाणे नरनार, नथी छानी ए वात लगार ॥६०॥ एवा तमे जेन मळ्या महाराज, तेने करवुं न रह्यं कोइ काज। तोय रखावोछो रुडि रीत, कहुं तेह परम पुनित ॥६१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ष्यनिष्कुलानदमुनिविरचिते भक्तिचितामणिमध्ये मुनिजने रामकृष्णा-विक अवतार करतां श्रीजिमहाराजनुं अधिक सामर्थ्य कह्युं एनामे एकसो ने पांचमुं प्रकरणम् ॥१०५॥

चोपाइ-हवे सांभळो संतनी रीत, कहुं अतिपरम पुनित । जेने मळ्या प्रकट प्रमाण, पुरुषोत्तम परम सुजाण ॥१॥ सुखसा-गर सुंदरक्याम, जेने सुखे सुखी सहु धाम। ते पुरुषोत्तम जेहना पित, तेने न रहे रंकपणुं रित ॥२॥ चौद लोकमां न लोभे चित्त, कीटब्रह्मादि देखे अनित । अंतरमांहि अत्यंत वैराग्य, तनमन सुख कीधां त्याग।।३।। पंच विषयथी उतारी प्रीत, असत्य सुखमां न आपे चित्त । काम क्रोध नहि लोभ मोह, एवा संततणो जे समोह ॥४॥ तेह कहे परस्पर मळी, जोख्यो जीव श्रमाणा छे वळी । महादुःखतणी जेह खाणी, तेमां जइने पड्या सुख जाणी ॥५॥ एक आश्वर्य वात छे एह, दुःखमां सुख मनाणुं जेह। महा नारी छे नरकनो कूप, केम समझायछे सुखरूप ॥६॥ जेजे नर नरकमां पडे, तेतो सर्वे नारी संगवडे । जमपुरिए जायछे जीव, तेतो नारीथकी ततखेव ॥७॥ जन्ममरण सहे दुःख अंगे, तेतो नारीतणे परसंगे। लखचोराशी तन लहेछे, जेने नारीमां प्रीत्य रहे-छे।।८।। सुणो वात कहुं एक वळी, बहु दुःख पाम्या एने मळी। मोटामोटा थया मनभंग, तेतो नारीनो करतां संग् ॥९॥ देव दानव मनुष्यमात्र, नारीस्नेहे करे जमजात्र । पारकी ने पोतानी जे नार, कापे तन जेम तरवार ॥१०॥ विष वन्हि व्याळमां जे गुण, तेने पोतानुं पारकुं कुण। महाडाकणी साकणी सरखी, सरवे सुर नर लीधा भरखी ॥११॥ जेवी बृहवंती होय वाघणी, खाय खिजवी जेम नागणी। एह साथे छे जेने सनेह, तेती हार्याछे मनुष्य देह ॥१२॥ जोइ झेर कनक कटोरे, जोज्यो पिवा चड्या नर होरे। सारी जोइ सजि तरवार, पेट नाखवा करे विचार॥१३॥ तेम रूपवती नारी जोइ, नर मरेछे मूरख मोइ। जेम मृगने घंट रवाल, जेम पतंग पावक झाळ ॥१४॥ जेम करिने कागदकरिणी, तेम नरने ए प्राण हरणी। जेम अमळ समळ तोय, बोले लाछ अलाछ नारी दोय ॥१५॥ पग हाथ कटि कोट कसी, आंख्य-

मांय भ्रंशि काळी मशी। कान नाक फाडि बांच्या केश, वळी बांधि आंगळियो विश्व ॥१६॥ तोय काढ्यां कलेजां नरनां, तेणे राता छे नख करना । वळी खाधुं मुखे मांस एणे, दांत राता रंगाणाछे तेणे ।।१७।। एह साथे थइ जेने प्रीत्य, तेने सुख नहि कोइ रीत्य । छेतो निर्रुज काढेछे लाज, एतो पुरुषने बोलाबा काज।।१८।। कावे अबळा ने बळ छे बहु, जेणे वश कर्या नर सहु। झाझि लाजमां बोलेछे झिणुं, तेतो पुरुषतुं करवा हिंणुं ॥१९॥ धीरेधीरे जे पग भरेछे, तेणे नरना प्राण हरेछे। हावभाव देखा-डेछे अंग, तेतो नरतन करवा भंग।।२०।। जेम मुषी फुंकिफुंकि खाय, तेनी पीडा तने न जणाय । तेम नारी मिठुंमिठुं बोली, खाय नरनां कलेजां फोली।।२१।। एवो दगो जे देखता नथी, कहो संतो सुख तेने क्यांथी। नारी ओछाये अहि अंध थाय, नारी ओछाये घा न रुझाय ।।२२।। कोइ कहेशो एवी केम करी, तेनी वात सुणिलियो खरी। जेम शिकंदरनी पूतळी, करी वेगळां राखवा वळी ॥२३॥ तेनेपासे जोरे जोइ जाय, भागे पोत मौंत तेनुं थाय। माटे दूर रह्ये दुःख नथी, जोइ तजवी तनमनथी ॥२४॥ तेनो करवा इच्छे जे संग, तेती महादुःख पामशे अंग । एने नख-शिखा निंदवा जेवी, कहिकहि कवि कहे केवी ॥२५॥ जेना घटमां कामसिंह गर्जे, बिवे नहि ते करतां विपर्जे । चड्या नारी नयणनी चोट, तेने मारी कर्या लोटपोट ॥२६॥ एवी खोट खायछे अभागी, तोय तेहने न शके त्यागी। आवी जेथी अजपर आळ्य, बेठी गिरिजापतिने गाळ्य ॥२७॥ एथी थयो इंद्र अंगे भंग, गयुं तप सौभरिनुं ए संग । लीधो एकलशृंगी लटपट, झालेछे नारी नरने झट ॥२८॥ तेमां लोभी रह्या जेह जन, ततो शुं समझ्या

हशे मन। नारी उपर अंग उज्बळे, मांही भरि छे मूत्र ने मळे॥२९॥ मजा मेद छे मांसनो पिंडो, थुंक लाळ कफ पिया शेडो । रग-रगमां भर्युं रुधिर, अस्थि त्वचाए मढ्युं शरीर ॥३०॥ परु पाच उदरमां औकार, मुखमांहि हाडकानी हार। नख केश शलेषम सोइ, एमां कामनी वस्तु छे कोइ।।३१।। जेजे वस्तुनां लीधां छे नाम, तेनुं भरिलैये एक ठाम। तेने करे खावा कोइ खांत, ते केम कहेवाय मनुष्य जात।।३२।। एम जाणी कां न करे अभाव, भुलेल केम करेछे भाव। तजे नहि कां अष्ट प्रकारे, मूरख् वासा्रु एने संभारे ।।३३।। श्रवण मनन करे गुह्य वात, बोले दर्श स्पर्श नारीगात। मळी एकांते नारीशुं वसे, संतो एवा पापी कोण हशे ।।३४।। नारी करे ज्यां किया तननी, ते स्थळ जावा इच्छे वृत्ति मननी। वळी नर ते नारीसंग रहेशे, संतो एवा पापी कोण हशे ॥३५॥ नारी न्हाति होय जियां नीरे, पहेरी अल्पवस्त्र शरीरे। तेने जोवा इच्छे खोटे मशे, संतो एवा पापी कोण हशे।।३६॥ वेठा होय जन जियां मळी, आवे बारता नारी त्यां वळी। पछी उठी यांथी न निकसे, संतो एवा पापी कोण हुशे ॥३७॥ पहेरी अंगे आभूषण नारी, सजि सुंदर वस्त्र ते सारी। एनां वसन भूषण स्परशे, संतो एवा पापी कोण हशे।।३८।। नारी उपरवासे निकळी, दिये देहनी दुर्गेध वळी। ते गंधे नहि अंतर अकळाशे, संतो एवा पापी कोण हशे ॥३९॥ बाटेघा टे ए होय एकली, तेने संगे चाले लाज मेली। पापकरी जे नारी पेखशे, संतो एवा पापी कोण हशे ।।४०।। अति होय जियां अवकाश, तोय निसरे नारीने पास । पंच हाथथी ढुंकडा धसे, संतो एवा पापी कोण हशे ॥४१॥ करे चेष्टा कांइ वळी नारी, भुल्ये देखे न मेले विसारी । वळी भिंतर अंतरे जे वसे.

संतो एवा पापी कोण हुशे ।।४२।। नारीवेषे जे बृंदल वरते, नारीवेषे जे नृत्यक नरते । जाय जोवासारु एह दशे, संतो एवा पापी कोण हरो। ४२।। धातु मृत्तिका काष्ट्र पापाण, लखी चित्रनी चितारे जाण । तेने पगे करीने स्परशे, संतो एवा पापी कोण हरो । ४४॥ एहआदि जे नारीप्रसंग, कोइ रीत्ये जो राखरो अंग। तेतो वारमवार मरशे, संतो एवा पापी कोण हशे।।।४५।। जेम कूप तरणे ढांकेल, वळी कहीए विषनी ए वेल । तेने ओछाये जाणी उतरशे, संतो एवा पापी कोण हशे ॥४६॥ नथिनथि नारी हेतु नरनी, एतो भरीछे प्रपंचभरनी । स्त्रीचरित्र होय अपार, मांहि दगो न देखाडे बहार ॥४७॥ एज दोरडो देखिने डरे, एज मप उपर पग धरे। एज उंदरथी डरी चाले, एज केमरिना कान झाले ।।४८।। एज डरे देखिने अंधारुं, एज फरे काळीरात्ये बारुं। एज पाणिमां पग देती हरे, एज समुद्र सहजे उतरे ॥४९॥ करे चरित्र बोलतां जोतां, घणुं आवडे हसतां रोतां। रिजि नारी नरसंग बळे। खिजि छेदे शिश तेनुं छळे ॥५०॥ सहज खभावे होय अवळी, शीख वात न लिये सवळी । शुभगुण ग्रेवानी चारणी, कल्पनामात्रनी कारणी ॥५१॥ मने मेली ने अंगे अशुद्ध, तेनो संग राखे केम बुद्ध । मळे नागणी वाघणी वळी, कूपपतन जो पडे विजळी ॥५२॥ विप वैरि आग्य बलाखारी, ए मळज्यो न मळज्यो नारी। नथीनथी बिजो नरक कूप, नरक नरने नारीनुं रूप ॥५३॥ मेली पुरुषोत्तमनी मूरति, करेछे नारी जोवा शुं रति। तेने चितवे वारमवार, एवा मूरखने छे धिकार ॥५४॥ मेली सुंदर क्यामस्बरूप, जइ जुवेछे नारीनुं रूप । तेमां थाय नर तदाकार, एवा मूरखने छे धिकार ॥५५॥ मेली महाप्रभुजिनुं मुख, देखे

नारीने नर विम्रुख । तेना स्पर्शनो राखेछे प्यार, एवा मुरखने छे धिकार ॥५६॥ मेली मोहनमुखनी वात, नारीशब्द सुणे रिळ-यात । नावे अवगुण एनो लगार, एवा मूरखने छे धिकार ॥५७॥ मेली मुखे हरिगुण गान, कहे नारीचरित्र निदान। तेणे फुले अंगमां अपार, एवा मूरखने छे धिकार ॥५८॥ मेली केशव क्रमळ-नेण, संभारेछे नारी दुःखदेण। नथी समझतो सार असार, एवा मूरखने छे धिकार ॥५९॥ नथी लोभातो लालने लटके, मनमान्युं मोनिनीने मटके। खाधी खोट्य ने थयो खुवार, एवा मूरखने छे धिकार ॥६०॥ कृष्णकथामां न दिये कान, सुणे नारीतणां गुण-गान। तेमां वृत्ति राखे एक तार, एवा मुरखने छे धिकार।।६१॥ मेली हरि हरिजननो संग, राखे नारीसंगिनो प्रसंग। तेनी लाज न आवे लगार, एवा मूरखने छे धिकार ॥६२॥ एम समझ्या जे सार असार, तेतो उत्तरिया भवपार । तेने केम पीडे वळी काम, जेणे ए दश करी हराम।।६३।। एम थया नर निष्कामी, जेने अंतर वेदना वामी,। उपर तजतां अंत न आवे, जियांलगि भित्रमां भावे ॥६४॥ <u>अंतरमांथी उलटी थाय, त्या</u>रे <u>ते पाछ</u>ुं नव खवाय। ए सुख ओकि नाख्युं संते आपे, खामी सहजानंद प्रतापे ॥६५॥ पूर्वछायो-एम संत जन सर्वे, नर रह्या निष्काम । जेने मळ्या प्रकट प्रभु, सहजानंद सुखधाम ॥६६॥ जेवो अभाव नारीनो, तेवोज धननो त्याग । देखे नहि सुख दाममां, जेना अंतरमां वैराग ।।६७।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ष्यनिष्कुलानंद्मुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये निष्कामिन्नतमान कह्यं एनामे एकसो ने छठुं प्रकरणम् ॥१०६॥

चोपाइ-हवे कहुं संत निरलोभी, जेणेकरी रह्या जन शोभी। जेम नारीनो नहि प्रसंग, तेम तल्योछे द्रव्यनो संग ॥१॥ एवा संतनो मळे समाज, मांहोमांहि बोले म्रुनिराज । जेने मळ्या पुरुषोत्तम राय, तेतो पूरणकाम कहेवाय ॥२॥ तेने न्यून न मनाय मन, लाध्युं अखुट जेने महाधन। धृता न धृते चोर न छुंटे, खातां खरचतां नव खुटे ॥३॥ एवं मळ्युं महाधन जेने, ते केम धाशे आ धातु धनने । जेमां अनेक रह्या अनर्थ, संचे त्यागितो वणसे अर्थ ॥४॥ चोरी हिंसा अनृत अपार, काम क्रोध ने दंभभंडार । मद भेद ने वैर व्यसन, साय स्पर्धादि छे जियां धन ॥५॥ मद्यपान त्रियासंग थाय, द्युतविद्या ने विश्वास जाय। रह्यां एटलां द्रव्यमां मळी, जेम जळमां जळजंतु वळी ॥६॥ द्रव्य करावे पाप अधर्म, द्रव्य करावे वैर विकर्म। द्रव्य करावे कपट छळ, द्रव्य करावे कोटि ककळ ॥७॥ द्रव्य करावे दगा दुष्टाइ, द्रव्य करावे काम कसाइ। द्रव्य करावे उच्च ने नीच, द्रव्य करावे पाषंड पेच ॥८॥ द्रव्य करावे जातिविटाळ, द्रव्य चडावे साचाने आळ । द्रव्य करावे हाल बेहाल, द्रव्य करावे क्रुपण कंगाल ॥९॥ द्रव्य करावे चोरी चाकरी, द्रव्य करावे टेल्य आकरी। द्रव्य करावे जीवनी घात, द्रव्य करावे पिंडनो पात।।१०॥ द्रव्य न्याये अन्याय करावे, द्रव्य जुठी ते साख्य भरावे। द्रव्य लेवरावे लांच भाड्य, द्रव्य करावे रांकशुं राष्ट्य ॥११॥ द्रव्य सतिनुं सत्य ग्रुकावे, द्रव्य जतिनुं जत चुकावे। द्रव्य ग्रुनिनुं मौन बगाडे, द्रच्य तिपने तपथी पाडे।।१२।। द्रव्य अर्थे पृथ्वीए फरेछे, द्रव्यअर्थे लढिने मरेछे । द्रव्यअर्थे वेचे निजतन, तजे जीवितव्य न तजे धन ॥१३॥ द्रव्यअर्थे वळी वांणे चडे, द्रव्यअर्थे पहाडे चडी २७ भ०वि०

**17** 

पडे। द्रव्यअर्थे घात घणी घडे, थाय अनर्थ बहु द्रव्यवडे।।१४॥ द्रव्य धर्ममांहिथी चळावे, द्रव्य नीचना धर्म पळावे। जेजे जायछे नरकमां जन, तेनुं मूळ कारण छे धन ॥१५॥ काम कोधने मोह कहेवाय, हर्प शोक लोभथिक थाय। मान ईरवा ममता ताण्य, लोभ सर्वेनुं कारण जाण्य ॥१६॥ पामेछे जीव जुजवा क्षोभ, तेतो जेने जेवडो छे लोभ। लोभ संतशुं हेत त्रोडावे, लोभ दुष्शुं प्रीत जोडावे ॥१७॥ लोभ करावे न कर्यानां काम, लोभ करावे जीवत हराम । जेजे अबळुं जगतमां थाय, तेतो सर्वे द्रव्यथी कहेवाय ।।१८।। द्रव्ये पुत्र ते पिताने मारे, द्रव्ये शिष्य गुरुने संहारे। थाय द्रव्ये महा पंच पाप, थाय द्रव्ये कृतघनी आप ॥१९॥ एवं अघ जगे नहि कोय, जे कोइ द्रव्य मळतां न होय। द्रव्य मुकावे ज्ञानिनुं ज्ञान, द्रव्य मुकावे ध्यानिनुं ध्यान ॥२०॥ द्रव्य मुकावे मानिनुं मान, द्रव्य करावे निर्लञ्ज निदान । कहि कहि केटला कहेवाय, जे कोइ द्रव्यथी अनर्थ थाय ॥२१॥ एवा लोभमांहि जे लेवाणा, तेतो हुष्णाने पुरे तणाणा। तेने उगरवा सई आश, एवं जाणी दुर रहे दास ॥२२॥ लोभे सुर ने असुर लडे, दैत्य भूत दुःखी लोभवडे । यक्ष राक्षस सह लोभे हेराण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥२३॥ लोभे कराव्यो कुडुंबे कळो, पड्यो पांडव-कौरवमां सळो । मांहोमांहि लडी खोया प्राण, तेने इच्छे ते नर अजाण ।।२४।। लोभे लडे भूमिए भूपति, लोभे बळे पतिसंगे सति । लोभ करावे प्राणनी हाण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥२५॥ डाह्या शियाणा पंडित पीर, लोभे कर्या सहुने अधीर । कवि कोविद कर्या वेचाण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥२६॥ खर्ग मृत्यु ने पाताळ-मांय, लोभे लई लीधां जन त्यांय। एवी प्रसारि छे मोटि पाण,

तेने इच्छे ते नर अजाण ॥२७॥ लोभे आपीछे अवळि मत्य, मनाव्युंछे असत्यमां सत्य। तेनी नरने नहि ओळखाण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥२८॥ लोभे नांखि गळे जम फांशी, लोभे लेवारी लखचोराशी। लोभ फेरवेछे चारे खाण, तेने इच्छे ते नर अजाण ।।२९।। जन्ममम्यानुं कारण जेह, सहु जन जाणो लोभ तेह। तेनी मेली देविजोइये ताण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥३०॥ जेने लोभे कवजमां लीघा, तेने दीन दालदरी कीघा। सद्यां शरीरे दुःखमेराण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥३१॥ एवं समझी संत असार, तज्युं द्रव्यने सर्व प्रकार । मेली तन मने तेनी ताण, तेने इच्छे ते नर अजाण ॥३२॥ मणि हीरा मोति परवाळां, रल आदे जे नंग रूपाळां। एतो जमनी जाळय जोराण, तेने इच्छे ते नर अजाण ।।३३।। अन्न जळ ने वस्त्र छे जेह, तेणेकरी रहेछे आ देह । तेना आपनारा अविनाश, एम समझेछे हरिना दास ॥३४॥ अस खावुं ते क्षुधाने खोवा, जळ पिवुं ते प्राणने टोवा । रहेवुं अन्य वस्तुथी निराश, एम समझेछे हरिना दास ॥३५॥ शीत उष्ण निवा-रवा तन, राखे अंगे वस्त्र हरिजन। जेवुं मळे तेवुं राखे पास, एम समझेछे हरिना दास ॥३६॥ तेह विना छे सर्वेनो त्याग,विषय-सुख साथे छे वैराग्य। क्यारे इच्छे नहि जाणी कास, एम समझेछे हरिना दास ॥३७॥ सोना रुपामां सुख न माने, जेने महाप्रश्र आविया पाने। कीट ब्रह्मालिंग देखे नाश, एम समझेछे हरिना दास ।।३८।। एक समझाणुं हरिमां सुख, बीजुं सर्वे जणाणुं छे दुःख। जेवो जमकिंकर काळपाश, एम समझेछे हरिना दास।।३९॥ जेने मळ्युंछे महाधन मोइं, बीजुं सर्वे समजाणुं छे खोदुं। पाप जाणीने न करे प्यास, एम समझेछे हरिना दास ॥४०॥ अहि

विछि ने विष अंगार, काक विष्टामांहि शियुं सार। एवं जाणी तजे सुख आश, एम समझेछे हरिना दास ॥४१॥ एवी कोण वस्तु छे आ भूमां, जेमां लोभे जे लोभ्या प्रभुमां । रहेछे अंतर सहुथी उदास, एम समझेछे हरिना दास ॥४२॥ एम नर थया निरलोभ, कोइ सुखे नहि मनक्षोभ। जेणे मान्यो ब्रह्ममोले वास, एम समझेछे हरिना दास ॥४३॥ एहरीत्ये लोभने जिताय, विजो छे उपरनो उपाय । थाय अंर्तरे अभाव ज्यारे, लोभ तजाय समुळो त्यारे ॥४४॥ एम लोभ लालचने जिति, करी पुरुषोत्तम साथे प्रीति । तेने काम ने लोभ न व्यापे, खामिसहजानंद परतापे ।।४५।। पूर्वछायो-निष्कामी निरलोभी थइ, भजेछे भगवंत । तेवाज त्यागी खादना, जेह निरखादी संत ॥४६॥ सर्वे रस जाणि श्याममां, अन्य रस जाणे अनित्य । निरस्वादी एवा संतनी, कर्दुं सांभळज्यो सहु रीत्य ।।४७।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंद स्वामि शिष्यनिष्कुलानंद मुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये निर्लोभी व्रतमान कहुं एनामे एकसो ने सातमुं प्रकरणम् ॥१०७॥

चोपाइ—हवे कहुं निरखादिनी रीत, जेणे तजिछे खादनी
प्रीत। सर्वे खाद जाणि हरिमांय, मनष्टि लोभे निह क्यांय।।१।।
महारसनुं की धुंछे पान, तेणे थया मगन मस्तान। सुख खमे न गमे
संसार, विषयरस समझ्या असार।।२।। महारस पीधो जेह जने, ते
न चाले बिजो रस मने। ए रस पिधोछे शुकजि आदे, तेतो न राचे
अन्यने खादे॥३।। ए रस पिधोछे सनकादिके, पिधो नव योगेश्वर
निके। ए रस पिधोछे जनकजेवे, जेनुं मन न रह्युं बिजे पिवे॥४॥
ए रस पिधोछे जन प्रह्लादे, मन मान्युं निह बीजे खादे। ए रस
पिधोछे श्वव अंबरीषे, ए रस पिधो गोपी गुडाकेशे॥५॥ ए रस

पिघो जन जयदेवे, ए रस पिघोछे उद्धवजेवे। एहआदि जे ऋषिरा-जन, पिथो महारस थया मगन ॥६॥ जेजे जने हरिरस पीथो, तेणे संसाररस कुचो कीधो। चौद लोकमां जे रस रह्यो, तेतो उलटा असजेवी थयो ॥७॥ तेनुं विजे ते मन न माने, जे कोइ पूरण महारस पाने। ए रस आज आपणने मळ्यो, जे कोइ सर्वे रसथी छे गळ्यो।।८॥ नथी अन्य रस एह समान, जेवो आपणे किथोछे पान। ए रस विना रस जे बिजो, तेतो दुःखरूप मानिलेज्यो॥९॥ बिजा रसमां जेह लोभाणा, तेतो झप जेम जाळे बंधाणा। खोयुं तन ने खोळाज खाधी, जेनी खादसाथे प्रीत बांधी ॥१०॥ त्यागी थइ जे रसने चाय, ते त्यागिनुं त्यागिपणुं जाय । 'खांड खारवो तुप तेजानो, एहआदि दइ स्वाद मानो ॥११॥ खारुं खादुं तिखुं तमतमुं, गळ्युं चिकणुं जे मनगम्युं । मनवांछित मगावी खाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१२॥ शिरो पुरी ने शेव सुंवाळी, रुडा मोदक ने रोटी काळी। विधविधनां व्यंजन चाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१३॥ गर्म नर्म ते मनने गमे, सारुं खादु ते जुगते जमे। एनो खातां अभाव न थाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१४॥ सारुं लागे ते राखे संताडी, थइ खावानी वृत्ति हराडी। रात्य दिवस रसने धाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१५॥ करे खादनी वात वखाणी, सुणी आवी जाय मुखे पाणी। तेनेअर्थे करेछे उपाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१६॥ जिह्वा मागेछे जुजवा रस, जन थयांछे जिह्वाने वश । तेणे स्वाद केदि न तजाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१७॥ पंच इंद्रिनुं पोषण खाद, पंड्य पोषतां वाधे प्रमाद । पछी पुरुपोत्तम न भजाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१८॥ जेने पंड्य पोषवाछे प्रीत, ते शुं समझे महारस रीत।देखी

पुष्ट तनने फुलाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥१९॥ तेतो कावे नहि हरिदास, जेने अहोनिश रसनी आश । एने जळजंतु जेवो गणाय, तेने खोट्य छे वैराग्यमांय ॥२०॥ जे कोइ कहेवायछे हरिजन, तेनुं लोभे नहि कियां मन । जेणे कर्युं महारस पान, तेणेकरी रह्या गुलतान ॥२१॥ जेना अतरमां निरवेद, तेने कोण पमाडशे खेद। नित्ये हैयामां हरिनुं ध्यान, तेणेकरी रह्या गुलतान ।।२२।। जाणी सरवे सार असार, तुच्छवस्तु करी तिरस्कार । राख्या भितरमां भगवान, तेणे करी रह्या गुलतान ॥२३॥ ब्रह्माआदि जे कीटपर्यंत, सर्वे सुख दुःखे अंतवंत । जेने पुरुषोत्तम साथे तान, तेणेकरी रह्या गुलतान ।।२४।। एवा संत मळे ग्रुभमति, कहे जोज्यो। आ जीवनी गति। राख्या जोइए जेह मुखे राम, तेमां राखेछे वस्तु हराम ॥२५॥ जेह मुखे भजिए श्रीहरि, तेने बगाडेछे केफेकरी। गांजो भांग्यने पिवेछे माद, खाये आमिप जिह्वाने खाद ॥२६॥ जे मुखे भजिए परब्रह्म, ते मुखमांय खायछे माजम। खाय कनस्तु केफने काज, एवा नरने रुखाछे राज ॥२७॥ जे मुख हरि भजवा लाग्य, तेह मुखमां भरेछे भांग्य । आपे जरदो तो न पाडे नाज, एवा नरने रुट्याछे राज ॥२८॥ जे मुखे जोइए नाम प्रकाशुं, ते मुख हिंग लसणे वास्युं। वळी पापिने प्यारी पियाज, एवा नरने रुट्याछे राज ॥२९॥ जे मुखे हरिगुण गवाय, ते मुखे नर अमल खाय। काढे कसुंबा करे अकाज, एवा नरने रुट्याछे राज ॥३०॥ जे मुखे हरि भजिए दाडी, ते मुखे पापी पिवेछे ताडी। सर्वे सजेछे नर-कनो साज, एवा नरने रुट्याछे राज ॥३१॥ केफेकरीने अकल जाय, नासे उहापण ने इल थाय। तोय निर्लजने नहि लाज, एवा नरने रुट्याछे राज ।।३२॥ एह सर्वे जे व्यसन कह्यां, एक खादनी

वृत्तिमां रह्यां। तेनो जे नर न करे ताज, एवा नरने रुठ्याछे राज ।।३३।। स्वादमांहि रह्यां बहु शूळ, स्वाद छे सर्वे पापनुं मूळ । स्वादे थाय नरक समाज, एवा नरने रुठ्याछे राज ॥३४॥ एवा अनेक अवगुण जोइ, संत स्वाद करे नहि कोइ। जेह समे जेवुं मळे अन्न, जमे निरदोष जोइ जन ॥३५॥ अजगर मधुकर दृत्ति, ग्रहे संतजन अनासक्ति । कांतो अणइच्छ्युं अन्न आवे, नहि तो बहु घरथी मागिलावे।।२६॥ काचुंपाकुं जे सुकुं समिष्ट, फळ मूळ फुल पत्र पिष्ट। होय हरिप्रसादिनुं अन्न, जमे जन ते थाय मगन ॥३७॥ पण स्वादसारु जे उपाय, न करे ते निःस्वादी कहेवाय । आवे सहजे ते जमे सुजाण, जेमतेम करी पोषे प्राण ॥३८॥ खाद अखादनी मुकि आञ्च, भजे भगवान ग्रासोग्रास।जेना अंतरमांहि वैराग्य, तेणे कर्योछे खादनो त्याग ॥३९॥ काथो चुनो ने पान सोपारी, तज तमाल एलची सारी। जाय जावंत्री लविंग जे छे, एहआदि मुखवास न इच्छे ॥४०॥ चुवा चंदन तेल फुलेल, पुष्पहार ने सुगंधि तेल । तेने त्यागी न इच्छे तनमां, जेने वैराग्य वर्तेछे मनमां ॥४१॥ जेजे खोळी कह्यां खान पान, तज्यां ते संते थइ सावधान । अति कर्योछे उंडो अभाव, केदि भूले थाय नहि भाव ॥४२॥ काम लोभ जित्या जेम जने, तेम जित्योछे संते खादने । थाय उंडो अंतरेथी नाश, त्यारे तजाय बारथी आग्न ॥४३॥ जेजे त्यागेछे बहारथी बळे, तेने मांहि स्नाद रहेके छळे। लाग आवे तो करेके घात, नहितो बेठो सांभळेके वात ॥४४॥ तेतो अंतर त्यागथी जाय, बीजे न टळे कोटी उपाय । त्याग वैराग्य विवेक विचार, एह होय ज्यां होय सुरार ॥४५॥ तेह विना वैराग्यनो वेष, तेणे न टळे कामादि लेश । ज्यारे प्रश्नसाथे प्रीत लागे, त्यारे काम लोम खाद भागे।।४६।। एम जित्योछे जे जने खाद, तेना टळिया सर्वे प्रमाद। जिति खाद थया शुद्ध आपे, खामी सहजानंद प्रतापे।।४७।। पूर्व छायो—सहज खमावे संतने, अंतरमां रहेछे एम। मळ्ये पण मन नव चळे, अणमळ्युं इच्छे केम ।।४८।। एम संतशिरोमणि, जित्या खादने जेह। पिंड ब्रह्मांड पार प्रीति, कहुं एवा निरसनेह।।४९।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद खामिशिष्यनिष्कुलानंद मुनि-विरचिते भक्तिंतामणिमध्ये निरस्वादि व्रतमान कह्यां एनामे एकसो ने आठमुं प्रकरणम् ।।१०८।।

चोपाइ-हवे कहुं निरस्नेही जन, सुणो रीत्य तेनी दइ मन। एक प्रभुसाथे प्रीत जोडी, बीजा जक्त सहु साथे तोडी ॥१॥ पिंड ब्रह्मांडमां नहि प्रीत, चौद लोकमांहि नहि चित्त । छे ए निःस्नेही जननी रीत्य, पेखे पिंडने पहेलुं अनित्य ॥२॥ आदि अंते मध्ये जोइ एह, पछी करे तनमां सनेह। पेखि प्रसिद्ध पिंडना हाल, पछी माने जो मनाय माल ॥३॥ ज्यारे जुवे विचारि आ पिंड, देखें नखिशखा नरक कुंड। परु पाच ने पिया प्रसिद्ध, वहे रिट शेडा बहुविद्ध ॥४॥ कफ थुंक ने लाळ कहेवाय, नित्य निसरे ते मुखमांय । बहु बळखा आवे ओकार, दिसे दांत हाडकानी हार ॥५॥ मजा मेद ने मांस रुधिर, मळ मृतरे भर्थु शरीर। हाड पिंजर मर्ब्युछे चर्मे, मांहि भयोछे आंतर कर्मे ॥६॥ भर्यु रुधिर ते रगरगे, वहे नरक ते नव मारगे। नख केशमां कैक वस्तु भली, भरी भेचे माथानी तुंबली।।७॥ खेद शुक्र श्रलेषम आम, गुंगा गिडर आदि अकाम । एवं पेखियुं पोतानुं पिंड, चोखुं जाण्युं चमारनो कुंड ।।८।। पेखि प्रकट विंडमां एह,

संते समझी मुक्यो सनेह। एना संबंधि जे जगमांय, तेसाथे केम सनेह थाय ॥९॥ ज्यांज्यां धर्यो जीवे अवतार, तियां कर्यो कुदुंब परिवार । मात तात ने भगिनी भाइ, सुता सुत दारा ने वेबाइ ।।१०।। तेमां कोण अधिक ने ओछे, समतुल्य सगां ए सहु छे । तेमां कोण साथे प्रीत जोडे, वळी किया सगा साथे तोडे ॥११॥ लखचोराशि कुडुंब कर्यु, सरवे सगे आ ब्रह्मांड भर्यु। माटे मेर्ल्यु ए कुढुंब जेम, संते मेल्युं आ समिश तेम ॥१२॥ जेम गयो द्विज ढेड-वाडे, अल्ये रह्यो तियां कोइ दाडे। तेह ब्राह्मणपणाने अली, केम फरे श्वपचमां फुली।।१३॥ एम देह ने देहसंबंधि, तोडी प्रीत्य ते शुंबहु विधि। जेणे तोडिछे पिंडशुं प्रीत, तेनुं विजे वेसे केम चित्त ।।१४।। खर्गलोकना सुख सांभळी, नथी इच्छता तेहने वळी। एक ब्रह्माना दिवसमांय, चौद इंद्र आवे बळी जाय ॥१५॥ तेनिकोरनो भय नहि कांइ, एम अंधधंघ मदमांइ। जियां खान पान ने खुमारी, महा मदोन्मत्त नरनारी ॥१६॥ जेवो तरुणतने वेशावाडो, तेवो अहर्निशनो अखाडो । पुण्य खुटे पडे पाछो तेह, माटे संत एथी निरस्नेह ॥१७॥ कोइकरीत्ये शुं जाय कैलास, तो त्यां भृत भैरवनो वास । अतिक्रोधी ने करुर अंगे, एवां रहेछे शिवने संगे ॥१८॥ भांग्य धतुरा अशुद्ध आहार, तमोगुणी ने तोरी अपार। एमां शुं सुख जाणि वसेह, माटे संत एथी निरस्नेह ॥१९॥ ब्रह्मलोक्नं सुख सांभळी, मन वळतुं नथी त्यां वळी। कर्यों कामे जइ तियां कळो, अज अंतरे थयो आकळो।।२०॥ वळी जंघथी जाया अदेव, यक्षरक्ष थया ततखेत। तेतो लेवा ताक्या अजलाज, बिजा धोड्याछे खावाने काज ॥२१॥ जोइ एवं विकल लोक एह, संते न कर्यों समझि सनेह। हरो सुख टळिजाय तेह, माटे संत एथी निरस्नेह ॥२२॥ एम पेखियुं

पिंड ब्रह्मांड, मटी जाय दिठि एवी मांड्य। जाशे यतकिंचित छे जेह, माटे संत एथी निरस्नेह ॥२३॥ खर्ग मृत्यु ने पाताळमांय, रहेवा जेवी वस्तु नथी क्यांय । रहे नहि जे देखाय देह, माटे संत एथी निरस्नेह ॥२४॥ स्थावर जंगम जेजे कहेवाय, सर्वे छे काळना मुखमांय । शुं समिक्षने करे सनेह, माटे संत एथी निर-स्तेह ॥२५॥ एम वात करे सह संत, तमे सांभळज्यो गुणवंत । जियांलिंग मनाय हुं देह, तियांलिंग निह निरस्नेह ॥२६॥ देह-केडे वळग्यो संसार, पाप पुण्य वळी परिवार । सुख दुःख मान अपमान, हर्ष शोक वृद्धि वळी ज्यान ॥२७॥ एह सर्वे रह्यां देहवांसे, देह मानतां सर्वे मनाशे । ज्यारे थाय देहथी निस्प्रेह, त्यारे तुटे सहुशुं सनेह ॥२८॥ ज्यारे मनाय आतमा आप, त्यारे जाय सर्वे संताप । आत्मरूप मनाय आपणुं, त्यारे नर पामे निस्नेहिपणुं ॥२९॥ आतमाने कोण मात तात, आतमाने कोण नात्य जात । कुळ कुटुंब जे परिवार, आतमाने नहि सुत नार ॥३०॥ आतमाने नहि आप पर, शत्रु मित्र ने नहि अवर। आत-माने नहि धरा धाम, आतमाने नहि देश गाम ।।३१।। आतमाने नहि धन माल, अशन वसन भूपण रसाल। माटे आतमा आपे मनाय, त्यारे सर्वेथी निःस्नेह थाय ॥३२॥ आपे थइ आतम-खरूप, भजे प्रश्च परमात्मा रूप । राखे पुरुपोत्तममांहि प्रीत, विजे बेसे नहि कियां चित्त ॥३३॥ तेह भक्त थयो एकांतिक, जेना अंतरमां हरि एक। एम समझिया जन जेह, थया निर-विम निरस्नेह ॥३४॥ एम समझ्या विना जेह जन, ते निःस्नेही नहि निर्विषन । विजि रीत्ये थाय निरसेह, तेने क्यांक बंधाय सनेह ॥३५॥ देहरूप थइ करे त्याग, तेनो टके नहि वैराग ।

देह होय त्यां देहनुं कुळ, देह सर्वे सनेहनुं मूळ ।।३६॥ जेम माथेथी मोडतां वृक्ष, लागे पत्र तेने बिजां लक्ष। ज्यारे मूळेथी वृक्ष छेदाय, शाखा पत्र फुल फळ जाय ।।३०॥ तेम देहने न माने आप, त्यारे जाय समूळो संताप। एम समझ्या संत सुजाण, जेने मळ्या पुरुष पुराण ।।३८॥ थयो सनेह क्यामळा संगे, थयुं बिजुं अभावतुं अंगे। मन ढळि आव्युं एह ढाळे, बळे निह पाछु कोइ काळे।।३९॥ एम किह निःक्षेहिनी रीत्य, सहजे रहेछे संत एम नित्य। नथी तेनो ते थाप उत्थाप, स्वामी सहजानंद प्रताप ।।४०॥ पूर्व छायो । सुंदर रीत्य ए संतनी, एम रहे तेह निरस्नेह । पिंड ब्रह्मांड पदारथे, केदि करे निह सनेह ।।४१॥ काम लोभ ने स्वाद सनेह, जिति बेठा तेह जन। मान तज्युं जे मुनिये, कहुं सांभळज्यो सहु जन ।।४२॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह जानंद स्वामिशिष्यनिष्कुलानंद मुनिवरचिते भक्ताचितामणिमध्ये निरस्नेह व्रतमान कहुं एनामे एकसो ने नवमुं प्रकरणम् ।।१०९॥

चोपाइ—हवे कहुं नर निरमान, जेने भेट्या छे श्रीभगवान। ते प्रश्च छे सहुना स्नामी, कर्ता नियंता अंतरजामी।।१।। जेनी श्रक्किट विलास मांय, कोटि ब्रह्मांड भांगे ने थाय। एवा समर्थ श्रीमहाराज, सर्वे उपर छे अधिराज।।२।। जेजे धारे ते कारज्य करे, ते फेरव्युं केनुं नव फरे। सर्वे कारणना कारण जेह, तेणे ध्युं पृथ्वीपर देह।।३।। एवा पुरुषोत्तम परब्रह्म, जेने नेतिनेति कहे निगम। तेह थइ मनुष्य आकार, करे बहु जीवनो उद्धार।।४।। मेलि पोतानी मोट्यप नाथ, मळी रह्मा मनुष्यने साथ। थइ नाथ आपे निरमान, करे संसारिनं सनमान।।५।। वळी सहे जग उप-हास, तोय न करे मान अविनाश। जोने ऋषभदेवे केन्नं सर्धा,

अतिशे निरमानने ग्रह्यं ।।६।। जोने कपिलदेव दयाळ, जेने मारवा धाया भूपाळ । जोने वामनजि निरमानी, बळिद्वारे वश्या वर-दानी ॥७॥ जोने राम केवा निरमान, नागपासे बंधाणा निदान । जोने कृष्ण केवा समस्थ, मेली मान ताण्यो ऋषिरथ।।८।। एह-आदि बहु अवतार, कहेतां आवे नहि तेनो पार। जुवो वर्तमान काळे आज, केवा निर्मानी छे महाराज ॥९॥ आपे समर्थ ने सर्वे सहे, एवं निरमानिपणुं प्रहे । करे तुच्छ जीव तिरस्कार, तेपर रोष न करे लगार ॥१०॥ हवे एवा प्रभ्रना जे दास, कहो केम न सहे उपहास । जेना निरमानी भगवान, तेना जनने जोये केम मान ॥११॥ मान राखे ते राक्षस दैत्य, जन होय सदा मान-जित। मान जोइए हिरण्याक्ष अंग, जेणे युद्ध कयों लेरी संग ।।१२।। मान हिरण्यकशिपुने जोइए, जेने जगमां जित्यो नहि कोइए। मान जोइए रावण जेवाने, एहआदि राक्षस एवाने ॥१३॥ मान जोइए कंस भूपाळने, बिजा शालव शिशुपाळने। मान जोइए ते जरासंघने, मान जोइए धृतराष्ट्र अंधने।।१४।। मान दुर्योधनने ते जोइए, एहआदि एवा विजा कोइए। एवा दुष्टने मानज घटे, हरिजनतो मानथी हटे ।।१५॥ माने करीने जयविजय, वैकुंठथकी पिंडिया तेय । माने पञ्चो इंद्र सुरपित, माने पञ्चो नहुप भूपित ॥१६॥ माने पडियो राजा ययाति, बीजा सुरासुर पड्या अति । माने चित्रकेतु कर्यो चुर, थयो तेह वळी वृत्रासुर ॥१७॥ माने दक्ष पाम्यो अतिदुःख, थयुं मोत ने वणशुं ग्रुख । माने गयुं रावणनुं राज, माने थयुं बहुनुं अकाज ॥१८॥ माने गयुं कीरवनुं कुळ, माने गुयुंछे कंसनु मूळ । माने सुर असुर छे दुःखी, मान राखी थया कोण सुखी।।१९।। खर्ग मृत्यु पाताळ मोझार, माने मारी

मुक्यां नरनार । काम क्रोध लोभ केदि जाय, पण मान तेतो न मुकाय ।।२०।। नथी बिजा कोइनो ते वांक, माने रोळ्याछे राजा ने रांक। एवो नर नजरे न आवे, जेना मनने मान न भावे।।२१॥ घर तजि जाय कोइ वन, एकांत्ये बेसी करे भजन। अन मुकी फळ फुल खाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२२॥ कोइ करे ते नामरटन, कोइ करे अवनि अटन । गंगा यम्रुना सरखती नाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२३॥ कोइ वधारे नख ने केश, करे तीर्थ फरे देशोदेश । पहेरे नहि पगरखां पाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२४॥ कोइ उघाडा रहे अवधूत, कोई भ्रंसे अंगमां भभूत। धन नारीने निकट न जाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२५॥ कोइ ज्ञानी थइ करे ज्ञान, कोइ ध्यानी थइ धरे ध्यान। कोइ मक्त थइ गुण गाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२६॥ कोइ राखे कंथा ने गोदडी, कोइ रहे जियांतियां पडी। सहे शीत उष्ण अंगमांय, पण मान तेतो न तजाय ॥२७॥ कोइ रहे मुखे मौन साधी, कोइ जमे नहि अन रांधी। काचुं पाकुं मळे तेचुं खाय, पण मान तेतो न तजाय।।२८।। कोइ तपी थइ करे तप, कोइ जपी थइ करे जप। मेले वसन भूषण इछाय, पण मान तेतो न तजाय ॥२९॥ कवि कोविद पंडित पीर, योगी यति सती शूरवीर । मान गये मर-वाने चाय, पण मान तेतो न तजाय ॥३०॥ सर्वे मरेछे मानना मार्या, मान आगळ्य कड्क हार्या। एवा मानने मेलि महांत, भावे भजेछे श्रीभगवंत ॥३१॥ मेलि पिंड ब्रह्मांडनुं मान, संत सदा रहे गुलतान। अन्य मानने जन न इच्छे, जेनी मित ते मोटी थइछे।।३२॥ आपे माने छे आतमा रूप, सोऽहं मनाणुं ब्रह्मखरूप। स्थुल सक्षम कारण देह, जाप्रत खम ने सुप्रिप्त तेह ।।३३।। मन

बुद्धि चित्त अहंकार, प्राण पंच इंद्रियपरिवार। पंच देव सप्त धातु जेह, एह सर्वे मळिने आ देह ॥३४॥ जेम कह्यो शरीरनी साज, तेम ब्रह्मांडनो छे समाज । तेने पार प्रकृति पुरुष, तेथी पर ब्रह्म एक रस ।।३५॥ सत चित आनंद खरूप, एवं मनाणुं आपणुं रूप । पछी ब्रह्मादि कीटपर्यंत, तेमां मोह पामे केम संत ॥३६॥ आपे थयाछे आतमाराम, दास सुखिया पूरणकाम । मेलि पिंड ब्रह्मांडतुं मान, थया ब्रह्मखरूप गुलतान ॥३७॥ एवा मानमां मस्त छे जेह, विजा मानने न इच्छे तेह। अवरमां नथी उतार्थं मन, करवा पुरुषोत्तम प्रसन्न ।।३८।। एम समझ्या संत सुजाण, तेने रहि नहि कोइ ताण । एम आदि अंत्ये मध्ये जन, तजि मान भज्या भग-वन ॥३९॥ एवं समझिने संत आज, कर्युं तनमने मान ताज । थया निरमानी एम संत, जेने मेटिया श्रीभगवंत ॥४०॥ तजि तन ने मननुं मान, रह्या हरिमांहि गुलतान। काम लोभ ने खाद सनेह, मेल्या मानआदि पंच एह ॥४१॥ शोधि शत्रुनो कर्यो संहार, जिला जन थयो जेजेकार । पंच वैरी मुवे गयुं पाप, एइ प्रकट प्रभुनो प्रताप।।४२।।एह पंचवैरी परचंड, जेने वश छे पिंड ब्रह्मांड। तेने जितिने पाम्या आनंद, जेने खामी मळ्या सहजानंद ॥४३॥ पूर्वछायो-सहजे रहे सतसंगमां, पंच वरतने परमाण । काम लोभ खादने, तजि सनेह मान सुजाण ॥४४॥ एह रीत त्यागि-तिण, एम मुनि रहे अनेक। हवे कहुं सुणज्यो सहु, सांख्ययोगी बाइयोनी टेक ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-स्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये व्रतमान कहुं एनामे एकसो ने दशमुं प्रकरणम् ॥११०॥

चोपाइ-हवे कहुं हरिजननी रीत, सहु सांभळज्यो दइ चित्त । सांख्ययोगी बाइयो हरिजन, जेनां तपपरायण तन ॥१॥ सर्वे तजि संसारनी आश, भजे अंतरमां अविनाश । पुरुषोत्तम प्रकट पेखी, बिजी सर्वे इच्छाओ वेखी ॥२॥ देह गेहतणां सुख त्यागी, जेनी लगनि नाथशुं लागी। खानपानथी उतारी मन, भावे करे हरिनुं भजन ॥३॥ वसन भूपण न चाय चित्त, जेने पूरणब्रह्मशुं प्रीत । एवी मळे बाइयोनी मंडळी, करे वात मांहो-मांहि मळी।।४।। बाइयो सांभळज्यो एक वात, आज महाराज छे रिळयात । हशी बोलेछे हेतने वयणे, वळी जुवेछे अमृतनयणे ॥५॥ माटे मोडुं भाग्य छे आपणुं, छीए वाल्यमने वहालां घणुं । भले आवियो आ अवतार, जेमां मळिया प्राणआधार ॥६॥ लिधो अलभ्य लाभ ते आज, सर्वे सर्यांछे आपणां काज । कोइ वातनी न रही खामी, आज मळ्या सहजानंदस्वामी ॥७॥ एवा तजि सुखदायी क्याम, कोण करे मानखो हराम। एवी कोण अभा-गणी हरो, जे कोइ देहनां सुख इच्छरो।।८।। देहसुखमां रह्यो संसार, देहसुखमां विषयविकार । देहमांहि मान्यु जेने आप, तेने मळ्यांछे पूरण पाप ॥९॥ एवी गर्दभी नारी छे घणी, शुं कहीए बाइ बात ते तणी। नित्ये करीने नवलो रंग, देखाडेछे पुरुषने अंग ।।१०।। वस्त्र आभृषण पहेरी अंग, नित्य फरेछे नवले रंग । गुंथे केश हमेश हराडी, फरे शेरी बजारमां दाडी ॥११॥ तने चोपडी तेल फुलेल, आंजि आंख्य ने जुवेछे छेल । रुडी पुरुष देखिने रिझे, गळे अंतर भिंतर भिजे ॥१२॥ जे पुरुष मांन्या सुखरूप, तेनुं सांभळी कहुं खरूप। जेने जाणेछे रुडी रूपाळी, तेने भितरनो माल भाळो ॥१३॥ मांहि भर्यो मझा मेद मांस,

तेनी अभागणी करे आश। परु पाच पडे पिया घणा, वहे लिंट शेडा लजामणा ॥१४॥ कफ थुंक ने लाळनी खाडी, मुखे झरे ते मेघ अषाडी। पडे बळखा आवे ओकार, दिसे दांत हाडकांनी हार ।।१५।। मळ मृतरे पूरण पेट, तेनी भुंडण्य चायछे भेट । कुलटा मन रिक्षि करके, जेणे करीने जाशे नरके ॥१६॥ मांहि भरियो आंतर कर्मे, उपर मढ्योछे आळे चर्मे । भर्यु रुघिर ते रगरगे, एवो अञ्चद्ध नर छे अंगे ॥१७॥ खेद शुक्र शलेपम आम, नख केश ए दिसे नकाम । गुंगां गिडरे भर्यो भंडार, तेनो पापणी करेछे प्यार ॥१८॥ नरककुंड जेवो नरदेह, तेशुं शंखणी करे सनेह। पुंजा कचरा नाम उकरडा, दिसे दुरगंधिना डुंगरडा ॥१९॥ देखी नखशिखा वस्तु नकाम, फुये समझिने पाड्यांछे नाम। नाग वाघ सिंह नाम सरे, एथी अवळा केम उगरे ॥२०॥ गुणे जुक्त जाणी एह नाम, जेने मळे तेनुं टाळे ठाम.। कदापि जो होय नाम सारुं, जेम कावे मीडुं ने छे खारुं ॥२१॥ वळी सांमळो कहुं साहेली, नर होय फोगटिया फेली । गांजा भांग्य माजम मफर, ताडी मद्य पिवे दाड़ी नर ॥२२॥ पिवे अमल होका हमेश, गये जोबने रंगावे केश । खाय कवस्तु कामना काज, पापी पुरुषने नहि लाज ॥२३॥ जेजे भवमांहि छे शुंडाइ, तेतो सर्वे रहि नरमांइ। जेजे पृथवी उपर पाप, तेना करनारा नर आप ॥२४॥ चोरी हिंसा कसाइनां काम, करे नर न करे ए वाम। युद्ध विरोधे वैरमां लडे, सामसामा शिश बहु पडे ॥२५॥ चाले रुधिरनी तियां धारुं, मरे मनुष्य हजारेहजारुं । एवे पापे होय नर पुरा, तेतो कहावे जगतमां शूरा ॥२६॥ कइ जीव करे कच-रघाण, एवा पापिनां थाय वखाण । एवा पापी पुरुषना देह, तेशुं

खमे करे कोण स्नेह ॥२७॥ एने इच्छे अभागणी नार, जेने जावुंछे जमने द्वार। नारी नरकमां जायछे आपे, ते पुरुषमां श्रीत्य प्रतापे।।२८।। वळी कहुं पुरुषनां पाप, तमे सांभळज्यो सहु आप। नर विकळ होय विशेक, जेना अंतरमां नहि टेक ॥२९॥ करे पराणे नारीस्परश, थाय विकळ कामविवश । जोने ब्रह्मा सर-वेना बाप, तेणे कर्यो सुताने संताप ।।३०।। जोने इंद्र अभागिनां काम, कर्युं अहल्यानुं जीवत हराम । जोने विधुनो गयो विचार, हरि पराणे गुरुनी नार ॥३१॥ जोने सुरगुरु बृहस्पति, कर्यु अब्ळानुं अवळं अति। जोने नहुष मूरख मरवा, जोने इछ्यो इंद्रा-णीने वरवा ॥३२॥ जोने ययाति मूरख जन, मार्ग्यु पुत्र पासळे जोबन। एहआदि मोटा मोटा जेह, थया विकळ तनमां तेह।।३३॥ हवे बिजा रह्या जेह जन, तेनां क्यांथी स्थिर होय मन। माटे पुरु-ष तन जे पाम्या, तेतो लाज धरमने वाम्या ॥३४॥ पापमूर्ति पुरु-षपिंड, नर मळ्ये मळ्यो नरक कुंड । तेमां पडेछे पापणी जइ, लजावोंणि अभागणी थइ।।३५।। हारी मानखो थइ हेराण, जेना पुरुषे हराणा प्राण । नथी सुख छे दुःख अलेखे, तेमां अभा-गणी सुख देखे ॥३६॥ हवे कहुं जे आपणी रीत्य, प्रभु विना न राखवी प्रीत्य । पंच हाथ पुरुपथी परुं, रहेवुं खबडदार ते खरुं।।३७।। बाटे घाटे न जावुं एकछं, जो इच्छवुं पोतानुं भछं। नरसामां न जोडिये नेण, वळी भुले न बोलिये वेण ॥३८॥ संभारिए न सुणिए वात, हासरसे न स्परिश् गात । गुह्यवारता अल्ये न करिये, पुरुपाकार चित्र प्रहरिये ॥३९॥ तात भ्रात ने सुत संगाते, एशुं वसिये नहि एकांते। पडे काम अवश्य ए संग, त्यारे बोलवानो छे प्रसंग ॥४०॥ त्यागी त्रियाने तीर्थे जो जातुं, २८ भ०वि०

संबंधिसंगे तीर्थमां नावुं । द्रव्य राखवुं निर्वाह काज, नहितो आपणी न रहे लाज ॥४१॥ अन्न वस्न ते अंगने जोये, जाये जाचवा तो धर्म खोये। जाडुं मोटुं मळे जेवुं पट, तेणे करीने ढांकिये घट।।४२।। खारुं खादुं मळे जेवुं अन्न, जमी करिये हरि-भजन। आपणुं छे अबळातुं तन, तेमां राखवी जोइए जतन। १४३॥ घणुं वरतबुं ठावकु ठीक, अति आणी अंतरमां बीक । जेम दोरे चडे नटनारी, चुके नजरतो थाय खुवारी ॥४४॥ माटे रहेवुं सदाय सचेत, हरि विना न राखवुं हेत । आणी अंतरमांहि वैराग्य, करवां तनमन सुख त्याग ॥४५॥ एवी सांभळि शीखनी वात, सर्वे बाइयो थइ रिक्रयात । सत्य वारता छे एज साची, एम समज्या विना वात काची ॥४६॥ पूर्वछायो-ए रीख त्यागी त्रियानी, जेणे तज्यो सर्वे संसार। हवे कहुं रीत्य भाइनी, सांख्य-योगी गृही उदार।।४७॥ इतिश्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-खामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तवितामणिमध्ये सांख्ययोगी बाईयोनां व्रतमान कह्यां एनामे एकसो ने अगियारमुं प्रकरणम् ॥१११॥

चोपाइ – हवे सांख्ययोगी कहुं भाइ, जेने प्रीत्य पुरुषोत्तममांइ। सदा रहेछे प्रभुजि पास, थइ चरणकमळना दास ॥१॥
हरिपासे रहेछे हमेश, अतित्यागी ने उड़बळ वेष। राखि भुनिजेवां वतमान, भावे भजेछे श्रीभगवान ॥२॥ सर्व जक्तना जीवशुं
तोडी, जेणे प्रीत्य प्रभुजिशुं जोडी। देहगेहतणां सुख त्यागी,
थया प्रभुपद अनुरागी ॥३॥ उठे बेसे चाले जुवे जमे, करे तेह जे
नाथने गमे। नित्य जोइ महाराजनी मरजि,वर्ते मननी ममता वरजि
॥४॥ आज्ञाकारी छे जेहनां अंग, केदि न करे वचननो भंग। जाणे
देश काळ वळी समे, करे तेज जे नाथने गमे॥५॥ मरजि विना

पगलुं न भरे, अंतरमां निरंतर डरे । अतिसमझ ने संतस्वभाव, प्रेमी नियमी ने भक्तिभाव।।६।। दाम वाम जाणी दुःखदाइ, अति अभाव छे मनमांइ। एवा सांख्ययोगिनो समोह, जेने काम क्रोध निह मोह।।७।। लोभ लालच स्वाद सनेह, आशा तृष्णा ते तिजिछे तेह। हर्ष शोक नहि वृद्धि हाण्य, जेणे मेली तनमन ताण्य।।८॥ पंच व्रतमानमांहि पुरा, अंतर साधु ने उपर शूरा। अतिसमर्थ ने सावधान, वळी निरस्नेही निरमान ॥९॥ एवा सांख्ययोगी जे सुजाण, करुं तेनां हुं शियां वावाण। बीजां गृही घणां बाइ भाइ, जेनी वीत्य छे प्रभुजिमांइ॥१०॥ चोरी अवेरी मदिरा मांस, तेनी करे नहि केदि आशा। पड्युं द्रव्य पारकुं न हरे, खोटी साख्य भुले नव भरे ॥११॥ गांजा भांग्य लशण इंगळी, केफ मफर माजम वळी। करी केफ सरवेनो त्याग, राखे प्रभ्रसाथे अनुराग ॥१२॥ एवां गृहस्थ घणां नरनारी, जैने मळ्या छे देव मुरारी। अतिपवित्र ने पुण्यवान, तेनां नाम सांभळो निदान ॥१३॥ प्रथम कहुं सांख्ययोगी भाइ, पछी कहुं सांख्ययोगी बाइ। गृहस्थ हरिभक्त नरनार, करुं किंचित नाम उचार ॥१४॥ सांख्ययोगि-मांहि शिरोमणि, भावे नाम कहुं तेनां भणि। मुख्य मांची सोमलो मुगत, सुरो मातरो अलैयो भक्त ॥१५॥ काळो बालेरो ने राणसुर, लाखो नान नाजो संतसुर। एहआदि काठि जन कहीए, सांख्ययोगी ज्यामसंगे लहीए ॥१६॥ भक्त वेरोजि आतमाराम, इंगरिज भगुजि अकाम। मानसिंह ने केशरिसिंघ, खरा क्षत्रि ए भक्त अन्य।।१७॥ भक्त भाणो हमीर भणिजे, उमोजि उमे भक्त गणिजे।रवोजि रतनजि गंभीर, लाखो कसलो भीम हमीर॥१८॥ वीरो देवो मान गुमानजि, कमो काजु नाधुजि कानजि । लाघोजि

नानजि नारायण, एह क्षत्रि प्रभुपारायण ॥१९॥ भक्त मुळजि जाति खवाणो, सदा सखा ए क्यामना जाणो। एहआदि सांख्य-योगी कहीए, छे अपार पार केम लहीए।।२०।। उको हरजि रामजि दोप, कृषिकर करमिश सोय। जोधो जेठो मेथो हरिनाथ, भगो अर्जण बिजलो साथ ॥२१॥ राठोडादि प्रभुजिना दास, लालो बादर वे प्रश्रुपास । मियां करिम रयो हसन, राजा भ्रुला नाथादि यवन !।२२।। एह रहेछे प्रभुजिपास, सर्वे तोडी जगतनी आञ्च। एह सांख्ययोगी सह जन, भावे करे हरिनुं भजन ॥२३॥ कहुं प्रभुतणा पारषद, जैने काम क्रोध नहि मद। मोटा मुक्त छे मुळजि नाम, वरणिराट जन जेराम ॥२४॥ एह आदिक बिजा जे घणा, सदा पारषद प्रभुतणा । दीनानाथ प्रागजि पुराणी, जेनी सुधासमान छे वाणी ।।२५।। रहे हरिपासे ए हमेश, जेना मनमां मोह न लेश। एवा बहु रहे हरिपास, थइ चरणकमलना दास।।२६।। हवे सांख्य-योगी बाइयो जेह, जेने प्रभ्न साथे छे सनेह। अतित्यागी ने वळी अकाम, कहुं तेनां सांभळज्यो नाम ॥२७॥ मुख्य राजवाइनी ए रीति, प्रभु विना नहि कियां प्रीति । जीवुंबाइ जीवनां उदार, राख्या प्रभ्र न राख्यो संसार ।।२८।। लाडुबाइ प्रभ्रजिने प्यारां, सुबुद्धि गुणलक्षणे सारां । मीणवाइ जेवा मुनिराज, जेणे राजि कर्या महाराज ॥२९॥ अमरवाई द्विज मर्मवान, हरिसेवामां जे सावधान । रामबाई वेउ हरिभक्त, भज्या हरि तज्युं जेणे जक्त ।।३०।। अतिविरक्त अमृतबाइ, जेणे त्रोडि संसार सगाइ। झाझो **झमकुबाइने** वैराग, कर्युं प्रभ्रसारुं सुख त्याग ॥३१॥ रतिबा फुलिबा रुडां जन, कर्युं कुळ पोतानुं पावन । राजुवाई काजु हरिदास, जेने न लाग्यो नास्तिक पास ॥३२॥ अमरबाईने अमुलांबाई, अदि-

बाने प्रीत्य प्रभुमांइ। तन मनना सुखने त्यागी, प्रभुवरणे प्रीत्य जेनी लागी।।३३।। एहआदि सांख्ययोगी जेह, कह्यां एक गढडानां तेह । सोमदेबाई ने सुरबाई, थइ सोमाबाईनी भलाइ ॥३४॥ हवे कहुं बिजा हरिजन, जैनां प्रश्चपरायण मन । कहेवामात्र कर्मयोगी नाम, अति अंतरमांहि अकाम ॥३५॥ कहुं नाम तेनां निरधार, जेने प्रभुजि साथे छे प्यार । अतिप्रीत्य जेने प्रभुमांइ, तेह विना बिजुं दुःखदाइ॥३६॥ खरां खीमबाई पांचुबाई, जेनी कही न जाय मोटाइ। नानबाई ने कुंवरबाइ, जसुबाइनी थइ भलाइ ॥२७॥ सांख्ययोगिनां सेवक जन, तेनांपण भाग्य धन्यधन्य। बेनी कछ हिरु ने रतन, प्रेमां करे प्रश्चनुं भजन ॥३८॥ डोसी गंगामा ने बाइ देव, विरु वळी करे हरिसेव। रामबाई नाथी कंक कैये, हरि-सेवा वहाली जेने हैंये ॥३९॥ मातुं मघु अवल इत्यादि, हरिजन जीवी वाली आदि। एह सांख्ययोगिनां सेनक, जाणे सर्ने विधिए विवेक ॥४०॥ मन कर्मे करे सेवकाइ, एवो निरधार अंतरमांइ । वळी जाणेछे राजि महाराज, एवं जाणिने करेछे काज ॥४१॥ बिजां गढडामांहि छे घणां, निजसेवक महाराजतणां । प्राणजीवन प्रभुने जाणी, भजे भाव भिंतरमां आणी ॥४२॥ पुरपति छे अति अवल, काठी अनुप नाम एभल । तेना पुण्यतणो नहि पार, जेनो अतिपवित्र परिवार ॥४३॥ तेनो सुत ते उत्तम नाम, सर्वे शुभ गुणनुं छे धाम। कहीए मोट्यप शुं एनी अति, केदि न चळे धर्मथी मति।।४४।। सोंपि सर्वे हरिने सुजाण, वर्ते प्रभुनी मरजि प्रमाण। जेने घेर नित्य मुनिजन, लिये प्रसाद करे भजन॥४५॥ जीयोखा-चर आदिक जाणो, तेपण भक्त प्रभुना प्रमाणो । बळी उत्तमसुत जे बावो, स्पर्शि प्रभु लीघो जेणे लावो ॥४६॥ धन्य भक्त ते घांधल

घेलो, अतिनिर्मळ नहि मन मेलो । मालो माणशियो नागदान, जेने वहाला छे श्रीभगवान ॥४७॥ भक्त उको अतिनिरमान, संत टेलमांहि सावधान। एहादि काठी भक्त अपार, भजि हरि थया भवपार ॥४८॥ भट्ट गोपी प्रभुजिने प्यारा, तेना सुत ते त्रण छे सारा। रघुनाथ ने लालजि नाम, त्रिजो सुत बारु जीवराम॥४९॥ द्विज मकन कुरजि नाम, भगो बेचर ने लखिराम । रामचंद्र ने रतनेश्वर, हरजीवन डोसो जागेश्वर ॥५०॥ नागरादि छे विप्र अनेक, भजे हरि तजे नहि टेक। जुठा लखा जुगल वणिक, दो अमरिश ने डायो एक ॥५१॥ मालजि हीरो कृष्णजि दोय, कानजि ने रुगनाथ सोय । कमळशि सुरचंद्र दोय, हरिभक्त वणिक ए सीय ॥५२॥ शवी खिमी ने कृष्ण प्रेमजि, वाली वसती मेवी मुळजि। एह आदि छे भक्त सुतार, जेठा भगादि कहीए सोनार ॥५३॥ जगा गांगा आदि जे आहीर, सुणो क्षत्रिभक्त शूरवीर । सबलोजि जैसोजि पुंजोजि, वेचर ने गोविंद कानजि ॥५४॥ एहादि क्षत्रि भक्त अपार, बिजापण अतिशे उदार । खिमी कुंभार रुगनाथ सइ, देवा आदि दलवाडी कई ॥५५॥ नाथो हको मूळिज रामजि, आंबो खोडो भावसार हरिज । राजो जगो ने केशव कहीए, रुडा भक्त राजगर लहीए।।५६॥ निक भक्त नागा-जण राणो, लखमणादि रावल जाणो। लाघो प्रेमजि मेघो कुरजि, हरजि गांगजि तेजो मनजि।।५७।। कल्याण जीवो डोशी जानबाई, राजुबाई खरां खोजामांइ। कणवी केंश्व जेठो सुंदर, भाट रावजि डोसो सगर ॥५८॥ वाघो मावजि रामो छहार, देवो पुजादो भीमो कुंभार। कोळि मालो वालंद गोविंद, देवजि सांगो काळो खछंद ॥५९॥ एहादि जन गढडावासी, प्रकट प्रभुजिना उपासी। बिजा बहु जन प्रभुपास, जेनो देशप्रदेशमां वास ॥६०॥ कहुं तेनां हवे गाम नाम, जेणे प्रभु भज्या तिज काम। सांख्य-योगी कर्मयोगी जेह, कहुं सर्वे सांभळज्यो नेत ॥६१॥ छे तो अपार ने अगणित, कहुं तेमांथकी हुं किंजि। ॥ समुद्रमां सकुन सुजाण, पिवे पाथ ते चांच प्रमाण ॥६२॥ धर्मछायो—आगळ बहु अवतारना, जन कह्या कविए विचार। पण आज जे ओध-रशे, तेनो निह थाय निरधार ॥६३॥ इति धायदेकांतिकधर्मप्रवर्त-रशे, तेनो निह थाय निरधार ॥६३॥ इति धायदेकांतिकधर्मप्रवर्त-कश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्यक्षेते भक्ताचितामणिमध्ये गढहाना सांख्ययोगी हरिजन तथा सांख्ययोगी वाइयो तथा महाराजना पारपदनां नाम कह्यां एनामे एकसो ने वारमं प्रकरणम ॥११२॥

चोपाइ-हवे कहुं हरिभक्तनां नाम,जेने मळ्याछे सुंदरक्याम । अतिपवित्र उत्तम एह, जेने श्रीहरि साथे सनेह ॥१॥ लेतां नाम आवेछे आनंद, जेने खामी मळ्या सुखकंद । तेनां नाम सांभळे जे जन, थाय कुळेसहित पावन ॥२॥ सोरठ देशना सतसंगी जेह, कहुं प्रथम प्रकाशि तेह। देश पवित्र पवित्र जन, जेनां हरिपरायण मन ॥३॥ बाळ जोबन वृद्ध समिष्ठ, सरवे जन समाधिनिष्ठ । भावि भक्त वालो जेतबाई, जियां भक्त थया भीमभाइ ॥४॥ तेतो मोटा मुक्त महामति, सदा सुखिया अंतरे अति । जेनी कह्यामां नावे मोटाइ, एवा भक्त कहीए भीमभाइ ॥५॥ पुण्य पवित्र पर्वतभाइ, जेनी अखंडवृत्ति हरिमांइ। स्थिति पिंड ब्रह्मांडने पार, नावे जोये जगत लगार।।६।। अक्षररूप मोट्यप तेतणि, वैश्य भक्तमांहि शिरी-मणि । एक भक्त राजोभाइ धीर, वचनरूप अनुप आहीर ॥७॥ निक मक्त छे नागजि नाम, खिमजि शवजि ने जेराम। राजा आंबा मुळजि कल्याण, एक नामे वे भक्त प्रमाण ॥८॥ नृसिंह

नाथो राघव कुरजि, मावो मेघो ने भक्त कानजि । कहीए केशव वसतो वळी, शामजि जीवो अरजुन मळी ॥९॥ रुडां गांगु मधु राधाबाई, हरि भजे तेजुनी भलाइ। एहआदि कणवी कहेवाय, वसे मुक्त माणावद्रमांय ॥१०॥ द्विजभक्त मुक्त मयाराम, श्रात भक्त गोविंदराम नाम । द्विज जीवन मेघनभाइ, जादव रुगनाथ केवाइ ॥११॥ वळी अंबावि जेठो जेराम, भने द्विज नारायण नाम । भक्त भाणो शेठ मिठिबाई, दास देवोक्नंभार केवाइ ॥१२॥ जमो आळशि जाति यवन, भक्त हरिना थया पावन । एहआदि जे भक्त अकाम, थया मुक्त माणावद्र गाम ॥१३॥ भक्त वाळंद मावजि भली, बसे गाम समेघे एकलो। भक्त एक छे जादव नाइ, बसे गाम ईश्वरियामांइ।।१४।। भक्त कृष्ण क्षत्रि कुंतियाणे, भाट मनोहर सहु जाणे। देवडे दास पुंजो पटेल, बालवे द्विज मुळो वसेल ॥१५॥ भक्त भाविक एक उदार, नाम भगवानजि सुतार । तेनो तन रतनजिभाइ, बुद्ध भक्त नाम जानवाई।।१६।। प्रेमिशा पुरुषोत्तम नाम, एहार्दि रहे पोरबंदर गाम । भक्त वजसि अजो कुंभार, वसे गाम वेल मोझार ॥१७॥ मसरि हीरो वीरो कुंभार, कचरो बाई मुळी उदार । भक्त शेठ आणंदिज नाम, एहादि मक्त रहे बालागाम ॥१८॥ धन्य पवित्र गाम पंचाळुं, जियां हरिजन छे दयाल । क्षत्रिकुळआभूषण अति, भक्त एकांतिक महामति ॥१९॥ हेमतसिंघ ने अनुपसिंघ, भक्त भूषण अति अनघ। भूपतसिंघ नवलसिंघ कहीए, बाद्र थानोजि मेरजि लहीए ॥२०॥ बाई गंगामा ते निरमळ, हरिभक्त जेवां गंगाजळ । अदिवा मोटिबा नानिबाई, मोटां मुक्त क्षत्रिकुळमांइ।।२१।। जेणे प्रभु पधरावी घेर, करी संतसेवा रुडिपेर। विजा भक्त पासे वसे बहु, कहुं नाम तेनां

सुणो सहु ॥२२॥ द्विज लाडकी ने रुकमाइ, जेनी कहि न जाय मोटाइ। ओझो राघव गोपाळदास, भजि हरि तजि जगआश ।।२३।। ठकर उको मकन जेराम, एहआदि ते पंचाळे गाम । भक्त हमीर खोडो कुंभार, बाई कानु सुत्रेज मोझार ॥२४॥ जन शादुल भोजो हजाम, भक्त खोडो भाषरोट गाम। भक्त तेजो जन देवुबाई, रहे छहार खमिदाणामांइ।।२५॥ भक्त शा खिमजि देवो नाम, क्षत्रि करणजि सगराम । भक्त कानो जुठो हिरुबाइ, वसे वाळंद ए लोजमांइ।।२६।। मोटा मुक्त मांगरोळ गाम, कहुं तेनां सांभळज्यो नाम। भक्त वणिक केवळराम, जन मावजि वासण नाम ॥२७॥ भक्त रामचंद देवकर्ण, नथु मुळचंद हरिशर्ण । सुरचंद हिरजि अखइ, दामोदर गोवर्धनभाइ ॥२८॥ हर कुंबर जानु मानुं मिठी, नानी अमृत ने बाइ जुठी। मुक्त मेघजि भ्रुरजिभाइ, रतनजि विजां नानबाइ ॥२९॥ एहआदि ते वणिकमांय, सर्वे समाधिनिष्ट कहेवाय । क्षत्रिभक्त छे मनछाराम, रुपसिंघ उमेद-सिंघ नाम ॥३०॥ गुलावसिंघ आदि जे भाइ, जन एक राजकुं-वर बाइ । वैश्य भक्त बखाणवा जेवा, आणदिजि मनजि छे एवा ॥३१॥ भक्त मालि मोनाजि गोविंद, कहुं वांझा मक्तनं ते बंद। भक्त धनजि नागजि नाम, त्रिक्रम गोकळ माधो अकाम ॥३२॥ आणंदिज आदिदइ भाई, एक भक्त रुडां भाणिवाई। एहआदि बिजां बहु भक्त, वसे मांगरोल्यमां ए मुक्त ॥३३॥ लांगोदरे लाखो नानुबाई, मोटा भक्त ए सगरमांइ। भक्त वैश्य वसे काळवाणी, कहुं नाम तेनां हुं बखाणी।।३४॥ शेठ घेलो जेठो जीवराज, भक्त खोडे कर्युं निजकाज । जन वैश्य मोटां मिठिबाई, भक्त सगर जीवो भगोभाइ।।३५।। द्विज लखा आदि जन जेह, कहीए कालवाणिमांहि तेह। मोटा भक्त छे माळियामांइ, ठकर धनजि <mark>नानजिभाइ।।३६।।अमरशि</mark> कमळशी केशव, भक्त रामजि रणछोड देव । ग्रुळजि आदि लख्या छुवाणा, भक्त प्रकट प्रभुना कहेवाणा ।।३७।। द्विज अर्जुन मुळजि जाणो, सोनी भक्त नथु परमाणो । भक्त रतनो गोविंद भाणो, जन कणवी माळिये जाणो ॥३८॥ सतसंगी छहार शवजि, वसे मंडरिये भय तजि । भक्त अनुप अजाब्यगामे, शेठ नायों ने भागजि नामे ॥३९॥ करमण जेठो वशराम, भक्त कणबी अजाब्यगाम । भक्त रुडा रहे अगत्राइ, भजावि गया पर्वतभाइ ॥४०॥ हीरो हदो आंबो वशराम, जीवो पूंजो मुळजि वे नाम। मेघो मावजी लखमण लहीए, हीरो हंसराज कृष्ण कहीए ॥४१॥ रुडां रुडि हिरु सेजुवाइ, कहीए कणविभक्त अगत्राइ। भक्त रोठ उद्भवजि नाम, पाळे व्रत पाडोदर गाम ॥४२॥ मक्त वसे मुलियासे गाम, जुना भक्त जेठोमेर नाम ! सुत हाजो नोंघो हिरिबाइ, राजि भजे हरिने भलाइ ॥४३॥ द्विजभक्त प्रक आखामांइ, नारायणजि नरसिंहभाइ। कुरजिरामजि इंदरजि, हरि भज्या मुळे मोह तजि ॥४४॥ हरिजन जीवी मिठी बाई, लाडु वेद्धनी धन्य कमाइ। एहआदि भक्त बाई भाइ, भजे हरि आखा गाममांइ ॥४५॥ पुण्य पवित्र छे पिपलाणुं, तेनी शोभा हुं शिय वखाणुं। रामानंद सहजानंदस्थामी, जियां मळ्याता वे बहुनामी ॥४६॥ तियां भक्त वसे निपकाम, द्विज मेतो नरसिंह नाम । सुत कस्याणिज वालजि कहीए, रुगनाथ नारायणिज लहीए॥४७॥द्विज लाखु ने बाई कुंबर, सोनी राघव उगी आयर। नाघोरि फतो काषि राम, एह भक्त पिपलाणे गाम ॥४८॥ निक भक्त छे नावडे गाम, द्विज मावजि ने सोनी राम । भक्त वणिक झवेरबाइ, सइ

जीवो ए नावडामांइ॥४९॥मोटा भक्त मेघपुरमांइ, सोनि जीवराज नारायणभाइ। वडा विरुवाइ हरि भजि, द्विज जेठो भाणजि रवजि ।।५०।। भाट अमृतसिंघ नंदुकृष्ण, बाइ लाडकीने हरिप्रश्न । सामत सबदास कुंभार, भक्त ए मेघपुर मोझार ॥५१॥ मोटा भक्त छे महादेव नाम, द्विज वसे टिंडमस गाम । वसे वणथळिए जन पांची, कणवि केशव कल्याण साची ॥५२॥ जाणी जीरणगढना जन, रामजि कुरजि हृंदावन । माण्यकलाल द्विज हरिराम, नागरमां पांचिबाइ नाम ॥५३॥ क्षत्रि उमेदजि दादोभाइ, भाठ मानसिंहनी मलाइ। शा चांपशि विरजि मंगळ, भावि भक्त भाटियो गोकळ ।।५४।। भक्त छवार लखमण कहीए, हीरो ग्रुळजि रामजि लहीए। कृष्ण नाइ जेराम छवाणी, भक्त एक ओधी गोली राणी ॥५५॥ देवराम नारायणजि छुतार, मोटा भक्त छाप करनार । एहआदि जे भक्त अपार, वसे जीरणगढ मोझार ॥५६॥ मोटा भक्त छे भाडेरमांइ, क्षत्रि वाघजि पातलभाइ। अखोभाइ ने मुळु वे नाम, द्विज देवराम शिवराम ॥५७॥ मेर जीवणो ने वक्त नाम, गोकळ-दासादि भाडेर गाम । द्विज मक्त एक छे लिंबुडे, जसवंत भजे हरि रुडे ॥५८॥ क्षत्रि नायोजि विप्र प्रेमजि, गणोदमां मोटा हरि भजि । क्षत्रि खोडोजि ने जिजिबाइ, भक्त कहीए तलगणा-मांइ ॥५९॥ जन रुडा छे जाळियामांइ, ठकर हिरो ने नाथी-भाइ। सांगो काथड ने नागाजण, बाइ रतनु बाबरिया सुजाण ।।६०।। शा अमरशि ठार वशराम, आहिर वालो गंगादास नाम । बाइ जीवां सोनी प्रेमबाइ, जन एहादि जाळियामांइ ॥६१॥ नथु आहिर बाइ मलाइ, द्विज कानी क्षत्रि वेरोभाइ। भक्त खवास छे रुपांबाइ, एह आदि उपलेटामांइ ॥६२॥ द्विज नानो प्रभा-

शंकर नाम, हिरजि वेलजि मयाराम । बाइ लीलबाइ राजबाइ, क्षत्रि जुणो भायाबद्रमांइ ॥६३॥ झांझमेरे द्विज अंवाराम, क्षत्रि उदो दुधिवद्र गाम । भाट गोपाळ ने डोसो कहीए, काजु मक्त कंडोरडे लहीए ॥६४॥ क्षत्रि लाघो जिजि ने अजुजि, संबलोजि बतडजि वाघजि । भक्त गोपाळजि अदोभाइ, हवे कहुं हरिजन बाइ ॥६५॥ सजुबा हकुबा बाइ बाजि, भावकुंवर ने भाम-नांजि। जांबुबा विरुवा क्षत्रिमांइ, द्विज मावजि मुळजिभाइ ॥६६॥ हरजीवन जीवो वियास, बाइ देवु जेठि हरिदास । मात्रजि देविश देवचंद, भक्त ख़वाणा भजे गोविंद ॥६७॥ ओझो भीमो लिधो लीलबाइ, भक्त एहादि धोराजिमांइ। भक्त ठकर भवान नाम, सतसंगी ए सांकळि गाम ।।६८।। भला भक्त छे सोनी फणेणी, गोवा वेलानी एकज रेणी। भक्त कानो ने रामजिभाइ, जीवी अग्रुलां केशरबाइ । १६८॥ भक्त सुतार कृष्ण ते कहीए, जन विरजि रामजि लहीए। वैरागी एक हरिदास, एहनो छ फणेणिये वास ॥७०॥ आणंदिज करमशि विषक, भक्त कुंभार लाखो छे एक। सोनी मिठो ने केशरबाइ, एहादि गाम गुंदालामांइ।।७१।। रुडां जन जाणो जैतपर, भट वामन अजरामर । जन जेराम जीवन नाम, वेळ देव पुतळि अकाम ॥७२॥ जन पारवती आदि बाइ, एहादि भक्त ब्राह्मणमांइ । भगवान डुंगर ने भाणो, अजुबाइ ए कणबी जाणो ॥७३॥ ठार ठाकरिश आंबो जन, मानुं अमर टबि पावन। एह भक्त सुतार सुजाण, एक जन उनड खुमाण ।।७४।। भक्त कणवी मावजि नाम, बिजा जन छे गालोस्य गाम। वैश्य वाघानो तोरिये वास, खिरसरे ठार हरदास ॥७५॥ सर-तानपुरे आलो तेली, भजे हरि जगलाज मेली। शेठ लाधो

ित्रमो ने रूपिश, काठी मेराम रामिज किश ॥७६॥ एहादि दास वसे देरडी, जेनी प्रीत्य प्रभुसाथे जडी। एवा हरिजननां जे नाम, लखवा छे मारे हैये हाम ॥७७॥ पूर्वछायो—किहकहि कहीए क्यांलगी, जननाम अपरमपार। शेष थाके संभारतां, नोय एक जिमे उच्चार॥७८॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये सोरठदेशना हरिज-ननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने तेरमुं प्रकरणम् ॥११३॥

पूर्वछायो-वंदु हुं भक्त वालाकना, जन विश्ववासी विशेष । अचळ प्रभुनो आशरो, बळी ग्रहि न मुके टेक ॥१॥ उदार मन अतिषणां, जेने प्रकट प्रभुशुं प्यार । भोळे भावे भजे हरि, छळ कपट नहि लगार ॥२॥ एवां हरिजननां नाम, लेतां आवे आनंद । कहुं संक्षेपे सांमळो, जेने खामी मळ्या सुखकंद ॥३॥ चोपाइ-बहु भक्त बगसरे गाम, कोळी हरिपाल सुत राम। रैयो कानो भगो उको राणो, भक्त संघो भगो कृष्ण जाणो ॥४॥ भक्त वेलो मेपो जोधो जन, कुरजि हरजि ए पावन । देवाशिआदि दै सतवारा, भक्त नाइ राजी मावी सारा ॥५॥ निक वैश्य एक नानवाइ, वसे जन ए बगसरामांइ। वैश्य कलो ने पुंजी पावण, वसे मालवाणे हरिजन ॥६॥ घुचराले छे लाघो सुतार, उको चितळे मांडणखुवार। ठकर वसतो ढोलरवामांइ, मांडवडे छे नारायण नाइ ॥७॥ सनाले गोदड मकवाणी, सुडावड गोवर्धन छुवाणी। चरखे जन राम कुंभार, देरडिमांहि शामी सोनार ॥८॥ पिठवाजाले खिमी पटेल, चुडामां भक्त वेली वसेल। भक्त कृष्ण आहीर हामापर, बरवाळे छे डायो सगर ॥९॥ द्विज भक्त सुंदरिज उदार, लाठिये वजेराम सुतार । भक्त रुडो आसोंदर गाम, कणवी हिरो ने रतनो नाम ।।१०।। मांशियाले रैयो हरिजन, कणवी कुळमां भक्त पावन । छिणिये भक्त त्रिकम ठार, वैश्य लाघो आक्रडिया मोझार ॥११॥ भक्त जीवुबाइ धकुबाइ, काठि तोरि खंभालियामांइ। माणसुर हमिर हिमदे, काठि भक्त रुडा छे राणदे ॥१२॥ उको लगे डायो वशराम, आंबो हिरो राजो भक्त नाम। देवशि आदि कणवि कावे, भक्त रुडा रहे कुंकावावे ॥१३॥ अमरेलिए पुंजी पचाण, मकन आमद खोजा सुजाण । कणवी भक्त पर्वत छे नाम, एहआदि अमरेलि गाम ॥१४॥ राम पदमो कणबी कहेवाय, एह भक्त चांपथल मांय। मोटा मुक्त मेराम मांजरियो, जेणे समझिने सत-संग करियो ॥१५॥ राघवजि धनो तुलाधार, द्विज कचरो धारि मोझार। नाथो वसतो भक्त वणिक, रबारि देवदास छे एक।।१६॥ हरिजन रूडां राणिबाइ, एह आदि जन जिरामांइ। भाचे भक्त घेलो शेठ सारो, कापि पाश जे निसर्यो बारो ॥१७॥ धामलेजमां लाखो पटेल, लखु चारण लोढवे रहेल। भक्त वीरो सुतार मानु-बाइ, वसे क्षत्रि ए डोलासामांइ ॥१८॥ दिवमां नाइ दामो सुंदर, कल्याण हरि ने पीतांबर। जन एक पारवतीबाइ, जेने प्रभुशुं साची सगाइ॥१९॥ शेठ कृष्णजि लखमिचंद, राजवाये भज्या गोविंद । प्रेमबाइ रतनबाइ नाम, डोसो माळी वसे दिवगाम ॥२०॥ अनुप भक्त छे उनामांइ, हेतवाळा हंसराज भाइ। उद्भव शेठ वेलिश गणेश, जेठो भक्त हरिनो हमेश ॥२१॥ सोनां अवल माण्यकबाह, ए वणिकजन उनामांइ। एक भक्त कुंभार देसुर, वीर्ज कुळ सम्रुखं असुर ।।२२।। द्विज भक्त रुगनाथ कहीए, शेठ तुलसी वसे कांधिये। शेठ वालो वाघो हरिजन, सामतेरे छे द्विज वसन।।२३॥ द्विज वाघजि त्रिकम नाम, रुडा भक्त ए गांगडे गाम । कोळी भक्त

परवतभाइ, भक्त जोगो वसे टिबिमांइ ॥२४॥ कोळी राम वीरो सुरदास; मोटा भक्त मोलिग्रामे वास। वित्र वीरो रामजि सुजाण, सोनी लोमो लाखो जीवो जाण ॥२५॥ कानो लोमो बाबरिया बे भाइ, भक्त एहादि डेडाण्यमांइ। कालु काळो लोमो खिमो धीर, वसे बारपटोलि आहीर ॥२६॥ भगो सुमरो भक्त भणिजे, मसरि रामपुरे गणिजे। कोवाये राघो लाखो आहीर, धर्ममति अति मन-थीर ॥२७॥ रुडा भक्त राजुले अवल, राजगर मुलो ने विठल । सोनि नाग शामलो सुधीर, पूंजो लाखो आलो ने हमीर॥२८॥भक्त भगादि बिजा छे बहु, वसे गाम राजुलामां सहु। राघो लोमो आहीर झोलापर, क्षत्रि भक्त श्रीभाइ सुंदर॥२९॥ द्विज हिरजि डुंगर डायो, मांडाले आहीर विजो मायो। चाडदिके मोजो करमण, चोखा भक्त हरिना चारण ॥३०॥ भोजो सामत भक्त आहीर, वसे चाडदिके मनधीर। भक्त डोसो पंचोलि जादरे, नथु छुवार तलगाजरे ॥३१॥ द्विज गिगो जीवो जणसाळी, एहादि जन मवे मंडळी। असराणे भगो नकोभाइ, उपन्या क्रुळ आहिरमांइ॥३२॥ आलो लखमण मांगाणिराम, वडाळे बाइ अमर नाम । साजण सामत वालो कुंभार, मेंयो वसतो वणोठ मोझार ॥३३॥ खेरा-लिये गोलण निरमळो, काठि सुंथो घेलो ने शामळो । भक्त देवाणंद छे कुंभार, राठोड रुडो खेरालि मोझार।।३४।।वावेरे पिठो जणशाळि जेह, भक्त मुख बाबरियो तेह । जादव करणो भगो कुंभार, वसे गाम घाणला मोझार ॥३५॥ मेरियाणे छे हाजी कुंभार, कुळे सहित भक्त उदार । राओतदास मांमैयो कंक, जानबाइ छापरिये निःशंक ॥३६॥ वासो मुलो ने बीरो रबारी, वसे लिखाळे भजे धुरारी। उगो मांतरो कडवो कहेवाय, काठी भक्त गोर-

डका मांय ॥३७॥ काठी सादुल सगाल नाम, भक्त हैये ए छवारे गाम। द्विज वसतो सामत कुंभार, राघव रहे बादडा मोझार ॥३८॥ वीरो नारण कणवि कहीए, भक्त सारा समढियाळे लहीए। शेठ द्वारको आंबो विव्वल, वसे झिंझुडे जन अवल ॥३९॥ पांची सांगो खारि पावन, गाम मोलिडिये हरिजन। धन्यधन्य पिठवडी गाम, जियां भक्त वसे निष्काम ॥४०॥ आंबो मेघो हिरो मायो नाम, रुडो पुंजो हरजि जेराम। राजो मगो मुळो जेठो जन, वाली कलो प्रेमजि पावन ॥४१॥ हिरु लाडु वेलु कुंवर बाइ, मोटां मुक्त ए कणविमांइ। द्विज जीवो ने पुतलिबाइ, सुत शिवो गोवर्धनभाइ।।४२॥ द्विज मोनो राघव दयाराम, कोळि भक्त एक भोजो नाम । जन जणसाळी कल्याण लइ, भक्त छे पिठवडिये कइ ॥४३॥ कणिव भक्त भगो जसो राणो, जन जीवी केरालामां जाणो। चांदु मांमैयो भक्त जेराम, राघवादि भक्त वंडेगाम ॥४४॥ वीरो लाखो ने मेघो कुंभार, वसे भक्त पियावा मोझार। काठि हरिजन मुखबाइ, वसे गाम ते बवाडिमांइ ॥४५॥ काठि भक्त अमरबाइ नामे, तेह वसे खालपर गामे। हरिभक्त सादुल कुंभार, कन्या कड विये तज्यो संसार ॥४६॥ भक्त जणसाळी खोडो छे नाम, एहादि जन फिफाद गाम। द्विज जेठो वालजि दयाळ, अजो देवराम एक बाळ ॥४७॥ हरिभक्त छे बाइ कुंबर, एहादि जन दामनगर। कणवि भक्त डायो हरदास, जन ठाउका ठासले वास ।।४८।। द्विज वीरो अमरबाइ नाम, मोनजि भीमजि दयाराम । द्विज जेठो सुंदरजि मणियार, भक्त ए पालिताणा मोंझार ॥४९॥ द्विज शंकर बोघो वे भाइ, भक्त ब्राह्मण किको केवाइ। भक्त मुळजि छे मावसार, खोजो संघजि दियोर मोझार ॥५०॥ मान-

कुंवर ने भोळिबाइ, द्विज वसे ए त्रापस मांइ। कानवाइ पति वीरो नाम, भक्त खोजां ए तलाजे गाम ॥५१॥ भक्त एक जीवो भावसार, रहे पडवा गाम मोझार । वालो कृष्ण ने देवशि नाम, मक्त भावसार गुंदिगाम ॥५२॥ क्षत्रि भक्त रुपोभाइ धीर, भक्त राजोभाइ शुरवीर । झिणो संघवि झिणो श्रीमाळी, भावसार गांगो मकु माळी ॥५३॥ शेठ भक्त भगवान कहीए, कणवी भक्त काको एक लहीए। कोळी भक्त गोविंद निदान, भणसाळि भक्त भग-वान ॥५४॥ एहादि भक्त भावनगरे, शिशसाटानी भगति करे। द्विज शंभ्र मुळजि रतन, क्षत्रि भक्त मोको हरिजन ॥५५॥ क्षत्रि भक्त मोटां मोटिबाइ, भक्त एहआदि वळामांइ। शेठ लालो गिलो भावसार, शा डायो उमराळा मोझार ॥५६॥ खोपाळे कणबी जेठो जन, अडताळे द्विज गोवर्धन । शेठ भीमजि भक्त सुधीर, जेठो लखमण कृष्ण आहीर ॥५७॥ भक्त कणवी कहीए जसो नाम, एहादि राजिपयळे गाम । काठी मुळ राओत वे कहीए, भक्त गाम गुंदालामां लहीए।।५८।। शेठ आंबो घेलो माधो जीवो, जेठो किलो दामजि ने देवी । द्विज हरिभक्त हरिभाइ, जन कणबी भगी केवाइ ।।५९।। भरवाड भगादि भाळिये, भावसार जेठो गढाळिये। हरि-जननां नाम अपार, जथारथ न होय उचार ॥६०॥ पूर्वछायो-असंख्य जीव ओधारिया, तेनो नावे लखतां पार ! जे आव्या मारी जाण्यमां, कर्या एटलां नाम उच्चार ॥६१॥ ब्राह्मण क्षत्रि वैश्य शुद्र, जे कोइ नर ने नार । दरश स्परश दयाळने, कइ उतर्यो मनपार ॥६२॥ देह छतां दुः खियां नहि, तन छुट्ये तेज अंबार । आवे प्रभुजि तेडवा, जाय ब्रह्ममहोल मोझार ॥६३॥ रथ वेल्य घोडां पालखी, वळी देखे बहु विमान। मागी शिख धुके २९ भ०चि०

देहने, जेने मळ्या खामी भगवान ॥६४॥ मोटो प्रताप महारा-जनो, एक जिमे कह्यो न जाय । एमां जे जन उधरे, तेनु निह आश्चर्य जराय ॥६५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहज्ञानंद-खामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये वालाकदेशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने चौदमुं प्रकरणम् ॥११४॥

पूर्वछायो-कहुं भक्त काठियावाड्यना, जियां रह्या हरि करी वास । आपी सुखं अतिघणां, पुरी जनना मननी आश्च ॥१॥ निष्कामी निर्मळ मति, अति आंटिवाळां अंग। तन धन सुख टळे, तोय न चळे सतसंग ॥२॥ एवा भक्त अनुपनां, लेतां नाम आवे आनंद। कहुं भक्त कारियाणिना, जेने खामी मळ्या सुख-कंद ॥३॥ चोपाइ-भक्त मांचो मोटा हरिजन, वाचकाच छ निश्रळ मन । वेली वसती राम खाचर, क्षत्रि मोजीभाइ उजागर ।।।।। मातरो ने वळी माणसुर, भक्त विसो हरिने हजुर । कणबी वीरदास कमो कहीए, राघव देवो हरजि लहीए।।५।। कानो वीरो बोधो लखमण, गोवो जीवो कुंवरो पंचाण। लालो भगवान भक्त सुतार, लाधो सइ जेराम छवार ॥६॥ ठकर रतनी रघो भगत, हीरो दलवाडी सुमारजत । खोडो गोवो धनो माधो शाम, भवान पीतांबर छे नाम ॥७॥ एहादि कहीए कणबी सुजाण, भक्त राठोड तेजो परमाण । धनवा हरिवा शितवाइ, मोटा भक्त कारियाणिमांइ।।८।। वित्र जीवो वैश्य वेलो भाइ, द्विज वालु क्षत्रि फइबाइ। एहादि जन झमराले गाम, लाठिदडे खाचर दादो नाम ॥९॥ क्षत्रि भक्त कहीए कांघोभाइ, लाठिदडे वैश्य शामबाइ। राणो क्षत्रि देवो सतवारी, चोथो भक्त छणधरे सारो ॥१०॥ नसितपुरे मांची खाचर, मावी कुंभार रहे रामपर। क्षत्रि पुंजी

पाणिव गाम, क्षत्रि कृष्ण ठकर बदाराम ॥११॥ द्विज गलालबा दयाराम, बेन भाइ ए पाटण गाम । शा आणंद द्विज लखिराम, रहे भक्त रोइसाळे गाम ॥१२॥ सामयो लखमिचंद जोडो, खमि-दाणामां पटेल खोडो। विप्र वाघजि वीरो वणिक, वशराम छवाणो छे एक ॥१३॥ सइ देवजि नरसइ नाम, एहादि जन बरवाले गाम। मामैयो हाथियो राम जन, पटगर अमरो पावन ॥१४॥ राइबाइ लाडु वलुबाइ, काठि सोमलो कुंडळमांइ। खांभडे पुंजो देसी रावळ, गुदे वणिक कमी अमळ ॥१५॥ जीवो खाचर भक्त अमल, मातरी ने राठोड धाधल। सइ भगो गोपाळ सुतार, गर लीलाधर पुंजी कुंभार ।।१६।। काठी उको दलो हरिदास, भगो छवार प्रश्चने पास । मोटां भक्त एक मलुबाइ, कहीए काठी सारंगपुरमांइ ॥१७॥ सरेवैये जीवणो धाधल, पाटिये मोनो क्णवी अवल । मगो इंगर भक्त वणिक, क्षत्रि बाबोजि भक्त छे एक ॥१८॥ रामजोगियो जन सुजाण, आव्या प्रभु तेड्ये तज्या प्राण । जेठ सुर अलैयो खाचर, लाखो भक्त ए झिंझावदर ॥१९॥ वीरा वे वेलो कलो सुतार, भक्त अजो पिपलिया मोझार । भक्त निंगाळे कालो रावळ, भजे लाधो हरि निरमळ ॥२०॥ गोवो हिरो रुडो लिंबो लहीए, जेठो जीवो भगो अजो कहीए। आंबो रामजि कणबी जन, भट खिमजि राम पावन ॥२१॥ रणछोड ठालो जसो ठवार, गोविंदादि रहे मांडवधार । वावडिये खाचर भायो उगो, केराळे नाजो प्रभु ने पुगो ॥२२॥ क्षत्रि रैयो वसतो डोसाजि, रहे सुखपुर दुःख तजि । हरिभक्त वालजि सुतार, देवधरिये रामजि लुवार ॥२३॥ काठि नाथो शेठ भाइचंद, भजे नागलपुरे गोविंद। भक्त बहु बोटादे भाविक, जाणे सार असार विवेक ॥२४॥

हरिभक्त हमीर खाचर, सोमलो मातरो उजागर। दासो गोदङ नाथो घाघल, खोडो भक्त हरिनो अवल ॥२५॥ हरिभक्त हाथियो ने सुथो, जेणे तज्यो संसार समुथो। एहादि कहीए काठी भक्त, भजि हरि थया मोटा मुक्त ॥२६॥ शेठ अदो ने भगो भाविक, कृष्ण केशव जाणी वणिक। भक्त हीरो मेघो मुळचंद, नान-चंदादि वणिकबंद ॥२७॥ द्विज अजो जेठो शिवो मोनो, सोनी धनो भगत प्रभुनो । भक्त लाघो मुळो भावसार, अमरशि कंसारी उदार ॥२८॥ मस्ति आदि भक्त बिजा बहु, सतसंगी छे खामिना सहु। रहे बोटाद गाममां वासे, भ्रुल्ये न बेसे नास्तिकपासे ॥२९॥ शेठ पीतांबर रहे अलाउ, हरि भजि लिघो मोटो लाउ। राजी भीमो ने वाघो सुतार, खसमां भक्त भोजो छवार ॥३०॥ गाम बगडे जसो खाचर, बाइ बिग आदि उजागर। भक्त जालिले पांची कुंभार, करी सतसंग तयों संसार ।।३१।। सुंदर भक्त सुंदरिया-णामांइ, खाचर डोसो वसतो केवाइ। शेठ हेमो वनो हीरो भक्त, भगो गलो ने मोरार मुक्त ॥३२॥ कहीए कपुरादि तुलाधार, भक्त एक नानजि सोनार। भक्त क्षत्रि दादोजि सबलो, हरिजन मलो मरुखलो ॥३३॥ रामदास आदि जन जेह,वसे सुंदरियाणामां तेह । देवजाति मोड बनुभाइ, जेने प्रभ्र वहाला उरमांइ ॥३४॥ हरि-भक्त गणेश छवार, वसे पोलारपुर मोझार । द्विज गगो क्षत्रि जीवोभाइ, हरिजन ए जसकामांइ॥३५॥ द्विज देवो शेठ पुंजोभाइ, एहादि जन अणियाळिमांइ। भक्त कणवि घेलो छे नाम, वसे जन ते वावडी गाम ॥३६॥ कोळी भक्त नाजो एक कावे, भजे हरि रहे बुवावावे । क्षत्रि भीमोभाइ भोजोभाइ, देशलजि रहे वागडमांइ ॥३७॥ ञा दामी वसराम कुंभार, वैश्य राम मोरशिया

मोशार। सोनी भक्त नारायणजि नाम, भक्त कानजि शा जीव-राम ।।३८।। एहआदि रुडा हरिजन, वसे कंथारियामां पावन । राणपुरे रहे विप्र संघजि, कयों सतसंग कुसंग तजि ॥३९॥ संघो रणछोड रवो ने रुप, पुंजो लखमण कणबी अनुप । कोळी हरजी ने घेलो भक्त, हिरादास वैरागि विरक्त ॥४०॥ द्विज नारायणजि रामबाइ, भक्त एह आदि लोयामांइ। निक भक्त नागडके गाम, शिरोमणि खाचर सुरो नाम ॥४१॥ कालो माणशियो नाथो-भाइ, रुडां शांतिबाइ वलुवाइ। काठी भक्त भीमो जेठो नाम, एहादि रहे नागडके गाम ॥४२॥ चोकडिये सतो रुडो नाडोदा, जेने श्रीहरि साथेछे मोदा। गाम कोरडे कुंपो खाचर, हरिमक्त भलो धुनिधर ।।४३।। भक्त कणबी शामजि नाम, भजे हरि चोर-विरे गाम । पिपरिडए भट भाणजी, करी जित नारायण भजि ॥४४॥ भक्त भीमो मालो हाथसणिये, नाजो खाचर मोडुके गणिये। शेठ शामजि वसे विछिए, कलो सइ कडुकामां कहीए ॥४५॥ गोखलाणामां जीवो छवार, प्रश्च भजि थयो भवपार । भक्त मोको खाचर माणशियो, शवी छवार खंभाले रीयो ॥४६॥ बाबरामां द्विज गंगाराम, खाचर उनड करियाणे गाम । भक्त शेठ जुठो निलवले, भजे जगपति मति न चळे ॥४७॥ इरिजन अरजण मावजि, आशा असत त्रिकमे तजि । सारां हरिजन सीनबाइ, राजगर रायपुरमांइ॥४८॥ कोटडे प्रेम पुतलिबाइ, प्रीत विणिकनी प्रभ्रमांइ। कालासर रहे पातोगर एक, कुंदणिमां वसतो वणिक।।४९।। भक्त हादो रामो उकोगर, कणवी भक्त सुरो जसापर । भक्त ठकर लखमण मोनो, प्रागो ने वीरो भक्त प्रभुनो ॥५०॥ हरिजन अजु मुलिबाइ, वसे गाम पिपलियामांइ।

द्विज गंगेव ठकर राम, एहादि जन नडाळे गाम ॥५१॥ सतापर विपर फ़ुलजि, लिघो लाव भगवान भजि। कणवी भक्त छे रामजी नाम, काजु जन कमढिये गाम ॥५२॥ क्षत्रि ग्रुलुजि ने जगुभाइ, बाइयोमां आछुवा लखुवाइ। शेठ डोसो जुठो हंसराज, हरि भजि कर्सुं निजकाज ॥५३॥ एहआदि बीजा बहु जन, वसे बंधिये भक्त पावन । मोटा भक्त छे मांडवामांइ, वैक्य रामजी ने राधाबाइ।।५४।। उमरालिये राजो आहीर, हरिजन मन अति धीर। क्षत्रि तोगो हको हरिजन, शा कमळशि गोवरधन ॥५५॥ इंद्रजि आदि वणिकभाइ, एक भक्त छे प्रेमी मेराइ। भीम विरम वसु खवास, भज्या हरि तजि जगआश ॥५६॥ खोजा अभराम वश-राम, भजि नारायण कर्यु काम । द्विज एक देवराम भाइ, जन आणदि लाडिकवाइ ॥५७॥ वणिक एक अगरवाइ, एहादि जन सरधारमांइ। भक्त चावडा भीम जेसंग, जेने साचो लाग्यो सत्तसंग ।।५८।। हरिजन चारण अदोभाइ,एहादि भक्त भाडुइमांइ। अजो लखो कृष्ण जन काको, जेठो मलार शवो भक्त पाको ॥५९॥ वसतो कानो दुदो नाडोदा, रहे रामपुरे मनमोदा। चारण सामत ग्रुख कावे, कोळी तेजो रहे चितरावावे ॥६०॥ कणबी भक्त छे गोविंदभाइ, भजे हरि साजिंडयालिमांइ। भक्त गर भीम वशराम, रुडो राणो ने राघव नाम ॥६१॥ सतसंगी शूरा शिर विना, जेणे तगडि जमनी सेना । मात सुत लइ चाल्यो संग, राणे राख्यो गोलिडामां रंग ॥६२॥ काथड ओढो वालेरो जन, काठी भक्त वसे फाडदन । कुवाडवे कपुर वणिक, भक्त हिरो ने मेवो छ एक ॥६३॥ एहआदि छे भक्त अवार, कवि कोड्ये नोय निरधार । कहिकहि थाके कविराय, अथाहनो थाह केम

थाय ॥६४॥ अगणित अपार अलेखे, ते आवे केम लखतां लेखे। मोटो प्रताप प्रभुनो जोइ, करे सतसंग सहुकोइ ॥६५॥ देखे अलौकिकपणुं अति, वळी जणाय प्रकट प्रापति । नहि मोक्षपदनी उधार, आवे तेडवा अंत्ये मोरार ॥६६॥ विजा अनेक परचा थाय, सहु जन जाणे मनमांय। जित्या काम क्रोध लोभ मोह, न होय एक ते देखो समोह।।६७।। एवं समिक्ष सत्संग करे, खामिसामा साचा पग भरे। तजि जुठा जगतनी आश, थाय प्रकट प्रभुना दास ।।६८।। तेनो आवे केम गण्ये छेक, लखिये एक ने रहे अनेक। मेंतो मनमां कर्यो विचार, न थाय नामनो निरधार ॥६९॥ पूर्वछायो-उत्तरपंथ आकाशनो, कोइ पामि शके नहि पार । अंडज उडि उंचां चडे, पण अंबर रहे अपार ॥७०॥ इति श्रीम-देकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तचिंतामणिमध्ये काठियावाड्यदेशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने पनरमुं प्रकरणम् ॥११५॥

पूर्वछायो-हवे भक्त हालारना, वळी कहुं कच्छ समेत।

गुद्धमने जे सांभळे, तेने थाय हरिमां हेत ।।१।। मिठाबोला ने

मोबति, हैये हेत अपरमपार। प्रीत प्रकट प्रभुशुं, करुं तेना नाम

उचार।।२।। चोपाइ-भक्त गुणवंता छे गोंडळे, भजे प्रभु मन निर
मळे। पुरपति क्षत्रि हठिभाइ, करी हिर भजिने भलाइ।।३।। क्षत्रि
भक्त डोसोभाइ कहीए, एहआदि बिजा बहु लहीए। जीवराम

प्रागिज सुतार, भक्त जोधो ए जाति उदार।।४।। विप्र जेठो मिठो ने

भाइजि, भक्त शेठ रुडो राघवजि। कडिया रतनो अजो नारायण,

हरभम हरिपारायण।।५।। वाघो वालो कडवो कुंभार, अर्जण
देविश लखो उदार। नाथो वालो छवार जेराम, सइ गगो नारा-

यण नाम ॥६॥ आंबो कानो जन जणसाळी, शेख जीवण जवन षळी। एहआदि छे जन अपार, रहे गोंडळ गाम मोश्नार।।७।। भक्त भाटियो हीरो छे नाम, हरिजन द्विज प्रजाराम। एक वेरागि तुलसी-दास, एहआदिनो मोवैये वास ॥८॥ नथुजि उदोजि जेठिभाइ, रुडा मक्त कहीए क्षत्रिमांइ। भक्त हरिज झिणी कुंभार, विप्र गणेश लालो उदार ॥९॥ एहआदि जे जन कहेवाय, वसे गाम नागडका-मांय। देवो ओझो कणबी करमिश, भजे हरि वेरिगाम विश्व।।१०॥ क्षत्रि भक्त डेरिये मानजि, वडारे वोरो वालो जनजि । काजु भक्त कालावडमांइ, खतरि ते जादवजिमाइ ॥११॥ अतिउदार हेतु होशिलो, जेना भाइ केशवजि वालो। क्षत्रि भक्त खिरसरा-मांइ, लाखोजि ने हरिजन बाइ ॥१२॥ कणबी शवदास रूपां-बाइ, क्षत्रि लाखोजि रहे वडामांइ। हडमतिये मगो वणिक, सुखपुरे दमो भक्त एक ॥१३॥ क्षत्रिभक्त कायोजि लैयाळे, वैश्य रतनो जीवो इटाळे । हरजि वीरजि भक्त सुतार, जन रामजि हीरो कुंभार ।।१४।। क्षत्रिभक्त कांथडजि वळी, एह आदि रहे वण-थळी । हरिजन सोनि राघवजि, लिधा पुंजे भगवान भजि ॥१५॥ भक्त एक छे लाघो सुतार, वसे वणथळि मीटि मोझार। क्षत्रिभक्त रुडा जगुभाइ, घरे हरिजन नानीबाइ ॥१६॥ हरिभक्त रूपाळिबा नाम, एहआदि भक्त मेडिगाम। मोडा गाममांहि मोटा भक्त, क्षत्रि रणमलजि विरक्त ॥१७॥ दाजि मोनजि ने बापुभाइ, भक्त फलजि सुजांजिबाइ । जलो रावळ रुपाळिबाइ, एहआदि भक्त मोडामांइ।।१८।। भक्त मेघो नारण नानजि, मुळजि वीरजि ने रामजि । वसतो लाघो सुतार लहीए, हरिभक्त लाडुबाइ कहीए ।।१९॥ फलजि मनुजि हरिजन, क्षत्रि कुळे भक्त पावन । सोनी

गोवों अजोभाइ कहीए, एहआदि छे भक्त अलैये ॥२०॥ क्षत्रि माइजि राघोजि दाजि, विप्र भक्त वालो जादवजि । लाल राम वैश्य हरिजन, वसे शेखपाटमां पावन ॥२१॥ कडिया भक्त उको ओघो जाणो, जीवो जेराम डायो प्रमाणो । एहआदि जे भक्त सुंदर, भजे हरि रहे नवेनगर ॥२२॥ लाली कुंभार अरजण सइ, भजे प्रभु जोडियामां रइ। मला भक्त छे भादरे गाम, सुतार वसतो भाइ राम ॥२३॥ वसराम मावजि रणछोड, नारायण राजो जन जोड । गंगादास ने शवजिभाइ, हरिजन एक हरिबाइ ॥२४॥ एहआदि छे भक्त सुतार, देवो डोसो कणबी उदार। द्विज मुळजि सुंदरजिभाइ, क्षत्रि कानजि ने नथु नाइ॥२५॥ एहआदि जे भक्त अपार, वसे गाम भादरा मोझार। हीरो इंगर भक्त सुतार, क्षत्रि रवो केसिया मोझार ॥२६॥ हरिजन प्रेमजि वणिक, धोळ मध्ये ए भक्त छे एक । भक्त नायो कानजि उदार, वेली गोवी मांडण कुंभार ॥२७॥ जेराम ने एक राजबाइ, शा देवशि धूडकी-टमांइ। भक्त कणबी लखमिदास, गर रणमल घुनडे वास ॥२८॥ आमरण्यमां आणदिबाइ, जेनी त्रीत अति प्रभुमाइ । द्विज भक्त गोबिंदजी मेले, भक्त बजो बोरिचोरेबेले ॥२९॥ क्षत्रि भक्त छे बेचरमाइ, आसी भाइजि बगथला मांइ। कणिब गंधेश ने मानुबाइ, प्रेमिभक्त पिपळिया मांइ ॥३०॥ वागडदेशमां वांढियुं गाम, तियां भक्त ब्राह्मण पांची नाम। लाथी रामी भरवाड जोड्य, लुवार रणमल चितरोड्य ॥३१॥ मक्त ठकर कचरो नाम, पद्मसि आदि आधुइ गाम। रामजि त्रिकम वसराम, भक्त छवाणा चोबारि गाम ॥३२॥ बाइ एक मोटां हरिभक्त, जेने जुढ़े थइ गयुं जक्त। भक्त मनजि देवो छवाणा, कंथकोटे ए भक्त कहेवाणा

॥३३॥ भक्त वाघो ने पांचे ठकरे, भज्या हरि गाम मणफरे। ठकर रामदास ने कचरो, भक्त मुळिज ज्ञा वाघो खरो ॥३४॥ जेठो जेराम कर्मण छवार, एहआदि भचाउ मोझार । क्षत्रिभक्त लाधोमाइ कहीए, अदोभाइ कल्याणिज लहीए ।।३५।। रामसिंह रायधण जेह, जेतमाल आदि जन तेह। मोटा भक्त एक मान-बाइ, जेने प्रीत अति प्रभ्रमांइ ॥३६॥ बाइ बाईजि करणिबाइ, भक्त एक मेघराजभाइ। एहादि जन कहीए अपार, भक्त रहे **धमडका मोझार ।।३७।। हरिभक्त सुतार वश्चराम, एहादि जन दुध**इ गाम । विश्व भक्त जेठो केशवजि, सतसंगी सुतार रवजि ॥३८॥ भक्त ठकर केशवजी नाम, एहादि रहे चांदराणि गाम। मावजि मुळजि ने वालजि, भाणिरे खोखरे हरि भजि ॥३९॥ द्वित भक्त कचरो छगन, रुडां राजबाइ हरिजन । मक्त जेठि खिमजि संघजि, वसे अंजारमांइ वालजि ॥४०॥ भक्त उकोशा आदि कहे-वाय, बसे तेतो गाम तुणामांय । द्विज पुंजो देवेश्वर कहीए, सुतार पुरुषोत्तम लहीए।।४१॥ एह आदि जे जन कहेवाय, वसे गाम ते **ग्रंदरामांय ।** क्षत्रि भक्त एक मंकुबाइ, रहे कालाघोगा गाममांइ ॥४२॥ भक्त शेठ रतनजि नाम, एहादि जन जरफरे गाम। भक्त सुतार छे मेघोभाइ, हरिजन माता मेघबाइ ॥४३॥ देवशि टोप-णादि खतरी, हरि भजि गया भव तरी। भक्त छवार छे वश-राम, सोनि लालो राघवजि नाम ॥४४॥ शा सुंदरजि चांपशि-भाइ, एहादि जन मांडविमांइ। मेपो थोभण भक्त सुतार, कार्नु-बाइ ने जीवो उदार ॥४५॥ इन्छे सहित भक्त पावन, वसे डोण्य गामे हरिजन। हरिभक्त दामजि सोनार, वसे गोधरा गाम मोझार ॥४६॥ द्विज मुळजि ने दयाराम, एहादि जन कोटडि गाम। भक्त

सुतार भीमजि रवजि, हरिजन ते हरिभमजि ॥४७॥ भक्त बाइ जेठि अजुनामे, वसे ते काळातलाव गामे। घणेणिये मक्त छे रवजि, थयो सुतार पार हरि भजि ॥४८॥ नेतरामां शवजि सुतार, कर्यो सत्संग समझि सार। नोंघो नागजि भक्त मावजि, डोसो गोपो सुतार संघजि।।४९॥ प्रेमी प्रेमवाइ मानबाइ, मोटा भक्त ए सुतार मांइ। सेजपाल शापतरामल, एहादि भक्त तेरे अवल ॥५०॥ भणसाळी जेठो दामोदर, कणिब केशव कमो ठकर । एहआदि मक्त बिजा कैये, भजे हरि रहे गाम धुफिये ॥५१॥ शेठ हंसराज हरिजन, भक्त फुछजि जाति यवन । भक्त भणसाळि हमीर नाम, एहआदि भक्त रुवेगाम ॥५२॥ हरिजन बाइ देवु नाम, वसे सुतार वथोण गाम । क्षत्रि भक्त काकोभाइ कहीए, एहादि जन मजले लहीए ॥५३॥ भक्त सुतार छे पुंजोभाइ, सइ पुंजो देसलपुर मांइ। कणित्र भक्त लाधा आदि खरा, यसे जन गाम सामतरा ॥५४॥ द्विज नागजि प्रागजि मछ, सामजि ने केशवजि भछ। नाथो तेजिश सुतार शाम, कणिब प्रेम लखु वशराम ॥५५॥ क्षत्रि अदो-भाइ कमोदास, भक्त मोटा मानकुवे वास । कणवि भक्त छे मावजिभाइ, एहआदि नारायणपुरमांइ॥५६॥ कृष्ण रतनो कणिब कहीए, बहु भक्त बळिथे लहीए। क्षत्रि सदाबाइ हरिजन, द्विज लालजि जगजीवन ॥५७॥ कणबि भक्त वशराम नाम, एहआदि जन केरे गाम। कणिब हरिजन वालबाइ, भजे हरि मेघपुरमांइ ॥५८॥ सारा सत्संगी सरलिमांइ, मोटा मक्त छे मानजिमाइ। आसो विरिज रामुं रतन, कणिब रामपुरे हरिजन ॥५९॥ कणिब भक्त छे कचरी नाम, भजे हिर रहे दैसरे गाम । हरिज कानिज राम सुतार, डोसो भक्त धिणोइ मोझार ॥६०॥ भक्त सुतार बाइ

लखमी, पुनडिये पीतांबर प्रेमी। मावजि लखभीर सुतार, मालबाइ गजोड मोझार ॥६१॥ रामजि ने कुरजि सुतार, क्षत्रि रासोजि भक्त उदार । एक हरिजन जिजिबाइ, एहादि जन बंद-रामांइ ॥६२॥ भला भक्त कहीए भ्रुजमाई, सारा सतसंगी बाह माइ। भक्तः नागर गणपतराम, हरिराम वलमजि नाम ॥६३॥ द्विज नरसइ सुत भाणजि, लक्षमि दोये लिधा हरि भजि। इरिजन छे लेरखिवाइ, प्रीत्य नविन प्रभुजिमांइ ॥६४॥ सूर्यप्रभा जेठि ने भवानी, एहादि भक्त ब्राह्मण नानी। नागजि सुत हीरजि सुतार, सुंदरजि सनेहि अपार ॥६५॥ धनजि हरजि जीव-राम, राघवजि रणछोड नाम । कुरजि आदि कहीए सुतार, पुंजि अमर प्रेमी अपार ॥६६॥ सेज जमनां ने हरबाइ, मोटा मक्त ए सुतारमांइ। सोनिमां सतसंगी गोमति, मोटी मुलिनी भिल भगति ॥६७॥ मेता नथुस्रुत शिवराम, हरजीवन बेन लाधि नाम । महामुक्त दशा ए सहुनी, भक्त भोजा आदि वह सोनी ।।६८।। ठकर उका वे अछैयो कहीए, हरिभक्त वलभजि लहीए। भगवानजि मनजि भक्त, रामदास ने मौरार मुक्त ॥६९॥ रत-निश्च डोसो हरिजन, गंगाबाइ छत्राणा पावन । मक्त जीवराम लीलाधर, मुळजि आदि जन राजगर ॥७०॥ धन्यधन्य जेठि गंगाराम, भक्तशिरोमणि निषकाम । सुत सामजि मुळजिभाइ, एहआदि जन जेठिमांइ।।७१।। क्षत्रि मक्तं एक डोसोभाइ, हरिजन विजां देवबाइ। मक्त रामजि अभु कल्याण, एहआदि जणसाळी जण ॥७२॥ एहादि जन विजा अपार, रहे भुजनगर मोझार । सत्तसंगे रंगे रातां रहे, ग्रुखे खामिनारायण कहे ॥७३॥ पूर्वछायो-धन्यधन्य ए हरिजनने, जेना पुण्यतणो नहि

पार । आणि हेत अति उरमां, भजे नारायण नरनार ॥७४॥ अति दढाव अंतरमां, निह काम क्रोध लोभ मोह । शोध्ये न मळे एक जे, एवा सतसंगिनो समोह ॥७५॥ सुणि नाम एह अवणे, जे मनन करशे मन। सकळ कारज सिजशे, वळी थाशे परम्पावन ॥७६॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजामंदस्वामिशिन्धनिष्कुलानंदसुनिवरिचते भक्तिंतामणिमध्ये हालारदेश तथा कच्छ देशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने सोलमुं प्रकरणम्॥११६॥

पूर्वछायो-सुंदर भक्त सौभीरदेशे, जेनां अति मन उदार । तन मन धन तुच्छ करी, हरि भिज उतर्या पार।।१।। एवा जन उत्त-मनां, सुणो नाम सर्वे कान। लालच्य लागि लखवा, जेने मळ्याछे भगवान ॥२॥ चोपाइ-रुडा भक्त रहे वढवाण, भक्त बेचर द्विज सुजाण | देवकुष्ण लाघो अंबाराम, द्विजभक्त अमृत अकाम ॥३॥ पुंजो वसतो भक्त सुतार, खोडो गुलाब कणवी उदार। क्षत्रि फइबा ने कलबाइ, लखु वणिक वढवाणमांइ ॥४॥ द्विजमक्त छे गोविंदराम, ओझो पांची रहे वाघेले गाम । हरिजन कोळी हाजो कहीए, भक्त नळिया गाममां लहीए ॥५॥ भक्त भद्रेश्वरिये खर्छंद, शेठ अभिचंद सुरचंद । वैश्य सुंदरिज अविधळ, मोटा मक्त मन निरमळ।।६।। सारा भक्त रहे सिथेगाम, द्वित बेचर मालजि नाम। शा गणेश आणंद भावसार, एहादि जन सिथा मोझार ॥७॥ कणिब वणारिश पीतांबर, सारा सतसंगी ए सुंदर। द्विज जेराम ने लाधिबाइ, जन रहे देवचराडिमांइ ।।८।। रुडा भक्त लखतरे लखो, द्विज भवानि वैश्य हरखो । खरा भक्त छे खेरवे गाम, कणबी गणेश नरसि नाम ॥९॥ कणिब अर्जुन द्विज भीमजिं, श्रात्र जेठे लिधा हरि भजि । एहादि जन रहे बापोदरे, भलि भक्ति प्रश्च-

जिनी करे।।१०।। अलंदरे द्विज जेठो नाम, क्षत्रि वर्गे भक्त बालागाम। कणिव भक्त जीवो वशराम, गांगो खिमो ने बेचर नाम ॥११॥ द्विजभक्त भवान भाळिये, एहआदि जन अंकेवाळिये। कणिब गणेश लाघो कहेवाय, सारा भक्त ए सरवाल्यमांय ॥१२॥ मोटा भक्त छे मेथाण गाम, द्विजभक्त छे गोविंदराम। भगवान जादवजि भाणी, देवराम जीवराम जाणो ॥१३॥ श्रत्रि पुंजोजि ने काकोभाइ, रुडां हरिजन जिजियाइ। हलु मालो क्षत्रि हरिजन, हवे कहुं कणवि पावन ॥१४॥ जीवो कृष्ण ने प्रामो पंचाण, गोवो हिरो मावो मलो जाण्य। नाथो वेलो केशवजी भाणो, हरिभक्त कोळी एक राणी ॥१५॥ एहादि जन मेथाणमांइ, भराडामां मुक्त मोतिबाइ। हरिभक्त द्विज वजेराम, तेह लखिये छवाणे गाम ॥१६॥ द्विज माधो ने त्रिकम सइ, भजे हरि दुदापर रइ। द्विज राघवजि माधो जाण, पीतांबर केशविज कल्याण ॥१७॥ भक्त ब्राह्मण अवल-बाइ, ज्ञा राघविज भ्रांगधरामांइ। गणेश ने रवजी पटेल, भक्त अंकेवाळिये वसेल ॥१८॥ कणवि भक्त वे देवा रतना, पांडरवे भक्त ए प्रश्चना। कणिब मालो पीतांबर कहीए, धन्य भक्त घोलिगामे लहीए ॥१९॥ द्विज भक्त शिवो नथुनाम, जादु कुवेर नाथिज राम। पखो कृष्ण मकनजि कहीए, एहादी भक्त ब्राह्मण लहीए ॥२०॥ सोनि भक्त नागर कुवेर, अमरशिये कर्यो जग झेर। एहादि जन बिजा अपार, वसे हळवद गाम मोझार ॥२१॥ श्रति हरिजन हठिभाइ, रुडां जन एक रतुबाइ। शा वेलजि भगत सुंदर, कणिब गणेश नान ठकर ॥२२॥ सोनि भक्त ठाकरशि नाम, एहादि जन देवलिये गाम। भक्त कणिब गोविंदभाइ, जन रहे ए जेतपुरमांइ ॥२३॥ रुडां भक्त रामबाइ नाम, सतसंगी ए सनाळे गाम ।

रंगपुरे द्विज सुंदरजि, लिधा भगवाने हरि भजि।।२४।। वेलो वाली कणबि कहेवाय, खरा भक्त खाखरेचि मांय । निक भक्त द्विज नंदराम, जन वसे वेजलके गाम ॥२५॥ भक्त कणिब कानो कहेवाय, तेह रहे फागशिया मांय। बेला गाममां द्विज महादेव, जेने हरि भज्यानी छे टेव ॥२६॥ एक हरिजन धनुबाइ, क्षत्रि भक्त ए मोर्श्वमांइ। द्विज जीवराम ने हरजि, पुरुषोत्तम ने मकनजि ॥२७॥ सोनी सवजि पीतांबर नाम, वसे भक्त वांकानेर गाम । रुडो भक्त बेचर सुतार, वसे ढोलमां भजे मोरार ॥२८॥ द्विज हर-देव हरिशर्ण, वसे भक्त एह वालाशर्ण। द्विज कुबेर लखमण ठार, मोटा भक्त ए दलडि मोझार ॥२९॥ चौरविरमां नाजो खाचर, भज्या हरिने तज्युं अवर । थान गाममां विष्र बैकुंठ, सोनि कमे कर्यो जग जुठ ॥३०॥ भक्त खाचर सतसंगी सुरो, वसे मेसरिये जन पुरो । एक खाचर उनड कहीए, हरिभक्त ए वसे ओरिए ॥३१॥ हरिजन हिरो वशराम, जन कणबी गोसल गाम । क्षत्रि मोटीबा लाघो सुतार, सारा भक्त सायला मोझार ।।३२।। राम कृष्ण जे कृष्ण नथुजि, एह द्विज सुतार मावजि। क्षत्रि भक्त एक फुलिबाइ, एहआदि जन मुळिमांइ ॥३३॥ सारो भक्त छे ओधो सुतार, हरिजन हरजि छुवार । मोटो भक्त कुंभार मादेव, रहे टिकर्ये भजे वासुदेव ॥३४॥ राघवजि धनजि गोपाळ, एह भक्त ब्राह्मण द्याळ। एक क्षत्री जुठो जन नाम, एह दास दिगसर गाम ॥३५॥ कणिब प्रेमजि जीवो छवार, भक्त रहे दाणावाडा मोझार । जेने प्रकट मळ्या परमानंद, तेतो जन थया जगवंद ॥३६॥ ज्ञा मुळजि मंगळजि कहीए, रुडो भक्त सारवजि लहीए। एक भक्त व्याघ सगराम, एहादि जन लिंबलि गाम ॥३७॥

रघुजि शंघजि दिज जाति, मलो जेसो हीरो वैश्य नाति। मक्त शेठ मानसिंघ नाम, एह जन जसापर गाम ॥३८॥ शेठ दिपो ने खत्रि गणेश, मेघो सइ हरि भने हमेश। भक्त अवल आंबो विपर, एह आदि जन रहे चाणपर ॥३९॥ तेजो दलो रुडो रयो जाणो, सगो मेघो नाडोदा प्रमाणो । ठार जीवा आदि विजा जन, रहे रामपुरे ए पावन ॥४०॥ खरा भक्त खोलडियाद गाम, जन सुतार हंसराज नाम । क्षत्रि खेंगार रामो हमीर, मुलो मांडण रुडो सुधीर ॥४१॥ दलो कलो नारायण कहीए, धनो राजो संघो वीरो लहीए। जीवो गोकळि द्विज नंदराम, एह भक्त खोलिडियाद गाम 118२।। देव जाति भगत पंचाण, कणवी मावजि भक्त प्रमाण । राठोड मावो गोकळि हमीर, गुंदियाले एक भक्त सुधीर ॥४३॥ द्विज देवराम ने वाघजि, भक्त गोपाळिज ने मेघजि । भक्त खतरि छे जेठो नामे, एहादि जन वसति गामे ॥४४॥ क्षत्रि भक्त रतनजि नाम, रामो माबो लालियाद गाम। वडोदमां द्विज पीतांबर, नाथो प्रागो छे सइ सुंदर ॥४५॥ भक्त विष्णुदास छे वैरागी, रहे कारियाणि कुसंग त्यागी। क्षत्रि भक्त नारायणनाम, भजे प्रश् रहि दुवे गाम ॥४६॥ टिंबे भक्त क्षत्रि रहे अजो, रामो मुलो वसतो ने भोजो। खारवे भक्त कणिब कृष्ण, धनो भगो लालो लखो प्रष्ण ।।४७।। मेमके मक्त कणवि लालो, जेठो लाघो रणछोड मालो। राजो रह्नो आंबो सतवारा, क्षत्रि फलजि आदि भक्त सारा॥४८॥ रुडा भक्त रहे लिंबडि गाम, द्विज निरमेराम नंदराम। द्विज प्रुळजि भक्त भूधर, द्विज भक्त कहीए कामेश्वर ॥४९॥ सोनि रणछोड जीवण कानो, किको लवजि कृष्णजि मानो। शेठ विरजि आदि अपार, मक्त बसे लिंबडि मोझार ॥५०॥ द्विज भगवान अंबाराम,

क्षत्रि गोदडजि चुडेगाम। क्षत्रि भक्त गोपाळजि गणिए, भक्त शेठ पदमशी भणिए।।५१।। द्विज भक्त एक देवराम, एह जन नागनेश गाम । क्षत्रि बापुजि इंगरजि नाम, मक्त भोजोजि रहे मलगाम ॥५२॥ द्विज मुळजि जगजीवन, अंकेवाळिये ए हरिजन। द्विज भक्त कृष्णजि कहेवाय, शा खुशाल मोजिदड मांय ॥५३॥ क्षत्रि मक्त कायोजि जेठिजि, भेंशजाळे रहे भक्त सजोजि। भक्त एक सुखराम विपर, क्षत्रि मनुभाइ मिणापर ॥५४॥ कणवि भक्त धनजि छे नाम, एहादि जन साउके गाम। सोनि कसलो गाम समले, भजे भगवान मन भले।।५५।। क्षत्रिभक्त छे भगवानभाइ, एहादि जन त्राडिया-मांइ । द्विज प्रेमबाइ लाघो ठार, एह भक्त मोइका मोझार ॥५६॥ द्विज भाणजि कसलो कहीए, एह भक्त पाणसिणे लहीए। भक्त लाघो सुंदर सतवारो, रहे रलोल्ये सत्तसंगी सारो ॥५७॥ मोजो कोळि ने धनो कुंभार, एह भक्त बाबिल मोझार। हरिजन नागिज शंकर, वसे जांबु गाममां विषर ॥५८॥ क्षत्रिभक्त वीरो राजोभाइ, एह रहे लक्ष्मीसर मांइ। द्विज शिवराम विठलजि, कणिब मेघो ने क्षत्रि हमजि ॥५९॥ मक्त शेठ भीमी मोति नाम, एहादि जन शियाणि गाम । जेठिजि अदोजि अखोभाइ, पुंजो भीमजि भक्त कहेवाइ ॥६०॥ भाराजि आदि क्षत्रि भणिजे, केशुवा हरिजन गणिजे। कलो भगो जीवो वीरो नाम, कोळि भक्त ए रहे तावी गाम ॥६१॥ जेजे लख्यो में भक्तसमाज, तेने प्रकट मळ्याछे महाराज। केशुबा क्षत्रि जाल्यमसिंगे, भज्या हरि अनुवाये उमंगे।।६२॥ द्विज भक्त प्रागजि रामजि, बाइ बाछ ने शेठ दामजि । एइआदि ते भक्त छे कइ, भजे हिर देवलिये रइ।।६३।। द्विज ईश्वर लखमिराम, भक्त गांगजि भडवाणे गाम। क्षत्रि फलजि खेतोजि जाण, भक्त शेठ प्रेम-३० भ०वि०

जि प्रमाण ।।६४।। द्विज प्रुळजि ने नानबाइ, एह भक्त त्रमणिया-मांइ। कणवि भक्त कल्याणजि नामे, एह भक्त कहीए कडु गामे ॥६५॥ देवराज भगो मेघोभाइ, भक्त रुपो एक रयांबाइ । एहादि जन कणबि कहीए, भक्त भाविक कारेले लहीए ॥६६॥ भक्त वणामां चारण माव, भजे हरि करी मन भाव। द्विज भक्त कुबेरजि नामे, भजे हरि जेगडवे गामे ॥६७॥ द्विज डोसो व्रत पंच पाले, भजे प्रश्च वसे गाम गाले। कणवि भक्त कहीए नाम हरि, भलि भक्ति थले रही करि ॥६८॥ गांगो गोवो जेठो जन जेसो, वणारशि कहीए भक्त केशो। कणवि भक्त कहीए केशरवाइ, ओझो कृष्ण रहे रामग्रीमांइ ॥६९॥ आणंद उमेद चारण सहि, भजे हरि हेबतपर रष्टी। वासवे वित्र गलालबाइ, जेने प्रभुशुं सान्वि सगाइ ॥७०॥ भक्त खुवाणा रणछोड कृष्ण, शामजि ने श्रीहरिनुं द्रष्ण। भक्त कणांबे धनजि नामे, भजे प्रभु वसे वांडु गामे ॥७१॥ एहआदि भक्त छे अपार, न थाय नामनो निरधार । कहिकहि कहीए कियां सुधि, अपार पार न लिये बुद्धि ॥७२॥ पूर्वछायो-कोटि कवि कथी गया, वळी कथशे कोटानकोट्य । तोय हरिभक्तना, नामनी नहि आवे खोट्य ॥७३॥ प्रकट पुरुषोत्तम जियां, तियां ओधरे जन अपार। दर्श स्पर्श प्रभुतणे, पामे परमपद नरनार ॥७४॥ पशु पक्षी पृक्ष वेली, स्थावर जंगम जीव । जेने स्परश परब्रह्मनो, ते थाय सद्य बळि शिव ॥७५॥ एवां जीव ज्यां उद्धरे, तियां निरसंदेह नरतननुं। कोण करे परमाण कवि, एक जिमे एह जननुं।।७६॥ इति श्रीमदेकांविकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्तवितामणिमध्ये सौभीरदेशना हरिजननां नाम कहां पनामे एकसो ने सत्तरमुं प्रकरणम् ॥११७॥

पूर्वछायो-भाखु भक्त हवे भालना, जेनां अति निरमळ अंग। सत्य असत्यने ओळखी, वळी कर्यी जेणे सतसंग ॥१॥ अंतर त्यागी अतिघणा, जेणे सहजे तज्यो खाद। प्रीत करी परब्रह्मशुं, तजि जगतनो विषवाद ॥२॥ लेतां नाम ए जननां, मारे हैंये हरख न माय। कहुं संक्षेपे सांभक्रो, सुणि पाप प्रलय थाय ॥३॥ चोपाइ-क्षत्रि पुंजोजि बापुजि वर्सीमाइ, कायोजि अजुबा फुलिबाइ। शा त्रिकम डोसो रतनजि, कानजि कल्या-णजि गगजि ॥४॥ भक्त कणवि खिमो रतनो, घांचो वनमाळि यक्त प्रभुनो । मोनो ने बळी दामो छवाणो, एहआदि ते घोलेरे जाणो ॥५॥ दादो चारण शेठ ठाकरशी, भज्या हरि गोरासामां वसी । द्विज रुगनाथ ने त्रिकम, जगजीवन पुरुषोत्तम ॥६॥ द्विजभक्त कहीए मयाराम, एहआदि भडियाद गाम । क्षत्रिभक्त एक रुपोभाइ, काजु जन कादिपुरमांइ ॥७॥ वित्र वसतो जगो ओद्धवित, हिरित पुंजो शामों ने नाथित । द्विज रिक्यात गलालबाइ, क्षत्रि इठि इरि अजुभाइ।।८॥ कणबी मक्त हरजि लवजि, रणछोड ने सोनि हेमजि। भक्त मात्र छे एक बारोट, प्रेमिभक्त मावो परियट ॥९॥ एहआदि भक्त बाई भाइ, सारा सतसंगी गांफमांइ। क्षत्रिभक्त दादो देशलजि, देवबाये लिया हरि भजि ॥१०॥ देवजाति भक्त दादोभाइ, एहआदि ते पिपलिमांइ। देवजाति भक्त खिमराज, आवरदासे कर्यु निजकाज ॥११॥ भक्त सेसोबणार ने प्राग, हिंठ डोसे कयीं कुसंग त्याग । कोळिभक्त वासी अजोभाइ, वाघा वसतादि भक्त केवाइ ॥१२॥ देवजाति एक जिजिबाइ, कहीए भक्त कमियाळामांइ। द्विजभक्त ओद्ध-युजि कहीए, हरिभाइ पीतांबर लहीए ॥१३॥ पुरुषोत्तम नानजि

नाम, जेठो जादवजि प्रश्रुराम । मेघजि आदि भक्त छे भाइ, द्विजभक्त एक माणिबाइ ॥१४॥ कणबी भक्त जेराज देवजि, पछममां छवार भाइजि । क्षत्रि रुगनाथजि हरिजन, करे फेदरे हरिभजन।।१५।। द्विज नारायणिज जेठो जन, क्षत्रि गजोजि ए छे पावन। एहआदिक भक्त भणिये, खरां जन खसते गणिये ॥१६॥ गजो विसो रवो छे गढवी, देवुबाइ ने भगति भावी। क्षत्रि भक्त काकोभाइ कहीए, मानोभाइ हठिभाइ लहीए।।१७॥ जाइभाइ दुदोभाइ जन, भक्त मशरु आदि पावन। द्विजभक्त जगो शिवराम, कणबी रगनाथ रोजके गाम ॥१८॥ क्षत्रि सुजोजि वाथोजि नाम, चारण जेठो बनुबा अकाम। मक्त भीम ने आशो सुतार, खरा भक्त खरड्य मोझार ॥१९॥ चोकडिये हरखो हरि-जन, कोळी कुळे सहित पावन। क्षत्रिभक्त खेतोजि जामोजि, रुडा राजो भाइ ने खोडोजि ॥२०॥ होथिभाइ नानजिभाइ जाणो, शेठ जेठो गंगो परमाणो । द्विज हरिशंकर अंबाराम, एहादि जन शिक्षर गाम ॥२१॥ शेठ वजो ने नरसैदास, धनो सुतार धंधुके वास । क्षत्रिभक्त मुख भीम जाण, कणबी जेठो सुतार पंचाण ।।२२।। द्विज वीरो दलो दाजि कहीए, आणंदादि भक्त द्विज लहीए। भक्त कुबेर बेचर सोनी, खडोळमां रणाक एहुनी।।२३।। मक्त भाट छे बखतो नाम, रुडो भक्त छे रायके गाम। द्विज-भक्त छे तुळजाराम, बाइ गलाल अडवास्य गाम ।।२४।। इरिभक्त छे द्विज बेचर, भजे प्रभु रहे रंगपर। क्षत्रि हलुभाइ हरिजन, भक्त कमालपर पावन ॥२५॥ क्षत्रि रयो मेघो अरजण, वाघो जैसंग भीम सुजाण । कमो हरखो ने वशराम, द्विज कुबेर गांगजि नाम ॥२६॥ चारण भक्त भावि भगवान, जन रतनजि ने

आयदान । सोनि कृष्णादि भक्त कहेवाय, वसे गाम ते बलोस्य मांय ॥२७॥ सोनि भक्त गोकुळ हडाळे, द्विज केशवजि व्रत पाळे। द्विजभक्त छे हरजीवन, कोळि नानजि भक्त पावन ॥२८॥ चारण अजो रहे बगोदरे, भलि भक्ति प्रश्वजिनी करे। भक्त भाट आधार छे रुडो, गजो गोरो खरो जन खोडो ।।२९।। खत्रि मक्त चेलो नथु-माइ, कृष्ण सइ जवारदमांइ। देवजाति भक्त मधुबाइ, द्विज मेघजि सरगवाळा मांइ।।३०॥भक्त भरवाड सगराम, सारो भक्त ए समाणि गाम । हरिभक्त सोनि हीरो एक, नथु देवचंद दो वणिक ॥३१॥ द्विज मादेव दयाळ कानो, नथु खत्रि बोरुमांहि मांनो । राघवजि पीतांबर भाइ, ज्ञा मोरार मोटि बोरुमांइ।।३२।। काशीदास ने कृष्ण वणिक, क्षत्रिभक्त भाइजि छे एक। कहीए भक्त ते कृष्ण सुतार, वसे जन जाखडा मोझार ॥३३॥ हरिभक्त मछ्जि चारण, क्षत्रि तेजो पथी वटांमण। क्षत्रिभक्त सुजोजि बादर, खोडो जेठि अछ उजागर ॥३४॥ द्विज भगवान बल्लभ नाम, जगजीवन ने राजाराम। सोनि भक्त छे भूखणभाइ, हरिजन एक जीवीबाइ ॥३५॥ भक्त वोरो अशमाल एक, वसे कडके न मुके टेक। भक्त भाट छे राइजी नाम, वसे दास पिसावाडे गाम।।३६॥ क्षत्रिभक्त नाथो ने सजाण, भनो राजो वेजलके जाण। क्षत्रिभक्त गोपाळजि कहीए, भीमजी ने पथोभाइ लहीए ॥३७॥ हीरो हरभम भगवान, वसी बादर रुपो निदान। एहआदि क्षत्रि बहु भाइ, हर्जिया अजुबा अंबाबाइ।।३८।। द्विज पुरुषोत्तम वजेराम, भक्त चारण बापुजि नाम । ठार बेचर गणेश छुवार, एहआदि ते कोठ्य मोझार ॥३९॥ कणबी भक्त हरजि कहेवाय, भजे हरि वालथेरामांय । द्विजभक्त नारायणजि नाम, रेवाशंकर सेवकराम ॥४०॥ महाशंकर भक्त

भाणजि, शिवबाये लीघा हरि भजि। अवल पुतळिबाई वणिक, मञ्या हरि वजे प्रहि टेक ॥४१॥ एहआदि बाई माइ कइ, भजे प्रशु धोळकामां रइ । देवजाति कहीए डोसोभाइ, वसे भक्त ते वास-णामांइ ॥४२॥ कणवी जितवाई हरिजन, गाम चरोडे भक्त पावन। कणबी भक्त काशिदास नाम, वसे दास काशिदरे गाम ॥४३॥ क्षत्रिभक्त मोटा मोडभाइ, वसे गाम मोडासरमांइ। शेठ कल्याण खोडो भगत, अवल विछियाव्ये ग्रुगत ।।४४।। क्षत्रि नथु नारायण जिजि, गाम साणंदमां भक्त मूळजि। क्षत्रि बापु तेजो जेठिमाइ, मोटां भक्त फइबा ने बाइ ॥४५॥ फुलिबा फुलजिबा ने गली, द्विज राइ नाथी ने अवली। राजवाइ द्विज जीवराम, चारण भक्त हरिबाइ नाम ॥४६॥ भरवाड भक्त एक लालो, जेने लाग्यो सतसंग वहालो । रंगा मैयारि जवन सलाम, एहादि जनमछि-याष्य गाम ॥४७॥ क्षत्रिभक्त जीवोजि अलुजि, घोडजि कांघोजि ने दल्जि । दास कल्याण ने हीरबाइ, बेचर लुवार ददुकामांइ ।।४८।। भक्त सुतार कलो अमल, कोळी गणेश भक्त रहे थल। बनो दास दयाळ सोनार, कोळी कलु धोलेरा मोझार ॥४९॥ भक्त खवाणो रणछोड नामे, क्षत्रि वरसोजि डुभालि गामे। एक पुंजी सोनि हरिजन, भजे झांप्य गामे भगवन ॥५०॥ भक्त वर्णिक हरजीवन, करे मोरार हरिभजन। हरिभक्त कोळी रामबाइ, एहआदि बलदाणा मांइ॥५१॥ भक्त एक द्विज नंदराम, भजे हरि रहे मिटाल्य गाम । क्षत्रिभक्त कसियोजि कहीए, वेजो शादुल गोकळि लहीए ॥५२॥ शेठ नाथादि जन सुंदर, काजु भक्त रहे काणोतर। सारा भक्त छे शियालमांइ, शेठ माधो लाधो घेलोभाइ ।।५३।।जेठा आदि वणिक उदार, जेणे राजि किथाछे मीरार। क्षत्रि

जेठो भक्त जन गंगाबाइ, कणवी भक्त कोटेश्वरमांइ । अडाळज-मांहि छे चोधरी, तजि कुळधरम भज्या हरि ॥७॥ कणवी भक्त जेराम ने लाल, जेठो अविचळ पुर जमाल। कणबी हरखिज पुंजो माट, रहे उमारसदे तजि उचाट ॥८॥ देवजाति ते भक्त छे आसी, कहीए एहनो कलोले वासो। कणबी भक्त गंगादास कहीए, नरोत्तम वासणजि लहीए ॥९॥ भक्त काकुजि ने काशिदास, शिघरदासनी ओलामां वास। रुडां भक्त छे बाइ रतन, एह रहे ओले हरिजन ॥१०॥ भक्त सुतार जेठो केशवजि, कणवी काशि-दास ने रायजि। द्विज भवानिशंकरभाइ, शा झवेर धमासणा-मांइ ॥११॥ हरिभक्त कोळी वालो कहीए, जन गाम जलोदमां लहीए। खांट भक्त बादरजि जेह, रतुजि अरजणजि तेह ॥१२॥ हरिभक्त छे इवनबाइ, एहादि जन आद्रेजमांइ। जीवी रतन ने प्रभुदास, कणबीमक्त कोलवडे वास ॥१३॥ कणबी मक्त रामदास-भाइ, कुबेर वसन नानी बाइ। कणबीमक्त कहीए मोटिबाइ, भक्त भाट रघो बाजिभाइ ॥१४॥ द्विज रुप रिळयात नाम, ठार हरखो उनावे गाम । क्षत्रि भक्त रासोजि वखतो, भजवा हरि कर्यो **इंढ मतो ॥१५॥ ह**रिजन गलाल सोनार, द्विज दोली राइ भाव-सारं। एहआदि भक्त बीजा कइ, भजे प्रश्च पेथापर रइ ॥१६॥ इच्छो सकरो कसलो वळी, एहआदि जन जगसाळी। भक्त एक छे मीठो इंभार, वसे वासणगाम मोझार ॥१७॥ अमजे भक्त मुळो चोधरी, भजि हरि गयो भव तरी। पगी लालो छेलो हरिजन, भोभासणामां भक्त पावन ॥१८॥ कणबीभक्त कुवेर खुशाल, चांदिसणे ए भक्त विशाल। कणबी देवजि रहे गाम सोजे, भजे प्रभुजिने सुख मोजे ॥१९॥ इटादरे कणबी गणेश, करे भजन

हरिनुं हमेश। भक्त सुतार बेचर नाम, हरिजन कहीए गंगाराम ।।२०।। द्विज अंबाराम दुलभराम, शेठ भक्त सांकळा वे नाम। पीतांबर बेचर भ्रमखो, भाइचंदादि भावसार लखो ॥२१॥ कणबी-भक्त गणेश ने भगो, तेलि मुळचंदे मेल्यो दगो। धनो दलोदास छे चोधरी, मेली पाप भज्या आपे हरि ॥२२॥ क्षत्रि हिंदुजि छे हरिजन, एहआदि पुरुष पावन। द्विज कुशळ सोनां भावसार, एह बाइयो माणसा मोझार ॥२३॥ भक्त वीरो जीवण चोधरी, राठोड वणारशी भजे हरि। क्षत्रि रवोजि वोरो मियांजि, वसे वरसोडे कुर्संग तजि ॥२४॥ हरिभक्त किको भावसार, रहे लाखरोडा गाम मोझार । कणबीभक्त गोविंदजी नामे, जन बसे विजापर गामे।।२५॥ जन जणसाळी लखा धना, रहे राणासर भक्त प्रभुना। हरिजन प्रागजि छवार, भक्त रहे सिंघपर मोझार ॥२६॥ कणबीभक्त दयाळजि जन, जेणे बहु जीव कर्या पावन । सतवारा प्रागिज ने जीवो, रेवो सांकळो ने भक्त देवो ॥२७॥ हरिजन वजिबाइ एक, जेठी वखत वजि वणिक। नंदबाइ रिक्रयातबाइ, एहादि जन विजापर मांइ ॥२८॥ हरिभक्त द्विज पीतांबर, कहुं कणबीमक्त सुंदर। कुबेर तुळसी ने रामजि, जीवण नरसै शंकर शामजि ।।२९।। कल्याण जन रतनबाइ, भक्त एक कणबी कुल-मांइ। हेमचंद रामचंद जन, भावसार ए भक्त पावन ॥३०॥ हरि-जन छे जगो सुतार, द्विज मार्चु विहार मोझार। आशाराम मोति भावसार, शा अंबाराम भक्त उदार ॥३१॥ भक्त ताराचंद नंद-राम, भावसार मार्नु सांकळी नाम । कणबी भक्त हरिभाइ कहीए, क्षत्रिभक्त जलोभाइ लहीए।।३२॥ भक्त द्विज हुलास छे एक, भजि हरि तजी नहि टेक । एहआदि हरिजन जेंह, वसे

गाम गेरितामां तेह ॥३३॥ हरिजन देवो सतवारो, गाम गवाडे भक्त ए सारो । द्विज धनजि ने रामबाइ, भक्त प्रश्चना पामोल्य मांइ।।३४।। भक्त वणारशि रायचंद, भजे भावसार ए गोविंद। **इरिबन एक लिखराम, ए**ह जन आगलोड्य गाम ॥३५॥ द्विज मनछाराम हरिजन, रहे कडा गाममां पावन । क्षत्रि नारुजि रतुजि नाम, गांगजि ने द्विज शिवराम ॥३६॥ अंबाराम सोनी प्रेमचंद, ए बामणवे भजे गोविंद । कोळी भक्त जोयती कुबोजि, रहे छाबलिये हरि भजि ॥३७॥ भक्त भाट सायबोजि जाणो, गाम कैपरमां परमाणो । वडनगरे वसे बहु जन, भक्त प्रभुना परम पावन ॥३८॥ द्विज उजम मुगटराम, सदाशिव वनमाळी नाम । बेचरादि द्विजभक्त भाइ, हरिजन जेठि दोलिबाइ 11३९॥ फुला श्रुमखा आदि अपार, मला भक्त कहीए भावसार। उगरचंद हेमचंद दोय, बसे वडनगरे जन सोय ॥४०॥ सोनिभक्त दयाराम भाई, खिमो गोविंदजि दल्जबाइ । एहआदि बीजां इरिजन, बसे श्रीपोरे भक्त पावन ॥४१॥वडा भक्त छे विशनगरे, शिशसाटानी भगति करे। द्विज सूर्यराम मोतिराम, बळदेव कुष्णाधर नाम ॥४२॥ अम्रुलख आदि द्विजभाइ, उदेकुंवर लक्ष्मी-बाइ । शिवबाइ ने उजळी एक, भज्या हरि ते करी विवेक ।।४३।। शा जेचंद पुजी दयाराम, सोनी पीतांबर अंबाराम । हरिजन छे लाडकुंवरी, कणवी रामजि तुळसी हरि।।४४।। सतसंगी शिलाट सुंदर, जेठाराम ने नाम बेचर। त्रिभोवन ने अमरचंद, हेमचंदादि भजे गोविंद् ।।४५॥ भक्त वनमाळी ने उगरो, पाना-चंद ने वारु झवेरो । एहआदि भक्त मावसार, वसे विश्वनगर मोझार ।।४६।। कणबी भक्त मिठो ने नागजि, गाम जागिरे रहे

हरि मजि । जेठो प्रेमजि ने हंसराज, कणबी मक्त जाणो जस-राज ।।४७।। देवबाइ नंदबाइ कहीए, गाम आइठोरमां ए लहीए । कणबीमक्त छे खुशालमाइ, भजे हरि रहे उपेरामाँइ ॥४८॥ उंझे कणबीमक्त नारायण, शामी वाली प्रश्चपारायण । मोरार मुळजि कामराज, कर्युं गणेश खुशाले काज ॥४९॥ द्विज नाथो जेकुंव-रबाइ, एहआदि भक्त उंझामांइ। शितपुरमां बाइ चतुरी, मावसार छे भावनी पुरी।।५०॥ चोपदार भगवानभाह, रह्यो सुखे सितपुरमांइ। भक्त भावसार द्याळजि, पुरुषोत्तमने भक्ति रजि ।।५१।। कणबीमक्त छे इच्छो वेचर, भने हरि छे पाटणे घर । भक्त गोकळी हरखो सुंदर, भजे हिर रहे ग्रुंजपर ॥५२॥ हरिभक्त सोनी इंदरजि, पालणपुरे रहे कुसंग तिज । कणबीमक्त गोविं-दिजिभाइ, रहे ते गढ मंडाणामांइ ॥५३॥ कणबीभक्त कुबेर दवाडे, भज्यो हरि न पड्यो पवाडे । द्विजभक्त वेचर बळदेव, रहे धिणोजे भजे वासुदेव ॥५४॥ नरसइ भक्त भावसार, गुळचंद ए जन उदार । द्विज भक्त छे केशलीबाइ, एहादि जन मेसाणा-मांइ।।५५।। कणवी भक्त द्वारको जीवण, भाट चतुरो रहे आंबा-सण । खेंगारजि मोडजि इंगरजि, भगवान द्याले बीक वरजि ।।५६॥ खरा क्षत्रिभक्त भलभाइ, वसे गाम विजापरडा मांइ। कणबीभक्त हीरो वेणिदास, रुडा भक्त सितापुर वास ॥५७॥ भावसार मेघो केशवजि, रहे कालरिये कुसंग तजि। लविज प्रागजि नाथोभाइ, कहीए कणवीभक्त नाथबाइ ॥५८॥ एह भक्ति प्रभुजिनी करे, रही गाम ते उदलपरे । जीवण नाइ हरखो सतबारो, कणबीभक्त रायचंद सारो ॥५९॥ एहआदि भक्त बाइ भाइ, वसे गाम ते खेरवामांइ। भक्त प्रश्वनो पुंजो पटेल, तेह

गाम हेबवे वसेल ॥६०॥ भक्त देवचंद भावसार, वसे गाम खरोडा मोझार। शा हरखजि मातम भाट, गाम देवडे तजि उच्चाट ।।६१।। भक्त भ्रखण मनछाराम, तुलसी भगो भावसार नाम। हरिजन एक ज्ञानबाइ, एहादि जन रहे मेउमांइ ॥६२॥ भगो जैतसी जीवो चारण, एह भक्त रहे देवरासण। कणबीभक्त कहीए नरहर, भावसार पुंजी ने बेचर ॥६३॥ सांकळा आदि सतसंगी सइ, वडा भक्त ए रहे वसइ। रामजि गणेश झुमो नागर, बाइ सोना भक्त उजागर ॥६४॥ भक्त मानसिंघ कणवी कहीए, एहादि जन लांगणोज लहीए। द्विजभक्त छे झमखराम, हरिजन गंगा गलाल नाम ॥६५॥ जीवो वसतो ने ज्ञानबाइ, कणबीभक्त पलियजमांइ। कोळीभक्त बाल्यकदास कहीए, क्षत्रि केशोजि गोदडजि लहीए।।६६॥ मोकोजी ने कणबी खुशाल, गोबिंद नायक मियां लाल । एहआदि बीजां बहु जन, वसे गाम खोरज्ये पावन ।।६७॥ कणबीमक्त छे भवानीदास, तजी कसळजिये जुठी आस । गोविंदजी जादवजीभाइ, बाइयोमां मीठीबाइ छे बाइ ॥६८॥ द्विजभक्त मोटा नानोभाइ, जेनी कही न जाय मोटाइ। क्षत्रिभक्त छे बखतोभाइ, एह भक्त कृजीसणमांइ॥६९॥ क्षत्रि मानोजि उमोजि कहीए, कणबी गोकुळ तुळसी लहीए। पुरुषोत्तम रबारी रतनो, भक्त बहुवे जाणज्यो जनो ॥७०॥ भक्त मनोहर छे ब्राह्मण, कणबी कुदेर जेटो हरिशरण। रायचंद क्षत्रि आसकरण, एहादि भक्त रहे मोखायण ॥७१॥ ञ्चलासणमांहि रहे चोधरी; कठण भक्ति प्रभुजीनी करी। हिज गलावचंद सुख-चंद, बल्लभराम जीवराम बंद ॥७२॥ हरिजन हरिकुवर वाइ, एह जन नारदीपुरमांइ। कणबीमक्त वेणिदास बळी, भावसंग

नरोत्तम मळी ॥७३॥ जतन रिळयात विज जन, कर्यु कंणबीकुळ पावन। क्षत्रिभक्त प्रतापित नाम, उमेदित अग्रोति अकाम ॥७४॥ थानोजी बनोजी हरिजन, दल्जि अमरोजि पावन । शेठ सांकळचंद मुळचंद, हरिजीवन अवलनंद ॥७५॥ एहआदि भक्त बाह् भाइ, वसे गाम डांगरवामांइ । हरिजन पुरुषोत्तम हरखो, वासणजि विठलजी नीरखो।।७६।। हीरो जेकर्ण ने दानसंघ, नाथा बेचरने हरिरंग । एहादि भक्त कणशी कहीए, रुडा जन राज-पर लहीए।।७७॥ कणबीभक्त नारायण वसता, गाम राजपरे जन छता। भगो गणेश कणबी वर्ण, रुपो सुतार रहे नंदासण ॥७८॥ कणबी भक्त मोरार जोयतो, जन नारायण ने वसतो। हरिभक्त छे गलालबाइ, एह गाम माथासुलमांइ ॥७९॥ गंगाराम गणेश गोपाळ, मानो वालो दलना दयाळ। कणबीमक्त छे भक्ति-वाली, भने हरि रहे गाम दुंडाली ।।८०।। कणबीभक्त माधविज नामे, भने हरि रहे ईराणे गामे । कणबीमक्त कलो पुंजोभाइ, भक्त केवळ ने रुपांबाइ ॥८१॥ एहादि भक्त जर्न दयाळ, भजे हरि रहे गाम कुंडाळ । सोनिभक्त द्याळिज मंगळ, कणबी भाव-संग छे अमळ ॥८२॥ द्विजभक्त छे उमेदराम, बाइ एक बेनकुवर नाम । भक्त देवचंद भावसार, रहे भक्त ए कडी मोझार ॥८३॥ कणबी भक्त देवकर्ण कहीए, सारो जन सेदरडे लहीए। द्विज हरिभक्त हरिराम, रुडो जन जाकसणे गाम ॥८४॥ भक्त भाव-सार भुलोभाइ, अवलबा राजपरमांइ। कणबीभक्त छे गलालबाइ, भजे हरि रहे उभडामांइ।।८५॥ रामजि घेलो कसलबाइ, कण-बीभक्त मनिपरमांइ। कणबी कुबेर लक्षमीदास, बाइ नाथी भने अविनाश ।।८६।। द्विज भक्त छे शंकर नाम, भक्त प्रभुनो रहे घुमे

गाम। हरिजन कंणबी मोरार, सारो भक्त गोकळ छवार।।८७॥ एहादि जन रहे गोधाविये, कह्या देशमां छेश लाविये। कहेतां कहेतां थाके वाणी मन, जेम छे तेम न कहेवाय जन।।८८॥ पूर्वछायो—जेम जळ अर्णवधी, उपजे लहरी अपार। तेम हरि महाजळथी, हरिजन अपरमपार।।८९॥ अखंड अहोनिश उपजे, तेनो नव थाय निरधार। कोणे लख्या कोण लख्शे, कोण लखेछे आ वार।।९०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर्विते भक्तिंतामणिमध्ये वंडाव्यदेशना हरि-जननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने ओगणीशमुं प्रकरणम् ॥११९॥

पूर्वछायो-मोटा भक्त मारु देशना, अने मोटां जेनां मन । संग कुसंगने ओळखी, वळी थया हरिना जन ॥१॥ लेश नहि जे देशमां, समझवा सुधी रीत। एवा देशमां उपजि, जेणे करी हरिशुं प्रीत ।।२।। एवा जन पावननां, कहुं कांयेक हवे नाम । उच्च नीच कुळमां अवतरी, जेणे भज्या सुंदरक्याम ॥३॥ चोपाइ-खरा भक्त कहीए खाण गामे, देवजाति शंभ्रदास नामे । घेर लालुबाइ हरिजन, जेणे जन्म्या लाडुजि पावन ॥४॥ रुडा भक्त छे खिमोजिभाइ, घेरे मोटां जन मोजबाइ। एहादि विजा जन गणिजे, भला भक्त खाणमां भणिजे ॥५॥ भक्त एक छे चेलो छवार, वसे ते भीलमाल मोझार । क्षत्रिभक्त हेमराज नामे, भजे हरि रहे नरोलि गामे ।।६।। भक्तकणबी देवशि जाणिये, द्विज चेली गाम श्चशांणिये। वालिगामे वसे बहु जन, द्विज विरम भक्तपावन ॥७॥ द्विज वखतो गाम जोधावे, व्याध मेघराज भक्त कावे। भक्त वखतो वात्ये बाघरी, रही उनडिये भज्या हरि॥८॥ विमो भजे हरि भाव भले, जात्ये वाघरी बसे सायले। हरिभक्त वाघरी इन्नरो, बसे दास-

पामां दास खरो ॥९॥ गाम भ्रुकामांहि भजे हरि, भक्त अमरो जात्ये वाघरी। भक्त जोधो जन जीविबाइ, रहे वाघरी गाम देतामांइ ।।१०।। भक्त वालो वखाणुं वाघरी, भलि भक्ति प्रश्रुजिनी करी। बाइ रुपां मेघी ने केशर, गाम सुराणे भक्त सुंदर ॥११॥ उदी वाधरी रहे' गाम धाखे, मुखे खामिनारायण भाखे । भक्त जीवो वाघरी वालेरे, भजे भगवान रुडिपेरे ॥१२॥ भक्त वाघरी पदमो नाम, भजे हरि रहे आकवे गाम । गाम चोरवे जीवो वाघरी, तिज कुळधर्म भज्यो हिर ॥१३॥ एह आदि वाघरी अपार, वसे ते मारु देश मोझार। तिज मेलि निजकुळ रीति, करी प्रकट प्रभुसाथे प्रीति ॥१४॥ सारा भक्त छे शिरोइ गाम, कहुं सांभळज्यो तेनां नाम । मोटा भक्त छे जात्ये छत्रार, करुं तेना नामनी उचार ॥१५॥ दलो रतनो लखमण लहीए, पनो मेराम अनवो कहीए। जेठो हदो धन रूप धीरो, मुलो पदमो हवो ने वीरो ॥१६॥ हदा पना आदि बहु भाइ, हवे कहुं हरिजन बाइ। दछ वाछ उमांबाइ सोनां, लाधी मदु इंदुबाइ पुनां ॥१७॥ एहादि बाह भाई लुवार, एक भक्त छे शवी कुंभार। एहआदि विजा जन सोइ, भजे हरि रहे गाम शिरोइ ॥१८॥ हरिभक्त छे प्रेमी कुलाल, सतसंगी ए गाम जवाल। रुडो रवारी नाम छे कलो, गाम गोयलिमां भक्त भलो ॥१९॥ एक भक्त पवित्र पालिये, तुलाघार उदार ते कहिये। नाम हरिजन हेमराज, हरि भजि कर्यु निजकाज ॥२०॥ एहआदि भारु देशमांइ, बिजा बहु भक्त बाइ भाइ। सरवे सोंपि तन मन धन, करे खामी श्रीजिनुं भजन ॥२१॥ हवे कहुं गुजराति जन, अतिपवित्र भक्त पावन । हेतप्रीत्ये भर्यो जेनां हैयां, प्रेमी नेमीमां न जाय कहीयां ॥२२॥ एवा जननां लखतां नाम,

मारा हैयामांहि घणी हाम। सोनी भक्त छे कस्तुरोभाइ, हरिजन द्विज शिवबाइ।।२३।। साची भक्ति ए खामिनी करे, भजे हरि रहे आमनगरे। जन जतन बाइ द्याळ, द्विजभक्त रहे पेढमाळ॥२४॥ हरिभक्त द्विज इच्छवाइ, वसे गाम ते पोगलामांइ। द्विज भक्त जीवी हरिजन, गाम पिलोद्रे ए पावन ॥२५॥ कणवीभक्त उक्तीभाइ कहीए, ते रहे गाम मांमरोलिये। प्रेमिभक्त रहे प्रांतिगाम, द्विज मयाराम काश्वीराम ॥२६॥ केश्वळराम नारायण त्रण, शिवो जोइतो खामिने शरण। हरिभाइ ने गोविंदराम, मोतिराम जीव-राम नाम ॥२७॥ एहादि भक्त द्विज पावन, हवे कहुं बाइयो हरिजन । बाइ रुपां ने बे इच्छवाइ, वालु त्रण्येने हरिशुं सगाइ ।।२८।। बाइ राम्र रखु ने मांण्यक, सोनां नानी हिरु मोधी एक। फुलबाइ मुलिबाइ दोय, वखत एक हरिजन सोय ॥२९॥ एक कहीए द्विज हरिजन, हवे कहुं विणक पावन । मोटो भक्त छे तुलजाराम, नथु शा ने शांकळचंद नाम ॥३०॥ पीतांबर बेचर भगवान, मिठालाल ने हरिजीवन । बाइ बेनकुवर अंबा एक, पहादि हरिजन वणिक ॥३१॥ सोनी त्रिकमिज हरिजन, भाट अपरु बफतो पावन । वीतरागी छे अमृतवाइ, एहादि जन प्रांतिमांहि ॥३२॥ कोळी भक्त रहे लिओडगाम, उमोजि वळी वाघजि नाम। हरिभक्त छे झवेरभाइ, जेनी प्रीत छे प्रभुजिमांइ ॥३३॥ कणबी खुशाल बेचर नाम, बाई अवल रहे साणोदे गाम । कोळिभक्त द्याळजि धनोजि, छलोजि सारजि ने पनोजि ॥३४॥ बनोजि बाह् अवल फुल, गाम सलकिये भक्त अग्रुल। कणबी भक्त गणेशजि कहीए, भूधर विद्वल नानजि लहीए ॥३५॥ त्रिकम ने शा वल-भराम, भक्त वखतबा वणिक नाम । जन रुपां राम्रु रिक्रयात,

सोनी जमनां वखत द्विज जात ॥३६॥ एक छे रुपाइ नाइ जन, एहादि हरिजन पावन। एक छवार थावर नामे, एहआदि हरि-भक्त देगामे ॥३७॥ द्विजभक्त छे मनछाराम, हरि मंगळ मुळजि नाम। पीतांबर आदि भक्त भाइ, जेकुंवर जतन रामबाइ ॥३८॥ एहआदि बाई भाइ जेह, वसे गाम वासणामां तेह। मोटा भक्त वसेछे वेलाल, जन जेसंगमाइ दयाळ ॥३९॥ जेठो जिजि मको भाइ कहीए, अजु वसती मनोहर लहीए। शामल गिरधर ने नशुभाइ, बाइ वखत रिक्रयात बाइ॥४०॥ जितवा तेजवा दत्तबाइ, मक्त ए कणि कुळमांइ। द्विज हरि ने अवलबाइ, एहआदि ते वेलालमांइ ॥४१॥ क्षत्रिभक्त अमरसिंह नाम, शा जेचंद ते कुजाड्य गाम । कणविभक्त कहीए सुरदास, भक्त नाथे तजि जगआश ॥४२॥ द्याळजि ने दास झवर, क्षत्रि उमोभाइ ने इमीर। एइ आदि बिजां बहु जन; रहे कणमे मक्त पावन ॥४३॥ मक्त अम-दावादे अनेक, भजे हिर तजे निह टेक । जियां विराजे बदरि-पति, तियां सरवे जन शुभमति ॥४४॥ भक्त आदि शेठ इच्छा-राम, हिराचंद वे भक्त अकाम । मनोहर कुवेर गोविंद, गोपाल गोकुळ ने आनंद ॥४५॥ रणछोड त्रिकम बेचर, आशाराम शामळ कुबेर। मोहनलाल दोला आदि भाइ, हवे कहुं हरिजन बाह ॥४६॥ त्रजकुंवर रतनबाइ, आदितने हरिशुं सगाइ। अंबा लक्षमी ने ठकराणी, शामकुंवर अचरत जाणी ॥४७॥ एहआदि छे वणिक बृंद, एक भक्त छे हरगोविंद । हवे कहुं द्विज हरि-जन, नथु जुगल जनपावन ॥४८॥ हीमतराम ने जीवणराम, हरेश्वर ने महादेव नाम। काशिराम कुबेरजि कहीए, गणपतराम नामे दोय लहीए।।४९॥ आदित गिरघर सोमनाथ, कहुं हरिजन ३१ म०वि०

बाइसाथ। गंगा रेवा ने शिवकुंवर, जमनां हरि देव विपर ॥५०॥ क्षत्रिमक्त छे कुवेरसिंघ, कहुं कणबीमक्त अनघ। शंभुदास दामी-दर नाम, वालो वजेराम गंगाराम ॥५१॥ लालदास दो केवळ-राम, रणछोड दयाळजि नाम। भक्त भावसिंघजि सुधीर, पीतां-बर पानाचंद वीर ॥५२॥ प्रेमजि खुशाल भाइचंद, हीरो रायजि हरगोविंद । लखो कसलो ने गंगाराम, भक्त वसतो माण्यको नाम ॥५३॥ हरिभक्त बाइ विज हरि, मोटां जन छे मानकुंवरी। एहादि मक्त कणबी कहीए, सारां हरिजन सोनी लहीए ॥५४॥ पुरुषोत्तम भक्त मंगळ, लक्षमिचंद छे जन अमळ। हीराचंद आदि भक्त भाइ, बाइ देव ने दिवाळिबाइ ॥५५॥ कडिया कुबेर ने अंबाराम, भजे हरि जाणी सुखधाम । भक्त सुतार छे दामोदर, हरिजन जगो ने भूधर ॥५६॥ कृष्ण बेचर ने अंबाराम, हरि आदि जणशाळी नाम । एहादि बाइ भाइ अपार, वसे अमदावाद मोझार ॥५७॥ सेवे नरनारायणदेव, पाडी अंतरे अलौकि टेव। एवा जन निरमळ जेह, नावे लखतां लखवामां तेह ॥५८॥ पूर्व-छायो-धन्यधन्य एवा जनने, जेनां हरिपरायण मन । तन धन त्रण तोले गणी, करे खामिश्रीजिनुं भजन ॥५९॥ एकएकथी अधिक अंगे, प्रेम नियमे पूरण। अपार नरनारी मळी, वळी थयां खामिने शरण ॥६०॥ प्रकट प्रताप प्रापति, नहि अमृतपदनी उधार । एवं जाणि अंतरे, भजे निर्भय थइ नरनार ।।६१।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्मुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये मारुदेश तथा गुजरदेशना हरिजननां नाम कक्कां एनामे एकसो ने विश्वमुं प्रकरणम् ॥१२०॥

पूर्वछायो-गाउं भक्त गुजरातना, जेना प्रेमनो नहि पार । भाव भक्ति अतिघणी, वळी नियमधारी नरनार ॥१॥ प्रकट पुरुषी-त्तमने मळी, वळी थयां पूरणकाम । एवां जन पावननां, हवे लखुं कांयेक नाम ॥२॥ चोपाइ-धन्य जेतलपुरनां जन, जियां हरिए कर्या जगन। तियां जेजे रह्यां हरिजन, तेने जाणवां परम पावन ॥३॥ पटेल भक्त गंगादास नाम, प्रभुदास आसजि अकाम । भक्त काकुजि भिखारिदास, पीतांबर भजे अविनाश ॥४॥ जोय-तादास जीवण कहीए, कृष्णदास काशिदास लहीए। भक्त खोडो नथु पुंजोभाइ, एहआदि पटेल कहेवाइ ॥५॥ द्विज भक्त उभे आशाराम, जन देवराम दयाराम । उगरचंद ने बेचरमाइ, बाइ रिळयात हर्खबाइ ॥६॥ क्षत्रि वालोभाइ हरिजन, ठार लविज जीवो पावन। माळी माण्यकशा ने कुबेर, भक्त घेलो खरो नहि फेर ॥७॥ एहआदि छे जन अपार, वसे जेवलपुर मोझार । पटेल भक्त वेणिभाइ कहीए, लालदास काळिदास लहीए ॥८॥ गोपाळ हांसजि हरिजन, हरखा आदी छे भक्त पावन। द्विज भगो ने खुशालभाइ, एहादि जन असलालिमांइ॥९॥ क्षत्रि मगुजि मालजिलहीए, नथुजि देवोजि जेठिजि कहीए। पटेल जेठो दाजि ने देशाइ, नरोत्तम ने नथु कहेवाइ ॥१०॥ सुंदर भक्त छ सोनि झवर, ठार मोरार वसैये घर। कणबीमक्त छे जेसंगमाइ, रुग-नाथदास सुखबाइ ॥११॥ बापु धीरो काशि ने देशाइ, वसे मक्त नवागाम मांइ। भक्त कणबी कहीए काकुजि, मकन मोहन दाजि बापुजि।।१२।। व्रजभाइहरिभाइ जाणो, द्याळजि मोरारजि प्रमाणो। द्विज प्रभुराम वेणिराम, छवार रघी रहे गामडी गाम ॥१३॥ कणबी भक्त छे भवानीदास, अमथाभाइनी चोसरे वास । हरिजन

रुपो हरिचंद, रहे हिरापर भजे गोविंद ॥१४॥ द्विजभक्त कहीए सदोभाइ, काजु भक्त ए कनेजमांइ। कणबी भक्त छे देवजि नामे, ठार जगो नेनपर गामे ॥१५॥ कोळी भक्त कहीए उको नाम, भजे हरि रहे विरोल्य गाम। मोटा भक्त छे मेमदाबाद, भज्या हरिने तिज उपाद ॥१६॥ द्विजभक्त कहीए धनेश्वर, दुलभराम ने भक्त वेचर । भट अमथो ने अंबाराम, निरभेराम नारणजि नाम ॥१७॥ हरि प्रभुजि ने पीतांवर, विश्वनाथ ने शिवशंकर। भक्त अनुपराम नागर, जन मोरारजि उजागर ॥१८॥ व्यास मोति आदि दइ भाइ, हवे कहुं हरिजन बाइ। हरिभक्त जेठि रिक्रयात, सुखयाने समझाणि वात ॥१९॥ अमृत अवल ने शिवबाइ, मलां भक्त ए ब्राह्मणमांइ। एह मेमदावादमां रहे, मुखे खामिनारायण कहे ॥२०॥ कणवी भक्त कहीए लालदास, भने राइनि श्रीअवि-नाश । हरिजन एक रामवाइ, क्षत्रिभक्त छे सारजिभाइ ॥२१॥ एहआदि बाई भाइ जेह, वसे गाम खातरोजे तेह । कणवी भक्त पुंजोभाइ दाजि, रुडो हरिजन छे रायजि ॥२२॥ द्विज देवराम बापुभाइ, बांठवाळी गुलाब गुंसाइ। कोळिमक्त छे वसतो नाम, काजु भक्त वसे कुणे गाम ॥२३॥ द्विजभक्त अंवा रिळयात, भजे हरि तजि जगवात । कोळी भक्त गलोभाइ कहीए, एह भक्त घोडा-सर लहीए।।२४॥ खांटभक्त भगुजि भणिये, धनो घेलो ने जाल्यम गणिये। झाला आदि जन निरमळ, एक भक्त वसती रावळ ॥२५॥ हरिजन एक अदिबाइ, वसे गाम हाथरोलिमांइ। कणबी भक्त काशिदास कहीए, भक्त भाइजि वसे पिठैए॥२६॥ द्विज नारणजि सदोभाइ, बाइ धनबाइ राजबाइ। एहुआदि विजां बाइ भाइ, बसे गाम कठलाल्यमांइ।।२७॥ द्विज भक्त छे निरमेराम, कुनेरभाइ

शंकरनाम। हरिजन एक कंकुबाइ,कणवी भक्त शंभु जीवीमाइ॥२८॥ एहादि जन रहे आंतरोळी, करे मक्ति प्रश्नुजिनी बहोळी। कणबी भक्त भगवानदास, प्रभुदास भजे अविनाश ॥२९॥ भक्त एक दयाळजि नामे, जन वसे चिखलोर गामे। द्विजमक्त शिवजि सुंदर, हरिजन गोपाळ बेचर ॥३०॥ एक द्विज छे असृतबाइ, एह जन कपडवनमांइ। द्विज अग्रुलख हरिजन, वसे देवोद्य गामे पावन ॥३१॥ कणबी भक्त कहीए काशिदास, लखिये छणावाडामां बास । द्विजभक्त छे खुशाल नाम, जन हरिभाइ अमेराम ॥३२॥ एहआदि कहीए बहु जन, वसे वाडासिंदोरे पावन । हरिभक्त अवल वणिक, बाइ रायकुवर छे एक ॥३३॥ एहादि हरिजन सुंदर, भजे हरि रहे वीरपर। द्विजभक्त छे वालजिभाइ, कोळी हरिजन मों घिबाइ ॥३४॥ एहआदि जन बाइ भाइ, वसे सतसंगी सुथमांइ। कणवी भक्त कुवेरजि कहीए, कडवो गाम गोठवमां लहीए।।३५॥ भक्त सुतार गोविंद जाणो, वैश्य जाति वालजि प्रमाणो । एह-आदि बाइ भाइ बहु, बसे गाम रामपरे सहु ॥३६॥ द्विजभक्त पीतांबर कहीए, कणबी खुशाल तुलसी लहीए। कुनेर हिमो भाव-सार, रहे हिरापर गाम मोझार ॥३७॥ सतसंगी एक सतवारो, हरि-अक्त काशिराम सारो | द्विज हरिजन रुपबाइ, रहे जन ए गोधरामांइ ॥३८॥ भक्त उमरेठे अतिसारा, प्रेमिजन प्रभुजिने प्यारा । द्विज रुपराम निरभेराम, नंदु नंदलाल दोय नाम ॥३९॥ माधविज ने मलकाअर्जुन, काशिराम कृपाशंकर जन। लक्ष्मीदत्त वळी लीला-धर, भक्त हरिभाइ ने ईश्वर ॥४०॥ गंगादत्त विष्णुदत्त भाइ, दया-राम कहुं हवे बाइ। मानबाइ दानबाइ जेह, नाथबाइ मुलिबाइ तेह ॥४१॥ एहआदि जन बाइ भाइ, वसे गाम उमरेठमांइ। कणबी

गलोमाइ गोपाळ नामे, भजे हरि रहे ओड गामे ॥४२॥ द्विजमक्त इवेरजि मलो, भजे हरि डाकोरे एकलो। हरिजन दिज देवबाइ, वसे गाम पलासणामांइ ॥४३॥ मैयाराम रुगनाथदास, वसे महिसे मक्त वियास। क्षत्रिमक्त गल्जि मेलोजि, जेसंगमाये लीघा हरि मजि ॥४४॥ कणबी भूधरदास रायजि, प्रश्रदासे आश जुठि तजि । द्विज नारण आणदराम, बाइ अंवा हरिजन नाम ॥४५॥ क्षत्रि जिजीवा ने सुखवाइ, एह जन डडुसरमांइ। द्विजभक्त रुगनाथ नाम, महेश्वर ने मनछाराम ॥४६॥ मैयाराम कहीए काळिदास, रायजि ने गिरघर व्यास । अंबा अवल ने सुखबाइ, प्रीत रतनने प्रभ्रमांइ ॥४७॥ क्षत्रि धर्मो भक्त छे अवल, कणबी हरखो वसे वडथल । द्विज हरखिज जेठो जन, वसे गाम केसरे पावन ॥४८॥ कणवी भक्त कहीए वेणीदास, जन जेठो विजोदरे वास। क्षत्रिमक्त अजुमाइ कहीए, काळामाइ आदि जन लहीए॥४९॥ कणबीभक्त छे रायजि नामे, एहआदि छे हरेरे गामे। कणबीभक्त भगवानभाइ, भूधरदास हाथरोलिमांइ॥५०॥ हरिजन द्विज कहीए कलो, वसे मक्त देगामे एकलो। धन्यधन्य डभाणनां जन, जियां महाराजे कर्यो जगन ॥५१॥अतिभावे भर्यी नरनार, जेना प्रेमतणी नहि पार । पटेल विष्णुदास हरिशरण, रुगनाथ बे रायजि त्रण H4211 प्रागदास शवदास राम, कानदास नारणदास नाम ! गोविंदजी आदिदइ भाइयो, अवल बोनां त्रण दत्त बाइयो ॥५३॥ द्विजंगक्त कहीए मयाराम, कुवेरिज प्रभुराम नाम । निरमेराम गोविंद प्रेमदत्त, इरिकृष्ण कशलजि भक्त ॥५४॥ बाइ शिव आदित अमुल, नवल गुलाल साकर फुल। एहादि द्विज बाइयो पावन, कों कि वखतों छे हरिजन ॥५५॥ ग्रूड्रमक्त काळो एक कहीए,

एहादि जन डभाण लहीए। पटेल भक्त भगवानदास, जादव झवेरी जगथी उदास ॥५६॥ कानदास ने द्विज मोरार, एहादि जन पीज मोझार। कोळी भक्त एक जागो नाम, भजे हरि रहे दुढेल्य गाम ॥५७॥ पटेल भक्त रुगनाथ जोड, कानजि रायजि रणछोड । भक्त नरोत्तम वेरिदास, एह जन डुमराले वास ॥५८॥ पटेल रायजि कुबेर कहीए, रणछोड बापुजि बे लहीए। वसनदास कृष्णदास जाणो, वसतो दलोभाइ प्रमाणो ॥५९॥ क्षत्रि लाल एक हरिजन, वसे पिपलगे ते पावन। द्विज मोहनराम नरोत्तम, द्विज गंगाराम छे उत्तम ॥६०॥ द्विज कंकु आदित अचरत, मानकुंवर छे इरिभक्त। कडिया भक्त छे केवळराम, एहादि जन नडिआद गाम ।।६१।। कणबी भक्त एक काळिदास, रहे गाम अलिंदरे वास । द्विजमक्त प्रश्वराम नामे, भजे हरि रहे सलुणगामे ॥६२॥ एहआदि जन अगणित, सर्वे जनने खामिशुं श्रीत। धर्मनियम धारी नरनार, न रुखाय छे अपरमपार ॥६३॥ पूर्वछायो-जुगोजुगना जनथी, अगणित ओधार्या आज। तेने ते गणित लखतां, नावे कोइ कविने थाहाज।।६४।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंद्मुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये गुजरदेशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने एकविश्यं प्रकरणम् ॥१२१॥

पूर्वछायो-चवुं जन चडोतरनां, जैनां उज्वळ अंतःकरण।
तन मन धन अर्पण करी, थयां खामिश्रीजिने शरण॥१॥ मात्र
मिक्त उरे अति, एकमनां नर ने नार। पुरुषोत्तम प्रकट स्पर्शि,
उत्तर्यां भवपार॥२॥ जैने एक हरिनो आशरो, तेह विना विज्ञं
हराम। एवा जन पावननां, हवे लखुं कांयेक नाम॥३॥ चोपाह—
वंदु वरतालनां हरिजन, अतिपवित्र परम पावन। जियां हरिए

करी बहु लीळा, लइ संत सतसंगी मेळा ॥४॥ पटेल भक्त मोटेरा बापुजि, रणछोडे लीधा हरि भजि। वेचर दाजि ने जेसंगमाइ, मुळजि ने रायजि कहेवाइ ॥५॥ दो माइजि दादोभाइ कहीए, जोरो नरशि नरोत्तम लहीए। कानदास डुंगर ने दलो, शामळ हरि धोरी मिठो भलो ॥६॥ लालदास आदि हरिजन, पटेल वालु कंकुबा पावन। द्विज वनमाळी हरिदास, बा अवलने प्रश्वनी आञ् ॥७॥ नकि भक्त नारणगर बावो, जेणे कर्यो कुळनो अभावो । प्रेमिभक्त पणि धन्यधन्य, जनमां शिरोमणि जोबन ॥८॥ सुंदर खोडो जुंसो ने वखतो, जगो भवान जखतो हमतो। उजम अमरा आदि कोळि भाइ, जन एक रळियात बाइ ॥९॥ रघो बेचर वासण ठार, बाइ ईंकुये तज्यो संसार । ठकर उका आदि बहु कहीए, श्रद्ध शवादि वस्ताले लहीए ॥१०॥ कोळि भक्त तखो आसकरण, ज़ेठो बादर हरिने शरण। झालो जाल्यम भक्त माइजि, जग आश आसजिये तजि ॥११॥ मानवा जितवा हरिजन, नवलबा प्राणवा पावन। एहआदि जन बहु कहीए, वसे भक्त ए बामणोलिये ॥१२॥ जांजुबा लिंबुबा नानीबाइ, रहे परे बाम-णोलिमांइ। पटेल भक्त कुबेर मुळजि, जिजि बाजि पुंजो ने रामजि ॥१३॥ धर्मदास गोपाळ गणिए, बाई रिळयात नाथी भणिए। भक्त भाइबा धुनो गढवी, कंकु मघुवाने भक्ति हवी ॥१४॥ द्विजभक्त एक इच्छाराम, एहादि जन नरसंडे गाम। पटेल भक्त नरहरभाइ, हरिजन छे बेचर नाइ ॥१५॥ एहआदि विजां जन बहु, बसे गाम उत्तरसंडे सहु। पटेल भक्त काळिदास नाम, भजे हरि अलंदरे गाम ॥१६॥ द्विज भक्त कहीए ते ईश्वर, प्रेमी जन बळी पीतांबर । वेषि लक्षमी लटकणबाइ, पाटिदार रुडा

अजुभाइ ॥१७॥ भाट बळियो जालम धर्मदास, भावसंगनो मुमघे वास । क्षत्रिभक्त छे रुडा रामोजि, पटेलमां भक्त दास खोजि ॥१८॥ लालदास ने ईश्वरदास, प्रभ्रदास रघे तजि काश। द्विजमक्त बापुभाइ नाम, सदाशिव ने निरभेराम ॥१९॥ रुडी भक्त कहीए रामो नाइ, एहादि जन कणशरिमांइ। कोळी भक्त वखतो वखाणुं, वालो दाजि हरिजन जाणुं ॥२०॥,पटेल भक्त छे थोभणदास, एहनो सामरखामां वास । द्विजभक्त दिनकर नाम, सदाशिव ने लक्षमीराम ॥२१॥ दुर्लभराम ने देवशंकर, कणबी भक्त हरजि सुंदर। हरिजन एक दत्तबाइ, एह आदि ते आणंदमांइ ॥२२॥ भक्त काछियो नाम वसन, वसे बाकरोलिए हरिजन। पटेल भक्त लालदास लहीए, जोरो रगनाथ नाम कहीए ॥२३॥ प्रभुदास शंभुदास सोइ, ठार धनजि सम नहि कोइ। एहआदि बिजां बहु जन, वसे गाम गानामां पावन ॥२४॥ पटेल भक्त रामदास जेह, हरिजन प्रश्चदास तेह । कोळी भक्त हेमतो खुशालो, हरिभक्त जाणो वळी झाली ॥२५॥ भक्त सुतार छे प्रभुदास, एहादि जननो जोळे वास । पटेल भक्त छे गरीबदास, दाजि मनोहर रहे पास ॥२६॥ कोळि भक्त उको ने उजम, हुमो भक्त भजे परब्रह्म । हरिजन द्विज वजेराम, रिक्रयात रहे संजाये गाम ॥२७॥ पटेल भक्त गोविंदजि जाणो, गोपाळजि गणेश प्रमाणो । कोळि झमो भीखो भक्त भले, ग्रद्र खोजिदास आख-डोले ॥२८॥ कोळी भक्त थोभण बेचर, वसे वलोटवे भक्त <mark>सुंदर।</mark> द्विज दाजिनी भक्ति छे खरी, वसे बांधणिये भजे हरि ॥२९॥ पटेल मक्त अजुजि सुंदर, ख़ुशाल कानजि मनोहर । जिजि जेसंग ने पुंजो लहीए, सोनी पीतांबर वेणि कहीए।।३०।।भक्त माण्यक-

बाई सुतार, एह मक्त मेळाव्य मोझार। भाट मक्त नथु लखी बोड, फुलो तकतो रामो रणछोड ॥३१॥ पटेल रघो गोकळ शिघर, भक्त खतरी जीवो सुंदर। भक्त भाट एक जसबाइ, एहआदि जन चांगामांइ।।३२।। पटेल भक्त प्रश्चदास कहीए, ओधव कानदासादि लहीए । वसे गाम रोयणे ए जन, करे **खामिश्रीजीनुं भजन।।३३।। द्विजभक्त वालोभाइ नाम, इच्छाराम**ं दादी मयाराम । भक्त भवानी शंकर जाणी, रुडा रामशंकर वखाणी ।।३४।। रुडां बाई जमनां जतन, एहआदि द्विज हरिजन। पटेल मक्त वालोभाइ कहीए, जगो वजेसंग तुलसी लहीए ॥३५॥ धोरी खोडो जिजि ने हांसजि, रणछोड गोकळ रायजि । ठकर कृष्ण काछियो भ्रखण, शिवो गढवी गाय हरिगुण ॥३६॥ शा झवेर प्रश्रुदास कडियो, जेने सतसंग जीवशुं जडियो। एहआदि बहु बाई भाइ, बसे भक्त बसो गाममांइ ॥३७॥ पटेल भक्त छे रायजि नामे, काळिदास रहे पलाणे गामे। पटेलभक्त रुडो राम-दास, धर्मदास भजे अविनाश ॥३८॥ द्विजभक्त मोटां माण्यकजि, रघवाणे छहार भाइजि। भक्त भावसार प्रेमचंद, पीतांबर लाल-दासादि षृंद ॥३९॥ मोटां भक्त मानकुंवरबाइ, खरां हरिजन खेडामांइ। सोनी भक्त छे गिरधर नाम, मातरे द्विज उत्तमराम ।।४०।। पटेल भक्त वासण धर्मदास, हरिभाइने हरिनी आश । द्विजभक्त छे अनुपराम, एह जन अर्लिंद्रे गाम ॥४१॥ पटेल भक्त जीवणदास जेह, वसे गाम हिरंजमां तेह। क्षत्रिभक्त छे भीमजि नाम, वासणजि वसे देवगाम ॥४२॥ द्विज भवानीशंकर नाम, प्रभाशंकर केशवराम । तुलजाराम दयाराम दाजी, जन खुशा-लादि मन राजी ॥४३॥ हरिजन हेतबाइ जिजि, कोळी मक्त छे

नाम बोनजि । पटेल भक्त कहीए लालोजि, जिभाइ व्रजमाइ नाथजि ।।४४।। गिरधर बेचर छे नाम, सुतार कल्याण गंगाराम। सोनी गोपाळ आदि हरिजन, वसे पिपळाव्यमां पावन ॥४५॥ पटेल भक्त रायजि कावे, एकलो जन रहे ईसणावे। पटेल भक्त गोविंदजि नाम, द्विज पुरुषोत्तम उत्तमराम॥४६॥ हरिजन द्विज हर्खबाइ, प्रेमिजन ए पाळजमांइ । रुडो भक्त छे रईम शेख, भक्त सुतार अमथो एक ॥४७॥ वैश्य वक्कम जीवो छवार, खरो भक्त खतरी मोरार । बहु हरिजन एह आद्ये, वसे भक्त प्रेमी पेटलादे ॥४८॥ पटेल भक्त स्मानाथ कहीए, काळिदास ने कुबेर लहीए। एहआदि भक्त बाइ भाइ, वसे गाम सुंदरणामांइ ॥४९॥ पटेल भक्त काशिदास सारो, रामदास प्रश्नुजिने प्यारो । वेरि-भाइ काछियो कहेवाय, एह जन बोचासण मांय ॥५०॥ पटेल प्रभुदास निरमळ, भक्त रामदास अविचळ। हाथि उत्तम ने काळिदास, एह जननो वेरामां वास ॥५१॥ पटेल मुळजि थोभण भणिए, नरसी हरि वेणिदास गणिए। देवबाईने भाव छे मलो, कोळी रंगबाइ भाइ गलो ॥५२॥ राठोड भक्त एक राजबाई, एहादि वसे देदरडामांइ। पटेल भक्त लालदासभाइ, जादव वळी विठल नाइ ॥५३॥ कोळी भक्त ते हिमतो कहीए, एहआदि बोर-सदे लहीए। पटेल भक्त जेठोभाइ जाणो, खोडो गुमान कोळी प्रमाणो ॥५४॥ एहआदि छे जन अवल, दास स्वामिना वसे दावल। पटेल भक्त छे बेचरदास, एह दासनो बोदाले वास ॥५५॥ भक्त पटेल नाम बापुजि, रहे जोशिक्ववे कुसंग तजि । द्विजभक्त नारणजि जेराम, जन जीवी उकलाव्य गाम ॥५६॥ पटेल भक्त छे बापुजि सारो, बसे वासदे प्रभुने प्यारो । भक्त सुतार द्याळिज

कहीए, मीठो भगवान भक्त लहीए ॥५७॥ कोळीभक्त दादोभाइ जाणो, हरिभाइ भगुजि प्रमाणो । हरिजन कहीए जोरोभाइ, एहादि जन चमारामां ह।।५८।। पटेल भक्त रणछो डदास, बापुजिये तजि जगआश । वेरिदास प्रागदास दलो, हरि इंगर वसतो मलो ॥५९॥ द्विजभक्त खोडो कुशलराम, भज्या बेचरे सुंदरश्याम । भक्त भाट केशर निदान, रुगनाथ मोटभा गुमान ॥६०॥ भक्त छवार छे वणारशी, जेने हये रह्या हरि वसी। कोळी भक्त जगन्नाथ धीर, भक्त भगवानदास हमीर ।।६१॥ हरिजन छे बाई खुशाली, जेने भक्ति हरिनी छे वाली। एहआदि विजां बाई भाइ, वसे भक्त बामणगाममांइ ॥६२॥ पूर्वछायो-अपरिमाणनुं परमाण नहि, अकळ कळे नहि कोय । एम हरिजन आजनां, नावे संख्यामां सोय ॥६३॥ कहिकहि कहीए केटलां, छे आज अलेखे वात । कविनी पहोच्य कियां लगी, भरवि आभशुं बाथ ॥६४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये चडोतर देशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने बाविशमुं प्रकरणम् ॥१२२॥

पूर्वछायो-बहु भक्त बारांमध्ये, जन जाणे सरवे रीत। सत्य असत्यने ओळखि, करी पुरुषोत्तमशुं प्रीत।।१।। एवां जन अमळनां, करुं कांयक नाम उचार। सुणतामां सुख उपजे, सहु सांभळज्यो करी प्यार।।२।। चोपाइ-धन्य क्षत्रिभक्त जिजिभाइ, जेनी प्रीत अति प्रश्चमांइ। भक्त पुंजोजि अमरसिंग, विसाभाइने हरिनो रंग।।३।। अभेराज मोडजि रूपोजि, अलुभाइ अमरिश खोडोजि। कणबी भक्त छे उत्तमराम, सखिदास थोभणदास नाम।।४।। दाजि आदि विजा बहु जन, गाम गुढेले करे भजन।

द्विजभक्त रुपो निरभेराम, भाट धनु रहे खंभात गाम॥५॥क्षत्रिभक्त पथो बनेसंग, कान मोटभाने सतसंग । एहादि जन आखोल्य-मांइ, तामसामां क्षत्री हठिभाइ।।६।। भाट भक्त मुळजि ने जिजि, भजे हरिने भावे भाइजि। क्षत्रिभक्त जिभाइजि नाम, एहादि जन रहे वडगाम ॥७॥ क्षत्रिमक्त देवोभाइ कहीए, एह गाम पानडमां लहीए। हरिभक्त त्रिकम सुतार, रहे ते गाम रोणिमोझार ॥८॥ क्षत्रिभक्त कांघोजि पुंजोजि, कणबी प्रभुदासे काश तजि। हरिजन एक रामबाइ । एहादि जन गोराडमांइ ॥९॥ कोळी भक्त कहीए मालबाइ, अणदी जसुबा क्षत्रिमांइ। एहादि जन जिसके गाम, भिज हरि कर्यु निजकाम ॥१०॥ देवजाति छे भक्त भाइजि, वसे मैयारिये मोह तजि । कणबी भक्त कहीए रामदास, आणद गोकळि वरसंडे वास ॥११॥ क्षत्रिभक्त नाजोजि करण, हठिभाइ हरिने शरण । कणबी दाजि दाळ तापिदास, एहादि जन गळियाणे वास ॥१२॥ कणबी भक्त नारायण नाम, भजे हरि चित्रवाडे गाम । क्षत्रि गगो जेसंग भगत, दुघारिमां भजे भगवंत ॥१३॥ क्षत्रि भक्त रामोभाइ कहीए, निक भक्त रहे गाम नभीए। भाट हरिभाइ हरिशरण, कणबी भक्त रहे खडे नारायण ॥१४॥ द्विजभक्त कहीए काशिराम, एहादि जन लिंबाशि गाम । कणबी भक्त जेरामादि जन, वसे गाम आडेवे पावन ॥१५॥ क्षत्रि भक्त कहीए भगवान, वसे गाम सायले निदान। भक्त सुतार नारायण नाम, एहादि जन बामणगाम ।।१६॥ भाट भक्त जेठोभाइ जाणो, एहादि परियजे प्रमाणो । भक्त भाट जगरूप जेठो, लक्षमण लाभ लइ बेठो ॥१७॥ पटेल भक्त बापु गिरधर, एहादि सिंजिवाडे सुंदर । पटेल त्रिकम गोकळ लखोभाइ, भक्त गोपाळ ने गली नाइ ॥१८॥ नाइ

भक्त रुपां ने जोईति, रहे सोजितरामां शुभमति । भक्त भाट छे एक जसुजि, रामदास गलाब मुळजि ॥१९॥ पटेल भक्त नारण-दासभाइ, वसे गाम तारापुरमांइ। भक्त गढबी गोकळदास, कणबी हरिदास प्रभुपास ॥२०॥ विठलजि भाट मोटभाइ, ठकर रणछोड अमरो केवाइ। एहआदि बीजा बहु जन, वसे गाम मोरजे पावन ॥२१॥ क्षत्रि हरिभक्त छे हठिजि, खोडोभाइ कहीए कल्याणजि । एहआदि बहु जन लिजे, वसे भक्त ए गाम बुधेजे ।।२२।। कोळीभक्त उंटवाळामांइ, जोयता सुता उमेद बाई। पटेल भक्त काळिदास दोय, प्रश्चदास गाम नारे सोय ॥२३॥ क्षत्रिभक्त भगवान नाम, अवलबाई रहे रोणज गाम। शेठ वजा-आदि बहु भाइ, वसे गाम रामोलडीमांइ ॥२४॥ भक्त भाट बळियो छे नामे, एहादि जन जलसिण गामे। भक्त छुत्रार रामजि आदे, वसे जन हरिना जलोदे ॥२५॥ कोळी भक्त प्रताप हमीर, रहे गाम खडोदिमां धीर। कणबी भक्त हरिभाइ कहीए, धोरिभाइ आदि जन लहीए ॥२६॥ भजे भगवान भाव भले, बहु जन वसि वड-दले। कणबीभक्त जेसंगभाइ जाणी, गाम रासमांहि परमाणी ।।२७॥ कोळीभक्त छे एक राइजी, वसे सैजपुरे भय तजि। कोळी दाजि रतनसिंघ कहीए, चंद्रसिंघ रुपसिंघ लहीए।।२८।। मोटाभाइ बनेभाइ दादो, बापुजि पुंजोजि मक्तआदो। भाट बलियो काळो लुवार, बदलपरे ए भक्त उदार ॥२९॥ कोळी भक्त छे अजबसिंघ, हेमतसिंघने हरिनो रंग। भक्त जगो झालो भावसिंघ, जन गलो देवाणे अनघ ॥३०॥ कोळी अवलो जीवण जाणो, गोरवे भक्त ओधो हुवाणो। कोळी भक्त छे गंभीरसिंघ, लाखाजिने वालो सत-संग ।।३१।। भक्त उमेदसिंघ विरम, हरिजन हमिर मोक्रम। एह

आदि हरिजन जेह, वसे गाम सरिडमां तेह ॥३२॥ कणकी भक्त छे मनिज नामे, एहादि जन झिलोड गामे। एहआदि जन अगणित, सर्वेने प्रश्च प्रकटशुं प्रीत ॥३३॥ नरनारी ए प्रकटश्पासी, थयां ज्ञक्षनगरनां निवासी। एवां जन अपरमपार, भिज हरिने तयां संसार ॥३४॥ पूर्वछायो—बाळ जोबन ष्टुद्धने, वडो मन विश्वास। देह छुटे दुः खियां निह, छे ब्रह्ममहोलमां वास ॥३५॥ इति श्रीम-देकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरिचते भक्तिनामणिमध्ये वारादेशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने त्रेविशमुं प्रकरणम् ॥१२३॥

पूर्वछायो-वडा भक्त वाकळमां, अतिमाहात्मी मन उदार। हरि हरिजन उपरे, जेना प्रेमनो नहि पार ॥१॥ मन कर्म वचने करी, हरिभक्ति उपर भाव। तन मन धनवडे, संत सेववा उच्छाव ॥२॥ जेवा जन वाकळना, तेवाज कानममांइ। विश्ववासी विकार विना, कपट छळ नहि कांइ॥३॥ सदा ए जन सुखिया, जेने प्रकट प्रसुद्धं प्रीत। एवा जन अमळनां, हवे लखुं नाम किंचित ॥४॥ चोपाइ-वडा भक्त वडोदरामांइ, जेने अतिहेत हरिमांइ। कणबी मक्त कहीए वनमाळी, जेणे बीक जगतनी टाळी ॥५॥ नाथजि ने वळी वनमाळी, प्रभुदासनी भावना भाळी। भगवानदास ने केसुर, पीतांबर भुखण जरुर ॥६॥ जगजीवन ने नारायण, श्रमु पुरुषोत्तम घेलो जाण। एहआदि कणबी अपार, भजे नारायण नरनार ॥७॥ द्विजभक्त नानीभाइ नाम, भजे हरि तजि मनकाम । रामचंद्र हरिचंद्रभाइ, शोभाराम कहीए शास्त्रिमांइ ॥८॥ बापु जेठो ने व्रजजीवन, भक्त ब्राह्मणमां धन्यधन्य । सदाशिव धनेश्वर नाम, भक्त खुशाल लक्षमीराम ॥९॥ एहआदि द्विज अ-

**प्रमित, सरवेने** श्रीस्वामिशुं प्रीत। शेठ प्रश्रुदास हरजीवन, बापुभाइ प्रेमानंद जन ॥१०॥ बृंदावन गंगादास विणक, भज्या हरि ते करी विषेक। काछियो पुरुषोत्तम जन, जेणे निजकुळ कर्यु पावन ।।११।। खुशाल भाइजि रणछोड, हरि जेराम ईश्वर जोड । प्रेमीभक्त छे वामनजिभाइ, एहआदि छे काछियामांइ ॥१२॥ जन तंबोिळ छे नानवाइ, तेना सुत नारायणभाइ। दक्षणि भक्त नारायण राओ, हुंहु राओनो ढिकियो दाओ।।१३।।चिमन राओ प्रभु द्विज एक,जाणे सार असार विवेक । दक्षणि भक्त छे अंबाबाई, द्विज दक्षणि दाजिबाभाइ ॥१४॥ शिलाट फतोजि ताराचंद, मोति हिरजि ने अमिचंद । खत्रिभक्त नथु अंबाराम, पुरुषोत्तम दयाराम जेराम ।।१५।। नंदलाल ताराचंद नाम, भक्त सोनी सारो गंगाराम। भक्त सुतार छे धर्मदास, जेने प्रभुनो छे विशवास ॥१६॥ भक्त छवार सुळजिनाम, हरिजन छवाणो जेराम। बेचर आदि जणसाळी जन, करे स्वामिश्रीजिनुं भजन।।१७॥ एहादि बहु बाई भाइ, वसे शहेर वडोदरामांइ। जोइ अनंत पर्चा चमतकार, रहे मगन मने नरनार ॥१८॥ कणबिभक्त प्रागजि दाजि, वसे गाम शिशुवेरे राजि। कोळी-भक्त बाजिभाइ कहीए, एह गाम आंबोदरे लहीए।।१९॥ कणवी मक्त छे मावजिभाइ, काजु जन रहे कपुराइ। कणबीभक्त प्रश्रदास-भाइ, हरिजन एक लाडुबाइ।।२०।।भक्त मेतर रामो छे नाम, एह जन वसे छाणि गाम । कणबीभक्त गणेशजि जाणो, कोळिभक्त करार अमाणो ॥२१॥ शेठ भक्त मोरारजिभाइ, एहादि जन सांकरदामांह्। कोळिमक्त कानभाइ कहीए, प्रतापसिंघ अणघडे लहीए।।२२।। कणबीमक्त दयाळजिमाइ, जादव रणछोड वजो देशाइ। बाजि शवेर पुरुषोत्तम, बाई साकर ने वळि प्रेम ।।२३।। कोळिभक्त बाजि

नारभाइ, वसे गाम ए गोरवामांइ । कणबीमक्त रुगनाथ नाम, जिजि विठल लक्षमीराम ॥२४॥ भक्त नरहर ने काशिभाइ, हरिजन छे रिळयातबाई । भक्त सुतार गिरधर गणिये, कोळी जोरो उमेद भणिये ॥२५॥ कृष्ण माळि ने मुलो मेतर, एनां छे अटलादरे घर । पटेल भक्त कहीए व्रजभाइ, भक्त अजुभाइ ने देशाइ।।२६।। दाजि गिरधर भगवानदास, जोरो रणछोड जगथी उदास । हरिजन छे गलाल बाई, मोटिबानी प्रीत प्रभ्रमांई ।।२७।। एहआदि बाई भाइ लहीए, वसे भक्त घणा कराळिये। कोळि भक्त प्रताप निदान, समियाळे कणबी भगवान।।२८॥ कणबीभक्त बाजि मोरारजि, वसे डभासामां दंभ तजि। कणवी भक्त नारायण नामे, सारो जन सेजा-कुवे गामे ॥२९॥ क्षत्रिभक्त बापुभाइ वळी, कणबी लखमण रहे पिपळी । द्विज हरिजन मनोहर, आमळे जन गौरीशंकर ॥३०॥ द्विज रामचंद्र ने नागजि, त्रिकमजिए तृपणा तजि। शेठ भक्त छे अंबाविदास, गिरधरभाइ भजे अविनाश ॥३१॥ दाजि गिरधर कणि जन, द्विज बाई जीवी ने रतन । एहआदि जन बाई माइ, वसे गाम सरसवणिमांइ॥३२॥ कणवी बाई छे डाई कुंबर, भजे हरि रहे विरपर । कणबि भक्त उद्भव रेवादास, भवानीदास प्रभुने पास ॥३३॥ पुरुषोत्तम जिजिभाइ जन, नरहर गिरधर पावन। भक्त देवदास ने त्रिकम, पडी शंकरने साची गम ॥३४॥ भगवानदास व्रजभाइ, नारायण एक बेउ भाइ। द्विज भक्त बापुभाइ कहीए, एहादि जन ईटोले लहीए।।३५॥ कणबी मक्त माधोभाइ नामे, भजे हरि रहे वरणामे । कणबी भक्त छे गरिबदास, केशबदासे तजि जुठि आश ॥३६॥ द्विज भक्त कहीए काशिराम, जगजीवन सापोर गाम । भक्त वणिक हरजीवन, खुशाल तुलशी ३२ भ०चि०

हरिजन ॥३७॥ नरोत्तम आदि छे वणिक, भक्त छुवार बेचर एक। पह आदि जन जे कहेवाय, बसे गाम रामनाथ मांय।।३८।। द्विज भक्त छे रामशंकर, रतनेश्वर भक्त वेचर । कणबी भक्त गिरधर आदे, एह भक्त रहे गाम रुंबादे ॥३९॥ द्विजभक्त एक भगवान, वसे गाम सलाड्ये निदान । कणबी खुशाल गोबिंदभाइ, पुरु-बोत्तम मंडाळामांइ ॥४०॥ द्विजमक्त शिवशंकरभाइ, भक्त कुवेर रहे गाम पिसाइ। भक्त भगवान छे कुंभार, रहे अविपर गाम मोझार 118811 अलोचन ने केवळ सोइ, द्विज करुणाशंकर रहे डभोइ / कणबी कुबेर मनोहर कहीये। हडा भक्त ए वसे वसैये ॥४२॥ द्विज भक्त कहीए प्रभुराम, एहादि जन कळधरे गाम । क्रणवीभक्त वेणिदास कावे, एहादि जन रहे ढोलाव्ये ॥४३॥ द्विजभक्त छे भूदेवभाइ, कहीए जन ए कुंठेलामांइ। कणवीभक्त मेघजि जाणो, गाम पारिखे जन प्रमाणो ॥४४॥ द्विजभक्त जादव हरिभाइ, छता भक्त छे छतराल्यमांइ। द्विज भक्त छे लक्षमीराम, काजु भक्त रहे कारवण गाम ।।४५।। कणबी भक्त छे रणछोडभाइ, रायजि नथु वेरिभा देशाइ । त्रिकम भक्त कहीए सखिदास, एहादि जन कर-माले वास ॥४६॥ कणबी भक्त रणछोड नानोजि, भिखो लालो ने नारण बाजि । भक्त बाई भाइ एह आद्ये, भजे हरि रहे उतराद्ये ।।४७।। कणबी भक्त छे तुलजो तेह, रहे गाम दिवेरमां एह। कणबी भक्त पुरुषोत्तम कहीए, शेठ हिरो ने कुबेर लहीए।।४८।।एह रहे रणापुरमांइ, भजे क्यामसुंदर सुखदाइ। हरिभाइ कणवी पावन, वसतो हरखो हरिजन ॥४९॥ एहादि सतसंगिनी टोळी, भजे हरिरहे गाम देरोली। कणबी भक्त कहीए काशिदास, एहादि जन षाणेथे वास ॥५०॥ कणबी भक्त खोरोभाइ जन, पुरुषोत्तम भिखेर

पावन । वळी भक्त एक वणारशी, एइ जन राजपरावासी ॥५१॥ दलो बाजि केशव जेराम, कणबी भक्त रहे गाम भदाम। द्विज भक्त कहीए सुखराम, काजु भक्त रहे कन्याळी गाम॥५२॥ भक्त कणबी कहीए रायजि,वसे गाम झांझर मांयजि। द्विजभक्त छे गोविंदराम, कणबी तुलजो नरोत्तम नाम ॥५३॥ एहादि जन रहे सेणापरे, भिल भक्ति प्रभुजिनी करे। शेठ खुशाल भक्त पावन, तुलसि नारायण हरिजन ॥५४॥ द्विज कृष्णजिने सतसंग, एहादि जन गाम सारंग | द्विज भक्त माहेश्वर नाम, भजे हरि रहे मित्रज गाम ।।५५।। कणबी भक्त प्रभुदास जेह, रणछोड नरहर तेह। भक्त शेख वसतो हरिभाइ, नथु आदिक अलदरमांइ।।५६।। जन कणबी जेराम दला, भक्त हरिना बोरिये भला । प्रभुदास कणबी पावन, गाम सलादरे हरिजन।।५७।। कणबी जन छे भूधर आधे, वसे भक्त ए गांम पिसादे । कणबी भक्त छे भगतिभाइ, वसे जन झाडेसर मांइ ॥५८॥ जेने घेर पधार्या मोरार, निर्खि सुफळ कर्यी अवतार । जेजे लखांणां छे आमां जन, तेने छे श्रीहरिनुं दर्शन ।।५९॥ पूर्वछायो-जेजे कह्यां जिभे करी, जन विचारिने जेह। कहेतां लाजे कवि मने, वळी एमां नहि संदेह।।६०।। रवि शशिनी किरणने, कोण लेखि लेशे पार । एम जन छे आजनां, अगणित ने अपार ।।६१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये वाकलदेशना हरि-जननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने चोविशमुं प्रकरणम् ॥१२४॥

पूर्वछायो-कहुं जन कानमनां, वळी विचारी मन। भाग्य मोटां ए भक्तनां, जेने मळ्या जगजीवन ॥१॥ जप तप जोगे-करी, वळी नावे ध्याने नाथ। तेह हरि नयणां भरी, निरखि थयां

सनाथ ॥२॥ पळेपळे थाय परचा, वळी आवे अंत्ये अविनाश । सरवे जन ते जाणतां, थाय ब्रह्मनगरे निवास ॥३॥ एवी कृपा छे आजनी, करी ते कृपाने धाम । तेने जे जन अनुसर्यो, हवे लखुं तेहनां नाम ।।।। चोपाइ-द्विज भक्त एक काशिराम, कण-विभक्त नागरदास नाम । भक्त जिजिभाइ भगवान, शेख मावजि भीखो निदान ॥५॥ एइआदि हरिजन जेह, वसे गाम दोरामांहि तेह । द्विजभक्त एक नरसइ, भजे हरि वलणमां रइ।।६।। कणबी हरिजन छे जिमाइ, पुरुषोत्तमने साचि सगाइ। माळी भक्त भूधरदास जाणो, कृष्णदास भक्त परमाणो ॥७॥ क्षत्रिभक्त कहीए दादोभाइ, एह जन मांगरोळमांइ। कणबीभक्त नरोत्तम लाल, बापु रायजि ने खुशियाल ॥८॥ धनो उद्भव ने धर्मदास, एह आदिनो करेणे वास। द्विजभक्त पुरुषोत्तम धन, माहेश्वर जागेश्वर जन ॥९॥ एहादि जन वसे चोरंदे, मुखे खामिनारायण वंदे। कणबी भक्त पुरुषोत्तम नाम, सारा जन सादरणे गाम ॥१०॥ द्विजभक्त अंबाराम भलो, रहे गाम गंधारे एकलो । कणबीभक्त छे भगतिभाइ, अविचळदासनी भलाइ ॥११॥ भक्त गणेश दुमाइ नाम, द्विजभक्त छे तुलजाराम । एहआदि विजा बहु जन, वसे वेमारडीमां पावन ॥१२॥ कणबी भक्त छे भाइवा जेह, व्रजमाइ त्रिकमदास तेह। माधाभाइ आदि भक्त बहु, कहीए गाम कंडा-रिमां सहु ॥१३॥ भक्त सुतार छे काशिदास, दुलभरामे टाळ्यो जगत्रास। भक्त शेख नाम लिंबो माइ, वसे गाम करजणमांइ ॥१४॥ कणबीभक्त दादोभाइ कहीए, रुडो भक्त रायजि ते लहीए। द्विज भाइशंकर काशिराम, शेख भक्त दाजिभाइ नाम ॥१५॥ कणबि जन एक जितबाई, एहादि जन वसे क़ुराई। द्विज एक भवा-

नीशंकर, तेनुंपण पिंगलवाडे घर ॥१६॥ द्विजमक्त कहीए दया-राम, भजे हरि रहे आंटोद गाम । जोगि प्रभातगर प्रसिद्ध, कर्यु निज काम भलि विद्ध ॥१७॥ गयो जग जिति लाओ लइ, गाम ठिकरिये ठिक रइ। द्विज भक्त छे लक्षमीनाथ, दीनानाथ रहे हरिसाथ ॥१८॥ काशिनाथ गणपतराम, जयानंद आदि द्विज नाम । भक्त वणिक हरजीवन, रहे आमोदे जन पावन ॥१९॥ पटेल भक्त कानदास कहीए, रुगनाथ मोटोभाइ लहीए। एह आदि हरिजन बहु, वसे गाम बुवामांहि सहु ॥२०॥ शेख वलिभाइ भला भक्त, जेणे भज्या हरि तज्युं जक्त। वसतो भगो जन खुशाल, थया भक्त तजि कुळचाल ॥२१॥ कणबी भक्त छे बेचरमाइ, द्विज बाई छे केलोदमांइ। कणबी मक्त छे लक्षमी-दास, हरिभाइनो देरोले वास।।२२।। द्विज भक्त गंगा विष्णुनाम, बांळप्रकुंद ने राजाराम । सारो भक्त छे रुडो सुतार, भक्तजन नगिन भावसार ॥२३॥ एहआदि हरिजन जेह, वसे शहेर भरु-चमां तेह। एह नर्मदातटना जन, हवे कहुं तापितटे पावन ॥२४॥ पूर्वछायो-सुंदर भक्त सुरतना, अति होंशिला हरिजन । स्वामिसेवामां समर्प्यां, जेणे तन मन ने धन ॥२५॥ तेने करी रह्या वचने, मने कर्यु मूरति मनन । धने करीने जे कर्यु, ते कर्डु सांभळज्यो जन।।२६॥ वेढ विंटि करमुद्रिका, पोचि सांकळां कडां हाथ। काजु बाजु बेरखा, कुंडळ ग्रुगट माथ ॥२७॥ माळा हार मादिळयां, अने तोडा कंदोरा तेह । दुगदुगि उर उतरी, वळी कनककंठी एह ॥२८॥ शिरपेच ने खर्णतोरो, वळी धरी कलंगी शिश्व । एह आदि आभूषणे, जेणे पूज्या श्रीजगदीश ॥२९॥ सुरवाळ सुंदर अति, झिणो जामो जरकशि अंग । शाल दुशाल

शोभता, शिरपाग सोनेरी सोरंग ।।३०।। छतर चमर अबदागरी, वळी कराच्यो सोनेरी साज। हेममय कर्यो हांसलो, लाच्या पालखी प्रभुकाज ।।३१॥ गादी तकिया गादलां, गालमञ्जरियां अवल । पलंग वळी पाथरणां, मानुं ओशिसां मखमल ॥३२॥ कुंकुम केशर कस्तुरी, अत्तर चंदन एह । अगर करपुर आरती, करी पूज्या हरिने सनेह ॥३३॥ पुर्या मनोरथ मनना, वळी थयां पूरणकाम । एवां जन अनुपनां, हवे लखुं कांयेक नाम ॥३४॥ चोपाइ-वडा जन छे वणिकमांइ, धन्य भक्त भाइचंदभाइ। भक्त भिखारिदास छे एक, दोय गोविंदभाइ भाविक ॥३५॥ जादवजि ने जीवणदास, गंगादास भजे अविनाश । मोति मोरार मनछाराम, लक्षमीचंद ने लखनाम॥३६॥ नारायण ने नर-सीदास, लल्छ बिजे तजि जग काश। रामदास ने सुरजराम, रूपचंद छे भक्त अकाम ॥३७॥ हरिकृष्ण आदि बहु जन, करे वणिक हरि-भजन। महालक्षंमी जीवी जतन, एहादि शा बाइयो हरिजन ॥३८॥ काजु भक्त कणबी उदार, भजे हिर करी बहु प्यार। भला भक्त छे गिरधरलाल, भजि हरि नागर निहाल ॥३९॥ भक्त भगु ने दुलभ-राम, हरिगोविंद भगवान नाम । लक्षमिचंद ने माण्यकभाइ, भवानीदास दोनी भलाइ।।४०।। पुरुषोत्तम दो दयाळजि, दया-राम कुबेर कल्याणजि । जेठो मिठो ने मनछाराम, त्रण्य नारण नरसिराम ।।४१।। लखो लक्षमिदास ने भाणो, जेठो गोपाळजि जन जाणो। तापिदास ने तुलजाराम, पीतांबरादि भक्त अकाम ॥४२॥ एह आदिदइ बहु भाइ, बाई कस्तुरी ने लाडुबाइ । एहादि कहीए कणबी जन, हवे कहुं ब्राह्मण पावन ॥४३॥ द्विज-भक्त कहीए अंबाराम, वेंकटेश्वर सुंदर नाम । प्राणशंकर जगजी-

वन, सुरभाइ ते भक्त पावन ॥४४॥ मोरारजि ने भट्ट फकीर, एहादि द्विज भक्त सुधीर । काजु भक्त कायथमां कहीए, नरो-त्तम इछाराम लहीए।।४५॥ सारा भक्त छे सुतारमांइ, अंबाराम गोपाळजिभाइ । भक्त भाणो भिखो वजेराम, जन कानो नारा-यण नाम ॥४६॥ सोनी भक्त कल्याणिज सारो, रुडो रुपचंद छे कंसारो। भक्त सुइ धनजि निदान, आतमाराम ने भगवान ॥४७॥ हरिजन एक कुंवरवाई, एहादि भक्त कहीए मेराई । खरा भक्त छे खतरि मांइ, गंगाराम हेमचंद्रभाइ ॥४८॥ भगवानजि ने धर्म-दास, जेरामने मने विशवास। हरिजन एक देवबाइ, एह भक्त खत्रि कुळमांई ॥४९॥ भक्त परशुरामजि शिलाट, भजि हरिने तज्यो उचार । भक्त काछिया भाणो ने नानो, सखिदास सत-संगी मानो ॥५०॥ भक्त गुलाल ते भावसार, हरि ईशु आदि छे अपार। नाइ हरखिज ने गोबिंद, भक्त पीतांबर ने उमेद ॥५१॥ एहआदि छे जन अपार, न थाय नामनो निरधार । कवि करवा अमापनुं माप, एवो नथी ए समर्थ आप ॥५२॥ जेजे लख्यां न लखाणां जन, प्रभु मळ्ये छे सर्वे पावन। एह बेठा लाभ मोटो लइ, सरवे शहेर सुरतमां रइ ॥५३॥ धन्य जन धरमपुरमां, जेने हरि वहाला छे उरमां। कुशळकुंवर बाई हरिजन, जेनुं अति-निरमळ मन ॥५४॥ प्रभु मळवा कर्यो बहु प्रयास, विना मळ्ये नाव्यो विश्ववास । ज्यारे मळिया सुंदरश्याम, त्यारे ठरि बेछं मन ठाम ॥५५॥ पछी राज साज सरवे वित्त, सोंपी हरिने थयां नर्चित। एम करिलिधुं निजकाज, तन राख्युं नहि कर्युं ताज॥५६॥ धन्य सूरजकुंवर कहीए, जेना प्रेमनी पार न लहीए। लाइबाइ सुत वजेदेव, तेणे पण करी हरिसेव ॥५७॥ बापु आदि क्षत्रिभक्त

जाणी, प्रश्व भक्त दाजि परमाणी । एहआदि वाई भाइ जेह, बसे जन धर्मपुरे तेह ॥५८॥ वडा भक्त वांसदा मोशार, जेने बेर पधार्या मोरार । बहु प्रेमे करी पूज्या हरि, क्षत्रि रायसिंघ मातुशरि ॥५९॥ मोटा भक्त छे मुंबईमांइ, भक्त सुतार ते रुडो-भाइ। सारा भक्त छवारमां लहीए, रामी पुंजो ने आणंद कहीए ।।६०।। उको मांडण देवशि जीवो, चेलो भक्त छवारमां लेवो। जगजीवन भक्त कंसारो, शेठ कृष्णजि छे जन सारो ॥६१॥ सइ रैयो मनजि प्रागजि, लिघो लाओ भगवान भजि । शवजि ने खटाउ खवाणो, एहादि जन मुंबईये जाणो ॥६२॥ पूर्वछायो— भन्यधन्य आ अवतारने, जेथी ओधर्या बहु जन । तेने कहेतां थाके रसना, थाके मनन करतां मन ॥६३॥ जेम पीयूव पाननो, न होय अंतरे अभाव । तेम जन चितवतां, मारा मनमां छे उत्साव ॥६४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशि-ष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये सुरत मुंबइना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने पचिशमुं अकरणम् ॥१२५॥

पूर्वछायो—निक भक्त निमाइना, जेनां अतिआकरां अंग। करडां कठण वचन, जेने शिशसाटे सतसंग।।१।। बिजां बहु दुभाखरां, जेनो एज बोलवा ढाळ। पछी करे वारता, ज्यारे पहेलि आपेगाळ।।२।।समझाव्या समझे निह, अति जहमित अडवंग। एवा देशमां अवतरी, जेणे कयों साचो सतसंग।।३।। एवा जन पावननां, कहो केम न लखिए नाम। लखवा लालच्य ग्रुजने, जेने मळ्या खंदर श्याम।।४।। चोपाइ-जन जीवण भक्त वणिक, कणवी भक्त खुशाल छे एक। एहादि मिक्त प्रभुनी करे, रहि गाम चोलिमहेश्वरे

॥५॥ भक्त काछिया देवजि नाम, नारायण मिठो गंगाराम। बाई जीवी मानु ने जसोदा, भजे हिर रहे मन ग्रुदा ।।६।। कणबी फर्श्च ने खुशालभाई, बाई गंगा ने खुशालिबाई। एहादि भक्त रहे झांख-रोडे, भजे प्रभुजिने भाव रुडे ॥७॥ द्विजभक्त हरिने केशव, खत्रि उद्भव सोमो माधव। हरिजन विरुवा जसोदा, वसे वालिपर मनग्रदा।।८।। क्षत्रिभक्त धनोबा अमरी, रहेगाम कुकशि भजे हरि, कणबी गोपाळ ने भिखोभाइ, नागर पानबाई हरबाई ॥९॥ एह आदि हरिजन जेह, वसे गाम सुंदरेले तेह। कणबी भक्त नारायण दयाळ, नानजि लखमण ने लाल ॥१०॥ मकु माधो भिलो देवो 🕟 हीरो, सुरजि खिमो भक्त सुधीरो । नारायण आदि बहु भाइ, सुंदर रतन ने गंगाबाई ॥११॥ क्षत्रिभक्त छे माधव नाम, एहादि जन रहे खलगाम। कणिब भक्त हिरो ने ओंकार, जन रहे खल मोटि मोझार ॥१२॥ कणबी भक्त रामो हिरा दोय, देवो ने जन भिखिबा सोय।क्षत्रि इंद्रराज ने भिखाजि, रहे मोरंगिडये मोह तजि॥१३॥ कणबी भक्त खिमो ने मोहन, डुंगर केशव खुशाल जन। क्षत्रि भक्त मानसिंघ नाम, एहादि जन विखुडा गाम॥१४॥ द्विजभक्त चंद्रेश्वर मकुन, बाई बाली मिठि हरिजन। कणवी भक्त देवो ने पुंजन, धनो प्रेमो बेचर लालो जन ॥१५॥ मक्त रामजि ने भाग्यबाई, रहे जन ए धामणामांई। कणबी भक्त लालो पर्श्वराम, भजे हरि गुरु जले गाम ॥१६॥ कणबी भक्त सुंदर ने पूंजन, रहे मातपुरे हरिजन । कणबी काशि वालजि गोविंदा, बाई गंगा वाछ वळि नंदा ॥१७॥ भक्त काछिया रुखडु दल्ल, प्रेमचंदनुं भजन मल्छं। भक्त गुलाब विरजि नाम, एहादि जन रे ठणगाम ॥१८॥ कणबी भक्त नथु कालु दोय, हिरो जादव ओंकार सोय। कुरजि ने जगदीश

नाम, भाग्यवाई रहे कौडिये गाम।।१९।। तुलाधार तानोजि भगत, रहे वरे भजे भगवंत। सोनी भक्त एक पांड्रंग, रहे आसेरै न करे कुसंग ॥२०॥ कणविभक्त काल लिंबु नाम, वाई रतन रहे धरगाम। द्विजभक्त छे लक्षगीराम, ओंकार ने विष्णुराम नाम ॥२१॥ वाई खुशाल ने गंगावाइ, रहे जन मंडलेश्वरमांइ। एह आदि छे जन अपार, कह्या निमाडदेश मोझार॥२२॥ खरा भक्त कहीए खानदेश, हेते भजे हरिने हमेश । तन मन धन तुच्छ करी, राख्या एक अंत-रमां हरि ।।२३।। एवा उत्तम जन छे जेह, तेनां नाम सुणो सहु तेह। मोटा मक्त मालेगाम माइ, जन भावसार नथुभाइ॥२४॥ भक्त लखमण पर्श्वराम, जन कल्याणादि मालेगाम । कणवि भक्त खुशाल ने राम, शिवराम रहे जाफिगाम ॥२५॥ कणवी भक्त कहीए तापीदास, भक्त भिखो जक्तथी उदास। सदाशिव ने प्रभुनी प्यास, पर्श्वरामादि वरखंडे वास ॥२६॥ मक्त भाणजि कणिब कहीए,जन ए सोनगिरिये लहीए। शेठ भक्त छे फकीरचंद,जलगा-ममां भजे गोविंद ॥२७॥ बहु भक्त बुरानपुरमां, जेने अतिशे भाव उरमां । सुंदर वस्त्र करावी सोनेरी, जेणे हेतेशुं पूजिया हरि ॥२८॥ पूजि हरि थयां पूर्णकाम, कहुं तेनां सांभळज्यो नाम। भक्त शा गोविंदभाइ नाम, लिंबडा शा ने त्रंबकराम ॥२९॥ वलभराम उदा-राम कहीए, गुलाबजि पीतांवर लहीए। बाई लाडकी गंगा रतन, एहादि वणिक हरिजन ॥३०॥ द्विज बापु मगवान नाम, रामकृष्ण ने केशवराम । गोपेश्वर आदि द्विजभाइ, हरिजन रुडां रामबाई ।।३१।। क्षत्रिभक्त छे बुलाखिदास, मुळचंद गणपत पास । कणबी भक्त ठाक्करदास दोय, रामदास दोय भक्त सोय ।।३२।। हरिभाइ ने प्ररुपोत्तम, त्रिलोचन नानो नरोत्तम । लालदास दोय राम-

चंद्र, भगवानदास भक्त सुंद्र ॥३३॥ वेलिबाइ आदि हरिजन, कक्षां कणबी कुळे पावन । सोनी ढुंढु ने भक्त डुंगर, सुरजि ने नारण सुंदर ।।३४।। मक्त कृष्णाजि आदि छे भाइ, भजे भावे हरि उरमांइ। रेवा देवु जमना ने मोनी, एह आदि बाइयो भक्त सोनी ॥३५॥ गोपीराम भक्त छे सुतार, भक्त भाउजि ब्रह्मक्षत्तर ! फकीरचंद अर्जुन कलु, वैक्यजातिमां भक्त दयाछ ॥३६॥ चिंतामण नागु भिखो भावी, बाई प्रेमा ने मेनां साळवी। तेली भक्त शिवो जन सोय, दुलम ने लालदास दोय ॥३७॥ जानजि नथु उत्तम जाणो, छिबलदास बलभ वखाणो।बाई नंदा वे बाई रतन, एहआदि तेलि हरिजन।।३८॥सइ निहालचंद छे जन, मोति नानो ने बाई रतन। खत्रिमक्त नथुभाइ कैये, कोळि भक्त वलभदास लैये।।३९॥ एहआदि बाइ भाइ घणां, सर्वे सेवक छे खामितणां। रहे बुरानपरे ए जन, करे खामीश्रीजिनुं भजन ॥४०॥ द्विज भक्त वाषुभाइ नाम, भजि हरि कर्यु निजकाम। राज साज मेलि माल धन, थयो भक्त पुनामां पावन ॥४१॥ शेठ भक्त एक सेवाराम, भजे हरि रहे उजेण गाम । द्विजभक्त दिपी शंभुराम, ओंकार रे वेलाखेडे गाम ॥४२॥ द्विज मयाराम ने ओंकार, मक्त आंजणो दुदो उदार। एह वसे गाम मिणमांइ, भजे स्वामि जाणि सुखदाइ।।४३।। क्षत्रिभक्त छे सरदारसिंघ, वसे मालि-खेडिये अन्य। हवे हिंदुस्थाननां जे जन, कहुं पवित्र भक्त पावन ॥४४॥ धर्मरीत्यमांहि घणुं धीर, वाचका छे साचा शूरवीर। एवा जननां लखशुं नाम, जेने मळ्याछे सुंदर श्याम ॥४५॥ धन्यधन्य अक्त धुवामांइ, जेणे हरिशुं करी सगाइ। पडी टेव प्रकट सेववा, एह जनतो लखवा जेवा ॥४६॥ भक्त छुवार नाम मदारी, राम वकश ने गिरधारी । ठाकुरदास विदाहरदास, कुंढेरामनिये तजि

त्राश्च ॥४७॥ एहादि मक्त कहीए छुवार, द्विज बुद्धजि धुवा मोझार। बहु भक्त छे बराई गाम, जेने मळ्याछे सुंदर इयाम ॥४८॥ भक्त खुवार सकदु भैया, भक्त रामफल वे किशिया। रहे च्यार तियां हरदास थोली, चर्णदास लोहरका ने भोली ॥४९॥ मानसिंघ ग्रुल-चंद मोजि, मनछा दो मजला डुवोजि। मोति मनसुक लछमन, नेक सिया पोसु कुलमन ॥५०॥ लखु नेनसुख ने नथुई, चांदु चौकरा अंगना सोइ पेजा आदि छे भगत भाइ, हवे कहुं हरिजन बाई।।५१।। लाडु विरु वखतु पिरानुं, मकु मुलि मथुरां ए मानुं। तेजु खरुपि अलपु धरमा, गढु आदि बाईयो लुवारमां ॥५२॥ द्विजभक्त छे पुरना नाम, दो लछमन ने दयाराम । शकटु रघुनाथ ए माइ, खिमा अंतकु सुमित्राबाई।।५३॥ भक्त तुलाधार किपाभाइ, एहादि जन रहे बराइ। हरिजन हिंदु राओ कहीए, द्विजभक्त ते भगानी लहीए ॥५४॥ जाणी वात साची नहि फेर, समझी रह्या ते गाम ग्वालेर । जाण्या अजाण्या जे रह्या जन, रहेज्यो मुज उपर प्रसन्न ॥५५॥ पूर्वछायो-धन्यधन्य एह जनने, जेणे भज्या श्रीभग-वान । तन धन मने नैव गण्युं, नैव गण्युं जग अपमान ॥५६॥ त्रोडि त्रण्ये लोकशुं, जेणे जोडी हरिशुं प्रीत । लइ लाभ अल-भने, करिगया जगमां जित ॥५७॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तविंतामणिमध्ये निमाड तथा हिंदुस्थानदेशना हरिजननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने छविशमुं प्रकरणम् ॥१२६॥

पूर्वछायो-बहु जन बुदेलखंडी, समझ्या साची वात। परोक्षयणे जे प्रिछता, ते जाण्या हरि साक्षात ॥१॥ तेणे आनंद आवियो, वळी भावियो सतसंग। दर्शन करी दयाळनां। चडी- गयो चित्तमां रंग।।२।। रुडे भावे रसोइ करावी, हरिजने जमाड्या नाथ । अत्तर चंदन हरिने अंगे, हरिजने चरच्युं हाथ ॥३॥ व्रेमेशुं पूजा करी, बळी पहेराच्यो पोषाग । धूप दीप ने आरती, कर्या दंडवत अष्टांग ॥४॥ अलभ्य लाभ लइ करी, थया पूरण-काम। एवा जन अनघनां, हवे कहुं सांभळी नाम।।५॥ चोपाइ-द्विजमक्त छे भाइ वखत, जानकी श्रीराम ने श्रीपत। नथु हठिराम छोटाराम, आज्ञाराम दुवाराम नाम ॥६॥ मांडण मुळचंद मराखन, गणेश परमेसरि जन। रामदास ने कृष्ण झुलारि, भोलाराम दोलतिया दुलारी ॥७॥ विहारिलाल ने बंसिधर, मद-नसिंघ दो मोति सुंदर । राजाराम ने दो रतिनाम, कनहिराम कहीए दो नाम ॥८॥ खुमानराम नवनसिंघ, केशरि रामतुलसि अनंघ । ठाकुरदास दीय तुरत्यराम, गोविंददास ने गुमान नाम ॥९॥ बाजि राओं ने धरमपाळ, पेजा रामादि द्विज दयाळ। एह आदि छे भगत भाइ, हरिजन छे ठकुरु बाइ ॥१०॥ हवे कहुं जाट हरिजन, प्रभु भिज जे थया पावन । दिलिपसिंघ माधी-सिंघ नाम, पारसिंघ ने लालजिराम ॥११॥ गिरधारि गंगाराम कहीए, सुखराम सोनेसिंघ लहीए। बहोरनसिंघ आदि भाइ, खरा भक्त ए क्षत्रियमांइ ॥१२॥ हरिजन बाइ बा वखति, उमे-दिकानी अचळमति । एह जन मोटां जाटमांइ, हरि भजिने करी भलाइ।।१३।। घणा भक्त छे गुजरमांइ, जेने प्रभ्र वहाला उरमांह। वैश्य जातिमां मोटा भगत, सुणो तेना नामनी विगत ॥१४॥ गोविंदराम ने हीराराम, भक्त दुलारि दोये अकाम । छनेराम बुद्धजि अमृजि, साहेबराम माण्यक मानजि ॥१५॥ दीपशा **झवेर प्रानमुख, रामलाल हरि सनमुख। एह भक्त कह्या वैश्य** 

जाति, हवे सांभळज्यो सोनी नाति ॥१६॥ नथु मानजु ने सरु-राम, ठाकुरदास भक्त वंसिनाम। तेलि भक्त गोविंदजि कहीए, जन बुद्धजि आदि ते लहीए ॥१७॥ भक्त तंबोळि फिकरा नाम, नाथु हिरा कहीए देविराम । कणबी भक्त छे नाम पूरणा, एह आदि छे भक्त ते घणा ॥१८॥ सर्वे वसे ए सांखनिगाम, भनि हरि कर्युं निजकाम । द्विज लक्षमन भोळाभाइ, वसे गाम ते साहनमांइ।।१९।। धन्य गाम द्याराना दास, जेने एक हरिनी छे आश । क्षत्रिभक्त छे राओत नाम, हरिसिंघ ने योवदराम ॥२०॥ सुखपाल माण्यक नथन, प्राणसिंघ भिमजि ढुंढन । हिंदुराम हरि-पाळ कहीए, घाशिराम ने दलिल लहीए ॥२१॥ छतुरामदास उमराव, हाथिराम देवजिने भाव । कमळजि ने खुमानसिंघ, ठाकुरराम ढांकन अनघ ॥२२॥ सुतान आदि सतसंगि भाइ, हवे कहुं हरिजन बाइ । बाइ हरिकुवर वचनां, मरजाद जेकुं-वर दुनां ॥२३॥ कायथ दिलिपसिंघ कहीए, द्विज लछमनादि जन लहीए। एहादि भक्ति प्रभुनी करे, वसे दास हरिना दवारे ॥२४॥ भक्त कायथ ते छोटेराम, सोनेराम ने लालजि नाम । पवित्र भक्त प्रपेटगामे, जेणे भज्या हरि निष्कामे ॥२५॥ धन्यधन्य देश पंचमहेल, कहुं जन जे तेमां वसेल। गुजर ठाकर छे हरिशिंघ, काशिराम छे भक्त अनय ॥२६॥ राजसिंघ चंद्रहंस नामं, अमरिधंघ ने तुलसिराम । बुद्धशिंघ अखेशिंघ आनंदसिंघ ने रामफल ॥२७॥ परशुराम करणशिंघ कहीए, सोबतसिंघ जोधाराम लहीए। रुपशिंघ कृष्णदास जेह, बालचंद्र इंद्रजित तेह ॥२८॥ एह आदि गुजर अपार, रहे जन गाम श्रोरा मोझार। भक्त गुजर छे राजाराम, बुद्धारींघ ने लल्लमन नाम ॥२९॥ बाइ सुमेदा विचित्र धतुं, पांचु पिरातुं बाइ रतनु । जन सुजान आदि छे बाइ, रहे गाम ए रजारिमांइ ॥३०॥ भक्त कायथ झवेर नाम, गोरेलाल जन जोधाराम । दास दुलारि नाम उचरिये, एह आदि रहे गाम खरिये ॥३१॥ गुजर भक्त कल्याण कहेवाय, जन नवल ने गाजिसाय। एह भक्त रहे गाम जतति, भजे हरि फरे नहि मति ॥३२॥ द्विज भक्त एक नथुराम, रहे बरिकसराये गाम। भक्त अर्जुन एक छे नाइ, रहे गाम चितोरा तेमांइ ॥३३॥ वैश्य भवानी ने भोलेराम, छोटेराम बागवहि गाम। जाट भक्त बुद्धाविंघ जाणी, दरियाओ शिघ परमाणो ॥३४॥ बादरशिघ ने ईश्वरदास, ठाकुरदास भजे अविनाश । धनसिंघ गणेश भवानी, धर्मपाळ ज्ञानसिंघ ज्ञानी ॥३५॥ नाथु गोविंद ईश्वर भाइ, तुलसि रहे गाम मेनामांइ । गाम हरशिमां हरिजन, कायथ नंदलाल पावन ॥३६॥ मदारि रामसिंघ अमाना, मंगळ खुशियाल भवाना । मनसुक मुला ने नथुवा, दोलतिय कृष्णाजु कलुवा ॥३७॥ बुधा सिता आदि बहु भाइ, खरूपि फुलिया पंजीबाई। बाई नेनु दिपु आदि जन, वसे गाम हरिश्ये पावन ॥३८॥ भक्तं छुवार कृष्ण निदान, यसताबदना हरिजन। वैश्य गुलाब ने कृष्णदास, भजि हरि तजि जगत्रास॥३९॥ भाइ भक्त मिन राजाराम, एह पण रहे हरिश गाम । भक्त लुवार छे घाशिराम, कयारि ने नारायण नाम ॥४०॥ रामफल वलुवा गणेश, गढुवा हरि भजे हमेश। भोइ भक्त ते कलुवा कहीए, जन नाइ गुंगचिया लहीए।।४१॥ एहआदि जेह बाई भाइ,रहे गाम मगरोनिमांइ। एहआदि जन बहु जाणो, देश पंचमहेले परमाणो ॥४२॥ पामी अनेक परचा आप, जाण्या हरि थयो मनथाप ।

घणा जन रहे गंगापार, भजे नारायण नरनार ॥४३॥ धनहरा ने धर्मना मोळा, एवा जीव विजा जियाबोला। एवा देशमां करी निवास, धन्य जेजे काच्या हरिदास ॥४८॥ एह जननां सांमळी नाम, हरि मळि बेठां ठरि ठाम । द्विजभक्त कहीए चंदिलाल, भजि नारायण थयो निहाल ॥४५॥ हरिजन खुशियालदास, रामदिनने थयों समास। ठाकुरदास ने चुडामण, रहे लिथपनगर ब्राह्मण ।।४६।। भक्त अगर वाल वणिक, वेणिराम नामे जन एक। लाच्यो श्रीहरिसारु पोशाग, क्षिणी जामो ने मुगलि पाग ॥४७॥ ते धारि हरिए हेत करी, जने जोया ते नयणां भरी। निर्खि नाथ लिधो जेणे लाउ, एह जन रहे लखनाउ ॥४८॥ कहुं वछघोश देश-वासी, अतिउत्तम ने विश्ववासि । साधुखभाव अंतरे अति, केदि धर्मथी न चळे मति ॥४९॥ एवा जन निरमळ जाणी, कहुं नाम तेनां हुं बखाणी। द्विजभक्त छे हरगोविंद, निरखि नाथने पाम्यो आनंद् ॥५०॥ तेनो छे पवित्र परिवार, सरवेने खामिनो आधार। भावे भक्ति प्रश्रुजिनी करे, वहु बाई भाइ रहे डेहरे ॥५१॥ देश गाम नाम लिख जात्य, छे अपार कहुं हुं िश वात। भूतकाळनी में नथी भाखी, नथी भविष्यनी लखिराखी ॥५२॥ व्रतमान काळनी में कही, तेपण जथारथ नथी थइ। जेम ऋषि वावरतां धन, पळेपळे संकोचाय मन ॥५३॥ तेम कहिछे थोडामां वात, सत्य मानिलेज्यो मारा भ्रात । जेम अर्णवे लहरी अपार, नवी निपजे न आवे पार ॥५४॥ तेम हरिथकी हरिजन, नवा निपत्रे छे निशदन। तेने लेखिने लखवा जाय, एवं तो केदिये न मनाय ॥५५॥ पूर्वछायो-क्रपदादुर क्रपनी, भाइ क़दी पामे पार । पण सरे जातां साहेरने, लागे लगारेक बार ॥५६॥ तेम सतसंग सागर, भर्योछे भरपुर।

तेनो जे जन पार लेवा, जाय ते मित भूर ॥५७॥ एक जिमे जननां, नोय नामनो निरधार। सहस्रज्ञंग जिमे शेषजि, नथीनथी पामता पार ॥५८॥ कोयक नर आकाशनो, विक्र लेवा इच्छे अंत। पण अनल ते ओरां रहे, जे बहु पांखे बळवंत ॥५९॥ तेम सतसंग सरवे, छे जो अनंत अपार। किव अंडज उडे घणुं, पण अंत्ये पामे हार ॥६०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये हिंदुस्थानना हरि-जननां नाम कह्यां एनामे एकसो ने सताविश्तमुं प्रकरणम् ॥१२७॥

पूर्वछायो-देशदेशना दासन्।ं, लखियां गाम ने नाम । हवे लखवा परचा, मारा हैयामां घणी हाम ॥१॥ प्रभु तियां प्रभुताइनी, आश्चर्य न मळे कांइ। पूरणकाम पुरुषोत्तम, सरवे सामर्थि जे मांइ ॥२॥ तेह प्रभुजि प्रकटी, कर्यां बहु बहु काज । लौकिकमां अलौकिक लीळा, देखाडि महाराज ॥३॥ समैया सदावत मांहि, अखुट रह्यां जे अन्न। महारुद्र अतिरुद्र आपे, कर्या विष्णुजगन।।।।। तेहमांहि तलभारनी, वळी नावी खरचतां खोट्य। विना नाणे जग जाणे, वित्र जमाड्या कोट्य ॥ ५॥ चोपाइ-तेह विना जे परचा अन्य, कहुं सांभळज्यो सहु जन। प्रथम पर्वतभाइनी वात, कहुं वर्णवी तेह विख्यात ॥६॥ कणबी कुळमां कारणस्त्रप, अति उत्तम भक्त अनुप । खामी रामानंदजिने मळी, जेनी देहदशा तेह टळी ॥७॥ पछी खामी सहजानंद जेह, पूरणब्रह्म प्रकट्या तेह । ते प्रभु प्रकटनी मूरति, तेथी न रहेति वेगिक वृत्ति ॥८॥ तीय उपज्यो एम विचार, केवो हशे नृसिंह अवतार । हतुं अंतर ए विचार समेत, गया कृषि करवाने खेत ॥९॥ राखी यृत्ति प्रभुमां एकतार, खामी सहजानंद मोझार । ३३ भ०चि०

जोइ महाराजश्रीनी मूरति, सुखसागर सुंदर अति ॥१०॥ पछी जोयुं तेने आसपास, दिठो अतिअति परकाश । तेमां चोविश जे अवतार, दिठा जुजवा रूप आकार ॥११॥ मत्स्य कच्छ वाराह नृसिंघ, वामन परशुराम अनघ। राम कृष्ण बुध ने कलंकी, पुरुषअवतार अलौकी ॥१२॥ सुयज्ञपुरुप जे अनुप, कपिल दत्तात्रेयखरूप । सनकादिक ने बद्रिपति, महाध्रु वरदेण मुरति ।।१३।। पृथु ऋषभदेव राजन, हयप्रीव हरि धारी तन। हंसमूरति धनवंतरी, आव्या व्यास नारद तन धरी ॥१४॥ एवां चोविशे हरिनां रूप, एकएकथी अति अनूप। दिठां पर्वतभाईए पोते, आब्यो अतिआनंद ते जोते ॥१५॥ हैये हरष मुख बोले वाणी, दिघां दर्शन नाथ दया आणी। पछी प्रेमेशुं लाग्या छे पाय, अतिआनंद उर न माय ।।१६।। जोयां चोविशे रूप चिंतवी, तेणे अतिसुख शांति हवी । पछी प्रकट प्रश्नुनं जे रूप, तेमां समाणां सर्वे खरूप ।।१७।। ते रूप रह्यं हृदामोझार, देखे अंतर भिंतर बहार । अर्धघडी ते अळगुं न रहे, तेथी सुख जे इच्छे ते लहे ॥१८॥ जेम चिंतामणि होय कने, जेह चाय थाय तेह तने । लोक प्रलोक अगम न रे, जेजे आपे इच्छे तेह करे ॥१९॥ तेम चिंतामणि हरिनुं रूप, जेना अंतरमां रह्युं अनुप । तेह जन जे ।चिंतवे ते थाय, लोक परलोक इच्छे त्यां जाय ।।२०।। वैकुंठ गोलोक श्वेतद्वीप, तेहने देखे जैम समीप। अक्षरधाम आदि लोक जेह, देखे सांभळे कहे वळी तेह ।।२१।। एम परवतभाईनी द्रष्टे, निरावर्ण आवर्ण नहि अष्टे । एतो वात अलौकिक अति, लोक परलोके जेनी गति ॥२२॥ एह रीत्ये परचा अगणित, थाय पर्वतभाइने नित । एतो परचो कहा। में एक, एवा बिजा थयाछे अनेक ॥२३॥ वळि वात विजि एक कहुं, छेतो अपार पार केम लहुं। भक्त एक अनुपम जाणो, नाम मुळजि जाति छवाणो ॥२४॥ इतो जनमांतरे जीव सारो, सत्यधर्म लागतो ते सारो । पछी जन्म धार्यो एणे ज्यारे, मळ्यो कुसंग न रह्यो एवी त्यारे ॥२५॥ कहुं जन्म धरी जेजे कर्यु, थइ चोर परधन हुएँ। मोटा चोरमांहि ते मोवडी, हरे वस्तु जे नजरे पडी ॥२६॥ एवा बिजा अवगुण बहु, जाणे जन जगतमां सहु। फरे हरवा वस्तु हमेश, तेने अर्थे जाय देशोदेश ॥२७॥ एक दिन आव्यो प्रभुपास, जियां हता हरि हरिदास। भावाभावे थयां दरशन, थइ धारणा भुलियो तन ॥२८॥ वळी अंतरवरति पाछी, थइ सहजमां समाधि साची। दिठां बहु लोक बहु धाम, मान्यो पोताने पूरणकाम ॥२९॥ पाम्यो समाघि सामर्थि अति, इच्छा आवे तियां करे गति। जुवे सुरपुर ने कैलास, सत्य वैद्धंठ गोलोके वास ॥३०॥ श्वेतद्वीप ने अक्षरघाम, देखे ब्रह्मनगर निष्काम । आवे जाय तियां अहोनिश, देखे हरिनां धाम हमेश ॥३१॥ तेनी आवी करे वात वळी, पामे आश्वर्य सहु सांभळी। माने प्रताप महाराज तणो, शुं कहीए मुखथी घणोघणो ॥३२॥ तप तीर्थ वत कोटि करे, देह दिन भिन भूमि मरे। तीय न पामे खपने सुख, माटे मोट्यप शुं कहीए सुख ॥३३॥ पण कहेवानुं छे ए कारण, ज्यारे मुळजिने थाय धारण । त्यारे तन मन भान टेळे, ज्यारे ब्रह्ममहोलमां पळे ॥३४॥ त्यारे वाटमांइ मळे वाम, रोकिराखे वे घडी ए ठाम । ते वात करी महाराजपास, सर्वे सुणी बोल्या अविनाश ॥३५॥ हवे जा ज्यारे धारणामांइ, पळ एक न रोकार्चुं क्यांइ। मळे रुद्रतो वाट मुकावी, कहेज्ये थाय तेवुं आंहि आवी ॥३६॥ एवं सांभळि मुळजि चाल्यो, जातां वाटे रुद्रे मळी झाल्यो । कहे जाछ उतावळो कियां, घडी बेलगि रोकिश इयां ।।३७।। त्यारपछी तने जावा दैञ्च, जोतुं अतिउतावळो हैश। त्यारे मुळजि कहे महाराज, तमे रोकशो मां मने आज ॥३८॥ आज जावुंछे वहेलेरं वळी, तारी खाळयी नहि रहुं खळी। त्यारे वाम कहे बोल्य विचारी, जा तुं जोरे तो नाखुं हुं मारी ॥३९॥ त्यारे मुळजि कहे सुण्य मारी, आज जटा हुं चुंथिश तारी। वदतां वाद आव्या बेड बाथे, करे युद्ध जन जटिसाथे ॥४०॥ बेड जीध बरोबर बळी, कीय केने नापे लेश लळी। पछी मुळे मनमां विचार्य, बळ प्रकट प्रभुनुं संभाषुं ॥४१॥ त्यारे आवी सामर्थि अति अंग, कर्युं कपर्दिनुं अंगभंग। पड्या कामारि कडाको थयो, छुटी जटा छटा सुरशियो ॥४२॥ आसपास जुगल जोजने, दीई सांभव्यिं सहु जने। जिति जन आच्यो प्रश्रुपास, कह्युं थयुं जेह तेह दास ।।४३।। सर्वे सांभळि आश्वर्य पाम्या, वळतां श्रीजिचरणे शिश नाम्यां । कहे धन्यधन्य महाराज, थयो अलौकि परचो आज ।।४४।। सुणी सत्संगी थया रिक्यात, क्रसंगिने कही नहि वात । एम परचा निरंतर घणा, कहीए केटला मुळजितणा ॥४५॥ प्रकट प्रभुशी परचा थाय, तेती लखतां केम लखाय। कहेतां सुणतां आवे आनंद, माटे कहुं छुं सुणो जनषृंद ॥४६॥ इति श्रीमदे-कांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्यामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे पर्वतभाइ तथा मुळजिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने अठ्ठाविशमुं प्रकरणम् ॥१२८॥

पूर्वछायो-बळी परचा वर्णवी, कहुं अलाकिक एह। सांभ-ळज्यो सहु श्रवणे, करी अधिक सनेह ॥१॥ मोटा संत महारा-जना, छे शिरोमणि संतदास । फरे एकला उत्तरे, जेने नहि

क्षनमन त्रास ।।२।। मानी बचन महाराजनुं, धार्युं अंतरे अनुप। तेदिना तनभान भुली, थया तेह तदरूप।।३॥ तेनी वारता सांमळी, लखुंछुं लवलेश। जे देहछते सिद्धदशा पामी, फरेछे उत्तरदेश॥४॥ चोपाइ-धन्यधन्य साधु संतदास, जेने नहि आ तनअध्यास। पिंड छतां पामी सिद्धगति, फरे लोक परलोके सुमति ॥५॥ तेने कृपा करी कहे कृपाळ, देखिआवी दछिज दयाळ । तियां जावुंतुं अवश्य अमारे, सरशे अर्थ ते गये तमारे ॥६॥ कहेज्यो आहिनी सरवे वात, सुणी दछ थाशे रिक्रयात । बीजा मुक्त तियां पर दश, एक बाई सुंदर सुजश ॥७॥ तेने कहेल्यो आशिर बचन, जाओ वेगेशुं वेलेरा जन । सुणी वचन चाल्या संतदास, दूरदे-शमां दल्जि पास ॥८॥ अति अगम विकट वाट, घणुं नदीना ओघट घाट । नरतने तियां न जवाय, वाटे मनुष्य मनुष्यने खाय ॥९॥ तियां चाल्या संतदास जन, मानी महाप्रसुनुं वचन। करी इच्छा ने मिचिछे आंख्यो, उच्युं पंड आवि जाणे पांखो॥१०॥ पळ एकमांहि तियां पहोता, दिठा दछजिने मुक्ते सोता। उठि आव्या सामा संतदास, हेते मिळिने बेसार्या पास ॥११॥ करी पूजा मिळ विळ जन, पछी भावे कराव्यां भोजन । बेठा संतदास पास दल्ज, पुछ्युं प्रश्न भावे भरी भर्छ।।१२।। कहो संतदास साची वात, स्वामि सहजानंदनी विख्यात । बोल्या संतदास शुं हुं कहुं, आज वावरे सामर्थि बहु ॥१३॥ पापी पामर जीव जे जगे, तार्या कोटी ते दिठा में द्रगे। द्विज क्षत्रि वैश्य शूद्र कोइ, थाय समाधि खामिने जोइ।।१४॥ होय कोइ नर बळि नार, वस्ते पिंड ब्रह्मांडने पार। बहु शास्त्रे सांभिक्ष में वात, पण आजनी वात अख्यात ॥१५॥ त्यारे दलुजि कहे सुणी संत, आज आव्या पोते भगवंत। विजा

थाय कोटि अवतार, तेनुं कारण छे निरधार ।।१६।। एवी करी परस्पर वात, सुणी सहु थया रिळयात । एम वात करतां हुलासे, रह्या छ मास दल्जिज पासे ॥१७॥ पछी दल्जिज कहे सुणो जन, जाओ तियां करो दरशन । जे छे ते त्यांज छे तमे जाणो, एथी अधिक नहि प्रमाणो ।।१८।। पछी संतदासे शिख मागी, चाल्या वेगे बळी बडभागी। आव्या खामिसहजानंद पासे, कर्या दरशन संतदासे ॥१९॥ पछी करी दल्जिनी वात, सांभळी महाराजे साक्षात । दछजि ते मुक्त अवतार, एक बाई पण निरधार ॥२०॥ दिव्यमृर्ति ए जाणज्यो दोय, अन्य जनने भेट्य न होय। तेनां दर्शन कर्यो संतदासे, रही पोत्ये षट् मास पासे ॥२१॥ एतो परचो कह्यो में एक, एवा बिजा थयाछे अनेक। पछी रह्या तियां कांइ दन, वळता एम बोल्या भगवन ।।२२।। संतदासने कह्यं सानमां, जाओ तमे बद्दिवनमां । नरनारायण ऋषिराय, जे रह्याछे बद्रिवन मांय ॥२३॥ एकरूप अमारुं छे एह, बीजुं प्रकट देखोछो तेह । बहुरूपे बहुधामे रहुंछुं, त्यांना वासिने सुख दउछुं ॥२४॥ पण बद्धिकाश्रमना वासी, अतित्याग वैराग्ये तपसी। माटे ए छे बहाला मने अति, तेने जोइ आवो महामति ॥२५॥ पछी चाल्या त्यांथी संतदास, नरनारायण ऋषि पास । एतो वात छे आश्चर्यकारी, जोज्यो सहु अंतरे विचारी ॥२६॥ आ देहे जे जाबुं उत्तर देश, हिमाद्रिपर करी प्रवेश । तेतो आ शरीरे न जवाय, जाय तेतो ईश्वर कहेवाय ॥२७॥ एवी सामर्थि जेथकी आवे, तेतो सर्वनुं कारण कावे। तेनी आज्ञा लड् संतदासे, चाल्या उत्तर खंडे हुलासे।।२८।। अतिवसमा विकट घाट, तनधारिने नहि जावा वाट । एवी वाटे चाल्या वीतरागी, गया हिमाळापार सुभागी ॥२९॥ पछी आवी त्यां पथरा नदी, तनघारी तरे नहि कदी। धातु काष्टादिक वस्तु कांइ, थाय पथर पडे पाणिमांइ।।३०।। एवे गुणे जुक्त जाणी नीर, पग न बोळ्यो बेशिया तीर। करता अंबु उतरवा विचार, एवे समे आव्या ऋषि व्यार ॥३१॥ कहे कियां जावुं मुनिजन, मुनि कहे जावुं बद्रिकावन । कहे ऋषि चालो अमसाथ, मिंची आंख्यो उतिरये पाथ ॥३२॥ मिच्यां लोचन न करी बार, आव्या दश जोजन जळपार । तियां दिउं छे आश्रम सारुं, बेठा ऋषि ज्यां लाख हजारुं ॥३३॥ ग्रुम बद्रि अद्रि एक सार, तियां गुफा इजारेहजार। मध्ये गुफा दीठि एक घेरी, तेतो नरनारायण केरी॥३४॥ तियां पहोत्या पोत्ये संतदास, उठी आपे मळ्या अविनाश । बहु हेते कर्षुं सदमान, भले आव्या कहे भगवान ॥३५॥ आप्यां ऋषिए अमळ जळ, पछी जमाड्यां सुंदर फळ। त्यारपछी पुछ्छं ऋषिराय, कही महाप्रश्चनी महिमाय ॥३६॥ कहे नरनारायण नाथ, शुं करेछे हरि ऋषिसाथ। कहे संतदास शुं हुं कहुं, आज वात अलेखे छे बहु ॥३७॥ वावरेछे सामर्थी जे क्याम, कहेतां मन वाणी पामे विराम । तेतो जाणोछो सरवे नाथ, पुछ्युं माटे कह्युं जोडी हाथ ॥३८॥ एम पुछतां शुभ समाचार, कह्या संतदासे निरधार । एम कहेतां सांभळतां वळी, थइ संध्या सुंदर निरमळी ॥३९॥ बेठा शुभासने बेउ वीर, आव्या दर्शने मुनि सुधीर । नयणां भरिने निरख्या नाथ, पछी मळ्या संतदास साथ ॥४०॥ सहु बोलावे हेतसमेत, हैये मान देखाडेछे हेत । कहे नारायण सुणो संत, आतो ऋषि छे त्यागी अत्यंत ॥४१॥ कोइकने वीते वर्ष बार, त्यारे एक दिन करे आहार । कोइकने वीते षद वर्ष, त्यारे लागेछे ग्रुख ने तर्ष ॥४२॥ कोइक

1 |

अमे वरषे एक, षट मासवाळा छे अनेक। कोइ करेछे महिनामां आहार, पक्षवाळा हजारोहजार ॥४३॥ सर्वे जन समाधिये सुखी, कोइरीत्ये ऋषि नथी दुःखी । सर्वेनां छे तपमय तन, अंतरवृतिये करे भजन ॥४४॥ ज्यारे इच्छे अन्न जळ जेह, आपिजाय सिद्धि सद्य तेह। एम वात करी नरवीरे, सुणी संतदासजि सुधीरे।।४५॥ एम करतां वीत्या कांइ दिन, कर्युं मानसरे जावा मन। त्यारे संतने कहे नरवीर, न्हाशो नीरे नहि खमे शरीर ॥४६॥ माटे वण नाह्ये वहेला वळज्यो, मुनिसहित जोइ मने मळज्यो । पछी मानसरे गया जन, दिठां हंस कमळनां वन ॥४७॥ जोइ पाछा वळ्या ऋषिराय, नाह्या संतदासजि ते मांय। व्यापी शीत ने ठर्युं शरीर, लाव्या उपाडी ज्यां नरवीर ॥४८॥ पछी बहु तापे तपाड्युं तन, त्यारे सचेत थया मुनिजन । पछी लाग्या नारायण पाय, रह्या मास पक्ष मुनि त्यांय ॥४९॥ पछी नरवीर कहे संतदास, तमे जाओ महाप्रभुपास । जे छे तेतो सरवे छे तियां, शाने बेशि रही साधु इयां ॥५०॥ एम कही शिख दिघि नाथ, मोकल्या ऋषि च्यारने साथ। ते उतारि गया नदीपार, वळ्या पाछा करी नमस्कार ॥५१॥ चाल्या मुनि हैयामां हुलासे, आव्या सुंदर देश कैलासे। तेनो हठयोगी रहे नरेश, आवीं आप्यो तेने उपदेश ॥५२॥ राजा जातो समाधिमां ज्यारे, रहेतो पट माससुधि त्यारे। राज साज सुत ने कलत्र, तियां सांभरतुंतुं निरंत्र ॥५३॥ तेने संतदासे सुखी किथी, अन्यभाव उगवा न दीधी। कराव्यां प्रकटनां दर्शन, थइ सुखी राये तज्युं तन ॥५४॥ फुटी ताळ ने निसर्या प्राण, चाल्यो सत्संग करी सुजाण । त्याथी संतदासजि सधाव्या, एक वेरवाले गाम आव्या ॥५५॥ झाल्या तस्कर करीने तेणे,

अतिप्रहार करी बांध्या एणे । हेरु जाणि दिये दुःख बहु, करे मारवा मनसुबो सहु ॥५६॥ तेनां सगां वालां जन जेह, आव्याः नाथ रूप धरी तेह। मळि बळि मुकावियो जन, चाल्या दासने दइ दरशन ॥५७॥ त्यांथी संतदासजि सघाच्या, घणे दने गुज-रधर आव्या । जेतलपुर खभाणगाम, दिन दश कर्यो विश्वराम ।।५८।। पछी त्यांथी आन्या प्रभ्रुपास, मळ्या नाथ साथे संतदास । सनमुख बेसी संतजने, कह्युं जेजे पुछ्युं भगवने ॥५९॥ करी सुंदर बारता साने, समझि सुणि नहि केणे काने। कहां अलैकिक जे आख्यान, समझे संत कहे श्रीभगवान ॥६०॥ पछी नाथ कहे घन्य-धन्य, तमजेवो विजो नहि जन। तमे पामियाछो सिद्धगति, माटे सद्ध्यी मोटा तमे अति ॥६१॥ हवे फरो सतसंगमांइ, करो वात तमे दिठि त्यांइ। एवा समर्थ संत विख्यात, पाम्या जेथी तेनी सइ वात ॥६२॥ वात मोटी छे महाराजतणी, कही न जाय मुखथी घणी। हरि हरिजननो महिमाय, कह्ये जथारथ न केवाय ॥६३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदसुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे संतदासजिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने ओगणत्रिशमुं प्रकरणम् ॥१२९॥

पूर्वछायो-दिये परच। दासने, दीनबंधु दीनदयाळ । जोइ सामर्थि क्यामनी, मन मगन रहे मराळ।।१॥ जणजण प्रत्ये जुजवा, आपी परचा अपार । तेणे खुमारी तनमां, मन मस्त रहे नरनार ॥२॥ वळी कहुं एक वारता, विधविध करी वखाण । सांमळज्यो सहु श्रवणे, सत्यवादी जन सुजाण ॥३॥ मोटा संत महाराजना, वंदु हुं व्यापकानंद । तेनी कीर्ति सुणतां, आवे उरमां आनंद ॥४॥ चोपाइ-धन्य संत ते व्यापकानंद, जन सुखदायी जगवंद ।

त्रिश संतगुणे तेतो शोभे, काम क्रोध लोभमां न क्षोमे ॥५॥ अष्ट सिद्धि नव निधि मळे, तेने देखिने चित्त न चळे। एवा संत-शिरोमणि सारा, ध्यानवान प्रभुजिने प्यारा ॥६॥ थइ जे दिनी सहज समाध्य, दिठि सामर्थि हरिनी अगाध्य। सर्वे लोक धाम घामधणी, जाणि सामर्थि महाराजतणी ॥७॥ सर्वे कारणना जे कारण, देखे हरिने करी धारण । आपे वर्ते पंडे अंडपार, नहि देहदशा ते लगार ॥८॥ अणइच्छाए उतर्या झाडी, आव्यो आगळ देश अनाडी। तियां आव्युं शहेर एक जाणो, तेनो राजा मलेच्छ प्रमाणी ॥९॥ तेनो दिवान वणिक जन, कर्यु राजकाज बहु दन, एक दन आच्यो वांकमांइ, कर्यो बंधिवान राये त्यांइ।।१०।। बहु दन बंधिखाने रह्यो, त्यारपछी दंड तेनो थयो। ठेराविया रुपिया करोडी, लइ जामिन ने मुक्यो छोडी ॥११॥ मास एकनो कर्यो ठेरावो, भरे रुपैया तो नहि दावो। नहितो करिए मुसलमान, एवी रीत्यना लीधा जमान ॥१२॥ मोटा शेठना गळामां नाखी, छोड्यो वणिक सायदी राखी। पछी तेणे दंड देवा काज, वेच्यो घरनो सरवे समाज ॥१३॥ घणा रुपैया घरना दीघा, विजा उछि उधारे ते लिधा। तीय दंख पुरी नव थयी, देतांदेतां अधुरीज रह्यो ॥१४॥ पछी वणिक मरवा विचार, आव्यो शिवालये पुरवार। दिये प्रदक्षिणा ने पोकारे, आवा कष्टथी कोण उगारे ॥१५॥ हायहाय हिंदुधर्म जाशे, हाय मानखो हराम थाशे। एम शोकमां करे पोकार, दीठा साधु दोय तेह ठार ॥१६॥ तेमां वडेरा व्याप-कानंद, देखी वणिक पाम्यो आनंद। आवी लाग्यो संत दोय पाय, रुवे नयणे नीर न माय ॥१७॥ तेने धीरज दइ पुछे संत, कहे वणिक तारुं व्रतंत । कही वणिके पोतानी वात, सुणि संते ते सर्वे विख्यात

।।१८।। पछी व्यापकानंदजि कहे, खामिनारायण नाम लहे। धार नियम कर सतसंग, थाइश सुखियो सर्वे अंग ॥१९॥ पछी तेणे तेमज कर्यु, सुत नारी सहित नियम धर्यु । आव्यो वणिक संतने चरणे, त्यारे विचार्यु अश्ररणशरणे ॥२०॥ हवे करबुं एहनुं काज, थया साबदा पोते महाराज । वाले लिघो वणिकनो वेश, सुंदर मोळिडुं बांधियुं शिश ॥२१॥ पहेरी अंगरिख लांबि बांय, चाळ विशाळ लडसडे पाय । बांध्यो कमरे कसुंबि कणो, सोनेरी छेडे शोभेछे घणो।।२२।।तेमां खोशिछे सुंदर दोत, कांधे दुशाल क्षिणेरे पोत । हसे मुखे पडे खाडा गाल, मोटा धनाढ्य झळके भाल ॥२३॥ कांइ बोले मुखेथी तोतिळयुं, लीधा रुपैया भरी कोथळियुं। लीधा सेवक संगे बेचार, आव्या क्यामळो शहेर मोझार ॥२४॥ आवी पुछियुं शेठतुं हाट, कहे आव्या दाम देवामाट। मागो नाणुं ते तमारुं लियो, खत नाथ कहे पाछुं दियो।।२५॥ खत देश हुं दासने ज्यारे, अन्न जळ लड्श हुं त्यारे। दाम विना जे पिडाय दास, एवी लीभ नहि अमपास ।।२६॥ कहे वेल्य म करो लगार, लियो रुपैया कहे वारंवार । आपी रुपैया ने खत लिधुं, लइ वणिकने कर दीधुं।।२७।। एम परचो पुरि दयाळ, चाल्या नाथ त्यांथी ततकाळ। च्यापकानंदजिनुं वचन, कर्युं सत्य पोत्ये भगवन॥२८॥ पुरी परचो चाल्या दयाळ, भक्ताधीन दीनप्रतिपाळ। वळी व्यापकानंदनी वाणी, करी सत्य ते शारंगपाणी ॥२९॥ तेनी वर्णविने कहुं वात, च्यापकानंदजिनी विख्यात। पछी त्यांथी चाल्या दोय संत, आच्या बुदेलखंडे महंत ॥३०॥ तियां आञ्युं शहेर एक सारुं, उतरवानुं तो नित्य बहारुं। जोइ जायगा सुंदर सुनि, तियां उत्तरिया बेउ सुनि ॥३१॥ तियां आच्यो द्विज एक भावी, कहे करो भोजन घेर आवी।

बोल्या व्यापकानंद विचारी, सारुं करावो भोजन त्यारी ॥३२॥ पछी सुंदर रसोइ करी, आव्यो वित्र तेडवाने फरी। तेडी लावियो निज अगारे, करी पूजा बोडशोपचारे।।३३।। पछी पिरशुं पनवाडे अभ, तियां विप्रसुते तज्युं तन । पछी विपरे कर्यो विचार, आव्यो धर्मसंकट आ वार ।।३४।। मुवे मनुष्ये नहि जमे संत, भुख्या जाहो ए दोष अत्यंत । पछी हाथ जोडी लाग्यो पाय, करे स्तवन मन अकळाय ॥३५॥ कहे विप्र हुं मोटो अभागी, घणे दने मळयातमे त्यागी। तेने जमाडि लाओ न लीघो, थयो व्यर्थ मनोरथ कीघो ।।३६॥ आ समे पाम्यो पुत्र ते मरण, केम करुं हुं अशरणशरण। पछी बोलिया संत सुजाण, तर्त मनुष्य तजे नहि प्राण ॥३७॥ जाओ जीव हरो देहमांह, जोइ कहेज्यो पछी आवी आंह। कहे वित्र जोयुं वळिवळी, जीव निश्चे गयोछे निकळी ॥३८॥ कहे संत तुं जा तियां सिंह, खामिनारायण नाम लहि। वित्र करी वचन विश्ववास, आञ्यो मृतक सुतने पास ॥३९॥ आविजोयुं त्यां आश्वर्य पाम्यो, जीव्यो सुत शोक सर्वे वाम्यो । पछी विप्र पड्यो संत-चरणे, आजथी हुं छुं तमारे शरणे ॥४०॥ तमे नहि मनुष्य छो देव, आव्या मुजसारु ततखेव। एम प्रकट परची आपी, चाल्या संत द्विज दुःख कापी ॥४१॥ एम व्यापकानंदिज वळी, पाम्या परचा बहु हरि मळी। एम दीनबंधु जे दयाळ, करे संतनां काज क्रपाछ ॥४२॥ बहु परचा पळेपळे थाय, कवि कोट्ये पण न कहेवाय । घणि वावरे सामर्थि व्याम, करे बहु निजजननां काम ॥४३॥ दि इं सांभळ्युं सतसंग मांय, पळेपळे करे हरि साय। तेणे वर्ते अखंड आनंद, घन्यधन्य खामि सहजानंद ॥४४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसह्जानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्मुनिविर्-

चिते भक्तवितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे व्यापकानंदस्वामिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने त्रिशमुं प्रकरणम् ॥१३०॥

पूर्वछाची-एक अनुषम वारता, सुणज्यो सुंदरसार । मुका-नंद महाराजनी, हुं कहुं करी विस्तार ॥१॥ मुक्तानंद माहंतने, मळ्या श्रीमहाराज। तोय उंडी अंतरे, दलमांहि रहेति दाझ ॥२॥ करे कथा बहु वारता, अंतरे विन उछरंग । संकोच रहे शरीरमां, निह अंगमांहि उमंग ॥३॥ तेनो ते संशय कापवा, आपवा अति आनंद। वाळि वरति अंतरे, देखाड्या श्रीरामानंद ॥४॥ चोपाइ-मुक्तानंद संतशिरोमणि, मुखे शुं कहिए मोट्यप घणी। करे वात प्रभुनी विस्तारी, सुणि सुखी थाय नरनारी ॥५॥ एक दिन करी बहु वात, सुणि संत थया रिक्रयात । पछी बेठा आसनपर आवी, दृष्टि अंतरमांहि ठेरावी ॥६॥ त्यांतो दिठा खामी रामानंद, निर्क्षि आव्यो अंतरे आनंद। मुक्तानंद कहे धन्यधन्य, दयासिंधु दीधां दरशन ॥७॥ करे स्तवन मन मोद भारी, देखी सुंदर मूरति सारी । अतिप्रसम वदन अनुप, सुख मूरति सुंदररूप ।।८।। हेते हिशहिश जुवे साम्रं, पुरे निजसेवकनी हामुं। वळी करे वालपनी वात, सुणो मुक्तानंद जि विख्यात ॥९॥ सारुं समज्या संत सुजाण, मान्या प्रभु प्रकट प्रमाण । खामिस-हजानंद सुखरूप, एज इष्ट अमारा अनुप ॥१०॥ सारुं थयुं जे मान्युं सुजाण, नहितो बहुविध्ये थात हेराण । सुणि मुक्तानंद-जिए बात, तेणे थया अति रिक्रयात ॥११॥ पछी चाले बेसे जागे सुवे, स्वामि सहजानंदजिने जुवे । ज्यारे करे अंतर वरति, देखे सुखसागर मूरति ॥१२॥ पछी वातमां चित न लागे, मन मूर्ति-मांहि अनुरागे। एम रह्यं दन दोय च्यार, देख्यो अलीकि चम-

तकार ॥१३॥ पछी पोताना वचन मांय, बहु जीवने समाधि थाय। एम अलौकिक रीत्य जेह, मुक्तानंदने देखाडी तेह।।१४॥ वळी एक दिन एकाएकी, चाल्या मारगे मुक्त विवेकी। आव्युं अरण्य ने उवाट मळी, जियां मनुष्यमात्र नहि वळी ॥१५॥ दन थोडो ने जावानुं दूर, आवी नदी आडी भरपूर । नहि आरो उतरवा लाग, कांठे रहे तो विडारे वाघ ॥१६॥ नदी नीर ते उपर जाणो, लागी प्यास ने कंठ सुकाणो। देखी समाज संकटतणो, मुक्तानंदने मोद छे घणो ॥१७॥ थाशे गमतुं गोविंदतणुं, एह-मांहि शुं जाशे आपणुं। एम दृढ कर्यो उर थाप, आञ्या विप्र-रूपे हरि आप ॥१८॥ कहे साधु छुं करोछो विचार, आवो उतारुं हुं नदीपार। पछी थइ मुक्तानंदने मोरे, मुक्या नदी उतारी आ कोरे ॥१९॥ कहे चालो आवुंछुं केड्ये, एम किह रह्या नदी तेड्ये। धक्तानंदे चालि पाछुं पेरुयुं, विप्ररूप द्रष्टे नव देख्युं ॥२०॥ त्यारे मुक्तानंदे मन जाणी, महाप्रभुजिए महेर आणि। आज आव्यो तो कष्ट अपार, तेमां श्रीहरिए करी सार ॥२१॥ एम परचो पुरी अविनाश, अतिसुखी कर्या निजदास। एवा बीजा परचा पण घणा, कहीए केटला महाराजतणा ॥२२॥ वळी कहुं एक वात अनुप, मोटा संतनी छे सुखरूप। एक अखंडानंद आनंदि, काम क्रोधमां न चळे कदि ॥२३॥ अतित्यागी ने तपसी तने, दुःखमां न डगे मने । भय विग्रह विपति आवे, मानामाने मन न डोलावे ॥२४॥ सदा सुखिया समझण मांय, हरे फरे हरिनी इच्छाय। चाल्या एक दिवस एकला, संगे संत नहि कोइ मेळा ॥२५॥ आव्या अरण्य उजाड्यामां सोय, जियां मनुष्यमात्र नहि कोय । तियां आविविद्या वाघ च्यारे, अखं-

डानंदे विचार्यु त्यारे ॥२६॥ आज आव्यो आ देहनो काळ, मारी वाघ खारो ततकाळ। मोडुं वहेलुं पडत आ देह, एह वातमां निह संदेह ॥२७॥ माटे आज थयुं अति सारुं, वाघ अर्थे आव्युं तन मारुं । हवे वेळय न करवी कांइ, जाउं वहेलो वाघ पासे घाइ।।२८।। चाल्या अखंडानंदजि ज्यारे, आव्या अलबेली वारे त्यारे। जाण्युं जनने मारशे वाघ, बहु कष्टे थाशे तन त्याग ॥२९॥ तेती मुजथी केम सहेवाय, जोउँ हुं दासने दुःख थाय। एतो घटे नहि कोइ काळ, पछी कोण कहे मने दयाळ ॥३०॥ माटे अवश्य एने उगारुं, आज संकटमांहिथी तारुं। एम हरीए कर्यो विचार, करवी अखंडानंदनी वार ॥३१॥ पछी आनंदे अखंडानंद, चाल्या समरता सहजानंद । आव्या सिंहसमीप ते ज्यारे, सिंह जोइ रह्या साम्रुं त्यारे ॥३२॥ आव्या नजिक मुखने पास, नहि तन ने मनमां त्रास । एम कहेछे वाघने वात, शुं जुओछो करो मारी घात ॥३३॥ त्यारे वाघे ते थाप उगामी, अडग अखंडानंद सामी। त्यांतो न डर्या निर्भय भाळी, वाधे थाप तेपर न वाळी ॥३४॥ आव्या वारे पोत्ये मगवान, थयुं सावजने उर ज्ञान । पछी लोटि लाग्या वाघ पाय, आवा साधुने केम मराय॥३५॥ पछी दइ प्रदक्षिणा च्यार, गया वाघ ते वन मोझार। एम पुरी परचो भगवन, नाथे उगारियो निजजन ।।३६॥ एक वात कहुं अतिसार, करी जननी जीवने वार । जेणिरीत्ये उगारिया संत, कहुं तेनुं हवे वरतंत ॥३७॥ एक कैव-ल्यानंद कृपाळ, फरे देश प्रदेशे दयाळ । वाट ओघट विकट वन, कर्युं गिरिगुफाये गमन ॥३८॥ एम फरतां देशप्रदेश, कर्यो गुजरघरे प्रवेश । त्यांथी कर्यु कंकदेशे मन, पोता मेळा पंच

मुनिजन ॥३९॥ आन्या साभरतीरे सुजाण, न जाणे नदीपास मेराण । अतिदर्शननी अभिलाष, मने महाराज मळवा आञ्च ।।४०।। अतिप्यासी उदासी अंतरे, एवा थका ते आव्या साभरे । पट्या उतावळा पाणिमांइ, मने सान गमान न कांइ ॥४१॥ नदीमध्ये आव्या सुनि घीर, आब्धुं अति उताबळं नीर। आव्यो घडेडाट घोडो वळी, थयुं वांसजाळे जळ मळी ॥४२॥ तेह मध्ये बुड्या मुनिराय, पोथी गोदडी गइ तणाय। बुडिनिसरे मस्तक बहारुं, पाणि उतरे पेटमां खारुं ॥४३॥ थयुं मोततणुं मन निश्चे, कियां जाय आव्या पूरवच्ये । कहे मांहोमांहि एम संत, आ समे भजना **मगवं**त ॥४४॥ विजे राखवुं नहि क्यांय मन, करो प्रभुजिनुं **चिंतवन। एम वात कहेतां** लागि वार, आव्या वारे त्यां विश्व**आ**-धार।।४५।।लाव्या होडी हरि जळमांय, झटोझट झाल्या संत बांय। होडिमांय बेसारिया हाथे। राख्या संतने बुडता नाथे॥४६॥ योथि गोदंडि सरवे लिधि, कोय वस्तु बुडवा न दिधि। सुखे उता-रिम्रुक्या आ तीरे, कहे जाओ म्रुनि धीरेधीरे ॥४७॥ एम उगारिया निजजन, पुर्यो परचो श्रीभगवन । एम करे अनेकनी साय, तेतो मुखे कहुं नव जाय ॥४८॥ अष्ट सिद्धि नव निधि जेह, हाथ जोडि उभि रहे तेह । भन वैभन वस्त्र ने अन, कोइ नाते न पिडाय जन ॥४९॥ सदासुखी दुःख नहि लेश, हरि हरे संकट हमेश । पुरे परचा अति अपार, कहेशुं कथा ए निरधार ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्सु-निविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामी तथा अखंडानंदस्वामी तथा कैवस्यानंदस्वामिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने एकत्रिशमुं प्रकरणम् ॥१३१॥

पूर्वछायो-सुणो नर वळी श्रवणे, एक अनुप आख्यान। आवे खुमारी अंतरे, सहु सांभळज्यो सावधान ॥१॥ मोटा हरिजन हरिना, जेनां तपपरायण तन । त्याग वैराग्यनी मुरति, अतिनियममां जेनां मन ॥२॥ जे दिना महाराज मिळया, टळिया ते दिना विकार । अंतरमां अणगमतो, थयो सरवे संसार ॥३॥ मात तात कुळ कुढुंबनी, जेणे कर्यो अतिशे अभाव । भज्या श्रीभगवानने, तजि अन्य उछाव ॥४॥ चोपाइ-धन्य जीवुवाई हरिजन, रुडां राजबाई छे पावन । मळ्या जे दिना जीवनप्राण, स्वामी सहजानंद सुखखाण ॥५॥ ते दिनां तन सुखने तजि, भावे लिधा भगवान भजि। हरि भजतामां जेजे हवुं, तेनी वात विगते वर्णबुं।।६।। जीबुबाई हरिजन हवां, मांडी हरिमृरति पूजवा। तेने तात कहे सुणो बाई, आ हां लिधुं बाळापण मांई ।।७॥ ज्यारे मोटां थाओ बाइ तमे, करज्यो पूजा राजि छीए अमे । त्यारे जीवुबाई कहे तात, एवी अमने न कहेवी वात ।।८॥ नहि आ तननो विश्वास, अचानक थइ जाय नाश । शृद्धपणाने वायदे रहेवुं, अमने नथी मनातुं एवं ॥९॥ माटे ए वाततो नव कहेवी, आ मृरति नथी मुक्या जेवी। त्यारे ताते ते कर्यो विचार, एवी शुं हशे चमतकार ॥१०॥ ज्यारे देखुं अलौकिक कांइ, त्यारे मनाय अंतरमांइ। एम करतां वीत्या कांइ दन, परचो पामवा इच्छ्या छे मन ॥११॥ पडी सांझ ने करी आरति, जीवुबाइए भावेशुं अति । पछी दुध कटोरो भरीने, आप्यो हेतेशुं पिना हरिने ॥१२॥ पछी बाळग्रुकुंद महाराजे, पिधुं दुध जनहेत काजे। जोइ सहु जन आश्चर्य पाम्यां, शिश जीवुबाने पाय नाम्यां ॥१३॥ तातने न गमतुं लगार, तेपण नम्या वारमवार। धन्य बाई तमारी भगति, ३४ भ०चि०

घेलाइमां में न जाणी गति ॥१४॥ तमे नहि मनुष्य में जाण्युं, छो देवता आज परमाण्युं । तमे लिधो आंहि अवतार, मारा पुण्य-तणो नहि पार ॥१५॥ एम जीवुबाने जगदीश, आपे हरि परचा हमेश। जेजे लीळा करे अविनाश, होय दूरतो देखाय पास ॥१६॥ होय हरि सीय कोश माथे, पण देखाय सदाय साथे। जेजे किया करे हरि कांइ, तेतो जाणे सर्वे जीवुबाइ ॥१७॥ निरावरण दृष्टि निरधार, विजा परचानो नहि पार। जाणे विजाना अंतरनी आप, तेतो महाराजनो परताप ॥१८॥ हवे राजबाईनी जे रीत्य, कहुं पवित्र अतिपुनित । मळ्या जे दिना श्रीमहाराज, तजि तेदिथकी लोकलाज ॥१९॥ तेने महाराजे मोकल्युं कावी, भक्ति तमारी मुजने भावी । पण मानवुं एक वचन, परणि भजवा श्रीभगवन ॥२०॥ मानो आज्ञा अमारी आ वार, नहितो थाशो सतसंग बार । एवुं आब्युं बाइने वचन, तेणे पीडा पाम्यां तन मन ॥२१॥ पछी माततात कुळे मळी, कयों विवाह बाईनो वळी। परणावी सासरे वळाव्यां, बाइ सासराने गाम आव्यां ॥२२॥ दिठुं पुरुषे बाईनुं रूप, सिंहसादक्य भाशुं खरूप । जोइ पुरुष पाछोज भाग्यो, अतिडर मनमांहि लाग्यो ॥२३॥ आतो मनुष्य नहि निरधार, कोइ कारणिक अवतार । माटे वेल्य एनी पाछि वाळो, जो मारुं भछं थावानुं भाळो ॥२४॥ पछी बाइ आवियां पियेर, कर्युं संसारि सुखशुं वेर । झीणां वस्त्र आभूषण अंग, तेनो तर्त तज्यो परसंग ।।२५।। गळ्युं चिकणुं सरस अन्न, तज्युं तेनुं करवुं भोजन । खाट पाट पर्यंक पर्लंगे, तजि सुवे भूमिपर अंगे।।२६।। अतित्यागे करी तन गाळ्युं, लोही मांस शरीरनुं बाळ्युं। अतिशय तन मन दम्युं, तेतो कुटुंबने नव गम्युं ॥२७॥ पछी तज्यां तेने तेह वार,

अञ्जळनो न राख्यो वेवार। एणिरीत्ये भज्या भगवान, पाळी अतिमोटां त्रतमान ॥२८॥ ते प्रताप श्रीमहाराजतणो, शुं कहीए महिमा मुखे घणो। एम करे निजजननी साय, माटे मोटो हरि महिमाय ॥२९॥ वळी एक दिवसने मांइ, करी हरिए जननी साय । तेनी बात कहुं लियो जाणी, प्रभु पधारिया कारियाणी ॥३०॥ ते सांभळि चाल्यां दरशने, अतिबाळक कोमळ तने। भेळो नहि कोइ विजो भाइ, चाल्यां वाळबुद्धि त्रण बाई ॥३१॥ मेल्युं गाम सीम लागी प्यास, पाणी पळि नहि पोतापास। लाग्या पगमां कांटा कठण, खुंचे कांकरा आकरा कण ॥३२॥ अतिकष्टमां पिडाणा प्राण, नहि देह रह्यानां एंधाण । एवा समामां आव्या महाराज, जन कष्ट निवारवा काज ॥३३॥ भेळुं लाव्या जळ ठाम भरि, पाइ पाणि प्यासत्रास हरि। काढ्या कांटा ते पोत्ये पगना, थया भोभिया मोरे मारगना।।३४।। आप्या मोदक ने पायुं पाणि, धीरेधीरे आव्यां कारियाणि। कह्यं जाओ बाह्यो गाममांहि, खामी सहजानंदिज छे आहि ॥३५॥ पांच छोछो वरपनां तमे, तेहसारु मेळा चाल्या अमे । हवे सुखे जाओ गाममांय, मनमां बीक राखद्यो मां कांय ॥३६॥ पछी बाळकियो त्रण्ये मळी, लाग्यां महा-राजने पाय लळी । पछी तेहने पुछेछे नाथ, तमे आंहि आव्यां कोण साथ ।।३७॥ कह्युं विप्र एक मेळो हतो, आव्यो बहु चाकरी करतो। आप्या मोदक ने पायां पाणी, काढ्या कांटा ते पगना ताणी ॥३८॥ सुखे पहोचाड्यां अमने आंइ, नहितो भुलां पडि-जात क्यांइ। त्यारे महाराज कहे हता अमे, केम ओळखतां नथी तमे ॥३९॥ आप्यां एंधाण मारगतणां, तमे प्यासे दुःखि हतां घणां। पायुं पाणि में मोदक दीघा, तमे त्रणे मळि वळि लिधा ।।४०।। एम कहिने हस्या महाराज, कर्युं निजसेवकनं काज। एम हिरिए करी सहाय, सर्वे विस्मय पाम्यां मनमांय।।४१।। जेने लाच्यां कारियाणि गाम, तेनं पांचु नानं राम्रं नाम। एम आप्यां जनने आनंद, सुखदायी स्वामिसहजानंद ।।४२।। इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचिता-मणिमध्ये श्रीजिमहाराजे जी बुबाई तथा राजवाई ए सर्वेने परचा पुर्या एनामे एकसो ने बित्रेशमं प्रकरणम् ।।१३२।।

पूर्वछायो-वळि वळि शुं हुं वर्णवुं, महाप्रभुनो प्रताप । आपे परचा अति घणा, हरिभक्तने हरि आप ॥१॥ एक समे अलबेलडे, कर्यो डभाण गामे जगन। सर्वे देशना सतसंगी, आवी कर्यां हरिदर्शन ॥२॥ सुंदर मूरति ज्यामनी, सज्या नखिशख शणगार । शोभा जोइ महाराजनी, मगन थयां नर नार ॥३॥ जामो मोळियुं जरकशी, धर्या तोरा कलंगि तेमांय। वेढ विंटि कनक कडां, उर उतरि बाजु बांय ।।४।। छत्तर चमर अबदागरी, बेशि अश्व शिविकाये नाथ। दिधां दरशन दासने, रही गयो सोरठी साथ । ५॥ चोपाइ-सोरठना सतसंगी जेह, सुण्यो डभाणे जगन तेह। अति शोचवान सहु थया, मोटी लीळामांहि रहिगया ॥६॥ मोटो यज्ञ कर्यो महाराजे, ध्यान जनने करवा-काजे। तेमां रहिगया जेजे जन, चालो हवे कीजे दरशन॥७॥ पछी सज थया सतसंगी, बाई भाइ चाल्यां छे उमंगी। पर्वत-माइ मयाराम साथ, थया संगवी चाल्या संगाथ ॥८॥ बाळ बृद्ध ने जुवान जन, करवा महाराजनां दरशन। चालि आव्यां सह कोश चार, मळ्या सामा त्यां प्राणआधार ॥९॥ सुंदर बस्त पहेरी जरकशी, अतिहेतमां रह्या छे हशी। सुंदर घरेणां शोभेछे

घणुं, रूप अनुप वाल्यमतणुं ॥१०॥ संगे घणी घोडानी घुमर, सखासाथे शोमेछे सुंदर। आपे चड्याछे अश्व अमुले, फेंटो पायडी छायांछे फुले ॥११॥ कंठे फुलना हार अपार, शोभे अंगोअंग शणगार। अति मुरति सुंदर शोभे, जोइ जनतणां मन लोभे ॥१२॥ दीधां सहुने आबी दरशन, निरखि जन थयां छे मगन। सहु लाग्या लिळ बळि पाय, निरिष नयणां तृप्त न थाय ॥१३॥ सर्वे मळि करेछे स्तवन, मुखे जन बोले धन्यधन्य। दीनबंधु दरज्ञन दीधां, आज अमने कृतारथ कीधां ॥१४॥ अमे उत्सवे न शक्यां आवी, तेनी दाइय महाराज बुझावी । आज सर्वे मनोरथ सर्या, निरख्या नाथ सखा रंगभर्या ॥१५॥ हवे आवो वाला अम घर, महाराज आज करी महेर । कहे नाथ आ संघ सघळो, चालो आपणे सहु पाछां वळो ॥१६॥ एम कही सहु पाछां वळ्या, चाल्या मन मोहनजि मळ्या । कहे नाथ आगे जाये अमे, धीरेधीरे सह आवज्यो तमे ॥१७॥ एम कहीने इयाम संघाव्या, सतसंगी सह घेर आव्या। कहे अलबेलो क्यां उतर्या, एम मांहोमांहि पुंछिफर्या ॥१८॥ कहे एक आव्या नथी आंइ, एह बात राखी मनमांइ। एतो अलैकि दर्शन दीधुं, जीवत आपणुं सुफळ कीधुं ॥१९॥ नाथ आव्या नथी नथी गया, दीधां दर्शन ते करी दया। एम प्रभु थइ परसन, दीधां अलौकिक दरशन ॥२०॥ एम परचो पुर्यो दयाळे, दीनबंधु जनप्रतिपाळे। आप्युं सतसंगीने आनंद, धन्यधन्य खामी सहजानंद ॥२१॥ सुणो वात कहुं एक वळी, थाशो मने मुदित सांभळी। हरिभक्त उद्धविज एक, सारो सतसंगी जात्ये वणिक ॥२२॥ करे धर्ममां उद्यम काम, भजे खामिनारायण नाम । तेने एक दिन चोर मळी, झाली

लइ गया गरमां वळी ॥२३॥ तेने दंड मनाववा माटे, काप्योः बावळ कठण कांटे। कहे आ लागशे तन तारे, दंडसारु मार-बोछे मारे ॥२४॥ आप्य रुपैया तुं मनमान्या, आज नहि उगरे आप्या विन्या। एम कहिने कांटो उगाम्यो, तेणे भक्त मने भय पाम्यो ॥२५॥ कठण कांटा ते केम खमाशे, आज जीव ते जरुर जाशे। नथी घरमां देवाने धन, जीवतां न छुटुं कोइ दन।।२६॥ माटे महाराज करे जो सहाय, तो हुं उगरुं आ दुःखमांय। एम कहिने थयो निराश, राख्यो महाप्रभुनो विशवास ॥२७॥ एवा समामां आन्या दयाळ, दीनबंधु जनप्रतिपाळ । दीधुं उद्धवजिने दर्शन, निरुखि जन थयो मगन।।२८॥ नयणे नीर गदगद वाणी, कहे भले आञ्या दीन जाणी। आ समे जो न आवत नाथ, मारुं मोत हतुं आने हाथ ॥२९॥ एम कहीने लागियो चरण, त्यारे बोलिया अशरणशरण । भक्त भय म राखिश कांइ, रहे-ज्ये निर्भेय हवे मनमांइ ॥२०॥ तने कष्ट नहि थाय लेश, वणदंडे तुं घेर आवीश । एम कही चाल्या अविनाश, गया ए चोरनी नारीपास ॥३१॥ कहे पुरुष तारो छे पापी, लावेछे हरिभक्त संतापी। तेने तुर्त मुक्जे छोडावी, एम बाइने कह्युंछे आवी।।३२।। एम कहिने संधाव्या श्याम, आव्या चोर बान लइ गाम। राख्यो रात्य एक घरमांइ, बोली चोरतणी नारी त्यांइ॥३३॥ आतो भक्त भगवानतणो, थयो अपराध तमने घणो। आने झालिलाव्या तमे आंइ,आव्या प्रभुजिना गुनामांइ।।३४।। माटे पहेरामणि एने करी, मुक्तिआवो लाव्या तियां फरी। पछी चोरे कर्यु एणीपेरे, करी वस्नने मोकल्यो घेरे ॥३५॥ एम छोडावियो निजदास, आपी परचो एम अविनाश। एम करेछे जननां काज, आपी परचा

अलबेलो आज ॥३६॥ वळी कहुं परचानी वात, सहु सुणज्यो कहुं साक्षात । एक जादवजी हरिजन, जाति वणिक भक्त पावन ॥३७॥ जाणे प्रभु प्रकट प्रमाण, खामी सहजानंद सुखखाण । दृढ आशरो अंतरे एक, जाणे सार असार विवेक ॥३८॥ कहुं तेहतणी हवे वात, गयो गाम सबंधी संगात। ते गामे हतो जमण-वार, जमी आव्या उतारा मोझार ॥३९॥ तियां हतो एक दरदारी, मागी पाचक फाकी विचारी। आप्युं अजाणे वहदे विष, खातां च्यार चाल्या मागि शिष।।४०।। रह्यो जादवजी एक जन, तेनी बात सुणो दइ मन । ज्यारे खाधुं जादवजीए झेर, चढ्युं विष लेवा लाग्यो लेर ॥४१॥ श्रुटि नाडी गयुं गळुं मळी, थयो अचेत पिडियो ढळी। पडी दुंकडी जिमा ते वार, करे भागे अक्षरे उचार ॥४२॥ हेनाथ हेनाथ गाथ गाय, स्वामिनारायण करो सहाय । दीनबंधु हुं दास तमारो, आ दुःखमांथी आज उगारो ॥४३॥ पड्यो कष्टमां करे पोकार, सुणी वास्यम आव्या तेवार। मनोहर सुंदर मुरति, जुवे जादवजी प्राणपति ॥४४॥ जीइ नाथने लोभाणां नेण, कहे भले आव्या सुखदेण। आ समे मने आप्युं दर्शन, हवे मर छुटे मारुं तन ॥४५॥ पछी नाथ कहे सुण्य एह, आज राखवुं छे तारुं देह । तारा संगाथी गया सुधाम, तारुंपण थइ रह्युंतुं काम ॥४६॥ पण उगर्यो आ पळमांइ, हवे बीक राखिश मां कांइ। एम कहिने सधाच्या श्याम, वर्त वणिक पाम्यो आराम ॥४७॥ एम उगरियो निजजन, आपी परचो आपे भगवन । एम दासतणां दुःख कापे, बहु परचा पळेपळे आपे ॥४८॥ जेम जननी जाळवे बाळ, एम जतन करेछे दयाळ। तेणे वर्तेछे जनने आनंद, सुख आपे श्रीसहजानंद ॥४९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये हरिभक्तने महाराजे परचा पुर्या एनामे एकसो ने तेत्रिशमुं प्रकरणम् ॥१३३॥

पूर्वछायो-वळिवळि शुं हुं वर्णबुं, भाइ परचानी नहि पार। दुःख पडे ज्यारे दासने, त्यारे तर्त करे हरि वार ॥१॥ विपत पड़िये नहि वेगळा, रहे भक्तभेळा भगवन । तेणे मगन मनमां, हमेशे रहे हरिजन ॥२॥ अंग खुमारी न उतरे, श्रीहरिनी सामर्थि जोइ। नरनारी निर्भय रहे, मन भय न माने कोइ॥३॥ देहछतां दुःखियां नहि, ग्रुवा पछी जावुं ब्रह्ममोल। पेखी प्रताप ए नाथनो, तेणे अंगे सुख अतोल ॥४॥ चोपाइ-एक परचो कहुं अनुप, सारो सुण्या जेवो सुखरूप। हरि हता ते हालार देश, त्यांथी कर्यो कच्छे परवेश ॥५॥ एक सेवक संगे लइने, चाल्या रणनी वाटे वहने । मारगमां चालतां महाराज, कया कहक जननां काज ॥६॥ एक विष्र दारिदरी दीन, अन्नवस्त्रे करी अतिखीन । तेने आपियां वस्त्र उतारी, पेंडा पाक ने सुखडी सारी ॥७॥ कापी दारिष्य एनुं दयाळ, चाल्या त्यांथी जन प्रतिपाळ। वाटे चालतां न करे वेल, अतित्यागी अंगे अलबेल ॥८॥ आव्या समुद्र समीपे श्याम, पडी सांझ रहेवा नहि ठाम। लागी प्यास ने पीडाणा प्राण, सुक्यो कंठ न बोलाय वाण ॥९॥ लाग्या कांटा ने कांकरा वळी, अति थाकमां पडिया ढळी। एह माहिछं न गण्युं दुःख, चालो चालशुं कहे श्रीमुख ॥१०॥ एम कही उठ्या अविनाश, एक सेवक छे पोतापास । तेतो पामियो पीडा अपार, प्राण तजवा थयो तैयार ।।११।। पड्यो उपर जळमां आप, प्यास श्वख दुःख ने संताप । कंठे आवी रह्या ज्यारे प्राण, त्यारे

बोलिया स्याम सुजाण ॥१२॥ सुणो दास कहे अविनाश, पिवो जळ जो होय पियास । कहे दास पियास छे भारी, केम पिवाय खारुं आ वारी ।।१३।। कहे नाथ नथी खारुं नीर, पिवो जळ जे रहे शरीर। त्यारे विश्वासी दासे ते पीधुं, वाले गंगाजळ जेबुं कीधुं ।।१४।। पिधुं पाणी ने गइ पियास, एम उगारीयो निजदास । खारो मागर मिठोज कीथो, एवो परचो प्रभुजिये दीधो॥१५॥ एह समे पुरुप अलौकि, गया मोहन मुख विलोकि। पछी यांथी चाल्या सुखकारी, थयुं जेवुं हतुं एवुं वारी ॥१६॥ एम आप्यो परचो अविनाशे, जेवो देख्यो तेवो लख्यो दासे। पछी त्यांथी चाल्या बहुनामी, आबी मळ्या रामानंदस्वामी ॥१७॥ तेने पाय लाग्या जोडी हाथ, पछी त्यांथकी चालिया नाथ। आब्युं एक तळाव अरण्य, रह्या रात्य त्यां अश्वरणशरण ॥१८॥ पोढी जागिया प्राणजीवन, जोइ राजि ने पुछेछे जन। काल्य पाणिमां पुरुप मळ्यो, तेतो नाथजि में नव कळ्यो ॥१९॥ थयुं खारुं मिठुं केम वारि, तमे नम्या केने सुखकारी। कहे नाथ जन मन जाण्य, मळ्यो पुरुष ते मुक्त प्रमाण ॥२०॥ कर्यु खारुं ते मीठुं में पाणि, तारी प्यासनी पीडा में जाणी। पछी मळ्या रामानंदस्वामी, तेने चाल्या अमे शिश नामी।।२१।। बिजा पुरुष अलौकिक बहु, आवे जाय आहि नित्य सहु। एवी बात करी अविनाशे, सुणि श्रीमु-खथी निज दासे ।।२२।। एवी कही अलौकिक विद्ध, कर्यु पाणि मिछं परसिद्ध । एम आपी परचो महाराज, कर्यु निज सेवकर्नु काज ॥२३॥ जेनी करी श्रीहरिए सार, तेनुं नाम लालजि सुतार। वळी बिजि कहुं एक वात, खामि सचिदानंदनी विख्यात ।।२४।। थयो जे दिननो सतसंग, थयुं ते दिनुं अलीकी अंग ।

हरे फरे करे कांइ काम, रही हरिमांहि आठु जाम।।२५॥ अति-प्रेमी सनेही अमळ, प्रभु विना न रहेवाय पळ। जो न देखे नयणे दयाळ, तो न रहे शरीर संभाळ ॥२६॥ नाथ न दिठे न रहे थीर, वहे नव दवारे रुधिर । जीवे हरिनी मूरित जोइ, जो न देखे पडे द्रगे लोइ।।२७॥ एवा हेतवाळा हंसरुप, कहुं तेहनी वात अनुप । ज्यारे पोत्ये हता घरमांइ, देव देवी न मानता कांइ ॥२८॥ एवं जाणि भ्रुवा मेळा थया, कहे मारिये आज अजिया। अति धुणे दिये धुधकारी, नाप्य परचा तो नाखिये मारी ॥२९॥ दइ डारी अति अकळाच्यो, दुष्टे हरिजनने डराच्यो। तेनी वार करवा महाराज, आव्या अलवेलो अधिराज ॥३०॥ कहे आवो परचो हुं आपु, पापी मस्तक तमारां कापु। मारा दासने आप्धुं जे दुःख, वात आज तमारी विम्रुख ॥३१॥ एवं सांभळि भाग्याछे भुवा, मान्युं मनमां जे हवे भुवा। बिजा आविलाग्या हरिपाय, एम करी सेवकनी सहाय ॥३२॥ कहे नाथ तुं सांभळ जन, कशो भय म राखिश मन। एम बार करी वालो बळ्या, आप्यो परचो अढळ ढळया ॥३३॥ वळी एक दिवसने मांय, करी सचि-दानंद सहाय । सचिदानंद दर्शन काजे, चाल्या कच्छदेश बेशि झाझे ।।३४।। संभारी श्रीहरिनी मूरति, आव्युं अंगमां आनंद अति । तेणे न रह्यां नाडी ने प्राण, मुक्यो देह मळियां एंधाण ।।३५।। तेने वहि गया दिवस त्रण, श्वास न चाले पामिया मरण। पछी काष्ट्रमां खडकी काया, देवा अगनि तैयार थया ॥३६॥ तेह समे आव्या सुखकंद, सार लेवा खामि सहजानंद । चिता मांहिथि उठाड्यो दास, आप्यो परचो ए अविनाश ॥३७॥ आव्याता आभडवा जे जन, तेतो आश्चर्य पामिया मन । पछी

आविलाग्या सहु पाय, कहे हरिए करी सहाय ।।३८॥ वळी एक दिवसनी वात, वरसे अखंड धार वर्षात । आबी नदी भरपुर भारी, वहे अतिवेग मांहि वारि ॥३९॥ ते उतरवा कर्यो विचार, पड्या पोत्ये ते पाणिमोझार । पग न टक्यो तणाणा त्यारे, तेह समे आव्या वालो वारे ॥४०॥ झालि बांय ने काढिया बहार, दिये ठबको वारमवार । हवे करिश मां आवुं फरी, एम कहिने सधाव्या हरि ॥४१॥ बुडतां दास उगारी लीधो, एम परचो अलबेले दीधो । वळी कहुं ते एक दिवस, प्रभु प्रीत्यमां थया परवश ॥४२॥ पिंड ब्रह्मांड न रह्युं भान, करतां श्रीमहाराजनुं ध्यान । जाणि बावरा वेडी पहेरावी, भांगि बेडी अलबेले आवी ॥४२॥ त्यारे घरमां घाली दिधुं ताळं, राख्युं रखवाळे रखवाळं। ते मांहिथि वालो काढी गया, ताळां कमाड ते दीघां रह्यां ॥४४॥ जोइ आश्वर्य पामिया जन, सचिदानंद्जि धन्यधन्य। एह आप्यो परचो दयाळे, दीनबंधु जनप्रतिपाळे ॥४५॥ वळी एक दिवस निदान, आव्युं इंटियुं मूरतिमान । कहे कायामां प्रवेश करी, तारा प्राण लैश हुं हरि॥४६॥ त्यारे सचिदानंद कहे सारुं, आव्य रूप बदलिने तारुं। पछी प्रकाशरूप ते पेडुं, आवी नाभिकम-ळमां बेडुं ।।४७।। पछी सिचदानंदे ते जाणी, लिधि कर पगनी नाडी ताणी। पछी प्रकटावि जठर झाळ, बळवा लाग्युं इंटियुं ते काळ ॥४८॥ कहे आज मुजने उगारो, केदि न करुं छेड तमारो । पछी गयुं दइ बरदान, पुर्यो परचो श्रीभगवान ॥४९॥ एम सिचदानंदिजि संत, पाम्या परचा मिज भगवंत । तेतो लखतां न लैये पार, जेजे पुर्याछे प्राणआधार ॥५०॥ पडे कष्ट जनने जो कांइ, करे सहाय हरि तेमांइ। तेणे वर्तेछे अति आनंद,

कहुं सुणो सहु जनवृंद् ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक-श्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तिचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे निष्कुलानंदस्वामी तथा सिचदानंदस्वामी एआदिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने चोत्रिशमुं प्रकरणम् ॥१३४॥

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वारता, सांभळीछे सुंदर सोय। सामर्थि श्रीमहाराजनी, सांभळज्यो सहु कोय ॥१॥ सत्संग सर्यसम शोभियो, अज्ञानिउलुकथया अंध। मुक्त जक्तमांहि जोइने, बळि-उठ्या मायाना बंध ॥२॥ तेणे उपाधि आदरी, करे साधुने संताप। मनसुदो करे मारवा, एवं पापिने मन पाप ।।३।। संत फरे सर्वे देशमां, करवा प्रभ्रनी वात । भेख असुर भेळा थइ, मांड्यो अति उतपात ॥४॥ चोपाइ-भेखधारी ते द्वेष करेछे, कहे स्वामिना साधु फरेछे। तेने मराविनाखिये ज्यारे, थाय आपणने सुख त्यारे ॥५॥ माटे सौ मळिने विचारिये, एना मोटामोटाने मारिये। मुक्तानंदआदि जे मोटेरा, छे अधिकारी सतसंगकेरा ॥६॥ मोरथी एनो आणिये अंत, तो सौ थाये आपणे नचित । पछी अमदावा-दने मांइ, खामि मुक्तानंद हता त्यांइ ॥७॥ तेने आपियुं हळाहळ विष, पापिये परसादिने मिष । तियां श्रीहरिए करी सहाय, **प्रसादि न मेलि ग्रुखमांय ॥८॥ पण चंदनमां हतुं मृत, तेतो चर्चिंयुं** अंगमां तर्त । अतिआकरं झेर छे जेह, स्पर्शे रहे नहि केनुं देह ॥९॥ तेतो चर्च्यु मुक्तानंद तने, तियां सहाय करी भगवने । मुक्ता-नंदने न आव्यो आल, गइ चर्चनारा करखाल ॥१०॥ जेणे नजर भरि जोयुं एज, तेनुं क्षीण थयुं नेणतेज। एवं हळाहळ विप भारी, तेथी ग्रुक्तने लीधा उगारी ॥११॥ एम श्रीहरिए करी सार, मुक्तानंदिजिनी वाले वार । बीजि वात कहुं एक वळी, सहु मुदित

थाशो सांभळी ॥१२॥ मोटी मंडली बांधि महंत, गया सुरत शहेरमां संत। अतित्यागी धन त्रियातणा, ज्ञानी ध्यानी ने भजनी घणा ।।१३।। मुमुक्षुने मेळवे महाराज, आपी उपदेश करे काज। विजे भेखे भर्ध सारुं शहर, जेने धर्म दया नहि महेर ॥१४॥ तेणे साचा संतने सांभळी, भेख उठ्या ठामोठाम बळी। अतिद्वेषे वसा-वियुं वेर, आप्युं भिक्षानी झोळिमां झेर ॥१५॥ खाधु पटदश संते मळी, जमतां वेंत पड्या भोंये ढळी। मळयो कंठ पडि जिभ दुंकी, नाडी सहुनी गइ घर मुकी ॥१६॥ तेह समे आव्या महाराज, विष जननुं वाळवा काज। आप्यां अलौकिक दरशन, निरिष् जन थयाछे मगन ॥१७॥ हतुं विषनुं दुःख अपार, नाथ निरिख न रह्युं लगार। एम उगारिया निजजन, आपी परचो ए भगवन ॥१८॥ वळी वात एक सुणो सहु, संत सहाय करे हिर बहु। एक गाम नामे जलसेण, तियां संत गया सुखदेण ॥१९॥ करे हरिकथा करी प्रीत, अति तने त्यागी इंद्रिजित। दिये मोक्ष मारग देखाडी, सत्य असत्य विगति पाडी॥२०॥एवा देखी साधुशिरोमणि, थइ दुष्ट दले दाझ्य घणी। आतो खरा वेरी छे आपणा, जाय जीवथी तो न रहे मणा ।।२१।। पछी पापि नरे परियाण्युं, मुनि मारवाने विष आण्युं। मुकिराख्युं ते अन्नमां मेली, नाख्युं झोळिमांहि झेर भेळी ॥२२॥ खाधुं संत मळि वळी चारे, पड्युं पेटमांहि चड्युं त्यारे। अति विप आकरुं अगाध, खातां वेत रहि नहि साध ।।२३।। नीला काचसम थइ काया, आवी मृझ्य ने संत मुझाया । रुंध्यो कंठ बोली बंध थइ, उगरवानी आशा न रइ।।२४॥ करे अंतरमांहि भजन, आवी अंतकाळे भगवन । एकवार दरशन दीजे, खामी सार सेवकनी लीजे।।२५॥ एम कहेतां आव्या अविनाश,

प्रभुजि संत पोताना पास । आव्या अलौकिक रूपे आप, हर्यो संतनो तर्त संताप ॥२६॥ विष वाळी दिधुं दरशन, निरखि जन थया परसन । कहे धन्यधन्य महाराज, तमे मृत्युथी उगार्यो आज ।।२७।। तमें आवत नहि आ वार, अमे चाल्या हता संत चार। एम कहिने लागिया पाय, धन्य नाथ करी तमे साय ॥२८॥ एम उगारिया निजजन,पुर्यो परचो ए भगवन। जेह संतने आप्युं आनंद, तेनुं नाम छे आतमानंद ।।२९।। वळी वात कहुं करी विवेक, खामी अनंतानंदनी एक । गया फरवा करवा वात, प्रभ्र प्रकटनी ते साक्षात ॥३०॥ शहेर बुरानपुरमां जइ, करे वात प्रभ्रनी त्यां रइ। एक दिवसे संत बेच्यार, गया नावाने तापी मोझार।।३१।। भोळा संत पड्या पूरमांइ, जेने सान गमान न कांइ। पाणि अथाह पडे भमरी, पड्या ते मध्ये न जाणे तरी ॥३२॥ लीधा भमरीये घाल्या तळे, जेमां आव्यो कोइ न निकळे। तेहमांहि रह्या वडी च्यार, आव्या वालम करवा वार ॥३३॥ मनोहर सुंदर मूरति, छवि नीत्तम अलोकी अति । दिधुं जळमांहि दरशन, निरखि हरखिया निजजन।।३४।। पछी उछाळि काढिया बहार, एम करी सेवकनी सार। आच्या आरे पुछे पळि जन, मोडुं आश्चर्य रह्युं जे तन ।।३५॥ कहे अनंतानंद ए खरुं, आज निश्चे नोतुं जे उगरुं। करी महा-राजे मारी सहाय, काढ्यो नाथे मने झालि बांय ।।३६॥ वळी दरशन दिधुं अलैकि, आपे गया आरे मने मुकि । त्यारे सहु कहे धन्यधन्य, पाम्या परची तमे साधुजन ॥३७॥ एम जळथी जन उगार्थी, महादुःखमांथी तर्त तार्थी। एवा परचा लाख हजार, प्रभु पुरेछे बारमबार ॥३८॥ कहेतां रुखतां न आवे अंत, जे पाम्याछे प्रभुजिथी संत। घडिघडि पळपळमांय, खामी करे सेव- कनी साय।।३९।। एम नाथ न करे जो वार, पडे विन्न तो लाखहजार। देव दानव पशु पनंग, भूत प्राणि नरधर अंग।।४०।। एवा
विन्नथी उगारे आप, धन्यधन्य प्रभुनो प्रताप। जेजे आप्युं जनने
आनंद, कह्युं न जाय निष्कुळानंद।।४१।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्ताचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे मुक्तानंदस्वामी तथा आत्मानंदस्वामी तथा
अनंतानंदस्वामी ए आदिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने पांतरिशमुं
प्रकरणम् ।।१३५।।

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वारता, सुणो ते सर्वे जन। भिड्य पडे ज्यारे भक्तने, त्यारे भय हरे भगवन ॥१॥ करे सहाय हरि कष्टमां, निजसेवकनी नरवीर । वसमी वेळाए वाल्यमो, सुख आपे क्याम सुधीर ॥२॥ सुखकारी दुःखहारी, धारी टेक ए धर्यनी । दासना अविनाश त्रास, विनाशन रीत घरनी ॥३॥ जियांजियां निजजननी, जगजीवने करी जतन । सुणावुं कइ संक्षेपे, सांभळज्यो सहु जन ॥४॥ चोपाइ-एक विष्र वांका-नेर गाम, हरिभक्त नाम जीवराम । पाळे निजधरम आचार, करे निर्वाहसारु वेपार ॥५॥ एम करी करे गुजराण, भजे प्रश्च प्रकट प्रमाण। पाळे पळे जेटलुं वचन, करे खामिश्रीजिनुं भजन ॥६॥ एकवार कण लेवा काजे, गयो सिंधदेश वेशि झाझे। वोरी चोखा ने भरियुं वाण, वळ्यो सिंधथी द्विज सुजाण ॥७॥ मळ्या वाटमां वळता चोर, महापापी अधर्मी अघोर । आडा आविने रोकियुं झाझ, माल मिलकत छंटवा काज ।।८।। बेडिसाथे बेडि बांधी लीधी, करी हाकल ने हलां की थी। ज्यारे चोर नावे आवि चड्या, त्यारे खेवट पाणिमां पड्या।।९।। रह्यो जीवराम एक

जेह, तर्त झालिलिधो चोरे तेह। बांध्या पाछा वाळिने बे हाथ, मार्या माथामां छरा छोसात ॥१०॥ पछी जीवतो जळमां नाखी, बैडि हांकिगया घेर आखी। पड्यो जीवराम जळमांय, तरे तन जीव नव जाय ॥११॥ पछी विषरे कर्यो विचार, पङ्यं दुःख ते आज अपार । केम जाता नथी हजि प्राण, आशुं बोळतो नथी मेराण ॥१२॥ करे विनति वारमवार, करो खामिसहजानंद सार। आयो बहेला छोडाविये तन, बीजि नथी इच्छा हवे मन ॥१३॥ एम कही थइ दीन अति, त्यारे वारे आच्या प्राणपति। लाच्या सुंदर कोटियुं साथ, छोड्या बंधथकी बेउ हाथ ॥१४॥ बांय प्रहिने बेसार्यो बेडी, चाल्या द्याळ दासने तेडी। हाली हळवे हळवे हुडी, लाव्या पार प्रभु रीत्ये रुडी ॥१५॥ भ्रुख प्यासनी बेदना हरी, बुडतां जळमां साय करी। एम उगारियो निजदास, आप्यो परचो ए अविनाश ॥१६॥ पछी धीरेधीरे जीवराम, चाल्यो आवतो तो निजगाम । तेथी मोर संभळाणि वात, थयुं जीवराम तन पात ॥१७॥ एवं सर्वे संबन्धी सांभळी, आव्या जीवराम घेर मळी। कहे समाचार एवी आव्यो, जीवरामती धाम सधाव्यो ॥१८॥ त्यारे बोली ए द्विजनी मात, एवी करशो मां कोइ वात । मारो मुबो नथी जीवराम, तमे जाओ घेर करो काम।।१९॥ पछी सहुए बहुबहु कह्यं, डोशी तारुं छे कठण हयुं। पण जायछे द्विजनो धर्म, बहुने कराविये चूडाकर्म ॥२०॥ त्यारे डोशी थयां दलगीर, भर्यो लोचनियामांहि नीर। त्यारेए समे आविया क्याम, डोशी नथी मुबो जीवराम ॥२१॥ बोल्य सहुने आगे होड बकी, काल बपोरे आवशे नकी। पछी डोशिये तेमज कह्यं, आब्यो जीवराम सत्य थयुं।।२२।। एम परचो आपी

महाराज, कर्यु मक्त ब्राह्मणनुं काज। वळी वात अनुपम अति, सुणि लेज्यो सह ग्रुभमति ॥२३॥ एक सत्संगि गोलिइं गाम, भजे स्वामिनारायण नाम । संत साचा जाणे स्वामितणा, गणे बिजाने कपटी घणा ॥२४॥ एवं गाम बधुं गुणवान, सुणे वात हेते दइ कान। तेमां एक कुसंगी अभागी, फश्यो फेलमां न शक्यो त्यागी ॥२५॥ तेने लेवा आव्या जमराण, धाया किंकर लह धमसाण । तियां भक्त रहे भाइ चार, राजगुरु ब्राह्मण उदार ॥२६॥ भीम वशराम राघव राणो, चार भक्त प्रभुना प्रमाणो । तेणे दीठुं जमदळ ज्यारे, मने विचारियुं मळी च्यारे ॥२७॥ आपणे श्रीमहाराजना छीए, ए जीव जमने केम दइए। प्रश्च प्रताप **उरमां धरी, चालो सहजानंदिज संमारी ॥२८॥ ज्यारे वाळिये** अमने पाछा, त्यारे आपणे सत्संगी साचा। एम परियाणि भाइ चार, आच्या जमने आडा तेवार ॥२९॥ कहे पापी पाछा वळो तभे, गरवा गाममां नहि दैये अमे । कहे जम जाळव्य घर तारं, आखा गामनुं नहि थाय वारुं।।३०।। कहे भक्त आ सर्वे खामिना, प्रभु प्रकट बहुनामिना। कहे जम ए जुडुं सघछं, एने लीधा विना नव वर्छ ।।३१॥ कहे भक्त खाशो मार ज्यारे, पापी भागशो तमे ते वारे। त्यारे जम कहे जा तारे घेर, एम कहीने उगाम्यो कर ॥३२॥ त्यारे भीम राणो भड भारी, कृतांत दांतमां डांग मारी। थयो कडाको वसमी वीति, जम भक्तने न शक्या जिति ॥३३॥ याम्या भय भाग्या जमराण, आतो जन दिसेछे जोराण । भक्त तमे साचा साचा स्वामी, अमे जाइए छीए हार पामी ॥३४॥ एम जन जित्या जमसाथे, करी साय सेवकनी नाथे। जेने बळ बहुनामितणुं, मान्युं पोताने सेवकपणुं ॥३५॥ तेथी जाणो कोण न

जिताय, आ लोक परलोकने मांय। एर्नु आश्चर्य कांइ म जाणो, आप्यो परचो ए परमाणो ।।३६।। पछी आव्यो ए प्राणिनो अंत, त्यारे तेडवा आविया संत। एम आप्यो परचो ए नाथ, वळी सांभ-ळज्यो एक गाथ ।।३७।। वीत्यां वर्ष मास कांइ दन, आवी अवध्ये तज्युं राणे तन । ग्रुवा मोर सहुने जणाव्युं, कहे मोत मानो मारुं आर्च्यु ।।३८।। जेने आवबुं होय जरुर , चालो तेडिजाउं ब्रह्मपुर । एम सहुने कहे वळिवळि, सहु साम्रुं जोइ रहे सांभळि ॥३९॥ पछी मात सुते मानी वात, कहे अमे आवशुं संगात। पछी तज्युं राणे ज्यारे अंग, मात सुत लड़ चाल्यो संग ॥४०॥ एवो प्रताप महारा-**जरणो,** शुं कहिए मुखथी घणोघणो। कहुं वारता एक हुं वळी, सहु थाशो थकित सांभळी ॥४१॥ एक नास्तिकी आरज्या थइ, मुंडाइ मांडवधारे रइ। तेने रहिगइ एवी आश्च, खाधुं सर्वस्व न खाघु मांस।।४२।।पछी मरिने मरकी थइ, मार्या मांडवधारमां कइ। एक बाळि आवे घरवहार, त्यांतो बिर्जु थयुं होय त्यार ॥४३॥ तेने उपाडी जइ मुके आग्य, त्यांतो त्रिजुं करे तनत्याग। एम अहोनिश मानवी मरे, मरकी भक्ष माणसनो करे ॥४४॥ पछी सत्संगी मळि सुजाण, आन्या प्रभु पासे जोडी पाण। कहे महाराज त्यां लगी आवो, रांड मरकीने मारी नसावो ॥४५॥ त्यारे नाथ कहे जाओ तमे, सारु संत ने आवशुं अमे । पछी पधार्या संत ने क्याम, त्यारे भ्रुकि गइ मरकी गाम ॥४६॥ दीठि संते ते मूरतिमान, भर्या दंत रुधिरे निदान। एवा परचा विजा अपार, कहेतां लखतां न आवे पार 11891। धन्य सतसंगी धन्य क्याम, पुरी हरिए हैयानी हाम । जे जे जननी करी सहाय, तेतो मुखथी कह्यूं न जाय ।।४८।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे विप्र जीवराम आदिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने छत्रिशमुं प्रकरणम् ॥१३६॥

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वारता, हरिजननी करी हेत । सांभळतां सुख उपजे, बळी तरे कुडुंब समेत ॥१॥ सुंदर जश सतसंगिनो, जे सुणशे वारमवार । परिश्रम विना पामशे, आ भवसागरनो पार ॥२॥ कहेशे कथा कोडे करी, वळी सुणशे थइ सावधान । तेना मनोरथ पुरशे, प्रकट श्रीभगवान ॥३॥ एवी कारणिक छे कथा, सत्य मानज्यो सहु कोय। हवे जश हरि-जनना, संभळावुं वळी सोय ॥४॥ चोपाइ-एक भक्त भाविक छे भलो, रहे कुंडाल्ये नाम छे कलो । करे कृषि कणविनुं कर्म, पाळे सतसंगना जे धर्म ॥५॥ भजे त्रश्च त्रकट त्रमाण, खामी सहजानंद सुखखाण। आवे संत खामिना जे घेर, करे सेवा तेनी सारिपेर ॥६॥ साची समझाणी सतसंग, तेनी चड्यो अंगमांहि रंग। वळी करे केफ भरी वात, स्वामी प्रश्रु पोत्ये छे साक्षात ॥७॥ विजे शिद रह्याछो बंधाइ, सहु आवो सतसंगमांइ। एवी वात कलानी सांभळी, एना भाइ बीजा उठ्या बळी ॥८॥ कहे खेतवाडी खोंचि लियो, नात्यमांहि बेसवा म दियो । सत्संग एनो दियो मुकावी, पछी दीन थइ नमशे आवी ॥९॥ पछी कुसंगिये एम कीधुं, खेतवाडी एनं खेंची लीधुं। त्यारे कलो गयो दरबार, कयों त्यां जइ पोते पोकार ॥१०॥ पण लोंठे लांच भरी तियां, तेणेकरी राये न कर्यों निया। कहे कलो वात चिच धरी, मारो धर्मन्याय कोइ करो ॥११॥ त्यारे सहुए वात एम झाली, साचा सम खाइ हे तुं चाली । पछी एज कीधो निरधार, सम

खाधा विना नहि पार ॥१२॥ सम वसमा देवाने काज, चाल्या वाडीये लइ समाज । आव्या सहु समनुं सांभळी, देश गामना माल्यक मळी ॥१३॥ कर्यो तपावी लोहगोळो लाल, कहे साचो होतो लइ चाल्य। जोइ कलो करेछे विचार, प्रभु केम उता-रशो पार ॥१४॥ मारे एक आधार तमारो, वाला आ समे रखे विसारो । एम कहेतां आच्या भगवान, दीघां दासने दर्शनदान ॥१५॥ आवी बोल्या एम अविनाश, कहे रहे निर्भय तुं दास। बीक तजी गोळो ले बेहाथ, नहि दाझ्य कहे एम नाथ।।१६॥ पछी कले गोळो कर झाली, लीधि पृथवी पोतानी चाली। सहु कहे सुज्यो सतसंगी, काळुं मो लइ गया कुसंगी ॥१७॥ एम परचो दइ दयाळ, करी निजजन प्रतिपाळ। वळी वात कहुं एक सारी, लेज्यो हरिजन हैये धारी ॥१८॥ एक भक्त कहीए ग्रुलो नाम, रहे निक नंदासण गाम । अतिभोळो सरल खभाव, जेने दगा पेच नहि दाव।।१९॥ करे कणबी कृषिनुं काम, भजे स्वामिनारायण नाम । विश्ववासी विकारे रहित, निष्कपट प्रभ्रमांहि व्रीत ॥२०॥ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण, तेनी पडे नहि समझण्य । एवी अतिशय छे भोळाइ, जैने सान गमान न कांइ॥२१॥ तेतो दर्शन करवा काज, चाल्यो तियां जियां छे महाराज । नहि पोतापासे अन्न जळ, मागी खाय एवी नहि कळ ॥२२॥ डाबी जमणी न जाणे वाट, शीत उष्णनो नहि उचाट। एम चालियो दशनकाज, त्यारे आविया सामा महाराज ॥२३॥ वालो विप्र-तणो वेष लइ, चाल्या भक्त पोत्ये मेळा थइ। पाता पाणिने आपता अन, लाच्या जनने करी जतन ॥२४॥ भेळा आच्या **ध**जश**हे**र मांइ, देखाडी जायगा झालि बांइ। पछी ए रूप अदृश्य

करी, आवि बेठा पाटपर हरि ॥२५॥ कीथां भक्त अले दरशन, नाथ निरखीने थयो मगन । पछी नाथे पुछ्युं एने एम, कहो आविशक्या आंहि केम ॥२६॥ अतिषृद्ध ने न चाले पग, केम लाधो आ देशमारग । हतुं खरचि भातुं मेळुं कांइ, केम पहो-त्या डोसा तमे आंइ ॥२७॥ कहे भक्त ब्राह्मण मेळो हतो, आव्यो अस ने जळ आपतो । मने तेडिआव्यो एह आंइ, मेली मंदि-रमां गयो क्यांइ ॥२८॥ त्यारे नाथ कहे अमे हता, आव्या तारी खबर राखता। दीधां वाट घाटनां एधाण, मळ्यां नदी गामनां निशाण ।।२९।। त्यारे भक्त कहे सर्वे सत्य, मने लाविया आपी हिमत्य । एह परचो पुरण प्रमाणो, वळी वात एक कहुं जाणी।।३०।। एक काजु कोटेशर गाम, तियां भक्त रहे झवेरनाम। थयो बालपणे सतसंग, लाग्यो कडवो सर्वे कुसंग ॥३१॥ इढ आश्वरो अंतर धारी, मजे सहजानंद सुखकारी। आखा गाम-मांहि घर एक, बीजा बसे त्यां पापी विषेक ॥३२॥ करे अदा-वत नाखे आळ, ते न समझे भक्त दयाळ। पापी कहे लाग्युं तने पाप, एक मुकी कयों बीजो बाप ॥३३॥ खोटा तमे खोटो सतसंग, ठाला अमथा फुलोछो अंग । जो जाणता हो साचुंज तमे, आयो परचो तो मानिये अमे ॥३४॥ कहे अक्त केटलीक वात, आपशे परची प्रभु साक्षात ! तीय तमथी नहि मनाय, पढे प्रतीत मने मनमांय ।।३५॥ बारु मागो परचो सह मळी, आपने वाली मारी सांमळी। कहे विग्रुख आ डेरे चडी, जीव तारी रहे त्यांथी पडी ॥३६॥ तो साचा तमे ने साची नात, खामिपण प्रभु तो साक्षात । पछी भोळो भक्त बुद्धि बाळ, चड्यो शिवालये ततकाळ ॥३७॥ मेन्युं त्यांथकी पडतुं तन,

स्वामिस्वामि करतां भजन । पड्युं अवनि उपर अंग, जाण्युं थाशे कलेक्र भंग ॥३८॥ रह्यो आखी अणिये नाव्यो आळ, न जणाणुं वपुमांहि वाळ। करी जगजीवने जतन, एम उगारियो निजजन ।।३९।। पापी विम्रुख पाछेरा पड्या, सतसंगी अंगे रंग चड्या ! आप्यो परचो एम प्रसिद्ध, कहुं वात बीजि करी विद्ध ॥४०॥ एक अमदावादने मांइ, प्राणवल्लभ द्विज रहे त्यांइ। भजे स्वामिनारायण नित्य, बिजि वारता जाणे अनित्य ॥४१॥ एकवार गोदावरी गयो, मरकीरोगमांहि मांदो थयो। रह्यो नहि रोग घणा दन, तर्त तजि चाल्यो जीव तन ॥४२॥ आव्या तेडवा तेहने नाथ, चाल्यो विप्र महाराज साथ । कहे जीवन सांभळय जन, कांइ इच्छा रही तारे मन ॥४३॥ कहे द्विज में न कहां केने, मारो संशय थाशे बहु एने । कहेशे मानवी मरेछे बहु, सुबो तेमज कहेरो ए सहु ॥४४॥ कहे नाथ तुं जा देहमांइ, कही आव्य तुं सहुने त्यांइ। पछी पाछो आव्यो ज्यारे प्राण, त्यांतो तन लैग्याता मञ्चाण ॥४५॥ खडक्या काष्ट्रमां सळवळ्युं तन, सहु आश्चर्य पामिया मन । एक कहे गयोतो ए मरी, केम आव्यो जीव पाछो फरी ।।४६।। पामी विसाय पुछेछे वात, भाइ तारी तुं कहे विख्यात । कहे द्विज हुं गयोतो धाम, आव्यो पाछो हुं एटले काम ॥४७॥ आतो काळनो वेग छे भारी, नाखशे नर-नारीने मारी । माटे खामिनारायण कही, तो तमे सर्वे जीवता रहो ।।४८।। मानो मारुं एटछुं वचन, ताळी पाडिने करो भजन । पछी धुन्य करीने देखाडी, ताळी भेळी पोत्येपण पाडी ॥४९॥ पछी मागी शीख ग्रुक्युं तन, पामियां आश्चर्य लाखी जन। थयो पर्चो ए प्रसिद्ध जाणी, जाणी आनंद अंगमां आणी ॥५०॥ जुनी

सर्वे सतसंगमांइ, सदा सुख दुःख निह कांइ। नित्य सहाय करे सहजानेद, जोइ मगन रहे जनबृंद। ५१।। इति श्रीमदेकांति-कधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्त-चिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे भक्त कला आदिने परचा पुर्या एनामे एकसो ने साडित्रशमुं प्रकरणम्। ११३७।।

पूर्वछायो-एक सांभरि सारी वारता, सतसंगिने सुखदेण। वीति ते नथी वखाणतो, कहुं दीठी जे मारे नेण ॥१॥ धन्यधन्य सतसंगिने, जेना पुण्यनो नहि पार । धन्यधन्य श्रीमहाराजने, जेणे आप्या परचा अपार ॥२॥ जोइ परचा जनना, जे नहि माने नरनार । तेज अभागी तन छतां, मरी जाशे जमने द्वार ॥३॥ ए जन जाणे आस्तिकी, जेने साचुं मनाणुं मन। कहुं हवे कीर्ति कथी, हरि हरिजनननी पावन ॥४॥ चोपाइ-धन्यधन्य जेतलपुर गाम, वाले जेने कर्यु निजधाम। तेमां मरे पापी नरनार, तेपण न जाय जमने द्वार ॥५॥ तेमां परचा आप्या वाले बहु, जाणेछे जन गामना सहु। मोटामोटा कर्या ज्यां जगन, खुट्यां नहि घृत गोळ अन्न ॥६॥ एमां परचा आप्या पळेपळे, तेतो केम लखाय कागळे। पण कहुंछुं एक बे वात, हरिभक्ततणी विरूपात ॥७॥ एक द्विज भक्त दयाराम, प्रभ्रु पधारिया तेने धाम । आव्या पंखाळी घोडिये चडी, हैये हार ने हाथमां छडी ।।८।। जोइ जन थयो रिळयात, अहो आ सइ आश्चर्य वात । अतिप्रेममांइ लाग्यो पाय, ढाळी ढोलिडो बेसार्या त्यांय ॥९॥ निर्यु घोडीने नीलेरुं घास, उभो हाथ जोडी आगे दास। आपो आगन्या कराबुं थाळ, दया करीने जमो दयाळ ॥१०॥ मारी बोन छे बीजे भवन, कहुं तेने करे दरशन। कहे नाथ आव्या छाना अमे, झाझं जाहेर न करो

तमे।।११।। आज जाबुंछे गाम डभाण्य, एक जनने तेडवा जाण्य। आंहि रहेबुंछे घडि बेचार, पछी तर्त थाबुंछे तैयार ॥१२॥ माटे आव्य ओरो आपु हार, जातो झाझि करीश मां वार । दिधो हार गयो दयाराम, थया अदृज्य सुंदर ज्याम ॥१३॥ घेरे आव्यां बेउ बैन भाइ, नाथ न दीठा मंदिरमांइ। पछी काढी गाममां खबर, नाथ आव्या छे कोइने घेर ॥१४॥ परस्पर सहुने पुछिवळ्या, पण वालोजि क्यांइ न मळ्या। कहे सत्संगी बेसो जइ घेरे, प्रभु विराजेछे कच्छ तेरे ॥१५॥ कहे दयाराम तेहवार, आ जो आप्यो हमणांज हार । कहे सतसंगी धन्यधन्य, थयुं अलौकि तने दर्शन ॥१६॥ आप्यो प्रभुए परचो आज, धन्य भाग्य तारां द्विजराज। वळी एज गाममांहि एक, आप्यो पर्ची कहुं करी विवेक ।।१७।। एक द्विज भक्त छे निष्काम, जाणज्यो जोयतो तेनुं नाम। तेना देहनी आवियो अंत, आच्या मास मीरे भगवंत ॥१८॥ अलौकिक रूपे आव्या नाथ, जोइ जन थयोछे सनाथ। कहे जन धन्य भगवान, दिधां दासने दर्शनदान ॥१९॥ करुं रसोइ जिमिये आज, महेर करी ग्रुंपर महाराज। कहे नाथ तुं कर रसोइ, आज जमशुं जाणज्ये सोइ ॥२०॥ पछी जोयते कर्यां भोजन, जम्या भावेशुं जगजीवन। पछी आप्यो सुंदर ग्रुखवास, हाथ जोडी बेठो प्रश्रुपास ॥२१॥ त्यारे बोलिया एम महाराज, अमे आव्या छीए तारे काज। तने कहेवी छे वारता एक, हैये धारज्ये करी विवेक ।।२२।। तारुं तन ते पामशे नाश, एह आडो रह्यो एक मास। नावा जाइश क्षमां नीरे, पडशे क्ष लागशे शरीरे ॥२३॥ त्यारे छुटिजाशे तन तारुं, मानज्यो वचन ए अमारुं। आवशुं तेखवा तने अमे, सद्दाय करशुं वसमे समे ॥२४॥ रहेज्ये आनंदमांहि

तुं जन, करज्ये नारायणसुं भजन । आ वात तुं कहेज्ये एकपास, जे होय निक प्रभुनो दास ॥२५॥ एम कही रह्या ज्यारे नाथ, त्यारे विपरे जोडिया हाथ। एक सतसंगी बोन मारी, तेतो इच्छेछे तमने बिचारी ।।२६॥ तेने दर्शन दियो दयाळ, तो हुं तेडिलावुं तत-काळ। गयो विपर तेडवाकाज, केड्येथकी पथार्या महाराज ॥२७॥ तेडि लाव्योछे बोनने भाइ, पड्युं दिउं पत्रावछं त्यांइ। जोइ पस्ताप करेछे जन, केम रह्या नहि भगवन ॥२८॥ कहे जोइतो ए मारेकाज, आव्याता अलबेली महाराज। मने कहि गयाछे बचन, मासपछि तुं तजिश तन ॥२९॥ माटे आ वात केने म कहेज्ये, तारा मनमां समझि रहेज्ये। पछी पुरो थयो ज्यारे मास, त्यारे .आव्या पोत्ये अविनाश ॥३०॥ तेडि चाल्या जनने जीवन, थयां विजाने पण दर्शन । एह प्रताप नाथनो जोइ, जन मगन थयां सहु कोइ।।३१।। एक वारता कहुं वखाणी, लेज्यो सामर्थि नाथनी जाणी। मही तीरे छे गाम चमारा, तेमां भक्त सुतार छे सारा ।।३२॥ नाम द्याळजि भक्त भणिए, साची भक्त खामिनो गणिए। अतिनिर्मळ कोमळ चित्त, जेने प्रकट प्रभुमां प्रीत ॥३३॥ तेना देहनो आवियो अंत, आव्या तेडवा स्वामी ने संत । मुनिमंडळ छे सर्वे साथ, आच्या दयाळजिपासे नाथ ॥३४॥ घायुं दर्शने सरवे गाम, कहे पधार्या सुंदरक्याम । दिधां दयाळजिने दर्शन, निरखी नाथने थयो मगन ॥३५॥ कहे उठो भाइयो सहु मळी, करो वालानी चाकरी वळी। आपो घोडाने चार नीलेरी, कराविए रसोइ वेलेरी ॥३६॥ जमे महाराज ने मुनिजन, आज पधार्याछे घणे दन। एम कहीने उठियो आप, कहे बहु दने थयो मेळाप ।।३७।। सर्वे घरनां माणस रह्यां जोइ, देखे द्याळजि न देखे

कोइ। कहे गामलोक अमे आज, आव्या त्यांसुधी दीठा महा-राज ।।३८।। कहे द्यालजि आ उभा आप, बहु हेते भर्या मारी बाप। हुंती जाउंछुं महाराज मळयो, एम कहेतां देह तेह ढळ्यो।।३९।। सहु रह्यां छे आश्वर्य पामी, कहे धन्यधन्य समर्थ खामी। साचा तमें साचो सतसंग, पापी जीव नहि करे प्रसंग ॥४०॥ आवी-रीत्ये छुटे क्यांथी देह, मोटा मुनिने दुर्लभ एह। थयो पचीं कहे सहु मळी, कहुं वात बीजि ल्यो सांभळी ॥४१॥ एक कणबी कुशळबाई, जेने प्रीत अति प्रश्चमांइ। थइ ताण्य निरखवा नाथ, चाल्यां दर्शने लइ संगाथ ॥४२॥ आवी रजनी रह्यां डभासे, अंतरे हरि मळवा आशे । जंप न वळे जंखना भारी, क्यारे निरखु श्याम सुखकारी ॥४३॥ अतितलफे तन मनमांइ, थइ आतुर गई अकळाइ। अति प्रेमवश थया प्राण, नाडी न रही नहि ओळ-खाण ॥४४॥ एवे समे आव्या अलवेल, छेल छोगाळो छविलो छेल। शोभे सुंदर मूरति सारी, आवी उभा आगे सुखकारी॥४५॥ हसिहसि बोलावे दयाळ, करो दर्शन तन संभाळ। त्यारे हरि-जन थयां सचेत, लाग्यां पाय करी वहु हेत ॥४६ कहे धन्य-धन्य महाराज, दीधां अलौकि दर्शन आज। त्यारे नाथ कहे सुणो जन, तारुं जाण्युं जे छुटशे तन ॥४७॥ माटे आव्या उता-वळा अमे, करी बहु ताण्य ज्यारे तमे। हवे अमे जाशुं पाछा वळी, तमे आवज्यो सहु त्यां मळी ॥४८॥ एम कहि कंठथी उतारी, आपी माळा सुखड्यनी सारी। एक कंठी काजु झिणेपारे, दीधि वाले तेपण तेवारे ॥४९॥ दइ माळाओ चाल्या महाराज, करी अलैकिक एह काज। जोइ जन पाम्यांछे आनंद, कहे धन्य खामिसहजानंद ॥५०॥ जेह आपी मूरतिए माळ, ते फेरवेछे हजि

मराळ। आपी अलौकिक दान एह, दिठि छे निष्कुळानंदे तेह॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमु-निविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने आढित्रशमुं प्रकरणम् ॥१३८॥

पूर्वछायो-आश्चर्य वात छे अति घणी, कहेतां आवे अति आनंद । भक्तनी भीड्य भांगवा, छे समर्थ सहजानंद ॥१॥ जळे स्थळे ज्वाळाथकी, जे करी जननी जतन। मांखुं ते हवे भावशुं, सहु सांभळज्यो दइ मन ॥२॥ लौकिकमां अलौकिकनी, वळी वर्णविने कहुं वात । हरि हरिजनना, जे सुजश छे साक्षात ।।३।। सांभळतां संकट टळे, वळी कहेतां कलिमळ जाय। दर्दि संभारे जे दर्दमां, तेनी श्रीहरि करे सहाय ॥४॥ चोपाइ-एक रुडुं राजुलुं छे गाम, तियां सोनिभक्त नाग नाम । खरो विश्न-वासी जन जाणो, साचो भक्त प्रभुनो प्रमाणो ॥५॥ एक खामिनो सत्य आधार, बीजा कोइनो न गणे भार । साचा संत ते म्वामिना साधु, बीजा असंत बगडेल बाधु ॥६॥ एम ओळखी सत्य असत्य, भजे खामिने न चळे मत्य। एक दिवस उद्यम-काजे, गयो विदेश बेसिने झाझे ॥७३। करी काज बळ्यो बेसि वाणे, कळ वकळ कांइ न जाणे। वेठो वाणकिनारे बकोम, पड्यो पाणिमां न रहि व्योम ॥८॥ तन स्थूळ ने न जाणे तरी, गयुं दूर वाण वेग करी। अतिकष्ट आवियो अहेखे, जीववानी तो रीत्य न देखे ॥९॥ पछी संभार्या सोनिए खामी, आवो आ समे अंत-रजामी । हवे नथी इच्छा मारे अन्य, नाथ आत्री तजाविये तन ।।१०।। ज्यारे दास बोल्यो दीन वाणी, त्यारे आविया शारंग-पाणी । हेट्ये आवी नाथे हाथ दीघो, जळथी जन उंचेरो कीघो

11११।। कहे भय म राखिश कांइ, निह बुड्य आ अर्णवमांइ। त्यांतो खेवटे खबर लीधि, भाइयो आपणे सुंडिज कीधि ॥१२॥ एक पुरुष पड़्यो पाणिमांइ, तेनी गम रहि नहि कांइ। माटे वाण वाळी एने काजे, होय जीवतो तो लैये झाझे ॥१३॥ वाळ्युं वाण आव्युं जियां एह, जाणि जीवतो लिधोछे तेह। पछी खेवट पुछेछे मळी, केम रह्युं तन तारुं वळी ॥१४॥ कहे भक्त करी मारी साय, खामी सहजानंदे जळमांय । कहे खेवट वात ए खरी, तने राख्यो ए साचा श्रीहरि ॥१५॥ पाम्यो पर्चो तुं नाग निदान, तने मळया ए छे भगवान । माटे मेळव्य अमने एह, तारी पासे हुं मागुंछं तेह ॥१६॥ पछी भक्त भेळो लइ तेने, ओळखाच्या अलबेलो एने। तेह निश्चे करी घेर गयो, एम ए भक्तने पर्ची थयो ।।१७।। वळी वात तेना सुत केरी, नाम भगो छे मक्ति घणेरी। करे सोनिन्नं सरवे काम, भजे खामिनारायण नाम ॥१८॥ त्यारे यवन बदियो बाद, कहे मेलिदे तुं विषवाद। खामिनारायण तारा खोटा, मारा अङ्घाथी ए नहि मोटा ॥१९॥ कहे भगो एह वात साची, अमे एवा जाणी रह्या राची। कहे यवन एम न थाय, एम अमने ते न जिताय ॥२०॥ आव्य चढिये आ उंचे भुवन, स्यांथी पडतुं मेलिये तन । जो तुं जीवतो रहे त्यांथी जन, तो हुं करुं खामिनुं भजन ॥२१॥ जो हुं जीवतो रहुं भगला, तो हुं तने भजाविश अला। एम कही उंचा बेउ चड्या, मुलांजितो मोरथकी पड़्या ।।२२।। भांग्या हाथ पग वळि हैयुं, मोढ़ुं भागी लोहीलाण थयुं। वोरो हायहाय करे रह्यो, भगा तुंतो साची भाइ थयो ॥२३॥ आव्या गामनां लोक सांभळी, कहे मांहोमांही एम मळी । भाइ भगो जीत्यो होड आजे, राख्यो एने स्वामि-

महाराजे ॥२४॥ आप्यी पर्ची एने भगवाने, हरो मुरख ते नहि माने। वळी कहु एक वात वखाणी, लेज्यो हरिजन सत्य वाणी ॥२५॥ एक भावनगर शहेरमांइ, रहे क्षत्रि तियां राजीभाइ । एक रुपोभाइ हरिजन, गया पोत्ये तेहने भ्रुवन ॥२६॥ तियां बैठा छे घडी बेच्यार, करे मने मूरति विचार। वळी वृत्ति ते अंतरमांइ, दिठो श्वेतद्वीप वळी त्यांइ।।२७।। दिठि मूर्ति महारा-जतणी, श्वेतद्वीपना जे कोइ धणी। दिठा मुक्त त्यां विजा अपार, दिठा झिणोभाइ ते मोझार ॥२८॥ अतितेजोमय जेह भाम, तेजोमय मुक्त छे निष्काम । अतितेज तेज जळहळे, तेज विना ते विर्जु न मळे ।।२९।। तेने जोतांजोतां राजोभाइ, गइ आंख्यो पौतानी अंजाइ। सुखसुख अति जियां सुख, ते न कहेवाय वर्णिव मुख ॥३०॥ कहे नाथ सुणो राजाभाइ, तमे जाओ पाछा हवे त्यांइ। बोल्या राजोभाइ ते सांभळी, हवे नहि जाउं पाछो वळी ॥३१॥ कहे नाथ न रहेवाय आंइ, जाओ पाछा तमे तनमांइ। कहे झिणोभाइ वळी अमे, जाशुं कहेशो जरुर जो तमे ॥३२॥ कहे नाथ तज्युं एणे अंग, एने तेडि लाव्या अमे संग। अमे गया हता एने घर, मेल्युं देह तेह रुडिपेर ॥३३॥ राखी आव्या छीए संत तियां, अयोध्यावासीतो तियां रह्या । एम कही देखाड्युं महाराजे, सुण्युं सरवे ते भाइ राजे ॥३४॥ पछी त्यांथी आव्या देह मांइ, अहोअहो कहे राजोभाइ। पछी जोइ आव्याता जे त्यांइ, तेनी वात करी सर्वे आंइ ॥३५॥ कह्यं झिणामाइनुं आगम, सहु सुणी खाइ रह्यां गम। पछी वात ए दिन दोच्यारे, थइ साची ते सर्वे प्रकारे ॥३६॥ एवो देखाड्यो चमतकार, स्वामिसहजानंदे निरधार। वळी वारता छे एक सारी, सहु लेज्यो

अंतरमां धारी ।।३७।। एक पाणवि नामे छे गाम, क्षत्रिभक्त पुंजोभाइ नाम । अतिवैराग्यवान विशेक, बीजो समझे नहि विवेक ।।३८।। पाडी अंतरमां आंटी एह, मळे नाथ कां तजुं आ देह। पछी गयो समुद्र छे त्यांइ, सुण्यो महादेव छे जळमांइ ॥३९॥ आवती लेरे लिंग ढंकाय, बळे लेरे तारे त्यां जवाय । पछी गयो पुंजो तेनेपास, मळे प्रभु अंतरे ए आश्व ॥४०॥ पोत्ये तियां आव्युं पाछुं पाणी, भरी लिंग साथे बाथ ताणी। आव्युं जळ बले बहु त्यारे, ठेलि काढ्यो गाउ पाछो आरे ॥४१॥ त्यारे अंतरे एम विचार्य, केम थयुं निह मोत मारुं। आतो आश्रर्य वारता जाणुं, अति अगाध जळमां जीवाणुं ॥४२॥ हवे मरबुं मारे जरुर, पडुं जइ हुं आवते पुर । एम निश्चे करी चाल्यो ज्यारे, थइ आकाशवाणी ते वारे।।४३।। कहे अमथो मरे शिद आंइ, प्रभ्र मळशे तुं जा घेर त्यांइ। खामि सहजानंदिज छे जेह, आज प्रकट प्रभु छे तेह ॥४४॥ तारे गामे आव्या तेना जन, थाजे सत्संगी मानी वचन। एवी सुणि आकाशनी वाणी, वळयो पुंजो ते विश्वास आणी ॥४५॥ दिठा संत आव्यो ज्यारे घेर, मळी वात रह्यो नहि फेर । आवी लाग्यो संतने चरणे, साधो हुं छउं तमारे शरणे ॥४६॥ साचा तमे छो स्वामिना संत, तमने मळ्या छे श्रीभगवंत । हुंतो परचो पाम्यो छुं आज, मानिलेज्यो तमे महाराज ॥४७॥ जेनुं स्वामिसहजा नंद नाम, तेतो पोत्ये छे पूरणकाम। तेनां थाय मने दरशन, एम थाओ तमे परसन्न ॥४८॥ पछी संते मेळ्या भगवान, दीघां पूजाने दर्शनदान। अति वात अलौकिक जाणी, कही जाणि तेने में वखाणी ।। ४९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वासि-

शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरि-जनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने ओगणचालिशमुं प्रकरणम्।।१३९॥

पूर्वछायो-सामधिं श्रीमहाराजनी, वळी सांभळज्यो सहु जन । सुंदर परचा सांभर्या, जे पुर्या श्रीभगवन !।१।। डंढाव्य देशमां नार्दिपुरे, द्विज तिताराम नाम । भक्त एक महाराजनो, विजुं विमुख संघळं गाम ॥२॥ विमुख मुखथी एम वदे, आ भक्ति बिजा भेदनी। आवशे विमान तेडवा, तमे मानज्यो वाणी वेदनी ॥३॥ परधन परत्रिया परहरी, परहरियां विजां नाम । स्वामिनारायण नामने, समरेछे आठु जाम ॥४॥ चोपाइ-वोले खळताए मुख मीठुं, आवुं भजनतो क्यांइ न दीठुं। आतो भक्त छे मोटोज बहु, एनी राखज्यो खबर सहु ॥५॥ एने आवशे लेवा विमान, पथारशे पोते भगवान । माटे सावधान सहु रहेज्यो, जेने मळे ते बिजाने कहेज्यो ॥६॥ रखे रहि जाइए दर्शन विना, रहेज्यो सचेत रात्य ने दिना। एक कहे हुं जाइश साथ, झालि विमान डांडियो हाथ ॥७॥ एम बोले खळाइमां बहु, बाळ जोबन वृद्ध सहु। एम कहेतां वीत्या कांइ दन, तज्युं काळेकरी तिते तन ।।८॥ आव्यां तेडवा तेने विमान, घणा संत भेळा मगवान । कोटिकोटि सर्यने समान, शोभे अलौकिक ते विमान ॥९॥ तेना तेजमां ढंकाणुं गाम, पाम्यां आश्चर्य पुरुष ने वाम । सहु कहे मारा घर माथे, हाक्यों रथ ते तिताने नाथे ॥१०॥ भाइयो आपणे करतां खळाइ, आतो कुईं पड्युं नहि कांइ। गयुं विमान तिताने घेर, तेडिचाल्या तेने रुडिपेर ॥११॥ जेम शीख मागि जाय गाम, तेम चाल्यो तितो करी काम । जोइ आश्वर्य पामिया जन, सहु लोक कहे धन्यधन्य ॥१२॥ आर्चु न दीठुं ने न सांभळ्युं, प्रकट

विमान तेडिने वळ्युं। साची भक्ति ए भगततणी, थयो पर्चा कहिए ग्रं घणी ॥१३॥ वळी खंढाच्य देशमां गाम, वसे भक्त त्यां प्रांतिज नाम । थाय हरिवात त्यां हमेश, आपे संत साची <mark>खपदे</mark>श ।।१४।। आदे सांभळवा सहु जन, सुणि वात थाय परसन । एक कंसारो, नाम कानजि, थयो सत्संगी कुसंग तजि।।१५।। तेतो हतो कवीरनो वळी, आव्या कविरिया घेर मळी । कहे भाइ कबिरमां शी खामी, केम साचा जाण्या कहे खामी ॥१६॥ तेनुं पारख्युं आप्य अमने, साचा खामी होयतो खा समने। एम कहि लाव्या गोळो एक, कर्ये। तपावी रातो विशेक ॥१७॥ कहे **अपा**डिले हवे आने, ज्यारे स्वामिने साचा तुं माने । नहि बळका दिये ते तमने, रहीश साजी तो मनाशे अमने ॥१८॥ त्यसरे कंसारे करी विनति, करज्यो सार श्रीगोलोकपति । एम कहिने गोळो उपाड्यो, लइ हाथमां सहुने देखाड्यो ॥१९॥ कहे पापियो पर्ची आ जुवो, थाओ सत्संगी जन्म कां खुवो। आ जो दाइया नहि हाथ रति, खामी साचा छे मानो कुमति ॥२०॥ एम करे भक्तनी सहाय, सहजानंदिज संकटमांय । एम पर्ची पुर्यो भग-वाने, पण होय पापी ते न माने ॥२१॥देश चडोतरे वसी गाम, द्विजभक्त दादोभाइ नाम । तेनी तनया जमुनां जेह, अतिसुखी समाधिए तेह ।।२२।। एक दिवस समाधिमांइ, आबी महाराज पासे ए बाइ । कर्यां महाप्रभुनां दर्शन, निर्धि नाथने थइ मगन ॥२३॥ जेजे करी श्रीमहाराजे वात, तेते सुणि लिधिछे साक्षात। अतिराजि दिठा ज्यारे नाथ, बोली जमुनां जोडी वे हाथ ॥२४॥ करो प्रसादिनी मने महेर, आयो वस्त्र लइ जाउं घेर । तेह समे नाता हता नाथ, नाइ छुयुं अंग निजहाथ ॥२५॥ छु<sup>यु</sup>शरीर जेह

रुमाले, दीधो जधुनाने तेह वाले। जधुनां जा हवे तुं तारे घेर, आंहि आव्यां थइ घणी वेर ॥२६॥ पछी जमुनां देहमां आवी, प्रकट एक रुमाल लावी। अलौकिक लौकिकमां नावे, जे आवे ते अलौकिक कावे।।२७।।एम अलौकि एह रुमाल, पामी जम्रुनां थइ निहाल। एवो प्रताप महाराजतणो, शुं कहिए ग्रुखथी घणोघणो ॥२८॥ वळी चडोतरे चांगा गाम, तियां भक्त भाट नथुनाम । तेनां संबंधि ते सतसंगी, भजे अभकां नाथ उमंगी ॥२९॥ सर्वे बाळकां समाधिवान, करे प्रकट प्रभुजिनुं ध्यान । जाय धारणामां प्रभ्रपासे, करे दर्शन अतिहुलासे ॥३०॥ अतिहेते बोलावे दयाळ, जाओं घेर हवे सहु बाळ। एम कही आपी परसादि, पेंडा पतासां साकर आदि ॥३१॥ फुल हार तोरा ने गजरा, आप्या गुच्छ ते गुलाबकेरा। आपी प्रसादि आवियां बाळ, आवी करी देहनी संभाळ ॥३२॥ जागी जोयुं बाळके जे वारे, दीठुं प्रकट प्रमाण त्यारे । पेंडा पतासां साकर जेह, वहेंचि आपि सरवेने तेह ॥३३॥ तोरा गजरा फुलनी स्नज, देखी प्रकट पाम्यां आश्वर्ज। लोकमां अलौकि चीज जोइ, कहे धन्यधन्य सहु कोइ ॥३४॥ वळी त्यांनी कहुं एक वात, सारी सांभळ्या जेवी विख्यात । एक कणबी वसनदास, तेने अति खेतिनो अध्यास ।।३५।। करे आठ पोर एह काम, मुखे न लिये प्रभुनुं नाम। अति-कोधी ने रिशाळ बहु, एथी डरि चाले गाम सहु ॥३६॥ पछी काळे कर्युं तन त्याग, मुवा केड्ये थयो काळो नाग। रह्यो वाडी पोतानिमां व्याळ । अतितिखो अगनिनी झाळ ॥३७॥ होर चोर ढुंकवा न दिये, पेसे पराणे तेनो जीव लिये। एम करतां आव्या महाराज, एह वाडीये नावाने काज ॥३८॥ दिठा दातण करतां ३६ भ०चि०

दयाळ, जोइ विसाय पाम्यो ते व्याळ। आतो पूरण ब्रह्म छे आप, एने निरस्ति हुं थयो निष्पाप ॥३९॥ हवे आज थकी एम धारुं, जीवुं त्यांलगी जीव न मारुं। रहुं निरविष थइ नेक, छांडी रीश कोध वळी छेक । ४०।। आजथकी धरुं व्रतमान, रहेवुं मारे अति निरमान । एवी साधुता ग्रहिछे सापे, पछी जे मळे ते दुःख आपे ।।४१।। एक दने सुतसुत मळी, मार्यो एह वियाळने वळी । त्यारे डशी वस्यो ते देहमां, लाग्यो बोलवा भोयंग तेमां ॥४२॥ कहे वण वांके केम मारे, शियुं थयुं मुंथी दुःख तारे। मने मळ्या जे दिना महाराज, ते दिनुं मारुं थयुंछे काज ॥४३॥ हुंतो निर्विष थइ फरुंखुं, खामी संतनां दर्शन करुंखुं। एम करी करिश तन-त्याग, तो मारां जेवां नहि केनां भाग्य ॥४४॥ तजिश हुं तन जेह वारे, आवशे नाथ तेडबा त्यारे। तेती मानज्यो सहु तमे सत्य, एमां नथी लगार असत्य ।।४५॥ एम बोलियो व्याळ वचन, सुणि आश्वर्य पाम्यां सहु जन। जोज्यो स्वामी श्रीजिनो प्रताप, जेथकी मुक्ति पामियो साप ॥४६॥ भाइयो आतो अलौकिक वात, थयो परचो मानो साक्षात । एक वळी पिपळाच्य गामे, द्विज-मक्त हेतबाई नामे ॥४७॥ तेने थाय समाधि हमेश, करे प्रभु पासे परवेश । पामे धारणामां जे प्रसादि, रहे प्रकट ते रायजादि ॥४८॥ सारी साकर आपे सहुने, जोइ अचंबो थाय बहुने । कहे आ रीत्य नोय कोइ काळे, करी आ समे दीनदयाळे ॥४९॥ पळेपळे जे परचा थाय, तेतो लखतां केम लखाय । प्रभु होय त्यां आश्वर्य शांनी, कहुं सहु जन लेज्यो मानी ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-

चिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने चाळिशमुं प्रकरणम् ॥१४०॥

पूर्वछायो-वळी परचा वर्णवी, कहुं हुं कांइक तेह । हरि हरिजनना जश, कहेतां ते वाधे सनेह ॥१॥ डंढाव्यदेशमां राज पुरे, कणवीभक्त जेकर्ण। सर्वे कुंडुंबिसहित पोत्ये, खामिश्रीजिने शर्ण ॥२॥ तेने महाराजे मोरथी, वर्ष आगम जणवी वात । आजथकी द्वादश मासे, पिंड थाशे तारुं पात ॥३॥ तेने एकादश मास वीत्या, वळी आवी कह्युं अविनाश । चेतवुं होय तो चेतज्ये, रह्यो मृत्यु आडो एक मास ॥४॥ चोपाइ-पछी जेकरणे सत्संगी तेडी, कही पोतानी बात निवेडी । भाइयो आ तन पामशे नाञ्च, तेह आडो रह्यो एक मास ॥५॥ माटे मंदिर संत उतरवा, काल्यथकी आदरिये करवा। त्यारे सत्संगी कहे ए सारु, अमने कह्यं ए न कहे बुं बारुं।।६।। पछी मंदिर सुंदर कराव्युं, त्यांतो मृत्यु ते नजिक आव्युं । त्यारे पत्नी पोतानीने कह्युं, मारे मरवा आडुं नव रह्यं ॥७॥ माटे मोरथकी तुंतो चाल्य, केड्ये हुंपण आवुंछुं काल्य। पछी बेठी ते करवा भजन, आव्या नाथ तेड्ये तज्युं तन ।।८।। तेने देन दइ घेर आव्या, पछी मोटामोटाने बोलाव्या I भाइयो जुवो प्रभुनो प्रताप, आतो वात मोटी छे अमाप ॥९॥ मने आव्यांछे लेवा विमान, बहु संत भेळा भगवान । मारे जा**वुंछे** काल्य जरुर, आव्युं नजिक नथी ए दूर ॥१०॥ माटे सुत एक लइ संगे, जाइश ब्रह्ममहोल उमंगे। केड्ये कहेशो जे न कह्युं केने, नहितो पुछि जोत वात एने ॥११॥ पुछो जेने पुछबुं जे होय, केड्ये संशय करशो मां कोय। खामी पोत्ये छे पूरणब्रह्म, जेने मळ्ये बळे कोटि कर्म ॥१२॥ एम कही तज्युं पछी तन, जोइ

आश्चर्य पामियां जन। बोल्या मांहोमांहि एम वळी, थयो पचीं कहे सह मळी ।।१३।। एक कणवी जतन नाम, भने प्रभु रहे पुरगाम। करे पोताना घरतुं काम, जपे स्वामिनारायण नाम ॥१४॥ पाळे सांख्ययोगी व्रतमान, धरे प्रभु प्रकटनुं ध्यान। एम करतां आच्यो तेने काळ, आव्या तेडवा तेने दयाळ ॥१५॥ जोइ जतने जोडिया हाथ, भले पथारिया मारा नाथ । कहे नाथ आव्या तुजसारु, लाव्या विमान लाखहजारु ॥१६॥ वेश विमाने म कर वेळ, कहे एम एने अलबेल। पछी संत हता जेह साथ, करी विनति जोडिने हाथ ॥१७॥ आज दुःख कोगळीयातणुं, तेमां मरेछे माणस घणुं । तेवामां मरशे जो आ बाई, कहेशे लोक ग्रुइ रोगमाई ॥१८॥ माटे एने मुकि जाओ आज, वळी पछी आवज्यो महाराज। पछी विमानने पाछां वाळ्यां, सर्वे गामने मनुष्ये भाळ्यां ।।१९।। जोइ आश्वर्य पाम्याछे जन, थयो पर्चो कहे धन्यधन्य। वळी एक उमरेठ गाम, द्विजभक्त बाइ जमुनां नाम ॥२०॥ तियां पथार्या पोत्ये भगवान, दीधां सहुने दर्शनदान । सात दिवस-सुधि रह्या त्यांइ, पछी आव्या पणसोरामांइ ॥२१॥ जमुनांबाइ तो रहि जंखति, जम्या विना गया प्राणपति। आकुळ व्याकुळ अंतरे थइ, शरीरनी शुद्ध भ्रली गइ॥२२॥ अंतरवरति उत्तरि ज्यारे, थयुं महाराजनुं दर्शन त्यारे। कहे आव्या अमे पाछा आज, करो रसोइ अमारे काज ॥२३॥ आज जमवुं छे तारे हाथ, कहे जमु-नांने एम नाथ । पछी जम्रुनां जागी तेह वार, करी सुंदर रसोइ सार ॥२४॥ पछी आबी जम्या जगदीश, जे कोइ अनंतशक्तिना ईश । करे रसोइ ते समे समे, तेने तजिने जन घेरे जमे ॥२५॥ एम जम्या जम्रुनाने घेर, करी महाराज श्रीजिए महेर। पाम्या

आश्चर्य गामना वासी, कहे धन्यधन्य अविनाशी ।।२६॥ आप्यो परचो अंतरजामी, सुखदायी सहजानंदस्वामी। वळी मोरज नामे छे गाम, तियां कणबि प्रभुदास नाम ॥२७॥ आव्यो तेहना देहनो काळ, त्याग्युं तन तेणे ततकाळ । गयो ब्रह्ममोलमां ते भक्त, तियां दिठा छे अनंत मुक्त ॥२८॥ दिठुं तेज त्यां अतिअपार, जाण्युं सूर्य हजारो हजार। अति सुख सुख नावे कहीए, जाणुं अखंड आ सुखमां रहीए ॥२९॥ दिठि महाराजनी त्यां मूरति, तेतो सुख-**सुखमय अति । लळिलळि लाग्यो तेने पाय, निर्धि हर्ष हैयामां न** माय ।।३०।। पछी प्रभु बोल्या एणिपेर, हवे भक्त जाओ तमे घेर। पछी आवशुं तेडवा अमे, त्यारे आ धाममां रहेज्यो तमे ॥३१॥ हमणां तो वळी वहेला जाओ, हेते गुण गोविंदना गाओ। पछी भक्त आव्यो देहमांइ, पहोर च्यारलगि रहि त्यांइ ॥३२॥ करी तियांनी आ सर्वे वात, सुणि सहु थयां रिळयात । कहे जन धन्य त्रसुदास, तमे जइआव्या प्रसुपास ॥३३॥ पाम्यो परचो अलौकि एह, तेमां नथी लगार संदेह। वळी गाना नामे एक गाम, कणबि भक्त अवलबाइ नाम।।३४।।तेणे सुणि सत्संगिनी वात, मानी न मानी रहि मनभ्रांत। पछी आवी दरशनकाज, निरख्या मन-मोहन महाराज ॥३५। निरखि नाथने पाछिज बळी, मूर्ति महा-राजनी चालि मळी। नयणा आगळ्ये रह्या नाथ, जियां जाय तियां आवे साथ ।।३६।। उठे बेसे सुवे जागे ज्यारे, देखे अखंड मूरति त्यारे। खातां पितां क्षणुं न रहे दूर, हाले चाले त्यां देखे हजुर ।।३७।। बोलतां बोले मुखमां मळी, जोतां सुणतां न रहे वेगळी। करतां सर्वे घरनुं काम, सदा भेळा रहे तेने क्याम ॥३८॥ एम रह्यं एने बहु दन, तेनुं माहात्म्य न जाण्युं मन । कहेवा लागी जेने

तेने एह, पछी मुरति न दिठि तेह ॥३९॥ एम आपेछे सुख महाराज, बहुपेरे करे जनकाज। वळी पैज नामे एक गाम, कणबी भक्त अवल एनुं नाम ॥४०॥ सांख्ययोगी पाळे व्रतमान, भने पोत्ये प्रकट भगवान । धरे ध्यान ते प्रकटतणुं, तेणेकरी भुलि पोतापणुं ॥४१॥ ग्रुलि तन बोली बदलाणी, कहे सेवो मने खामी जाणी। वळी पुछो जे पुछबुं होय, मने संशय राखशो मां कोय ॥४२॥ कहे हुं सहजानंदस्वामी, सरवेनो छुं अंतरजामी। एम कही पछी मांड्युं कहेवा, जेने मने हता घाट जेवा ॥४३॥ एम ऐश्वर्य देखाडे बहु, जोइ आश्वर्य पामियां सहु । जोज्यो महारा-जनो परताप, कहें छे यांथी कहे जैम आप ॥४४॥ एम रह्युं दिन दोय चार, पछी उपज्यो एम विचार । हुंतो दास श्रीमहाराज केरी, केम बेठां आ मुजने घेरी ॥४५॥ आवुं आसन न घटे मने, एम कही लागी पाय सहुने। एह बाइनी वात जे कही, जोज्यो विचारि सांसतां रही ॥४६॥ पळ एक आ देह भुलाय, एवुं कोइ काळे केम थाय । मोटो प्रताप ए नाथकेरी, शुं कहीए ते मुखे घणेरो ॥४७॥ नथी वात ए लैं। किक लेश, सर्वे अलैं। किक ए रहस्य। एम आपेछे नाथ आनंद, कह्युं न जाय निष्कुळानंद ॥४८॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्ताचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या **पनामे एकसो ने एकताळिशसुं प्रकरणम् ॥१४१॥** 

पूर्वछायो-अनुप ईडर देशमां, धन्यधन्य टोडला गाम। धन्यधन्य द्विजनी जातिने, ज्यां उपन्या भक्त अकाम ॥१॥ योगी पूर्व जन्मना, जेने वाला संगे अति वाल । प्रभु संगाथे प्रकट्या, खरा भक्त नाम खुशाल ॥२॥ शमदमादि साधने पुरा, तपसी

त्यागी तन । जाणे योग अष्टांगने, पूरणसिद्ध पावन ॥३॥ बाळपणामां वात बिजि, रुचि नहि जेने रंच। अति अभाव अंग वर्ते, पेखिने विषय पंच ॥४॥ चोपाइ-एवा भक्त ते खरा खुशाल, जेने न गमि संसारी चाल्य। बाळपणामां राच्या भजने, बीजं कांइ गम्यं नहि मने ॥५॥ एम करतां थयो सतसंग, चड्यो अति चित्ते तेनो रंग। आवी अंगमां खरी खुमारी, उत्तरे नहि केनी उतारी ।।६।। करे ध्यान महाराजतुं नित्य, अति प्रकट प्रभ्रमां प्रीत्य । एम करतां कांइक दन, थयो प्रकाश पोताने तन ।।७।। कोटिकोटि स्रजसमान, छायो तेजे जिम असमान । तेमां कडाका थयाछे त्रण, मान्युं लोके आव्युं आज मरण ॥८॥ आतो प्रलय थावानी पेर, एम कहेवा लाग्यां घरोघर । तेह कडाका ने तेज तेह, षट जोजने जणाणुं एह ।।९।। जोइ आश्चर्य पामियां लोक, वध्यो आनंद थयां अशोक । ते प्रताप श्रीमहाराजतणो, शुं कहिए मुखथी घणोघणो ॥१०॥ वळी एक दिवसनी वात, कहं वर्णवी वळी विख्यात । करता भजन महाराजतणुं, तनभान भुल्याछे आपणुं ।।११॥ थइ निरावरण निजवृत्ति, दीठा रात्यमां रांदलपति। थयो तेनो अतिशे प्रकाश, हुवो अंतर तमनो नाश ।।१२।। तेपण प्रभ्रतणो परताप, एम खुशाले मान्युंछे आप। पछी जेवुं चितवे जे वारे, थाय तेवानुं तेवुंज त्यारे ॥१३॥ तेतो जाणे लोक परसिद्ध, कहे आतो महामोटा सिद्ध। एम जने मन ज्यारे जाण्युं, तेवा समामां वर्षाते ताण्युं ॥१४॥ त्यारे सर्वे आवि लाग्या पाय, कहे करो वृष्टि दुःख जाय । मनुष्य पशु पीडाय अत्यंत, आव्या अरज्ये अमे पीडावंत ॥१५॥ माटे मोटा करो तमे महेर, करो वर्षात तो जाये घेर। एवी सांभळि लोकनी वाणी, समर्या

खुशाले शारंगपाणी ॥१६॥ करे स्तवन मनना दयाळ, आव्यो वर्षात त्यां ततकाळ ! बुठो त्रण्य दनलिंग तेह, काळा उनाळा जेवामां मेह ॥१७॥ लोक आवि लाखां पछी पाय, कहे धन्यधन्य द्विजराय । तमजेवो नहि जगमांय, तमारे सहजानंद सहाय ॥१८॥ मान्यो परचो मनुष्ये मळी, बळी वात बिजि ल्यो सांभळी। पोत्ये पंड्या थै मांडी निशाळ, आव्यांतां भणवा नानां बाळ ॥१९॥ तेने भणावेछे थोडं घणुं, करावे भजन हरितणुं। करतां बाळक खामितं ध्यान,सर्वे थयांछे समाधिवान॥२०॥करे अलौकिक आवी वात, सुणी सहु थया रिक्रयात । पछी खुशाल कहे सुणो बाळ, मारे जावुं ज्यां होय दयाळ ॥२१॥ त्यारे बळके जोडिया हाथ, तमने तेडवा आवेछे नाथ। धरी द्विजनुं रूप महाराज, तेतो आवेछे तमारे काज ॥२२॥ पछी आव्या नाथ साथे चाल्या, वाटे अञ अळे वाले आल्यां। आव्या जेतलपुरलगि साथ, पछी अदृश्य थयाछे नाथ ॥२३॥ हता जेतलपुरमां स्वामी, निरस्वा खुशाले अंतरजामी। कही वाटनी वात खुशाले, हिस सांभळि सरवे वाले ।।२४॥ कहे नाथ ब्राह्मणने भाळी, भाइ तुं छो मोटो भाग्यशाळी । थयो परचो तने ए जाण्ये, बिजि वात मनमां म आण्ये ॥२५॥ त्यारे ब्राह्मण कहे महाराज, हुंतो आन्योछुं भणवाकाज। त्यारे नाथ कहे घणुं सारुं, एमां गमतुं घणुं अमारुं ॥२६॥ पछी खुशाल संतमां रहा, एक समे बडोदरे गया। तियां सतसंगी रहे बहु, करे स्वामिनुं भजन सहु ॥२७॥ एक द्विज सदाशिव नामे, नित्य खुशालने करभामे। आबी नित्य जमो मारे घेर, मारे छे श्रीमहाराजनी महेर ॥२८॥ जियांलगि रहो तमे आंइ, बिजे जमवा न जावुं क्यांइ। पछी खुशाल जमवा गया, आच्या नाथ

जमवाने तियां।।२९।। त्यारे सदाशिव लाग्यो पाय, निरिष नाथ तृपत न थाय । पछी सुंदर कंराच्यो थाळ, जम्या दया करिने द्याळ ।।३०।। सदाशिव वळी एनी नार, देखे बिजा न देखे लगार। पण जमतां जाणे सहु जन, थाय अर्धु जे होय भोजन॥३१॥ शाक पाक धर्युं होय थाळे, थाय ओछुं ते सरवे भाळे। जळनो जे होय आबखोरो, पिवे नाथ ते थाय अधुरो ॥३२॥ होय मुखवास आगे मेल्यो, आपे नाथ ते पाछो जमेलो । आपे जमेल पाछी सोपारी, जोई आश्वर्य थाय नरनारी ।।३३।। एम मासलगी अहोनिश, जम्या हरि खुशाल हमेश। ज्यारे ज्यारे जमे ज्यां खुशाल, त्यारे त्यारे जमे संगे लाल ॥३४॥ जमे जन हाथे नाथ नित्ये, तेती खुशालभक्तनी प्रीत्ये। एम खुशाल विप्रने बळी, पुर्या पर्चा बहु नाथ मळी ।।३५।। हता आपे ते वैराग्यवंत, संसारथी उदासी अत्यंत। पछी धार्योछे धार्मिक योग, तजी भवतणा वहभोग ॥३६॥ धर्यु नाम ते गोपाळानंद, थया योगेश्वर जगवंद । फरे दयाछ सरवे देश, आपे मुम्रुक्षुने उपदेश ॥३७॥ कर्या महाराजे मोटेरा बहु, माने मोटा मुनिवर सहु। एक दिवस लइ मंडळी, आव्या वडोदरामांहि वळी ॥३८॥ तियां सत्संगी आव्या सांभळी, लाग्या पाय सहु लळिलळी। मोटां भाग्य जाय नहि कहीये, आव्या तमे अप्टमीसमैये ॥३९॥ करो उत्सव आणी हुलास, बांघो हिंडोळो कहे एम दास । त्यारे गोपाळस्वामी कहे सारुं, करशे हरि गमतुं तमारुं ।।४०।। त्यांतो आच्यो अष्टमीनो दन, कर्यु व्रत सहु मिळ जन। बांध्यो हिंडोळो हरिने काज, आवी छुल्या प्रकट महाराज ॥४१॥ सारी सुंदर मूरति शोभे, जोइजोइ जन मन लोभे। निरिष हरिवयां सहु जन, करे सहु साथ धन्यधन्य ॥४२॥ आज

अलौकि दर्शन दीधां, तमे अमने कृतार्थ कीधां। तियां सतसंगि कुसंगि हता, दिठा प्रकट सहुए झलता ॥४३॥ झुल्या हिंडोळे घडी बेच्यार, पछी न दीठा ते निरधार। सहु रह्यांछे आश्चर्य पामी, कहे धन्य सहजानंदस्वामी ॥४४॥ आप्यो परची प्रश्नुजि आपे, स्वामि गोपाळानंदने प्रतापे । वळी गोपाळानंद खामिने, पुर्यो परचो कद्व करमामिने ॥४५॥ एकसमे नावे वरसात, मरे मनुष्य थाय उतपात । शोध्ये शहेरमां न मळे अन्न, पड्यो काळ कहे सहु जन ।।४६।। पछी सतसंगी सर्वे मळी, आच्या ज्यां हती मुनिमंडळी। बेठा गोपाळखामिने पास, कहे नथी जीववानी आश्व ॥४७॥ मरे शहरमां मनुष्य बहु, अन विना पीडायछे सहु। देतां दाम मळे नहि अत्र, कहो केम करी जीवे जन ॥४८॥ माटे स्तुति प्रभ्रुपासे करीए, थाय मेघतो अमे उगरिए। कहे गोपाळखामी द्याळ, करो भजन सर्वे मराळ ॥४९॥ बेठा भजने घडी बेच्यार, आच्यो मेघ थयो जेजेकार । बुठो त्रण्य दनलगि घन, काळा उनाळामां रात्य दन ॥५०॥ सतसंगि कुसंगिये जाण्युं, थयो पर्ची सहुए प्रमाण्युं । लाग्या गोपाळखामिने पाय, धन्यधन्य तमे मुनिराय ॥५१॥ बोल्या गोपाळखामी तेप्रत्ये, जे थयुं ते श्रीजिनी सामध्यें। बीजाथकी ते कांइ न थाय, ठालो भुलो फोगट फुलाय ॥५२॥ एम परचा हुं केटला कहुं, थया गोपाळखामिने वहु । कहेतां लखतां न आवे पार, कहे निष्कुळानंद निरधार ॥५३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे गोपाळानंदस्वामीने परचा पुर्या एनामे एकसो ने वेंता छिशमुं प्रकरणम् ॥१४२॥

पूर्वछायो-वळी वडोदरा शहेरमां, पुर्या जे पची महाराज । ते लेखे न आवे लखतां, एम कर्या जननां काज ॥१॥ जणज-णप्रत्ये जुजवा, वळी परचानो नहि पार ! कह्या न जाय कोइथी, एवा थाय चमतकार ॥२॥ हेत जोइ हरिजननां, प्रभुजि थया प्रसन्न । नित्य प्रत्ये नरनारीने, आपे दयानिधि दर्शन ॥३॥ जेजे रीत्ये जनना, महाराजे पुर्या मनोरथ । तेते कहुं सहु सांभळो, खामि सहजानंदनी सामर्थ्य ॥४॥ चोपाइ-कहुं सामर्थि नाथनी हवे, चडे खुमारी जेने सांभळवे। एक भक्त ब्राह्मण अकाम, तेनुं सदाशिव एवं नाम ॥५॥ तेनी सुता ते नाम उमैया, ते उपर महाराजनी दया। थाय धारणा देखेछे धाम, लिये आविने तेहनां नाम ॥६॥ सुरपुर ने कैलास जेह, वैकुंठ वळी गोलोक तेह । श्वेतद्वीप ने अक्षरधाम, एहआदि लिये कइ नाम ॥७॥ देखे धाम ने धामना पति, सहजानंद सुखमूरति । करे दर्शन तेहनां नित्ये, प्रभु बोलावे बाईने प्रीत्ये।।८॥ एक दन कहे एम नाथ, आज जमशुं अमे तारे हाथ । करज्ये सुंदर रसोइ सारी, केळां रोटली काजु तैयारी ।।९॥ पछी धारणा मांहिथी जागी, उठी रसोइ करवा लागी। थइ रुडि रसोइ तैयार, जम्या प्रकट प्राणआधार ॥१०॥ दिठा घरने मनुष्ये मळी, आवी मूरति एम न कळी । जाण्युं प्रकट प्रमाण पधार्या, आज जन्म अमारा सधार्या ।।११।। बेठा दीठा सौवे च्यार घडी, पछी पधार्या गम न पडी। जोइ आश्चर्य पामिया जन, सहु कहेवा लाग्यां धन्यधन्य ॥१२॥ आतो परचो दिधो दयाळ, दीनबंधु दीनप्रतिपाळ। वळी एक दिवसनी वात, कहुं सांभळज्यो ते विख्यात ॥१३॥ करी समाधि उमैया बाई, आवी हरि विराजता त्यांई। करी दर्शन

बेठीछे पास, निररूया नाथने हैये हुलाम ॥१४॥ कहे उमैया मने महाराज, आपो कांइक प्रसादि आज । त्यारे जमना हता जीवन, सुंदर भात्यभात्यनां भोजन ॥१५॥ जमी चळ करी रह्या नाथ, लइ रुमाल ने खया हाथ । ते आप्यो उमयाने महाराजे, प्रसा-दिनो ते पूजवा काजे ॥१६॥ आप्यो रुमाल धारणामांई, लइ-आवी ते उमैया बाई । जागी जोयुं त्यां पोताने पास, जोइ रुमाल पुछेछे दास ॥१७॥ आतो रुमाल राखता नाथ, क्यांथी आच्यो बाई तारे हाथ। कहे उमैया समाधिमांहि, आप्यो गढडे लावी हुं आंहि ॥१८॥ त्यारे सहु कहे धन्यधन्य, थयो पर्ची कहे एम जन । वळी एकदि धारणा करी, आबी महाराज पासळ्य फरी ॥१९॥ कर्युं दर्शन दयाद्यतणुं, थइ मनमां मगन घणुं। **तेदि हतो संक्रा**तिनो दन, बाले तेडाव्याता विष्र जन ॥२०॥ अाप्यां अन्न धन दान बळी, लिधां गामने ब्राह्मणे मळी। तियां वेठिति उमैया बाई, आप्या तललाडु धन त्यांइ ॥२१॥ दिधुं समाधिमांहि महाराजे, एना तात सदाशिव काजे। पछी जागिछे उमैया ज्यारे, रह्युं प्रत्यक्ष प्रमाण त्यारे ॥२२॥ ते आप्युं सदाशिवने लइ, वळी त्यांनी लीला सर्वे ऋइ। पछी जाणि अलौकि प्रसादि, दिधि लिधि बाई भाइ आदि ॥२३॥ सर्वे जने कर्यो जेजेकार, धन्यधन्य हरि अवतार। बळि एक दिवसने मांई, करी धारणा उमैया बाई ॥२४॥ गइ श्रीमहाराजने पास, सामुं जोइ बोल्या अविनाश । कहे केम आवे नित्यनित्य, एवी शी छे अममांहि प्रीत्य ॥२५॥ कहे बाई तमे तो श्रीकृष्ण, हशे अभागी नहि करे द्रष्ण। माटे आविछुं दर्शन काज, नथी काम बीजं महाराज ॥२६॥ त्यारे हिश भरी मुठि हाथे, आपी साकर

सुंदर नाथे। तर्त तुलसिनी मंजर त्रोडी, आपी प्रसादि उत्तम रुडी ॥२७॥ हतो जन्माष्टमीनो ते दन, आपी पंचाजीरी ते पावन। केवडो जे सुवासे भरेल, आप्यो नाथे ते माथे धरेल ॥२८॥ आपी प्रसादि करिने महेर, कहे नाथ तुं जा हवे घेर । आवी उमैया ते देहमांइ, लावी प्रसादि प्रकट त्यांइ ॥२९॥ अलौकिक एह छे प्रसादि, जेने इच्छे भव ब्रह्मा आदि। सह्यो शिवे जेसारु संताप, थयो क मत्स्य जेसारु आप ॥३०॥ एवी प्रसादि दुर्रुभ जेह, पामे समाधिमां जन तेह। एतो वात छे आश्चर्य घणी, कहिए मोट्यप शुं हरितणी ॥३१॥ वळी एक दिवसनी वात, अति ताणिगयो वरपात । सहु लोक थयाछे उदास, मेली मेघ आववानी आश ।।३२।। करे चिंता सहु बुढां बाळ, केम उत्तरशुं आवो काळ । सदाशिवे पण कयों शोच, आपणा घरमां नहि पहोच ॥३३॥ माटे पुछार्वु महाराजपास, पुछ्या विना न आवे विश्वास । पछी पुछाव्युं उमैया साथ, पुछच मेघनुं शुं कहेछे नाथ ॥३४॥ पछी उमैया धारणा करी, गइ ज्यां हता पोत्ये श्रीहरि । करी दर्शन बेठि छे पास, त्यारे हशी बोल्या अविनाश ।।३५॥ शुं पुछबुंछे उमैया तारे, पुछ्य संशय राख्य मां लगारे। बोलि उमैया कहे मारो तात, पुछे कैये थाशे वरपात ॥३६॥ सुणि बोलिया सुंदरक्याम, तारे वर्षातनुं शुं छे काम । बेठि कर नाचित भजन, तने मळशे वस्त्र ने अन्न ॥३७॥ कहे उमैया हुं नथी कहेती, मेंतो पुड्युं छे लोकनी वती । त्यारे नाथ कहे जा तु त्यांइ, थाशे मेघ घडी च्यारमांइ ॥३८॥ कहेज्ये तियां जइने तुं वात, नथी वार आव्यो वरपात । आवी एमनुं एमज कह्यं, घडी च्यारमांहि सार्चुं थयुं ।।३९।। नोतुं वर्षवुं मेघने मने, वर्षो घन वालाने

बचने। बुट्यो मेघ ने आव्यो आनंद, सहु जय बोले जनषृंद ॥४०॥ धन्य बाई घन्य तारी भक्ति, आतो पर्ची थयो मोटो अति। बळी एक दिवसनी वात, सहु सांभळज्यो ते साक्षात ॥४१॥ बेठी उमैया धारणामांई, गइ प्रभु पासळे ए वाई। कर्यो द्रमे भरिने दर्शन, जोइ महाराज थइ मगन ॥४२॥ कहे नाथ आ हिळिछे छोडी, नित्य आवेछे यां भ्रोडिभ्रोडी। एम कही हतो पासे हार, नाख्यो एहना गळा मोझार ॥४३॥ आप्या तोरा गजरा पेरेल, अतिजाडा सुगंधि भरेल। आवी समाधिमांहिथी ज्यारे, रह्या पोतापासळे ए त्यारे ॥४४॥ वळी एक दिवसनी वात, आप्यां जामफळ वाले सात । आपे समाधिमांहि जे चीज, रहे प्रकट प्रमाण तेज ॥४५॥ वळी एकदि आंबानुं फळ, आप्युं अतिमिठुं जे अमळ। बळी एकदि पडियो लइ, गया लाडु वे मोतिया दइ।।४६॥ तेतो ताजा तरत करेल, पोता आगे थाळमां धरेल। ते आप्या छे अलबेले लइ, बात मोटी जाय निह कइ ॥४७॥ एम अलौकिक चीज लावी, वेंचे आ लोकमांहि ते आवी। समाधिमां मळे जेह जेह, थाय प्रकट प्रमाण तेह ॥४८॥ नथी वात जेवडी ए वात, थाय अलौकि वस्तु साक्षात । एवी रीत्य न दिठि सांभळी, सहु जन विचारज्यो वळी।।४९॥ आज सामर्थि वावरे वहु, एक जिमे हुं केटली कहुं। जननां लाड पाळेछे जेह, नथी आवतां कह्यामां तेह ॥५०॥ टरूया पर्चा में जे जनतणा, नथी एटला बिजा छे घणा। आज अति आपेछे आनंद, धन्यधन्य कहे निष्कुळानंद ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे उमैयाबाईने परचा पुर्या एनामे एकसो ने त्रेंतालिशमुं प्रकरणम् ॥१४३॥

पूर्वछायो-वळी वडोदरा शहेरनी, कहुं वर्णवी एक वात । पुर्या परचा जनने, सहु जाणे एम साक्षात ॥१॥ एकएकने अनेक परचा, आपेछे अविनाश । तेणे खुमारी तनमां, मन मगन रहेछे दास ॥२॥ आ लोक ने परलोक्तनं, थयुं सुलभ सहुने काज । देहछतां दुःखियां निह, तन छुट्ये आवे महाराज ॥३॥ जोइ जन एवी रीत्यने, करे अतिप्रीत्ये सत्संग । तेणे करिने तनमां, चडे नित्ये नवलो रंग ॥४॥ चोपाइ-धन्यधन्य आ सत्संग मांय, श्रीहरि प्रेत्ये करे सहाय । ज्यांज्यां सहाय करी घणि खामी, कहुं तेते हैंवे कर भामी ॥५॥ एक द्विज भक्त रामचंद्र, रुखो रोगारी जाणे राजेंद्र । तेणे समझिने कयों सत्संग, भजे खामी श्रीजिने अभंग ।।६।। करतां सारण श्वास उश्वास, सुतो अंतर दर्शननी आशा। कहे बहु वितिगया दन, नथी थयुं मने दरशन ।।।।। नथी जवातुं में तियांसुधी, एवी राख्योछे वेवारे रुंधी। एम शोचे घणुंघणुं मन, हवे क्यारे थाशे दरशन ॥८॥ एम संभारि सुतो ढोलिये, कहे नाथ कमाड खोलिये। उठ्यो रामचंद्र सुणी साद, प्रभ्र पधार्या पाम्यो आह्वाद ॥९॥ उठी झट उघाडिसुं द्वार, आव्या हरि मंदिर मोझार। कोटिकोटि सूर्यने समान, शोभा कही न जाय निदान ॥१०॥ सुखसागरमय मूरति, देखी दुःख रह्यं नहि रति । संगे इंदिरा शोभानी खाण्य, कवि कोड्ये न थाय वखाण ॥११॥ नखशिखा सज्या शणगार, शोभे नाथ-साथे श्री अपार । कहे रामचंद्र जोडी हाथ, कीधो आज कृता-रथ नाथ ॥१२॥ मारां भाग्य मोटां महाराज, थयां अलैकि दर्शन आज । रही करावुं रसोइ त्यार, प्रीत्ये जमिये प्राणआ-धार ।।१३।। त्यारे बोल्या नाथ मिठि वाण्ये, अमे आव्या हता

तारी ताण्ये । नृथी जमवुं जावुंछे वळी, करो दर्शन सरवे मळी ॥१४॥ दइ दर्शन प्रसन्न करी, पछी त्यांथी पधारिया हरी। रामचंद्र कहे धन्यधन्य, थयां आज मने दरशन ॥१५॥ मुजउपर अढळक ढळ्या, पाम्यो पर्चो जे प्रकट मळ्या। वळी एक दिवसनी वात, प्रभु पधार्या पोत्ये साक्षात ॥१६॥ आव्या अर्धि-निशा अविनाशी, सहु सुतांतां कमाड वासी। एनी किंकरीने कह्युं जाग्य, तारा घरमां थइछे आग्य ॥१७॥ तेणे जागतां वार लगाडी, त्यारे अमृतवाईने जगाडी। कहे घर बळेळे तमारुं, तने सुतां लागे केम सारुं ॥१८॥ तेणे जगाविया वैद्यराज, कहे जागो आव्याछे महाराज । कह्युं जगाडि मुजने एम, थइ लाय सुति छो तुं केम ॥१९॥ माटे जुवोने बळेछे कियां, छे अळगुं के लाग्युंछे इयां । पछी रामचंद्रे जोयुं जह, लाय पोताना घरमां थइ।।२०।। तेने ओलविने करी स्तुति, धन्यधन्य प्रभु प्राणपति। जो न जगाडो दीनदयाळ, तो आव्योहतो अमारो काळ ॥२१॥ तमे करी श्रीमहाराज सार, अमे आव्यां नवे अवतार। एम कही लाग्यां सहु पाय, त्यारे हिस बोल्या हरिराय ॥२२॥ आज भक्तनी करवा सार, अमे लिधोछे आ अवतार । कोइ रीत्ये दुःखि थाय दास, एवं न करुं कहे अविनाश ॥२३॥ माटे आप्योछे पर्चो में आज, एम कही चाल्या महाराज । पामी आश्चर्य कहे रामचंद्र, धन्यधन्य सुखना समुद्र ।।२४।। वळी एक दिवसनी कहुं, थयो पचेरे सांभळज्यो सहु। तेड्या जमवा घेर मराळ, कर्यो ठाइर अरथे थाळ ॥२५॥ शाक पाक ने जलेबी जेह, भरी थाळ धर्यो आगे तेह । आवी जमिया जीवनप्राण, प्रभु पोत्ये प्रगट प्रमाण ॥२६॥ जमि आठ जलेबीज लीबी, एक हरिजन बाईने दिधी।

कहे गयाता वैद्यने घर, आज जम्या अमे सारि पेर ॥२७॥ थाळमांथी लाव्यो छुं प्रसादि, जोइ जलेबी सारी छे खादि। कहे मेळी थाय सहु बाई, वहेचि आपज्यो मंडळिमांई ॥२८॥ आपी महाराजे प्रसादि जेह, बाईए बाइयोमां वेंचि छे तेह । हवे वैद्य-तणी कहुं वात, थयुं जैम तेम ते साक्षात ॥२९॥ बेठा जमवा ज्यारे मराळ, रामचंद्रे संभाळ्यो छे थाळ। आठ जलेबी ओछिज थइ, समज्या मनमां वात न कइ।।३०॥ पछी प्रकट वात ए थइ, त्यारे रामचंद्रे पण कइ। एवी रीत्यनो चमतकार, पाम्यो रामचंद्र बहुवार ॥३१॥ वळी एक वात छे अनुप, सतसंगिने छे सुखरूप। रामचंद्रनी भारज्या जेह, कहे रामचंद्रप्रत्ये तेह ॥३२॥ जाशुं उत्सवे आपणे ज्यारे, शुंशुं पूजा लइ जाशुं त्यारे। कहे रामचंद्र ते सांभळी, करशुं कसुंबी पोशाग वळी ॥३३॥ कहे अमृत कसुंबि वसन, नाथ पहेरेछे कोइक दन। श्वेत पोशाग पहेरेछे झाझ, माटे एवो करावो तो काजु ॥३४॥ त्यारे रामचंद्र कहे सारुं, थाशे जेम महाराजनुं धार्धु। एम करतां वीत्योछे, दन, संध्यासमे पधार्या जीवन ॥३५॥ सारो पहेरी सुंदर सुवाग, जामो जरी धरी शिर पाग । शाल दुशाल सर्वे कशुंबी, फुलहारे रह्या अंग इंबी ।।३६॥ तेनी पाडोशण्य एक बाई, दीठा तेणे ते चउटामांइ। तेने नाथे वात एम कइ, कहेज्ये अमृतवाईने जइ ॥३७॥ तुं कहेतिति कसुंबि वसन, नथी पहेरता जगजीवन। ते पहेर्यां छे में सरवे आजे, कहेज्ये कह्युं छे एम महाराजे ॥३८॥ निरखि नाथने आविछे एह, कही वैद्य आगे वात तेह। पछी रामचंद्र एनी नार, धन्य सामर्थ्य अपरमपार ॥३९॥ आवा चम-तकारने जोइ, नहि माने मंदमति कोइ। पळेपळे परचा अपार, ३७ भ०चि०

जाणे जन न जाणे संसार ॥४०॥ वळी एक वात अतिसारी, कहुं सहु लेज्यो मन धारी। एक शास्त्री द्विज शोभाराम, भजे महजानंद सुखधाम ॥४१॥ मन कर्म वचने हरिदास, खरो महाराजनो छे विश्वास । तेना सुतनो आवियो काळ, आव्या तेडवा पोत्ये दयाळ ॥४२॥ त्रुटि नाडी ने न रह्या प्राण, बोलि न शके नहि ओळखाण्य। एवं दिउं शोभारामे ज्यारे, करी स्तुति महाराजनी त्यारे ॥४३॥ सुणि नाथ थयाछे प्रसन्न, आनुं तजा-वबुं नहि तन । एम कहिने प्रकट थया, करी हरिजनपर दया ॥४४॥ दिधुं सर्वने दर्शनदान, सहु कहे धन्य भगशन । भले पधार्या दीनदयाळ, आज अमारी लिधि संभाळ॥४५॥ कहे नाथ तारा सुतकाज, आव्याता तेडवा अमे आज। पण मुकी जाइ-ए छीए अमे, सर्वे शोक तजी देज्यो तमे ॥४६॥ एम कहिने अदृइय थया, जन जोइ आश्चर्य पामिया। पछी सुत तेनो तेह बारे, थयो वेठो पथारिथी त्यारे ॥४७॥ कहे आव्याता तेडवा नाथ, हुं जातोतो महाराजनी साथ। पण मुकिगया नाथ मने, एम कही छे वात सहुने ॥४८॥ सुणि सर्वे पामियां आनंद, कहे धन्य खामी सहजानंद । तमे आप्यो पचीं आ द्याळ, नाथ जीवाड्यो मृतक बाळ ॥४९॥ बळी दर्शन दिधां सहुने, राख्यो मनुष्यनी हारमां मने। एम कह्युं शोभारामे ज्यारे, लष्युं निष्कुलानंदे ते वारे ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कु-लानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एंनामे एकसो ने चुंवाळिसमुं प्रकरणम् ॥१४४॥

पूर्वछायो-वळी शहेर वडोदरे, करी जननी जीवने सार। संमळाबुं संक्षेपशुं, सहु सुणज्यो नरनार।।१॥ सामर्थि पोत्ये

श्रीहरि, आज वावरेछे अपरिमित । ते कही न जाय कोइथी, छे एवी अलैकिक रीत।।२।। आगे परचा पुरिया, जन हेते लड्ड अवतार । पण एहथकी रीत्य आजनी, छे जो अपरमपार ॥३॥ फहिकि कहीए क्यांलगी, एक जिमे जश अपार। पण जे आवे मारी जाण्यमां, करुं कांइक तेनो उचार ॥४॥ चोपाइ-एक द्विजभक्त छे दक्षिणी, कहुं वात हवे तेहतणी। नारुपंत नाना तेनुं नाम, करे राजसमाजनुं काम ॥५॥ एम करतां थयो सतसंग, चड्यो चित्तें तेनो अतिरंग। वळी एम समझ्यो सुजाण, मळ्या प्रभु प्रकट प्रमाण ।।६।। रही नहि उधारानी वात, तेणे करी रहे रिक्रयात । साची समझाणी सतसंग, भजे श्रीहरि करी उमंग ।।७।। कहे स्वामिसहजानंद सत्य, तेह विनातो बीजुं असत्य । एवी अंतरमां गांट्य पाडी, उखडे नहि केनी उखाडी ॥८॥ एम करतां वीत्या कांइ दन, आच्युं संसारसंबंधि विघन । एनी सुत बापु नाम जेह, थयो मंद शरीरमां तेह ॥९॥ तेने देखिने तेनी जनिता, करी अंतरमां अतिचिंता । मारे पुत्र एकज छे एह, कोइ रीखे रहे एनी देह ॥१०॥ पछी तेसारु समरी देवी, सुत-सारु अकळाणी एवी। नावी देवी आच्या अविनाश, थयो कोटि सूर्यनो प्रकाश ॥११॥ अति तेजतणो नहि पार, भेळा संत हजारो हजार । पछी एम बोल्या महाराज, आव्या बापुने तेडवा काज ॥१२॥ ते तुं कोटि उपाय जो करे, तोय तारो सुत न उगरे । माटे भैरव भवानी भूत, समर जे राखे तारी सुत ॥१३॥ त्यारे बोलि छे एम ते बाई, एनो भार नथी मारे कांइ। पण जीव जननीनो एवो, तेनो दोष मने नव देवो ॥१४॥ सुखे तेडिजाओ मारो तन, हुंतो अतिशे छुं परसन। एम कहिने जोडिया हाथ,

त्यारे बोल्या संत हता साथ ।।१५।। महाराज एने एक बाळ, तेने तेंडी न जाउं दयाळ। संसारिनेती एटछं सुख, सुत वित्त विना माने दुःख ॥१६॥ त्यारे एम बोल्या महाराज, नहि तेडिजाये एने आज । एनी पाडोसण्यनो जे तन, तेने तेडिजाशुं कहे जीवन ॥१७॥ पछी तेहने तेडिने चाल्या, बहु लोकने दर्शन आल्यां। दिठा सहुए प्रकटप्रमाण, थयुं सत्संगि कुसंगिने जाण ॥१८॥ एम प्रकट परचो दइ, चाल्या बीजा बाळकने लइ। नहि छानुं ए प्रकट जाणो, कहे पर्चो थयो ए प्रमाणो ॥१९॥ कहे नानो जोडी जुग हाथ, धन्यधन्य दीनबंधु नाथ । तमे दयानिधि छो दयाळ, दीनानाथ दीनप्रतिपाळ ॥२०॥ वळी वात कहुं एक सारी, हरि-जनने छे हितकारी। एक द्विज बापु सरवरियो, तेणे समझिने सत्संग करियो ॥२१॥ जोइ साची रीत्य संततणी, आवी प्रतीत पोताने घणी। बळी सांभळि संतनी बात, तेणे भांगि छे मननी आंत।।२२।। थयो सत्संगी खामिनो खरो, बेव्रवाइ सिपाई आकरो । झालि टेक मुवे नव मेले, शिर करमां लड्ने खेले ॥२३॥ निष्कपट मति अति घणी, कहुं वात हवे तेहतणी। एनो सुत ते रामसेवक, थयो मांदो शरीरमां छेक।।२४।।आव्यो समो एने अंतकाळ, गरुडे चडी पधार्या, दयाळ । संगे संततणुं बहु दृंद, मुक्तानंद खामी नित्यानंद ॥२५॥ गोपाळानंद खामी छे साथ, जळ झारी भरी धरी हाथ । नित्यानंदजि करे चमर, एम पधार्या इयाम सुंदर ॥२६॥ दीठा सत्संगि कुसंगि जने, आव्या वाषुभाइने भवने। सहु आविने नामेछे शीश, कहे भले आव्या जगदीश ॥२७॥ त्यारे नाथ कहे आव्या आज, तारा सुतने तेडवा काज! त्यारे वाषु कहे जोडी हाथ, सुखे तेडि जाओ मारा नाथ ।।२८।। एना भाग्यतणो

नहि पार, आव्या आ समे प्राणआधार। एवां सुणी बापुनां बचन, कहे साधु सर्वे धन्यधन्य ॥२९॥ पछी संत जोडी कहे हाथ, आज मेलि जाओ एने नाथ। त्यारे महाराज कहे घणुं सारुं, जाओ मान्युं ए वचन तमारुं ॥३०॥ पछी दर्शन दइ लोकने, चाल्या बापुनो टाळी शोकने । दिठा सहुए प्रकट प्रमाणो, थयो पर्चा जन सहु जाणो ॥३१॥ कहुं एक दिवसनी वळी, तेडी जमवा मुनिमंडळी। जम्या मुनि राखी नहि मणा, तोय वध्या छे मोदक घणा ॥३२॥ कहे बापु जम्या नहि संत, माटे विधयुं अन अत्यंत । त्यारे बोल्या छे गोपाळखामी, भाइ अमे राखी नथी खामी ।।३३।। एम करतां वध्युं हरो अन्न, जमरो कोइ हरिना जन । त्यारे बापुने आव्यो विश्वास, हमणां आवशे कोई हरिदास ॥३४॥ एम करतां आव्या जगरीश, संगे सांख्ययोगी दशविश । कहे हरि होय त्यार अन, छे आ भुख्या कराबी भोजन ।।३५।। पछी बापुए जमाड्या तेह, करिति रुडी रसोइ जिह। हता पाळा ने प्रभुजि क्यांइ, जम्या अलौकिक अंगे त्यांइ।।३६।। एम आप्योछे परचो एह, वळी विजो कहुं सुगो तेह। आपी मूरति महाराजे एक, पूजि जळ लेवुं एवी टेक।।३७॥ तेने अर्थे लाव्यो एक हार, धर्यो मूरतिने निरधार। हार हळवी जोइ मुरति, नाख्यो फगावी अळगो अति ॥३८॥ पछी बोलि छे मूरति एम, हार हळवो चढावेछे केम। बीजे वावरेछे बहु धन, त्यांतो मोकळं राखेछे मन ॥३९॥ त्यारे बापुए जोड्या छे हाथ, एतो भुल्य ओळखावी नाथ । धन्य सामर्थि तमारी खामी, आज पर्ची पाम्यो हुं बहुनामी ॥४०॥ वळी एक दने गंगाबाई, बेठी मानसी पूजाने माई । तियां कर्योतो सुंदर थाळ, आव्या

प्रकट जमवा दयाळ ॥४१॥ करी दातण ने दिधि चिरुं, जम्या जीवनजि धिरुधिरुं। प्रभु प्रकट जिमया थाळ, चाल्या दर्शन दह दयाळ ॥४२॥ वध्यां भोजन जमतां जेह, आपी प्रसादि सहुने तेह। पाम्या प्रसादि प्रकट सहु, एवी वात हुं केटली कहुं ॥४३॥ वळी एक दिने गंगाबाई, कहुं दिठुं जे समाधिमांइ। थयां महाराजनां दरशन, भेटा दीठा बहु मुनिजन ॥४४॥ जागी समाधिमांहिथी ज्यारे, लिधां नाम सरवेनां त्यारे। जेने नावडतुं नाम एक, तेणे लीघांछे नाम अनेक ॥४५॥ सहु सांभळी आश्चर्य पाम्यां, धन्य महाराज कही शिश नाम्यां। बळी एक दिवसनी बात, सहु सांभळज्यो ते साक्षात ॥४६॥ एनो सुत ते रामसेवक, भणतोतो गणपति अष्टक । तेने महाराज सौंणामां आवी, गया कृष्णाष्टकने शिखावी।।४७॥ जागी सवारे रामसेवक, कह्या कंठेथी अष्ट ते स्रोक । सहु सांभळी आश्चर्य थयां, धन्य नाथ कहे सर्वे रह्यां ॥४८॥ मोटा सुभागी ए नरनार, पाम्या पर्चा ते एम अपार । धन्यधन्य प्रभुनो प्रताप, आप्यां जनने सुख अमाप ॥४९॥ तेतो कह्ये लख्ये नावे पार, कवि बहुबहु करे विचार । जेजे आप्यांछे जनने सुख, कह्युं जातुं नथी तेतो मुख ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यिन-ष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तर्चितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने पिस्ताब्रिशमुं प्रकरणम् ॥१४५॥

पूर्वछायो-वळी शहर वडोदरे, निक भक्त नाथित नाम।
तन धन भवन आदि, आण्युं हरिने काम।।१।। काम क्रोध ने
लोभ मोह, आवे निह केदि अंग। निक नकोर निःसशे निश्चे, एवो
जेनो सत्तसंग।।२।। तेनी तरुणी तेहज तेवी, अतिपवित्र छे एह।

समेटि प्रीत्य संसारथी, कर्यो श्रीहरिमां सनेह ॥३॥ अवधि पोत्ये आवियो, तेहना ते देहनो काळ। आव्या तेडवा तेहने, दीन-बंधु दीनदयाळ ॥४॥ चोपाइ-आव्या तेडवा तेने महाराज, संगे बहु लइ मुनिराज। लाव्या सुंदर सारां विमान, तेडी चाल्य। तेने भगवान ॥५॥ दिठुं सत्संगी कुसंगि सहुए, जोइ आश्चर्य मानियुं बहुए। कहे आवुंतो न दिटुं क्यांइ, चालि विमाने बेशि आ बाइ ॥६॥ वळी वात कहुं एक सारी, तेना सुतनी छे सुखकारी। तेने धारण थाय हमेश, करे प्रभुपासे ते प्रवेश ॥७॥ लावे प्रसादि नित्य नवली, बोर साकर खारेक भली। वळी श्रीमुखे जमेल जेह, लावे सोपारी तर्तनी तेह ॥८॥ एवी प्रसादि जे बहु पेर, आपे महाराज करिने महेर । वळी एक दिवसे दयाळ, जम्या प्रकट आविने थाळ ॥९॥ वळी रायजि नामे छे जन, रहे नाथ मेळो माइ तन। तेना देहनो आवियो काळ, आव्या तेडवा दीनदयाळ।।१०।। त्यारे नाथजिए करी स्तुति, बोल्या त्यारे प्रश्च प्राणपति। नहि तेडिजाये एने अमे, छो एकला नाथभक्त तमे ॥११॥ पछी सहुने दरशन दीधां, एम काज नाथजिनां कीधां। आपे परचा एम अत्यंत, कहेतां लखतां न आवे अंत ॥१२॥ वळी एक भक्तनी छे वात, संभळावुं सहुने साक्षात। एक कणवी किशोरदास, तेनो सुत लखो नाम तास ॥१३॥ तेने समाधिनुं सुख अति, नित्य करे नाथपासे गति। तेनो तात कहे पुछ्य हरिने, जमे थाळ जो महेर करीने ॥१४॥ पुछ्युं लखे पाडि तेनी हाज, कर्यो थाळ पछी हरिकाज । आच्या जमवा स्याम सुजाण, प्रभ्नु पोत्ये प्रकट प्रमाण ॥१५॥ जिम अर्घ लाइ थाळमांथी, पछी पधार्या प्रश्रुजि त्यांथी। दीधां बहु जनने दरशन, निरित्व नाथने कहे धन्यधन्य

।।१६॥ वळी एक दिवसनी वात, कहे लखाने लखानी मात। तारी समाधि साचितो गणुं, थाय द्रष्ण मने कृष्णतणुं ॥१७॥ त्यारे लखे समाधिमां जइ, एह वात महाराजने कहि। त्यारे महाराज कहे वणुं सारुं, एवं थाशे दर्शन अमारुं ॥१८॥ पछी मोरमुगट पीतांबर, वाता वांसळि क्याम सुंदर । धरी सोळ वर्षनुं खरूप, अश्वे बेठा दिठा छे अनुष ॥१९॥ त्यारे डोशी कहे धन्यधन्य, थयुं प्रकट प्रसुतुं दर्शन । आवी वात दिठि न सांभळी, अति अली-किक मने मळी ॥२०॥ एह पर्चा अलौकिक थयो, वळी लखो समाधिमां गयो। तियां वाले करी अतिवाल, दिधो देह लुइने रुमाल ॥२१॥ आप्यो समाधिमां अविनाशे, जाग्यो त्यारे रह्यो पोतापासे। लाव्यो अलैकिक लोकमांइ, एथी पर्ची मोटो नहि कांइ।।२२।। वळी एक कुसंगिने काजे, मेल्या दृत लेवा जमराजे। देखि लखे वात तेने कहि, मारी पोळयमां पेसवुं नहि ॥२३॥ त्यारे जम बोल्या डारो दइ, जातुं बेश तारे घेर जइ। त्यारे लखो के नहि देवुं लेवा, बहु जम दिठा में तुं जेवा ॥२४॥ एम कहिने वधार्य देह, मांड्या मारवा भाग्याछे तेह। गियो मारतो जमपुरीमां, भाग्या बिजा जे रहेताता तेमां ॥२५॥ करी खाली ज्यारे जमपुरी, जमे हरिपासे राव करी। कहे नाथ जाओ नहि मारे, कहेज्यो सहुने एने न बिवारे ॥२६॥ एम लखे राख्यो कुसंगिने, जम भागिगया सहु बिने। बळी एक पीतांबर दास, लाव्यो जामफळ लखापास ॥२७॥ कहे जा तुं समाधिमां लइ, जमाडज्ये त्यां नाथने जह। लिधुं लखे दिधुं हरिहाथे, जमी अर्घ दिधुं पाछुं नाथे ॥२८॥ ते आपी पीतांबरने प्रसादि, दिधा पर्चा बहु एह आदि। थया रुखाने परचा लाखुं, एक जिमे हुं केटला भाखुं ॥२९॥

वळी भक्त भगवानदास, चाल्यो दर्शने दयाळ पास । थया संगाति सुंदरक्याम, तेडिआव्या वरताल गाम ।।३०।। हतो आनंद उन्मव तियां, अतिसुंदर दर्शन थयां। पठी त्यांथी जेतलपुर गामे, क्यों उत्सव सुंदरक्यामे ॥३१॥ तियां दिठां छे दर्शन करतां, प्रभु-प्रखथकी फुल झरतां। घडी उमे लगि एम रह्यं, नहि परोक्ष ए प्रत्यक्ष थयुं ॥३२॥ वळी कहि अंतरनी वात, जेम हति तेम ते साक्षात । एक दिवस जिमया थाळ, सहु देखतां दीनद्याळ ॥३३॥ वळी आपी एकदि प्रसादि, सारी साकरनी रायजादि। एवी अलौकिक वात वळी, थइ नोति दिठि जे सांमळी ॥३४॥ एक सत्संगी जगजीवन, करे खामिश्रीजितुं भजन। तेने वांक नाख्यो वण किथो, झाली बंधिखानामांहि दिथो।।३५॥ कहे रुपैया लेखं हजार, त्यारे काढशुं बेडिथी बहार । एम डरावे दुष्ट अपार, आव्या ते समे प्राणआधार ।।३६।। कहे दंड तुं दाम न आले, नने छोडावशुं अमे काले । पछी विजे दाडे बेडी भागी, काढ्यो दासने वार न लागी ।।३७।। त्यारपछि मुबो एनो तात, आव्या तेडवा प्रभु साक्षात । तेतो दिठा विजे बहु जने, निर्द्धि नाथ मगन थया मने ।।३८॥ वळी एकदि जगजीवन, बेठो करवा हरिभजन । दिठो तेजपणो बिंब भारी, जोइ थिकत थयां नरनारी ।।३९॥ एम पाम्यो वहु चमतकार, कहेतां लखतां न आवे पार। वळी भक्त काछियो खुशाल, जेने वाला साथे घणि वाल ॥४०॥ तेनी सुता ते अमृतबाइ, गइ हरिपासे समाधिमांइ। दिघा पेंडा त्यां हरिए हाथे, आप्यो हार जे पहेर्योतो नाथे ॥४१॥ वळी इक्षु जमेल मादळियां, सुंदर प्रसादिनां बोर मळियां। एहंआदि प्रसादि अनुप, तेतो रहे जाग्ये तदरुप ॥४२॥ जमे पोत्ये ने आपे

बिजाने, जाणी अलौकिक मुद माने। एक काछियो वेचर वळी, तेनी वात कहुं ल्यो सांभळी ॥४३॥ जाय समाधिमां प्रभुपाय, हरि राजि थाय देखी दास। पछी आपे प्रसादि दयाळ, जाणी बेचरने नानो वाळ ॥४४॥ छिंबु मिठां जामफळ जेह, आपे पेंडा प्रसादिना तेह । खाय पेंडा वखाणेछे बहु, देखे सत्संगी कुसंगी सहु । ४५।। कहे कुसंगी पारच्युं लहीए, त्यारे खामिजिने साचा कहीए। एम कहिने लिधो बोलावी, बेश वेचरिया आहि आवी ।।४६।। तारां वस्त्र उतारिने लहीए, लाव्य प्रसादितो साचो कहीए। पछी उतारिलिधां अंबर, कहे समाधि हवे तुं कर ॥४७॥ पछी बेचरे समाधि करि, गयो जियां बेठा हता हरि। पछी साम्रं जोइ हरि हशा, जोइ एनी दिगंवर दशा॥४८॥ आप्या त्रण्य पेंडा तेहवारे, जागि देखाड्या सहुने त्यारे। जोइने सहु आश्वर्य पाम्यां, धन्य खामी कही शिश नाम्यां ॥४९॥ एम परचा अपरमपार, आपे अलबेलोजि आ बार । तेणे वर्तेछे अति आनंद, कह्यं न जाय निष्कुळानंद् ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंद-खामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने छेंतालिशमुं प्रकरणम्।।१४६॥

पूर्वछायो-वळी वडोदरे वाल्यमे, जेहु कर्या जननां काज। सांमळज्यो संक्षेपशुं, जेह जेह कर्यु महाराज।।१॥ सोनी कुळमां भक्त भलो, त्रिकमिज तेनुं नाम। तेनो सुत दयाळिज, थाय धारणा देखे धाम।।२॥ एक दिवस करी धारणा, गयो जियां हता जगदीश। तियां हता बहु देवता, करे स्तवन कोड्य तेत्रिश।।३॥ तेने महाराज पुछियुं, तमे राजि हो सहु देव। तो नरना-रायण मूरति, पधराविए ततखेव।।४॥ चोपाइ-त्यारे देव कहे

बहु सारुं, घणुं गमतुंछे ए अमारुं। आ भूमिना छे एज भूपति, तेनी क्यांय नथी जो मूरति ॥५॥ माटे जरुर करबुं ए काज, एम बोलियो सुरसमाज। ते दयाळजि देखिने आव्यो, त्यांनी खगर ते आहि लाव्यो ॥६॥ दिठा देवता समाधिमांइ, तेनां कह्यां नाम रूप आंइ। पाम्या आश्चर्य सहु सांभळी, कहुं वात एनी एक वळी ॥७॥ त्रिकमजि कहे एनो तात, तुं सांभळजे द्याळजि वात। माग्ये माळा तुं धारणामांहि, आपे नाथ तो लावज्ये आहि ॥८॥ बोल्या इच्छाराम रणछोड, नाथ हाथनी माळानो कोड। मळे प्रसादिनी क्यांथी माळ, माग्ये दिये दया करी द्याळ ॥९॥ कहे लालदास रगनाथ, आले नाथ माटा तुजसाथ। तो एथकी मोटी नहि वात, मळे अलौकि माळा साक्षात ॥१०॥ त्यारे बोलिया भगवानदास, नथी गउम्रखी मुजपास । क्यांथी मळे प्रसादीनी मने, मळेती लाव्ये कहुंछुं तने ॥११॥कहे वणारशि सुण्य द्याळा, मारे नथी बेरखों ने माळा । सहुने आपे नाथ दया करी, तो मागज्ये मारुं करगरी ॥१२॥ सुणि संदेशा एटला काने, पछी द्याळजि बेठो ध्याने । गयो धारणामां प्रश्रुपास, अतिहेते बोल्या अविनाश ॥१३॥ शुंशुं लेवा आव्योछो तुं आज, माग्य आपीए कहे महाराज। त्यारे घालजि कहे सुणो नाथ, मागी माळा पट मुजसाथ ।।१४।। एक बेरखो गउमुखी एक, आपो मनेतो वळी विशेक। पछी आप्यां सघळां ए नाथे, जागी द्याळिज लाव्यो साथे।।१५।। जेणेजेणे मगाविति जेवी, दिधि सहुने माळाओ तेवी। जाडि झिणि सुखड्य तुलसीनी, आपी गौमुखी एक नविनी॥१६॥ सहु जोइने आश्चर्य पाम्यां, धन्य स्वामी कहि शिश नाम्यां। भाइयो आतो वात मोटी कहीए, आथी पर्चो बिजो कियो लहीए

॥१७॥ वळी एक दिवस दयाळो, करी समाधि थयो सुखाळो । आव्यो समाधि मांहिथी बार, लाव्यो जामफळ पांचवार ॥१८॥ क्यारे पांच क्यारे सातसात, लावे समाधिमांथी साक्षात । आपी प्रसादी ने पोत्ये लिये, एम पर्चा नाथ बहु दिये।।१९॥ त्यार-पछि समाधिमां वळी, आव्यो पांच पाकि केळा फळी। त्यार-पछि बरफि बहुवार, पेंडा पतासांनो नहि पार ॥२०॥ साकर बळी श्रीफळ आदि, नित्य नशी लावे परसादि। आणे अही-निश अलैकि चीज, कहेतां लखतां न आवे तेज ॥२१॥ वळी एकदि दीनदयाळ, आबी प्रकट जिमया थाळ। दिठा बहु जने बहुनामी, जमी पधार्या अंतरजामी ॥२२॥ एम परचा थायछे नित्य, धन्यधन्य ए भक्तनी श्रीत्य। वळी वात कहुं मानो सत्य, एनुं चोराणुं माळा रजत ॥२३॥ तेतो चोरे संताङ्युं छे अति, केने न जडे न पडे गति । पछी द्याळिज धारणा करी, गयो तियां जियां हता हरि ॥२४॥ देखि द्याळने बोल्या महाराज, तारी गइ चीज आपुं आज। पछी एज माळा एज रुपुं, लइ दयाळजि कर सोंप्युं।।२५॥ जागि द्याळजिये तेह दिधुं, माळा रुपुं ओळिखने लिधुं। जोइ आश्वर्य पामिया जन, सहु कहेवा लाग्या धन्यधन्य ॥२६॥ एवी अलौकिक रीत्य जोइ, माने भाग्य मोद्धं सहु कोइ। वळी वात कहुं एक बिजि, जे बावरि छे सामर्थि श्रीजि।।२७।। एक सोनी बल्लभजि सारो, प्रेमिभक्त प्रभुजिने प्यारो । राखे नियम अति हेतधारी, चमे अन जतने सुधारी।।२८।। पिंड एकदि जंतुनी आंत, गयुं सुख न रहि निरांत्य। पछी एम विचारियुं मन, आजधकी लेवुं नहि अन ॥२९॥ तेने वीति गया बहु दन, तोय न थाय जम्यानुं मन । करे भजन महाराजतणुं, तेणे रहे खुमारिमां घणुं ॥३०॥

पछी महाराजे मोकल्युं कहि, ए टेक तारे राखवि नहि। जम्थ अन्न तुं दन आज्ञथी, मेली खावुं सिद्ध थावुं नथी।।३१॥ कर्धुं वचन ए ज्यारे श्रीमुख, त्यारे लागि वल्लभने भुख। एवी सामर्थि नाथनी जोइ, कहे धन्यधन्य सहु कोइ।।३२।। एवी आश्चर्यकारी छे वातुं, ते में लखतां नथी लखातुं। वळी भक्त क्षतरि वखाणुं, नाम वजेसिंघ तेनुं जाणुं।।३३।। तेना तनमां आवियो ताव, थयो अञ्चलळनो अभाव। अति तावमां तवाणुं तन, तोय मुखे न मेले भजन ॥३४॥ पछी पधार्या प्राणआधार, कह्युं तावने निसर बार । त्यारे ताव निसर्यो तेवार, मूर्तिमान उमी आवी बार ।।३५।। हति नाथ हाथे सारी छडी, मारी तावने त्रण्य ते घडी। भाग्यो ताव पाडी काळि चीस, नाथ आवडी म करो रीस ॥३६॥ हवे एना तनमां न आवुं, आवुंतो चोर तमारो कावुं। एम काड्यो ताव जनमांथी, दइ दर्शन पधार्या त्यांथी ॥३७॥ वळी भक्त आदित ते कडियो, तेनेपण ताव तेम चडियो। काढ्यो एमनो एम महाराजे, नाव्यो फरि गयो वाजोवाजे ॥३८॥ एम घडिघडि पळपळे, बहु परचा जनने मळे । करे रक्षा अनंत प्रकारे, हरेछे जनदुःख आ वारे।।३९।। एक भक्त वणिक बापुजि, थया सत्संगी कुसंग तजि। साचा जाण्या सहजानंद खामी, विजा जाण्या क्रोधी लोभी कामी ॥४०॥ एम जाणि कर्यो सतसंग, चड्यो अंगे न उतरे रंग। करे हरिभजन हमेश, नहि निश्रयमां संशय लेश ॥४१॥ एक दिवसे दर्शन काज, बहुबहु संभार्या महाराज। आव्या नाथ अलौकिक रूपे, सुंदर घनक्यामखरूपे ॥४२॥ जोया बापुभाये बहुनामी, पधार्या प्रकट पोत्ये खामी,। पछी उठी लाग्यो प्रभु पाय, निर्खि हर्ष हैयामां न माय ॥४३॥ जाण्युं पधार्या प्रकट प्रमाण, आवी मूर्ति न समझ्यो सुजाण। दिधां दर्शन सहुने बोलावी, निर्ध्या नाथ बाळ बृद्धे आवी ।।४४।। पछी लेवा-गयो पूजासाज, त्यांतो चालिनिसर्या महाराज। सहु जोइ थयांछे थिकत, धन्यधन्य सत्संगिनी रीत ।।४५।। आम दर्शन दीये द्याळ, एवं सुण्यं नोतं कोइ काळ। आवा पर्चा आपे जियां हरि, नथी वात विजिए उपरी ।।४६।। घणा थया थाशे अवतार, वाळ्यो आंक वाले आणि वार। आज आप्यो छे जेजे आनंद, लिख निह शके निष्कुळानंद् ।।४७।। इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकशीसह-जानंदस्वामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरचिते भक्तिचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने सहताळिश्मं प्रक-रणम् ।।१४७।।

पूर्वछायो-वळी वखाणुं वडोदरे, हरिजन मननुं हेत। भावे भिक्त भिक्त करे, सोंपि तन मन धनसमेत ॥१॥ जोये न मळे जक्तमां, एह जेवां जन एक। प्रीत्य जेनी प्रकट प्रभुष्यां, प्रहिन मुके टेक ॥२॥ एवां जन अनेक छे, जेनां पुर्यो हरिए लाड। तेनी कीर्ति लखवा, मारा चित्तमां घणि चाड ॥३॥ ब्राह्मण नागरी नात्यमां, एक मोंघिबाइ हरिजन। अचळमित महाराजमां, करे भावे सहित भजन ॥४॥ चोपाइ-भन्ने भावे भरी भगवान, समझे हरिने सामर्थिवान। थाय समाधि देखे श्रीहरि, अतिसुखी रहे सुखेकरी॥५॥ एक दिवस धारणामांइ, गइ हता हरि पोत्ये त्यांइ। कर्युं हर्शन दयाळतणुं, तेणे आव्युंछे आनंद घणुं ॥६॥ पछी मोंधिबाइ कहे महाराज, तमे नाथ छो राजाधिराज। सर्वे अवतार तमेज धार्या, जुगोजुगमां जन उधार्या। ।७॥ केवो लीघो कृष्ण अवतार, केवां धर्यांतां आयुध चार। वळी अष्ट पटराणी जेह,

जेना सुत सुभग छे तेह ॥८॥ एह सहित इच्छु दर्शन, दियो हेप्रसु थइ प्रसन्न। पछी हशि बोल्या हरिराय, जोइ जनमन अभि-प्राय ॥९॥ धर्यु कृष्णरूप सुखखाणी, संगे शोभे अष्ट पटराणी । शंख चक गदा पद्म धरी, शोभे सुतसहित श्रीहरि ॥१०॥ एवां दीधां आविने दर्शन, जोइ जन थयांछे मगन। दइ दर्शन पधार्या नाथ, निर्खि थकित थयो सा साथ ॥११॥ कहे आश्चर्य वारता आतो, थयो परचो कह्यो नथी जातो । वळी एक बीजि एनी वात, सहु सांभळच्यो ते साक्षात ॥१२॥ कर्यो महाराजने काजे थाळ, आवी जमिया दीनदयाळ। जम्या पेंडा पतासां ने पाक, वडां भजियां सुंदर शाक ।।१३॥ जमी अर्ध वहुं आप्युं नाथे, लीधुं मों धिबाये हाथोहाथे। आपी प्रसादि वेंचिने तेनी, बळी बात कहुं बीजि एनी ॥१४॥ बीजे दिवस बद्रिनां फळ, जेनां झिणां विज जाडां दळ। ते आप्यांछे पोशभरी पोत्ये, एवां विजां मळे नहि गोत्ये ॥१५॥ एम पर्चा अपरमपार, आपे वालोजि वारम-वार। हरिजनमां मोटेरां मुखी, अतिअलैकि सुखमां सुखी।।१६॥ तेने घेर बाइयो हरिजन, नित्ये सुणे कथा कीरतन । बेसे सभा बाइयोनी मंडळी, करे वात प्रकटनी वळी ॥१७॥ हैये प्रीत्य हरिमांहि घणी, शुं कहीए मोट्यप बायोतणी। तेने एक दिवस मोझार, थइ पुष्पनी वृष्टि अपार ॥१८॥ ते सतसंगिक्तसंगि मळी, सौए विणिलिधां तेह वळी। एम थयुं दिन दोय चार, एहादि नहि पर्चानो पार ॥१९॥ एवा परचा थाय अनंत, कहेतां लखतां न आवे अंत । वळी एक कहुं बिजि वात, सामर्थि श्रीहरिनी साक्षात ।।२०।। एक अंबाबाइ छे दक्षणी, करे भक्ति प्रभुजिनी घणी । तेना देहनो आवियो अंत, आव्या तेडवा श्रीभगवंत॥२१॥ लाव्या

विमान ते लाखो लेखे, चाल्या तेडी जन सहु देखे । सतसंगि कुसंगि सहुने, थयां दर्शन जन बहुने ॥२२॥ त्यारपछि एह अंबाबाइ, दीठां जने ते समाधिमांइ। तेसाथे एम मोकल्युं कइ, एक एंधाणि सुंदर दइ ॥२३॥ क्याम साडी पटारामां मेली, ते छे बीजि बाईने आपेली। ए वात सर्वे साची जो थाय, तो तमे संशे करशो मां कांय ॥२४॥ ते कह्यं आवी समाधिवाने, मान्युं सत्य सुणी सर्वे काने। जेजे वात मोकलिति कइ, तेते सरवे साचिज थइ।।२५॥जोइ आश्चर्य पामियां जन, सहु कहेवा लाग्यां धन्यधन्य। बळी वात अनुपम एक, कहुं सामधिं हरिनी विशेक॥२६॥ एक हरिजन द्विजमांइ, तेनुं नाम छे जमुनांबाह। हरिभक्त अति हेतवान, धरे प्रकट प्रभ्रुनुं ध्यान ॥२७॥ तेनुं हेत जोइने दयाळ, नित्ये जमे भोजननो थाळ। सारां पहेरी पीतांबर स्याम, दिये दर्शन सुखना धाम ॥२८॥ वळी भृत भविष्यतुं भाखे, होय थावानुं ते कही दाखे । थाय साचुं ए सर्वेज ज्यारे, पामे आश्वर्य सहु जन त्यारे ॥२९॥ एम जम्रुनां बाईने घेर, आवे नित्य हरि करी महेर । एक सोनि बाई हरिजन, नाम पारवती ते पावन ।।३०॥ जेने हेत अति हरिमांइ, विजे प्रीत्य नहि जेने क्यांइ । तेना घरमां कुसंग घणो, करे द्वेष सहु बाईतणो ॥३१॥ सतसंगमां जावा न आपे, कहि वांकां वचन संतापे। सुणि सर्वे बोले नहि बाई, करे भजन बेठी घरमांई।।३२।। तेनी प्रीत्ये ताण्या भगवान, दिये नित्ये ते दर्शनदान । जमे थाळ दयाळ आविने, दिये प्रसादी सारी लाविने ॥३३॥ कोइ दिवस एवो न जाय, जे नावे नाथजि घरमांय । एम पार्वती बाइने घेर, नित्य करे हरि लीलालेर ॥३४॥ एम लाड पाळे हरिजननां, करे गमतां काज

जनमननां । एम पर्चा आपे अविनाश, धन्य हरिजन हरिदास ।।३५।। वळी एक दिन आव्या हरि, तेने जमाड्या भजियां करी। अतिष्रेममां टेव न रही, आप्यां भजियां काचेरां लही।।३६॥ जिम पधार्या जगजीवन, बाइ मों घिबाईने भुवन । कहे आज पारवती हाथ, काचां भजियां जम्या कहे नाथ ।।३७।। एवी वात अलौकिक जेह, जाणी जन मगन रहे तेह। सर्वे जाणी ए प्रकट प्रमाण, रखे खम समझो सुजाण ॥३८॥ वळी एक तंबोि ते मांइ, नाम तेनुं छे जमुनांबाइ । तेने धारणा थाय हमेश, करे प्रभुपासे ते प्रवेश ।।३९।। समाधिमां करे हरिसेवा, नित्य जमाडे मिठाइ मेत्रा । तेनी वात जाणी जन विजे, सुणि पापियां न परतिजे ॥४०॥ कहे ए वात सर्वे छे खोटी, मुखखादनी करोछो मोटी। ज्यारे नजरे देखिये अमे, त्यारे मानिये जे कही तमे ।।४१॥ करी तमारे घेर भोजन, भाणे बेशी जमे भगवन। जेजे भोजन धरिये थाळे, थाय ओछुं तेमां तेहकाळे।।४२।। ते अमारी आंख्ये जो देखिये, तो सहु वारता साचि लेखिये। एवं सुणि हरिजन बाइ, कयों थाळ पोत्ये घरमांइ ॥४३॥ थयो सुंदर थाळ तैयार, प्रीत्ये जिमया प्राणआधार । जमी पधार्या जीवन ज्यारे, फुलहार देतागया त्यारे ।।४४॥ जेजे भोजने भर्योतो थाळ, थयुं अर्धु जिमया दयाळ । दिठो फुलनो प्रकट हार, जोइ थकित थयां नरनार ॥४५॥ कहे आ वात सरवे साची, जाणो सत्य नथी कांइ काची । जोने हार सारु नरसइ, कर्या कालावाला जने कइ ॥४६॥ एवा हजारी आपेछे हार, वालो भक्तने वारमवार । आज वावरेछे जे सामर्थि, एवी कोइदि वावरी नथी।।४७॥ धन्यधन्य आजनो प्रताप, कवि को ड्ये थाय नहि थाप । वळी करीछे जननी साय, ते निष्कुळानंदे न ३८ भ०चिं०

लखाय ॥४८॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि-शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्तचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरि-जनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने अडताळिशमुं प्रकरणम् ॥१४८॥

पूर्वछायो-वळी परचा वडोदरे, जे पुर्या जगजीवन । अति अनुपम वारता, कहुं सांभळज्यो सहु जन ॥१॥ सत्संगिनी जे श्रीहरि, आ समे करेछे सहाय । अतिसामर्थि हरि वावरे, ते नावे लख्या मांय ॥२॥ पण गुण गातां गोविंदना, नथी आवती मने आळस । श्रवण दइ सहु सांभळो, कहुं हरिजनना जश ।।३।। भक्त एक भाविक छे, खरा ते खतरि मांई। दुर्बळ दास दयाळनां, नाम तेनुं शाम बाई ॥४॥ चोपाइ-कहुं तेहतणि हवे वात, करे भजन बाई दिन रात्य । रहे धारणामां आठु जाम, करतां थाय नहि घरकाम ॥५॥ ज्यारे आवे समाधिथी बार, करे भोजन पान तेवार। एह देह रेवानो उपाय, करे भोजन हरिइच्छाय ॥६॥ पण एम थयुं एक दन, कोण आपशे वस्त्र ने अन्न। एवी चिंता करी चित्तमांई, बेठी समाधिमां शामवाई ।।।। करी धारणा जागिछे ज्यारे, दिउं सुंदर भोजन त्यारे । सारा मोटा रोटा रुडी दाळ, मुख आगे मेलिगया द्याळ ॥८॥ एम हमेश हरि ए रीत्ये, आपे भोजन बाईने नित्ये। एक दिन मण लोट लइ, शाक बृंताकर्नु गया दइ ॥९॥ वळी पूजवा चरणार-विंद, आपिगया स्वामिसहजानंद । वळी वस्त्र दीठां फाटां अंग, आप्यां नवीन सारां सोरंग ॥१०॥ सर्वे आप्युं ए समाधि मांइ, लावि प्रकटप्रमाण ते आंइ । दिठां पगलां ने पट नवां, जोइ जन ते आश्चर्य हवां ।।११।। एम हरिजननी चिंता जेह, नित्य प्रत्ये हरे हरि तेह। बळी जन एक जिविबाई, काजु भक्त छे कणविमांई

॥१२॥ तेनो प्रेम जोइ भगवान, आपे अहोनिश दर्शनदान । केदि आपि जायछे प्रसादि, पुष्प हार शरकरा आदि।।१३।।वळी एकदि आव्या महाराज, कहे ग्रुख्या छीए अमे आज़ । होय तै-यारतो आप्य अन्न, निहतो जाञ्च विजाने भ्रवन ॥१४॥ पछी काजु करीती कोदरी, जम्या भूधर ते भाव करी। वळी बिजेदि रोटली भाजि, करी राखिति तैयार ताजि ॥१५॥ आवि जम्या तेह अविनाश, पुरी जनना मननी आश । सहु जाणे एम साक्षात, नथी खमसमाधिनी वात।।१६॥ जोइ जन थयांछे थकित, कहे धन्य बाई तारी प्रीत्य । वळी हरिजन कहुं एक, नाम उमैया-बाई वणिक ।।१७।। तेना घरमां कुसंग भारी, सतसंगमां आवतां वारी। हरिजनमां जावा न आपे, जायतो सहु मळी संतापे।।१८।। तेने वीतिगया त्रण दन, बाईये लिधुं नहि जळ अस । पछी आविया दीनदयाळ, लाव्या भोजननो भरी थाळ ॥१९॥ रुडो रस ने रोटली ताजि, मेळि रसमां साकर झाझि। तेह जमाडि गया जीवन, वळी दीघां अलैकि दर्शन ॥२०॥ करी अलैकिक एह काज, पछी त्यांथी पधार्या महाराज। वळी क्षत्रिकुळे एक बाई, नित्य बेसति धारणामांई।।२१॥ तेनी सुता प्रेमबाई कहिए, बेसे पासे ते देखादेखिए। तेनो भाव जोइ भगवान, दीघां प्रकट द्रशनदान ॥२२॥ देखी पांच वरषतुं बाळ, अतिहेते बोलावे दयाळ। पछी कंठेथी हार उतारी, दिधी बाईने देव मुरारी॥२३॥ वळी गजरा बांधी बे हाथ, आपी प्रसादि पधार्या नाथ । तेह हार ने गजरा जेह, दीठा प्रकट सहु जने तेह ॥२४॥ जोइ आश्वर्य पामियां जन, पछी पुछयुं कहि धन्य धन्य । कह्युं हार गजरा आ क्यांथी, कहे बाई लावी घ्यानमांथी।।२५॥ दिघा हरि करी

मने दया, आप्या ब्रह्ममोहोले लाबी इयां। त्यारे सहु कहे धन्यधन्य, पामी पर्चा तुं मानज्ये मन ॥२६॥ एम जनने जग-जीवन, आपे महासुख करे मगन। वळी हरिजन कहुं एक, नाम लक्षमीबाई विणिक ॥२७॥ निक सतसंगी निरधार, प्रभु प्रकटमां जैने प्यार । अतिहेत प्रीत्य हरिमांइ, प्रभु विना गमे नहि कांइ ॥२८॥ तेनुं हेत जोइ हरिराय, पळ एक अळगा न थाय । जेजे कहे तेते करे नाथ, सदा प्रेमे रहे प्रेमिसाथ।।२९॥ आपी जाय अलौकि प्रसादि, जेने इच्छे भव ब्रह्मा आदि। आंपे सुंदर जमेल थाळ, आवी प्रकट पोत्ये दयाळ ॥३०॥ आपे सोपारी एलची पान, काथो चुनो लविंग निदान । एह आदि मुखवास जेह, आपे नित्य प्रत्ये हरि तेह ॥३१॥ वळी दीनबंधु एक दिन, आप्यां वस्त्र अनुप नवीन । अन वस्त्र आदि जोइए जेह, आपे हरिदया करी तेह।।३२॥ आपे समाधिमां अविनाञ्च, जागे त्यां रहे पोतानी पास । अलौकिक जे वस्तु अनुप, आवे आ लोकमां तद-रुप ॥३३॥ सहु देखिने करे विचार, धन्य खामी समर्थ अपार। आवी रीत्य दिठि नहि क्यांइ, जेवी रीत्य छे सत्संगमांइ ॥३४॥ धन्य प्रभ्र धन्य अवतार, पुर्या परचानी नहि पार। आज जननां करोछो काज, एवां न कर्यां केदि महाराज ॥३५॥ एक वारता सांभळो वळी, सहु थिकत थाशो सांभळी। एक भक्त ढुंढुवा दक्षणी, करें भक्ति महाराजनी घणी ॥३६॥ तेनी सुता ते मथुरांबाई, अतिसुखी रहे समाधिमांई। हरिपासे ते हमेश जाय, निस्य दर्शन नाथनां थाय ॥३७॥ ज्यारे आवे समाधिथी बार, करे बारता मोटी अपार। तेतो सांभळी सरवे जन, अति मनाणुं आश्चर्य मन।।३८।।पछी कह्युं नरेशने जइ, सुणी वात जाति नथी

कइ। एक पांच वरषनी बाई, ज्ञी कहिए एहनी मोटाई।।३९॥ महासामर्थिवान साक्षात, जइ सांभळो ने एनी वात। त्यारे राजा कहे बुद्धिवान, जइ जोइ आवो एनुं ज्ञान ॥४०॥ आव्या डाह्या शियाणा त्यां मळी, बाई मुखनी वात सांभळी । थया थिकत न शक्या बोली, हतुं पुछतुं ते गया भुली ॥४१॥ पछी कही राजाने ए वात, एतो देव दिसेछे साक्षात । एनी सामर्थि सर्वे ते जोइ, बोल्या खामी बिजुं नहि कोइ ॥४२॥ अमे पूरण परचो पामी, आव्या आंहि अमे शिश नामी। एम देखाड्यो चमतकार, वळी कहुं थयुं विजिवार ।।४३।। एक वणिक बाई अबुज, नहि संत असंतनी सुज। मळ्या गुरु गाफल गमार, तेनो पड्यो अंतरमां भार ॥४४॥ तेने वहिगयां वर्ष विश्व, नान्युं अंतरमां सुख लेश। पछी मथुरांबाईने मळी, कही पोतानी वात सघळी।।४५॥ विश वर्ष वैष्णवमां रही, करी वात न कर्यानी कही। कर्ये सर्वे में कल्याण काज, शांति न वळि न टळी दाझ ॥४६॥ हवे जेम कहो तेम करुं, जो हुं संसारसागर तरुं। त्यारे बोलियां मथुरांबाई, काल्य वहेली आवज्ये तुं आंई ॥४७॥ पछी आवी बाई बिजे दन, तेने बेसारी करवा भजन । थइ धारणा ने दिद्धं धाम, जेनुं गोलोक कहेवाय नाम ॥४८॥ दिठां गोप गोपी गायो घणी, दिठि शोभा विरजा वनतणी। दिठा कृष्ण राधा बहु राणी, तेनी सिखयो ते न जाय गणी ॥४९॥ एहआदि जोयुं सर्वे धाम, जोइ पोतिछे हैयानी हाम। पछी आवी कही बात एह, सुणि सर्वे जने मळि तेह ॥५०॥ कहे थइ कृतारथ आज, करी महेर मने श्रीमहाराज । हुंती पामिछुं परची मोटो, सत्य खामी बिजो मत खोटो ॥५१॥ एम पुरे परचा हमेश, लखी न शके गुण गणेश।

किह वात वडोदरातणी, नथी एटली बिजि छे घणी ॥५२॥ नथी कीधो में बहु विस्तार, कही लाखभागनी लगार। आज साय करेछे श्रीहरि, तेतो वात जाति नथी करी ॥५३॥ जेजे समरेछे सहजानंद, तेतो पामेछे अखंड आनंद। तेनो तोल माप नव थाय, ते केम निष्कुलानंदे लखाय॥५४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचते भक्ताचिता-मणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने ओगणपचाशमुं प्रकरणम् ॥१४४९॥

पूर्वछायो-कहुं देश कानममां, एक इटोलुं गाम । भक्त भला कणबी कुळे, जाणो जिजिभाइ नाम ॥१॥ सतसंगमां शिरोमणि, वळी हरिमां घणुं हेत । अचळ किघो आशरो, सोंपि तनमन धनसमेत ॥२॥ आयुष खुट्ये आवियो, भाइ एना देहनो अंत । तेने आव्या तेडवा, निजभक्त जाणी भगवंत ॥३॥ निज-सखा बहु संत साथे, मोटामोटा मुनिराज। सुवर्णमय रथमांइ, बेशि पधार्या महाराज ॥४॥ चोपाइ-आव्या अर्ध रात्ये अविनाश, थयो गाममां बहु प्रकाश। एक द्विजभक्त बापुभाइ, छोड्यो रथ तेना फळिमांइ ॥५॥ जागी लागिया बापुजि पाय, निर्खि नाथने त्रप्त न थाय । कहे थयो कृतारथ आज, तमे घेर पधार्या महा-राज ॥६॥ हवे रही राजि थइ नाथ, एम कहे उभी जोडी हाथ। पछी बोलिया श्रीमहाराज, अमे आव्या जिजिमाइ काज ॥७॥ एने तेडिजाशुं आज अमे, सत्य मानो बापुभाइ तमे। त्यारे बोल्या बापुभाइ एम, एने मेलिजाओ कहीए केम ॥८॥ पण सत्संगर्मा एह जेवा, बीजा नथी शिखामण्य देवा। त्यारे नाथ कहे नहि लैये, लेखं एना बळधने तैये ॥९॥ त्यारे बोल्या बापु हरिजन,

प्रभ्र एवं शियं एतं पुण्य। त्यारे श्रीहरि कहे संत अर्थे, जुत्योतो ए रसोइने रथे।।१०।। माटे लइजाशुं एने आज, एम कही पधार्या महाराज। पछी बापुभाइ तेह पळे, गयो जिजिभाइने पासळे ॥११॥ कहे हमणां पधार्याता नाथ, बहु संत हता हरिसाथ। तेती तेडवा आव्याता तमने, पण राखिगया कह्यं अमने ॥१२॥ पण ए वात साचितो मळे, जाये बळध तमारा पासळे। पछी करी दिवो जोयुं जइ, त्यांतो बळदियाना प्राण नइ ॥१३॥ पछी सहुने तेडी करी वात, जे दिठिति नजरे साक्षात। तेह सांभळी आश्वर्य पाम्यां, धन्य खामी कही शिश नाम्यां॥१४॥कहे परचो थयोछे आ भारी, एम कहेवा लाग्यां नरनारी। वळी वात बिजि एक कहुं, तमे सांभळज्यो जन सहु ॥१५॥ कानममां मांगरोळ गामे, कणबी भक्त त्यां बेचर नामे। करे खेती ते निर्वाह काज, मुखे भजे खामी श्रीमहाराज ॥१६॥ पाळे व्रत प्रतिमामां प्रीत, खेतिवाडीमां न बेसे चित्त । त्यारे सरकारे कह्युं बोलावी, भर रुपैया अमने लावी ।।१७।। एम कहिने बेसार्यो तर्त, आपे क्यांथी गांठे नहि गर्थ। बेठां वीतिगया बेउ दन, लेवादिधुं निह जळ अन ॥१८॥ त्यारे बेचरे कर्यो विचार, प्रभु केम उतारशो पार । मारेतो बळ एक तमारुं, बिजो नथी तम विना वारुं ।।१९।। एम कहेतां पधार्या महाराज, निजजन छोडाववा काज । देखी दुष्ट गया दले डरी, भांगि बेडी तेडि चाल्या हरि ॥२०॥ लइ सर्वे एनो जे समाज, पहोंचाड्यो ज्यां विजानुं राज । सरवे जखमारी रह्या जोइ, केड्ये आविश्वक्या नहि कोइ ॥२१॥ एम करी अलौकिक काज, पछी पधार्या त्यांथी महाराज । वळी वात कहुं एक सारी, सुणो सर्वे छे चमतकारी ॥२२॥ एक कानमे कराली गाम, बहु मक्त वसे

एह ठाम । अतिहेत प्रीत्यनो नहि पार, एवा हरिजन नरनार ।।२३।। तियां परचा थयाछे बहु, लखुं केटला केटला कहु । अंतकाळे तजे जन तन, आवे तेडवा श्रीभगवन ॥२४॥ रथ वेल्य विमान ने वाजि, बेशिजाय तेपर थइ राजि। एवा परचा थायछे लाखुं, तेतो केटलाक कही दाखुं ॥२५॥ पण कहुं वात एक वळी, सर्वे जन लेज्यो ते सांभळी । एक पाटिदार नानोभाइ, थया दुःखी मंदवाडमांइ।।२६।। तज्युं खावुं पिवुं जळ अन्न, तेने वीति गया बहु दन । जेजे जीवा आवे जन पास, तेने नहि एना जीव्यानी आञ्च ।।२७॥ पछी एक दाडे एम थयुं, नाडी प्राणादि कांइ न रह्युं। पछी संबंधि सर्वे त्यां मळी, काढो काढो कहे विक्र बळि ॥२८॥ थयां तैयार लइ समाज, त्यारे पधार्या श्रीमहाराज । लाव्या रथ वेल्य ने विमान, आव्या संत भेळा भगवान ॥२९॥ सहु जनने दर्शन थयां, कोइ दर्शन विना न रह्यां। जोइ जन थयां छे मगन, कहे भले आव्या भगवन ॥३०॥ त्यारे बोलिया श्रीमहा-राज, अमे आञ्या नानाभाइ काज । तेने तेडी लइ जावाता साथ, पण मेलिजार्स कहे नाथ ॥३१॥ पछी नानाने कहे महाराज, तने तेडि नहि जाइए आज। माटे अन्न जळ हवे लेज्ये, सुखे खामि-नारायण कहेज्ये ॥३२॥ एम कही चाल्या भगवन, जगजीवन जीवाडी जन। जोइ आश्वर्य पामियां सहु, कहे वात आतो मोटी बहु ॥३३॥ आथी पर्ची बिजो शियो कहीए, सहु विचारी जुवोने हैये। वळी वात कहुं बिजि एक, सुणो सामर्थि हरिनी विशेक ॥३४॥ एक भक्त छे जेठियो बाळ, तेना देहनी आवियो काळ। थयो माँदो ने न बोले ग्रुख, तेने जोइने कहे विग्रुख ॥३५॥ कहे आनेतो वळग्युं झोड, शुं जोइ रह्या करोने घ्रोड । त्यारे

बोलियों छे एनो तात, एवी करशो मां कोइ वात ॥३६॥ मरे जीवे तेनुं नहि कांय, पण भुवा पासे न जवाय । थाशे हरिनुं गमतुं हशे, तेनो शिदने करवी संशे ॥३७॥ एह वात सुणि नहि कान, त्यांतो पधारिया भगवान । एक बाइ हति हरिजन, दिधां आवि तेने दरशन।।३८॥बाइ पाय लागि जोडि हाथ, कहे क्यांथी पधा-रिया नाथ। कहे नाथ आव्या अमे आज, जेठियाने तेडवाने काज ।।३९।। पण मेलि जाग्नुं आज एने, कहेज्ये वात जइने तुं तेने । तेनुं आपिए तने एघांण, आप्युं कुंकुम अलैकि जाण्य ॥४०॥ करज्ये चांदलो आनो तुं जइ, खामिनारायण नाम लइ। बेठो थइने बोलरो बाळ, एम कहिने चाल्या दयाळ ॥४१॥ पछी बाइ आवी तेने पास, कह्युं आव्या हता अविनाश । आप्युं कुंकुम चांदलो करवा, कह्युं नथी जेठियाने मरवा ॥४२॥ प्रभु पंधार्या हता साक्षात, कही सरवे मुजने वात । सहु सांभळि थकित थयां, धन्यधन्य प्रभु कहे रह्यां ॥४३॥ दिठुं कुंकुम अलौकि एह, थयो तर्त वेठी जेठी तेह । मळी वात कही हरिजने, थयो पर्ची ए मानियुं मने ॥४४॥ वळी एक वारता अनुप, सहु सांभळज्यो सुखरूप। एह देशमांचे रणुगाम, त्यां जोगी प्रभातगर नाम ॥४५॥ सहु जाणे ए मोटो छे सिद्ध, राजा प्रजामांहि ते प्रसिद्ध । तेणे सुणि संतनी वारता, जाण्या स्वामिने कल्याण करता ॥४६॥ पछी तजि संन्यासिनी रीत्य, करी प्रकट प्रभुजीशुं प्रीत्य। एम करतां वीत्या बहु दन, अवध्ये त्यारथ्या तजवा तन ॥४७॥ त्यारे तेडवा आव्या महाराज, लाव्या बहु विमान बाबाकाज। आवी कंठमां आरोप्यो हार, आप्यो तोरी कहुं। थाओ त्यार ॥४८॥ पछी बाबोजि बेठा विमान, तेडी चाल्या पोत्ये भगवान । आप्यो हतो हार तोरो जेह, रह्यो प्रकट कोटमां तेह ॥४९॥ सहु देखिने पाम्या आश्चर्ज, कहे जुनो आ, तोरो ने स्रज । आतो अलौकिक नात नहु, एम कहे जन मळी सहु ॥५०॥ आतो प्रताप महाराजतणो, स्वामी सहजानंदिजिनो घणो । एम परचा नहुनहु थाय, ते निष्कुळानंदे न लखाय ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामि- शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरि- जनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने पचाशमुं प्रकरणम् ॥१५०॥

पूर्वछायो-वळी परचा वर्णवी, कहुं कानम देशना कांय। धन्यधन्य एह भक्तने, जेनी श्रीहरिए करी साय ॥१॥ एक उतराद गाममां, कहीए कणवी साकर बाइ। हरिजन अतिहेत हैये, प्रीत्य घणी प्रभुमांइ।।२।। तेना देहनो आवियो, वळी अवधि पोत्ये अंत । च्यार दिवस मोग्थी, आव्या पोत्ये भगवंत ॥३॥ आवी कह्यं एह बाईने, तुं कर हरिनुं भजन । आजथकी दन चारमां, छुटशे तारुं तन ॥४॥ चोपाइ—पछी मानी वालानुं वचन, बाइ बेठि करवा भजन । समरे म्वामिने श्वासउश्वास, थइ जक्तमुख्यी उदास ॥५॥ एम करतां वीत्या दन चार, आव्या तेडवा प्राण आधार। एनी भत्रिजि नाम केशर, आव्या घनश्याम तेने घेर।।६॥ आच्या पोत्ये प्रकटप्रमाण, सुखसागर स्याम सुजाण। दिधां बहु जनने दर्शन, निर्खि बाइ थइ छे मगन ।।७।। कहे धन्यधन्य मारा नाथ, आज अमने कर्या सनाथ । घणे दाडे पधार्याछो घेर, मुज रंकपर करी महेर ।।८।। एम कहिने आप्यां आसन, कर्या भात्य-भात्यनां भोजन। पछी नाथ जम्या तेने घेर, करी मनमोहनजिए महेर ॥९॥ जिम उठ्या आप्यो मुखवास, पछी हाथ जोडी कहे दास। आज आव्यानुं कारण कहीये, सुणि बोल्या स्वामिजि तैये

॥१०॥ तारी काकी साकरबाई नामे, तेने तेडिजाशुं निजधामे । आव्या ए सारु बेसिने वाजि, तेडिजातां तुं राजि कुराजि ॥११॥ त्यारे बोलीछे केशरबाई, एह जीवनी धन्य कमाइ। जेने तेडवा आव्याछो तमे, शिदने कुराजि थाये अमे ॥१२॥ एवं सांभळी बोल्या महाराज, नहि तेडिजाये एने आज। पण चार दन मोर आवी, एने तेड्यानुं ग्याता ठरावी ॥१३॥ तेने कहेज्ये तुं जइ बचन, कैये नहि छुटे तारुं तन । एम कही पधार्या महाराज, करी अलौकि एटलुं काज ॥१४॥ वळी वात कहुं एक सारी, हरिजन लेज्यो हैये धारी। कानम देशमां केलोद गाम, तियां शेख वलिभाइ नाम ॥१५॥ साचा संतनी वात सांभक्रि, गइ असत्य आसता टळी । साचा जाण्या सदगुरु खामी, 'बिजा जणाणा खरा हरामी ।।१६।। पीर फकीर मलां मलंग, तेने तजि कथें। सत-संग । पछी सहुए कर्यो ए विचार, कर्या विलभाइ नात्य बार ॥१७॥ तेने बीतिगयां वर्ष चार, नहि विलिने संशय लगार । भलो भक्त जक्त नहि जेने, खामी विना माने नहि केने ॥१८॥ भजे प्रभ्र प्रकट प्रमाण, सहु उपर रही सुजाण। एम करतां हरिभजन, तेन वीति गया वहु दन ॥१९॥ पहोति अवधि देहनी ज्यारे, आव्या तेडवा महाराज त्यारे । लाव्या रथ वेल्य ने विमान, आपे अश्वे बेशि भगवान ।।२०।। आवी वाडीमां उतर्या नाथ, बहु सखा छे पोताने साथ । दिहुं वाडीवाळे ते प्रसिद्ध, रथ वेल्य विमान बहुविद्ध ॥२१॥ घणां घोडां बळद अपार, बोल्यो रखवाळो तेह वार । मारी खेती आ जाशे खवाइ, अमारे छे आटली जीवाइ॥२२॥ त्यारे बोलिया दीनदयाळ, चिंता म कर तुं रखवाळ। आ बळद ने घोडां अमारां, तारी खेतिनां नहि खानारां ।।२३॥

अमे आव्या छीए आंहि आज, विलभाइने तेडवा काज। एम एने कही अविनाश, पछी आव्या विलेभाइ पास ॥२४॥ थयां विलिभाइने दर्शन, लाग्यो पाय कहे धन्यधन्य । मारे हतो भरुंसो तमारो, जाणुं जरुर नहि विसारो ॥२५॥ त्यारे नाथ कहे अमे आज, आव्या तमने तेडवा काज। एवं सुंण्युं वालानं वचन, चाल्या वलिभाइ तजि तन ॥२६॥ दिठा सतसंगी कुसंगी सहुए, मान्युं आश्चर्यः मनमां बहुए । कहे धन्यधन्य सतसंग, जिति गया विलिभाइ जंग ॥२७॥ थयो परचो प्रकट प्रमाण, निह माने मुरख अजाण । एम कही रह्यां नरनारी, जोइ सामर्थि खामिनी भारी ।।२८।। वळी सुरत शहेरनी वात, कहुं सहु सांभळो विख्यात । तियां रहे बहु हरिजन, करे खामी श्रीजिनुं भजन ॥२९॥ पुरे परचा नित्यप्रत्ये नाथ, तेणे मगन रहे सह साथ। एवं समझे नहि कोह जन, प्रभु आव्या विना छुटे तन ॥३०॥ रथ वेल्य वाजि ने विमान, लावे अंतसमे भगवान । आवे तेडवा जनने नाथ, मागी शिख जाय हरि साथ।।३१।। एवी सहुने मने विश्वास, तन तजि जाशुं प्रभ्रुपास । पण एक वात छे नवीन, कहुं सांभळो जन प्रवीन ॥३२॥ एक पारशि अरदेशरजि, तेने सरसंगनी रीत्य रजि। साचा जाण्या सहजानंदस्वामी, विजा जणाणा लोभी हरामी ।।३३।। जोया जोगी जंगम संन्यासी, तपी त्यागी वैरागी उदासी। पीर फकीर मलां मलंगी, दिठां शेख भेख बहुरंगी।।३४।। कण वण रह्या कुक का ग्रहि, एवा दीठा जगतमां कहि। जोइ लिधुं सर्वनुं ते सार, जाण्या भुलेल भूमिनो भार ॥३५॥ ज्यारे सांभळि खामिनी वात, त्यारे मनमां पाम्यो निरांत। पछी अतिशे विश्वास आव्यो, तेडी खामिने शहेरमां

लाव्यो ॥३६॥ अति आद्रे पधराव्या नाथ, हता मुनि पंच शत साथ । करी पूजा घेर पधरावी, सारी सेवा करी मनभावी।।३७॥ लिधो लोचन भरिने लाओ, जाण्युं आवो नावे फरि दाओ। तियां नाथ रह्या नव दन, दीधां बहु जीवने दर्शन ॥३८॥ करी अनेक जननां काज, त्यांथी पाछा पधार्या महाराज। तेने वीति गया बहु दन, थयुं अरदेशरने स्वपन ॥३९॥ दीठा सहजानंद सुख-कारी, अतितेजोमय मूर्ति भारी। लाग्यो लळिलळि वळी पाय, निर्खि नयणां तृप्त न थाय ॥४०॥ पछी नाथ कुंकुम लइ लाल, कर्यो चंद्र अरदेशर भाल। कह्युं सवारे तने राजन, देशे मोट्यप मानज्ये मन ॥४१॥ एम कही पधार्या दयाळ, जाग्यो अरदेशर ततकाळ। लइ दर्पण ने मुख देख्युं, दिठो चांदलो आश्चर्य लेख्युं ॥४२॥ थयुं कह्युं हतुं ते महाराजे, आपी शहेर शुवागरी राजे । जेजे कहिति खपने वात, तेतो सवारे थइ साक्षात ॥४३॥ पाम्यो परचो आश्चर्य लेख्यो, मालमां चंद्र प्रकट देख्यो। एवां एवां आ समे महाराज, करेछे जननां बहु काज ॥४४॥ वळी भक्त एक भगुनाम, तेने जाणे ते सघळं गाम। लिये पारकी वढवेड्य वेचाति, करे नित्य कमाणि तेमांथी ॥४५॥ कहे सहु छे कजियादार, मुवा पछि जाशे जमद्वार । पण भगुने भरोसो भारी, नाथ नहि जुवे करणी मारी ॥४६॥ लोभी लंपटी छुं हुं हरामी, पण नहि तजे मुजने खामी । एवो खरो विश्वास ते दले, न भजे बिजाने कोइ पळे ॥४७॥ एम वीति गया बहु दन, आत्री अवधि तजियुं तन । आव्या तेडवा पोत्ये महाराज, लाव्या रथ एक भगुकाज ॥४८॥ तेणे हस्ति जुत्या जन जोइ, पाम्या आश्चर्य ते सहु कोइ। कहे मांहोमांहि एम मळी, आवी वात न दिठि सांभळी ।।४९॥ हस्ति

रथ दिठो द्रगे आज, चाल्या भगुने तेडी महाराज। हुवां दर्शन जन बहुने, थयो परचो जणाणुं सहुने ॥५०॥ एवा ए शहेरमांहि अनेक, थाय परचा न लखाय छेक। सर्वे लखतां न आवे पार, कहे निष्कुलानंद निरधार ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रव-र्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणि-मध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने एका-वनमुं प्रकरणम् ॥१५१॥

पूर्वछायो-खानदेश बुरानपुरमां, वसे हरिजन जेह । सहाय करी जेनी खामिए, कहुं सांभळज्यो हवे तेह ॥१॥ विप्र एक दिवान दादो, सतसंगी नहि सोय। जाण्ये अजाण्ये जमा-डिया, संत ते खामिना दोय ॥२॥ बिजां पुण्यतो बहु कर्या, जनम धरिने जेह। तेह भेळुं पुण्य आटलुं, थयुं अजाण्ये एह ॥३॥ एम करतां अवधि तेनो, आव्यो ते देहनो अंत । अवश्य तेडवा आविया, महा करुर ते कृतांत ॥४॥ चोपाइ-अंतकाळे आव्या जम ज्यारे, दिधुं दादाने दुःख ते वारे। जेजे जन्म धरि कर्यां पाप, तेते संभारि कर्यों संताप ॥५॥ दिठा दादे जम-दूत ज्यारे, देवी देवने संभार्या त्यारे। संत महंत संन्यासी सोय, तेह विना जे सेन्याता कोय ॥६॥ एह सर्वेने जोया संभारी, कह्युं कोइ हरो पीडा मारी। एह माहिलुं एके न आव्युं, तेवारे दादे शिश डोलाव्युं ॥ ७ ॥ कहे हवे करुं हुं शिपेर, केणे साय न करी आ वेर । एम कहीने थयो निराश, त्यांती संत दिठा दोय पास ॥८॥ कहे संत सुणो जमद्त, केम आविया आंहि कपुत । जाओ वेलावेला पाछा वळी, केम उभा रह्याछो सांभळी ॥९॥ त्यारे बोलिया जमना दूत, ठालुं शिदने करोछो

तुत। एह जीव केदि छे तमारो, सर्वे रीत्ये ए छे जो अमारो ॥१०॥ माटे जोर तमारे न करबुं, जाओ यांथी आहुं नव फरबुं। एवी संत ने जमनो वाद, सुणेछे दादो सर्वे संवाद ॥११॥ त्यारे संत कहे जाशुं अमे, लइ जाओ जो लेवाय तमे। त्यारे जम कहे जोडी हाथ, तमें सुखे चालो अमसाथ ॥१२॥ जाइये धर्मरायने जो पास, ज्यां छे पाप पुण्यनो तपास । एनां जोशे सुकृत संभाळी, हशे तमारो तो देशे वाळी॥१३॥ एम कही काढ्यो जीव ज्यारे, थइ सती तेनी नारी त्यारे। तेनो जीव आवी संगे मळ्यो, नारीसहित जमपुर पळ्यो ॥१४॥ चाल्या संत जमदूत साथ, गया जियां हता जमनाथ। धर्मे संतनुं सनमान किधुं, पछी ए जीवनुं खत हिंधुं ॥१५॥ नहि पुण्य ने पाप अनंत, पुण्य एटळं जम्या बे संत । करी तेह पुण्यनो तपास, कहे धर्म जाओ हरिपास ॥१६॥ पछी महाराज पासळे लाव्या, संत दोय तेह संगे आव्या। त्यारे महाराज कहे सुणो जन, एणे आप्युंछे तमने अन्न ॥१७॥ माटे हमणां सुरपुर जाशे, पछी वैकुंठनो वास थाशे। एम कहि आप्या दोय हार, पहेरी चाल्यां पुरुष ने नार ॥१८॥ ते दिछुं सर्वे समाधिवाने, वळी जे कह्युं ते सुण्युं काने । जाग्या समाधिमांहिथी ज्यारे, आवी सर्वे कही वात त्यारे ॥१९॥ कहे आजथकी नव वरषे, दादो सतसंगमां देह धरशे। थाशे सतसंगी नारी ने नर, पछी जाशे ते ब्रह्मनगर ॥२०॥ एतो दिउंछे अमारे नेण, नथी जुठुं एमां एके वेण । सहु सांभळी आश्चर्य पाम्यां, थयो परचो कही शिश नाम्यां ॥२१॥ वळी वणिक भक्त सुंदर, भाइ शामजि ने पीतांबर । एह बेउ भाइ सतसंगी, तेनो भाइ वैष्णव कुसंगी ॥२२॥ नाम ज्ञोभाराम ते अनाडी, करे सतसंगनो द्रोह दाडी।

शामजि पीतांबरने वारे, आवे सतसंग माहितो मारे ॥२३॥ एम करे अवळाइ अति, केनुं केण न माने कुमति। करे निंदा ए पड्यो अभ्यास, पछी आव्या ते संतने पास ॥२४॥ संते वात करी अति सारी, तेतो वात हैयामां न धारी। पछी संतने रूपे श्रीमुख, कह्यां जमपुरिनां जे दुःख ॥२५॥ मुणि तरत थइ त्यां समाधि, जइ दिठि जमपुरी बाधि । ठामोठामथी उठिया जम, देवा लाग्याछे मार विषम ॥२६॥ अति मारे बोले मुख एम, पापी सतसंगिने पीडे केम। तेनुं फळ सर्वे तने देशुं, तारो मारि-मारी जीव लेशुं ॥२७॥ एम दिधो दंड वर्डी चार, पछी आव्यो समाधिथी बार। आवीं कहि संत आगे वात, आज थइति जीवनी घात ॥२८॥ हवे ज्यांलगि रहे मारा प्राण, न करुं सत्सं-गनां कुवखाण । त्यारे संत कहे सारुं भाइ, हवे वेश तुं समा-धिमांइ।।२९।। पछी बेठो ध्याने शोभाराम, दिठा हरि ने हरिनां धाम । पाम्यो सुख समाधिमां अति, जोइ खामिश्रीजिनी मूरति ।।३०।। रह्यो प्रभुपासे बहुवार, पछी आव्यो समाधिथी बार । आवीं कही छे सर्वे वात, कहे स्वामी में निरूच्या साक्षात ॥३१॥ आबुं न दिठुं ने न सांभळ्युं, अतिमोर्ड सुख मने मळ्युं। हुंतो पामियो आनंद अंग, कहे धन्यधन्य सतसंग ॥३२॥ हुंतो पामियो परचो आज, मने मळ्या प्रकट महाराज। वळी बुरान-पुरने मांइ, रहे द्विज नारायणजि त्यांइ ॥३३॥ तेतो आव्योतो उद्यम काज, गुजरधरमांहि द्विजराज। तियां मळिगयो सतसंग, धार्यां नियम सर्वे श्वभ अंग ॥३४॥ पछी थया थोडा घणा दन, आवी अवधिये त्यागियुं तन । त्यारे तेडवा आव्या महाराज, गयो ब्रह्ममोले द्विजराज ॥३५॥ तेनो सुत हरिराम एक, हतो घरे

नानकडो छेक। तेने पण थयो सतसंग, थइ समाधि पलट्युं अंग ।।३६॥ गयो देह तजि ब्रह्ममोहोल, तियां दिउं छे सुख अतील। दिठा त्यांना सरवे रहेनार, दिठो पोतानो तात तेवार ॥३७॥ तात सुत मळ्या मांहोमांइ, एवं दिठुं छे समाधि मांइ। ज्यारे आव्यो ममाधिथी बार, एह वात करीछे ते वार ॥३८॥ सतसंगिए मान्युं ते सत्य, कहे कुसंगी सर्वे असत्य । अमे न मानिए एवी वाण, मानिये ज्यारे मळे एंघाण ॥३९॥ वारु समाधिमांहि तुं जइ, पुछिये वात ते आव्य लइ। तारो तात ने अमे बे भाइ, गयाता विजा गामडा मांइ ॥४०॥ शिये कामे गयाता त्यां शुं थयुं, कहेज्ये जइ मने ए पुछियुं। पछी हरिरामे समाधि करी, गयो ब्रह्ममोहोल मांहि फरी ॥४१॥ नारायणजि जे एनो तात, तेने आगळ्य जइ कही वात । मित्र तमारो व्यंकटराम, तेनो भाइ ज्ञानेश्वर नाम ॥४२॥ तेणे पुछ्छुं छे प्रश्न ते एम, अमे ग्याता विजे गाम केम। त्यारे नारायण कहे तात, तेनी कहुं तने सर्वे वात ॥४३॥ गाम नामे बदलपुरमांइ, ग्याता पींक खावासारु त्यांइ। पोंक खाइ पाछा अमे वळ्या, त्यारे वाटमांहि भील मळ्या । ।। ४४।। तेणे वस्त्र लिधां सर्वे छुंटी, देज्ये एंधाणि ए जइ मोटी। पछी समाधिथी आवी बार, करी वात ए सर्वे तेवार,॥४५॥ जेजे वीति ए त्रणने वात, कही एंधाणि दइने साक्षात। त्यारे व्यंक-टरामे विचार्युं, सत्य वात एम मन धार्युं ॥४६॥ ज्ञानेश्वर रह्यो गम खाय, आ बात केम खोटि कहेवाय। साचा सतसंगी साचा संत, साचा स्वामी पोत्ये भगवंत ॥४७॥ एम कही संत पाय नम्या, करज्यो महाराज अमपर क्षमा। तमारी सर्वे साची छे बात, अमे पाम्या परची साक्षात ॥४८॥ एम बहुबहु चमतकार, थाप बुरानपुर मोझार । कहेतां लखतां न आवे अंत, एम पर्चा थायछे अत्यंत ।।४९॥ पळेपळे करे हिर सहाय, नित्यप्रत्ये सतसंगमांय । तेणे मगन रहे नरनार, कहे निष्कुळानंद निरधार ।।५०॥ इति श्रीमदेकांतिधर्मप्रवर्तकश्रीसहज्ञानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरिचेते भक्ताचिंतामिशिष्ये श्रीजिसहाराजे हिरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने वावनमुं प्रकरणम् ।।१५२॥

पूर्वछायो-बहु भक्त बुरानपुरमां, भावे करी भन्ने भगवंत । सहाय करे जेनी श्रीहरि, पळपळमांहि अनंत ॥१॥ तेणे खुमारी तनमां, मनमां ते मोद न माय। नरनारी निःशंक थइ, गुण गोविं-दना गाय ॥२॥ अतिकेफ छे अंगमां, सतसंगतुं सुख जोइ । मस्त रहे सह मन्मां, कंगाल न माने कोइ।।३॥ प्रकट प्रभु प्रकट प्रापति, प्रकट माने कल्याण । प्रकट परचा पळेपळे, पुरेछे इयाम सुजाण ॥४॥ चोपाइ-तेणेकरी सहु नरनारी, भजे स्वामी श्रीजिने संभारी। नित्ये सतसंगमांहि बेसे, विजि वात अंतरे न पेसे ॥५॥ ज्यारे थाय सत्संगी भेळा, त्यारे गाय महाराजनी लीळा। सर्वे उत्सव समैया सार, तेनुं ध्यान करे नरनार ॥६॥ एह वात चितवतां मने, जागतां सुतां देखे खपने । पछी करे मांहोमांहि बात, तेणे रहे सह रिक्रयात ॥७॥ एम करतां वीते निश्चदिन, थाय समाधि खपने दर्शन। पछी एम बोल्या हरिदास, चालो प्रकट प्रसुने पास ।।८।। करी आवीये दर्शन सहु, निार्खे आनंद पामशुं बहु। एम करी परस्पर वात, चाल्यो संघ सजि परभात ॥९॥ बाइ माइ बुढां बाळ संगे, चाल्यां सर्वे अतिशे उमंगे । वांधि खरचि खावाने काज, लिधि पूजा पूजवा महाराज ॥१०॥ धीरेधीरे करतां धुकाम, चाल्या समरतां हरिनाम। आव्या झाडिमांहि ज्यारे जन,

त्यारे चोरे कर्युछे विघन ॥११॥ घोडां वेल्य ने घरेणां जेह, वस्त्र वासण लिथांछे तेह। खरचि खावानी रहेवा न दिघी, सर्वे वस्तु ते छुंटिज लिधी ॥१२॥ वळी बांधि पछवाडे बे हाथ, लइ चाल्या चोर पोतासाथ । गया सघन झाडिमां ज्यारे, बोल्यां हरिजन तेह वारे ॥१३॥ कहे मांहोमांहि एम मळी, रखे दुःख मानो कोइ वळी। हशे भक्ति आपणिमां भुल्य, त्यारे आपणां आ थयां शूल ॥१४॥ माटे सहु थइ सावचेत, भजी भावे हरि करी हेत। हमणे आवशे घोडले चडी, वेल्य वाल्यम नहि करे वळी ॥१५॥ आवी छोडावशे अविनाश, जाणे बंधिवान निजदास। एम करतां मांहोमांहि वात, पधार्या प्रभु पोत्ये साक्षात ॥१६॥ बहु सखा हता पोतासंगे, आपे चड्याता ताते तुरंगे। आवी चोरने मारवा लाग्या, चोर मुकि झटोझट भाग्या ॥१७॥ जाय कियां लीघा सर्वे झाली, कर्या मोर घुमरिये घाली। सर्वे वस्तु ते संमारी लिघी, ए पासे एके रहेवा न दिधी।।१८॥ तोय न मेले चोरने नाथ, बांधी लइ चाल्या पोताने साथ। त्यारे चोर बोल्या एम मुखे, शुं करुं मरुं छुं सहु भुखे ॥१९॥ माटे न करवानुं आ कीधुं, तेनुं फळ तरत अमे लीधुं। हवे जेम कही तेम करिये, एवं सुणि दया करी हरिये॥२०॥ जाओ मुकि दिये छीए आज, हवे करशो मां आवुं काज । एम चोरथी मुकावी जन, संघ संगाथे चाल्या जीवन ॥२१॥ जियांलगि उतरिया झाडी, तियांलगि रह्या संगे दाडी। ज्यारे आव्यां छे वस्तिनां गाम, त्यारे अदृश्य थयाछे क्याम ॥२२॥ पछी सत्संगी सर्वे ते मळी, करे मांहोमांहि वात वळी । जोज्यो श्रीहरिनी आ सामर्थि, छे जो मोटी छोटी कांइ नथी ॥२३॥ आप्यो परचो प्रकट आत्री, गया चोर करथी

मुकावी। आवी वात कहो कियां होय, सतसंग विना विजे नोय ॥२४॥ पछी धीरेधीरे सहु चाली, आव्या महाराज पासे ते हाली । करी दर्शन प्रसन्न थयां, पछी बाटनां विघन कह्यां ॥२५॥ त्यारे हिशने बोल्या महाराज, अमे आवी कर्यु एह काज। त्यारे जन कहे वनमांय, तम विना करे कोण सहाय ।।२६।। वळी निमाड्य देशनी वात, सुणी सहु थाशो रिक्वयात । गाम सरसो दर्मा जन जेह, कणबी रामजि नामे छे तेह ॥२७॥ तेना शरीरमां नहि सुख, हतुं देहमांहि अतिदुःख। तेनी पीडामां बहु पिडाय, करे सुख थावानी उपाय ॥२८॥ देव पित्र भैरव भवानी, बहु मानता एहने मानी। वळी जमाड्या साधु संन्यासी, जोगी जंगम वळी वनवासी ॥२९॥ तेणे रोग टळ्यो नहि रंचे, सामु थयोछे दुःखनो संचे । पछी सहजानंदी संत जे छे, आव्या तेज घेरे अणइच्छे ॥३०॥ कर्या दर्शन रामपटेले, ग्रह्मां चरण ते नव मेले। कहे हुं छउं शरण तमारी, तमे राखज्यो खबर मारी ॥३१॥ त्यारे संत कहे बहु सारुं, तमे धारो जे नियम अमारुं। पछी हाथमांहि जळ लेइ, मेल्युं संतने चरणे तेइ॥३२॥ संत कहे नारा-यण नाम, भज्य तज्य तुं सरवे काम । तन तारुं रहे के न रहे, थयुं कल्याण तुं मानीलहे।।३३॥ ज्यारे आवशे देहनो काळ, त्यारे लेवा आवशे द्याळ। कही संत एटलुं वचन, चाल्या एने बताबि भजन ।।३४।। पछी रामे मांड्युं ए रटण, करे खामिश्रीजिनुं सारण। पछी थया थोडा घणा दन, आबी अवध्ये तजियुं तन।।३५॥ त्यारे तेडवा आव्या महाराज, भेळा संत सखानी समाज। आव्या गामने गोंदरे नाथ, निर्खि बहु जन थयां सनाथ ॥३६॥ कहे कोण तमे कियां जाशो, आ गाममांहि केम समाशो । कहे अमे

स्वामिनारायण, आच्या भक्त रामजि कारण ॥३७॥ हमणां करशुं वाडीमां निवास, पछी जाशुं रामजिने पास। एम कही वाडीमां उतर्या, बहु जीव कृतारथ कर्या ॥३८॥ दिधां बहु जनने दर्शन, प्रभु पोत्ये थइने प्रसन्न । पछी आव्या रामजिने घेर, करी मोटी महाराजे महेर ॥३९॥ उठि रामजि लाग्योछे पाय, निर्खि नाथने तुप्त न थाय । दिठा संत प्रभुजिने साथे, जेणे नियम घराव्यांतां हाथे।।४०॥ पछी नाथ कहे सुणो जन, चालो अमनाथे तजि तन । एवी सांभळी वालानी वाण, तज्या तर्त रामजिए प्राण ॥४१॥ घरपरना माणस जोते, तन तंजि चाल्यो तर्त पोत्ये। सहु जोइने आश्रर्य पाम्यां, धन्यधन्य कही शिश नाम्यां ॥४२॥ पछी गाम सघळे ते जाण्युं, अतिमोद्धं आश्वर्य परमाण्युं। कहे आपणे न जाण्युं कांइ, जाण्युं प्रकट आन्याछे आंइ ॥४३॥ रहेशे दन आहि दोय च्यार, करशुं दर्शन सहु नरनार । जो जाणिये अलौकिक अंग, चरण ग्रहि न मुकिये संग ॥४४॥ पण ए पळ गइ ते गइ, वारु भाग्य मोटे भेट्य थइ। अही वात अतिशय मोटी, हशे पापी ते मानशे खोटी ॥४५॥ एम बोले गामलोक वाण, थयो परचो प्रकटप्रमाण। एवीरीत्ये अपरमपार, थाय पर्चा ते लाखहजार ॥४६॥ कहेतां लखतां न आवे छेक, लखिए एकतो रहे अनेक । देशदेश गामगाम प्रत्ये, आपे नाथिज परचा ते नित्ये ॥४७॥ जणजण प्रत्ये जुजवा, थाय परचा नित्य प्रत्ये नवा। आज वावरेछे जे सामर्थि, ते तो लखतां लखाति नथी. ॥४८॥ आगे धर्या अवतार घणा, जाणो सर्वे आ श्रीहरितणा। पण आज वाळ्यो आडो अंक, प्रभु प्रकट्या पूर्ण मृगांक । ४९॥ जेजे आ वारे करियां काज, तेते आगे न कर्यो महाराज । सर्वे

शास्त्रमां वात सांभळी, आजना जेवी क्यांइ न मळी ॥५०॥ आजनी तो रीत्य छे अलेखे, पण होय धीमंत ते देखे। आज अढळ ढळ्या अपार, कहे निष्कुलानंद निरधार ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविर-चिते भक्तिचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे प्रकसो ने त्रेपनमुं प्रकरणम् ॥१५३॥

पूर्वछायो-हवे हिंदुस्थानना, वळी लखुं परचा जेह। सामर्थि श्रीमहाराजनी, सांभळज्यो कहुं तेह ॥१॥ धन्यधन्य धुवा गाममां, हरिजन जाति छवार। भला भक्त भगवानना, जेने हैं थे हेत अपार ॥२॥ एक बिंदा नामे जन जाणो, भजे हिर करी भाव। तेनी काकी कुसंगणी, दलमांहि दुष्ट खभाव।।३॥ करे खेचरी नित्य खरी, जेने हरिसंगाथे वेर। सतसंगी जाणि रीश आणी, वाणी वदे जेवी झेर ॥४॥ चोपाइ-बोले अवळुं ने नाखेछे आळ्युं, दिये वण वांके नित्य गाळ्युं । सुतां बेठां जागतां ए जाप, खातां पितां वढे नित्य आप ॥५॥ कहे बिंदो ते बगडि गयो, करी सतसंग खामिनो थयो। एवं सहजानंदमां शुं भाळ्यं, एम कही कहि दिये गाळ्युं ॥६॥ श्वासउश्वासे एज सारण, भुली नहि ज्यांलगि आर्च्यु मरण। त्रुटि नाडीयो पीडाणा प्राण, आर्च्या लेवा दिठा जमराण ।।७।। अति काळा रिसाळा विकाळ, कोधवाळा करुर कोपाळ। एवा दिठा जमदूत ज्यारे, देवीदेवने संभार्या त्यारे ॥८॥ वळी सेव्या हता भेखधारी, तेह सर्वेने जीया संभारी। पण केणे करी नहि साय, डोशी पडी महा दुःखमांय ॥९॥ मारोमारो करे जमराण, डारे डोशी थइछे हेराण। पछी ते समे खामी संमार्या, लीधुं नाम जम सुणि डर्या ॥१०॥ त्यारे डोशीए वारमवार, कर्यो

स्वामिनामनो उचार । आव्या अलबेलो एइ वार, पोता साथे सखा असवार ॥११॥ आपे बेठा छे रथ अनुपे, शोभेछे रवि कोटि स्वरूपे। जोइ आश्चर्य आवियां जन, क्याँ लाखो लोके दरशन ॥१२॥ आव्या डोशिने पासे दयाळ, देखी जम भाग्या ततकाळ। पछी डोशिए कर्यों दर्शन, करे स्तुति कहे धन्यधन्य ॥१३॥ अही पतितपावन टेक, मारी न जीयी अवगुण एक। आ समे साय किधुंछे मारुं, तेती विरुद संभारी तमारुं।।१४॥ एम करी स्तुति जोडि हाथ, तजि तन चाली हरिसाथ। सर्वे लोक कहे धन्यधन्य, आवर्ड शियुं डोशीनुं पुण्य ॥१५॥ आतो परचो पुर्यो भगवाने, हशे मूरख ते नहि माने। वळी एक कहुं विजि वात, सहु सांभळज्यों छे साक्षात ॥१६॥ वळी एह गामे एह जात, भक्त ठाकुरदास विख्यात । तेनी पत्नी नाम धनुबाई, प्रीत्य बेउने महाराजमांइ ॥१७॥ कहे मांहोमांहि नरनार, हवे तजवो विषय विकार। थयां सांख्ययोगी नर नारी, रहे भेळां पाळे व्रत भारी ।।१८॥ कोइ कोइनुं अंडे अंबर, करे उपवास नारी नर। अजाण्ये जो बेउमां बोलाय, तेह दिवसे अन न खवाय ॥१९॥ ज्यारे घरमांइ होय नार, त्यारे पुरुष बेसे जइ बार । ज्यारे पुरुष होय घरमाई, त्यारे बार बेसे जइ बाई ॥२०॥ पाळे व्रत एवं मांहोमांइ, विषयवासना न इच्छे कांइ। एवीरीत्ये वीत्या बहु दन, करे खामिश्रीजिनुं भजन ॥२१॥ तेतो सत्संगी सर्वे जाणे, वर्तेछे सांख्ययोग प्रमाणे। हरिभक्तने लागे ए सारुं, बिजा विमुखने लागे खारुं ॥२२॥ कहे विमुख एम अभागी, जोज्यो थइ बेठां बेउ त्यागी। शुं समिन तज्यो संसार, एम बोले बहु नरनार ॥२३॥ सतसंग कहो केम करिए, करिए तो ए

जेवां थइ फरिए । माटे वात तो छे घणि सारी, पण धारिये तो थाय खुवारी ॥२४॥ एवं जाणिने जगजीवन, दिधां ए बेउने दर्शन। मेळा ब्रह्मचारी छे ग्रुकुंद, आव्या जनपासे जगवंद ।।२५।। कहे ठाकुरदासने खामी, ययुं पुरुं वत निष्कामी। एह टेक ग्रहिछे जे तमे, आज मुकाविए छीए अमे ॥२६॥ जे पाळे गृहस्थ व्रतमान, ते सहु सांख्ययोगिने समान । माटे मानी अमारुं वचन, कर्मयोगी थइ करो भजन ॥२७॥ एम कही एने अविनाश, गया विजा हरिजन पास । दिधां दशविशने दर्शन, थइ पोत्ये प्रभुजि प्रसन्न ॥२८॥ कैक कुसंगिए पण दिठा, प्रकट प्रमाण रथे बेठा। नरनारी सहु आश्चर्य पाम्यां, धन्यधन्य कही शिश नाम्यां ॥२९॥ कहे साचा स्वामी साचा जन, थया एवड्ये अमने दर्शन। आतो परचो अलौकिक जाणो, सहजानंद समर्थ प्रमाणो ॥३०॥ वळी ए गामे छुतारमांइ, हरिजन नाम गांगुबाई। अतिहेत प्रीत्ये भजे हरि, पाळे नियम सर्वे भावे करी ॥३१॥ एक दिवस बाईने संगे, गई ईधणां लेवा उमंगे। वीणे ईधणां गरबी गाय, अतिहेत हैयामां न माय ॥३२॥ जोइ प्रेम एनो अविनाश, आव्या प्रकट प्रभुजि पास । दिघां सहु बाइयोने दर्शन, निार्खे नाथने थयां मगन ॥३३॥ वालो गावा लाग्या संगे गीत, जोइ पोताना जननी प्रीत। निर्धि खामी श्रीसुखदाइने, थइ समाधि गांगुवाईने ॥३४॥ दिठो ब्रह्ममहोल गोलोक, श्वेतद्वीप वैद्धंठ विशोक । अक्षरधाम ने धामना वासी, दिठा समाधिमां सुखराशी ॥३५॥ जोयां धारणमां जेजे धाम, जागी लिघांछे तेहनां नाम। सुणि आश्चर्य पामिया सहु, कहे आतो वात मोटी बहु ॥३६॥ जोने प्रभुजि प्रकट प्रमाण, दिधां दर्शन क्याम सुजाण । आतो वात अलैकिक भारी, थयो परची कहे

नरनारी ।।३७।। वळी द्विजभक्त एह गामे, भाइ वे बुद्ध मदारि नामे। भजे प्रभु प्रकटप्रमाण, जाणि सत्संग साची सुजाण।।३८॥ करे उद्यम निर्वाहकाज, भावेशुं भजे श्रीमहाराज। एक दिवस वेवारसारु, कर्युं मांहोमांहि मारुं तारुं ॥३९॥ तेने वीतिगइ घडी चार, त्यारे बुद्धे कर्योछे विचार । धिकधिक ए वहेशारमांइ, एक हरिभक्त मारी भाइ ॥४०॥ तेशुं बोल्यो हुं ताण्यमताण्य, मुजेवो नहि कोइ अजाण्य । एमां कुराजि थाशे महाराज, एथी खोट्य मोटी शी छे आज ॥४१॥ एम कहिने बेठो भजने, मानसी-पूजा करवा मने । पछी मानसीपूजामां घणी, करी स्तुति खामि-संतरणी ।।४२।। अतिदीनपणुं दल आणी, बोल्यो गदगद कंठे वाणी। थयो अपराध मुथी महाराज, तेनो गुनो बकसज्यो आज ।।४३।। एवी सांभळी जननी वाणी, आव्या दीनबंधु दीन जाणी। दिधां दासने दर्शन नाथे, निरूर्या बाइ भाइ सहु साथे।।४४॥ बुद्ध लिळिलाग्यो प्रभुपाय, निर्वि नाथ हरख न माय। कहे धन्यधन्य मारा नाथ, आज मुजने कर्यो सनाथ ॥४५॥ पछी तरत कर्यो दुधपाक, कर्या पासळे सुंदर शाक। विजां कर्या छे बहु भोजन, वळी विधविधनां व्यंजन । ४६॥ तेणे जमाख्या जगजीवन, जनभावे जम्या भगवन। बोल्या जमतां जसतां नाथ, हेत राखिये हरिजन साथ ॥४७॥ साचा सगा सतसंगी जाणो, आ लोक परलोकना प्रमाणो । तेशुं वढी न किजिये वेर, मांहोमांहि न वाविये झेर । १४८।। एम वात करी भगवन, दीघां बहु जनने दर्शन। दिठा सहु जने प्रकट प्रमाण, पछी न दिठा स्याम सुजाण ॥४९॥ त्यारे आश्वर्थ पाम्या तेवार, थयो परचो कहे नर-नार। एम कहिने पाम्या आनंद, निश्चे जाणी कहे निष्कुला- नंद ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने चोपनमुं प्रकरणम् ॥१५४॥

पूर्वछायो-धन्यधन्य धुवा गाममां, ज्यां भक्त रहे भाविक। सहाय करी जेनी क्यामळे, तेह कहुं हवे कांहक ॥१॥ छुवार भक्त छिकिनामे, आव्यो तेहना देहनो काळ। अंतसमे अलबेलडो, आव्या तेडवा दयाळ ॥२॥ संतसहित श्यामळो, पधार्या प्रकट आप । दर्शन दिधां दासने, सहु निरखी थयां निष्पाप ॥३॥ सत्तसंगी कुसंगी सहुए, दिठा प्रकट प्रमाण। नहि खपन साक्षात जाणी, आव्या स्याम सुजाण ॥४॥ चोपाइ-छिक लाग्यो लिकलिक पाय, निर्धि नाथ तृपत न थाय। कहे नाथ लुकि तारे काज, आव्या तेडवाने अमे आज ॥५॥ माटे तरत थाओ तैयार, चालो वेळ म करो लगार। त्यारे लुकिए तजिया प्राण, चारयो नाथने साथे सुजाण ॥६॥ सहु जोइ रह्या बहु जन, देखी आश्वर्य कहे धन्यधन्य। घणा मरेछे आ गाममांय, आवे जम लेवा लइ जाय ॥७॥ पण तेडवा आवे महाराज, एवं तो अमे दिठंछे आज। माटे आतो वारता अलेखे, थयो परची सहु जन देखे ।।८।। वळी भक्त छवार ते कहीए, प्राणनाथ नामे तेह लहीए। तेने प्रश्रमांहि प्रीत घणी, करे पूजा नित्य पटतणी ॥९॥ तेने घेर पधारी गोविंद, पाडी आप्यां चरणारविंद। वळी सहुने दिघां दर्शन, निर्खि नाथने थयां मगन ॥१०॥ कहे धन्य धन्य महाराज, आतो परचो पाम्या अमे आज। थयां प्रकटप्रमाण दर्शन, पाड्यां पगलां थइ प्रसन्न ॥११॥ आतो वात अतिशय मोटी, हरो पापी वे परठशे खोटी । वळी प्राणनाथनो जे तात,

नाम केशर कहुं तेनी वात ।।१२।। हतो कवीरना मतमांइ, नोति प्रभुमां प्रतीत कांइ। तेना देहनो आवियो काळ, आव्या तेडवा जम ततकाळ ।।१३॥ तेह हतो विषय अभिलाषी, गयो जमना हाथथी नाशी। तर्त पामियो भूतनो देह, पाछो जइ रह्यो निजगेह ॥१४॥ करे होहोकार वाणी घणी, थइ कविरियो बणिठणी। एनी स्त्रीना देहमध्ये आवी, करी प्रवेश तेने बोलावी ॥१५॥ कहे खामिनारायण सत्य, एह विना विजा छे असत्य। खामी प्रकट प्रभु प्रमाण, एह विना भिजे नथी कल्याण ॥१६॥ कबिरिया मोटामोटा मेत, मानो सहु थया भूत प्रेत । करता खंडन तीर्थ ने वत, तेतुं अघ आव्युंछे जो तर्त ॥१७॥ कहेतां प्रभुना अवतार खोटा, तेह पापे भूत थया मोटा । माटे किब-रिया कोइ म थाज्यो, थइ आस्तिक हरिगुण गाज्यो ॥१८॥ प्राणनाथनी वातो सांभळज्यो, जेम कहे तेम सहु करज्यो। पुण्य पवित्र छे प्राणनाथ, तेणेकरी हुं थयो सनाथ ॥१९॥ सुणि एना मुखनुं भजन, तर्त छुट्यो हुं भूतनुं तन । हवे जाउंछुं हरिने धाम, सुणि स्वामिनारायण नाम ॥२०॥ एम बोल्यो ए बाईमां रइ, सहुए सांभळियुं कान दइ। कहे धन्यधन्य आज खामी, विजा मत ते छणहरामी ॥२१॥ जुवो किबरियो भृत थइ, बोल्यो पोतानी स्त्रीमां रइ । साचा कह्या सहजानंदस्वामी, विजा कह्या ते कपटी कामी ॥२२॥ माटे एथी वात मोटी कहि, थयो साचो परचो फेर नहि। वळी बिजि वात छे अनुप, सुणो सतसंगी सुखरूप ॥२३॥ वळी ए गामना हरिजन, करे प्रकटप्रमाण भजन। खरो विश्वास ते उर आणी, स्वामी विना वदे नहि वाणी ॥२४॥ करे समैया सर्वे संभाळी, अष्टमी एकादशी दीवाळी । जेजे

हरिना जन्म दिवस, करे उत्सव तेदि अवश ॥२५॥ एम करतां आविछे होळी, रमे नरनारी मळी टोळी । नाखे धुड्य ने भाखे गाळियो, करे होहो ने पांडे ताळियो ॥२६॥ एवी रीत्य सतसंगी जोइ, एह पेरे रमे नहि कोइ। सहु बेसे मंदिरमां मळी, करे वात प्रभुजिनी वळी ॥२७॥ एम करतां हुतासनी आवी, सर्वे हरिजन मन भावी। लाव्या गुलाल कढाव्यो रंग, मांहोमांहि रमवा उमंग।।२८।। पछी सञ्ज थया सहु जन, जाणी मोटो उत्स-बनो दन। नाखे रंग उडाडे गुलाल, तेणे सहु थया रंगलाल ।।२९।। मुखे बोले नारायण नाम, पाडे ताळी जाणे सह गाम। अतिप्रेममां मगन सहु, हैये हेत प्रीत्य वळी बहु ॥३०॥ तेतुं हेत जोइ हरिराय, आव्या अलबेली तर्त त्यांय । आवी मळ्था मंड-किमां नाथ, राच्या रमवा जनने साथ ॥३१॥ ताळी मेळी पाडे हाथे ताळी, धुन्य मेळी करे धुन्य वळी। रमे दास साथे रंग-भिनो, करे उत्सव हुतासनीनो ।।३२।। प्रश्च पोत्ये प्रकट प्रमाण, रमे जनने संगे सुजाण । सहु करे दरशन दास, अति रूपराशि अविनाश ॥३३॥ दीठा सत्संगी कुसंगी जने, जोइ आश्रर्य पामिया मने। कहे महाराज छे परदेशे, आंहि आव्या छे अलौकि वेशे ।।३४।। ज़ेने निरखवा होय ते निरखो, वळी परखवा होय ते परखो। एम करतां मांहोमांहि उचार, प्रभु अदृश्य थया तेवार ॥३५॥ पछी सर्वे रह्या छे विमाशी, कहे कियां गया अविनाशी। एक कहे रम्या भुजसाथे, एक कहे लिधि ताळी हाथे।।३६॥ एक कहे हता मारे पास, मारे हति मळवानी आश । आतो आपणे न जाण्युं कांइ, चड्या रमवाना तांनमांइ।।३७॥ त्यारे एक कहे सांभळो जन, मोटां भाग्य थयां दरशन । हवे ओरतो म करो

कांइ, राखो मूरति अंतरमांइ ॥३८॥ थयो परचो जाणज्यो जन, मोटां भाग्य मानो धन्यधन्य। एह रीत्ये अपरमपार, थाय पर्ची हजारे हजार ॥३९॥ कोइकने घरे जमे आवी, कोइकने आपे हार लावी। कोइकने करतां भजन, थाय प्रकट प्रमाण दर्शन ॥४०॥ नित्य धुन्य करे आवी साथे, पांडे प्रकट ताळी वे हाथे। एम आपे परचा अपार, कहेतां लखतां न आवे पार ॥४१॥ अंत-काळे तो अवस्य आवे, ए बिरुद् केदि न बदलावे । जे कोइ खामी नारायण केय, तेने माथे नथी केनो भेय ॥४२॥ माटे रहो निर्भय निःशंक, मळ्ये महाराजे न रहेवुं रंक । जेने पासे होय चिंता-मणि, केम दुःखी रहे तेह धणी ॥४३॥ तेमां कंगाल रहे नर कोय, एना चितव्यामां फेर होय । तेम प्रकट मळ्ये महाराज, सरे सर्वे पेरे बळी काज ॥४४॥ तेमां दुःखी रहे जेह जन, तेने तेवुंज छे चिंतवन। हरि कल्पवृक्षसम कावे, निश्चे निष्कुलानंद एम गावे ॥४५॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्य-निष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने पंचायनमुं प्रकरणम् ॥१५५॥

पूर्वछायो-वळी कहुं एक वारता, सुंदर छे अतिसार। जेणी रीत्ये हरिजननी, वळी करी हरिये वार ॥१॥ बारां मध्ये एक बहु सारुं, गणिए गुडेल गाम। खरा क्षत्रि त्यां रहे, जेतुं छे जिमाइ नाम ॥२॥ तेहना ते गाम उपरे, वळी आवी चोरनी धाड्य । लाग्या ते सहुने छटवा, पापिए पडावी राड्य ॥३॥ ते**ह** सुणि शूरवीर धीर, तरत थया तैयार । रुडा रणमां रमवा, लीवां हाथ हथियार ॥४॥ चोपाइ-मारी चोर कर्या चकचुर, जे रह्या ते भागि गया दूर। एक चोर रह्योतो संताइ, कर्यो

घाव तेणे शिरमांइ ॥५॥ पछी ते तस्करने मारी, काढी घाड्य गाममांथी बारी । करी जित वळ्या निजधेर, समरतां खामी रुडिपेर ॥६॥ राखी वरति ते मूर्तिमांइ, घाया तेनी पीडा नहि कांइ। सुखे वीत्या दशपांच दन, आव्या भक्तपासे भगवन ॥७॥ निष्या जिभाइए श्रीजगदीश, अतिहरखे नमावियुं शीश । कहे धन्य दीनप्रतिपाळ, मारी आ समे लिधि संभाळ।।८।। एम कहिने जोडिया हाथ, त्यारे बोलिया नेहर्शु नाथ । आजथकी जाणो त्रिजे दन, तमारे नथी राखबुं तन ॥९॥ मेली देह आवो ब्रह्म-मोल, एम कही दइ चाल्या कोल। त्यारे राजि थयाछे जिमाइ, अतिहरख पाम्या मनमांइ ॥१०॥ जोइ रह्याछे वायदे वाट, अक्षमोहोलमां जावुं तेमाट। त्यारे नाथजि थया तैयार, साथे लइ दश ते अश्वार ॥११॥ वालो आव्या वडगाम मांइ, दिधां दासने दर्शन त्यांह। पछी आव्या छे गुडेल गाम, करवा जिभाइनुं हरि काम ॥१२॥ दिघां दर्शनदान बहुने, थयुं आश्वर्ष जन सहुने । कोटिकोटि सूर्यने समान, दीठा सखासंगे भग-वान ॥१३॥ आव्या जीवन जिभाइ पास, दीनबंधु जाणी निज-दास । कहे वालोजि वारमवार, थाओ जीभाइ हवे तैयार ॥१४॥ त्यारे जिभाइ थया प्रसन्न, तरत तुज्युं राजि थइ तन । मागी शिख मुक्युं ज्यारे तन, जोइ आश्चर्य पामिया जन ॥१५॥ कहे धन्यधन्य मारा नाथ, तेडि चाल्या जिभाइने साथ। आवी रीत्य दिठि न सांभळी, तेवी आज जोइ अमे मळी ॥१६॥ माटे आथी पर्चो शियो अन्य, हशे पापी ते नहि माने मन्य। आवी रीत्ये तन जाय छुटी, एथी वात विजि कइ मोटी ॥१७॥ एक चडोतरे बोचासण, तियां का शीदास शिरोमण। तेने साची

समझाणि वात, रह्यो संशयवत एनी तात ॥१८॥ तेने काशीदास कहे एम, तमे खामिने समजोछो केम। त्यारे कानदासे एक कह्युं, शुकसरिखा एवं मे लयुं ॥१९॥ त्यारे काशीदास कहे तात, स्वामी स्वयं श्रीहरि साक्षात । त्यारे कानदास कहे हुने, पण मट्यो नहि मनसंशे ॥२०॥ एम करतां वीत्या कांइ दन, थयां कानदासने दर्शन । दीठा परमहंस लाखो लेखे, तनतेज सूर्यथी वशेखे ॥२१॥ कोइ दिठा छे नारद जेवा, कोइ शुकसमान छे एवा । कोइक दिठा सनकसमान, कोइ वाल्मीक मुनि निदान ।।२२।। ऋषि सहस्र अठ्याशि छे जेह, दिठा तेजना अंबार तेह। जोइ आश्चर्य अंतरे पाम्यो, संशय सर्वे मननो वाम्यो ॥२३॥ पछी लाग्यो छे सहुने पाय, अति राजिथइ मनमांय। कहे धन्य-धन्य मुनिजन, धन्य सहजानंद भगवन ॥२४॥ तमे मुनि ने जे महाराज, आव्या जीव उधारवा काज। आवी प्रकट परची पामी, नहि माने जे हशे हरामी ॥२५॥ वळी चडोतरमां मेघवे, कहुं वात कणविनी हवे । नरोत्तम ने नागरदास, करे सत्संगनी उप-हास ॥२६॥ धन जोबनने बळे करी, पग न भरे प्रभ्रथी उरी। करे भक्तनी निंदा अमट, ते पापे वळग्यां भूत षट ॥२७॥ बे भोइ बे भंगिया निदान, एक खत्रि एक मुसलमान । वळग्यां नरी-त्तमने ए षट, आपे अंगमां दुःख अमट ॥२८॥ ज्यारे आवे अंगमांइ भोइ, त्यारे भार लिये शिर ढोइ। ज्यारे मुखां आवे अंगमांये, त्यारे मागेछे कांइनुं कांये ॥२९॥ आवे भंगिया है भेळा मळी, मागे खावा अखाज ते वळी। ज्यारे खत्री करे पर-वैश, त्यारे करे होयेश होयेश ॥३०॥ ज्यारे जेजे वसे आवी अंग, त्यारे तेवोज करेछे रंग। एम भृत वळग्यां ए छोय,

मुवालिंग मुके नहि कोय ॥३१॥ वळी धडपर नहि जेने शिश, वळग्यो ते नागरने खविश। वळी एकने वळग्यो कोळी, थइ भेळी भूततणी टोळी ॥३२॥ कोइ मुंझवे कोइ रोवारे, कोइ जगाडे कोइ सुवारे। कोइ धुणवे धुजवे वळी, एम दिये दुःख सहु मळी।।३३।। ते काढवा उपाय बहु करिया, कर्या भेळा भुवा ने जागरिया । धुणिधुणि धन गया खाइ, तोय फेर पड्यो नहि कांइ।।३४॥ पछी चाल्या त्रण्ये त्यांथी मळी, आव्या वरताले खामी सांभळी। कर्यां दर्शन लागिया चरण, खामी अमो छुं तमारे शरण ॥३५॥ त्यारे भूतने भयज लागी, रही न शक्यां निसर्यां भागी। जोइ महाराजनी परताप, थयो भूततणे तनताप ॥३६॥ न खमाणुं ते निसर्यो खर्शी, जे रह्यांतां ए त्रण्येमां वशी। पछी त्रण्ये सतसंगी थया, धारी नियम निजवेर गया।।३७।। ते जोइ सहु आश्वर्य पाम्यां, धन्य खामी कही शिश नाम्यां। थयो परचो जाण्यो सहु जने, काढ्यां भूत पोत्ये भगवने ।।३८।। वळी ए देशे मुमधा गाम, तियां ब्राह्मण ईश्वर नाम । तेहने ब्रह्मराक्षस वळगो, आपे दुःख थाय नहि अळगो ॥३९॥ ते राक्षसने काढवा माट, घेरे बेसार्थे शास्त्रीय पाट । धुणिधुणिने थयो बेहाल, तोय भूते मेल्यो नहि ख्याल ॥४०॥ भणे श्लोकभेळा श्लोक तेह, थयो भूत ते भणेलो एह । कौ मुदी न्याय व्याकरण जाणे, बोले गीर्वाणी संगे गीर्वाणे ॥४१॥ कोइ रीत्यनी न माने वात, दिये दुःख दिवस ने रात्य। पछी ब्राह्मण जेतलपुरे, आव्यो श्रीहरिनी ते हजुरे ॥४२॥ आवी लाग्यो महाराजने पाय, त्यारे भूत बोल्यो एइमांय। हवे हुं क्यां जाउं मुरारी, आव्यो बाह्यण शरण तमारी ॥४३॥ कहे नाथ रहे संतमांय, भूत कहे पासे केम अवाय । तारे नाथ कहे जा

बद्रीवन, कर्य नरवीरनुं दर्शन ॥४४॥ पछी भृत शिख मागि गयो, द्विज ईश्वरिज साजो थयो । ते प्रताप श्रीमहाराजतणो, शुं कहिये मुख्यी घणोघणो ॥४५॥ वळी जेतलपुरने मांइ, कणबी नाम तेनुं राईबाई। तेने वळिंग चुडेल सयाणी, दिये दुःख नित्यप्रत्ये घणी ॥४६॥ लइ जाय पहेर्यानां छगडां, जाय झोटि खावानां ठामडां। थाय पांचदश दन ज्यारे, नाखी जाय फोडि त्रोडि त्यारे ॥४७॥ एम चुडेल पडी छे केड्ये, जाय चडावी पाडरु मेडे। पछी ते बाई प्रभुने पास, आवी करी एनी अर-दास ॥४८॥ त्यारे बोलिया श्रीभगवान, था सतसंगी ले वत-मान । पछी ते बाईए तेमज कर्युं, त्यारे भूत ते भागी निसर्थुं ॥४९॥ ते प्रताप श्रीमहाराजतणों, शुं कहीये वळी मुख्यी घणो । एम आपे जनने आनंद, नयणे निर्धि कहे निष्कुळानंद ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनि-विरचिते भक्ताचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकतो ने छपनमुं प्रकरणम् ॥१५६॥

पूर्वछायो- वळी कानमदेश आमोदमां, द्विज मह दीनानाथ। संशयवत सतसंगमां, हतो अणसमझे अनाथ।।१।। एवा
समामां आवियो, विमुख अति मतिमंद। अभाग्य जोगे आवी
मळ्यो, जे निर्विकल्पानंद।।२।। तेणे मह भरमावियो, आवियो
तेणे अभाव। पूरण संशय पाडियो, ते विमुखे भजव्यो भाव
।।३।। मेल्युं शरण महाराजनुं, त्यारे भूते वरत्यो लाग। आविलाग्यां अपत्यने, ज्यारे कर्यो सतसंग त्याग।।४।। चोपाइ—
स्तोत्र अष्टक वळी आरति, तेणे करिति हरिनी विनति। माटे
भूतनुं तुत त्यां नोय, वळगे हरिविमुख जे होय।।५।। माटे एनी

मुता जे विम्रुख, वळग्युं भृत तेने दिये दुःख । जाय घरमांथी चीज उपाडी, नाखे पहेर्यानां छगडां फाडी ॥६॥ रांधी रसोइ करे तैयार, आवी विष्टा नाखे ते मोझार । गोळ घृत जळ दुध दइ, तेमां नांखे नरक भूत लइ।।७॥ एम आपे दुःख भूत आवी, नास्वी जमुनाने अकळावी। तेने काढवाने बहु कर्यु, तोय भूत केणे न निसर्यु ।।८।। पछी भट्ट घटे पामी त्रास, आव्यो सुता तेडी प्रश्रुपास । शिश नमावी हरिचरणे, कहे नाथ आवियो हुं शरणे।।९।। मारी सुता आ जमुनां जेह, आजथकी तमारी छे तेह । एने भविष्ये वळग्युं भूत, तेनुं तनमनमां छे तुत ॥१०॥ तेणे करी बेहाल बिचारी, माटे आवी ए शरण तमारी। धारी नियम करशे भजन, ते साम्चं तमे जोज्यो जीवन ॥११॥ त्यारे श्रीहरि बोलिया एम, देव बाह्मणने भूत केम। तारे द्विज कहे जोडी हाथ, देव ब्राह्मण पण अनाथ ॥१२॥ माटे आजथी नाथ तमारी, प्रभु गुनो जोशो मां अमारो। एम कहीने नामियुं शीश, त्यारे भूत भाग्युं नाखी चीश ॥१३॥ तेह जणाणुं सर्वे जनने, जोइ आश्रर्य मान्युं मनने । थयो परचो प्रकट प्रमाण, गयुं भृत जे करतुं हेराण ॥१४॥ देश इंडाव्ये विश्वनगर, द्विज शोभाराम त्यां नागर । तेणे राखि राक्षसनी रीत, करे सतसंगनो द्रोह नित ॥१५॥ कावे सतसंगी जे नरनार, तेने कर्या लइ नात्य बार । बळी सरकारमां करी चाडी, सतसंगिने विपत्य पाडी ॥१६॥ हरे फरे करे कांइ काम, निंदे सतसंगिने आउ जाम। एम करतां वीत्या कांइ दन, पछी बोल्यो थइने प्रसन्न ॥१७॥ बहु दिवसथी द्वेष करुंछुं, तीय साजी सुवियो फरुंछुं। पछी सत्संगिने एम कहां, खामी जुठा कां फुट्यं छे हैयं।।१८॥ जो

स्वामिजि साचा भगवान, तो हुं मागुं छुं ए वरदान । आजधकी आठ दनमांइ, थाउं आंधळो न देखुं कांइ ॥१९॥ तो साचा स्वामी ने सतसंग, जो थाउं आठ दनमां अपंग। त्यारे सत्संगी कहे विमुख, शीद मुखे मागि लेखे दुःख ॥२०॥ खामी शीद करे केने अंध, एवं मागिये न मतिमंद। त्यारे शोभाराम बोल्यो मुखे, में मार्यु ते थाय मर सुखे ।।२१।। त्यारे श्रीहरि छे करपबृक्ष, तियां चितव्यं थात्रा अचक्ष । पछी वायदो वेगळो रह्यो, दिन च्यारमां आंधळो थयो ॥२२॥ एत्री विम्रुख जीत्रनी रीत, समु चिंतवि न शके चित्त । पछी तेने जोइ बीजे जने, मान्यो प्रकट परचो मने ॥२३॥ एम परचा अपरमपार, आपे हरि हजारेहजार। ते कहेतां लखतां न आवे अंत, समिश लेज्यो सदबुद्धिवंत ॥२४॥ वळी वात कहुं एक सारी, लेज्यो हरिजन हैये धारी। कच्छदेशमां भ्रजनगर, तियां सुतार नाम सुंदर ॥२५॥ ते सत्संगमां शिरोमणि, पण राखतो प्रश्नुति घणी । मोटामोटा माणसनो मोबती, शेठ साहुकारनो सोबती ॥२६॥ तेतो सर्वे हरिथी विमुख, तेनी राखे नित्य प्रत्ये रुख। एम गइ आयुष सघळी। तीय चेति शक्यो नहि वळी।।२७॥ त्यांतो आवियो देहनो काळ, थयुं तन परवज्ञ ततकाळ । जाग्रत अवस्थामां न रहेवाय, सद्य खप्न अवस्थामां जाय ॥२८॥ ज्यारे बोले खप्तमां रही, करी उपाधि देखाडे कही। पछी आवे जाग्रतमां ज्यारे, थाय अतिशे ओरतो त्यारे ॥२९॥ पछी पस्ताप करिने बोले, कोइ मुख्य नहि मुजतोले । आवा सत्संगी ने श्रीमहाराज, तेने मुकि में कर्यु अकाज ॥३०॥ माटे शठमां हुं शिरोमणि, एम करेछे पस्ताप घणी। हवे प्रभु छे अधमउद्धार, ए पक्षे करेतो करे वार ॥३१॥

पण मुजथी कांइ न सर्यु, एम कहिने स्तवन कर्यु । त्यारे हरि छे दीनदयाळ, जाणी दीन आव्या ततकाळ ॥३२॥ दिधुं दासने दर्शनदान, निरख्या सुंदरे श्रीभगवान । निर्धि हरख पामियो अति, पछी करवा लाग्यो विनति ॥३३॥ जेवा दिठा अंतसमे नाथ, तेवा कहेवा लाग्यो जोडी हाथ। कहे नमी अनंत अपार, जैनी मूर्ति हजारेहजार ॥३४॥ वळी हजारे हजार चर्ण, नेव हजारेहजार कर्ण। शिर उरु हजारे हजार, बहु बाहु ने नाम अपार ॥३५॥ आदि अंते मध्ये अविनाश, कोटि करप गिये नहि नाश। एवं दिठं सुंदरजिए रूप, तेवं कह्यं खामिनुं खरूप ॥३६॥ वळी सत्संगी नरनार, तेपण दिठां तेजना अंबार । एवा दिठा हरि हरिजन, जोइ करेछे पस्ताप मन ॥३०॥ कहे हुं न समझ्यो लगार, आतो बात अतोल अपार । खोटा संसारी खारथमांइ, आव्यो अंत कमाइ कमाइ।।३८।। तेतो न आव्युं आ समे काम, सुत वित्त भाइ वळी माम । सर्वे वहालां ते थयां छे वैरी, एम करे शोच फेरिफेरी।।३९।। पछी कही छे सहुने वात, हवे तन थाशे मारुं पात । आव्या छे मने तेडवा नाथ, हुं जाउछुं महाराजने साथ।।४०।। कइ वारना उमा छे आवी, मुजकारणे विमान लावी। एम कहिने शिखज मागी, पछी तरत दिधुं तन त्यागी।।४१॥ तज्युं देह तेह ततकाळ, तेडिचाल्याछे पोते दयाळ। जोइ आश्चर्य पामिया जन, पछी कहेवा लाग्यां धन्यधन्य ॥४२॥ थयो परचो सहुए प्रमाण्युं, एवुं जोइने आनंद आण्युं। एवा परचा अप-रमपार, थाय आ समे लाखो हजार ॥४३॥ तेनो कहेतां आवे कैम अंत, थोडे घणुं मानो बुद्धिवंत । देशोदेश वळी गामोगाम, करे दयाळ दासनां काम ॥४४॥ जनजन प्रत्ये जुजवा जेह, थाय

परचा न लखाय तेह । सर्वे दासने सुख दिधुंछे, एवं बिरुद पहेलांथी लिधुं छे ॥४५॥ खामि रामानंदिजनी पासे, मागी लिधुंछे
पोत्ये हुलासे। कहे सतसंगी नाम कहेवाय, कोइरीत्ये ए दुःखी न
थाय ॥४६॥ एनं आवे अमने ए दुःख, एह भोगवे सदाय सुख।
ते वचन वाले सत्य कीधुं, सर्वे सत्संगिने सुख दीधुं ॥४०॥ एवो
सत्संगी कोइ न कावे, जेने तेडवा नाथ न आवे । जाणो
अवक्य टेक ए खरी, छुटे तन आवे ज्यारे हिरे ॥४८॥ एनं
आश्चर्य न माने कोय, प्रश्नु होय तियां एम होय। खयं प्रश्नु आज
सहजानंद, तेणे वरतेछे सहुने आनंद ॥४९॥ कोइ वातनी न रही
खामी, मळ्या जेने सहजानंदिखामी। कृपानिधि जे करुणाकंद,
मळ्ये मगन कहे निष्कुळानंद ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तक
श्रीसहजानंदिखामिशिष्यनिष्कुळानंदमुनिविरिचते भक्तचितामणिमध्ये
श्रीजिमहाराजे हरिजनने परचा पुर्या एनामे एकसो ने सत्तावनमुं
प्रकरणम् ॥१५०॥

पूर्वछायो— बळी पांचाळ देशमां, काज कारीयाणी गाम। अनंत लीळा त्यां करी, हरिए कर्युं निजधाम ॥१॥ तेह गाममां जे वसे, नरनारी आदि जन। भावाभावे भगवाननां, सहुने थयां दर्शन॥२॥ समझ थया सतसंगी, अणसमझ रह्या एम। पाणी नरे परमोदियां, ते कुसंग तजशे केम ॥२॥ पण दर्शन जेने दयाळनुं, ते निरफळ नव जाय। अंतसमे अवश्य आवी, श्रीहरि करेछे सहाय ॥४॥ चोपाइ— तेनी वात सांभळज्यो सहु, थयुं जेम तेम हवे कहुं। एक काठी कुसंगी अपार, नाम माणशियो निरधार॥५॥ तेतो साजो शरीरमां सुखी, लवलेश देह नहि दुःखी। सहजस्वभावे वेठोतां बार, आव्या जम लेवा तेने चार ॥६॥ अतिकाळा ने

करुर वाणी, जेने जोइ जीवे नहि प्राणी। बहु भुख्या भुंडा भयंकर, हाथे पाश पर्स हथियार ॥७॥ बेठा बे जणा लोहने गाडे, बिजा बे जणा बेठा छे पाडे। पछी गाडेपाडेथी उतरी, लिधो काठिने कवजे करी।।८।। दह मार ने मोर लै किथो, जमे एमनो एमज लिधो। मारे बहु पाडे बुमराण, तोय मेले नहि जमराण ॥९॥ कहे कुसंगी केम तुं रह्यो, तजि स्वामी अमारो शुं थयो । जो तुं पड्यो अमारेज पाने, तो तुं सुख इच्छे हवे शाने ॥१०॥ बोल्यो माणशियो तेह वारे, छे खामिजिनुं दर्शन मारे। विजं तो में कांइ नव कर्यु, कर्यु तेमांतो आवुं निसर्थु ॥११॥ हवे करे तो करे खामी बार, ते विना विजी नथी आधार। एम कहेतां आच्या अविनाश, जम मेलि भाग्या पामी त्रास ॥१२॥ पछी आव्यो माणशियो घेर, कहे नाथे उगायों आ वेर । एम करतां वीति घडी चार, आव्या नव कृतांत ते वार ॥१३॥ तेणे तरत मारिलिधो मोर, पाडे माणशियो बहु बकोर। जम कहे रखे गाम जगाडे, लइ जाइए एने उपरवाडे ॥१४॥ त्यारे बिजो कहे जाशुं भागोळे, एक कहे संत हशे आगळे। एक कहे संत नथी जो आंहि, शिद बिक राखो मनमांहि ॥१५॥ पछी लइ चाल्या गाम बार, आव्या अलबेलो तेहवार । करी रीस किंकरने कह्यं, केम पुरुखंछे मूरखो हैयुं।।१६॥ आ गाममांहि वसेछे जन, जेने छे मारुं संतदर्शन । तेने लेवा आवोछो अभागी, शिदने मोत लियोछो मार्गा ॥१८॥ जाओ आ गामनी मेली आश, एम कहे जमने अविनाश । ते माणशिये सर्वे सांभळी, उंबी वीति तेवी कहि बळी ॥१८॥ सुणि कहेवा लाग्यां जन सहु, आतो परचो थयो मोटो बहु । वळी ए गाममां एक सइ, नाम मात्रो ते सत-

संगी नइ ॥१९॥ तेना देहनो आवियो अंत, कहुं तेनुं हवे वर-तंत । तेने लेवा आव्या जम त्रण, लीघो जीव पामियो मरण ॥२०॥ ज्यारे जीव लइ जम वळ्या, त्यारे संतरूपे खामी मळ्या। कहे जमप्रत्ये जन एम, ए जीवने लिधो तमे केम ॥२१॥ कहे जम ए कुसंगी सइ, तेने जाशुं जमपुरे लइ। त्यारे संत कहे नहि लेवाय, तमे करशो जो कोटि उपाय ॥२२॥ एतो करेछे काम अमारुं, तेने तेडुं न जोइए तमारुं। त्यारे जम कहे नथी तमारो, शीद ए जीवने लेतां वारो ॥२३॥ ए जे काम तमारुं करेछे, तेतो कोइकथकी डरेछे। त्यारे संत कहे साचुं कह्यं, पण संतसेवा फळ गयुं ॥२४॥ माटे ए वातमां खोट्य मोटी, जाओ मेली थाओ शीद खोटी। पछी जम गया जख मारी, संते लिधो ए जीव उगारी।।२५॥ आव्यो देहमांहि माबो ज्यारे, वीति वात कही सर्वे त्यारे । पाम्या आश्चर्य सहु सांभळी, थयो परचो कहे जन मळी ॥२६॥ वळी ए गाममां सथवारो, नाम त्रिकम सतसंगी सारो। तेने आच्युं दुंटियुं अनाडी, पेशी तनमां ताणिछे नाडी ॥२७॥ हाथ पग रग लिधि ताणी, थयो परवश बोली बंधाणी। पछी तरत जीव तेनो काढी, चाल्युं इंटियुं तेहने पाडी ॥२८॥ त्यारे त्रिकमे कर्युं सारण, आवो नाथ हुं पामियो मरण। एवं सुणी आव्या अविनाश, संगे भक्त मांची वीरदास ॥२९॥ कहे नाथ इंटियाने एम, एह जीवने लिधो तें केम। एतो शरण छे जो अमारे, तेने लेवा न आवदुं तारे ॥३०॥ आ गाममां तारे नव गरवुं, जो तुं इच्छे मनमां उगरवुं । काट्युं दंदियुं तगडि बार, वाले करिछे जननी वार।।३१॥ मेलि गया त्रिकमने नाथ, तेडि-गया डोशी एक साथ। पछी त्रिकमे तनमां आवी, करी वात

सहुने बोलावी ॥३२॥ कहे मारे माथे वहु थइ, मने गयुंतुं इंटियुं लइ। तेने हाथथी नाथे मुकाबी, मने मेल्यो आ देहमां लावी ।।३३।। मारे साटे जाशे पुरीबाई, बात साची मानो मन-मांइ। सुणि सहु थयांछे विसमे, तज्युं तन पुरिये ते समे ॥३४॥ मळी वात लागि नहि वार, पाम्यां आश्चर्य सहु नरनार। कहे थयो परचो आ मोटो, हशे पापी ते परठशे खोटो ॥३५॥ वळी गढडे वणिक एक, तेती कुळे सहित नास्तिक। कहे कर्मवडे सर्व थाय, एवं समझि राख्युं मनमांय ॥३६॥ राम कृष्ण आदिक अव-तार, तेनोपण नहि तेने भार। एवो ढुंढिये ढाबरिपाड्यो, मोक्षमा-रम कर्मे देखाङ्यो ॥३७॥ कर्यु पापिए पापिनुं काम, टाळिनाख्युं विचारानुं ठाम। त्यांतो आवियो देहनो काळ, आव्या तेडवा जम विकराळ । ३८॥ आवी घेरि लिधो घरमांइ, मोटा मुदगर छे कर-मांइ। मारोमारो करे मुखवाण, काढो बारे कहे जमराण ॥३९॥ पछी हीमे हैयामां विचारी, जोया ढुंढिया सर्वे संभारी। पण कोइथी काज न सर्थ, तेमतेम जमे जोर कर्यु ॥४०॥ त्यारे थयो निराशि अत्यंत, पछी संभार्या खामी ने संत । करतां चितवणि चित्त-मांइ, आव्यां संत ने महाराज त्यांइ ॥४१॥ लाव्या लोहनी गेडियो हाथे, आवी मारियो जमने माथे। पाडी राड्य भाग्या जमराण, दिठा हीमे ते प्रकटप्रमाण ॥४२॥ पाम्यो आश्चर्य परचो थयो, केने न कह्यं समिझ रह्यो । थयुं सुख शरीरमां ज्यारे, करी वात विस्तारिने त्यारे ॥४३॥ कहे पाम्यो हुं परचो मोटो, आपणो मत मानज्यो खोटो । जो न करे खामी संत वार, तो हुं मरत खाइखाइ मार ॥४४॥ में दिहुं नजरे मोत मारुं, पाम्यो दुःख हुं छुंछुं संभारुं । आपणामां कांइ न उघड्युं, खरा खोटातुं

पारख्युं पड्युं ॥४५॥ हवे ज्यांलिंग रहेशे आ तन, करीश महा-राजनुं भजन। एम पर्चानो नहि आवे पार, थाय हमेश हजारो हजार ।।४६।। केतांकेतां कियां लगि कहीए, अपरमनो पार न लहीए। आगे परचा कविए कह्या, तेतो ठीक एटलाज थया ॥४७॥ पण आजनो अंत न आवे, मर कोटी कवि मळी गावे। में कह्यं विचारि मनमांइ, नथी करतो हुं वात वडाइ ॥४८॥ जेम छे तेम कह्युं मे जन, सत्य मानज्यो मारुं वचन। हशे सत्यवादी संत जेह, सत्य मानशे मनमां तेह ॥४९॥ हशे दुष्ट दंभी ने नास्तिक, कहेरो खोटी खांच्यो खोळी छेक। तेतो भोगवशे फळ तेनुं, नथी निष्कुलानंदने एनुं ॥५०॥ इति श्रीमदेकांतिक-धर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तर्चि-तामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे परचा पुर्या एनामे एकसो ने अठ्ठावनमुं प्रकरणम् ।।१५८।।

पूर्वछायो-धन्यधन्य जन ए सर्वने, जैने मळ्या श्रीमहा-राज । देह छतां दुःखिया नहि, तन छुट्ये नोय अकाज ॥१॥ जाण्ये अजाण्ये जोडिया, जेणे हरि आगळ हाथ । माहातम्य तेनुं हुं शुं कहुं, ते न होय केदि अनाथ ॥२॥ दरश स्परश पूजा करी, धारी नियम जे नरनार । वासी ते खर्ग वैकुंठना, श्वेतद्वीप गोलोक रहेनार ॥३॥ धर्मनियममां दृढ घणा, एकांतिक जन जेह। तेनी प्राप्ति वर्णवी, कहुं सांभळज्यो सह तेह ॥४॥ चोपाइ-एवा सत्तसंगी नरनारीरे, अतिदृढ धर्मनिम धारीरे । तेने अवश अत्ये महाराजरे, पोत्ये आवेछे तेडवा काजरे ॥५॥ तन ताजि ते मृर्तिने संगेरे, जाय जन थह शुद्ध अंगेरे । श्रीगोलोक गुणातीत जेहरे, मायातमपार धाम तेहरे ॥६॥ अचळ अनादि दिन्य कहे-

वायरे, श्रीराधाकुष्ण रहे तेहमांयरे । अति अनुपम धाम एहरे, पामे उद्धवाश्रित जन जेहरे ॥७॥ ए धामथी पाछुं न अवायरे, आवे ते श्रीकृष्णनी इच्छायरे । जियां विरजा नदी खाइरूपरे, जेना बेउ कांठा छे अनुपरे ॥८॥ तेमां मणितणी खाणो घणिरे, पद्मराग स्फाटिक नीलमणिरे। मणिमय पगथियां शोभेरे, तियां तरु वेल्ये मन लोभेरे ॥९॥ बहु घाट बांध्या छे सुवर्णेरे, झर्गे नंग जुवे जाणु नेणेरे। तियां गोप गोपी करे स्नानरे, हदे राधाकुष्णनुं छे घ्यानरे ।।१०।। कनक कळशे भरे कइ नीररे, तेनी भिड्य बहु विरजा तीररे। गउधण पिवा आवे वारिरे, तेणेपण भिड्य रहे भारिरे ॥११॥ वळी तीरे श्रीकृष्णने काजेरे, रमणस्थानक दिव्य समाजेरे। विरजापार शतशृंग गिरिरे, रह्यो गोलोकने कोट करिरे ॥१२॥ उंची कोटि जोजन ते कहीएरे, तेथी दशगणी पोळो लहीएरे। पारिजातकादि तरु बहुरे, घणा गोवाळ ज्यां घणी गउरे ।।१३।। रासमंडळ ए गिरिपररे, रमे श्रीकृष्ण ज्यां रंग-भररे। रासमंडळ दश जोजनमांरे, चारे द्वार आपे मुद मनमांरे ॥१४॥ रासमध्ये गाय गोपी गीतरे, अतिमनोहर चोरे चित्तरे। तियां सर कूप वाव्य भरीरे, शोभे मणिमय पगथिये करीरे ॥१५॥ गिरिझरे करे भृंग गानरे, जाण्युं गुणि गाय त्रोडे तानरे। फुलवाडी उपवन साररे, रासमंडप पासे अपाररे ॥१६॥ रास-मंडळे मंडप घणारे, रच्या पंचरंग मणितणारे। तेपर कळश कनकना शोभेरे, ध्वजा पताका जोइ जन लोभेरे ॥१७॥ बांध्यां तोरण आशो आंम्रनारे, कर्यो खग ने मृग चित्रनारे। तियां केळना स्तंभ कस्तुरीरे, चर्चा अगरचंदन रह्यां स्फुरीरे ॥१८॥ मर्या कुंभ अक्षत अंकुररे, कुंकुम दुर्वादिये मुद उररे। एवां रमवा

भुवन घणारे, श्रीकृष्ण ने गोपीयो तणारे ॥१९॥ वसन भृषण पहेर्या गोपी गोपेरे, नव जोबने रासमां ओपेरे। पुष्पशय्याओ कुंज कोटिरे, गिरि विंख्यो विरजाने नीरेरे ॥२०॥ गिरिमांहि श्रीवृंदावनरे, राधाकृष्णने वालुं जे मनरे । बहुभात्यनां वृक्ष छे तियारे, तेने शुं कहुं वर्णवि इयारे ॥२१॥ फुल वेली तियां बहु फुलिरे, स्थळकमळे रह्या भृंग इतिरे। तियां मृगगण छे अपा-ररे, कोइ केने न आपे अजाररे ॥२२॥ रत्न धूप दीप गेहगेहरे, तेणे शोभे बृंदावन तेहरे। बाव्य कुवा तलाव त्यां बहुरे, शोभे कमळ पोयणे सहुरे ॥२३॥ तियां अतिसुगंधि समाजेरे, एह वृंदा-वन अतिराजेरे । तियां मिठि वाण्ये पंखि बोलेरे, कृष्णस्तुति करे मुनितोलेरे ॥२४॥ गाय गोपीयो गोप बंदावनेरे, ए वन वालु छे कृष्णने मनेरे। वत्स वृषभ गउ दोहनरे, वंशी गाने शोभे बृंदावनरे ॥२५॥ तेह मध्ये छे बिजां बित्रशरे, वन फळ फुले शोभे हमेशरे। एवं वृंदावन जे अशोकरे, तेह मध्ये छे श्रीगोलोकरे ॥२६॥ कोटि जोजन विस्तार मोटेरे, रत्न जिंदत कनक कोटरे। तेने चारे दिशे चार द्वाररे, बज्जकपाटे शोभे अपाररे ॥२७॥ तियां गोपी गोषनां घर घणांरे, शोभे गोलोकमां नहि मणारे। रज्ञां छत कनक भवनरे, रथ विमान बहु वाहनरे ।।२८॥ ध्वजा पताका कळश कंचनरे, शोभे एकथी एक भवनरे। मइ मथे कृष्णगुण गाइरे, रवे रह्युंछे गोलोक छाइरे ॥२९॥ चारे द्वारे चार मारगरे, तियां थाय बहु रागरंगरे । बांध्या मगनंग पंच रंगनेरे, हारे हवेलियो अडि गगनेरे ॥३०॥ रते जड्या जरुखा ने ओटारे, अगर चंदने छांट्या मग मोटारे। रंभास्तंम मंगळिक साजेरे, तेणे राजमार्ग अतिराजेरे ॥३१॥ गोप गोपी लइ पूजा समा-

जरे, जाय कृष्ण पूजवाने काजरे। आवे जाय गाय बहु गीतरे, तेणे करी मारग छे शोभितरे ॥३२॥ वळी अनंत भुवनपति जेहरे, हरि हर अज धर्म तेहरे। रमा उमा सावित्री मुरतिरे, जाय दरशने पत्नी पतिरे ॥३३॥ सुर मुनि सिद्ध गोप गोपीरे, तेनी भिड्ये रह्यो मग ओपीरे । गोपी राधा रमा सम नेमेरे, सेवे श्रीकृष्णखामिने प्रेमेरे ॥३४॥ एवा गोलोकमध्ये सुंदररे, शोमे राधाकुष्णनुं मंदिररे। तेने फरता कनक कोट सोळरे, शोभे सुंदर खाइ अतोलरे ।।३५॥ राजगढ जोजन त्रण्य घोलेरे, खाइ छाइ कल्पतरु बोलेरे। शोळे कोट रतन कांगरेरे, कनक कळशे शोभाने धरेरे ॥३६॥ सोळे पोळ्यने उलंघि दासरे, जाय द्र्यने श्रीकृष्णपासरे । तियां चोक शोभा सइ भणियरे, बांध्या पंचरं-गनि मणियेरे । ३७॥ तेजपुंज ते मध्ये अंगररे, कोटि सूर्यश्रिन थी अपाररे। तेनुं अक्षरब्रह्म छे नामरे, गुणातीत अचळ हरि धामरे ॥३८॥ जक्तकारण जोर जे विशाळरे, बहु प्रधान पुरुष काळरे । एने आश्रय रूप ए अनुपरे, सत चिद आनंद खरूपरे ॥३९॥ तेहमध्ये श्रीकृष्णनुं धामरे, रच्युं रत्नमणि अभिरामरे। मणिस्तंभ घणी फुलमाळरे, तेणे शोभेछे धाम विशाळरे ॥४०॥ मणिमाळ मोतिमाळे करीरे, मणि घणिये रह्यं शोभा धरीरे। श्वेत चमर भुक्र कळश कहरे, सारां तोरण रह्यां शोभा दहरे ॥४१॥ शतशंगथी उंचुं छे एहरे, प्रकाशक कृष्णधाम तेहरे । अगर चंदने चर्च्यु ए धामरे, धूप दीप द्रव्ये अभिरामरे ॥४२॥ घणे समाजे शोभे सदनरे, कहेतां पार नावे कीय दनरे। तेने आस-पास हरिदासरे, करि रह्या एकांतिक वासरे ॥४३॥ सर्वे सेवा श्रीकृष्णनी करेरे, अतिआनंदे खर्छद फरेरे। कृष्ण गुण वार्जित्रमां

गायरे, तेनो शब्द छायो धाम मांयरे ॥४४॥ एवा धाममांहि सिंहासनरे, रच्युं रत कळशे रमणरे । रंगे चित्र विचित्र ते ओपेरे, कर्या पशु पंखि गोपी गोपेरे ।।४५॥ एवं अतिसुंदर सिंहास-नरे, तेपर बेठा कृष्ण भगवनरे । घनश्याम ने वय किशोररे, पीत पट बे कर वंशी सोररे ॥४६॥ मंदहास ने माथे मुगटरे, निर्खि जन मगन अमटरे। मृगमद चंदन अगररे, चर्चि तन वैजयंती पेरि उररे ॥४७॥ कौस्तुभ मणि माळ कांतिवाळीरे, शोभे श्रीकृष्ण कंठे शोभाळीरे। मकराकर कुंडळ काने शोभेरे, नंग जड्यां कडां कर उभेरे ।।४८॥ कर आंगळि मुद्रिका मणिरे, कटि किंकिंणि नुपूर शोभा घणिरे। चरण अरुण नख रक्त शामरे, रक्त कमळ तळ शोभाधामरे ॥४९॥ तियां सोळे चिन्ह सुखकारिरे, सेवे मुनि सिद्ध व्रतधारिरे । अष्टकोण जब जंबु जेहरे, खस्ति ध्वज ने कुळिश तेहरे ॥५०॥ अंकुश अंवुज ऊर्ध्वरेखरे, शोभे जमणे पगे विशेखरे। मत्स्य त्रिकोण कळश व्योमरे, धेनुपद धनुप ने सीमरे ॥५१॥ वामचरणे ए चिंतवे दासरे, काम क्रोध मोह पामे नाशरे। एवां कृष्णचरणारविंद जोइरे, मुनिमधुप रह्या तियां मोइरे ॥५२॥ राधाआदि देवी प्रेमे करीरे, चर्चि चंदन लिये उर धरिरे । गुलफ जंघा जानु जुग जोइरे, बाहु अजान रहे मन-मोइरे ॥५३॥ नाभि कटि उदर अनुपरे, तियां त्रिवळि शोभे सुखरूपरे। जमणे उरे श्रीवत्स चिन्हरे, निर्धि हरखे जन पावनरे ॥५४॥ हार मुगट पुष्पना शोभेरे, ओइ जनतणा मन लोभेरे । अरुण कमळसम कर दोयरे, वंशिसहित शोभेळ सोयरे । ५५॥ पूर्ण शशिसम मुख सारुरे, शोभे कंठ कंबु अनुसारुरे। तियां तुलसीमाळ विशाळरे, शोभे चिबुक अधर प्रवाळरे ॥५६॥ मंद-

हासे बोले मिठां वेणरे, दंत दाड्यमकळि सुखदेणरे। नासा दीप कपोळे कांतिरे, काने कुंडळ शोभा सुहातिरे ॥५७॥ तियां पुष्पगुच्छ वे धरियांरे, चंचळ लोचन हेतनां भरियांरे। राति रेखे नयण रसाळरे, शोभे अकुटी भाल विशाळरे ॥५८॥ केशर तिलक तियां विशेखरे, इसतां भाल वच्ये उठे रेखरे। सुंदर केश शिशे मुगटरे, जड्यो मणिरतने शुं घटरे ॥५९॥ नखशिखा शोभा न कहेवायरे, श्रुति पुराण निख जेने गायरे। एवा श्रीकृष्ण शोभानी खाणिरे, जीव आसुरि न शके जाणिरे ॥६०॥ घनक्याम ने तन प्रकाशरे, तेनो मर्म जाणे कोइ दासरे। सामुद्रिके कह्यां ग्रुभ चिन्हरे, तेणे जुक्त श्रीकृष्ण सुखयनरे।।६१॥ तेने निराकार कहे कुमतिरे, होये आसुरि जीव जे अतिरे। समझे साकार संत ते सदारे, पामे पास वास अतिष्ठदारे ॥६२॥ कहीए श्रीकृष्ण पुरुषोत्तमरे, वासुदेव विष्णु परब्रह्मरे । हरि नारा-यण अंतर्यामीरे, भगवान प्रभु बहुनामीरे ॥६३॥ तत्त्वज्ञानादि नाम कहेवायरे, श्रुति पुराण सद्यंय गायरे। उपनिषद इतिहासे करीरे, कृष्णमहिमा कहे फरिफरीरे ॥६४॥ गुण प्राक्रमे करी बहु नामरे, जपवा जोग सर्वे सुखधामरे। राधा रमा रहे दोय पासेरे। जुवे श्रीकृष्ण हेते कटाक्षेरे।।६५॥ बिजि ललितादि साली जेहरे, राधा रमासम बळि तेहरे। सारी शीले शुभ गुणधामरे, सुणो सहु कहुं तेनां नामरे।।६६॥ जया ललिता ने शशिकलारे, माधवी जमुना ने सुशिलारे। रति कांति ने चंद्रमुखीरे, कदंब. मालिका ख्यंत्रभा सुखीरे ॥६७॥ पद्माप्तुखी सुखा शुभा जेहरे, मधुमती सरस्वती तेहरे। पद्मा गंगा ने सर्वमंगठारे, सुमुखी भारती ने कमळारे ॥६८॥ पारिजाता कृष्णित्रया नंदारे, नाम

नंदिनी सुंदरी सुखदारे । एहआदि सुंदरी अपाररे, सेवे श्रीकृष्णने करी प्याररे ॥६९॥ मृगमद चंदन ने फुलरे, भूषण वसन लावी अमूल्यरे। वळी षट रस सुभोजनरे, लेख चौश्य मध्य मोज्य अन्नरे ॥७०॥ कनकथाळे ए मोजन भरीरे, प्रेमे जमाडे प्रमदा हरिरे । मेवा मिठाइ अमृतफळरे, रत्नजिंडत झारीये जळरे ।।७१॥ पाय पाणि पानविडी आपेरे, करी आरति स्तुति आलापेरे। एम पूजा करिने पियारिरे, राजि करे श्रीकृष्ण मुरारिरे ॥७२॥ वळी प्रभुना पारषद जेहरे, मुख्य मोटा नाम सुणो तेहरे। वीरभानु चंद्रभानु कहीएरे, ध्रथभानु वसु-भानु लहीएरे ॥७३॥ देवभानु शक्तभानु जेहरे, रत्नभानु सुपार्श्व छे तेहरे। विशाळ रुपम अंशुबळरे, देवप्रस्थ वरुथ सुबळरे ॥७४॥ श्रीदामा आदिक एह सोळरे, तेने केड्ये बिजा छे अतो-लरे। सर्वे करे श्रीकृष्णनी सेवारे, रूप गुणे एक एक जेवारे ॥७५॥ छत्तर चमर सेवाना साजरे, तेणे सेवे राजाअधिराजरे। थाय ताने गान तियां घणारे, सर्वे दर्शन करे कृष्णतणारे॥७६॥ देखि दासनी सेवा दयाळरे, रिझे कुराना निधि कृपाळरे । पर-मात्मा परब्रह्म जेहरे, निगम नेतिनेति कहे तेहरे ॥७७॥ काल कर्म गुण सिद्ध जाणीरे, तेना प्रेरक कृष्ण प्रमाणीरे । संकर्षण ने प्रद्युमन कहीएरे, अनिरुद्धरूपे कृष्ण लहीएरे ॥७८॥ अनंत कोटि ब्रह्मांडना नाथरे, उत्पत्ति स्थिति प्रलय हाथरे। वळी सर्वे ब्रह्मांडे महाराजरे, रहे जीवना कल्याण काजरे ॥७९॥ नरना-रायणादि अनंतरे, दिव्यरूपे रहे भगवंतरे। तेने आश्रित होय जे जनरे, पामे गोलोक ते सहु जनरे ॥८०॥ दिव्यरूपे रहे प्रभुपासरे, सदा सुख भोगवे ए दासरे। बिजा बहु वैष्णव त्यां बंदरे, तेने संगे करे ए आनंदरे ॥८१॥ पामे मोटप्य कही न आवेरे, जेणे प्रश्च भज्या आंहि मावेरे। हिर धरी पोते अव-ताररे, एह धामनुं उघाड्युं बाररे ॥८२॥ जे कोइ सत्संगी नरनारीरे, कर्यां ए धामनां अधिकारीरे। नथी वात सरिव ए वातरे, जाणे संत मोटा साक्षातरे ॥८३॥ जेने मळ्या खामी सुखराशिरे, तेतो सर्वे ए धामनां वासिरे। कहे कि सुणो शुभ-मितरे, कि सतसंगिनी प्रापितरे ॥८४॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्म-प्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्ताचिता-पणिमध्ये गोलोकधामनुं वर्णन कर्यु एनामे एकसो ने ओगणसाष्ट्यमुं प्रकरणम् ॥१५९॥

पूर्वछायो-अधिकारी एह धामनां, हरि कर्यां बहु नर-नार । करी अलैकिक एटखं, पछी मनमां कर्यो विचार ॥१॥ जेह कारण हुं आवियो, ते थयुं सरवे काज । केड्ये करवा नव रह्यं, एम मने विचार्यं महाराज ॥२॥ जीव जाणे सहु जक्तमां, एम श्रीढ वध्यो प्रताप । सूर्यसम शोभि रह्यो, सत्संग सुंदर आप ॥३॥ वर्णाश्रम हरि आशरे, जे आवियां नरनार। तेने भुल्येपण भासे नहि, जे जाशुं जमने द्वार ॥४॥ चोपाइ-एवो प्रताप प्रश्वजितणोरे, छायो देश प्रदेशमां घणोरे । गामोगाम शहेर पुरे सोयरे, सहजानंद सम नहि कोयरे ॥५॥ च्यारे कोर्ये शाहेरने मांइरे, रह्यो प्रताप पूरण छाइरे। त्यारे एम विचार्युं महाराजरे, कर्युं सरवे पूरण काजरे ॥६॥ जेह अर्थे छे आ अव-ताररे, घरी कर्यु ते सर्वे आ वाररे। एम विचार्यु महाराजे मनरे, कर्युं शुंशुं ते कहुं छुं जनरे।।७॥ कलिगळने पामी अधर्मीरे, थया अपुरगुरु आश्रमीरे । विजा भूपरूप जे रह्यातारे, करता पाप

आप न वियातारे ॥८॥ तेती प्रभु पोताने प्रतापेरे, पापी पाछां पड्यां आप पापेरे । बळी काम क्रोध लोभ मोहरे, मान ईरषा स्वाद समोहरे ॥९॥ एहादि अधर्म परिवाररे, हतो जीवोना हृदय मोझाररे। तेतो निजप्रतापने बळेरे, काढ्यो सतशास्त्र करी कळेरे ।।१०।। सत्य ज्ञान वैराग्य अहिंस्यरे, ब्रह्मचर्य आदि धर्म-वंश्यरे । तेतो जीवोना हृदय मांइरे, स्थाप्यो अचळ पर्वतप्राइरे ।।११।। शुद्ध स्वधर्म ज्ञान वैराग्यरे, सहित एकांतिक भक्ति जागरे। ग्रामग्राम पुरपुर प्रतिरे, जनमांहि प्रवर्तावी अतिरे ॥१२॥ चळी दुर्वासा ऋषिने शापेरे, थयांतां मनुष्य मक्ति धर्म आपेरे। बिजा उद्धवादि ऋषिरायरे, सर्वे आच्या हुता शापमांयरे ॥१३॥ तेने मुकाविने महाराजरे, विजांपण कर्यां कइ काजरे । योगक-ळाओ ध्यान धारणारे, तेणे जुक्त कर्यां जन घणारे ॥१४॥ वळी उपनिषदने मांइरे, कही दहरविद्या सुखदाइरे । एहआदि ब्रह्म-विद्या जेहरे, पोते प्रवरतावि छे तेहरे ॥१५॥ वळी अहिंसामय जगनरे, ते प्रवरताच्या छे भगवनरे । देव ब्राह्मण तीरथ संतरे, तेनो महिमा वधार्यो अत्यंतरे ॥१६॥ वळी श्रीमद्भागवत आदिरे, बिजां सतशास्त्र जे अनादिरे। तेनुं करावियुं प्रवर्तनरे, कर्युं सान्विक देवनुं स्थापनरे ॥१७॥ कौलार्णवादि मिथ्या जे ग्रंथरे, कह्या नथी ए मोक्षने अर्थरे। राजस तामस देव उपासनारे, दुःखदायक छे सुख विनारे ॥१८॥ वळी नास्तिक ने कौल मतरे, एहआदि मनाव्यां असत्यरे । शुद्ध धर्म जेह सनातनरे, कर्युं तेनुं अतिशे स्थापनरे ॥१९॥ वळी निज आश्रितने काजेरे, कर्यु हेत बहु महाराजेरे । देशदेशमां मंदिर कराविरे, तेमां निजमूर्तियो यधराविरे ॥२०॥ भक्तिमार्ग प्रवर्तावा काजरे, कर्यो धर्मवंशि ४९ भ०चि०

आचारजरे । दीक्षाविधि रीत्य बांधि दिधिरे, वर्त्या सारु शिक्षा-पत्री किधिरे ॥२१॥ तेतो सतशास्त्रनुं छे साररे, ते प्रवर्तावी जन मोझाररे। वळी निजआश्रित ब्रह्मचारीरे, साधु गृही त्यागी नरनारीरे ॥२२॥ तेना धर्म ते जुजवि रीत्येरे, आपे कह्या ते पाळेछे प्रीत्येरे । जन्माष्टमी आदि व्रत सहरे, अन्नकूटादि उत्स-वविधि कइरे ॥२३॥ किह अष्टांग योगनी रीत्यरे, ते पण प्रव-र्तावी जनहितरे। वळी सहुनां कल्याण काजेरे, रुडो ग्रंथ कराच्यो महाराजेरे ॥२४॥ तेमां चरित्र छे पोतातणारे, कहेतां सुणतां रहेतां सुख घणांरे । जाण्युं हवे सर्वे काम थयुंरे, कांइ करवा के ड्ये न रह्युरे ।।२५।। पछी एम विचार्यु घनक्यामेरे, हवे जाउं हुं मारे धामेरे। पण मुज आश्रित जे जनरे, मारे वियोगे नहि राखे तनरे ॥२६॥ माटे वात करुं एने आगेरे, राखे थीरज तन न त्यागेरे । पछी निज आश्रित तेडाच्यारे, सर्वे बाई भाइ मिळ आव्यारे ॥२७॥ रामप्रताप इच्छाराम धीररे, अवध्य-प्रसाद ने रघुवीररे । मुक्तानंद ने गोपाळानंदरे, नित्यानंदित ने ब्रह्मानंदरे ।।२८॥ ग्रुकग्रुनि ने आनंदस्वामीरे, एहआदि मोटा निष्कामीरे । मुक्कंदानंद अखंडानंदरे, एह आदि ब्रह्मचारि बृंदरे ॥२९॥ उत्तम सोम सुरा सुजाणरे, रत्न मियादि पाळा प्रमाणरे। जीवुवा लाडुवा राजबाहरे, एहआदि बाइयो तथा भाइरे ।।३०॥ तमे सांभळज्यो सर्वे जनरे, जेह अर्थे घार्युतुं में तनरे। ते कर्युं में सर्वे कारजरे, करवा केड्ये राख्युं नथी रजरे ॥३१॥ हवे जाइश हुं धाम मारेरे, माटे शीख आपवी तमारेरे। राजि रहेवुं रोवुं निहि वांसेरे, केड्ये करवी निह कंकासरे ॥३२॥ एवं वज्रजेवं ए वचनरे, सुषि व्याक्कळ थया सहु जनरे। पामी मूरछा पडियां

भोमरे, तननी न रही केने फोमरे ।।३३।। कोइनां तणाणां प्राण ने नाडीरे, कोइ रुवेछे राड्युं पाडिरे। केनी आंखमां पड्यां रुधिररे, चाल्यां सहुने नयणे नीररे ॥३४॥ करे विलाप कल्पांत कइरे, कहे अमने चालो भेळां लइरे। कहे तम विना केम रहेवायरे, पळ घडी दिन केम जायरे ॥३५॥ हायहाय मानखो हरामरे, तम विना रहीए आणे ठामरे। अन्न वस्न जळ झेर थायरे, तम विना अमे न रहेवायरे ॥३६॥ तमे जाओ ने रहीए अनाथरे, एवं करशो मां मारा नाथरे। आप्युं आटला दिवस सुखरे, हवे देखाङ्यो मां एचुं दुःखरे ॥३७॥ एवां पाप अमारां छे शियांरे, तमे जाओं ने रहीए अमे इयांरे। आव्यो होय एवो थर भारेरे, भोगवावज्यो बिजे प्रकारेरे ॥३८॥ पण एवां दुःखने जोइरे, जन तमारा न जीवे कोइरे । एम कहे रहे नहि छानारे, रुवे षृद्ध जोबन ने नानारे ॥३९॥ करे विलाप बलबले बळिरे, थाय उभां ने पडेछे ढिळरे। तेह दासने देखि दयाळरे, पोत्ये विचारियुं तेह काळरे ॥४०॥ आ सहुने ग्रुजमां छे स्नेहरे, मुज विना नहि राखे देहरे। सत्य मारग कल्याण काजरे, तेनी प्रवृतिसारु आजरे ॥४१॥ एने राखि जाबुंछे जो आंहिरे, एम निश्रय कर्यु मनमांहिरे। पछी एम बोल्या अविनाशरे, तमे शिदने रुवोछो दासरे ॥४२॥ पछी निज आश्रित नारी नर जेरे, तेने पोताना योग ऐश्वर्जेरे। आपी धीरजशक्ति जे कहीएरे, थयां वज्र-जेवां सहु हैयेरे ॥४३॥ जाणुं धीरज द्रढता आविरे, त्यारे महा-राजे कह्यं बोलाविरे। हुं रहिश्च वरताल त्यांइरे, भक्ति धर्म श्रीकृष्ण मांहिरे ॥४४॥ वळी अमदावादमां वासेरे, रहीश नर-नारायण पासेरे। गोपीनाथ गढडामां आंहिरे, हुं सदा रहिश ते

मांहिरे।।४५।। बिजा मंदिर मूर्ति मारेरे, तेमां रहीश हुं सर्व प्रका-रेरे। तेह मूर्ति ने मुजमांइरे, तमे मेद जाणशो मां कांइरे ॥४६॥ एम जाणिने सेवा करज्योरे, पूजा करिने थाळ धरज्योरे। वळी धर्मवंशि द्विज धीररे, अवधप्रसाद ने रघुवीररे ॥४७॥ एह दत्त-पुत्र छे अमारारे, तेने कर्याछे गुरु तमारारे । तेने मानज्यो तमे सुजागरे, रहेज्यो शिक्षापत्रीने प्रमाणरे ॥४८॥ साधु वर्णी पाळा सुणि लेज्योरे, गोपाळखामिनी आज्ञामां रहेज्योरे। अम केड्ये मरशो मां तमेरे, अन्न मुकशो मां कहुं अमेरे ॥४९॥ आत्मघात न करशो जनरे, एह मानज्यो मारुं वचनरे। मारा वचननी करशो उत्थापरे, मारे तमारे तो नहि मेळापरे ॥५०॥ एम कहि वचन विषमरे, दीधा पोताना चरणना समरे। ज्यारे मनाव्युं एवं वचनरे, तेह सुणिने बोलिया जनरे ॥५१॥ हेमहाराज रहेशुं आहि अमेरे, एवं मनाव्युं वचन तमेरे। पण तमारा चरणमां मनरे, राखज्यो अमारुं निशदनरे ॥५२॥ अपराध अमारा म जोज्योरे, अंतकाळेतो वेला आवज्योरे। वळी ज्यारे संभारिए हरिरे, त्यारे दर्शन देज्यो दया करिरे ॥५३॥ वळी तमारी भक्तिने मांयरे, कोइ प्रकारे विम न थायरे। बाहेर अंतरशत्रु छे घणारे, सह द्वेषी भक्ति धर्मतणारे ॥५४॥ तेथी उगारज्यो कुपानिधिरे, एम सहुए प्रार्थना किथिरे। कहे नाथ तथास्तु ते थाशेरे, जेह माग्युं तमे मुजपासेरे ॥५५॥ पछी कह्युं जाओ तमे जनरे, त्यारे चाल्यां सहु मानी वचनरे। सहु रोतांरोतां पाछां गयांरे, चाले नहि चर्ण चुर्ण थयारे । ५६॥ प्राण मुकिगयां प्रभु पासरे, थयां अंतरे अति उदासरे । एम पाछा वळीया ए जनरे, अति अति-करतां रुदनरे ॥५७॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्था-

मिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीजिमहाराजे पोताना आश्रित आगळ पोताने खधाम पधारवुं ते वात करी ने ते सहुने धीरज्य आपी एनामे एकसो ने साठ्यमुं प्रकरणम् ॥१६०॥

पूर्वछायो-ग्रुभमति सहु सांभळो, कहुं त्यार पछिनी बात । पृथवीना तळ उपरे, थावा लाग्या मोटा उतपात ॥१॥ चाल्या प्रचंड पवन अति, गति घोर कठोर घणी थइ । झाड पाड बहु पाडियां, कोट मंदिर घर कोठा कइ ॥२॥ अति अचानक अगनि, वळी बुठि वेगे व्योममां। वन भुवन कैक गाम पुर, बहुबहु बाळ्यां भोममां ॥३॥ पड्या पथर पृथवी उपरे, अति घणा आकाशथी। नारी नर डर पामियां, कहे नहि उगरिये नाशथी ॥४॥ चोपाई-थाय कठण कडाका व्योमरे, पडे तिखि तिडितो ते भोमरे । श्रुटां तामस देवनां धामरे, हतां देरां डुंगर ने गामरे ॥५॥ एवी थयोछे उलकापातरे, शुं कहिए ए समानी वातरे। बुठां नीर रुधिरनी धारेरे, जोइ भय पाम्यां सहु तारेरे॥६॥ गयां साधुनां मन डोळाइरे, थयो उद्वेग ते उरमांहरे। उष्ण ऋतुना सूर्यनी कांतिरे, थइ निस्तेज पामि अशांतिरे ॥७॥ हरिभक्त पुरुषनां अंगरे, फरक्यां डाबां तेपण कुढंगरे । विक्र बाई जेने सतसंगरे, तेनां फरक्यां जमणां अंगरे ॥८॥ विक स्वपनां लाधांछे जेहरे, अति अपशुकन मान्यां तेहरे। जाणुं धर्म भक्तिनी मूरतिरे, शोके रुदन करेछे अतिरे ॥९॥ राधाकृष्णनी प्रतिमा सोयरे, द्रग विना देखाणि छे दोयरे। वळी श्वेतपटे ढांकि मुखरे, अतिशोकमां पाम्यां छे दुःखरे।।१०॥ जाण्युं शशि स्राज ने उड़रे, पड्या भूमिये तेपण भुंडंरे। एवा उतपात जोइ अपाररे, सर्वे करवा लाग्यां विचाररे ॥११॥ जाणुं प्रभुजि

पृथवीमांथिरे, थाशे अंतर्धान हवे यांथिरे। पछी नाथे नित्यकर्म की धुंरे, गउ आदिक दान बहु दी धुंरे ॥१२॥ पछी गोमये लिपि भूमि सारीरे, करी कुश तिलनी पथारीरे। नाया उष्ण जळे प्रश्च तियांरे, पहेर्यां धोयेल घोळां घोतियांरे ॥१३॥ करी तिलक भाल चंदनेरे, बेठा पोत्ये ते सिद्धआसनेरे। राखी स्थिर दृष्टि अनिमेषरे, निज आत्मामांहि अशेषरे ॥१४॥ धर्युं पोत्ये पोतानुं ध्यानरे, मेल्युं विसारि निजतन भानरे। पासे गोपाळानंदादि बहुरे, नित्यानंद ने शुकग्रुनि सहुरे ॥१५॥ दिठां आकाश मंगे ते वाररे, कोटांनकोटि विमान अपाररे। बहु पार्षद पोतातणारे, आव्या नाथने तेडवा घणारे ॥१६॥ लाव्या दिव्य चंदन दिव्य फुलरे, बिजि दिव्य पूजाओं अमूल्यरे। तेणे प्रीत्ये पूज्या भगवानरे, पछी तेडि बेसार्या विमानरे ॥१७॥ पोत्ये पोताना पार्षद साथरे, निजधाममां पधार्या नाथरे । नभ मारगे अमर आविरे, करी स्तुति वार्जित्र वजाविरे ।।१८।। लाव्या चंदन पुष्पना हाररे, तेणे पूजिया प्राण आधाररे। वळी छांट्यां चंदन बहु तनेरे, करी उपर वृष्टि सुमनेरे ॥१९॥ तेह पुष्प चंदन वरसातरे, दिठा भूमिये सहुए साक्षातरे। एम पधारिया निजधामरे, करी अनेक जीवनां कामरे ॥२०॥ संवत् अढार छाशि अघनरे, ज्येष्ठ छुदि दशमीनो दनरे। मंगळवारे मध्याह्वे महाराजरे, चाल्या करी अनेकनां काजरे ॥२१॥ मोरे आव्यांतां दुःख महा अरिरे, राख्युं तन तेमांथी दया करिरे। संवत् अहार एकसठ्यो जाणोरे, पोषश्चदि पुन्यम प्रमाणोरे ॥२२॥ तेदि अगत्राइमांहि अंगेरे, आर्च्युतुं दुःखं अश्वप्रसंगेरे। तेमांथी मोरे राखियुं तनरे, तेपण दया आणि जीवनरे ॥२३॥ त्यार पछी संवत अढारेरे,

शित्तेरे आशु पुन्यम त्यारेरे। गाम जाळिये मंदवाड मांथीरे, राख्युं तन पोतानी दयाथीरे ॥२४॥ संवत् अढारना सत्योतेरेरे, वैशाक शुक्त बारश ते वेरेरे। राख्युं दुःखमांथी गढडे देहरे, तेपण हरिजनने सनेहरे ॥२५॥ वळि संवत् अढार अठ्योतेरेरे, फागण शुक्कदि अष्टमी केरेरे । तेदि गणेश घोळके गोपाळेरे, राख्युं दुःखमांथी देह दयाळेरे ॥२६॥ वळि संवत् अढार ओग-णाशिरे, चैत्र शुदि नोम्य दुःखराशिरे। तेदि पंचाळे पोत्ये महाराजरे, राख्युं देह ते हरिजन काजरे ॥२७॥ पछी संवत् अढार छाशिनारे, पोषशुदि ते बिज ते दिनारे। थया मांदा पोत्ये महाराजरे, निजधामे पधारवा काजरे ॥२८॥ ज्येठ शुदि दश-मीने दनरे, चाल्या दया उतारी जीवनरे । रहेवा धार्युतं जेटलं नाथेरे, रह्या एटला दि भूमि माथेरे ॥२९॥ एक उणे वरष पंचासरे, एक दिवस ने दोय मासरे। राख्युं एटला दिवस तनरे, जनहेते ते पोत्ये जीवनरे ॥३०॥ पछी पासे हतां जन जेहरे, नाम-सारण करेछे तेहरे। थयुं सारणमांहि रुदनरे, सुणि आवियां सर्वे जनरे ॥३१॥ जोइ नाथने करे विलापरे, पाम्यां अंतरे अति उतापरे। एह समे पाम्या जन दुःखरे, तेतो कहेवातुं नथी में मुखरे।।३२।। बांधिराखे बंधिवान जैमरे, रह्यां सहुनां नाडी प्राण एमरे। जेह समे वावरी सामर्थिरे, अलबेलेजिये आपे अतिरे ॥३३॥ जो एम न करत जीवनरे, थात केर मरत बहु जनरे। जेने वाला विना पळ घडीरे, न रहेवातुं जातुं तन पडीरे ॥३४॥ तेना रह्या प्राण तन मांयरे, तेतो श्रीमहाराज इच्छायरे। पछी दत्तपुत्र दोय धीररे, अवधप्रसाद ने रघुवीररे ॥३५॥ तेणे सुंदर शास्त्रनी विधिरे, जेम करवी घट तेम किथिरे। चरच्युं

चंदन तन नवराविरे, सुंदर वस्त्र अमूल्य पहेराविरे ।।३६।। पुष्पहार तोरा गुच्छ धरीरे, पछी ए समे आरती करीरे। कहे हाथ जोडी सहु एमरे, प्रभ्र आवुं कर्युं तमे केमरे ॥३७॥ सारुं नाथ घट्युं जे तमनेरे, पण विसारशो मां अमनेरे। एम कहीने लागीयां पायरे, पछी बेसार्या विमान मायरे ॥३८॥ गातां वातां आव्या फ़ुलवाडीरे, जेह गमती पोताने झाडीरे। त्यां तुलसी चंदने चिता रचिरे, तन पधराव्युं घीए चरचिरे ॥३९॥ पछी कर्यो अग्निसंस्काररे, जोइ दुःख पाम्यां सहु अपाररे। बहु घृते देह दाग दीधोरे, सर्वे शास्त्रविधि तियां कीधोरे ॥४०॥ पछी नाइने आव्यां भवनरे, तेदि खाधुं नहि केणे अकरे। पछी विजे दि चिताने ठारिरे, करी खरच करवा तैयारिरे ॥४१॥ तेड्या ब्राह्मण सत्संगी सहुरे, बिजांपण तेडावियां बहुरे। कर्या मिश्रि मोदक विपररे, बीजा साटा कराच्या बहुपेररे ॥४२॥ तेणे जमाड्या जन अपाररे, सत्संगी कुसंगी नरनाररे। करी श्रवणि ने श्राद्ध-विधिरे, तियां अश्व गाउं बहु दिधिरे ॥४२॥ अन धन वसन वासणरे, आप्यां परुंग गादलां आशणरे। एम विधि किधि बहुपेररे, पछी जन गयां सहु घेररे ॥४४॥ केड्ये रह्यां इयां जेह दासरे, तेतो सदा रहेतां प्रभ्रपासरे। प्रभ्र करिगया एवा खेलरे, कळा एनी केणे न कळेलरे ॥४५॥ जेम नट निजविद्या बडेरे, लेवा लडाइ आकाशे चडेरे। थाय जुद्धे त्यां जुजवां अंगरे, तेनी नारी बळे तेने संगरे ॥४६॥ सहु सभा देखे एम सत्यरे, त्यांतो उतरे करी रमत्यरे। आवे नारी पण तियां वळिरे, जे कोइ मुवा पुरुषसंगे बिळरे ॥४७॥ पामे आश्वर्य एवं जोइरे, पण कळि शके नहि कोइरे। तेम प्रभुनी रमत्य मांइरे, जोइ असुर जाय

श्चंशाइरे ॥४८॥ पण आवे जाय एवा नथीरे, निजजन जाणेछे मनथीरे। पण असुर मोह पाम्या काजरे, करे एवां चरित्र महाराजरे ॥४९॥ जो एम न होय एह रीतरे, तमे चितवि जुवोने चित्तरे। कैक करेछे आविने काजरे, परचा पुरेछे जनने महा-राजरे ॥५०॥ केनां जमेछे आविने अन्नरे, प्रकट प्रमाण नहि खपनरे ! केने आपेछे तोरा ने हाररे, केनी करेछे कष्टमां वाररे।।५१॥ केने वाटमां चालेछे संगेरे, केने सामा मळेछे उमं-गेरे। केने सात पांच अश्वारेरे, थाय प्रकट दर्शन बारेरे ॥५२॥ करे आरतीमां धुन्य आवीरे, केने बोलावेछे हेत लावीरे। कथा सभागां आबी सांभळेरे, प्रकट प्रमाण जनने मळेरे।।५३।। एवी री-त्यनां अनेक काजरे, तेतो आपे करेछे महाराजरे। एम दर्शन दिये दयाळरे, निजजननी करेछे संभाळरे ॥५४॥ कोइ गामे लखावे कागळरे, बेसी निजजनने आगळरे। केतुं प्रेमेशुं पिवेछे पाणीरे, आवे दर्शन देवा दास जाणीरे ॥५५॥ केने आपे झिणि जाडी माळारे, एम जनने करेछे सुखाळारे । कोइने मळेछे मारग मांयरे, मेलि भेट्य ने लागेछे पायरे ॥५६॥ कोइक सेज-मां सुता देखेछेरे, जोइ जन्म सुफळ लेखेछेरे। जेजे जन संभारेछे ज्यारेरे, तेते पामेछे दर्शन त्यारेरे ॥५७॥ एम अनेक प्रकारे आजरे, प्रभु करेछे बहुबहु काजरे । निजजनथी अळगा नाथरे, नथी जाता रहेछे सदा साथरे ॥५८॥ तेतो विम्रुख वात न मानेरे, जेने पूर्ण पाप पड्युं पानेरे। कहुं सुणो सहु रीत्य एवीरे, कह्यो बिभत्स रस वर्णवीरे ॥५९॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजा-नंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये श्रीजिमहा- राज पोताना अनंत पार्षदनी सांथे विमानमां बेसिने पोताना धाममां पधार्या एनामे एकसो ने एकसठ्यमुं प्रकरणम् ॥१६१॥

पूर्वछायो-सुणो सहु हुं शुं कहुं, वरणवि वारमवार। नथी दिठो नथी सांभळ्यो, आ जेवो बिजो अवतार ॥१॥ अति सामर्थि वावरी, हरि धरी मनुष्यनुं देह । आ दिन मोरे आगमे, नथी सुणी श्रवणे तेह ॥२॥ अति अलैकिक वारता, लावि देखाडी लोकमांइ। एवं आश्रय जोइ जन, मगन रहे मनमांइ ॥३॥ करी काज महाराज मोटां, गयां पोत्ये गोलोक । जन दर्शन विना दुःखियां, रह्यां संभारी करतां शोक ॥४॥ चोपाई-समे समे संभारतां सुख, पळे पळे प्रकटेछे दुःख। क्यारे सांभरे बेठा पलंगे, चर्चि चंदन सुंदर अंगे ॥५॥ कंठे हार कपूरना घणा, बाजु कुंडळ कपूरतणा। क्यारे सांभरे पुष्पनी माळे, पुष्पना तीरा धर्या दयाळे ॥६॥ क्यारे सांभरे जर-किश जामे, बांधि पाघ जस्कशी स्थामे । क्यारे सांभरे ग्रुगट धरेल, रुडे हिंडोळे बेठा रंगरेल ॥७॥ क्यारे सांभरे नाखता गुलाल, रंगे रमता करता ख्याल । क्यारे पीचकारी लइ हाथे, रंग नाखता सखाने माथे ॥८॥ क्यारे अश्वपर असवार, एम सांभरे प्राणआधार । क्यारे सांभरे नदीमां न्हाता, ताळी पाडी सखा संगे गाता ॥९॥ क्यारे नीर उछाळता हाथे, रंगे रमता सखाने साथे। क्यारेक सांभरे जमतां थाळ, देता प्रसादि दासने दयाळ ॥१०॥ क्यारेक सांभरे पंगत्ये फरता, दह दर्शन ने मन हरता । मुखमांहि जलेबियो आपी, जमाडे चरण मस्तके छापी ॥११॥ क्यारेक सांभरे जनने मळता, आपे छातिमां चरण बळता। क्यारेक सांभरे करता वात, समझि संत थाय रिळयात

।।१२)। क्यारेक सांभरे पूज्या छे जने, पुष्पहार सुंदर चंदने I क्यारेक आरती स्तुति आगे, करी जन प्रेमे पाय लागे ॥१३॥ क्यारेक सांभरे सेजमां सुता, उठी मुख घोइ मुख छुता। क्यारेक सांभरे करता दातण, क्यारेक सांभरे बेठा आसण ॥१४॥ क्यारेक सांभरे न्हाता नाथ, चोळी तन जे नवरावता हाथ। क्यारेक सांभरे जीवन जमता, ताळी पाडी जन संगे रमता ।।१५।। क्यारेक चडी आवे एवा चित्त, वेढ विंटि करकडां सहित! क्यारेक सांभरे बेठा सुखपाल, क्यारेक हस्तिए संगे मराल ॥१६॥ क्यारेक सांभरे मेडे महाराज, क्यारेक करता वात हेतकाज । क्यारेक रमता संतने साथे, गाता ताळी पाडी दोय हाथे ॥१७॥ क्यारेक सांभरे बेठा आसन, क्यारे सांभरे चंपा-वता तन । क्यारेक सांभरे चोळतां तेल, क्यारेक सांभरे चरण पूजेल ॥१८॥ क्यारेक सांभरे तापता तन, नाथ हाथे करता व्यंजन । क्यारेक जमी जमाडता जन, पिरसता पोत्ये थइ प्रसं**न** ।।१९।। क्यारेक रथ वेल्य गांडे घोडे, बेसि चालता सखानी जोडे। क्यारेक आंबा आंबलि ओटे, बेसता हार पहेरि बहु कोटे ।।२०।। क्यारेक लेता लटकेशुं हार, एम संभारेछे वारमवार । जियां जियां विचर्या जीवन, तेनुं करेछे जन चिंतवन ॥२१॥ जियां जियां करी हरिए लीळा, ते चिंतवेछे जन थइ भेळा। जियां जियां करिया उत्सव, तेते जन चितवेछे सर्व ॥२२॥ जेजे महाराजे कर्यां कारज, तेते चिंतवेछे नारी नरज । संभारतां सुख दुःख तने, विसरतो नथी वियोग मने ॥२३॥ एवां सुख नथी आप्यां महाराज, जे विसार्यां पण विसरे आज । संमार्थे मुख नहि दुःख तन, तेणे रुदिये रहेछे रुदन ॥२४॥ बारे नथी

देखाडतां दास, अंतरे सदा रहेछे उदास। जैम मणि विना मणिधर, एम फरेछे नारी ने नर ।।२५॥ जेम धन विना निरधन, एम रहेछे कंगाल जन। जेम माबाप विनानां बाळ, कोण करे तेनी प्रतिपाळ ॥२६॥ जैम पति विनानी पतनी, एम आज ते आविने बनी । जैम नगर गये नरपति, तेने तने सुख नहि रति ॥२७॥ तेम जेने वालानो वियोग, वण रोगे तेने जाणवो रोग। तेने सुख कियांथी बरीरे, रहे नयणां भरियां नीरे ॥२८॥ गाय विनानुं बलबले बत्स, जळ विनानुं तलफे मत्स्य। तेम जीवन विनाना जन, रहे आलोच रात्य ने दन ॥२९॥ जेम प्राण विनानुं होय पंड, जेम सूर्य विनानुं ब्रह्मांड । जेम शशि विनानी रात, जेम अवनि विना वरसात ॥३०॥ एम झांखां पड्यां सर्वे जन, जातां एक श्रीप्राणजीवन। कोयने तने तेज न रह्यां, श्वरिश्वरि सहु झांखां थयां ॥३१॥ जेम फळ विनानी कदळी, जैम तोय विना ताल वळी। जेम हंस विना मानसर, एम रह्यां सहु नारी नर ॥३२॥ जेम वस्ति विनानुं नगर, जेम मनुष्य विनानुं घर। तेम सुनुं लागेछे ते सहु, घणिघणि वात शुं हुं कहुं ॥३३॥ जेजे त्यळे बेसता नाथ, संभार्ये हैं युं न रहे हाथ। जैम छुण विनानुं व्यंजन, जेम घृत विनानुं भोजन ॥३४॥ जेम वर विनानी ते जान, जेम रस विनानुं छे पान । तेम निरस थयो संसार, एक जातां ते प्राणआधार ॥३५॥ कोइने सुख रह्यं नहि रति, पधारतां प्रभु प्राणपति। देह गेहनां सुख न रह्यां, कहे शिये सुखे रह्यां इयां ॥३६॥ हस्या रम्यानी होंश न रइ, जीवतां गत्य मृतकनी थइ। एवी रीत्ये ते देहना दन, पुरा करेछे हरिना जन ॥३७॥ सांभरे समेसमे धणुं सुख, तेणे

नुर नथी केने मुख । खजन साले सांभरतां एघांण, तेनी पीडाये पिडायछे प्राण ॥३८॥ वारमवार कहेतां हेत वात, तेतो सालेछे दिवस ने रात । हेत देखाडि हरियां मन, ते विसरतुं नथी निशदन ॥३९॥ एम संभारि संभारि जन, रुदामांहि करेछे रुदन। सर्वे सुख लइ गया साथ, केड्ये करी जनने अनाथ।।४०।। एवी रीत्य जे ए जनतणी, केटलिक हुं देखाई गणी। जेनुं जातुं रह्युं छे जीवन, एनुं आश्चर्य न मानिये मन ॥४१॥ कहि वात संक्षेपे में एह, जेम छे तेम न कहेवाय तेह । जेजे दिउं में सांभळ्युं कान, तेमांथी लख्युं कांइक निदान ॥४२॥ कहेतां जश हरिना विस्तारी, थइ कथा आ सुंदर सारी। कह्यां प्रकट प्रभुनां चरित्र, अतिपावन परम पवित्र ॥४३॥ सतसंगिने छे सुखनिधि, पूरण सुखमय प्रसिद्धि । दोयलि वेळामां चित्रवे दास, थाय सुख जाय तनत्रास ।।४४॥ एवी ग्रंथ थयो आ अनुप, सत्संगि जनने सुखरूप । कह्युंछे मने जणाणुं जेम, सद्दु समिश ते लेज्यो एम ॥४५॥ सर्वे चरित्र श्रीहरितणां, केवाय क्यां लगि छे अतिघणां। संक्षेपे करी कह्यां सहुने, जेटलां जाण्यामां आव्यां मने ।।४६।। हरिचरित्र छे अपरमपार, एक जिभे न थाय निरधार । ब्रह्मसृष्टिमां नहि होय एवा, सांगोपांग हरि-गुण कहेवा ।।४७।। शेष गणेश शारदा जेह, कहेछे पार नथी पामता तेह । माटे में मने कर्यो विचार, हरिजश छे अपरम-पार ।।४८।। जेजे वात मारा जाण्यामां आत्री, तेते वात में सहुने सुणावी । जोइ शुद्ध श्रीहरिना दास, कहेतां कथा थायछे हुलास ॥४९॥ ज्यारे श्रोतानुं होय शुद्ध मन, कहेतां वक्ता थाय प्रसन्न । केवाय कथा अनुपम अति, श्रोता सुणतां थाय शुद्धमति

॥५०॥ एवो जाणी आ कथासंवाद, कहेशे सुणशे राखशे याद। तेतो पामशे परम आनंद, सत्य कहे एम निष्कुळानंद ॥५१॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंदसुनि-विरचिते भक्तचिंतामणिमध्ये श्रीजिमहाराज खधाम पधार्या तेनो वियोग थयो तेनुं वर्णन कर्युं एनामे एकसो ने बासठ्यमुं प्रकरणम् ॥१६२॥

पूर्वछायो-भक्तवितामणि ग्रंथनां, प्रकरण एकसी चोसठ। विभागे ते वर्णवुं, सुंदर सारि पेट्य ॥१॥ प्रथम मंगळाचर्ण प्रकर्ण, बीजं कविस्तवन । त्रिजे महात्म्य ग्रंथतुं, चोथे हिमाद्रि वर्णन ॥२॥ पांचमे मुनिनां नाम कह्यां, छठे ऋषिस्तुति आप। सातमे शाप दुर्वासानो, आठमे तेनो परिताप ॥३॥ नवमे उद्भव असुरनो, दशमे धरम अवतार । अग्यारे विवाह भक्तिधर्मनो, बारे रामानंद मळ्या उदार ॥४॥ तेरे त्यांथी घेर आविया, चौदे धर्म मुनिने मळ्या हरि । पनरे धर्म अश्वत्थामाए शाप्या, सोळे प्रभु प्रकट्या दया करी ॥५॥ सत्तरे कृत्याओनुं विघन कह्युं, अढारे हरिचरित्र चच्युं । ओगणिशे असुरविधन टाळ्युं, विशे अवध्य धाम वर्णव्युं ॥६॥ एकविशे हरि बाळलीळा, बाविशे जनी-इनो जाग । त्रेविशे चरित्र पवित्र छे, चोविशे माता तनत्याग ॥७॥ पंचिवशे धर्मे ध्याने करी, छिवशे तिज्युं तन। सत्याविशे चाल्या हरि घेरथी, अठ्याविशे अवनि अटन ॥८॥ चोपाइ--ओगणत्रिशे कर्युं तप आपरे, त्रिशे गोपाळयोगी मेळापरे। एकत्रिश लै प्रकर्ण चाररे, फर्या वर्णि ते वन मोझाररे ॥९॥ पांतरिशे तीर्थमां मम्यारे, छतरिशे उद्भव जनम्यारे । साडित्रशे आडित्रिशे वातरे, कही रामानंदनी विख्यातरे ॥१०॥ ओगणचाळिसमां घनश्यामरे, आव्या सत्संगमां सुखधामरे। चाळिशे खामिनुं ध्यान

करीरे, कहि मूर्ति रुडि रसभरीरे ॥११॥ एकताळिशे मुक्तानंदे पत्ररे, लख्यो खामी उपर सुंदररे। बेंताळिशे पत्री नीलकंठेरे, लिख सुंदर सारिपेठेरे ॥१२॥ त्रेंताळिशे तेनो उत्तररे, लिख्यो स्वामी श्रीजिए सुंदररे । चुंवाळिशे रामानंद आवीरे, मळ्या नीलकंठने बोलावीरे ॥१३॥ पिस्ताळिशे महादीक्षा दिधिरे, छेताळिशे रुचिनी वात किधिरे। सडताळिशे रामानंदश्यामरे, पधारिया सदेहे स्वधामरे ॥१४॥ अडताळिशे उत्सव मांगरोळेरे, तियां जन कर्यां बहु टोळेरे। ओगणपंचाशे पचासे अनुपरे, कह्यां हरिचरित्र सुखरूपरे ॥१५॥ एकावने परमहंस किथारे, बावन त्रेपनमां नाम लिधांरे। चोपने हरित्रिरित्र पावनरे, पंचावने जेत-लपुर जज्ञरे ॥१६॥ छपने जेतलपुर जड्रे, गया खोखरादे संघ लइरे। सत्तावने असुरने मारीरे, गया कच्छदेश सुखकारीरे ॥१७॥ अठावने ओगणसाठ्ये जाणोरे, यज्ञ डभाणनो परमाणोरे। साठ्ये कच्छदेश्यी सोरठमांइरे, करी अष्टमी ते अगत्राइरे ॥१८॥ एक-सट्ये यज्ञ जेतलपुरेरे, करतां वारुं कराव्युं असुरेरे। बासट्ये कारियाणिमांइरे, कयाँ अष्टमी उत्सव त्यांइरे ॥१९॥ त्रेसट्यमां वडठानी वातरे, लीळा करी फर्या गुजरात्यरे । चोसठ्ये सारंग-पुर गामेरे, कर्यो उत्सव सुंदर इयामेरे ॥२०॥ पांसट्ये गढडा गाम-मांइरे, रम्या हुतासनी हरि त्यांइरे। छासठ्यमां लाडिलो लालरे, कर्यो फुलडोल बरतालरे ॥२१॥ सडसट्ये कर्जिशण गामेरे, करी अष्टमी त्यां घनक्यामेरे। अंडसट्यमांहि रुडिपेट्यरे, करी गढ-हे कपिला छट्यरे ॥२२॥ अगणोतेरे पुरी दीपमाळरे, करी वर-ताले लीळा दयाळरे। शितेरे गढडे होळि रमिरे, इकोतेरे वर-ताल अष्टमीरे ॥२३॥ बोतेरे धर्मपुरनी वातरे, गया घणुं रहि

गुजरातरे। त्रोतेरे वरताले ग्रुरारिरे, फुलडोळे ग्रुल्या ग्रुगट धारिरे ॥२४॥ चुवोतेरे वळी वरतालेरे, हुतासनी उत्सव कर्यो वालेरे। पंचोतेरे लर्ष्युं गया सोरठेरे, करी लीळा तियां बहुपेठ्येरे ॥२५॥ छोतेरे जेतलपुर गामेरे, भीमएकादशी करी क्यामेरे। सत्यो-वेरमां वात ए जाणोरे, जित्या वेदांताचारने प्रमाणेरे ॥२६॥ अठ्योतेरे ओगणाशिये वातरे, प्रबोधनीउत्सव विख्यातरे। एंशि प्रकरणमां छे एहरे, करी गढडे हुतासनी तेहरे ॥२७॥ एका-शिमां बोटादनी लीळारे, रम्या होळी हरिजन भेळारे। बाशिये श्रीनगर जहरे, आव्या सहुने द्र्यन दहरे ॥२८॥ त्राशिये देश डंढाव्येरे, दिधां दर्शन भूधरे भावेरे। चोराशिमां गढडानी वातरे, दुष्ट दिम गया गुजरातरे॥२९॥ पंचाशिये गढडामां विळिरे, करी दीप उत्सव दिवाळिरे। छाशिये श्रीनगरमांइरे, नरनारायण बेठा स्यांइरे ॥३०॥ सत्याशिए शुं कहुं वखाणिरे, कर्यो अनकोट कारियाणिरे । अठ्याशिमा प्रकरणमां कह्योरे, फुलडोळ वंचाळे समैयोरे ॥३१॥ नेवाशिमां ए कही प्रकाशुरे, रह्या गढडे संत चोमासुरे। नेबुंबे श्रीनारायण पधराच्यारे, पछी अयोध्यानां वासी आव्यारे ॥३२॥ एकाणुंमां प्राण आधाररे, पुछचो धर्मकुळ परि-बाररे । बांणुं त्राणुं प्रकर्णे ए चवीरे, वात द्वारामतिनी वर्णवीरे ॥३३॥ चोराणुं पंचाणुमां ए पेररे, प्रम्न पधार्या सुरत शहे-ररे। छन्त्रमांइ होळिनो समैयोरे, कर्यो अमदावाद ते कशोरे ॥३४॥ सताणुं प्रकर्णे प्रमाणोरे, दीपउत्सव वरतास्ये जाणीरे। अठाणुं प्रकर्णे श्रीनगररे, कर्यो होळि समैयो सुंदररे ॥३५॥ नवाणुं प्रकर्णे जाणो जनरे, वालो पधार्या वटपत्तनरे। सोमा अकर्णमां वात सारीरे, कही बहु प्रकारे विस्तारीरे ॥३६॥

सो ने एके प्रोक्षपक्ष लिधिरे, थइ आचार्य भक्ति की बिरे। सो ने बेथे बहुनामितणांरे, कह्यां न जाय चरित्र घणांरे ॥३७॥ सो ने त्रण्ये मुनिनी स्तुतिरे, बोल्या सो ने चारे प्राणपतिरे। सो ने पांचे सामर्थि हरिनेरे, कह्यां सक्षम दृष्टि करिनेरे ।।३८।। त्यांथी पांच प्रकर्णे विरूयातरे, कही पंच बरतनी वातरे। सो ने अगियारे शुभ जाणीरे, व्रत बाइयी त्यागिनां प्रमाणीरे ॥३९॥सी ने बारे बाई भाइ नामरे, कह्यां रह्यां जे गढडे गामरे। सो ने तेरे सोरठवासी जनरे, तेनां नाम लख्यांछे पावनरे ॥४०॥ सो ने चौदे वालाकना भक्तरे, कही तेहनां नामनी व्यक्तरे। सो ने पनरे पांचाळवासिरे, कह्यां तेहनां नाम प्रकासिरे ॥४१॥ एकसो सोळे कच्छ हालारिरे, लख्यां जननां नाम विस्तारिरे । सो ने सत्तरे सौभीरनां जनरे, कह्यां नाम परम पावनरे ॥४२॥ सो अढारे भालभक्त भाख्यारे, सो ओगणिशे डंढाव्यना दाख्यारे। सो ने विशे मारु गुजरातिरे, कह्यां नाम तेहनां विख्यातिरे ॥४३॥ सो ने एकविशे कह्यां नामरे, भक्त चडोतरे नर वामरे। सो बाविशे चडोतरे नाररे, तेनां नाम जाणो निरधाररे ॥४४॥ सो ने त्रेविशे बारानां जनरे, तेनां नाम लख्यां छे पावनरे। सो ने चोविशे पचिशे परमाणोरे, वाकळ कानम सुरति जाणोरे ॥४५॥ सो ने छविशे निमाडी भाष्यांरे, खांनी हिंदुस्थानी लिख राख्यांरे। सो सत्याविशे खंड बुंदेलरे, गंगापार जन पंचमहेलरे ॥४६॥ वत्सघोष आदि देश जेहरे, नाम सोळ प्रकरणमां तेहरे। त्यांथी एकत्रिश प्रकर्णे जाणोरे, लख्या परचा ते परमाणोरे ॥४७॥ एकसो ओगणसाठ्ये भणिरे, शोभा गोलोक धामनी घणिरे। सो ने साट्ये नाथे धीरज दिधिरे, पछी करवानी हित ते कीधिरे ॥४८॥ सो ने एकसङ्ये घनक्यामरे, पोत्ये पद्यार्या पोताने ४२ भ०चि०

धामरे। सो ने बासको हरिवियोगरे, हरिजन पिडाणां ए रोगरे ॥४९॥ सो ने त्रेसट्ये कह्यो संकेतरे, सर्वे प्रकरण जाणवा हेतरे। सो ने चोसळ्ये माहात्म्य जाणोरे, ग्रंथ इति परमाणोरे ॥५०॥ पुरां प्रकरण सो ने चोसठ्यरे, शिखे गाय सुणे सारि पेठ्यरे। नित्य प्रत्ये करीने अध्यासरे, कहेशे सांभळशे हरिदासरे ॥५१॥ तेने उपर रिझे दयाळुरे, थाय लोक परलोके सुखाळुरे। एवी अनुपम कथा आ छेरे, जेमां हरिचरित्र कह्यांछेरे ॥५२॥ सत्संगी जे नर ने नारीरे, तेने आ कथा छे सुखकारीरे। सुणिसुणि लेशे सुख अतिरे, थारो धर्मनियमे दृढ मतिरे ॥५३॥ प्रभु प्रकटना जे उपासिरे, तेने तो आ ग्रंथ सुखराशिरे। जेमां इष्टदेवनां चरि-त्ररे, सुणि थाय परम पतित्ररे ॥५४॥ रामउपासिने रामचरि-त्ररे, सुणी माने सहुथी पवित्ररे । कृष्णउपासिने कृष्णलीळारे, माने मुद सुणे थइ भेळारे ॥५५॥ तेम सहजानंदी जन जेहरे, सुणि आनंद पामशे एहरे। एवी कथा आ अनुपम सारीरे, सत्संगिने छे सुखकारीरे ॥५६॥ हरिजनने छे आ पीयुषरे, विमुख जनने छे आ विषरे । सुणि सत्संगी लेशे आनंदरे, कहेशे परमार्थी निष्कुळानंदरे ॥५७॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीस-हजानंदस्वामि शिष्यनिष्कुलानंदमुनिविरचिते भक्तचितामणिमध्ये प्रथ-प्रकरण सर्वेनो संकेत कह्यो एनामे ए इसो ने त्रेसड्यमुं प्रकरणम् ॥१६३॥

पूर्वछायो-भक्तवितामणि ग्रंथ कह्यो, सत्संगिने सुखरूप।
जेमां चरित्र प्रकटनां, अति परम पावन अनुप ॥१॥ विजा ग्रंथ
तो बहुज छे, संस्कृत प्राकृत सोय। पण प्रकट उपासी जनने,
आ जेवो नथी विजो कोय ॥२॥ जेमां चरित्र महाराजनां, वळी
वर्णव्यां वारमवार। वण संभारे सांभरे, हरिमूर्ति हैया मोझार
॥३॥ हरि ने हरिजनना, आ ग्रंथमां गुण अपार। शुद्ध भावे जे

सांभळे, ते उतरे भवपार ॥४॥ चोपाइ-एवो ग्रंथ अनुपम अतिरे, जेमां प्रकट प्रभुनी प्रापतिरे । प्रकट कल्याण प्रकट भज्ञ-नरे, प्रकट आज्ञा प्रकट दर्शनरे ॥५॥ प्रकट वातो प्रकट वतमानरे, प्रकट भक्त प्रकट भगवानरे। नथी उधारानी एके वातरे, जेजे जोइये तेते साक्षातरे ॥६॥ विजा कहे मुत्रा पछी मोक्षरे, वळी प्रभु बतावेछे प्रोक्षरे। कोइ कहेछे कमें कल्याणरे, एवापण बहु छे अजाणरे ॥७॥ कोइ कहे प्रभु निराकाररे, एवापण अजाण अपाररे। कोइ कहेछे वैदिक कमेरे, कल्याण छे जाणो एक ब्रह्मरे ।।८।। कोइ कहेछे देवी ने देवरे, कोइ कहे मोक्षदा महा-देवरे। एती सर्वे वारता छे सारीरे, पण जनने जीवं विचारीरे ।।९।। ज्यारे एमज अर्थ जो सरेरे, त्यारे हरि तन शिद धरेरे । ज्ञान विना तो मोक्ष न थायरे, एम श्रुति स्मृति सहु गायरे ॥१०॥ माटे प्रकट जोइये भगवंतरे, एवं सर्वे ग्रंथनुं सिधंतरे । जेम प्रकट रवि होय ज्यारेरे, जाय तम ब्रह्मांडनुं त्यारेरे ॥११॥ जेम प्रकट जळने पामिरे, जाय प्यासिनी प्यास ते वामिरे । जेम प्रकट अन्नने जमेरे, अंतर जठरा झाळ विरमेरे ॥१२॥ तेम प्रकट मळे भगवानरे, त्यारे जननुं कल्याण निदानरे। माटे प्रकट चरित्र सांभळबुरे, होय प्रकट त्यां आवि मळबुरे ॥१३॥ ज्यां होय प्रभु प्रकट प्रमाणरे, तियां जननुं सहजे कल्याणरे। कान पवित्र थाय ते वारेरे, सुणे प्रकटना जश ज्यारेरे ॥१४॥ त्वचातणुं पाप ज्यारे जायरे, त्यारे स्परशे प्रकटना पायरे नयणां निष्पाप थावा नित्यरे, निर्खे प्रकट प्रभु करी प्रीतरे ॥१५॥ जिह्वा पवित्र त्यारेज थायरे, ज्यारे गुण प्रकटना गायरे। नासा निर्मळ थवा निदानरे, सुंघे हार पहेर्या भगवानरे ॥१६॥ चरण पवित्र थावा कोइ करेरे, तो प्रकट सामा पग भरेरे। कर पवित्र

थावाने काजरे, जोडे प्रकट जियां महाराजरे ॥१७॥ मने मनन चित्ते चिंतनरे, करतां प्रकटनुं थाय पावनरे । बुद्धि निश्चे अहं अहंकारेरे, करे प्रकटमां शुद्ध त्यारेरे ॥१८॥ माटे प्रकट प्रभु जो न होयरे, न थाय ए निष्पाप कोयरे। जाणी प्रकटमूर्ति भवपाजरे, सहजे उत्तरवानी समाजरे।।१९॥ जेम सागर तरवा नावरे, ते विना बिजो नथी उपावरे । माटे कहेवां प्रकटनां चरित्ररे, तेह विना न थाय पवित्ररे।।२०।। प्रकटमूर्ति ते निर्गुणरे, सुखदायक छे ए सहु-णरे। कह्यं कृष्णे उद्भवने एहरे, एकादश भागवते जेहरे॥२१॥ सत्वगुणमांहि तजे तनरे, पामे खर्गलोक तेह जनरे। रजोगुणमां तजे शरीररे, नरलोक पामे ते अचिररे ॥२२॥ तमोगुणमां छुटे जो देहरे, पामे नरकमां निवास तेहरे। हुं प्रकट पाभी तजे तनरे, ते निर्मुण जाणो मारो जनरे ॥२३॥ मूर्ति पूज्ये फळ मागे स्यागेरे, ते सान्विक कर्म अनुरागेरे । तुच्छ संकल्पे पूजे मूरतिरे, ए रजोगुण कर्मनी गतिरे ॥२४॥ हिंसाप्राय प्रतिमा पूजनरे, तमोगुणि ए कर्म छे जनरे। मने मळि करे कर्म जेहरे, इछ्युं अणइछ्युं निर्भुण तेहरे ॥२५॥ केवळ ज्ञान ते सान्विक कहीएरे, शास्त्रज्ञान ते राजसि लहीएरे। प्राकृत ज्ञान तामसि प्रमाणीरे, मुमां निष्ठा ए निर्गुण जाणोरे ॥२६॥ वास सास्विक ते वनवासिरे, वास गामनी तेह राजसिरे । दूतविद्या दारु चोरी मांसरे, तियां रहेवुं ए तामसि वासरे ॥२७॥ मारा मंदिरमां जे निवासरे, जाणो निर्गुण वास ए दासरे । जेजेमां संबंध मुजतणोरे, तेते सर्वे गुणातीत गणोरे ॥२८॥ फळ न इच्छे करे जे जगनरे, तेह सान्विक कर्म पावनरे। करे जज्ञ इच्छे फळ जेहरे, कर्म राजसि जाणज्यो तेहरे ॥२९॥ पूर्वापर स्मृतिविभ्रमरे, करे जज्ञ ए तामसि कर्मरे। मारे अर्थे करे जे जगनरे, निर्गुण पुरुष ए पाननरे

॥३०॥ अध्यात्मशास्त्र श्रद्धा जेनेरे, सास्त्रिक श्रद्धा जाणज्यो तेनेरे। कर्मकांडे श्रद्धा जेने थायरे, तेतो राजसि श्रद्धा कहेवायरे ॥३१॥ शास्त्रविरोध जेमां अधर्मरे, तेमां श्रद्धा ए तामसि कर्मरे। हुं प्रत्यक्षमूर्तिमां प्रीतरे, जेने श्रद्धा ते त्रिगुणातीतरे॥३२॥उद्यम विना जे उत्तम अन्नरे, तेह आहार सान्त्रिक भोजनरे । मनवां-छित जिह्वाने प्रियरे, आहार राजसी जाणवो तेयरे ॥३३॥ अशुद्ध देहने दुःखदाइरे, एवी आहार ते तामसी भाइरे । मारी प्रसादिनुं अन्न जेहरे, अति उत्तम निर्गुण तेहरे ॥ ३४॥ आत्म-लाभ ए सान्त्रिक सुखरे, विषयसुख राजसि रहे भुखरे। मोह दीनपणे सुख आवेरे, तेती तामसि सुखज कावेरे ॥३५॥ हुं प्रत्य-क्षनो आश्रय जेनेरे, निर्गुण सुख कहिये तेनेरे। एम कह्युं एका-दशमांहिरे, प्रभु प्रत्यक्षनी अधिकाइरे ॥३६॥ कह्यं श्रीकृष्णे उद्भव आगेरे, अध्ये पचिशे गुणविभागेरे। कही कथा अनुपम घणुरे, प्रत्यक्षमां निर्गुणपणुरे ॥३७॥ माटे प्रत्यक्षनां जे चरित्ररे, तेज निर्गुण परम पवित्ररे । जेजे रीत्ये प्रत्यक्षनो जोगरे, तेज निर्विघन निरोगरे ॥३८॥ माटे आ कथा सांभळ्या जेवीरे, नथी बीजि कथाओ आ तेवीरे। छे आ भक्तचिंतामणि नामरे, जेजे चिंतवे ते थाय कामरे ॥३९॥ हेते गाय सुणे जे आ प्रंथरे, तेनो प्रभ्र पुरे मनोरथरे। सुख संपत्ति पामे ते जनरे, राखे आ ग्रंथ करी जतनरे ॥४०॥ शिखे शिखवे लखे लखावेरे, तेने त्रिविध ताप न आवेरे। आच्या कष्टमां कथा करावेरे, थाय सुख दुःख नेडे नावेरे ॥४१॥ कथा सुणि आपै दान जेहरे, अति उत्तम फळ लहे तेहरे। अन बस्न विश्नने जे धनरे, एहादि सुणि देशे जे जनरे ॥४२॥ तेतो सहजे भवसिंधु तरशेरे, हशे नास्तिक ते संशय करशेरे। कुंड ढुंढ ने जुलाह जेहरे, तेने ग्रंथ

देवो नहि एहरे ॥४३॥ वामी संप्रदाइ ने संन्यासीरे, बीजा होय जे अन्यउपासीरे । तेने आगे आ कथा न कहेवीरे, अजाण्ये पण लखी न देवीरे ॥४४॥ दंभी धूता धर्मना जे द्वेषिरे, लोभी लंपटी त्रिया उपदेशिरे । तेने आपशे आ ग्रंथ जेहरे, महादुःखने पामशे तेहरे ॥४५॥ होय आस्तिक प्रकट उपासीरे, हरिजन मने ते विश्वासीरे । धर्म निममांहि दृढ अंगरे, अनन्यभक्त साची सत्सं-गरे ॥४६॥ अति प्रकटमां जेने प्रीतरे, कहेवो सुणवो ग्रंथ त्यां नित्यरे। एकांतिकनी वात छे आमारे, विजा सुणी शत्रु थाशे सामारे ॥४७॥ माटे बहु न काढवी बाररे, आती छे सतसंग्रन् साररे। तेतो सतसंगी आगे कहेवुंरे, कुसंगिने सुंणवा न देवुंरे ।।४८॥ एम लर्ख्युंछे समझि विचारीरे, सतसंगिने छे सुखका-रीरे। छेतो घृत अमृत अनुपरे, पण कीटने ते दुःखरूपरे ॥४९॥ माटे विम्रुख जनने तारीरे, कहेज्यो कथा आ सुंदर सारीरे। समञ्ज हरो ते समझरो सानेरे, हरो मूरख ते नहि मानेरे ॥५०॥ गंग उन्मत्त तीरे छे गामरे, पुर पवित्र गढडुं नामरे। तियां भावेशं कथा आ भणिरे, भक्तप्रिय भक्तचिंतामणिरे ॥५१॥ संवत अढार वर्ष मत्याशिरे, आशो शुदी सुंदर तेरशिरे। गुरुवारे कथा पुरी किधिरे, इरिमक्तने छे सुखनिधिरे ॥५२॥ बिजि कथाती बहु सांमळेरे, पण आ वात क्यांथकी मळेरे। जेमां चर्णेचर्णे छे आनंदरे, पामे जन कहे निष्कुळानंदरे ॥५३॥ इति श्रीमदेकांतिकधर्मप्रवर्तकश्रीसहजानंदस्वामिशिष्यनिष्कुलानंद्रमुनिविर-चिते भक्तचिंतामणिमध्ये प्रंथनुं माहात्म्य कह्युं तथा प्रंथनी समाप्ति कही एनामे एकसो ने चोसठ्यमुं प्रकरणम् ॥१६४॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।



## श्रीस्त्रामिनारायणो जयति । विषयानुऋमणिका ।

कर्ताए खप्रंथनी निर्विद्य समाप्तिमाटे खेष्टदेवनो अपार महिमा वर्णववा पूर्वक तेमने नमस्कार करवारूप करेला मंगळनुं शिष्यविक्षा माटे प्रंथमां लखवुं अने प्रंथ रचवामां उपयोगी बुद्धियोगनी प्रार्थना. १

खप्रन्थनी निर्विघ्न समाप्तिमां अधिक सहाय माटे 'यथा देवे तथा गुरी'।
'भगवद्भन्दनं स्वाद्यं गुरुबन्दनपूर्वकं' आ न्याये संतोतं शुभ लक्षण तथा
तेमनो मोटो महिमा वर्णववापूर्वक तेमने करेलो नमस्कार. २

इष्टदेवनी पवित्र कथानो विस्तारथी वर्णवेलो महिमा. १

नगराज हिमालयतुं भव्य वर्णन अने तेमां विराजमान नरनारायण भगवाननी समीपे तेमनी इच्छाथी मरीच्यादि महर्षिओतुं आववुं. ४

आवेला महर्षिओनो नामधी निर्देश, तेमने श्रीनरनारायणनो मेळाप, तेमणे करेलो महर्षिओनो सत्कार अने महर्षिओए करेली नरनारायणनी पूजा विगेरे. ५

महर्षिकृत नरनारायणनी स्तुति तथा भारत प्रजाना क**हेला दुःसमाचार. ६** नरनारायणपासे धर्मभक्तितुं आवयुं, त्यां आवेला दुर्वासातुं सन्मान नहि

नरनारायणपास धमभाक्तत आवनु, त्या आवला दुवालानु चन्नाम गाह्र थवाथी तेमणे सर्वने आपेलो शाप अने धर्मभक्तिनी प्रार्थनाथी करेलो अनुप्रह. ७

नारायणे भक्तिधर्मनी सांत्वनामां तेमने पुत्ररूपे प्रगट यह धर्मस्थापनपूर्वक अधुरनाश करवानुं आपेलुं वरदान तथा असुरोए करेलो दुर्विचार. ८

असुरोनो उद्भव अने तेमना दुष्ट आचरणोनो अनुवाद. ९

सरवार देशमां आवेला इटार गाममां सरवरीया वित्र बालशामीयकी तेमनी भाग्यवती भार्यामां सं. १७९६ कार्तिकशुक्र ११ ए धर्मदेवनी जन्म. १०

एज देशमां आवेला पवित्र छपैया गाममां वित्र कृष्णशर्मायकी तेमनी भवानी भार्यामां सं. १७९८ ना कार्तिकशुक्ष १५ ए मिक्त देवीनो जन्म तथा धर्मभिक्तितुं विवाहमंगळ तथा बाळशर्माए भक्तिप्रत्ये करेलो पातिवत्योपदेश. ११

बालशर्माकृत वर्णाश्रमधर्मीपदेश, रामप्रतापजीनो जन्म, असुरकृत उपप्रवने कीचे धर्मभक्तिनं अयोध्या काशी यह प्रयागमां आवतुं, त्यां रामानंदसामिनो समागम अने तेमनायकी भागवती वीक्षानं प्रदण विगेरे. १२ खामिए धर्मदेवने आपेलो ऐकान्तिक धर्मनो उपदेश, दंपतीनुं घेर पाछु आववुं, रामप्रतापनो उपवीतोत्सव अने असुरोपद्रवधी त्रासेलां भार्या भक्तिने भर्ता धर्मे आपेलो धैर्योपदेश, १३

स्मृतिमात्रथी आवेला इनुमानजीनी आज्ञाधी दंपतीनुं गृंदावनमां आववुं, त्यां जपात्मक विष्णुयागना अनुष्ठानधी प्रसन्न थएला श्रीकृष्ण भगवाने आपेलां दिव्यरूपे दर्शन अने धर्में करेली तेमनी स्तुति. १४

श्रीकृष्णे धर्म भक्तिने पुत्रक्ष्पे प्रगट यहने असुरनाश भने धर्मस्थापनतुं आपेलुं वरदान अने घेर जतां मार्गमां भविद्यातुं मळवुं अने अश्वत्थामानो शाप. १५

, शापथी शोकातुर धर्मभिक्तिनी हनुमाने करेली सांत्वना, असुरोने देवीए आपेलो शाप, श्रीहरिनो सं. १८३७ ना चैत्रशुक्क ९ सोमवारे थएलो आविभीव, श्रीकृष्ण रूपे माताने आपेलां दर्शन अने माताए करेली स्तुति विगेरे. १६

जन्मसमयना शुभोत्सवतुं वर्णन, पिताए करेलुं पुत्रतुं जातकर्म, असुरोने थएलां अपराकुनो, काळीदते श्रीहरिने मारवा मोकलेली कृत्याओनो दृष्टिमात्रथी नष्टप्राय तेणीओनो हृतुमाने करेलो नाश अने तेमणे कहेलो श्रीहरिनो महिमा विगेरे. १७

मार्केंडेयमुनिए श्रीहरिनुं गुणयोगथी करेलुं नामकरण, धर्मदेवे पुत्रना करेला भूमिउपवेशन, कर्णवेध अने अन्नप्राशन संस्कारो अने श्रीहरिनी बाळलीला. १८

रामप्रतापनं विवाहमंगळ, श्रीहरिनो चौल संस्कार अने मारवा आवेला काळी. दत्तनो श्रीहरिए सैश्वर्यथी करेलो नाश. १९

असुरोपद्रवधी भय पामेलां धर्मभक्तिनुं पवित्र अयोध्यामां आववुं, अयोध्यानुं अनुत वर्णन अने श्रीहरिनी बाळभावधीज रम्य रुचिनुं वर्णन. २०

इच्छारामनो जन्म अने श्रीहरिनी दिव्य बाळलीला. २९

श्रीहरिनो उपवीत महोत्सव, श्रीहरिए पिताथकी करेलो वेदवेदांगनो साहजिक अभ्यास अने पिताए आपेलो वर्णिधर्मनो उपदेश. २२

धर्मदेवे पुत्रने भाषेली शिलामण, अभ्यसेलां वेदादि शास्त्रोना साररूप एक गोटकानुं लखवुं अने ११ वर्षे मारवा आवेला असुरोनो दृष्टिमात्रथी करेलो नाश. २३

श्रीहरिए माताने आपेछं हरिगीता नामधी ज्ञान तथा श्रीकृष्णरूपे आपेछं दिन्य दर्शन तथा माताए करेली स्तुति अने तेमने आपेली दिन्य गति. २४

नजीकमां मृत्यु आणीने धर्मनी यएठी अन्तर्शक्ति, समाधिमां श्रीहरिनं श्रीकृष्णरूपे दर्शन, धर्मकृत श्रीहरिस्तुति अने श्रीहरिए आपेछं ससमीपनिवास वरदान. २५ धमेंदेवे वे पुत्रोप्रत्ये श्रीहरिने श्रीकृष्णभगवान् आणवानो आपेलो उपदेश, भागवतनी सप्ताहनुं श्रवण, धर्मनी दिष्य गति अने श्रीहरिनुं घेरथी नीकळबुं. २६ गृहनो त्याग करी वनमां गएला श्रीहरिनो संबन्धीओए करेलो विलाप. २७

श्रीहरिए वनमां चालतां प्रथम आवेला काळा पहाडमां विचरतां आवेला एक घोर वनमां रात्रिए वडना बृक्षतळे करेलो निवास, त्यां पोताने मारवा आवेला काळभैरवनो हनुमानजीए करेलो नाश विगेरे. २८

गहन धनमां भूला पडेला श्रीहरिने मूर्तिमान् हिमाचळे बतावेलो मार्ग, पुलहा-श्रममां अर्चारूप मुक्तनाथनां दर्शन अने सूर्य उपर दुष्कर तप करी तेमने प्रसन्न करी तेमना थकी मेळवेलुं वरदान. २९

हिमाचळ तरफ चाळतां आवेला विकट वनमां विचरतां आवेला बुटोळ पत्तनना महादत्त राजाने उपदेश करीने तेतुं करेलुं कल्याण, वनमां गोपाळयोगिनो मेळाप अने तेमनाथकी लीलामात्रथी करेलो योगाभ्यास. ३०

तेमनी पासे एक वर्ष रही खखरूपनुं ज्ञान आपी दिव्य गति आपीने, पूर्वमां चालतां आवेला आदिवाराह तीर्थमां थइ वंग देशमां प्रसिद्ध सीरपुरना राजा सिद्धवन् स्रभने ऐश्वर्य बतावी आश्रित करी,गोपाळदास सेवकनुं अभिचारथी रक्षण करी, दुष्परि-ग्रहथी श्यामवर्ण थएला तैलंगी विश्रनी विपत्ति हरीने, कामाक्षीदेवीए आववुं ३१

महासिद्धपणाना मिथ्या अभिमानी पिबैकनो पराजय करी तेने खाश्रित करीने, बीजा सिद्धोने रजा आपीने श्रीहरिनुं नवलसा पर्वत प्रस्ये पधारबुं. ३२

त्यां तप करता नव लाख योगिओने तेटलां रूप धारीने एकसाथे मळीने मोक्ष-दान आपीने, बाळवाकुंड थइ गंगासिन्धुसागरमां ल्लान करी कपिलाश्रममां आवी त्यां एक मास रहीने त्यांथी जगन्नायपुरीमां आवीने असुरोनो करेलो नाश. ३३

त्यांथी आदिक्रमंमां आवीने त्यांथी मानसपत्तनना राजाने खाश्रित करी, ते द्वारा अधुरनाश करी, वेंकटादि शिवकांची विष्णुकांची थइ श्रीरंगमां ने मास रही सेतुबन्धमां ने मास रही खंदराज थइ भूतपुरीतरफ चालतां आवेला घोर वनमां भूख्या श्रीहरिने छठे दिवसे शिवपार्वतीए आपेलो साथवो विगेरे. ३४

भूतपुरी कन्याकुमारी पद्मनाभ जनार्दन आदिकेश मलयाचळ साक्षिगोपाळ किष्किधानगर पंढरपुर इंडकारण्य नासिक त्र्यंबक इलाहि तीयोंने पवित्र करताथका तापी नर्भदा मही अने सामरमित नदीने उतरीने भालमां भीमनाथनां दर्शन करी गुप्तप्राग थइ पंचतीयों करी त्रण मास लोडवामां रही मांगरोळ थइ श्रीहरिनुं सं. १८५६ ना श्रावण वरी अष्टमीए लोज गामे पधारखं विगेरे. ३५ <u>ک</u> بر

.A.

۲4 4-1

33

रामानंदसामीनुं ज्ञातव्य जन्मादि समस्त कृतांत. ३६

रामानन्दने आत्मानन्दनो मेळाप, तेमनो शिष्यभाव खीकार कर्या छतां भग-वानने निराकार कहेवाथी तेमनो त्याग करी रामानंदनुं श्रीरंगमां आववुं, त्यां रामा-नुजावार्यनां समाधिमां दर्शन अने तेमनाथकी वैष्णवी दीक्षानुं ग्रहण. ३७

त्यांना वैष्णवोनी पीडाथी बृंदावनमां आववुं, गुरुमंत्रना जपथी थएलां श्रीकृष्णनां अत्यक्ष दर्शन, तेमनी करेली स्तुति, श्रीकृष्णे नवीन उद्भव संप्रदाय प्रवर्ताववानी करेली आज्ञा, त्यांथी प्रयागमां धर्मभिक्तनो थएलो मेळाप, तीथोंमां विचरतायका स्वामिनुं रैवताचळ आववुं अने श्रीहरिने सुखानन्दनो लोज वाव्य उपर मेळाप. ३८

बन्नेए एकबीजाना कहेला समाचार, श्रीहरिने मुक्तानन्दजिनो मेळाप, श्रीहरिए पुछेला पांच प्रश्नोना मुक्तमुनिए आपेला उत्तरो भने श्रीहरिए कहेली खसद्दृति. ३९ एकबीजाए कहेलुं पोतानं सद्दृतांत, रामानंदखामिनो महिमा, तेमनां दर्शन करवानी श्रीहरिनी तीत्र इच्छा अने श्रीहरिए करेलुं ध्यान. ४०

मुक्तानन्दमुनिए भगवान् श्रीहरिना अलौकिक अद्भुत गुणोनुं वर्णन करवा पूर्वेक रामानंदस्वामी उपर भुजनगर लखेलो विनतिपत्र, ४१

श्रीहरिए पोतानी रुचि जणाववापूर्वक खामीउपर लखेलो प्रेमप्रदर्शक पत्र. ४२ खामिए पत्र बांची श्रीहरिनी करेली अति प्रशंसा अने तेमणे लखेलो प्रत्युत्तर. ४३ पिपळाणामां नरसिंह महेताने त्यां आवेला खामिनो श्रीहरिने मेळाप, श्रीहरिए कहेली पोतानी तपश्चर्या तथा रुचि, खामिए श्रीहरिनी करेली प्रशंसा अने आपेछं मातापितानं जुनुं ओळखाण विगेरे. ४४

खामिए हरिभक्तो समक्ष श्रीहरिनी करेली अधिक प्रशंसा, श्रीकृष्णनी पोतानी पेठेज पूजासमये वर्णिने प्रत्यक्ष दर्शन देवानी करेली प्रार्थना, वर्णिने प्रस्त्र श्रीकृष्णे आपेलां प्रत्यक्ष दर्शन, खामिए वर्णिने सं. १८५७ ना कार्तिक शुक्र एका-दशीए आपेली सविधि सोत्सव महादीक्षा अने कहेला तेना अंगना उपदेशो धाने वर्णिने आपेलुं वरदान विगेरे. ४५

रामानन्दस्वामिनं जेतपुर आववं, श्रीहरिना सत्यादि गुणो अने अद्भुन ऐश्वर्यं जोडने पोतानी धर्मधुर सोंपवानो करेलो विचार अने ते वात मानवानो श्रीहरिप्रत्ये करेलो आप्रह अने ते संबन्धमां श्रीहरिए कहेली पोतानी हार्द अभिक्षि. ४६

खामिए पोतानी धर्मधुर श्रीहरिने अत्याग्रहथी सोंपीने सर्व खाश्रितोने पोतानी पेठे श्रीहरिने मानवा पूजवातुं कहीने, श्रीहरिए मागेला वरोनुं दान आपीने खांशी फणेणी प्रामे आवीने सं. १८५८ ना मागशर शुरी तेरस गुरुवारे देहत्याग

करी बदरीकाश्रमे जवुं अने खामिनी श्रीहरिए करेली दाहादि और्ध्वदैहिक क्रिया अने शोकातुर हरिभक्तोने आपेली धीरज निगेरे. ४७

श्रीहरिए सर्व आश्रितोनी महासभा भरीने आपेको धर्मोपदेश अने सर्वेनो शोक निवारीने फणेणीथी धोराजी भाडेर माणावदर पिपलाणा अगत्राइ कालवाणी यह मांगरोल पधारी त्यां वाव्यने गळावीने तेनुं भर्युं करवाना महोत्सवमां सर्वेने आपेकुं दिव्य चतुर्भुज विष्णुहपे दर्शन विगेरे. ४८

मांगरोलमां अनेक मतवादिओने करावेली समाधिमां तेना तेना इष्टदेवहरों आपेलुं खदर्शन अने बतावेलुं अलाकिक ऐश्वर्य अने अनेक सदावत बंधाविने, लांधी मेचपुर आवीने ल्यों मुक्तानन्दमुनिने मळीने तेमनो समाधिविषयनो संदाय टाळवा संतदासने समाधि करावी, लांधी कालबाणी आवीने निःसंदाय थऐला मुक्तमुनिने खखरूपनो दृढ निश्चय करावी तेमने बचनमात्रथी अन्यने समाधि थवानुं वरदान आपीने, लांपण समाधिप्रकरण प्रबळ चलावीने, लांधी अमदाबाद आवी लांना लोकोने समाधि विगेरे अनंत ऐश्वर्य बतावीने सोरठमां प्रधारश्चं विगेरे. ४९

संतोना सहुणो, सहूत अने सदुपदेशशैली जोइने बळी उठेला मत्सरी असुरोए सदावतमां करेली उपाधिथी कंटाळीने तेने बंध करावीने, साधुओने मंडळ बांधी देश देशमां फरवा मोकलीने, पोते सोरठ हालार पांचाळ भाल गुजरात यह सिद्धपुरमां समयो करी सोरठमां आवी मेघपुरमां छमाससुधी विप्रनी चोराशी करी तुळसीविवाह करी, खांथी कारीयाणी पधारखुं. त्यां गढडाना दरबार सपरिवार अभयराजानुं अने देशदेशना भक्तोनुं दर्शने आवबुं अने तेमनीपासे तलावनुं गळावखुं अने संतोने देशोदेशमां फरवा मोकलबुं. देशोदेशमां असुरकृत अतिपीडाथी साधुओनुं श्रीहरिपासे आवबुं अने श्रीहरिनुं गुजरातमां वेलाल यह कच्छमां पधारबुं विगेरे. ५०

कच्छमां गामोगाम हरिभक्तोने दर्शनादि सुख आपीने भुज पधार्त्नुं, त्यां सर्वे देशोना भक्तो उपर चंत्री पूर्णिमाए जुनागढ आववानी कंकोतरीओ लखावीने, त्यांची घोराजी थइ जुनागढ पधारी त्यांना दुर्बळदास गवैयानुं दारिष्टा कापीने, त्यांना प्रत्येक हरिभक्तोने घेर भोजन करी, गिरनारनी यात्रा करी, संतोने देशदेशमां फरवा मोकली, पोतानुं काळवाणी पधारत्रुं. संतोने असुरोए अति पीडा करेली जाणी बहु दिलगिर थइ तेमने क्षमावत धारवानुं कहीने, चोटी कंठी माळा तिलक्ता त्याग करावी पांचसोने परमहंस कर्या विगेरे. ५१

दुर्वासाना शापनी मनुष्यदेह धरीने श्रीहरिपासे रहेला संतोनां पवित्र नामो. ५२ परमहंस, संन्यासी, ब्रह्मचारी अने दास साधुनां नामो. ५३

साधुओनी बहु प्रशंसा करी तेमने प्रवृक्तिरूप सदावतने बंध करवानुं कहीने ते बच्यथी यज्ञादि करवानुं ठरावीने, संतोने फरवा मोकली पोते सोरठमां फरता फरता अगन्नाइमां पर्वतभाइने त्यां रहीने त्यां आवेला काठीसंघनी साथे आखा पिपळाणा थइ मेधपुरमां असुरोपद्रवधी प्राणापितने पामेला मुळजीने स्वदर्शन आपीने भाडेर आदि गामोमां फरी सरधार आवी काठीओने रजा आपी पोते हालारमां राजकोट विगेरे गामोमां फरीने शेखपाट थइ भादरामां एक मास रही जेतलपुरमां गोविन्दस्वामिने यंत्र करवानुं कही मोकलीने, मांचा द्वरा खाचर विगेरे सद्गृहस्थो उपर परमहंस थवानो कागळ लखाव्यो विगेरे. ५४

भादराथी वे सेवक साथे लइ कोठारीयामां आणदी बाइने समजावीने, लांधी एक सेवक लालजीने लइ मेला माळीया थइ रण उतरी आधोइ गाममां आवी लालजीने दीक्षा आपी निष्युळानंद नाम आपीने एकाकी मुजनगर पधारबुं. लां आवेजी नदा परमहंसनी मंडळीने सामा जइ मळीने थोडा दिवस पासे राखीने तेमने समझावी घरे पाछा मोकली, कच्छमां विचरीने माडवी आवी त्यां संतोने बोलावी दर्शनादिक सुख आपीने अमदाबाद मोकल्या विगेरे. ५५

कच्छथी हालार यह शरधार आवी, त्यांथी पिपरही बोटाद यह कारीयाणीमां चार मास रही देश देशथी आवेला हरिभक्तोने दर्शनादि सुख आपी तलाव गळावी यह करीने साधुओनी वे मोटी मंडळी बांधी, एकने नवानगर अने बीजीने सुरत मोकलीने, पोते त्यांथी बढवाण रामगरी दहुका मिछयाव जेतलपुर थह हभाण पीज नहीयाद थह उमरेटमां बहु प्रताप प्रदर्शावीने, त्यांथी चांगा थह रोण्यमां पिराणाना मेतने चमत्कार बतावी, बोचासण बुधेज थह पाछा जेतलपुर आवी त्यां अतिरुद्ध याग करावीने, पोते पिश्वममां पधार्या अने निर्विद्ध यह थयो जाणी असुरोने दाझ थह अने श्रीहरिए फरी यहानो ठराव करी जेतलपुर आव्या अने त्यां आवेला संत हरिभक्तोने साथे लह पोते खोखरा पधार्या. ५६

खोखराथी अमदावादमां भिक्षा मागवा जता साधुओने असुरोए आंतरीने बहु भार मार्थाना समाचार सांभळीने अति कोपाकुळ थएला श्रीहरि चारसो संतोने सुरत विदाय करीने शूरवीर क्षत्रियोने साथे राखी बीजे दिवस तैयार थइ कांकरी-यामां ज्ञान करी पाछा गाममां पंधार्या. तेटलाकमां लडाइ करवा आवेला असुरो-मांथी केटलाकने क्षत्रियोए मार्या अने पछी केटलाक नांची गया विगेरे. ५७

सोखरायी वेलाल सलकी यह कच्छमां आवीने अधुरो उपर मर्मभरेलो पत्र सखावीने त्यांथी हमाण आवी यज्ञनो आरंभ करी पोते घोडासर यह हाथरोजीमां आवी संतनी मंडळी तेडावी. त्यांना भील भूपतिए पूजा करी कांइ सेवानी प्रार्थना करतां तेने यहां असुरो थकी रक्षण करवानुं भळावीने पालखीमां बेसी तेने घर पधारतां सुरतथी आवेला भक्तसंघे जरीयानी पोशाग पहेराव्यो. भूपतिनी प्रार्थनाथी तेवाज वेषे घेरोघेर दर्शन आपी ससैन्य भील भूपतिए सहित घोडेश्वार थई डभाण आवी सर्व संघनी संभाळ लइ दर्शनादि आपीने, यहामां विघ्न करवा इच्छता मत्सरी विप्रोने युक्तिथी पाकशाळामांथी बहार काढी तेने खाधीन करीने विप्रोने पाळाओं पासे बहु भय बताव्यो. ५८

तथापि अवळाइ निह छोडवाथी घोडेश्वार काठीओ पासे बंधुकोना खाली बहार करावी डरावी सर्व विप्रोने युक्तिथी जमादीने, बीजे दिवस थयेली विद्वत्सभामां चर्चा थतां पोतानी जित मेळवीने, त्यां घोडांनी चोरी करवा आवेला वडतालना चोरोने चंमत्कार बतावी तेमने निजाशित करी, बीजे दिवसे रसोइ करावी सर्वने जमादीने पूर्णाहुतिनो होम करी विप्रोने दक्षिणादिकथी तृप्त करीने वधेला लाडवा गाममां घेरोघेर आपी तलावमां जळजंतुओने पण नाखीने यज्ञ पुरो कर्यो. ५९

डभाणथी जेतलपूर थइ पश्चिममां चालतां सारंगपुर कारीयाणी थइ गढडें पथारी, त्यांथी कारीयाणी कोटडा बंधीया गोंडळ जेतपुर धोराजी थइ दुधीवदर कंडोरडा कालावड थइ मोंडा अलैया भादरा थइ कच्छमां अंजार थइ भुज पथार्या. त्यां हुतासनीनो समैयो करी त्यांथी मानकुवा थइ तेरामां आवी संतोने तेडावी काळुतलावे आवी फरीथी तेरामां आवी त्यांथी संतोने आज्ञा आपी पेते मांडवी थइ भादरा अलैया मोंडा थइ कंडोरडामां चोराशी करी, धोराजी पिक्लाणा आखा थइ अगत्राइमां अष्टमीनो समैयो करी विप्रसुतने उपवीत आपी, त्यांथी जुनागढ पधार्या. संघने जोइने कोइ अविद्यावाळे त्यांना राजाने अवळुं भराव्या छतां सुज्ञ आस्तिक राजाए ते निह मानीने श्रीहरिने शहरमां सुखेथी पधारवानुं कहेवाथी पोते पधारीने दर्शनादि आपीने, त्यांथी फणेणी आवी संघने शीख आपी पोते पांचाळ देशे पधार्या. ६०

गढडामां पधारी त्यांना हरिभक्तोने यज्ञादिकना शुभ समाचार कहीने, मोटा साधुओ प्रत्ये यज्ञने योग्य स्थान पुछतां जेतलपुर बतावतां, त्यां यज्ञ पुरो नहि थाय एम श्रीहरिए कह्या छतां तेमनो आग्रह भाळीने जेतलपुर यज्ञायं पधार्या. परंतु मत्सरी द्वेषिओना भरावाथी राजाए करेला यज्ञमां विष्रयी पोते डभाण आवी समप्र सामग्री मगावी लड् अडारे वर्णने जमाडी वस्त्रादि आपीने मनुष्ययज्ञ पुरो कर्यों. ६१

लांथी बुधेज थइ झींजर आवी लां जेठामेरने सोनेरी शिरपाव पहेरावी,

त्यांथी कुंडळ सारंगपुर नागडका थइ कारीयाणीमां हुतासनीनो समैयो करी त्यां अलैयाने सोनेरी शिरपाव आपी, त्यांथी कोटडा नडाळा बंधिया गोंडळ भादरा थइ रण उतरी कच्छ भुजमां भीमएकादशी करी, त्यांथी फरता फरता जुनागढ धइ अगनाइ पंचाळा माणावदर थइ कारीयाणी पधारतो त्यां आवेला संतदासे श्रीहरिनी आज्ञांथी हिमाचळनी वाट लीधा पछी त्यां संतोने तेडावी दर्शनादि सुख आपी त्यां जनमाष्टमी महोत्सव करी, त्यांथी सारंगपुर पधारी बापुभाइने संन्यास आपी संतोने फरवा मोकल्या. ६२

खांथी गुजरातमां पधारी अनेक लीलाओं करी, खांथी पांचाळ हालार अने सोरठना हरिभक्तोने दर्शनादिमुख आपीने पांचाळ देशमां आवी, खांथी डभाण पधारी, खां देशोदेशथी आवेला हरिजनोनी पूजा स्वीकारी तेमने दर्शनादिकथी दिव्य आनन्द आपीने, खां वडे बांधेला हिंडोळामां झुलीने सर्व संघने शीख आपी, पोते पांचाळ पधारी सर्व हरिभक्तोने वौठे आववानं कही मोकलीने पोते बौठामां पधारी कार्तिक पूर्णिमा समैयो करी सर्वने दर्शनादि सुख आपीने जवानी आज्ञा आपी. ६३

त्यांथी डभाण वरताल बुधेज बोचासण बामणगाम एकलबारा सरसवणी थइ पाछा स्थाल पधारी, त्यांथी उमरेठ थइ डडुमर कठलाल थई उंटडीया महादेवनां दर्शन करी तेना सेवकने मुठीभरी रूपीया आपी, त्यांथी छुवाग्य सलकी प्रांतिज विजापर गेरीता थइ विश्वनगरमां ब्रह्मभोज करावी, त्यांथी उंझा मेसाणा कर्जिनसण मोटेरा जेतलपुर थइ पांचाळमां पधारी सारंगपुरमां हरिभक्तोने बोलावी हुतासनी समैयो करी तेमने मागेछं वरदान आपी संतोनी पत्रपुष्पादि पूजा परिप्रहीने सर्वने जवानी आज्ञा आपी पोते गढडा पथार्या ६४

त्यांधी संतो गुजरातमां गया, त्यां केटलाक भणवा रह्या. पछी श्रीहरि तवरानी यात्राए संतोने आववानुं कही मोकलीने, पृथ्वी उपर पापीनो वधारो जोइने काळने आज्ञा आपी पोते केश वधारी तपस्तिवेषे छाना रह्या. वसन्त आवतां संतोने बोलावी पोते जरीयानी वल्लो पहेरी संतोने बाथमां घाली मळीने बे विभाग करी रंग रम्या. पछी घेलामां संत हरिभक्तो साथे स्नानकी हा करी गाममां पधारी संतोने खहरते जमाडीने, आज्ञाधी देशांतरमां जता तेमने कारीयाणी ने कुंडल गुधी वळावीने पोते पाछा आव्या. एरीते गडडामां हुतासनी समैयो कर्यों. ६५

गढडाथी वडताल आवी त्यां संत हरिभक्तोने तेडाबी तेमने दर्शनादि दिश्य सुल आपीने, पछी सामसामा रंगरमत करी, आंब्रे बांधेला हिंदोळामां विराजीने सर्वने दर्शनादि आनन्द आपी तेमनी पुष्पादि पूजा स्वीकारी. ए रीते हुतासनीनो समैयो क्यों. ६६

वरतालथी पोते गढडा आव्या अने संतो देशामां फरवा गया अने हरिमक्ती स्बन्नामे गमा. थोडा दिवस पछी श्रीहरि वडताल पधारी, लांधी संजाया बामरोली थइ डभाण उमरेठ थइ पाछा वडताल आवी त्यां मुनिओने तेडावी तेमने **परमेश्वर** कृपासाध्य छे के कियासाध्य छे? एवो प्रश्न पुछीने परस्पर चर्चा करावी, त्यां**यी डाकोर** उमरेठ थइ पाछा वरताल आवी त्यांथी जेतलपुर थइ कर्जिसण आवी त्यां संत हरिभक्तोने तेडावी जनमाष्टमीनो उत्सव करी पोते हिंदोळे झुठीने संतोने शीख आपी, पोते थोडा दिन छाना रही नारदीपुर थइ जेतलपुर आवी त्यां सर्वने द्रीनादि आपी भीडने लीधे उभाउभा जमाडी हरिभक्तोनी पूजा खीकारीने मुनि-ओने मळीने पोते गढडा पधार्या. ६०

ह्यां मोटेरा संतोने तेडावी तेमने दशनादि आप्या पछी, मुक्तमुनिए खप्रसन-तानुं साधन पुछवाथी तेने कहीने, संतोने बहुरीते जमाडी छेवटे दुध दही मसाके डोळीने त्यां रास रमीने कपिलाछठ्यनो उत्सव कर्यो. ६८

संतो लीला गाता संभारता गुजरातमां आव्या. थोडा दिवस पर्छा पोते **वडताल** आत्री संतोने तेडान्या. आंबलातळे पाटउपर विराजी सभा करी सर्वने प्रश्नोत्तर अने दर्शानादिकथी आनंद आपी त्यां अनकूटनो उत्सव कयों. संतोने खयं पीरसी जमाडीने एक दिवस बामरोली पधारी त्यां राणतळे बांधेला हिंदोळामां झुलीने त्यां अक्षने बहुवार फेरवीने पाछा आंबलातळे सभा करी, एक दिवस वलासण पंघारी त्यां हिंदोळे विराजी दर्शमादि आपीने वळोटवा थइ पाछा वरताल पथार्या. ६%

त्यांथी गढडा पधारी त्यांना भक्तोना पुछवाथी वडतालनी लीला क**हेवाने** प्रसंगे गुजरातना भक्तोनी करेली घणी प्रशंसा सांभळीने त्यांना भक्तोना आप्रहयी पुजरातना भक्तोने गढडा बोलावी तेमनो सारो सत्कार करी, पोते हिंडोळे विराजी रंग रमी संतोने मळीने हुतासनीनो समैयो पूर्ण करीने सर्वने रजा आपी. ७०

संतो श्रीहरिनी दिव्य लीलाने संभारताथका देशातरमां फरीने चडोतर आव्या. पोते वडतालमां आवी बोलाववाधी आवेला संतो नमस्कार करी सभामां बेसता. कोइए श्रीहरिने आपेलुं अत्तर संतोनी नासिकाए चर्चिने कह्युं के-एक तमाराज मुखर्नु पाणी रहेशे. तेटलाकमां आवेला सुरतीसंघे महापूजा करी पछी हिंदोळे विराजी संतोनी पूजा प्रहण करी तेमने मळी पोते पीरसी जमाडी वखाणी उपदेश आपी फरवा मोकस्या, एम जन्माष्टमी महोत्सव कर्यो. ७१

पोते गढडा पथार्या अने संतो गुजरात गया. संतोनां बहु बखाण करी पोते दर्शन देता देता जेतलपुर पधारी त्यां छाना रही त्यांथी वडताल आवी सत्संगमांसी जता रहेवानी रजा मागतां संतो बहु उदासी थतां रामदासमाइनी प्रार्थनाथी सस्संगमां रह्या अने संतोने सत्संगसंरक्षणनी भलामण करी, पोते डभाण थइ वडताल बोचासण थइ नर्मदा उतरी उधना चीखली थइ धर्मपुरे पधारतां लानां राणी कुशळकुंवरबाए सारो सत्कार करी राज्यादि सर्वस्व समर्पण कर्युं पण तेने निहे स्वीकारी तेमने उपदेश आपी, मुगट धारी गज उपर बेसी आखा शहेरमां दर्शन आपी जनपूजा स्वीकारी, लांधी वांसदा पधारी लांना राजाने चरणारविंद पाडी आपीने पाछा धर्मपुर आवी वसंतनो उत्सव करी लांधी फरता फरता वडताल पधार्या विगेरे. ७२

खांथी गढडा आवी केटलाक दिवस रही, सर्वनी उपर हुतासनीना समैया उपर कडताल आववानी कंकोतरीयो लखाबी, पोते वडताल पधारी जोबनपगीनी मेडीए उतरीने संतोने आंबले उतारीने, संत हारेमको साथे रंगलीला करीने, बार बारणाना हिंडोळामां झुलीने सर्वने दर्शन प्रजादिकनो लाभ आपी पोतानुं ऐश्वर्य दर्शावी समैयो संपूर्ण करीने गढडा पधार्या. ७३

खां योडा दिवस रहीने वळी फरता फरता जेतलपुर पथारी कार्तिक एकादशीनो उत्सव करी खां संतोने पासे तेडावीने, हुतासनीना उत्सवने योग्य स्थाननो तपास करतां, 'वडताल जेवुं बीजुं नथी' एम निश्चय करी, संतोने सर्व साधनो तैयार करवानां कहीने पछी पोते वडताल पधार्या. खां रंगलीला करी मुनिओने अमादीने आंवलातळे सभा भरी प्रश्लोत्तरथी सर्वने सुप्रसन्न करी, बांधेला हिंदोळामां शुलीने समैयो पूर्ण करी गढडा पधार्या. ७४

खांथी सोरठमां भक्तोंने दर्शनादि आपता थका बंधीया थइ गोंडळ आवी खांना राजाने सदुपदेश आपी, खांथी घोराजी भाडेर माणावदर थइ पंचाळा पधार्या. लां सोरठ देशना गामोगामथी आवेळा भक्तोंने दर्शनादि छुख आपीने तेमने बहु वखाणीने दुर्बळ दासनुं दारिद्य कापीने खां विशं दिवस रही, खांथी पिपलाणा आखा अगत्राह थइ पाछा पंचाळा पधारी, माणावदर जाळीया बंधीया थइ गढडा पधार्या. खांना भक्तो भागळ सोरठी भक्तोंनी बहु प्रशंसा करी एकमास खां रही, एक दिवस उदासी टाळवा एक सेवक साथे छुखपर पधार्या. खां चालु विवाहनां बीभत्स गीतो सांभळी वधु उदासी थइ पाछा गढडा पधारी विवाहना विवेकनो पत्र लखाव्यो. ७५

खांथी जेतलपूर आवी संत इरिभक्तोने तेडावी भीमएकादशीनो उत्सव करी पोतानं पुरुषोत्तनपूर्ण कहीने दशदिवस लीला करी सर्वने सुख आपी गढडा पथार्था. ७६ त्यांथी वडताल भावी आश्रितोने बोलावी दीपोत्सव करी, गढडा पंधार्या. त्यां थोडा दिवस रही पाछा वरताल पंधारी वेदांताचार्यने तेडाधी तेने सन्मान आपी वेदांतना प्रश्लोत्तरथी तेने जितिने पाछा गढडा पंधार्या.

गहडामां रहीने 'सर्वको६ए वर्षोवर्ष एक कार्तिक प्रबोधनीना उत्सव उपर वर्डनाल आवर्षुं' एवी नियमित आज्ञा करवाशी अनेक देशोमांथी अनेक हिरमक्तो रुडा चरोत्तर देशना मध्यमां जळ छाया विगेरेनी सगवडवाळा पवित्र बडताल गामे आवीने श्रीहरिनी पधारवानी वाट जोड़ रह्या. ७८

अंतर्यामी भगवान पण खदर्शननी तीव उत्कंठा जाणीने, गढडाथी घणी जातना घोडा घोडी उपर अश्वार थएला काठीयो साथे पोते माणकी घोडी उपर अश्वार थइने गामोगाम दर्शन आपताथका वडताल पधारी आंबला तळे निवास कथीं. आवेला संत हरिभक्तोने दर्शनादिकथी अत्यानंद आपी तेमने पोतानुं परतरत्व कहीने खखदेशमां जवानी आज्ञा आपी प्रबोधनीउत्सव पूर्ण करी गढडा पधार्यो. ७९

गढ़टामां वीश दिवस रही संत हारेभक्तोने कंकोतरी लखी बोलावीने दर्शनादि सुख आपीने वीश दिवसमुधी नवी नवी रसोइओ जमाडी. पछी फुलदोळना उत्सवमां रंग रमी रमाडी जया ललिता उक्तम राजाने अतिराजी कर्या. ८०

मुमुध्रुओने ज्ञानदान आपवा संतोने देशांतरमां मोकली, घणे दिवसे पाछा तेडावी पोते पीरसी नवी नवी रसोइओ जमाडी आनन्द आपी, पछी हारेभक्तोनी प्रार्थनाथी संतसाथे बोटाद पधारी तेमने दर्शनादि मुख आपी फुलदोळनो हत्सव कर्यो. पछी मह रमाडी शिरपाव आपी संतने शीख आपी. ८९

खांथी गढडा पधारी खां थोडा दिन रही अमदावाद पधारी बहु दिनना प्यासी हरिभक्तोने दर्शनादि आपी, खांथी वेलाल मेमदावाद डडुसर थइ उम- रेठ पधारी दर्शनादि आपी संतोने रसरोटली जमाडी, खांथी सामरखा आणंद वह-ताल गांना बोचासण थड गढडा पधार्या. ८२

त्यां चार मास रही सर्व ज्ञानशी अभयदानने अधिक मानी तेने आपवा त्यांथी कर्जिसण आवी संतोने बोलावी त्यांथी वडु थइ आद्रेजमां अनकूटोत्सव करी त्यांथी कोलवडा उनावा नादरी माणसा गेरिता बामणवा वडनगर विश्वनगर वसइ मेड डांगरमा अडाळज थइ अमदाबाद जेतलपुर थइ घोळके आवी संतोने पीपळी जवानी आजा आपी पोते एवीरीते अभयदान आपताथका गढडा प्रधार्था. ८३

गढडामां प्रतिदिन घेलामां सखा साथे जलकीडा अने समामां प्रतिदिन प्रश्नो-त्तरथी सर्वने संतोष आपता श्रीहरिए अधकूटोत्सव करी मुनिओने गुजरात जवानी आज्ञा आपी. तेटलाकमां कोई आवेला अजब गेबीने जितिने पोते लांधी विचरता यका जैतलपुर आवी त्यां संतोने तेडावी अमदाबादथी आवेला मुक्तमुनि सन्मुख जइ सत्कार करीने, त्यांथी अमदाबाद पधारी पाछा जेतलपुर थइ मेमदाबादमां ज्ञानसंवाद करी सर्वने उपदेश आपी, त्यांथी डभाण थइ वडतालमां सात दिवस रही बुधेज गोराड्य पछम घोळेरा थइ गढडा पधार्या. ८४

खाना भक्तोने बे मास दर्शनादि सुख आपी, खांथी संत हरिभक्तो साथे मिछियान्यमां हुतासनीनो समैयो करी, खांथी रोझका विगेरे थइ गढडा पथार्या. खां असुरोनी उपाधीने खप्रतापथी टाळीने कारियाणी थइ पाछा गढडा पथारी खां एक मोर्ड सदावत बंधावी आवेला संघनी पूजा खीकारी, पछी दीपावली तथा अनकूटवो उत्सव कर्यों. ८५

संतोने उपदेश आपी फरवा मोकलीने पोते गढडामां रही संतोनी बहु प्रशंसा करी हुतासनीनो उत्सव कर्यों. अधुरकृत उपद्रवधी जन्माष्टमी महोत्सव बंध राखी तेनो उपद्रव शमावीने, पछी संतोने तेडावी अलक्टोत्सव कर्यों. नरनारायण देवनी प्रतिष्ठानी कंकोतरीयो लखावीने पोते जेतलपुर थइ अमदावाद आवी प्रतिष्ठा करी एक दिवसेज शहरना विप्रोनी चोराशी करी जेतलपुर थइ गढडा प्रधार्यों. ८६

त्यां संतोने छ मास सुधी राखी हुतासनीनो समैयो करी, त्याथी सारंगपुरमां जन्माष्ट्रमीनो उत्सव करी गढडा पथायी. त्यां थोडा दिवस रही कारीयाणीमां द्वारानो खरसव करी त्यां आवेलां दिवबंदरनां प्रेमवाइनो पोशाग प्रहण करी, तेने दीनानाथ भटने आपी, पछी अन्नकृटोत्सव करी त्यांथी बोटाद थइ लोयामां शाकोत्सव करी वसंतनो समैयो करी मोटा चंद्रप्रहणनिमित्ते भद्रावतीमां स्नान कर्युं. ८०

त्यांथी पीपरडी हाथसणी जसदण बंधीया थइ गोडळ पधारी सात भातनी सुखडी जमी जमाडी, त्यांथी डया कंडोरडा झांझमेर उपकेटा जाळीया गणोद माणाबदर थई पंचाळा पधारी त्यां संतोने तेडावी रास रमी रमाडी रंगरमत करी रंगवाळा बस्त्रो जीणाभाइने आपीने फुलदोलनो उत्सद पूर्ण कर्यो. ८८

स्वांधी माणावदर गणोद जाळीया दुधीवदर बंधीया रायपुरा बांकीया थइ सर्वने दर्शनादि मुख आपता थका गढडा पथार्या. त्यांधी कारीयाणी आवी संतोने वरतालमां मंदिर करवानं कही पोते गढडा थइ भुजनगर पधारी त्यां नरनारा-यणनी प्रतिष्ठा करी पाछा गढडा आवी त्यां संतोने तेडावी जनमाष्ट्रमी उत्सव करी त्यां संतोने रास रमी रमाडी चादुर्मास रहेवानं कहीने अचकूटनो मोटो उत्सव करीं अने लक्ष्मीनारायण देव स्थापनमाटे वहताल आववानो विचार कर्यों, ८९

गढराथी संघने छड् बोटाद सुंदरीयाणा वागड जीसका रोझका कमीयाळा बोह गळीयाणा यड् वडताल पधारी लक्ष्मीनारायणादिक देवनो प्रतिष्ठोत्सव करी त्यां भावेला अयोध्यावासीने मळीने तेमने साथे लइ वसोमां वसी संतोने शीख आपी, त्यांथी वटामण जालडा विगेरे मार्गना गामोमा दर्शन देताथका कुंडळ कारीयाणी थइ गठडा पधार्या. वळी त्यांथी कारीयाणी जइ पाछा गढडा पधार्या. ९०

अयोध्यावासिने देशनगरादिकना समाचार पुछी तेने जाणी तेमने पोतानी खभाव कहीने पछी कुळनां नाम पुछी जाणीने प्रसन्न थया. पछी मोटा चार संतोने तेडावी गादीना अधिकारी विषयनी वात पुछी धर्मकुळमां ते स्थापधानो निश्चय करी पछी बिजाओने पण पुछी पोते ह्यांथी संबन्धी साथे बडताल पधारी अनकूट प्रबोधनीनो उत्सव करी अयोध्याप्रसाद अने रघुवीरने दन्नपुत्र करी गादी सोंपी मंदिर देश वहेंची आपी पाछा गढडा पधारी ह्यां बसन्तोत्सव कर्यों. ९९

एक दिन समामां तीर्थयात्रानी आवश्यकता कही तीर्थोंनी प्रशसा करतां द्वारिकानो विशेष कहीने सचिदानंदमुनि साथे अयोध्यावासीने द्वारकां मोकल्या. त्यांना गुगळीयोए मुनिने गोमतीमां ल्लान करवा दीधुं निह अने धनमाटे वीटाइ वळया. त्यां मुनिने समाधि थवाथी तेमने पडता मुकीने अयोध्यावासी आरां-भडा बेट थइ पाछा गोमती आव्या. समाधिमांथी जागेला मुनि गोमतीलान विना आरंभडा आव्या. त्यां छापो न मळवाथी लांघणचोरे बेठा विगेरे. ९२

खां रही मुनिए श्रीकृष्णनी अतिस्तुति करतां प्रसन्न श्रीकृष्णे दिव्य रूपथी दर्शन दइ वडताल आनी रह्यानुं वरदान पामी, अयोध्यावासी साथे गढडा आनी श्रीहरिने बनेलु इत्तांत कहेतां श्रीहरिए सर्वने वडताल आववानुं कही मोकली पोते तैयार थइ कुंडळ खसता शिंजीवाडा थइ वडताल पधारी त्यां सतीर्थ द्वारकाधीशनो निवास करावी फलदोळनो उत्सव करी गोमती गळावी गढडा पधार्यो. ९३

वर्षीवर्ष प्रबोधनीनो उत्सव करवानो ठराव करी सर्वनी उपर वडताल आव-वानी कंकोतरी लखावी पोते कारीयाणी कमीयाळु आडेवा थइ वडताल आवी सर्वने दर्शनादिकथी आनन्द आपी लक्ष्मीनारायणादिक मूर्तिओनी अतिप्रशंसा करी प्रबोधनी उत्सव पूर्ण करी संतोने प्रेमशी मळीने रजा आपी पोते त्यांशी बोचासण देवाण थइ महीनदी उत्तरी, कारेली आमोद बुवा केलोद भरूच अंकले-श्वर थइ कोसाल आवी, त्यां सन्मुख आवेला सुरती हरिभक्तो साथे सुरत प्रधार्या. ९४

तापीतीरे मस्तुवागमां उतरी मुखपालमी बेसी अरदेशरे आणेला भव्य सामैया साथे शहेरमां पधारी सर्वने दर्शनादि आपी तेमनी भेट पूजा स्वीकारी, खांना राजा अने अरदेशर पारशीने घेर पधरामणी करी खांथी मस्तुवागमां आवी चालती पखते अरदेशर ने हर्षवेगथी पाघडी आपी, खांथी कोसाल अंक्लेश्वर केलोद आमोद कारेली बदलपुर खंभात गुडेल घोलेरा कारीयाणी थई गढडा पधार्या. ५५

खांथी भटबद्रमां जान लड्ने दादाखाचरनो विवाह करी आवीने, सारंगपुर धंदरीयाणा वागढ कंथारीया शियाणी ताबी ददुका थइ मछियाव आवी त्यां मुनिओने तेडावी अमदाबाद आवी त्यां फुलदोलनो उत्सव करी, असलाली जेतलपुर थइ वडताल पथारी, त्यां देशोदेशथी आवेला भक्तोने दर्शनादि लाभ आपी तेमनी मेट पूजा खीकारी रामनवमीउत्सव करी सीतारामने उपवीत आपी गढडा पथार्या. ९६

स्यां थोडा दिन रही स्याथी गांफ थइ बडताल आवी संतमंडळीयो बोलावी अनक्ट अने प्रयोधनी उत्सव करी गढडा पधार्या. जुनागढमां तथा धोळरामां मंदिर करवा संतोने मोकलीने, प्रथम धोळरामां पधारी प्रतिमाओ पधरावी पाछा गढडा पधारी गढाळी जइ आव्या. ९७

स्योगी संतसहित संदरीयाणा आवी त्यां वसन्तोत्सव करी, त्यांथी भेंशजाळ नागडका लोगा बोटाद थइ गढडा पधार्या. थोडा दिन पछी त्यांथी विचरता थका अमदावाद आवी सर्व भक्तोंनी भेट पूजा स्वीकारी त्यां हुताधनीनो समैयो करी, त्यांथी असलाली जेतलपुर मेमदावाद थइ वडताल पधारी त्यां रामनवमी उत्सव करी गढडा पधार्या. ९८

त्यां अमुरथकी आवेला विद्यने टाळीने संत भक्तोने तेडावी जनमाष्टमी उत्सव करी, त्यांथी गामोगाम दर्शनादि आपताथका वडताल पधारी, त्यां कोकिकिशार्थे प्रतिदिन मंदिरने प्रदक्षिणा प्रणाम करता थका दीवाळी अन्नकूट प्रबोधनी उत्सव करीने, त्यांथी सयाजी राजानी बहु प्रार्थनाथी सांकरदा छाणी थइ राजाए सन्मुख मोकलेला राजकीय भव्य सामैयानी धामधुमी साथे वडोदरा शहेरमां पधारी सर्वने दर्शनादिकथी छतार्थं करी, राजाने त्यां पधारी दर्शन उपदेशादि आपी तेनी पूजा भेट स्वीकारी, सर्व मतवादिओने जितीने सांकळदा थइ पाछा वडताल पधार्या. त्यां दोड मास रही शिक्षापत्री लखीने गढडा पधार्या. ९९

स्यां थोडा दिन रही त्यांथी कारीयाणीमां हुताशनी करी वडताल पथारी त्यां आवी रहेला संत हरिभक्तोने दर्शनादिक सुख आपी रामनवमीनो समैयो करी गढडा पथारी जन्माष्टमी उत्सव कर्यो. त्यांथी करमड पथारी अन्नकूट उत्सव करी अमदाबादमां आनन्दस्वामीनी पूजा स्वीकारी, असलाली जेतलपुर गामडी मेमदा- बाद थइ वडताल पथारी त्यां प्रबोधनी उत्सव करी गढडा पथार्या. त्यांथी संतोने जुनागढ मोकली पोते कारीयाणी चोकडी धोलेरा पिपळी कमीयाळा बरसडा थइ बडताल पथारी रामनवमी उत्सव करी गढडा पथार्या. त्यां मंदिरनो आरंभ करा- बीने पोते अमदाबाद जेतलपुर थइ वडताल आवी गढडा पथार्या. त्यां फुलदोळनो उत्सव करी कारीयाणी नावडा घोळेरा थइ बडताल पथारी रामनवमी उत्सव करी

गढडा पथार्या. त्यां अष्टमीनी लीळा करी पाछा वडताल पथारी गढडा पथारी. त्यांथी गवर्नर साहेबना आष्रहथी राजकोट पथारी तेने दर्शन उपदेशादि आपी गढडा पथार्या. वळी त्यांथी जुनागढ जइ मूर्तिओनी प्रतिष्ठा करी गढडा पथारी त्यां पण मूर्तिओ पथरावानो मोटो उत्सव वर्धो. त्यार पछी कृतार्थ पोते जडभरत दशा दर्शाववा लाग्या. १००

प्रगट पुरुषोत्तम परंब्रह्म भगवान् श्रीहरिनी अलौकिक अद्भुत ऐश्वर्यभरेखी दिव्य लीळाओतुं संक्षेपथी फरीथी वर्णन विगेरे. १०१

प्रगट भगवान् श्रीहरिनो अपार महिमा अने दिव्य लीळातुं वर्णन, १०२ मुनिओए श्रीहरिनी ते ते विचित्र मत्स्यादि अवतारो अने तेमनां अद्भुत कार्योतुं वर्णन करवापूर्वक सर्व अवतार्धर्तांपणे करेळी स्तुति विगेरे, १०३

"पूर्व अवतारोए करेलां अद्भुत कार्योमांथी अमोए काइएण कार्य कर्युं नथी छतां तमो अमने परात्पर परमेश्वरपणे केम कहो छो" एवो मुनिओ प्रत्ये श्रीहरिए करेलो आक्षेप अने तेमां मुनिओए मोह न पामर्ता मनुष्यचरित्र जाणीने आपवा धारेलो उत्तर. १०४

मुनिओए श्रीहरिने युष्तियुक्त सप्रमाण उत्तर आपी तेमने सर्वावतारधर्तापणे समझी ते मुजब प्रतिपादी, पछी कृपासाध्यतानो कहेलो विशेष. १०५

संतोनं निष्काम व्रतमान कहेता कामना दोषो अने तेने जिनवाना उपायो. १०६ — निलीभ व्रतमान कहेतां लोभना दोषो अने तेने जितवाना कहेला उपायो. १०० निःस्वादी व्रतमान कहेतां स्वादना दोषो अने तेने जितवाना उपायो. १०८ निःस्वादी व्रतमान कहेतां स्वेदना दोषो अने जितवाना बतावेसा उपायो. १०९ निर्मानी व्रतमान कहेतां मानना दोषो अने तेना त्यागना उपायो. १९० पुरुष्ता दोषप्रदर्शन पूर्वक सांख्ययोगी स्वियोनां कहेलां व्रतमान. १११ श्रीहरि पासे सदा सेवामां रहेनारा पार्षदोनां तथा दुर्गपुरनी सांख्ययोगी कर्मयोगी हरिभक्त बाइओ अने भाइओनां स्मरणीय नामो. १९२

सोरठदेशना हरिभक्त बाइभाइना प्रामबार जातिवार गुणवार नामो. ११३ वालाक देशना हरिभक्त बाइभाइना प्रामबार जातिवार नामो. १९४ काठीयावाड देशना हरिभक्त ली-पुरुषना नामो. १९५ हालार तथा कच्छ देशना हरिभक्त ली-पुरुषना प्रामवार नामो. १९६ सौभीर देशना हरिभक्त बाइभाइना नामो. १९७ भालदेशना हरिभक्त बाइभाइना नामो. १९८ वंदाव्य देशना हरिभक्त लीपुरुषना नामो. १९९ मारवाड तथा गुजरात देशना भक्तना नामो. १९०

गुजरात देशना हरिभक्त बाइभाइओनां ग्रामवार जातिवार नामो. १२१ चडोतर देशना हरिभक्त बाइभाइनां ग्रामवार जातिवार गुणवार नामो. १२२ बार। देशना हरिभक्तनां नामो. १२३

वाकळ देशना हरिभक्तनां नामो. १२४

कानमदेशना हरिभक्तनां नामो. १२५

निमाड तथा हिंदुस्थान देशना हरिभक्तनां नामो. १२६

बुंदेलखंड तथा पंचमहेल तथा गंगापार देशना हरिभक्तीनां नामो. १२७

हरिभक्तिशिमणि पर्वतभाई तथा मुळजीने श्रीहरिए आपेला परचा. १२८ संतिविरोमणि संतदासने श्रीहरिए आपेला पारमैश्वर्यप्रदर्शक परचा. १२९

व्यापकानंद महामुनिने श्रीहरिए आपेला भगवानपणाना परचा. १३०

मुक्तराज मुक्तानंद अखंडानंद कैवल्यानंदने प्रदर्शविला परचा. १३१

जीवुंबाई राजवाई पांचुबाई नानुबाई अने रामबाइने आपेला परचा, १३२

माणाबदरना हरिभक्तो तथा उद्धवजी तथा जादवजीने आपेला परचा. १३३

लालजी (निष्कुळानंद) तथा सिचदानंद मुनिने आपेला परचा. १३४

मुक्तानंद आत्मानंद अने अनंतानंद मुनिने आपेला परचा. १३५

जीवराम राणो वशराम भीम अने राघव भक्तने आपेला परवा. १३६

कालो मुलो झवेर तथा प्राणवहरूमने आपेला परचा. १३७

दयाराम जोइतो द्याळिजि तथा कुशळबाइने दर्शाविला दिव्य परचा. १३८

नागमक भगाभक राजाभक रूपोभक तथा पुंजाभाइने आपेला परचा १३९

सितारामभक्त कानजिभक्त जमनाबाइ नधुभक्तना संबन्धी, समाधिवाळा नाना बाळको बसनदास अने हेतबाईने श्रीहरिए प्रदशिवेटा परचा. १४०

जैकरणमक्त जतनबाई जमनांवाइ प्रभुदास अवलबाई अने सांख्ययोगी अवल-बाईने श्रीहरिए पूरेला पारमैधर्यप्रदर्शक परचा, १४१

खुशालभक्त (गोपाळनंदखामी)ने आपेला अनेक अद्धृत परचा. १४२ उमैयाबाईने श्रीहरि भगवाने आपेला अनेक अलीकिक परचा. १४३ रामचंद्र अमृतबाई अने शोभारामने भगवाने प्रेला परचा. १४४ नार्यंतनाना, बापुसरवरीया बापुभाइ गंगाबाइ सेवकरामने आपेला परचा. १४५ नाथभक्त तेनो सत रायजीभक्त लाखोभक्त भगवानदास जगजीवन अमृतबाई काछीयो बेचरभक्त ए सर्वेने पुरेला परचा. १४६

द्याळजिमक बहमभक्त जेसंगभक्त कडीयो आदितमक बापुभक्त इत्यादिकमे भीडरिए आपेला अद्भुत परचा. १४७ मोंधीबाई अंवाबाई जमनांवाई पार्वतीवाई अने बीजी जमनांबाईने भगवान श्रीहरिए आपेला पारमैश्चर्यप्रदर्शक अद्भुत परचा. १४८

शामबाई जीविबाई उमैयाबाई प्रेमबाई लक्ष्मीबाई मथुरांबाई तथा तेनी पासे आवेली बीजी कोइ बाई, ए सर्वेने आपेला परचा. १४९

जिजीभाई बापुभाइ वैचरभाइ नानोभाइ जेटोंभक्त प्रभातगरबाबो, ए सर्वने श्रीहरि भगवाने आपेळा परचा. १५०

साकरवाई केशरवाई शेख वलीभाइ पारसी अरदेशर तथा भगुने श्रीहरिए भाषेल परचा. १५१

दीवान दादोभाइ, शामजिभाइ पीतांबरभाइ, शोभाराम, नारायणजिनो सुत हरिराम, वैंकटराम अने शानेधरने श्रीहरिए आपेळा परचा. १५२

दर्शन करवा आवतो बुरानपुरनो संघ अने रामिजने आपेला परचा. १५३ थींदोभक्त अने तेनी काकी, ठाकुरदास अने तेनी परनी धनुबाई, गांगुबाई, बुद्ध-भक्त अने मदारीभक्त, ए सर्वेने श्रीहरिए आपेला परचा. १५४

लुकी भक्त, प्राणनाथ, तेनो पिता केशर, अने धुवा गामना भक्तोने आपेला परचा, १५५

जिभाइभक्त काशीदास कानदास नरोत्तमदास नागरदास ईश्वरदास तथा राज-बाइने श्रीहरिए पुरेला परचा, १५६

दीनानाथभट्ट शोभाराम अने सुंदर्जि सुतारने आपेला परचा. १५७

काठी माणसियो तथा माबो तथा त्रिक्रम सथवारी तथा हिमशाह ए सर्वेने श्रीहरिए आपेठा परचा. १५८

एकांतिक स्वसःसंगिप्राप्य प्रकृतिपर दिव्य गोलोकथामनुं अद्भुत वर्णन. १५६ कृतकार्य भगवान श्रीहरिनो स्वधाम पधारवानो संकल्प सांभळी अतिस्विच धएला आश्रितोने पोते आपेली धीरज शक्ति विगेरे. १६०

श्रीहरिनी सं, १८८६ ना ज्येष्ट शुरी दशमी मंगळवारे मध्याहे अन्तर्धान लीळा. १६१

इष्टदेव श्रीहरिना वियोगथी आश्रितोने थएला असहा दुःखनुं वर्णन विगेरे, १६२ आखा प्रन्थनां १६४ प्रकरणनो संक्षेपथी विषयानुक्रम, १६३ स्वष्टत भक्तचितामणि प्रथनुं सहेतु माहात्म्यवर्णन, १६४

विषयानुकमणिका समाताः